सोवियत-भूमि

भाग १

राहुल सांकृत्यायन

द्वितीय संस्करण

किताब महल : इलाहाबाद
१९४९

प्रथम संस्करण, १९३८
द्वितीय संस्करण, १९४९

प्रकाशक—किताब महल, ५६-ए, जीरो रोड, इलाहाबाद।
मुद्रक—सदलराम जायसवाल, राम प्रिंटिंग प्रेस, कीटगंज, इलाहाबाद।

द्वितीय संस्करणका प्राक्कथन

संसार गतिमान है, परिवर्तनशील है। लेकिन उससे भी शीघ्रताके साथ मनुष्य संसार और अपनेको परिवर्तित करता है। हाँ, अच्छी दशामें भी परिवर्तित कर सकता है और बुरी दशामें भी। सोवियत् देशने अपनी सारी शक्ति लगाकर बड़ी शीघ्रताके साथ और अच्छी दशामें परिवर्तन किया है, इसीलिये सोवियत्-भूमिके बारेमें लिखी गई पुस्तक बहुत जल्द बासी हो जाती है। "सोवियत्-भूमि" सोवियत् की द्वितीय-यात्रासे लौटकर लिखी थी फिर वह बासी क्यों न हो जाती। बासी तो ये द्वितीय संस्करण भी कई बातोंमें हो गया है क्योंकि १९४७के आरम्भ तकके ही आँकड़े मैं दे सका।

सोवियत्के बारेमें जानकारी हरएक शिक्षित भारतीयको होना आवश्यक है—विरोधीके लिये भी आवश्यक है, क्योंकि शत्रुकी शक्तिका गलत अन्दाज लगाना अनिष्टकर होता है। सोवियत् शक्तिका बहुत दिनों तक गलत अन्दाज लगाया गया लेकिन जर्मनीके पराजय-का तीन-चौथाई श्रेय सोवियत् सेनाको है, जिसने बतला दिया कि तीन पंचवार्षिक-योजनायें केवल कागजी घोड़े नहीं थे, उन्होंने ठोस रीतिसे देशका उद्योगीकरण किया, सब तरहके कल-कारखाने बढ़ाये, जिससे अपनी सेनाको नयी तोपों, नये टैंको, नये विमानोंसे सुसज्जित किया। सोवियत्ने जितने हथियार जर्मनीके विरुद्ध लगाये उनमेंसे एक सैकड़ासे भी कम अमेरिका और इंगलैण्डसे उसे मिले थे, विमान-टैंक सब लेकर। युद्धने ये भी बतला दिया कि सोवियत्के नागरिक कठपुतली नहीं होते वह स्वतंत्र निर्णयपूर्वक कार्यमें नयी दिशा लेनेकी पूरी क्षमता रखते हैं। यदि स्वतंत्र-निर्णयकी शक्ति न रखते तो अच्छे सेनापति नहीं हो सकते थे और सोवियत्के सेनापति अति तरुण थे।

सोवियत्के लोगोंका अपनी पंचवार्षिक-योजनाओंपर बड़ी आस्था होती है, आँकड़े तो उनके लिये परम देवता हैं। आँकड़े रुष्ट हुये तो फिर पंचायती खेतीका सभापति या फैक्टरीका मैनेजर, मंत्री हो या महा-

मंत्रीका प्रियमित्र पदसे हटे बिना नहीं रह सकता। पंचवार्षिक योजनाके आँकड़े जान-बूझ करके कम रखे जाते हैं जिसमें देशके लोग यदि असाधारण प्रयत्न न करें, तो भी पूरे कर सकें। लेकिन लोग कोशिश रखते हैं आँकड़ेसे अधिक और अधिक पूरा करनेकी।

सोवियत्‌में पंचवार्षिक-योजनाके आँकड़े विवरणसहित हर तीसरे महीने प्रकाशित होने लगते हैं और सालके अन्तमें तो वर्ष भरके आँकड़े प्रकाशित कर दिये जाते हैं। १९४६में कज़ाकिस्तान और पश्चिमी साइबेरियामें अन्न १९४५की अपेक्षा ड्योढ़ा हुआ था। स्मरण रखना चाहिये कि यह प्रदेश युद्ध-क्षेत्रसे दूर होनेके कारण पिछले साल भी अनाज पूरी मात्रामें उपजा सका था। आज चतुर्थ पंचवार्षिक योजनाका तीसरा साल पूरा हो गया। भारतमें आँकड़े मिलने मुश्किल हैं लेकिन जब तक कि खबरोंसे पता लगता है कि चतुर्थ-पंच-वार्षिक-योजना कितने ही वस्तुओंके लिये १९४८के अन्त तक पूरी हो चुकी है।

हमारे देशमें भी जब आँकड़ोंको परम-देवता समझा जाने लगेगा तभी बेड़ापार होगा।

सोवियत्-भूमिके द्वितीय संस्करणमें बहुत बातें बढ़ाई गयी हैं। पुस्तक ड्योढ़ेसे ज्यादा हो गयी है इसीलिये इसको दो भागोंमें प्रकाशित करना पड़ा है। तीसरी यात्रामें मुझे पच्चीस महीने सोवियत्-भूमिमें रहने पड़े हैं। यदि उस यात्राको भी इसमें सम्मिलित करता तो पुस्तक और भी बड़ी हो जाती। यद्यपि पुस्तक दिसम्बर १९४७में ही तैयार करके दे दी गई थी किन्तु निकलनेमें साल भरसे अधिक लगा। किसको दोष दिया जाय?

सारनाथ
३१-१-४९

राहुल सांकृत्यायन

विषय-सूची

प्रथम भाग

अध्याय १

(यात्रा)

अध्याय २

(सोवियत्-राष्ट्र)

अध्याय ३

(सोवियत् नेता)

अध्याय ४

(आर्थिक प्रगति)

अध्याय ५

(चतुर्थ पंचवार्षिक योजना)

प्रथम भाग

सोवियत्-भूमि

अध्याय १

(प्रथम यात्रा)

१. लेनिन्ग्राद् को*

आज (१२ नवम्बर, १६३७) हवा बिल्कुल नहीं चल रही थी। कास्पियन समुद्रमें लहरोंका नाम न था। वह छोटा शान्त जलाशय-सा मालूम होता था। ६ बजे पश्चिमी तटके नंगे पहाड़ दिखाई दे रहे थे। इन पहाड़ोंके नीचे आबादी मुश्किलसे कहीं देख पड़ती थी। कुछ और चलनेपर दाहिनी तरफ़ एक छोटा-सा पहाड़ी द्वीप दिखाई पड़ा। ऊपर कुछ सफ़ेद मकान, नीचे कुछ छोटी बस्तियाँ तथा समुद्र-तटपर कितनी ही नौकाएँ थीं। स्थान सैनिक-महत्त्वका जान पड़ता था। १० बजे हमें बाकू शहर और उसकी बग़लमें दूर तक फैले तैल-क्षेत्रके कूप-वृक्ष दिखाई पड़ने लगे। जहाज़को घूमकर जाना था। इससे तट तक पहुँचनेमें काफ़ी देर लगी। बंदरकी सीमामें हम ११ बजे ही पहुँच गए। समुद्र-जलपर मीलों तक मिट्टीके तेलकी तह पड़ी हुई थी, जिसपर इन्द्र-धनुषके सभी रंग चित्र विचित्र रूपमें दिखाई पड़ते थे। साँस लेनेमें मिट्टीके तेलकी ही गन्ध नाकमें आती थी। किनारे तक पहुँचनेमें पौने १२ बज गए। भार-वाहकों-

* १६३८ में लिखित पृ०-३६०

ने सामान उतारा और हम कस्टम-आफ़िसमें पहुँच गए। यात्रियोंकी संख्या ३० से अधिक न होगी जिनमें से १५–१६ तो जर्मनी जाने वाले ईरानी छात्र थे। इन्तूरिस्तका आदमी वहाँ पहुँचा हुआ था। भारतीय स्कालरका नाम सुनकर उसने बड़ी नम्रता दिखलाई। यद्यपि हमारे बक्सों-की तलाशी राई-रत्ती करके हुई, तो भी कस्टमके अधिकारी बड़ी नम्रता प्रदर्शित कर रहे थे। मेरी ताल-पत्रकी पुस्तकोंके पन्ने गिनकर पासपोर्ट-पर चढ़ा दिए गए, जिसमें कि लौटते वक्त उन्हें साथ ले जानेमें कोई दिक्क़त न हो। फ़ोटोके केमरे का नंबर भी दर्ज कर दिया गया। इसी तरह सफरी-चेक भी लिख लिए गए। कस्टमसे छुट्टी पाकर मोटर द्वारा हम इन्तूरिस्त होटलमें पहुँचाए गए।

हमने समझा था कि पिछली बारके होटलमें ही जाना पड़ेगा। लेकिन यह तो एक नई इमारत थी, जो कि पिछले ही साल बनकर तैयार हुई थी। यह समुद्र-तटके क़रीब एक चारमहलका प्रासाद है। ७६ कमरे हैं। आराम, सफ़ाई और सजानेमें कमाल किया गया है। हमें ४६३ नंबरके कमरेमें जगह मिली। भीतर २ मेज, ३ कुर्सियाँ, १ आयनेदार अलमारी, एक पलंग, कई बिजलीके लैम्प, सुंदर पर्दे, तथा बात करनेके लिए दूरी-फूँक (टेलीफ़ोन) लगा था। कमरेके साथ ही स्नानगृह था। हमने टिकटके साथ इन्तूरिस्तको रेल-यात्रा सहित प्रतिदिन एक पौंड दिया था। यूरोपमें तो १ पौंड रोज ऐसे कमरेका किराया ही लग जाता। और यहाँ उस १ पौंड (१३ रुपये)में न सिर्फ़ रेल और होटलका किराया ही शामिल है, बल्कि तीन वक्तका सुन्दर और नफ़ीस भोजन तथा दुभाषियाके साथ मोटर पर तीन घंटेकी सैर भी शामिल है। भोजनालय बहुत सुंदर था और भोजन के लिए कहना ही क्या ? बहुत कम आदमी अपचसे बच पाते होंगे ! खाना खाकर थोड़ा विश्राम किया गया और फिर ५ बजे घूमने निकले। तेल साफ़ करनेका शोधनखाना (Refinery), पार्क आदि का मोटरपर चक्कर लगाया। ढाई साल पहले बाकूको हम देख भी चुके

थे, इसलिए उतनी दिलचस्पी भी न थी, दूसरे समय भी कम था। हाँ, यह हमने ज़रूर फ़र्क़ देखा कि कितनी ही विशाल और भव्य नई गृह-श्रेणियाँ सड़कोंके किनारे खड़ी हो गई हैं। पहले इन जगहोंपर छोटे-छोटे मकान थे। क्रान्तिका बीसवाँ वार्षिकोत्सव ५ दिन पहले गुज़र चुका था। लेकिन अब भी कितनी जगह लाल ध्वजाएँ और कपड़ोंपर लंबे-लंबे लेख टँगे हुए थे। पार्क-कुल्तूर (सांस्कृतिक उद्यान)की तरफ़ जाते वक्त लाल-सेनाके कुछ नए मकान देखे।

यूरोप जाने वाले लोग रात हीको चले गए। मास्कोकी गाड़ी दूसरे दिन (१३ नवम्बरको) दोपहरको जाने वाली थी। १० बजे हमने होटल छोड़ा। सोवियत रेलोंमें यात्रियोंके टिकटपर ट्रेनके साथ गाड़ी और सीट-का नंबर भी लिखा रहता है। गाड़ीमें सीट खाली न हो, और तब भी पैसा लेकर आपके लिए टिकट काट दिया जाय, इसका वहाँ रवाज नहीं। हमें उस दिन तीसरे दर्जेकी सातवीं गाड़ीमें १९ नम्बरकी सीट मिली। हर एक कंपाटमेंटमें दो नीचे दो ऊपर सीटें थीं। एक पूरी बेंच एक आदमी-के लिए रिज़र्व थी। सीटोंको गाड़ीकी चौड़ाईमें रखा गया था, और बग़लसे ट्रेनसे ओर-छोर तक जानेका रास्ता था। हर एक डिब्बेके दोनों तरफ़ पाखाना और मुँह धोनेका स्थान था। हर एक डिब्बेमें दो-दो कंडक्टर थे, जिनका काम था, मुसाफिरके पहुँचते ही टिकट ले लेना और उसकी सीट दिखला देना। अगर मुसाफिरने पैसा दिया हो तो उसकी बेंचपर तकिया और बिछौना लगा देना। चायकी ज़रूरत हो, तो सस्ती चाय लाकर दे देना। दो-दो, तीन-तीन घंटेपर कोठरी, गली, और पाखानेका साफ़ करना भी उनका काम है। टिकटोंको रखनेके लिए उनके पास चमड़ेका एक बेग था, जिसमें गाड़ीके सभी खानोंके सीट के नंबर छोटे-छोटे खानों-पर लगे हुए थे। वह मुसाफ़िरोंके टिकटोंको इन्हीं ख़ानोंमें रख देते थे। हमें जगह नीचे मिली थी। हमारे सामने एक लाल सैनिक बैठा हुआ था जो तुर्क मालूम होता था। सारे डब्बेमें हमारे सिवा कोई

परदेशी न था; और अंगरेज़ी जानने वाला तो सारी ट्रेनमें हमें कोई दिखलाई न पड़ा।

पिछली बार दो साल पहले हम रातको इधरसे गुज़रे थे। और मखच्-कलाके आस-पासकी सूखी भूमि और नंगी पहाड़ियोंको देखकर हमने समझा था कि बाकू तक ऐसा ही होगा। किन्तु यहाँ तो चारों ओर जंगल और हरियाली देखनेमें आ रही थी। जाड़ेके आगमनकी प्रतीक्षा-में वृक्षों और वनस्पतियोंके पत्ते सुनहले हो चुके थे। पंचायती खेतों (= कल्खोज़ = कलेक्टिव फ़ार्म)में अंगूरकी लताएँ पीली-पीली पड़ रही थीं। मीलों लम्बे खेत जुते तैयार थे। वैयक्तिक छोटे-छोटे खेत बहुत कम दिखाई पड़ते थे। हम अभी एसियामें ही जा रहे थे। पंचायती गाँवोंकी सफ़ेद दीवार, दोहरे शीशे वाले जंगलोंके पाँतीसे खड़े मकान देखने हीसे मालूम पड़ता था कि सोवियत्के किसानोंकी अवस्था-में लाल-क्रान्ति ने कितना परिवर्तन कर दिया है।

शाम हो गई थी, जब हम दरबन्द पहुँचे। अँधेरा हो गया था, जब इज़्बरिवश्के स्टेशनके पास ज़मीनसे निकलती ७–८ आगकी ज्वालाओं-को साथियोंने मुझे दिखलाया। पिछली बार जब मैं बाकूकी ज्वाला-माई-को देखने गया था और वहाँ न सिर्फ़ उस हिंदू मठकी कोठरियोंको साधुओं-से शून्य पाया; बल्कि आँगनके बीच पत्थरकी छतरीके नीचे उस ज्वाला कुण्डको भी, जिसमें काँगड़ेकी माईकी बड़ी बहन निकलकर श्रद्धालुओं-को साक्षात् दर्शन देती थीं; और वे उल्लास में आकर उनकी धूप, दीप, नैवेद्यसे पूजा करते थे। लाल क्रान्ति और उसके अग्रदूत बोलशेविकोंने जैसे अन्य मस्जिदों और गिरजोंको सूना कर दिया, वैसे ही बाकूकी ज्वाला-माई-को भी अन्तर्द्धान होनेको मजबूर किया। कहते हैं, काँगड़ेकी ज्वाला-माई-की परीक्षाके लिए अकबर बादशाहने लोहेके मोटे-मोटे तवोंसे उसे ढक दिया, लेकिन धन्य है ज्वाला-माईका प्रताप कि वह सात-सात परतके तवों-को चीरकर बाहर निकल आई। अकबर बादशाह को नतमस्तक हो माई-

की शरणमें आना पड़ा। बाकू वाली माईको बोलशेविकोंने दस वर्ष पहले दबा दिया और सचमुच ही उनके लिए यह बड़ी लज्जाकी बात होती, यदि वह हमेशाके लिए दब जातीं। यहाँ इन सातों आठों ज्वालाओंको देखकर एक भारतीय के नाते तो मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। मैं एक दम बोल उठा—आओ न फिर ज्वाला-माईको दबाओ! देखो, तुमने बाकूमें दबाया और माई सवा सौ मीलपर प्रगट हो गई; एक नहीं आठ आठ ज्वालाके रूप में। कहीं भारतीय हिन्दू जनता इस चमत्कारको देखती, तो जो मेला चारों तरफ़ लगता, उसके सामने कुंभ भी तुच्छ होता। लेकिन इन नास्तिकों-के मुल्कमें ज्वाला-माईकी क्या क़द्र! वह तो कह देंगे—यह तो पेट्रौल-की भूमि है। ज़मीनसे कहीं-कहीं गैस फूट निकलती है; और उसीमें घर्षणसे आग लग जाती है। इसमें कोई दैवी चमत्कार नहीं।

वहीं एक नया मुसाफ़िर तवारिश् (=कामरेड या साथी) अलीके रूपमें हमारे कंपार्टमेंटमें सवार हुआ। थोड़ी ही देरमें वह लाल सैनिकका चिरपरिचित सा जान पड़ने लगा। तवारिश् अलीने अपने कोल्खोज़की बनी अंगूरी शराबकी बोतल निकाली और लाल सैनिकने कोड़ेकी शक्लमें पकाकर गुथा हुआ सूअरका मांस। मुझे भी शामिल होनेके लिए दावत दी गई। मैंने तो पेट भरा होनेका बहानाकरके जान छुड़ाई। दोनों बहादुरोंने मांसके साथ खूब प्याले पर प्याले उँडेले। मैं सोच रहा था, अभी कल तक ये लोग मुसलमान थे और शायद पचीसों पीढ़ियोंसे चले आ रहे थे; और आज इनको हराम-हलाल का कुछ खयाल नहीं। इनके मृत पुरखा क़ब्रमें बैठे क्या कहते होंगे!

बराबर आसमान बादलोंसे घिरा ही रहा। जब तब वर्षा भी होती देख पड़ी। पतझड़का मौसम इधर अक्तूबर-नवम्बरमें होता है और उस समय वर्षा बहुत हुआ करती है। जाड़ेमें सर्दीके मारे यह पानीकी वर्षा बर्फ़के रूपमें परिणत हो जाती है। मेरी रायमें दोन नदी—जो कफ़्काश् और उक्रइन्की सीमा है—वही एसिया और यूरोपकी भी सीमा है।

पिछली यात्रामें मैंने देखा था कि यहींसे हिन्दुस्तानी गायोंकी नसल शुरू होती है। यहींसे तवे और तन्दूरकी रोटी मिलती है। यहींसे हिन्दुस्तानी जूतों जैसे जूते शुरू होते हैं। और यहींसे स्त्रियोंमें पंजाब-जैसा घाघरा भी दिखलाई देता है। इसमें शक नहीं कि जिस तेज़ीके साथ यूरोपीय वेश-भूषा और खानपानकी चीज़ोंका ज़ोरसे प्रचार हो रहा है, उसके कारण पिछली तीन चीज़ें बहुत दिनों तक इस भेद-भावको क़ायम रखनेमें समर्थ न हो सकेंगी।

स्टेशनोंपर मिट्टीके तेलका कीचड़ उछलता सा मालूम होता था। और नई नई इमारतें तो तूफ़ानी वेग सी उठती चली आ रही हैं।

मेरा रूसी भाषाका ज्ञान नहींके बराबर था। गाड़ीके साथियोंमें मेरी भाषा समझ सकने वाला कोई न था; तो भी मुझे अकेलापन अनुभव नहीं हो रहा था। मैं अपने चंद परिचित शब्दों तथा 'रूसी स्वयं-शिक्षक'के सहारे साथियोंसे बातचीत करता रहता था। साथियोंमें एक महिला अन्ना इवानोव्ना कुद्रेश्चेवा थीं। वह लेनिन्ग्राद्की एक रोमनी (जिप्सी) थियेटरकी गायिका नटी थीं। उनका पिता रोमनी था और माँ रूसी। रोमनी लोग मुसलमानोंके राज्य स्थापित होनेसे दो तीन शताब्दी पहले भारतसे पश्चिमकी ओर निकले थे। रोमनी शब्द डोमनीका अपभ्रंश है। अर्थात् हमारे यहाँके चलते-फिरते रहने वाले खाना-बदोश डोम या नट तथा यूरोपके रोमनी या जिप्सी एक ही जातिसे हैं। शताब्दियोंसे ठंडे मुल्कमें रहने तथा रक्त-सम्मिश्रणके कारण रोमनी यूरोपियन जैसे मालूम होते हैं। विद्वानोंने अन्वेषणकर पता लगाया है कि रोमनी भाषा हिन्दी भाषाकी बहन है। इस नाते तवारिश् अन्नासे रोमनी भाषाके जाननेके लिए मेरी जिज्ञासा बहुत अधिक जाग्रत हो उठी थी। लेकिन माँ के रूसी होने के कारण उन्हें रोमनी भाषा मालूम न थी। रूसी भाषामें रोमनी को सिगांस्की कहते हैं। तवारिश् (साथी) अन्ना भी लेनिन्ग्राद् जा रही थीं; इसलिए हमें रूसी भाषा सिखलानेकी ओर उनका खास तौरसे ध्यान

था। रोमनी स्त्रियोंका सौन्दर्य यूरोपमें बहुत मशहूर है। अन्नाकी अवस्था अब ४६-४७ वर्षकी थी, लेकिन इसमें शक नहीं कि यौवनावस्थामें वह पीतर्बुर्गकी श्रेष्ठ सुंदरियोंमें रही होंगी।

दोन् नदीको पारकर हम रोस्तोव् नगरके साथ-साथ उक्रइन्-सोवियत्-साम्यवादी-प्रजातंत्रमें दाखिल हुए। शामको उक्रइन्के एक बड़े शहर खर्कोफ़्को पार किया। पहले यहीं उक्रइन्की राजधानी थी। अब वह प्राचीन नगर कियेफ़में चली गई है। खर्कोफ़्की आबादी १० लाखसे ऊपर है।

छोटे-छोटे स्टेशन तो इधर दीखते ही नहीं, सभी स्टेशनोंकी इमारतें बड़ी-बड़ी हैं। और मुसाफ़िर-खाना, भोजनालय तथा दूसरे कमरोंमें काँच की दोहरी खिड़कियाँ और दोहरे दरवाजे लगे हुए हैं। इन्हें आग जलाकर या गर्म पानीके नलको ले जाकर बराबर गर्म रखा जाता है। १४ तारीखकी शाम तक ज़मीनपर न हमें बर्फ़ का दर्शन हो रहा था, न रेलवे लाइनके आसपास देवदारोंके वृक्ष ही दिखाई पड़ते थे। १५ नवम्बरको हम रूसमें पहुँच गये। सवेरेसे ही हमें योल्का (देवदार) और विर्योज़ा (भोजपत्र)के वन दिखलाई पड़ने लगे। दूर तक बर्फ़की सफ़ेद चादर ज़मीनपर बिछी हुई देख पड़ती थी। ज़मीन यहाँ ऊँची नीची है। मकानोंकी छतें और दीवारोंका कुछ भाग भी बर्फ़से ढँका दिखाई पड़ता था। इधरके गाँवोंके भी मकान कुछ और अधिक अच्छे ढंगके दिखाई पड़ते थे।

हमारे किरायेमें भोजन भी शामिल था। टिकटके साथ भोजनका भी टिकट मिला हुआ था। ट्रेनके बीचमें एक भोजन-गाड़ी लगी हुई थी जहाँ जाकर इच्छानुसार हम भोजन कर सकते थे। पैसा देनेकी जगह हमें एक टिकट फाड़कर दे देना पड़ता था। वैसे एक बारके भोजनमें आठ-दस रूबल (१ रूबल=सात आने)से कम खर्च नहीं होता था। दो बारके भोजन और सवेरेके नाश्तेमें २० रूबलसे कम खर्च नहीं

पड़ता। अर्थात् प्रतिदिन पौने नौ रुपये। देशके बाहर इन्तूरिस्त द्वारा भोजन और यात्राका प्रबन्ध करा लेनेमें यात्रीको बहुत नफ़ा रहता है।

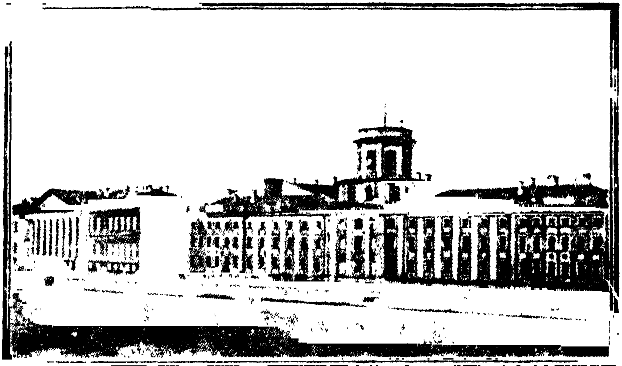
४ बजेके बाद ही अंधेरा मालूम होने लगता था। १० बजे रातको (१५ नवम्बर) हम मास्को पहुँचे। इन्तूरिस्तका आदमी स्टेशनपर आया हुआ था। फाटकसे निकलते वक्त देखा, लोगोंका सामान तुलवाया जा रहा है। ३०-३५ सेर सामान ले जानेमें कोई हर्ज नहीं। लेकिन कितने ही लोग हमारी तरह दो-दो मनका बोझा लेकर चल रहे थे। फिर उनसे किराया क्यों न लिया जाय। इन्तूरिस्तके आदमीने हमारे लिए परदेशी या न जाने क्या क्या कहकर छुट्टी करवाई। मोटर द्वारा हम होटल-नव-मास्को में पहुँचे। वैसे हमने दो दिन मास्कोमें रहनेका विचार किया था और इसीलिए होटल और खाने आदिके लिए दो दिनका प्रबन्ध किया था। लेकिन मास्कोके इन्तूरिस्त ने बतलाया कि हमारा वीज़ा लेनिन्ग्राद्के लिए है, इसलिए हम एक दिनसे अधिक मास्को में नहीं ठहर सकते। हमारे टिकटमें दो दिन तीन-तीन घंटा शहरकी सैर भी शामिल थी। इसलिए हमने एक ही दिनमें ६ घंटा सैर करनेका निश्चय किया। ११ बजे हम एक दुभाषिणीके साथ पोलीतेक्निक् म्यूज़ियम (उद्योगकला-संग्रहालय) देखने गये। एक बजे वहाँसे लौटे। पोलीतेक्निक् म्यूज़ियमके बारेमें हम अलग लिखना चाहते हैं, इसलिए उसके बारे में यहाँ कुछ कहनेकी आवश्यकता नहीं। डेढ़ बजेसे साढ़े चार बजे तक शहर की सैर की। इस सैरमें क्रेमलीन, लेनिन्की समाधि, लाल-मैदान, विश्वविद्यालय, लेनिन् पुस्तकालय, सांस्कृतिक-उद्यान, नये मकान, नाटकागार, दो भूगर्भी रेलें, सभी शामिल थे।

आज ही (१६ नवम्बर) १० बजे रातकी गाड़ीसे हम लेनिन्ग्राद्के लिए रवाना हुए। हमारे कंपार्टमेंटमें सिबेरियाकी एक रूसी तरुणी थी जो मास्कोके मेडिकल कालेजमें वैद्यक पढ़ रही थी, और अपने किसी दोस्तसे मिलने लेनिन्ग्राद् जा रही थी। सवेरे ६ बजे

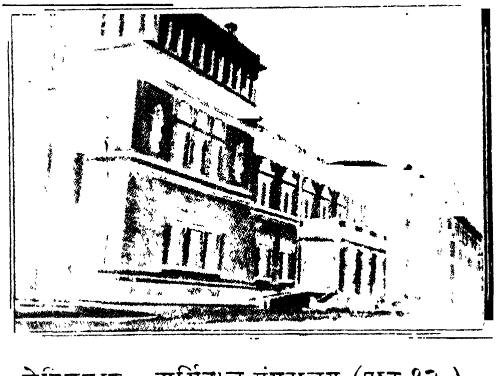
कर १० मिनटपर हमारी गाड़ी लेनिन्ग्राद् पहुँची। जितने ही हम लेनिन्ग्राद्के नजदीक पहुँचते गए, उतनी ही अधिक बर्फ़ भी बढ़ती जाती थी। देवदार और भोजपत्र बर्फ़ीली भूमिके बड़े प्रेमी हैं, इसी-लिए उनके जंगल भी इधर अधिक थे। देवदारको छोड़कर बाक़ी सारे वृक्षोंके पत्ते गिर गये थे और वह देखनेमें सूखे दरख्त-से मालूम होते थे। १० बजे हम होतेल्-यूरोपामें पहुँच गये। पहले हमें दो आदमियोंके रहने लायक़ कमरेमें ठहराया गया, जिसमें पहलेसे एक अमेरिकन ठहरे हुए थे। हमने कहा—हमें अधिक दिन ठहरनेकी आवश्यकता होगी और साथ ही लिखने-पढ़ने और मिलने-जुलने वालों-से काम पड़ेगा, इसलिए अलग कमरा दें तो अच्छा होगा। इसपर ४६ नम्बर की शान्त एकान्त कोठरी मिली। उस वक्त हमें यह नहीं मालूम हुआ था कि हम तीन दिन कम दो महीनेके लिए ठहरने जा रहे हैं। कोठरीमें एक लिखने-पढ़नेकी मेज़, एक खानपानकी मेज, तथा एक चारपाईके साथ छोटी मेज़—तीन मेंज़ें, ६ कुर्सियाँ, १ पलंग, १ सोफ़ा और १ अलमारी थीं। छतके अलावा दो मेज़के लैम्प, एक ठंडी गर्म नलके वाली 'मुँह-धोवनी'का लैम्प, एक कपड़ा बदलने वाली दलीचीका लैम्प, और एक घंटी बजानेपर लाल हो जानेवाला दरवाज़ेके बाहरका लैम्प, कुल ६ लैम्प थे। कमरेके भीतर दो घंटियाँ थीं। एकको बजानेसे खाना लानेवाली महिला आ जाती थी, और दूसरीको बजानेसे कोठरीकी प्रबन्धिका। पाखाने और स्नानका इन्तज़ाम कमरेसे अलग था, जिनपर आस-पासके दूसरे मुसाफ़िरों-का भी अधिकार था। होटलका खर्च चूँकि एकेडेमीने दिया, इसलिए हमको मालूम नहीं कि रोज़ाना क्या देना पड़ता था। वैसे १५ रूबल-से क्या कम देना पड़ता होगा। बाकूमें भी हमारे कमरेमें टेलीफ़ोन था, लेकिन वहाँ हमें उसे इस्तेमाल करनेकी आवश्वकता न थी। यहाँ अपनी मेज़परके टेलीफ़ोनको अकसर हमें इस्तेमाल करना पड़ता था

२. लेनिन्ग्राद् नगर

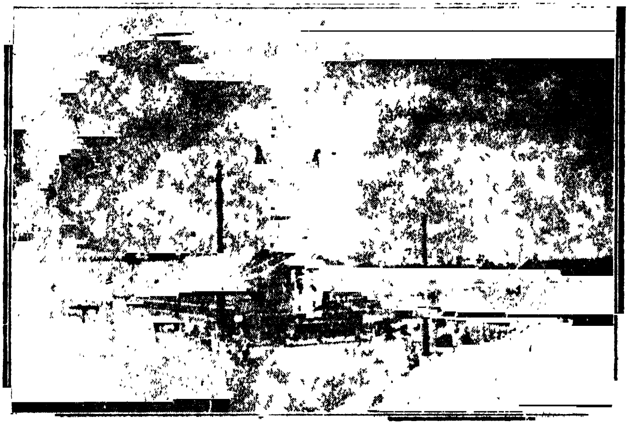
वैसे लेनिन्ग्राद् मास्कोका इतना पुराना शहर नहीं है। प्रथम पीतर्—जिसने कि पश्चिमी यूरोपकी उन्नति—राजनीतिक, सैनिक और आर्थिक उन्नति—को देखकर उसकी नक़ल करना आरंभ किया—ने १७०३ ई०में समुद्रके पास नेवा नदीके किनारे पीतर्-बुर्गके नामसे यह शहर बसाया था। पहले यह जहाज़का बन्दरगाह और बाहरके मुल्कोंसे यातायात सम्बन्ध स्थापित करनेके लिए बनाया गया था। लेकिन १७१४ में जब राजधानी भी मास्कोसे उठकर पीतर्-बर्ग-में आ गई तो इस नगरका महत्त्व बहुत बढ़ गया, और यही रूसका राजनैतिक और सांस्कृतिक केन्द्र हो गया। १८४० के बाद कल-कारखानों-की स्थापना ज्यादा होने लगी। तबसे यह औद्योगिक केन्द्र भी बन गया। १७१४ से १९१८ तक—२०४ साल तक पीतर्-बुर्ग रूसकी राजधानी रहा। इसलिए इसका महत्त्व बहुत ज्यादा था। दिन पर दिन तरक्की होती गई। ज़ारों, राजकुमारों तथा दूसरे अमीरोंने करोड़ों रुपये लगाकर बड़े-बड़े महल खड़े किये। शहरकी स्थापनाके वक्त पहले हीसे योजना बना ली गई थी। इसलिए नगर बहुत सुन्दर बना। बाल्तिक् समुद्रके किनारे होनेके कारण इसकी औद्योगिक प्रगतिका ज्यादा होना आवश्यक था। यहाँसे जहाज माल लेकर दूसरे मुल्कोंको जाया करते थे। पीतर्-बुर्ग बहुत सी राजनैतिक हलचलोंका केन्द्र रहा है। पीतर्-बुर्ग वह अखाड़ा था जिसमें बड़े महत्त्वकी राजनैतिक घटनाएँ घटीं। १८२५में अलेक्सन्द्र प्रथमके शासन कालमें ज़ारकी निरंकुशताके खिलाफ़ धनिक ज़मींदारोंने बग़ावत की। इसे दिसम्बरी विद्रोह कहते हैं। तबसे लेकर १९१७ तक कई उपद्रव और विद्रोह



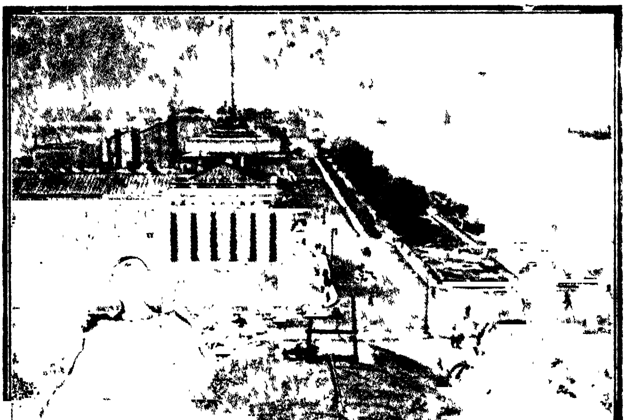
लेनिनग्राद्—विश्वविद्यालय (पृष्ठ १२)



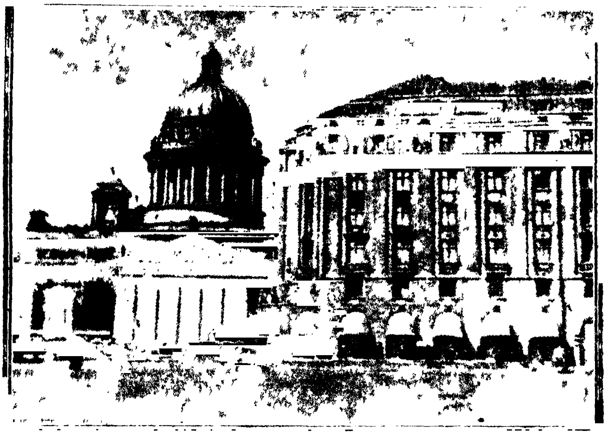
लेनिनग्राद्—अर्मिताज् संग्रहालय (पृष्ठ १२)



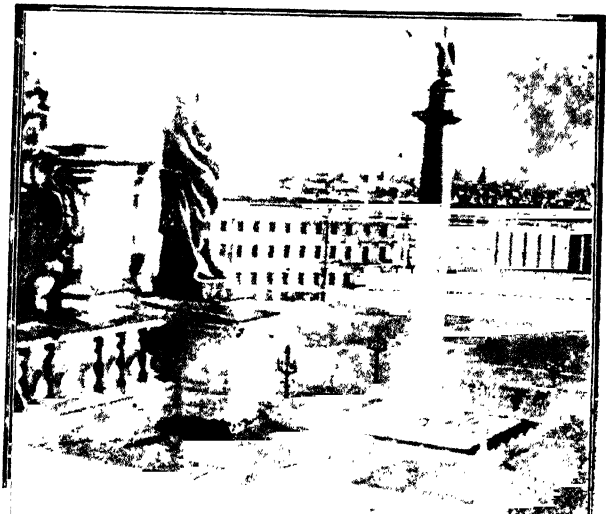
लेनिन्ग्राद्—नापिक स्तम्भ (पृष्ठ १२)



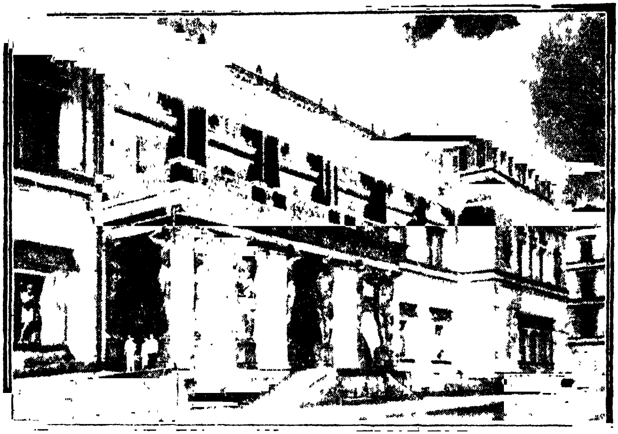
लेनिन्ग्राद्- नेवा-तट (पृष्ठ १२)



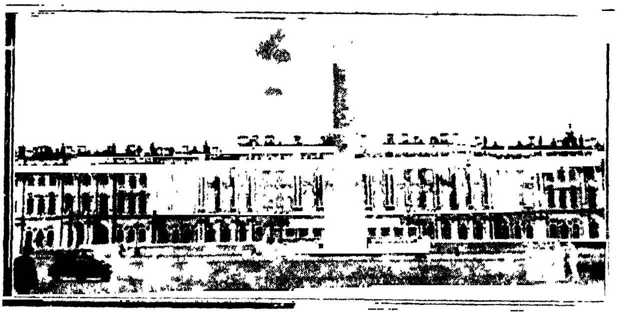
लेनिनग्राद्—ईसाई की गिरजा (पृष्ठ १३)



उरित्सकी चौक (पृष्ठ १४)



लेनिनग्राद्—शरद्-प्रासाद (पृ० १५)



शरद्-प्रासाद (पृष्ठ १५)

हुए, जिनमें १६०५की क्रान्ति तथा १६१७की प्रथम और द्वितीय क्रान्ति (लाल क्रान्ति) बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। १६०५में पहले पहल मज़दूरोंने अपने हक़के लिए हथियार उठाया। जबकि ज़ार निकोला-ने आवेदन-पत्र लेनेके लिए गोलियोंसे उनका स्वागत किया। पेत्रो-ग्राद् ही, (महायुद्धसे पूर्व)का पीतर्-बुर्ग, इस क्रान्तिका केन्द्र रहा। १६१७की ७ नवम्बरको यहींपर बोलशेविकोंने पूंजीवादका शासन हमेशाके लिए खतमकर समाजवादी सरकारकी स्थापना की। यहीं लेनिन्‌ने आदिम सरकारी खरीते निकाले थे। यद्यपि १६१८ में अधिक सुरक्षित और केन्द्रीय समझकर राजधानी लेनिन्‌ग्राद्‌से उठकर मास्को चली गई, लेकिन लेनिन्‌ग्राद् अब भी सोवियत् उद्योग और संस्कृति-का केन्द्र बना ही हुआ है। १६२४में सोवियतोंकी कांग्रेसने शहरका नाम बदलकर अपने महान् नेता लेनिन्—जो कि कुछ ही पहले मर चुका था—के नामपर लेनिन्‌ग्राद् रक्खा। लेनिन्‌ग्राद्‌की हर एक सड़क, हर एक गली अपना अलग-अलग इतिहास रखती है। कहीं पुश्किन् और लेर्मन्तोफ्, टाल्स्टाय् और चेखोफ़्की स्मृतियाँ पड़ी हुई हैं; और कहीं सैकड़ों हँसते-हँसते फाँसीपर लटकने वाले क्रान्तिकारी युवकों की जीवनदायिनी जीवनियाँ अंकित हैं।

लेनिन्‌ग्राद्‌को प्रथम पीतर् ने अपना सारा ऐश्वर्य लगाकर बनाना आरंभ किया था और दो शताब्दियों तक जहाँ एक ओर रूसी साम्राज्य-की अपार सम्पत्ति इसका निर्माण करनेके लिए मौजूद थी, वहाँ रुपयेको पानीकी तरह बहाकर यूरोपके चोटीके इंजीनियर और कलाकार, इस काममें लगाये गये थे। मीलों तक चले गये यहाँके अनेकों पुराने प्रासाद और धनिकोंके घर अपने स्थापत्यकी विचित्रता और सौन्दर्यके लिए म्यूज़ियम-से मालूम होते हैं। सड़कें, उद्यान, चौक, सबमें बड़ी शाहखर्ची और सुरुचिका परिचय दिया गया है। नेवा नदी और उसकी अनेक नहरोंके जालके कारण इसे उत्तर का वेनिस् कहते हैं।

प्रथम पीतरने १७०३में लेनिन्ग्राद्की स्थापना की, यह हम कह चुके हैं। उन्नीसवीं सदीके आरम्भमें पीतर्-बुर्ग राजनैतिक और सांस्कृतिक केन्द्र स्थान ही नहीं था, बल्कि वह यूरोपके बड़े बड़े व्यापारिक केन्द्रोंमें समझा जाता था।

आज भी लेनिन्ग्राद्का महत्त्व इसीसे मालूम हो सकता है कि यहाँ कई वैज्ञानिक प्रतिष्ठान (इन्स्तीत्यूत्) और संस्थाएँ हैं। १९३३में सोवियत्की सारी औद्योगिक उपजका १४ सैकड़ा यहाँ तैयार हुआ था। लेनिन्ग्राद्का घेरा १२१ किलोमीतर (८० मीलसे ज्यादा) है। और इस तरह घेरेमें दुनियाके शहरोंमें उसका नम्बर तीसरा है। अव्वल लन्दन और दूसरा न्यूयार्क। १९३२ में जनसंख्या ३० लाख थी और लाल क्रान्तिके बाद जनसंख्याका डेढ़ गुनाके करीब बढ़ना बतलाता है कि क्रान्तिने लेनिन्ग्राद्को उन्नत करने में सहायता की है।

लेनिन्ग्राद्का उरित्स्की चौक संसारका सबसे बड़ा चौक है। यद्यपि देखने वालेको वह बहुत छोटा मालूम होता है। और उसकी वजह यह है, कि आस-पासकी सभी इमारतें बहुत ऊँची हैं। और तुलना करनेमें आदमीकी नजर ग़लती खा जाती है। चौकके बीचमें संगखारेका एक विशाल स्तम्भ है। यह संसारका सबसे बड़ा पाषाण-स्तंभ है। ऊँचाई ५० मीतर (१५०फीटसे अधिक) और वज़न २२४ टन है। यह सारा खंभा एक पत्थरका है। आस-पासकी इमारतोंकी विशालताके कारण यह भी देखनेमें छोटा मालूम होता है। स्तम्भके ऊपर एक देवदूत (फ़रिश्ता) की भाव-पूर्ण मूर्ति है। नेपोलियनकी पराजयके उपलक्ष्यमें ज़ार अलेक्सन्द्रने इसे बनवाया था। शिल्पी था मोत्फेराँ।

उत्सवोंके समय शहरके बड़े-बड़े जलूस आकर यहीं इकट्ठे होते हैं और उस वक्त सर्चलाइट की तेज रोशनी और लाउड-स्पीकरकी वजहसे यह लाखोंकी जमा हुई भीड़ दर्शकपर अद्भुत प्रभाव डालती है। चौक-

के चारों तरफ़की इमारतोंको बनानेमें ऐसे खयाल रखा गया है कि जिसमें सब मिलकर स्थानपर एक खास सौन्दर्य पैदा करें।

चौकके एक तरफ शरद्-प्रासाद है। ज़ार इसीमें रहा करता था। इसे १७६२ में शिल्पी रास्त्रेली ने बनाया था। इसमें १००० कमरे और हाल हैं। १९४५ खिड़कियाँ और १७८६ दरवाज़ें हैं। प्रासादकी छत ८ एकड़ ज़मीन घेरती है। ज़ारके वैयक्तिक कमरोंकी सजावटको अब भी वैसे ही कायम रखा गया है। इसके कितने ही हालोंमें क्रान्ति-संग्रहालय है, जिसके देखनेके लिए हर साल १० लाख दर्शक आते हैं। शरद्-प्रासादका कुछ भाग एर्मिताज़ (Hermitage) म्यूज़ियम है जो कि दुनियाके कला-सग्रहालयोंमें बहुत ऊँचा स्थान रखता है। इसका मुक़ाबला लन्दनका ब्रिटिश म्यूज़ियम और पैरिसके लूब्रे ही कर सकते हैं। शरद्-प्रासादके सामने एक अर्द्ध-वृत्ताकार बहुत विशाल इमारत है, इसे शिल्पी रोसीने १८२८में बनाया था। लम्बाई ५३० मीतर है (१७०० फीटके करीब) और इस प्रकार फ्रांस के वेर्सोई प्रासादसे थोड़ी ही कम है।

९ जनवरी १९०५ तक शरद् प्रासाद ज़ारका निवासस्थान रहा। उसी दिन (ख़ूनी रविवारके दिन) मज़दूर अपना आवेदन-पत्र लेकर जलूसके साथ ज़ारकी सेवामें आ रहे थे और यहीं रहते हुए ज़ारने विशाल चौकमें खड़ी जनताके ऊपर गोली चलवाई थी। यह वही ज़ार निकोला (द्वितीय) था, जिसे १९१८ में उसी तरह परिवार सहित जनताकी गोलियोंका शिकार बनना पड़ा। १९०५में यद्यपि ज़ार अपार क्रूरता द्वारा जनताको दबानेमें सफल हुआ, लेकिन फिर उसे शरद्-प्रासादमें रहनेकी हिम्मत न हुई; यद्यपि महलके भीतरके चहबच्चोंमें शरीर रक्षाके लिए ३ पूरी पलटनें और एक शरीर-रक्षक सेना मौजूद थी। वह इस प्रासादको छोड़कर चार्स्कोयेसेलो (ज़ार का गाँव)—जिसे आजकल देत्स्कोयेसेलो (बच्चों का गाँव) कहते हैं—के महलमें चला

गया। १२ साल बाद फिर पुराने चौकमें बन्दूकोंकी आवाज़ हुई। अबकी बार भी वे ही कमकर थे, लेकिन अब वे आवेदन-पत्र लेकर किसी ज़ारको देने नहीं आये थे। ज़ार तो आठ महीने पहले ही गद्दीसे उतारा जा चुका था। हाँ, शरद्-प्रासादमें रहने वाले बनियों और ज़मींदारोंसे अधिकार छीननेके लिए वे बन्दूकोंके साथ आये थे। धनिकोंकी सरकारने पूरी मोर्चाबन्दी कर रखी थी, लेकिन ७ नवम्बरको मज़दूरोंने ज़ारके प्रासादको दखल ही नहीं कर लिया बल्कि उसके साथ-साथ शासन मज़दूर-सरकारके हाथमें चला गया।

शरद्-प्रासादकी एक तरफ़ विशाल उरित्स्की चौक है, और दूसरी तरफ़ नेवा नदी। नदीका किनारा संगखारेसे बँधा हुआ है। प्रासादकी बग़लसे जानेवाली सड़कपर पुल है, जिसके उस पार लेनिन्ग्राद्का विश्वविद्यालय तथा दूसरी शिक्षण-संस्थाएँ हैं। जाड़ेके दिनोंमें नेवा जम जाती है और ऊपर बर्फ़ पड़कर उसे विशाल कर्पूर-राशि सी बना देती है। पुराने ज़मानेमें जाड़ेके दिनोंमें नेवा पर गाड़ियाँ और दूसरे यान चला करते थे। अठारहवीं सदीमें रानी एनीने नदीके ऊपर बर्फ़का महल बनवाया था, जिसे बर्फ़की ही मूर्तियों और आभूषणोंसे सुसज्जित किया गया था। रानी के कुछ 'मूर्ख' (विदूषक) बन्द होकर यहीं ठंडे हो गये थे।

शरद्-प्रासादकी बग़लमें पुलकी तरफ़ जानेवाली सड़कको पार करनेपर नौसैनिक-संग्रहालयकी विशाल इमारत है। इसे १८२३में शिल्पी ज़खारोफ़ने बनाया था। यह ४४० मीतर (प्राय: १४०० फ़ीट) लंबी इमारत है। बीचमें सोनेका सुन्दर गन्धोला बहुत दूरसे दिखलाई पड़ता है। यह ६० मीतर (प्राय: ३०० फ़ीट) ऊँचा है। उसके ऊपर एक सोनेका जहाज़ है, जो देखनेमें यद्यपि छोटा मालूम होता है, लेकिन है १३ फ़ुटके करीब (४ मीतर)।

पहले इस इमारतको जहाज़ बनानेके डकके वास्ते तैयार किया गया



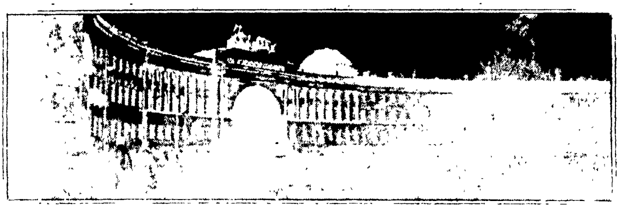
लेनिन्‌ग्राद्‌—फ़िनलंद स्टेशन (पृ० १२)



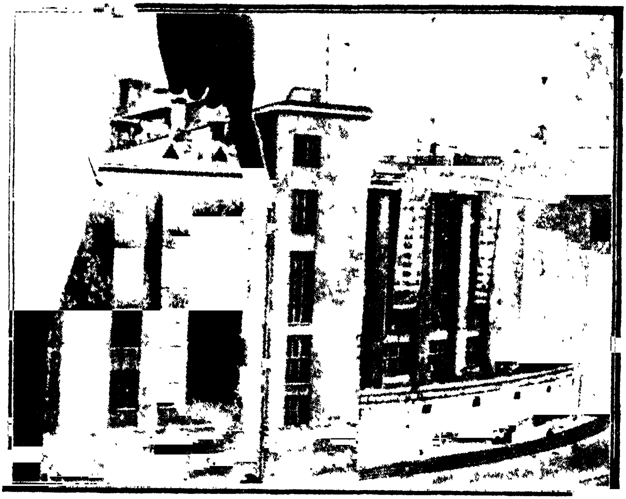
लेनिन्ग्राद्—नौसैनिक-संग्रहालय (पृ० १२)



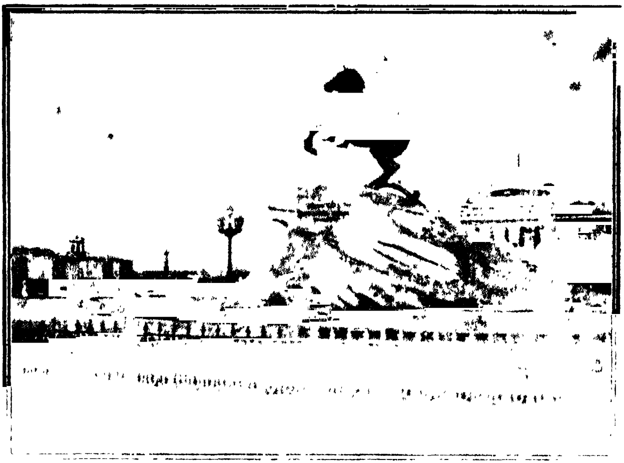
लेनिन्ग्राद्—घोड़ा और सवार (पृ० १२)



लेनिन्ग्राद्—शरद्-प्रासाद के सामने (पृ० १२)



लेनिन्ग्राद्—सांस्कृतिक-प्रासाद (पृ० १२)



लेनिन्ग्राद्—महान पीतर (पृ० १२)

था। इमारतके भीतर जहाज़ बनते थे और फिर एक खास नहरसे नेवामें उतारे जाते थे। यही जगह है जहाँपर प्रथम पीतरने अपना ५० तोपोंवाला जहाज़ बनवाया था। आजकल इस इमारतमें नौसैनिक-संग्रहालय है।

नौसैनिक-संग्रहालयकी एक तरफ़ नेवा नदी है और दूसरी तरफ़ उद्यान। उद्यानके छोरसे लेनिन्ग्रादकी सबसे बड़ी सड़क नेव्स्की—आजकल २५ अक्तूबर एवेन्यू—आरम्भ होती है। यह सड़क ४,५ किलोमीतर (६ मीलसे ऊपर) लम्बी है। इसी सड़कपर होतेल्-यूरोपाके पास कज़ान्स्की-सबोर् मशहूर गिर्जा है। इसे १८११ में शिल्पी वोरोनिखिन्ने अपने मालिक ग्राफ़ (कौंट) स्त्रोगानोफ़्के लिए बनाया था। सामनेकी तरफ़ इसके १४४ विशाल स्तम्भ—जो अर्द्ध वृत्ताकार बरांडेमें खड़े किये गये हैं—इमारतकी शोभाको और बढ़ा देते हैं। और इनकी ही विशालताकी वजहसे इमारत उतनी बड़ी मालूम नहीं होती, जितनी वह है। बाहर बगीचेके ढले लोहेके कठघरे भी बड़े सुन्दर हैं। बागमें ग्राफ़् स्त्रोगानोफ़्की मूर्ति है। लेकिन उसकी आत्मा स्वर्गमें बैठी बैठी क्या कहती होगी, जब वह देखती होगी कि ईसा और उसकी माताको प्रसन्न करनेके लिए गरीबोंका लाखों मन खून चूसकर जिस इमारतको उसने बनवाया था, उसे अब धर्म-विरोधी (धर्म-इतिहास) म्यूज़ियमके रूपमें बदल दिया गया है; और उसके भीतर जाकर आदमी यही खयाल लेकर लौटता है कि धर्मके समान झूठ और धोखा तो पतितसे पतित व्यक्ति भी नहीं कर सकता।

अक्तूबर-एवेन्यू द्वारा कज़ान्स्की गिर्जेसे और आगे चलनेपर फोन्तन्का नदीपर अवस्थित अनिचूकिन् पुल आता है। इस पुलके ऊपर मूर्ति-शिल्पी क्लोत्के बनाये पीतलके ४ अद्भुत घोड़े हैं। शिल्पीने अश्वजातिके सौंदर्य और शक्तिको निचोड़कर उनमें रख दिया है।

घोड़ोंके पास विजयी सिकन्दरकी मूर्ति उनका दमन करती हुई दिखाई गई है।

लेनिन्ग्रादका अक्षांश ६२° है जिसके कारण फरवरीमें यहाँ श्वेत-रात्रि होती है। उसी समय ध्रुवके पीछे छिपे सूरजकी चमक इतनी अधिक पहुँचती है कि सारी रात कुछ मिनटोंको छोड़कर बिना दीपक के सहारे आदमी अखबार पढ़ सकता है।

अक्तूबर एवेन्यू वोस्तानियाँ-चौकमें जाकर समाप्त होता है। यहीं मास्को जानेवाली रेलवेका स्टेशन है। वोस्तानियाँका अर्थ है विद्रोह। १९१७ की प्रथम क्रान्ति—मार्च (फ़रवरी)में हुई थी—का सूत्रपात यहीं हुआ था। एक कसाक सिपाहीने एक पुलीस अफसरको यहीं मारा था। और उसके बाद विद्रोह मच गया। चौकमें ज़ार अलेक्सन्द्र तृतीयकी मूर्ति है।

नौसेना-म्यूज़ियमके पास नेवा नदीसे कुछ हटकर प्रथम पीतरकी घोड़े पर चढ़ी मूर्ति है। इस मूर्तिको कलाकार फलकोनेतूने बनाया था। घोड़ा अपने पिछले पैरपर खड़ा है। मूर्ति अत्यन्त भावपूर्ण है। इस विशाल मूर्तिको खड़ा करनेके लिए संगखारेकी चट्टानकी चट्टान समुद्रके तटसे यहाँ लाई गई। चट्टान इतनी भारी थी कि ४०० आदमी रोज़ खींचनेमें लगे रहे, तब १ वर्षमें इस जगह ला सके। वह प्रतिदिन २०० मीतर (७०० फ़ीटके करीब)से अधिक नहीं खींच सकते थे। चट्टान इतनी बड़ी थी कि उसकी दरारों में वृक्ष उगे हुए थे।

इस मूर्तिके पास ही सिनेटका विशाल चौक है। १४ दिसम्बर १८२५में दिसम्बरी विद्रोह यही हुआ था। उस वक्त प्रगतिशील धनी ज़मींदारोंने भड़काकर शरीर-रक्षकोंको ज़ार निकोला प्रथमके खिलाफ़ लड़ाना चाहा था। विद्रोहियोंपर तोपें चलाई गईं थीं। उनके पाँच नेता फाँसी चढ़ा दिये गये। एक सौसे ज्यादा रईसोंको या तो पदच्युत कर दिया गया अथवा विदेश या सिबेरियामें निर्वासित

कर दिया गया। बड़ी निर्दयताके साथ इस विद्रोहका दमन हुआ था।

इसाइकी (आइज़क्)-गिर्जा इसी चौकमें खड़ा है। शिल्पी मोत्-फेराँने ४० (१८१७ से १८५७ ई०) सालमें इसे बनाया था। १० हज़ार मज़दूर रोज़ काम करते थे। उस समय मज़दूरी और सामान दोनोंके सस्ता रहते भी २ करोड़ ८० लाख रूबल इसपर ख़र्च आया था। मुख्य गन्धोला (गुम्बद) ३०० फ़ीट ऊँचा है और सामने से चौड़ाई ३०० फ़ीट है। (इससे एक लट्टू लटकता है जो कि अपने हिलनेकी चालसे पृथ्वीकी गतिको बतलाता है।) इस गिर्जेके भीतर ४५ फ़ीट लम्बे ११२ संगखारेके विशाल स्तम्भ हैं। रोमके अलेक्सन्द्र और ट्रोजेन खम्भोंको छोड़कर ससारमें दूसरे इतने ऊँचे स्तंभ नहीं हैं। एक एक खम्भेका वज़न १०० टन है। गिर्जेके भीतर १२००० आदमी बैठ सकते हैं। संगमर्मर, संगमूसा तथा दूसरे प्रकारके कितने ही क़ीमती पत्थर इसमें लगाये गये हैं। छतपर जानेसे सारा लेनिन्ग्राद् शहर दिखलाई पड़ता है।

इसाइकी गिरजेके पीछेकी ओर वोरोफ्स्की चौक है। यहाँ ज़ार निकोला प्रथमकी अश्वारूढ़ मूर्ति है। यह भी शिल्पी क्लोत्की बनाई हुई है। इसमें घोड़ा पिछले पैरों पर खड़ा है। मूर्तिके पासमें अस्तोरिया होटलकी विशाल इमारत है। इस चौकसे करीब ही पावलोव्स्की बैरक है। यहाँ पहले जारके शरीर-रक्षक रहते थे। ज़ार पावल (प्रथम) चुनकर नीली आँखों और लम्बी नौकोंवाले जवानोंको ही शरीर-रक्षक बनाकर रखता था। १८१८ में यह इमारत बनी थी। आजकल इसमें बिजलीके पावर-स्टेशनके केन्द्रीय प्रबन्धका दफ्तर है। मोयिका नदी पार करनेपर रूसी-म्यूज़ियमकी सुन्दर इमारत मिलती है। इसके पासके बाग़के दरवाज़ेके क़रीब रक्त-मन्दिर है। यह उस जगह बनाया गया है, जहाँ ज़ार अलेक्सन्द्र द्वितीय क्रान्तिकारियोंके बमका शिकार हुआ था। जारका शरीर चिथड़े चिथड़े होकर उड़ गया था। सिर्फ

फ़र्शके पत्थर और बाँधके कठघरेपर ख़ून लगा हुआ था। इन्हींको मन्दिरके भीतर रखा गया है।

इंजीनियरिंग-प्रासाद दूसरी बड़ी इमारत है। यहीं पर पावल प्रथम अपने पुत्र अलेक्सन्द्र प्रथमकी आज्ञासे दरबारियों द्वारा मारा गया था। इस प्रासादको शिल्पी ब्रेनने १७३४ में ज़ारकी आज्ञासे बनाया था। हत्याके डरके मारे ज़ारने प्रासादको खाईंसे घिरवाया था।

प्रथम पीतरने अपना पहला महल ग्रीष्म-उद्यान (क्रान्ति-चौकके पास) १७१८ में बनवाया था। शिल्पीका नाम था त्रेसर्नी। इस महलके भीतर पीतरके वक्तके असबाब और सजावट अभी तक मौजूद हैं।

शरद्-प्रासादके पासवाले पुलको पार करनेपर विश्वविद्यालय और दूसरी शिक्षण-संस्थाएँ मिलती हैं। यहाँ पंखदार दो ऊँचे मीनार हैं, जो नेवाकी एक शाखाके किनारे खड़े हैं। इससे थोड़ा आगे जानेपर सार्वजनिक पुस्तकालय है। पुस्तकोंकी संख्या ५५ लाखसे ऊपर है, जिनमें २½ लाख हस्तलिखित हैं। लेनिन्ग्राद् समुद्र और छोटी छोटी कितनी ही नदियोंके किनारे बसा है। क्रास्ने-ज़ोरी (रक्त-उषा) सड़कसे जानेपर आदमी पेत्रो-पाव्लोव्स्की किलेमें पहुँचता है। 'समानता-पुल'की बाईं तरफ़ नेवा नदीके तटपर यह किला अवस्थित है। नगरके निर्माणके साथ साथ इसका भी निर्माण १७०३ में हुआ था। पहले हीसे राजनैतिक कैदी इसमें रखे जाते थे। सबसे पहला कैदी था पीतर प्रथमका लड़का अलेक्सन्द्र। उसके बादकी दो शताब्दियोंमें सैकड़ों क्रान्तिकारी इसमें रखे गये। सीड़वाले अँधेरे भुँइघरोंमें रखकर इन कैदियोंके ऊपर बड़ा अत्याचार किया जाता था। बहुतेरे उनमेंसे मर जाते थे या पागल हो जाते थे। किलेमें वह जगह है, जहाँ फाँसी दी जाती थी। इस तरह मरे हुओंकी सिर्फ संख्या भर मालूम हो पाती थी।

दिसम्बरी-विद्रोह (१८२५)से लेकर नरोदोवोल्त्सी (जनताकी इच्छा; उन्नीसवीं शताब्दीका उत्तरार्द्ध) तकके राजनैतिक कैदी यहीं रखे जाते थे। गोर्की यहीं कैद किया गया था। लेनिन्‌का बड़ा भाई अलेक्सन्द्र उल्यानानोफ् फाँसीपर चढ़ानेके पहले इसी क़िले में रखा गया था। क़िलेके बीचमें पेत्रो पावूलोव्स्की गिर्जा है। इसे १७७३ में शिल्पी त्रेज़र्नीने बनाया था। प्रथम पीतरसे लेकर अलेक्सन्द्र तृतीय (अन्तिम जारसे पहलेका) तक सारे जार यहीं दफ़नाये गये हैं। गिर्जेका गन्धोला १२२½ मीतर है और इसके ऊपर एक पर-दार फरिश्तेकी मूर्ति है, जिसके पंख साढ़े आठ मीतर (६ गजके करीब) लम्बे हैं।

इस क़िलेकी दाहिनी ओर क्रान्तिचौक है, जिसके सामने एक छोटा सा मकान है, जिसमें अन्तिम ज़ार निकोलाका कृपापात्र एक अभिनेता क्शेसिन्स्की रहता था। फरवरी १९१७की क्रान्तिके बाद ही इस घरमें बोलशेविक पार्टीकी केन्द्रीय समितिका कार्यालय चला आया। विदेशसे आनेपर स्टेशनसे सीधे लेनिन् यहाँ आये और रोज़ मकानके सिंहपंजर (उभड़ी हुई बड़ी खिड़की) पर खड़े होकर व्याख्यान दिया करते थे, जिसके सुननेके लिए मज़दूर और सैनिक हज़ारोंकी तादादमें जमा हुआ करते थे।

विद्रोह-संगठनका कार्यकारी मंडल भी यहीं रहता था। आजकल इस मकानमें वृद्ध-बोलशेविक-सभाका कार्यालय है।

इस चौकमें एक लम्बी चौड़ी नई इमारत बनी है। यह भूतपूर्व राजनैतिक कैदियोंका समान-गृह (कम्यून्-गृह) है। पास हीमें प्रथम पीतरका दोमिक (कुटिया) है, जिसमें पीतर्-बुर्ग बसनेके वक्त पीतर एक साल रहा था। कुटियाको उसी हालतमें रखा गया है। ज़ारके हाथके कितने ही औज़ार और सामान भी रखे गये हैं। कुटिया-की रक्षाके लिए उसके ऊपर पत्थरका मकान बना दिया गया है।

* * *   * * *

क्रान्तिके बाद लेनिन्ग्रादमें भारी परिवर्तन हुआ है। शहरके केन्द्रीय स्थानों और सुन्दर सड़कोंपर थोड़ेसे धनी लोगोंके रहनेके मकान थे। बाकी सभी जनता—मज़दूर—लकड़ीके छोटे छोटे घरौंदोंमें शहरके बाहर फ़ैक्टरियोंके पास रहा करती थी। क्रान्तिके बाद जो मकानोंका नवनिर्माण हुआ है, उसने उन घरौंदोंका पता नहीं छोड़ा। अब वहाँ चार चार पाँच पाँच तल्लेकी बड़ी बड़ी इमारतें हैं। पानीके नल, बिजली और पाखानेके पंपका इंतज़ाम है। हर जगह क्लब, स्कूल, बाग़ बग़ीचे हैं।

* * *   * * *

लेनिन्ग्राद्का फ़िन्लैंड-स्टेशन एक ऐतिहासिक स्थान है। विदेशसे लौटकर आनेपर लेनिन् इसी स्टेशनपर उतरे थे; और यहीं मज़दूरों और सैनिकोंके सामने उन्होंने अपना पहला व्याख्यान दिया था। व्याख्यानकी समाप्तिपर उन्होंने कहा था—

"चिरंजीव, सार्वभौम समाजवादी क्रान्ति !"

स्टेशनके चौकमें लेनिन्की एक सुन्दर मूर्ति स्थापित है। उसके नीचे लेनिन्के उक्त वाक्य उत्कीर्ण हैं।

पश्चिमी यूरोपके जाने वाले मुसाफ़िरोंको लेनिन्ग्राद्के वर्सावा स्टेशनसे जाना पड़ता है। इससे आगे बाल्तिक् स्टेशन है। जहाँसे बिजलीकी रेल पीतर्-होफ़को जाती है। यहाँ हड़ताल-चौक है। यहीं नार्व्स्की विजय-मेहराब है, जिसे नैपोलियनके विरुद्ध विजय प्राप्त करनेके उपलक्ष्में १८३४ में बनवाया गया था। शिल्पीका नाम था स्तासोफ़्। चौकके पासकी बाकी इमारतें हालमें बनी हैं। मेहराबकी बांई ओर नार्व्स्की ज़िलेका गोर्की-संस्कृति-भवन है। सारी इमारत सीमेंट और लोहे-की है। यह लाल पुतिलोफ़् फ़ैक्टरीके कमकरोंकी प्रेरणासे बनाई गई है और सारा ख़र्च उन्होंनेही दिया है। जिस जगह यह इमारत खड़ी है,

वहाँ पहले एक शराबकी भट्ठी थी, जहाँ मज़दूर हफ्तेकी कमाई एक दिनमें पी आते थे।

नाव्स्की मेहराबकी दूसरी तरफ़ विशाल क्रीड़ा-क्षेत्र है। इसीके पास नाव्स्कीका भोजनालय है। इस इमारतके एक ओर हर तरहकी चीज़ोंके बड़े बड़े क्रय-भंडार हैं और बाक़ी हिस्सेमें भोजन-शालाएँ और विश्रामगृह। इस भोजन-शालामें १ लाख ६० हज़ार परोसे प्रतिदिन तैयार होते हैं और सारे ज़िलेके कमकर यहाँका खाना खाते हैं। अन्य सार्वजनिक भोजनालयोंकी तरह यहाँभी सब काम मशीनोंसे होता है। लेनिन्ग्राद्के सभी भोजनालयोंमें ४ साल पहले प्रतिवर्ष ७० करोड़ परोसे तैयार होते थे।

लेनिन्ग्राद्में निरक्षरता बिलकुल नहीं है। हर एक विद्यार्थी को ६ सालकी निःशुल्क अनिवार्य शिक्षा मिलती है। भिन्न भिन्न जातियोंको उनकी अपनी भाषामें शिक्षा दी जाती है।

लेनिन्ग्राद्के दर्शनीय स्थानोंमें स्मोल्नी भी एक है। स्मोल्नी गिर्जेको शिल्पी रस्त्रेलीने १७३५ में बनाया था। इसके पास स्मोल्नी-की विशाल इमारत है। इसमें पहले अमीरोंकी लड़कियाँ पढ़ा करती थीं। लाल क्रान्तिके समय सैनिक क्रान्ति-कारिणी-समितिका हेड क्वार्टर यहीं पर था। समिति रात-दिन क्रान्तिके संचालनका काम करती थी। ८ नवम्बर १९१७ ई०से नई स्थापित सोवियत् सरकारका मंत्रिमंडल यहीं चला आया। द्वितीय सोवियत्-कांग्रेसकी वह रात वाली ऐतिहासिक बैठक यहीं हुई थी, जिसमें सोवियत्-शासन-स्थापनाकी घोषणाकी गई थी। २८० नम्बरके कमरेमें अबभी लिखनेकी एक मेज़, एक सोफ़ा, एक चारपाई पड़ी है। इसी कमरेमें रहकर क्रान्तिके प्रथम दिनोंमें लेनिन् काम करते थे।

३. लेनिन्ग्राद्में दो मास

१७ नवंबरको जल-पानके बाद हमने डाक्टर श्चेर्बात्स्कीको फ़ोन किया। गिर जानेसे उनके पैरमें चोट आगई थी; और डाक्टरोंने प्लास्तर लगाकर उन्हें चारपाईपर लिटा दिया था। आचार्य श्चेर्बात्स्कीने न आ सकनेके लिए अफ़सोस प्रकट किया। मैंने सात बजे शामको स्वयं आनेकी सूचना दी। पता और ट्रामका नम्बर लिख लिया और पथ-प्रदर्शकके बिना ही ७ नम्बरकी ट्राम पकड़कर चल पड़ा। यह मालूम था कि लेनिन्ग्राद्में कहींके लिए भी एक बार ट्रामपर चढ़नेका १५ कोपेक् (१ रूबल = १०० कोपेक् = सात आना) लगता है। ट्रामपर बैठ जानेपर टिकट बेचनेवाली महिलासे मैंने स्थानके बारेमें पूछा। संयोगसे उसी ट्राममें एक वृद्धा जारही थीं, जो डाक्टर श्चेर्बात्स्कीसे परिचित थीं, और जिन्हें जाना भी उनके मकानके पास था। उन्होंने मुझे अजनबी और भाषासे अल्प-परिचित जानकर वहाँ तक पहुँचा देनेका वचन दिया। ट्राम 'नेव्स्की प्रास्पेक्टस' (अक्तूबर सड़क) नामक लेनिन्ग्राद्की प्रधान सड़कसे होती हुई, ज़ारके 'शरद्-प्रासाद' की बग़लसे नेवा नदीको पारकर विश्वविद्यालय-क्षेत्रमें घुसी। नदीके तट ही तट दूर तक जाकर एक जगह उतर पड़े और फिर थोड़ा चलकर वृद्धाने मुझे आचार्य श्चेर्बात्स्कीके मकानपर पहुँचा दिया। इस प्रकार बिना किसी दिक्क़तके मैं आचार्य श्चेर्बात्स्कीके निवास-स्थानपर पहुँच गया। वे दूसरी मंज़िलमें रहते थे। घंटी बजानेपर एक वृद्धा आ उपस्थित हुई। उन्होंने 'दोब्रे वेचेरा' (सुसायम्) कहकर अभिवादन किया। मैंने भी लड़खड़ाती ज़बानसे 'दोब्रे वेचेरा' किसी तरह कहकर सिर झुका दिया। वृद्धा मेरे आनेकी सूचना देने गई। उस वक्त मेरे दिलमें तरह तरहके खयाल उठ रहे थे। यद्यपि मैंने अब तक डाक्टर श्चेर्बात्स्की (श्चेर्बात्स्कवा) का दर्शन

नहीं कर पाया था, लेकिन १० वर्ष पहलेसे ही मैं उनकी कृतियों और उनके अगाध पांडित्यसे परिचित था। जर्मनीके प्रसिद्ध विद्वान् स्वर्गीय डाक्टर ल्युडर्सने पूछनेपर सन् १९२७ ई० में मुझसे कहा था कि यूरोपमें भारतीय दर्शनके सबसे बड़े विद्वान् डाक्टर श्चेर्वात्स्की हैं। प्रोफ़ेसर सिलवेन् लेवीके मुखसे भी मैं कितनी ही बार उनकी तारीफ़ सुन चुका था। उनकी कितनी ही गंभीर कृतियोंको पढ़कर मैं स्वयं उनके पांडित्यका कायल था। भारत छोड़नेके थोड़े ही दिन पहले जैन विद्वान् पंडित सुखलालसे भेंट हुई थी। संस्कृतके प्रमाण-शास्त्रका उनका अध्ययन बहुत ऊँचा है। उन्होंने हालमें ही डाक्टर श्चेर्वात्स्कीके 'बुद्धिस्ट लॉजिक' (बौद्ध न्याय) को पढ़वाकर सुना था, और वे उनकी विद्वत्तासे इतने प्रभावान्वित हुए थे कि कह रहे थे—इस ग्रन्थका पठन-पाठन काशीके न्यायाचार्यके अन्तिम खंडमें आवश्यक कर देना चाहिये। ऐसे ग्रन्थके पढ़े बिना आदमीकी आँखें ही नहीं खुल सकतीं कि भारतीय दर्शनका विकास क्रमशः कैसे होता चला आया है। आचार्य श्चेर्वात्स्कीसे मेरा पत्र व्यवहार सन् १९३२ से होने लगा था और उससे हम दोनोंमें बहुत घनिष्टता स्थापित होगई थी। तो भी मैं उनके आकार प्रकारके बारेमें अनभिज्ञ था। मैं यह जानता था कि वे वृद्ध हैं, लेकिन वह लम्बे हैं या ठिगने, मोटे हैं या पतले, प्रसन्न-मुख हैं या मुहर्रमी सूरत वाले, मिलनसार हैं या एकान्तता-प्रिय। मैं यह भी सुन चुका था कि क्रान्तिसे पहले वे एक बड़े ज़मींदार थे और उनका परिवार खानदानी पदवीधारी था। रूसी ज़मींदारोंके बारेमें मैंने काफ़ी कहानियाँ पढ़ी थीं और मालूम था कि वे ठाटबाटमें हमारे राजाओं महाराजाओंके कान काटते थे। डाक्टर श्चेर्वात्स्की इसी श्रेणीके ज़मींदार थे। पर क्रान्तिने उस श्रेणीको खतमकर दिया। श्चेर्वात्स्कीका वह वैभव, वह महल, वे नौकर-चाकर सब अतीतकी बात हो गये। लेकिन अब भी उनका पद उनकी विद्याके कारण बहुत ऊँचा है। वे स०स०स०र० (साम्यवादी-सोवियत्-संघ-रिपब्लिक) विज्ञान-

एकेडेमीके मेम्बर हैं। इस संस्थाकी सदस्य-संख्या सारे १८ करोड़ सोवियत्-निवासियोंमें १०० से भी कम है। इस प्रकार आज भी प्रतिष्ठा और सम्मानमें वे पहलेसे छोटा दर्जा नहीं रखते।

मुझे अपने विचारोंमें डूबनेका ज्यादा मौक़ा नहीं मिला कि वृद्धाने आकर जर्मन भाषा में—'बिते' कहकर हाथसे 'पधारिए'का इशारा किया। मैं बैठकके कमरेमें दाखिल हुआ। एक अच्छा सजा कमरा था। नीचे कालीन बिछी थी। कई गद्दीदार कुर्सियाँ और एक मेज़ रखी थी। दीवारों पर कितनेही सुन्दर चित्र लटक रहे थे। एक निगाहसे यह सब देखकर मुझे बग़लकी कोठरीमें घुसना पड़ा। यही उनका शयन-कक्ष था। कोठरी छोटी थी। एक तरफ़ दो-तीन अलमारियोंमें किताबें भरी थीं, जिनमें दर्शन-संबंधी संस्कृतकी पुस्तकें सैकड़ोंकी संख्यामें थीं। दीवारके सहारे जो मेज़ रक्खी थी उसपर भी किताबें थीं। एक तरफ़ चारपाई थी। खाली जगहमें तीन चार कुर्सियाँ पड़ी थीं। आचार्यने लेटे ही लेटे हाथ जोड़ "स्वागतं, आगम्यतां, इदं आसनम्" कहकर मुस्कराते हुए पास पड़ी हुई कुर्सीपर बैठनेके लिए कहा। खड़े न हो सकनेके लिए और इसके लिए भी शोक प्रकट किया कि वे स्टेशन तक नहीं आ सके। उनके मुखको देखनेसे यह नहीं मालूम होता था कि उनका जन्म १६ सितंबर १८६२ को हुआ था। ७१ क्या देखनेमें तो वे ५५-५६ सालके मालूम होते थे। लम्बा हट्टा-कट्टा शरीर है। दाढ़ी-मूँछ नदारद, सिर भी घुटा। उस भव्य गौर मुखपर निरन्तर झलकती हँसीकी रेखा जहाँ एक ओर दर्शकपर अत्यन्त प्रभाव डालती है, वहाँ उसके सकोचको भी दूर कर देती है।

यात्राके सम्बन्धमें कुशल-प्रश्न हुए। फिर तिब्बतमें मिली पुस्तकोंके सम्बन्धमें कुछ बातें हुई। मैंने अपनी सम्पादित कुछ पुस्तकें भेंट कीं। फिर मार्चमें न आकर इतनी देरसे क्यों आये—पूछा। मैंने पहलेकी सूचनाको न पाने तथा पीछे डाक्टर जायसवालकी बीमारी और निधन की बात कही। जायसवालकी मृत्युसे उन्हें भी अफ़सोस हुआ। उन्होंने

पूछा—'कितने दिनों तक रहनेका विचार है ?' इसके बारेमें अभी निश्चयात्मक रूपसे तो मैं कोई जवाब न दे सकता था। पता लगा, एकेडेमीने मेरे रहने आदिका भार अपने ऊपर लिया है। भाषाकी दिक्कत हल करनेके लिए विश्वविद्यालयके संस्कृत (तृतीय वर्ष)के एक तरुण विद्यार्थी श्री रवीनोविच् दिये गये हैं, वे अंगरेज़ी भी जानते थे। मोटरके लिए भी आज्ञा दे दी गई।

सोवियत्ने अपने देशमें सातवें दिन एतवारकी छुट्टी हटाकर छठा दिन छुट्टीका रखा है, शेष ५ दिन कामके हैं। हर मासकी छठी, बारहवीं, अठारहवीं, चौबीसवीं और महीनेकी अन्तिम् (२८, २६, ३० या ३१) तारीखें छुट्टीके लिए निश्चित् हैं। अगला दिन छुट्टीका था।

रवीनोविच् महाशय १० ही बजे आगये थे। एक बजे 'अर्मिताज् म्यूज़ियम' देखने गये। जिस मकानमें यह म्यूज़ियम अवस्थित है, वह पहले ज़ारका 'शरद्-प्रासाद' था। प्रासादका कुछ हिस्सा क्रान्तिके बाद सन् १६१८ में संग्रहालयके रूपमें परिणत कर दिया गया था। 'अर्मिताज् म्यूज़ियम्' इतना विस्तृत है कि उसे देखनेके लिए कई दिन चाहिए। हमने सिर्फ पूर्वी विभाग देखना चाहा। चीनी-तुर्किस्तानसे प्राप्त मूर्तियों, भित्ति-चित्रों, काष्ठकी तख्तियों, वस्त्रों और बर्तनोंका बहुत सुन्दर संग्रह यहाँ है। चीज़ोंके नाम लिखकर बहुत सुन्दर ढंगसे सजाया गया है। एक जगह तुंगुत्-मंगोल-साम्राज्यकी प्राचीन वस्तुएँ संग्रहकी गई हैं। यहाँके चित्र-पट तिब्बतकी तेरहवीं-चौदहवीं सदीके चित्रोंसे बहुत मिलते हैं। सोवियत् तुर्किस्तानकी खुदाईसे निकली चीज़ोंमें यवन-बाख्तरी कलाकी वस्तुएँ विशेषतया उल्लेखनीय हैं। ईरानी कलाका जितना सुंदर संग्रह यहाँ है, उतना सुन्दर संग्रह संसारमें कहीं नहीं है। अखामनशी, पार्थिव और सासानी कालकी समुन्नत कलाके अनेक नमूने यहाँ मौजूद हैं। कलाकी जो वस्तुएँ इस्लामके आनेपर ईरानमें नष्ट करदी गई थीं उनके बहुतसे उत्कृष्ट नमूने सौदागरोंने

ले जाकर ईरानकी उत्तरी सीमाके बाहर बसनेवाले काफ़िरोंके हाथ बेच दिये थे। रूस ईसाई होनेपर भी मूर्ति-पूजाका विरोधी नहीं था। इस प्रकार वे वस्तुएँ रूसियोंके हाथमें पड़कर सुरक्षित रह गईं। आज ईरानी राष्ट्रीयताके लिए अर्मिताज़्का यह ईरानी-विभाग तीर्थ सा बन रहा है। दो साल पूर्व इस विभागकी खास तौरसे प्रदर्शनी की गई थी। उसमें शामिल होनेके लिए ईरानके शाहने अपने वज़ीर तथा दूसरे विद्वानोंको भेजा था।

मगोल-विभागमें ईसाकी पहली सदीकी भी चीज़ें इकट्ठाकी गई हैं। मिश्री और आसुरी (असीरियन) विभागका संग्रह यद्यपि पेरिस और लन्दनका मुक़ाबिला नहीं कर सकता, तो भी उनके बाद इसीका नंबर है। सोवियत्‌के संग्रहालयोंका सबसे बड़ा सुभीता यह हुआ कि और देशोंमें ऐसी चीज़ोंका एक बहुत क़ाफ़ी महत्त्वपूर्ण भाग वैयक्तिक सम्पत्ति होकर लोगोंके घरोंमें बन्द रहता है, और उत्तराधिकारीके अयोग्य होनेसे कुछ नष्टभ्रष्ट और तितर-बितर भी हो जाता है। सोवियत् देशमें वैयक्तिक सम्पत्तिके उठा देनेपर अमीरोंके निजी संग्रह भी इन संग्रहालयोंमें चले आये हैं। ये चीज़ें इतने अधिक परिमाणमें एकाएक आ गईं कि सोवियत्-प्रजातंत्र ही इनकी रक्षाका प्रबंध आसानीसे कर सकता था। उसने 'शरद्-प्रासाद' जैसे कितने हो महलोंको संग्रहालयके रूपमें परिणत कर दिया और आवश्यकतानुसार कितने ही नये मकान बनवाये।

इन विभागोंको देखकर हम उन कमरोंकी ओर गये, जहाँ बहुमूल्य वस्तुओंका संग्रह बड़ी कड़ी हिफ़ाज़तके साथ रखा गया है। बड़े बड़े ताले और रिवाल्वरधारी पुरुषही यहाँ नहीं रखे गये हैं बल्कि बिना खास तौरसे इजाज़त लिए हर किसीका भीतर जाना निषिद्ध है। हमारे देखनेके लिए इजाज़त ले ली गई थी। भीतर काफ़ी आदमियोंके देखनेसे भी मालूम होता था, कि लोगोंके देखनेके मार्गमें खाहमखवाह रोड़ा नहीं अटकाया जाता। आज्ञापत्रको देखकर दरबानने मोटा ताला खोला, और रबिनोविच,

मैं तथा संग्रहालयके पथ-प्रदर्शक भीतर गये। एक कमरेमें कालासागर-तटवर्ती दक्षिणी रूसकी खुदाईमें मिले सिथियन लोगोंके नाना प्रकारके सोनेके आभूषण आदि रखे थे। इनका समय ईसा-पूर्व पाँचवीं-छठी सदी तक जाता है। सोनेकी यह विशाल राशि सिथियन सरदारों और राजाओंकी क़ब्रके भीतरसे निकली थी। पासके कुछ दूसरे कमरोंमें पुराने ज़ार और ज़ारिनोंके आभूषण, घड़ी, छड़ी तथा और चीज़ें रखी गई हैं। एक जगह प्रतापी केथराइनकी सोनेकी मूठ लगी छड़ी है। उसी मूठमें सोनेकी घड़ी भी है। सरसरी तौरसे पश्चिमी कला-विभागके कुछ कमरोंको भी देखा। पुनर्जागरण कालके बहुतसे प्रतिभाशाली योरोपीय चित्रकारोंके मूल चित्रोंका यहाँ बहुत भारी संग्रह है। हमें वह कमरा भी दिखाया गया, जहाँ करेन्स्कीका मंत्रि-मंडल लाल-क्रान्तिके समय नवम्बर १९१७ में पकड़ा गया था।

'शरद्-प्रासाद' खुद भी एक बहुत सुंदर इमारत है। नेवा नदीके दूसरे तटसे इसकी लंबी पक्ति, विशाल भित्ति और छतपर बनी सुन्दर पाषाण-मूर्त्तियाँ बहुत ही सुन्दर मालूम होती हैं। लाल क्रान्तिके नेताओंका यह काम भी कम प्रशंसनीय नहीं था जो इतनी लड़ाई और गोलाबारीके समय भी उन्होंने इसका पूरा ध्यान रखा कि कलाके उत्कृष्ट नमूनोंका संहार न होने पाये। ज़ारके महलके भिन्न भिन्न भागोंमें बहुत सी संगमर्मरकी तथा दूसरी मूर्तियाँ रखी हुई थीं।

वहाँसे हम प्रोफ़ेसरोंके भोजनालयमें गये। यह विशाल भवन पहले किसी राजकुमारका प्रासाद था। सीढ़ी, दीवारें, छत सभीको अलंकृत करनेके लिए खुले दिलसे धन खर्च किया गया है। भोजन-भवन राजकुमारका वही प्राचीन भोजनागार है। इसकी दीवारोंपर रूसके किसी पुराने महान् चित्रकार-द्वारा चित्र अंकित हुआ है। पहले यहाँ नाना वाद्योंकी मधुर ध्वनिके साथ राजकुमार और राजकुमारियाँ सुआच्छादित सुअलंकृत परिचारक और परिचारिकाओं द्वारा लाये गये नाना प्रकारके

व्यंजनोंको बहुमूल्य तश्तरियों और पान-पात्रोंमें ग्रहण करते रहे होंगे। आज उन्हीं जगहोंपर किसानों और मज़दूरोंकी सन्तानें आधुनिक विश्व-विद्यालयके ये प्रोफ़ेसर भोजन कर रहे हैं। उस समय इन नीच कुलियोंको क्या इस प्रकार पढ़कर विश्वविद्यालयकी कुर्सी तक पहुँचनेका मौक़ा भी मिलता? और एक-आध किसी तरह पहुँच भी जाते, तो क्या वे इस बेतकल्लुफ़ीसे राजकुमारोंके दस्तरख़्वानपर आसन जमा सकते?

वहाँसे हम कज़ान्स्की-सवोर नामक विशाल गिर्जाघरमें गये। कई गिर्जोंको बन्द देखकर मैंने रविनोविच् महाशयसे पूछा—क्या यहाँ कोई ऐसा गिर्जाघर नहीं है जिसमें लोग अब भी पूजाके लिए इकठ्ठे होते हों? उन्होंने ले जाकर पासके एक पोलिश् गिर्जाको दिखलाया। इसका हाल भी काफ़ी बड़ा है। सुन्दर मूर्तियाँ हैं। लेकिन देखा, १४—१५ औरतें जिनमें सबसे कम उम्रवाली भी पचास वर्षसे ऊपर पहुँच चुकी थी—घुटना टेके प्रार्थना कर रही हैं। उस विशाल गिर्जेके एक कोनेमें बैठी इन १५ मूर्तियोंका घुटना टेकना पूजा नहीं उसके लिए एक उपहासकी बात थी। मैंने गिर्जेके कारिन्देसे गिर्जेके बारेमें पूछा। उसने कहा—देख नहीं रहे हैं। यही चन्द बुढ़िया बैठी हुई हैं। कहाँ पहिले श्रद्धालुओंसे यह सारा हाल खचाखच भरा रहता था। गिर्जेके लिए पैसा इतना कम मिल रहा है कि जाड़ोंमें इससे गर्म करनेके लिए कोयला ख़रीदना भी मुश्किल हो रहा है। और यदि गर्म करना छोड़ दिया जाय, तो ठंडमें मरनेके लिए ये १५ बुढ़िया भी यहाँ न आवें। रूसमें धर्मोंका भविष्य क्या होगा, इसका पता हमें इस उदाहरणसे खूब लग गया।

* * * * * *

हफ़्ते भर रहनेके बाद निश्चित हो गया कि जाड़ेके दिनोंमें लेनिन्-ग्राद्में सूर्यको मुँह दिखानेके लिए शाप है। कभी कभी कुछ हिम-वर्षा भी हो रही थी, लेकिन रास्तेमें अभी वह बहुत दिखलाई नहीं पड़ती थी। २२ नवम्बरसे हमने नित्य 'प्राच्य-प्रतिष्ठान' (Oriental Institute)

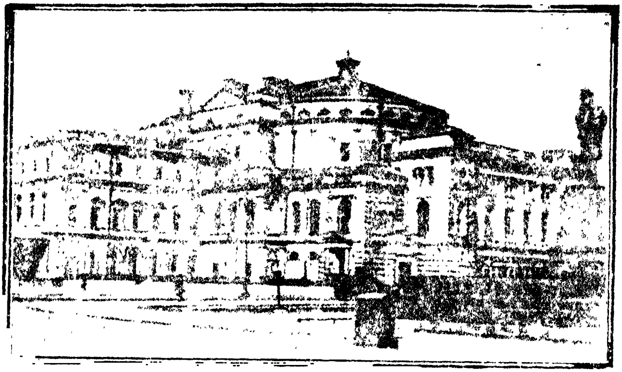
में जाना निश्चय किया। पुस्तकालयसे 'वार्तिकालंकार'के तिब्बती अनुवादको निकालकर संस्कृतसे मिलानाही प्रधान काम था। 'होतेल्-यूरोपा'से दो मीलसे ऊपर जाना पड़ता था। कुछ दिन तक हमने मोटरका इस्तेमाल किया, लेकिन फिर रविनोविच्के कहते रहनेपर भी उसे छोड़ ट्रामसे जानाही ठीक समझा। रात बड़ी होनेसे ६ बजे नींद खुलती थी और जलपान करते करते ११-११॥ बज जाते थे। इसीलिए जल्दीके लिए जाते वक्त हम ट्रामसे चले जाते और लौटते वक्त व्यायामके ख़यालसे पैदलही आते थे। २७ नवम्बरको रास्तेमें कुछ विशेष बर्फ़ दिखाई पड़ने लगी और २८ को तो वह जमकर सख्त हो गई थी। बर्फ़पर इतनी बिछलाहट थी कि हम एक जगह गिर पड़े। आस-पास नज़दीक कोई था नहीं। हम कपड़ेकी बर्फ़ झाड़कर झटपट खड़े हो गये। दो दिन बाद हमारे इन्दो-तिब्बती विभागकी सेक्रेटरी तवारिश् लोला (येलेना) कज़ारोव्स्का (मेरी पत्नी बनने वाली) भी इसी तरह बर्फ़से बिछलकर गिरीं। उन्हें कुछ चोट भी आई थी। उनके ज़िक्र करनेपर यार लोगोंने कहना शुरू किया—"काले वारिधाराणां अपतितया न शक्यते स्थातुं"। कज़ारोव्स्का जर्मन और फ्रेंच ही अच्छी नहीं जानती हैं, बल्कि तिब्बती और मंगोल भाषाओंकी भी पंडिता हैं। अंगरेज़ी भी पढ़-समझ लेती हैं। उन्होंने तिब्बती-रूसी-भाषाका एक कोष लिखा है। मैंने उन्हें परामर्श दिया कि इसमें संस्कृतको भी शामिल कर लें। उन्होंने संस्कृत विशेष तौरसे नहीं पढ़ी है। मैंने उनके लिए कहानीके रूपमें संस्कृतके कुछ पाठ भी तैयार किए। यद्यपि माध्यमके अभावसे कुछ दिक्कत हो रही थी, तो भी हमें एक दूसरेकी बात समझनेके लिए दिमाग़पर काफ़ी ज़ोर देना पड़ता था, जो कि भाषा सीखनेके लिए बड़ी उपयोगी बात है। मैंने अपने पाठोंमें ऐसेही शब्दोंको ज्यादा इस्तेमाल करना शुरू किया, जो संस्कृत और रूसी दोनों भाषाओंमें समान पाये जाते हैं। जैसे—एतत् (एतोत्), तत् (तोत्), भ्राता (ब्रात्), माता (मात्), दुहिता (दोच्), उद (वद=पानी), अग्नि

(ओगोन्), नभ (नेब्रो), हिम (ज़िम), दम (दोम्), गव्यादनीय (गव्याद्न्या), चषक (चशक=प्याला)। ऐसे समान शब्दोंको देखकर उन्हें आश्चर्य भी होता था। चषकके बारेमें तो उनका सन्देह तबतक दूर नहीं हुआ, जबतक पढ़ते वक्त एक पुरानी छपी संस्कृत पुस्तकमें उन्होंने इस शब्दको देख नहीं लिया।

* * * * * *

कुछ दिनोंके बाद आचार्य श्चेर्बात्स्कीका प्लास्तर उखाड़ दिया गया और वे कमरेमें ज़रा चलने लगे। एक दिन मैं वहाँ ऐसे वक्तमें गया जब वे विद्यार्थियोंको पढ़ा रहे थे। ५ विद्यार्थियोंमें दो छात्र और एक छात्रा उपस्थित थे। दो छात्रायें उस दिन हाज़िर नहीं थीं। दशकुमार-चरितका पाठ वहाँ चल रहा था, जहाँ काममंजरी वेश्याके नेत्रोंकी नील कमलसे उपमा दी गई थी। विद्यार्थियोंको सन्देह हो रहा था कि सिर्फ़ कमल न कहकर नील कमल क्यों कहा गया। मुझसे पूछनेपर मैंने कहा—काममंजरीकी आँखें नीली रही होंगी। झट प्रश्न हुआ—क्या भारतमें नीली आँखोंवाले आदमी रहते थे? मैंने कहा—पाली ग्रन्थोंमें बुद्धकी आँखें नीली कही गई हैं। और पिंगल या भूरे केशोंका होना तो संस्कृतमें बहुत पाया जाता है। व्याकरण महाभाष्यकार पतंजलि ब्राह्मणोंको 'पिंगल-केश' कहता है। मुमकिन है, उस समय कुछ नीली आँखों वाले स्त्री-पुरुष रहे हों।

एक दिन एक दूसरे विद्वान्ने भी पूछा—'श्यामाका अर्थ क्या है? काली तो नहीं'? मैंने उन्हें आप्टेकी संस्कृतडिक्शनरी देखनेको कहा। वहाँ उसके अर्थमें काली होनेका नाम तक न था। श्यामासे वहाँ मतलब था षोडशी तरुणसुन्दरीसे। तब मैंने अपनी व्याख्या उनके सामने रक्खी। भारतके पुराने आर्य वैसेही गौर थे, जैसे आजकलके यूरोपीय। उनके बाल भी भूरे और आँखें नीली थीं जैसी कि आजकल पामीरके नज़दीक काफ़िरस्तान (नूरिस्तान)के लोगोंमें पाई जाती हैं। उनमें अगर कोई काले

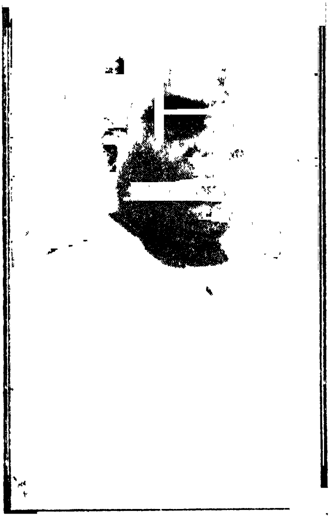


लेनिनग्राद्—मारिइन्स्की-थिएटर



आचार्य श्चेर्बास्क्वा, प्रो० दत्त तथा भारतीय भाषाओंके दूसरे अध्यापक

(पृ० ३२)



लेनिनग्राद्—प्रो० प्रमथनाथ दत्त (पृष्ठ ३३)



लेनिनग्राद्—श्रीमती दत्ता (पृष्ठ ३४



व्यायामके शौकीन (पृष्ठ ४६)



श्रीमती दत्ता (बहन और अशोक के साथ) (पृ० ३९)



माता और बच्चा (पृष्ठ ४६)



बच्चोंकी क्रीड़ा (पृष्ठ ५६)



बालकोंका स्नान (पृष्ठ ५६)

बालों वाली तरुणी होती थी तो उसे श्यामा कहते थे; और भूरे बालों-वालीको पिंगला। अब भी जहाँ-तहाँ संस्कृत साहित्यमें किसी किसी स्त्रीका नाम पिंगला मिल जाता है। लेकिन पिंगला और श्यामाका परस्पर तथा बालोंसे कोई सम्बन्ध था, इसे पीछेके लोग भूल गये। इसीलिए श्यामाका अर्थ करनेमें वे शरीरका रंग श्याम नहीं लेना चाहते और शब्दार्थमें श्यामताको निरर्थक समझते हैं।

संस्कृत तथा भारतकी दूसरी भाषाओंके विद्यार्थियों और अध्यापकोंके देखनेसे मुझे मालूम हुआ कि यहाँके लोगोंका पूर्वी भाषाओंका ज्ञान अँगरेज़, फ्रांसीसी, और जर्मन लोगोंके ज्ञानसे कहीं बढ़कर है।

एक दिन एक मित्रने एक भारतीय अध्यापक तवारिश् दत्तका जिक्र किया। मुझे एक भारतीयका नाम मालूम होनेपर उनसे मिलनेकी बड़ी उत्सुकता हुई, और मैं उसी दिन उनसे मिलने गया। दत्त महाशयका पूरा नाम है, प्रमथनाथ दत्त। बंग-भंगके बाद जो विकट आन्दोलन हुआ और उसके बाद जो कितने ही भारतीय हिन्दुस्तानसे बाहर चले गये, दत्त महाशय उन्हीं मेंसे एक थे। बहुत साल तक वह यूरोप और अमेरिका तथा पीछे तुर्की और ईरानमें रहे। वहीं उन्होंने अपना नाम दाऊदअली रख लिया। लड़ाईके पिछले दिनोंमें तथा १९२१ तक वे ईरानमें रहे। वह फ़ारसी, तुर्की जानते हैं और हिन्दी-उर्दूका उच्चारण ऐसा करते हैं कि कोई कह नहीं सकता कि वह बंगाली हैं। लेनिन्ग्राद्में वह हिन्दी उर्दू और बँगलाके अध्यापक हैं। सूफ़ी अम्बाप्रसाद और सरदार अजीतसिंह भी उस वक्त ईरानमें ही थे, जब कि ये ईरानमें थे। अम्बाप्रसादसे इनकी अधिक घनिष्ठता थी। बतलाते थे—सूफ़ीने शीराज़्में एक मदरसा खोल रखा था। ईरानी लोग उनको बहुत मानते थे। लड़ाईके वक्त शीराज़्के ज़मींदारने राजनीतिक भारतीयोंको पकड़ लिया। जब सूफ़ी अम्बाप्रसादको अगरेज़ोंके आनेकी खबर मिली, और ख़याल आया कि उक्त ज़मींदार उन्हें अँगरेज़ोंके हाथमें दे देगा, तो उन्होंने ज़हर खाकर आत्महत्या कर

ली। मुरादाबादके सूफ़ी अम्बाप्रसाद भारतीय क्रान्तिके प्रथम ज्योति जगानेवालोंमें थे। उन्होंने अपनी ज़बान और क़लमसे क्रान्तिका सन्देश लोगों तक पहुँचानेका प्रयत्न किया, और जब समझा कि अब भारतमें रहकर सिवा जेलमें बंद रहनेके और कुछ नहीं कर सकते, तो 'खुश रहो अहले वतन हम तो सफर करते हैं', कहकर हसरत भरी निगाहसे अपनी मातृभूमिको देखते निकल गये। दत्त महाशयने कितने ही भारतीय क्रान्तिकारियोंको विदेशोंमें अपनी लाश छोड़ते देखा है, इसीलिए उन्हें विश्वास नहीं होता कि वह फिर कभी अपनी मातृभूमिका दर्शन कर सकेंगे। वह बड़े ही सरल और प्रेमी जीव हैं। उनके अकृत्रिम व्यवहारने मुझे बहुत अधिक आकर्षित किया। कहते थे—'मातृभूमिके पुनर्दर्शनका सौभाग्य अब कहाँ मिलेगा? लेकिन आपके देहसे उसी भूमिकी सुगन्धि आ रही है'।

मैंने कहा—'भारतकी अवस्था बड़े ज़ोरोंसे बदल रही है और मुझे विश्वास है कि आपको भारत जानेके लिए मौक़ा मिल सकेगा।'

दत्त महाशय १९२१में यहाँ आये और तबसे रूस हीमें हैं। उनकी उमर ५५के आस-पास होगी। दस वर्ष हुए वह कहीं गिर पड़े और उनकी एक टाँग (दाहिनी टाँग)का घुटना उखड़ गया। तबसे बेचारे सिर्फ़ पाखीके सहारे कमरेके भीतर थोड़ा-बहुत चल फिर सकते हैं। दत्त महाशयकी धर्मपत्नी—जिनको पतिने नूरजहाँ नाम दे रखा है—एक रूसी महिला हैं। वह अपने पतिकी बड़ी सहायता करती हैं। अँगरेज़ी जाननेके कारण मुझे बड़ा सुभीता था। वैसे भी वह हँसमुख हैं और हमारा तो भाभीका नाता था। उनको बड़ा आश्चर्य हुआ, जब उन्होंने सुना कि संस्कृतमें भी रूसी भाषाका शब्द 'देवर' ही पतिके छोटे भाईके लिए इस्तेमाल होता है। एक दिन उनकी बड़ी बहन भी वहाँ बैठी हुई थीं। मैंने मज़ाकमें कहा—'भाभी, तुम्हारी बड़ी बहन तुमसे ज्यादा सुन्दरी है।' उन्होंने झट उत्तर दिया—'विवाहसे पहले दस तरुण मेरे पाणिग्रहणके

उम्मेदवार थे। लेकिन मेरी बहनके लिए सिर्फ़ एक।' इस जवाबसे सचमुच देवरको हार माननी पड़ी।

*** ***

दिसम्बरके प्रथम हफ्तेमें रहनेका स्थायी प्रबंध निश्चित-सा मालूम पड़ता था और एक पखवाड़ेमें मित्रों और परिचितोंकी संख्या काफ़ी बढ़ चुकी थी। इसी वक्त हमारे दिमाग़में तरह-तरहके खयाल पैदा होने लगे। कभी खयाल आता—क्या अपना जीवन मुर्दों के लिए अर्पण कर देना उचित है? पुरानी तवारीख़ और पुराने बुजुर्गोंकी किताबें तथा तत्संबंधी खोज आख़िर मुर्दोंकी ही चीजें हैं। इस खोजके करनेवाले बहुत आसानीसे मिल सकते हैं। साम्यवादी क्रान्तिके इतिहास और क्रान्तिके रंगमंच-पर खेलनेवाले पात्रोंकी जीवनियोंको पढ़कर मुझे अपने वर्तमान मार्गपर घृणा होने लगी। ख़याल आने लगा—चीन या स्पेनके युद्ध-क्षेत्रमें जाकर क्यों न काम किया जाय? यद्यपि वहाँ तक पहुँचनेमें कई बाधाएँ थीं, लेकिन उन बाधाओंने मुझे उधर जानेसे नहीं रोका। मुझे ख़याल आता था—कौन सी युद्ध-विद्या मैं जानता हूँ, जिससे कि मैं वहाँ साम्यवादी क्रान्तिकारियोंको लाभ पहुँचा सकूँगा। भाषा आदिकी अनभिज्ञता तो मुझे उनपर बोझ बना देगी। फिर खयाल आया—क्या मुझे अपने कामके लिए स्वदेशमें क्षेत्र नहीं है? वहाँ मैं अपनी लेखनी और वचन दोनोंसे अच्छी तरह कार्य कर सकता हूँ। भारतकी ग़रीब जनताका उद्धार साम्यवाद हीसे हो सकता है; और साम्यवादका ठीक ठीक ज्ञान और उसका सन्देश सर्व-साधारण तक जब तक नहीं पहुँच जाता, तब तक किसी भावी क्रान्ति में लोग दृढ़तापूर्वक कैसे लड़ सकते हैं। इसमें शक नहीं कि दिसम्बरके प्रथम सप्ताहमें—जब इस प्रकारके ख़यालोंके तूफ़ानोंका ताँता बंधा हुआ था—मैं किसी एक निर्णयपर नहीं पहुँच सका; तो भी बारह वर्षसे जो रास्ता मैंने पकड़ा था, और जिसके लिए ही मैं रूस तक पहुँचा था, उसके

प्रति अवहेलना ज़रूर हो गई। इसीने आगे मुझे अपना रास्ता निश्चित करनेमें मदद दी।

पहली दिसम्बरको सर्दीकी वृद्धि साफ़ मालूम हुई। होटलका हमारा कमरा खौलते पानीके नलोंसे गर्म किया गया था, इसलिए अपने कमरेके अन्दर पतली मलमल पहनकर भी बैठ सकते थे, और हिन्दुस्तानमें आकर सच्चाईके साथ डींग मार सकते थे, कि मैं नदी और समुद्र जमा देने वाली लेनिन्ग्राद्की सर्दीमें भी पतली मलमल पहनकर बैठा रहता था। लेकिन अब बाहर जानेपर आटे-चावलका भाव मालूम होने लगा। कानोंमें ही नहीं, चमड़ेके दस्तानेके भीतर रहनेपर भी हाथोंमें सर्दी पहुँचने लगी। दो दिसम्बरको नेवा नदी जहाँ तहाँ जमी दिखाई पड़ी, और ७ दिसम्बर तक तो वह बिलकुल जम गई।

* * * * * *

अभी तक मैं वहाँ रहनेका खयाल रखता था। होटलमें यद्यपि जब तब कोई मित्र चला आता था, और इन्स्टीट्यूटमें भी अपने कामके बाद कभी-कभी कुछ बात करनेका मौक़ा मिल जाता था, लेकिन रूसी भाषाके शीघ्र परिचयके लिए रूसी बोलनेवाले सहवासियोंकी बड़ी आवश्यकता थी। हमारे आस-पासकी कोठरियोंमें जो रहने वाले मेहमान आते थे, वे दो एक दिनसे ज्यादा नहीं ठहरते थे। फिर उनसे परिचय प्राप्तकर वार्तालाप करनेका अवसर कहाँसे मिलता? मैंने भाभी दत्तासे इसके बारेमें कहा। वह किसी दूसरी जगह कमरा भी ढूँढ़ने लगीं। एक दिन उन्हें रास्तेमें एक स्त्री मिल गई। बातचीत चलनेपर मालूम हुआ कि वह अपने मकानका आधा हिस्सा देनेके लिए तैयार है। भाभीने मुझसे कहा और यह भी बतलाया कि स्त्री बूढ़ी और एक प्रेसमें स्याही लगानेका कोई काम करती है, एक साधारण मज़दूर श्रेणीकी स्त्री है। मैंने सोचा—सोवियत् मज़दूरके जीवनको नज़दीकसे देखनेका यह अच्छा

अवसर होगा, लेकिन साथ-साथ मुझे यह भी मालूम था कि एक विदेशी पंडितका ऐसी जगहमें रहना खटक भी सकता है। खैर, मैंने भाभीको कहा—'देखनेमें क्या हरज है। चलें, घरको तो देख लें।' पहले तो दो-तीन ट्रामोंको बदलनेकी बात जब देखी, तभी मालूम हो गया, कि वह हमारे बूतेका काम नहीं। फिर यह भी पता लगा कि ट्राम द्वारा इंस्टीट्यूट जानेमें एक घंटेसे कम न लगेगा। आखिर हम लोग उस अर्द्ध-जरती महिलाके घरपर पहुँचे।

सारा इलाक़ा मज़दूरोंका था। लेकिन इन मज़दूरोंके मकानोंको, पूँजीवादी देशोंके मज़दूरोंकी बस्तीसे नहीं मुक़ाबिला किया जा सकता। यहाँ छोटे-छोटे गन्दे और घने घरौंदोंकी जगह चौड़ी सड़कपर दो-दो तीन-तीन तल्लेके ऊँचे मकान खड़े थे। महिलाकी कोठरी दूसरे तल्लेपर थी। दो कोठरियोंका एक सम्मिलित द्वारबन्द बड़ा बरामदा या आँगन था। रसोई बनानेके लिए एक कोठरी अलग थी। रहनेकी कोठरी नहीं, बल्कि बरामदा और रसोईघर भी गर्म किये हुए थे। रहनेकी कोठरीमें एक मेज़ और दो अलमारियाँ थीं। एक तरफ़ एक पलंग था और दूसरी तरफ़ एक लम्बा सोफ़ा। तीन-चार कुर्सियाँ भी पड़ी थीं। सड़ककी तरफ़ काँचके दोहरे किवाड़ों वाला जँगला था। छतके अलावा मेज़पर रखनेके लिए भी बिजलीका लैम्प था। महिलाने बतलाया, उनके पास खाना खाने-बनानेके सभी बर्तन मौजूद हैं। उन्हें दस बजे कामपर चला जाना होता है और ५ बजे लौटना पड़ता है। सबेरे और शामका नाश्ता और भोजन भी वह बनाकर दे सकती हैं। यदि मुझे एक ही कोठरीमें दूसरी स्त्रीके साथ रहनेमें संकोच हो तो इसके लिए कहा—दोनोंमेंसे एक पलग ले लेगा और दूसरा सोफ़ा। बीचमें एक ज़ीनका पर्दा डालकर कमरेको दो हिस्सोंमें विभाजित कर लिया जायगा। मैंने हँसते हुए भाभीसे कहा—'यदि दिल साफ़ है, तो इन पर्दोंकी क्या ज़रूरत? और यदि दिल साफ़ नहीं, तो पर्दे कर ही क्या सकते हैं?' भाभीने भी हँसते हुए कहा—'शायद

इन श्रीमतीका चेहरा ही अच्छा पर्देका काम दे देगा।' खैर, देवर-भौजाई दोनोंको क्या निर्णय करना है, यह तो पहले ही मालूम हो चुका था, लेकिन हमने महिलाको निराश नहीं करना चाहा। उनसे तारीफ़ करते हुए हमने उनका निर्णय जानना चाहा। महिलाने कहा कि मैं अपने मुहल्लेके मकानोंके अधिकारीसे पूछकर कल जवाब दूँगी। अधिकारी जब सुनेगा कि आनेवाला आदमी एक विदेशी स्कालर है, तो क्या सम्मति देगा, इसे हम अच्छी तरह जानते थे। और इसीलिए निश्चिन्त थे कि 'नहीं' महिलाकी तरफ हीसे होगा।

सारे मकानका किराया रसोईघरके साथ १७ रूबल (=७।≋)) मासिक था। इसीमें रसोई-खाना, पाखाना, बराण्डा और कोठरीके भीतरके बिजलीके लैम्प तथा घर गर्म करनेका खर्च भी शामिल था। ऐसे मकानका किराया कलकत्ता—बम्बईमें ३०) महीनेसे कम नहीं होता। उक्त स्त्रीका मासिक वेतन १५० रूबलके क़रीब था। उसे देखकर हमें मालूम हो गया कि सोवियत्-शासनने श्रमिकोंकी अवस्थाको कितना उन्नत कर दिया है। मासिक वेतन और घरकी निश्चिन्तता सिर्फ काम लगनेके वक्त ही नहीं है। बेकारी तो सोवियत् देशमें स्वप्न हो गई है। हर एक योग्य शरीरवाले आदमीके लिए काम मौजूद है। शरीरसे अयोग्य या बीमार हो जानेपर भरण-पोषणका प्रबंध सरकार करती है। कलकी चिन्ता वहाँके लोगोंको परेशान नहीं करती।

* * *   * * *

१२ दिसम्बर पहुँचते-पहुँचते सर्दीने अपना रूप दिखाना शुरू किया। अब हमें पोस्तीनका कनटोप, दस्ताना और ओवरकोट पहनना ज़रूरी जान पड़ा। चमड़ेका कोट और पतलून पहननेमें हमने दो चार दिन और आनाकानी की; क्योंकि अभी उनके पहननेवाले हमारे इन्स्टीट्यूटमें दिखाई नहीं पड़ते थे। लेकिन जब देखा, कि सर्दी चर्बी और मांसको चीरकर सीधी हड्डियों तक पहुँच रही है, तो वैसा करना ही पड़ा।

३१ दिसम्बरको नव-वर्षोत्सव होनेवाला था। लोग देवदारकी हरी-हरी डालियाँ और खिलौने ख़रीदकर ले जा रहे थे। ३०की रातको लड़के शरद्-बाबाका त्योहार मनाते हैं। यूरोपके अन्य देशोंमें यह त्योहार क्रिसमस् बाबाके नामसे पचीस दिसम्बर हीको हो जाता है, लेकिन सोवियत्-जनताने ईश्वर और उसके पुत्रको जवाब दे दिया है—इसीलिए २५ दिसम्बरकी जगह ३०–३१को उत्सव मनाया जाता है। दत्त महाशय-के घर भाभीकी बड़ी बहन आई हुई थीं; वह मास्कोमें एक पुस्तकालयमें काम करती हैं और महीनेकी छुट्टी लेकर अपने लड़के अर्काशाके साथ अपनी बहनके यहाँ ठहरी हुई थीं। अर्काशा साढ़े छः वर्षका बच्चा है। तो भी उसके स्वास्थ्य और डील-डौलको देखकर हिन्दुस्तानमें उसे ९ वर्षसे कमका कोई नहीं कह सकता। अभी अक्षर सीखनेके लिये उसे छै महीनेकी और देरी है; लेकिन माँकी तरह उसे भी कविता-पाठका बड़ा शौक है। माँसे सुनकर पुश्किन्की बहुत सी कविताएँ उसने कंठ कर रखी हैं। मैं जब कभी वहाँ जाता, तो वह द्याद्या (चाचा)के पास आकर बैठ जाता था। अपने वाचालपनसे वह द्याद्याको कुछ शब्द सीखनेको मजबूर करता था। जब उसे कहा जाता कि कोई कविता या व्याख्यान सुनाओ तो कहींसे फ़ेल्टकी हैट ढूँढ़कर सिरपर रख एक कुर्सीपर खड़ा हो जाता। फिर तीन-चार व्यक्तियोंकी उस भारी-भरकम सभाकी ओर दाहने, बाएँ और सामने टोपी उतारकर सिर झुकाता और बड़े जोशके साथ कविता-पाठ या व्याख्यान झाड़ने लगता। व्याख्यानमें विषयके अनुसार स्वरके चढ़ाव-उतारका वह पूरा ख़याल रखता था। व्याख्यान समाप्त होनेके बाद श्रोतृ-मंडलीको शांतिपूर्वक सुननेके लिए धन्यवाद दे कुर्सीसे उतर आता था।

मैं पूछता था—'अर्काशा, इन्दुस् देश चलोगे?' कहता—'हाँ, और मौसीको लेकर'। मैं कहता—'हाँ, मौसा और मौसी दोनों भारत चलेंगे और उसी समय तुम्हें भी चलना होगा।' एक दिन अर्काशा काग़ज़पर

रंगीन पेंसिलसे कुछ लकीरें खींच रहा था। मैंने पूछा—'क्या करते हो ?' उत्तर मिला—'तसवीर बनाता हूँ।' 'ले आओ तो!' 'ठहरिए! पूरी करके दिखलाता हूँ।' फिर अर्काशाने अपनी तसवीर ले आकर हमारे सामने रख दी। ऊपरकी ओर उसने हँसुआ-हथौड़ासे अलंकृत एक हवाई जहाज़ बनाया था, और नीचे कुछ सिपाहियोंको। व्याख्यान करते हुए कहा—"यह हमारी सोवियत्का हवाई ज़हाज़ है और यह फासिस्ट सिपाही खड़े हैं। उनके ऊपर सोवियत् विमान बम फेंक रहा है।"

३०की रातको बच्चोंका महोत्सव था। इसलिए अर्काशाने एक देवदारकी हरी शाखाको सबेरे हीसे खूब सजाना शुरू किया। ल्याल्याके उपस्थित रहनेके लिए खास तौरसे आग्रह था। रातको पहुँचनेपर देखा, देवदारकी टहनी-टहनीपर नारंगी, काग़ज़की गुड़ियाँ, पन्नीके लट्टू तथा पचीसों जलती मोमबत्तियाँ टाँगी हुई हैं। वृक्षके नीचे बर्फ़ जैसे काग़ज़का लबादा ओढ़े शरद् बाबा डंडेके सहारे खड़े हैं। आज अर्काशा मेहमानोंके स्वागतमें लगा था। उसकी एक सहेली लड़की भी वहाँ बैठी हुई थी। लड़कीकी माँ और अर्काशाकी माँ तथा मौसीके अतिरिक्त दो-तीन दूसरे मेहमान और मेहमानिनें बैठी हुई थीं। अर्काशाने आज लोगोंको एक खास तौरसे जोशीला व्याख्यान सुनाया। प्यानोपर कुछ गीत गाये गये। वैसे अर्काशाकी सहेली बोलती-चालती नहीं थी और जब लोगों ने गूंगी कहकर ताना दिया, तो उसने भी प्यानोपर दो-चार हाथ चलाये। दर्शक-मंडलीने अर्काशाको नाचनेके लिए उत्तेजित किया। वैसे अर्काशाका नाचनेकी ओर ज्यादा झुकाव नहीं है, तो भी वह मेहमानोंको खुश करनेके लिए तैयार था; लेकिन क्या करता, वहाँ जोड़ी पूरी करनेके लिए उसकी सहेली तैयार न थी। लड़कोंके लिए कुछ भेंट तथा मिठाई और चायपानके साथ उत्सव समाप्त किया गया।

३१की मध्यरात्रिको नये वर्षका उत्सव मनाया गया। नव-वर्षके उत्सवके लिए सभी जगह छुट्टी थी। नाच-घरोंमें रात भर स्त्री-पुरुष

नाचते रहे। हमारे होटलमें भी नाचका विशेष रूपसे आयोजन हुआ था। और मुझे भी निमंत्रण-पत्र आया था। इसके पहले एक दिन मेरे एक दोस्तने मुझे नाचनेके लिए बुलाया। जब मैंने कहा कि मुझे नाचना नहीं आता, तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। उनकी समझमें नहीं आता था, कि मेरे ऐसा बहुमुखी आदमी नृत्य-कलासे कैसे वंचित रह गया। उन्होंने पूछा—आपने क्यों नाचना नहीं सीखा? मैंने कहा—मैं एक बहुत ग़रीब किसानके घरमें पैदा हुआ था। नृत्य और संगीतका सीखना अमीरों और धनियोंके ही लिए सुलभ है। ग़रीब किसानके बच्चेके भाग्यमें वह कहाँ बदे हैं। मेरे दोस्त, मेरे मज़ाकको नहीं समझ रहे थे। उन्होंने कहा—'तो अच्छा, मैं आपको नाचना सिखाऊँगा।'

मैंने पूछा—'कबसे और कैसे?'

उन्होंने कहा—'मैं किसी जोड़ीदारिन सुन्दरीको ठीककर नाचनेका पाठ शुरू कराऊँगा।' ख़ैरियत हुई कि गुरुसे भी अधिक चेलेकी सुस्तीके कारण नव-वर्षसे पहले नृत्यका एक भी पाठ समाप्त नहीं हो सका, और नृत्य मंडलीमें शामिल होनेकी नौबत नहीं आई।

* * * * * *

३१ दिसम्बर तक हमारा भारत लौटना निश्चित हो चुका था। उस दिन और पहिली तारीख़को भी तातील होनेसे हम निर्गमनके वीज़ाके लिए आवेदनपत्र नहीं दे सके। दो तारीख़को मैंने इन्स्टीट्यूटके सेक्रेटरीको वीज़ा आदिके प्रबंधके लिए कहा। उन्होंने फोन द्वारा वीज़ा-अधिकारीको इसके लिए आदेश कर दिया।

हमारे विभागकी सेक्रेटरी कज़ारोव्स्का इन्स्टीट्यूटसे ट्राम द्वारा घंटे भरके रास्तेपर कारखानेके मज़दूरोंके मुहल्लेमें रहती थीं। मैं उस मुहल्लेको ख़ास तौरसे देखनेके लिए एक दिन उनके साथ वहाँ पहुँचा। चार-चार, पाँच-पाँच तल्लेके ईंट, सीमेंट और लोहेके इन भव्य प्रासादोंको देखकर कौन कह सकता है कि वे मज़दूरोंके घर हैं। वस्तुतः मज़दूर शब्द-

का जो अर्थ पूँजीवादी देशोंमें है, वही अर्थ सोवियत्-भूमिमें नहीं होता। सोवियत्का श्रमिक अपने देशका मालिक है। वह सिरको उन्नत और छातीको तानकर चलता है। कहीं उसको नत-मस्तक और अपमानित नहीं होना पड़ता। बल्कि सोवियत्के सभी श्रेणीके मनुष्योंमें उसका स्थान सबसे ऊँचा है। मेरी पत्नी कज़ारोव्स्का जिस मकानमें रहती थीं, वहाँ तीन कमरोंके लिए एक कोठरी, रसोई और हाथ धोनेके लिए थी। बीचमें एक कोठरी बन्द आँगनका काम देती थी। रहनेका कमरा उस सत्रह रूबल मासिकवाले कमरेसे ज्यादा लम्बा-चौड़ा था। छत और दीवारोंको फूल-पत्तीके चित्रोंसे सजाया गया था। कमरेके भीतर दो मेज़, तीन अलमारियाँ, चार कुर्सियाँ और एक पलंग पड़ा हुआ था। भीतर बिजलीके तीन लैम्प लगे हुए थे। लोला कज़ारोव्स्का एक सुशिक्षित बुद्धि-जीवी महिला हैं; इसलिए उनके कमरेमें कोई ख़ास बात की गई हो, यह बात न थी। उनके आस-पास और ऊपर नीचेवाले तल्लोंके सभी कमरे इसी नमूनेके थे। लोलाको छोड़कर बाक़ी सभी रहनेवाले स्त्री-पुरुष पासके कारखानोंके मज़दूर थे। लोलाके साथ मैं मुहल्लेके स्कूलको देखने गया। सीमेंटकी सुन्दर स्वच्छ इन दो तल्लेकी भव्य इमारतोंको देखकर कोई कह नहीं सकता, कि यह प्राइमरी स्कूल है। दो तरफ़ स्कूलके कमरोंकी पाँती है, और बीचमें रसोईघर और भोजनशाला। हर एक बच्चेको दोपहरका भोजन स्कूलसे मिलता है, इसीलिए हर स्कूलके साथ रसोई और भोजनशाला होती है। बोली-बाल, फुटबाल तथा दूसरी तरहके खेलोंके लिए स्कूलके सामने और पिछवाड़े मैदान पड़ा हुआ है। आजकल वह बर्फ़से ढँका हुआ था और उसपर लड़के स्केटिंग कर रहे थे। गर्मीके दिनोंमें बर्फ़के पिघल जानेपर यहाँ हरी-हरी घास उग आयेगी। और उस वक्त लड़के हरे क्रीड़ाक्षेत्रमें फुटबाल या दूसरे गर्मीके खेल खेलते दीख पड़ेंगे। स्कूलके बाद हमने मुहल्लेके क्लब और सिनेमाघरको भी देखा। दूसरे मुल्कमें तो इन मकानोंपर ही लाख डेढ़ लाख खर्च हो जाते। पूँजीवादी

देशोंके मज़दूर क्या ऐसे मकानोंका स्वप्न भी देख सकते हैं ? सोवियत्-जन-नायक समझते हैं कि खेल-कूद तथा मनबहलावके दूसरे साधन (नृत्य, संगीत, स्वाध्याय आदि) मनुष्यके स्वास्थ्य और दिल लगाकर काम करनेकी योग्यता सम्पादन करनेके लिए उतने ही आवश्यक हैं जितनी कि काम करके थके आदमीके लिए निद्रा; और इसीलिए हर जगह इन चीज़ोंका पूरा प्रबंध किया गया है ।

* * *   * * *

६ जनवरी तक हम निश्चिन्त हो प्रतीक्षा कर रहे थे कि वीज़ा अब आ जाता है ; लेकिन उस दिन फोन करनेपर वीज़ा-कार्यालयने सूचित किया—'कोई परवा नहीं, पन्द्रह तारीख़ तक आप रह सकते हैं' ।

मैंने कहा—'मैं जानेके लिए तैयार बैठा हूँ और सोच रहा था कि वीज़ा अब आ जायगा और आप कह रहे हैं—कोई परवा नहीं, १५ तारीख़ तक आप और ठहर सकते हैं ?'

जवाब मिला—'वीज़ा लेनेके लिए तो छपे फार्मपर आवेदनपत्र देना होता है । आपने कब आवेदनपत्र दिया । हमने तो समझा कि आप कुछ दिन और रहना चाहते हैं ।'

ख़ैर बहुत कहना-सुनना बेफ़ायदा था । जाकर हम वीज़ाके लिए आवेदनपत्र दे आये और आवेदनपत्रके ख़ानेमें यह भी भर दिया, कि तेर्मिज़्के रास्ते हम अफ़गानिस्तान जाना चाहते हैं ।

१२ जनवरीको स्मोल्र्नी देखने गये । यही वह स्थान है, जहाँ बैठकर लेनिन्ने लाल-क्रान्तिका आरंभ किया और क्रान्ति-युद्धके आरंभिक दिनोंमें यहीं संचालन-केन्द्र रहा । अब भी वह कमरा मौजूद है, जहाँ रहकर, लेनिन् रात-दिन क्रान्तिकी सफलतामें चिन्तित रहा करते थे । क्रान्तिके पहले रूसके राजा-बाबुओं और सेठ-साहूकारोंकी लड़कियोंका यह विद्यालय था । पहले-पहल इस इमारत और पासके पाँच सुन्दर

गिर्जाघरोंको सम्राज्ञी कैथराइनने ईसाई साधुनियोंके लिए बनाया था। लेकिन पीछे यह इमारत विद्यालयके रूपमें परिणत कर दी गई। ये गिर्जा पत्थरके बड़े सुन्दर बने हुए हैं। लेकिन इनसे भी सुन्दर-सुन्दर गिर्जे लेनिन्ग्राद्‌में अपने भाग्यके लिए झंख रहे हैं; फिर इनकी परवा कौन करे। वर्षोंसे मरम्मत न होनेसे कितने ही शीशे और दरवाजे टूट-फूट गये हैं। बड़े गिर्जेके हालको कुछ दिनों तक सिनेमाघर बनाया गया था। यदि वह बेचारा सिनेमाघर ही रहता, तो भी उसकी मरम्मत और देख-भाल रहती, और जीवित रहनेका भरोसा होता। अब तो जैसी अवस्था है, उससे मालूम होता है, कि धीरे-धीरे इसे धराशायी होना पड़ेगा।

स्मोल्नीको दिखलानेमें लोलाने मेरी सहायता की थी। मेरे लिए क्रान्तिका यह प्रथम संचालन-केन्द्र एक बड़ा तीर्थ था। दर-असल मैं वहाँ वैसे ही भावपूर्ण हृदयसे गया था, जैसे १९३२में लन्दनमें कार्ल मार्क्सकी समाधिपर फूल चढ़ाने। कार्ल मार्क्सने यदि दीर्घ-चिन्तनाके बाद संसारके दलितोंको विज्ञान-सम्मत मौलिक साम्यवादका सन्देश दिया, तो लेनिन्‌ने उस वैज्ञानिक साम्यवादको धरतीकी ठोस चीज़ बनानेके लिए असाधारण कौशलपूर्वक लाल-क्रान्तिकी अभूतपूर्व सफलतामें कृतकार्यता प्राप्त की। साम्यवादके सम्बन्धमें लेनिन्‌का स्थान मार्क्ससे कम नहीं है।

लोला एक प्रतिभाशालिनी महिला है। उसके पिता ज़ारशाहीके वक्त फौज़ी अफ़सरोंके विद्यालयमें गणितके अध्यापक थे; और उस स्थानसे भी क्रान्तिकारी विचारोंका प्रचार करते थे। क्रान्तिके समय वह उसमें सम्मिलित हो गए। उनके तीन बेटे थे। लोला क्रान्तिके समय काफ़ी सयानी थी और उसे ज़ारशाहीके अत्याचार और मज़दूरोंकी हीन दशाका पूरा स्मरण है। यद्यपि उस समय उसके घरमें दाई और नौकर चाकर थे, तथा अब उसको अपना काम खुद करना पड़ता है। लेकिन उस समयके जीवनसे आजके जीवन हीको वह अच्छा पसन्द करेगी। वह एक तीक्ष्णबुद्धिसम्पन्न महिला ही नहीं है, बल्कि उसका स्वभाव बहुत मधुर

और ज्ञान-पिपासा बहुत तीव्र है। उसने बहुत शौकसे संस्कृत पढ़ना शुरू किया था, और मुझे रूसी सीखनेमें मदद दे रही थी। लेकिन अकस्मात् जो दूसरा निश्चय करना पड़ा, उससे उसे ज़रूर बहुत अफ़सोस हुआ। उसने चलते वक्त कोई वाक्य लिखनेके लिए कहा। मुझे उस वक्त नैषधका यह श्लोकखंड याद आ गया—

"स्मरणीया वयं वयः"

अध्याय २

(सोवियत् राष्ट्र)

१. सोवियत्-संघकी सम्पत्ति

सोवियत् भूमि यूरोपका पूर्वार्द्ध और एसियाका एक तिहाई है और भूमंडलके सारे स्थल भागका षष्ठांश है। उत्तरसे दक्खिन उसकी चौड़ाई पाँच हज़ार किलोमीतर और पूर्वसे पश्चिम दश हजार किलोमीतर अथवा पृथिवीके ध्रुवसे भूमध्य रेखाकी दूरीके बराबर है।

सोवियत्में $\frac{२}{३}$ समुद्रतट और $\frac{१}{३}$ खुश्की है। सोवियत्-संघ संयुक्त-राज्य अमेरिकासे ढाई गुना और जर्मनीसे ४० गुना, भारत (१५६३२६२ वर्गमील)से ७ गुना, युक्त प्रदेशसे ३२ गुना बड़ा है। इसकी लम्बाई पूर्व पश्चिम २६° देशान्तरसे १६०° देशान्तर तक और चौड़ाई उत्तर-दक्षिण ३५° अक्षांशसे ७७·३७° अक्षांश है। यदि एक रेल गाड़ी ६०० मील रोज़के हिसाबसे चले तो उसको पूर्वी सीमासे पश्चिमी सीमा तक पहुँचनेमें १० दिन लगेंगे। सोवियत्की पूर्वी सीमापर पश्चिमी सीमाकी अपेक्षा सूर्य ६ घंटा पहले उगता है। ब्रिटिश साम्राज्य आकारमें सोवियत्की अपेक्षा बड़ा है लेकिन वह लगातार पृथ्वीके एक हिस्सेमें फैला नहीं है; और आर्थिक और राजनैतिक दृष्टिसे वह वैसा ठोस राष्ट्र नहीं है, जैसा कि सोवियत्-संघ।

सोवियत् भूमिमें सर्दी-गर्मी भी एक स्थानसे दूसरे स्थानमें बहुत भेद रखती है। उत्तरी भागमें सालके दश महीने जाड़ा रहता है और गर्मीके मध्यमें भी बर्फ़का ढेर लगा रहता है। गर्मियोंमें इस भूमिपर कभी सूर्यास्त नहीं होता क्यों कि जिस वक्त पश्चिमी सीमापर सूर्य डूबने लगता है उस वक्त पूर्वी सीमापर सबेरा हो जाता है। मुर्मान्स्क जैसे उत्तरी भागमें गर्मियोंमें

तीन महीने सूर्य सदा क्षितिजसे ऊपर रहता है और लेनिन्ग्राद्में इन तीन महीनों "श्वेत निशा" होती है अर्थात् गोधूलीके समाप्त होते ही ऊषा आ जाती है और रातके बारह बजे भी घरसे बाहर आप बिना दीपकके समाचार-पत्र पढ़ सकते हैं।

सोवियत् भूमिकी सीमा रेखा साठ हजार किलोमीतर अर्थात् पृथिवीकी भूमध्य रेखापरकी परिक्रमाकी आधी है। इसकी सीमायें जापान, चेकोस्लोवाकिया, फिनलैंड और अफगानिस्तानसे मिलती हैं। एक जगह तो वह भारतीय सीमासे सिर्फ सात मील दूर रह जाती है।

सोवियत् भूमिके सम्बन्धमें जानकारीकी कुछ खास बातें :

क्षेत्रफल	...	२,२०,००,००० वर्ग किलोमीतर
उच्चतम पर्वत शिखर	...	पामीरमें स्तालिन गिरि, ७४६५ मीतर
विश्वकी महत्तम हिमानी (ग्लेसियर)	...	फ़ेदचेंको, अस्सी किलोमीतर लंबी
उच्चतम ज्वालामुखी पर्वत	...	कि यूचेक्कया (कम्स्चत्कामें) ४७७८ मीतर
विश्वका महत्तम सरोवर	...	कस्पियन ४,२४,३०० वर्ग किलोमीतर क्षेत्रमें
विश्वका गंभीरतम सरोवर	...	बइकाल (सिबेरिया) १७४१ मीतर
वृहत्तमा नदी	...	ओव्, ५२०० किलोमीतर लम्बी
विश्वका शीतलतम स्थान	...	वेर्खोयान्स्क (याना नदीपर याकूतिया) —६६·८° सेन्टिग्रेट
अधिकतम वर्षा	...	वातूमी (गुर्जी) २५०० मिलीमीतर प्रतिवर्ष
शुष्कतम स्थान	...	नूकुस (निम्नवक्षु नदी) ७८ मिलीमीटर प्रतिवर्ष और पामीरमें ६१ मिलीमीटर प्रतिवर्ष
उच्चतम तापमान	...	वातूमी (जनवरीमें) ६ १° सेन्टिग्रेट
उच्चतम ग्रीष्म तापमान	...	तेर्मिज (उज्बेकिस्तान) ५०° सेन्टिग्रेट (एक बजे छायामें)

सोवियत् भूमि प्रायः समतल भूखंड है जिसे उत्तर-दक्खिन लम्बा ऊराल पर्वत दो भागोंमें विभक्त करता है। पश्चिमका भाग पूर्वी यूरोपके मैदानका अभिन्न अंश है और पूर्वका भाग सिवेरियाका पूर्णतया समतल मैदान है जो कि संसारका बृहत्तम मैदान है। सोवियत्‌का दक्षिणी सीमान्त कार्पेथियन, क्रिमिया, काकेशस, कोपेतदाग, पामीर, त्यानशान और अल्ताई पहाड़ों से बँधा है। यहीं देशके बड़े-बड़े गिरि शृंग हैं जिनमें अल्बुर्ज़ (काकेशस्) ५६३३ मीतर, सेना-तोपोग्राफर शिखर (त्यान्शान्) ७४३६ मीतर और स्तालिन शिखर (पामीर) ७४६५ मीतर हैं। देशकी निम्नतम भूमि कस्पियन (गहराई १००० मीतर) और उसके आस-पास है जिसमें कस्पियनका जलतल विश्वके समुद्र तलसे २६ मीतर नीचे, और सूख गई झील बातुरका तल तो १३२ मीतर नीचे है। कस्पियनको लम्बी नहर द्वारा काला सागरसे जोड़ विश्व समुद्रसे मिलाना कठिन नहीं है। किन्तु उस वक्त कास्पियन सागर बहुत फैल जायगा और उसके तटवर्ती बहुत-सी बस्तियाँ—जिनमें बाकू नगर भी है—समुद्र मग्न हो जायँगी। इसका प्रभाव मध्य एसियाके जलवायुपर अच्छा पड़ेगा और कास्पियन और विश्व समुद्रोंके बीच जहाजोंका यातायात भी हो जायगा लेकिन अभी सोवियत् साइन्सवेत्ता कास्पियनकी विस्तृत तटभूमिको जल मग्न करनेके लिये तैयार नहीं है। कास्पियनमें गिरनेवाली महानदी वोल्गाको नहर द्वारा काला सागरमें गिरनेवाली दोनमें मिलाया जा चुका है। इसलिये भी वह यातायातसे निश्चिन्त हैं।

अपनी नदियों की लम्बाइयोंके योग और विद्युत्शक्तिकी क्षमता (२,८०,००००० किलोवात)में सोवियत् भूमि विश्वमें प्रथम है। इसके यूरोपीय भागमें वोल्गा, द्नियेपर, पश्चिमी-द्विना, उत्तरी-द्विना और दोन हैं जो रूसके केन्द्रीय भागसे निकलती हैं और कास्पियन, काला सागर बाल्तिक समुद्रोंमें गिरती हैं। सिवेरियाकी दीर्घतम नदियाँ ओब, येनिसेई और लेना उत्तराभिमुख बहती आर्कटिक सागरमें गिरती हैं।

सुदूरपूर्वकी आमूर महानदी प्रशान्त सागरमें जाती है। मध्य एसियाकी वक्षु (आमू दरिया) और श्यामा (सिरदरिया) समुद्रमें न पहुँच अरालके महासरोवरमें गिरती हैं। वक्षुसे एक शाखा निकालकर कास्पियनमें गिरानेकी योजनापर काम होने लगा है। अपने कई सौ मीलकी नई भुजाको जहाँ वह हरा भरा बना देगी वहाँ बम्बईसे हज़ार टनका स्टीमर स्वेज नहर और दर्रदानियाल होते काला सागर तथा तदंग अजोफ सागरसे दोन—वोल्गाके रास्ते कास्पियनमें जा वक्षुके मार्गसे हिमालय (पामीर)के चरणों (तेर्मिजसे और आगे) तक पहुँच जायगा।

सोवियत्-संघमें १६ संघ प्रजातंत्र हैं जिनके सबके अधिकार बराबर हैं। सोवियत्-संघ खेतीके लिहाज़से दुनियामें अव्वल है—आबाद भूमि २ अरब २३ करोड़ ६० लाख हेक्टर (हे० = २$\frac{1}{2}$ एकड़) है, जिसमें २ करोड़ एकड़ बाग़-बग़ीचे युद्धसे पहिले थे।

कोयलेका ज़ख़ीरा १६ खरब ५४ अरब टन हैं जो कि संसार का $\frac{1}{5}$, है। संयुक्त-राज्य अमेरिकामें ८० अरब टन कोयलेका ज़ख़ीरा है।

खनिज-द्रव्य सोवियत्‌की भूमिमें ३ नील ५५ खरब ५७ अरब टन हैं; जो कि दुनियाके ज़ख़ीरेका ५४·८०° है। और इस प्रकार खनिजमें सोवियत्‌का स्थान प्रथम है।*

लोहेका ज़ख़ीरा १० अरब ६१ करोड़ २० लाख टन है जो कि संसारका ५२ फी सदी है और इसमें भी सोवियत्‌का नम्बर अव्वल है। मंगानीज़का $\frac{3}{4}$ सोवियत्‌में है। सोनेकी उपजमें सोवियत्‌का नम्बर दूसरा है। और तृतीय पंच-वार्षिक योजनाके समाप्त होने तक वह संयुक्त-राज्य अमेरिकासे आगे बढ़ जायगा।

एपिटाइट (खाद)का ज़ख़ीरा २ अरब टन सोवियत्‌के पास है। फास्फोरस् (खाद) ६० सैकड़ा सोवियत्-भूमिमें है। पोटाश १८

*१६३८में लिखित पृष्ठ ६२-८६

अरब ३७ करोड़ टन इसके पास है। ऊपर जो हिसाब लगाया गया है, वह सोवियत्की सारी भूमिकी पैमाइशका परिणाम नहीं है। अभी तक ३५ सैकड़ा भूमि हीका भूगर्भ-शास्त्रीय नाप हो चुका है। ६५ सैकड़ेका नाप हो रहा है। सब मिलानेपर सोवियत् प्रजातन्त्र ऊपरके लिखे सभी खनिज पदार्थोंके ज़खीरेमें अव्वल हो जायगा।

समूरी चर्म तथा दूसरी पोस्तीन १९३५ ई०में १ अरब ७४ करोड़ ६० लाख रूबल अर्थात् प्रायः ८० करोड़ रुपयेका तैयार हुआ है।

उसी साल १ करोड़ ३५ लाख ४० हज़ार टन मछली निकाली गई।

जनसंख्या

१ जनवरी १९३३की जन-गणनाके अनुसार सोवियत्-संघमें साढ़े सोलह करोड़ आदमी बसते थे जिनमें ४६ सैकड़ा लोग १९१७की क्रान्ति के बाद पैदा हुए। ज़ारशाहीके ज़मानेमें प्रतिवर्ष १००० पर ४४ पैदा होते थे और २७ मरते थे। इस प्रकार हर साल हज़ार पर १७की वृद्धि थी। सोवियत्-शासनने एक तरफ बीमारियोंकी चिकित्सा और स्वास्थ्य रक्षाकी ओर ध्यान दिया और दूसरी ओर लोगोंकी ग़रीबी और भुखमरीको दूर किया। इसके कारण इस वक्त हर साल प्रति हज़ार २४, यानी दसवें साल २४ सैकड़ा या प्रायः १/४ की वृद्धि हो रही है। हिन्दुस्तानमें १९२१से १९३१के १० वर्षोंमें तो १/११ हीकी बढ़ती हुई थी। हरसाल सोवियत् संघमें ३० लाख आदमी बढ़ रहे हैं। १९३८के शुरूमें वहाँकी आबादी १८ करोड़से कम नहीं है। यूरोपीय देशोंमें जनसंख्या प्रति वर्ष प्रति हज़ार ५ सैकड़ा ही बढ़ती है।

सोवियत् जनसंख्या संसारकी जनसंख्या का १/१२ है। आबादी प्रति वर्ग-किलोमीतर ८ है। लेनिन्ग्राद्, कज़ान्, सारातोफ़्, रस्तोव्-दोन ये इलाके सबसे ज्यादा घने बसे हुए हैं और वहाँ आबादी प्रति वर्ग-किलोमीतर ४० पड़ती है।

खेती

खेतीकी ज़मीनका परिमाण निम्न प्रकार था—

सन्	एकड़	लाख
१९१३	२६,२५	,,
१९२०	२३,१७	,,
१९२८	२८,२५	,,
१९३७	३४,७५	,,

जिनमें कपासकी उपज निम्न प्रकार थी—

सन्	एकड़	हज़ार
१९१३	१४,७०	,,
१९२०	२,४५	,,
१९२८	२४,३०	,,
१९३७	५२,२५	,,

खेतीके लिए इस्तेमाल होनेवाली मशीनों और ट्रैक्टरों आदिकी उन्नति भी इसी प्रकार शीघ्रतासे हुई; और १९३७के अन्तमें ४॥ लाख ट्रैक्टर, १ लाख २० हज़ार कम्बाइन् और ५६१२ मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन थे। कृषिके लिए बिजलीके स्टेशन निम्न प्रकार थे—

१९२८ ई०	१९३४ ई०	१९३५ ई०
६५४	१८७४	२७७४

वैज्ञानिक खादका प्रयोग निम्न प्रकार हुआ—

१९३२ ई०	१९३६ ई०	१९३७ ई०
११११ हज़ार टन	३०८३ हज़ार टन	४७२८ हज़ार टन

सोव्-खोज—१९३६में सोवियत्-संघमें ४१३७ सोव्खोज़ (सरकारी खेती) १२७० लाख एकड़ भूमि जोतते थे। इनमें २१२७ हज़ार व्यक्ति काम करते थे। उनके पास १,८७,००० ट्रैक्टर, ८४,७०० कंबाइन,

५०१४ हज़ार ढोर, ४०६० हज़ार सुअर, १०६६६ हज़ार भेड़-बकरी थीं। उन्होंने १० लाख बुशल् (१ बुशल्=१६ सेर) या ४ लाख मन अनाज पैदा किया।

चावल सोवियत्के बहुत कम भागोंमें पैदा होता था। इधर चावल-की खेतीमें भी बहुत तरक्की हुई है। लिसेंकोकी बीज-संस्कार प्रक्रियाने—जिससे कि फसल दो हफ़ते पहले तैयार हो जाती है—चावलकी फसलका क्षेत्र ठंढी जगहों तक पहुँचा दिया है। १९३७में प्रति एकड़ ३८ बुशल् (१४ मन ८ सेर) चावलकी औसत रही, जो कि युद्धके पहलेकी औसतसे दूनी है।

स्थान	कुल एकड़	बुशल् प्रति एकड़
क्रासोदर	६२,५००	६७ (२६ मन ३२ सेर)
वोरोशिलोफ़् (चेर्नियास्कं) दूमित्रोफ़्		८० (३२ मन)
रोस्तोफ़्		९० (कुछमें १२०=४८ मन)

कल्ख़ोज़—१९३७में सोवियत्के कल्खोज़ों (पचायती खेती) में एक लाख ट्रैक्टर-ड्राइवर, ७० हजार शोफर, दो लाख कम्बाइन्-मिस्त्री और २० लाख दूसरे कमकर थे। ५५ हज़ार कोल्खोज़ोंमें अपने क्लब थे और उनमें ३८ हज़ार वाचनालय थे। १९३६में ८० हज़ार कल्खोज़ोंमें ३५ लाख बच्चोंके लिए बच्चाखानेका इन्तज़ाम था।

आय-व्यय

१९३७में सोवियत्-संघकी आय ९८ अरब ६ करोड़ ९५ लाख रूबल (प्राय: ४८ अरब रुपये) और व्यय ९७ अरब ११ करोड़ ९५ लाख रूबल (प्राय: ४७ अरब रुपया) था। इसमें टैक्ससे आय २ अरब ६४ करोड़ ५० लाख और उद्योगसे ८३ अरब आय हुई।

आयके मार्ग १९१३ ई०से १९३७ ई०में निम्न प्रकारसे बढ़े हैं—

	१९१३ ई०	१९३७ ई०
आय	१००	४१०
इंजीनियरिंग	१००	२८००
खेतीकी मशीन	०	५६१७
स्वास्थ्य-व्यय	१००	५१८८
विद्यार्थी-संख्या	१००	४७०
पुस्तक-प्रकाशन	१००	६६४

भिन्न-भिन्न चीज़ोंकी उपज १९१३से १९३७ तक किस प्रकार बढ़ी है, उसका लेखा यहाँ दिया जाता है—

	१९१३	१९२८	१९३२	१९३७
बिजली (किलो-वाट् घंटा)	१९४५	५००७	१३५४०	४०५००

	१९१३ ई०	१९२७–२८ ई०	१९३२ ई०	१९३६ ई०
पेट्रोल (करोड़ टन)	९२३४१	११७४९२०	२२३१८७०	२९१३९३०
कोयला (क० ट०)	२९११७००	३५५१०००	६४६६४००	१५०१५०००

	'१३ ई०	'२७-२८ ई०	'३२ ई०	१९३६ ई०
कच्चा लोहा (हज़ार टन)	४२१६	३२८२	६१६१	१४३९८
फ़ौलाद (हज़ार टन)	४२३१	४२५०	५९२७	१६३२५
ताँबा (टन)	८८०६००	२७८८१००		

	१९१३ ई०	१९३६ ई०
ताँबा (सिल)	३११०० टन	१००००० टन
ताँबेका तार	१६७०० टन	८६३०० टन
ताँबा (केबिल)	०	२८४१०० टन

	१९३२ ई०	१९३७ ई०

जूता	८२० लाख जोड़ा	१८०० लाख जोड़ा
	प्रथम पंच-वार्षिक	द्वितीय पंच-वार्षिक
सर्वजनोपयोगी माल	७·८ अरब (रूबल)	१९·५ अरब (रूबल)

	१९२७ ई०	१९३६ ई०	१९३७ ई०
मछली (लाख क्वाटर)	९५	१६२	१८०

१९२७में मछलीकी पैदावारमें सोवियत्का नंबर पाँचवा था। १९३६में संसारमें दूसरा नम्बर हुआ। सारे सोवियत्में खानेके लायक ३१० प्रकारकी मछलियाँ मारी जाती हैं, जिनमें १९ जीवित ही एक जगह से दूसरी जगह भेजी जाती हैं।

टिनमें बन्द खाद्य, फल और दूधकी भी माँग इधर बहुत बढ़ गई है; और इसके लिए सोवियत्ने बड़े बड़े कारखाने खोल रखे हैं। यहाँ उनका कुछ हिसाब दिया जाता है—

	१९३६	१९३७
खाद्य (टिन)	११ अरब	१४ अरब
फल (टिन)	२९८० लाख	

	१९३२	१९३४	१९३५	१९३६
दूध (लाख टिन)	४०	८९	१६०	२५४

	१९३२	१९३३	१९३४	१९३५	१९३६
मक्खन (टन)	७१६००	१२४०००	१३८०००	१५४०००	२०००००

	१९२७	१९३६	१९३७
पनीर (हज़ार क्वार्ट)	७०००	२५०००	३४०००

१९३३में सोवियत् चीनी पैदा करनेमें तीसरे नंबरपर था। १९३५में संसारमें अव्वल हो गया।

	१९२७	१९३६	१९३७
चीनी (लाख टन)	१६	३०	४०

क्रान्तिसे पहले रूसमें चाय बहुत कम पैदा होती थी। अधिकांश चाय बाहरके देशोंसे आती थी। पंच-वार्षिक-योजनाओंमें इसकी ओर विशेष ध्यान दिया गया; और उसका परिणाम निम्न प्रकारसे देखा जाता है।

	क्रान्ति से पूर्व	१९३५	१९३७
चाय (कारखाने)	५	२८	३९
चाय (टन) ...	१३०	...	१६,०००

सिगरेट सोवियत्में बहुत पीया जाता है। अमेरिका—जहाँ कि हरएक औरत सिगरेट पीना अपना फ़र्ज़ समझती है—सिगरेट बनानेमें अव्वल है।

यद्यपि १९३६में सोवियत्ने ८६ अरब सिगरेट बनाये, तो भी उसका नंबर अभी दूसरा ही है। और शायद जब तक औरतें मदद देनेके लिए मैदानमें न आयेंगी, तब तक दूसरा ही रहेगा।

वेतन

१९१३की जुलाईमें मज़दूर २५ रूबल और खानके मज़दूर १२से २५ रूबल मासिक पाते थे। क्रान्तिके बाद मज़दूरोंकी तनख्वाह बढ़ती गई। १९२८में जो तनख्वाह थी १९३२में उससे तिगुनी हो गई और १९३२से १९३७में दुगुनी और बढ़ी। १९३७के अन्तिम महीनेमें आरम्भिक मासके वेतन पर १० सैकड़ा वृद्धि हुई। मज़दूरों और वेतनका हिसाब १९२३से १९२८ तक इस प्रकार है—

		१९२३	१९२८
मज़दूर	..	११५ लाख	२५८ लाख
वेतन	..	८२० करोड़	७१६० करोड़

रबर फ़ैक्टरीमें १९३४ और १९३६के दो सालोंमें कमकरोंके वेतनमें ७०·५ सैकड़ा वृद्धि हुई और उसी समयमें खानोंमें ५९से ८० सैकड़ा तक। १९३१की अपेक्षा दोनेत्सककी खानोंमें मज़दूरोंकी वेतन-वृद्धि निम्न प्रकार हुई—

१९३१	१९३३	१९३४	१९३५	१९३६	१९३७
१००	१३७	१५७	२२०	२६३	३१०

स्मरण रहे कि १९२९के बाद जो भयंकर मंदी संसारके बाज़ारोंमें हुई, उसके कारण पूँजीवादी देशोंमें तनख्वाह बहुत कम कर दी गई जब कि इन्हीं वर्षोंमें सोवियत् श्रम-जीवियोंकी तनख्वाह तिगुनीसे भी अधिक हो गई।

शिशुरक्षा

सोवियत् सरकारका ध्येय ता है बच्चोंकी परवरिशकी ज़िम्मेवारी अपने ऊपर लेना जिसमें माता-पिता पर उनका बोझ न पड़े। उनके सिद्धान्तके अनुसार सन्तान या भविष्यके नर-नारीके रक्षण और पोषणकी ज़िम्मेवारी व्यक्तिके ऊपर न होकर राष्ट्रके ऊपर होनी चाहिए। चीज़ोंकी उपजसे बढ़कर मनुष्यकी उपजकी देखभाल करना जरूरी है। कारखानेका कोई ख़राब हो गया माल एक ही बार नुकसान पहुँचा सकता है; लेकिन सन्तानकी ख़राबीसे तो पीढ़ियाँ ख़राब होती जायँगी।

सन्तानकी परवरिशको सारी ज़िम्मेवारी अपने ऊपर मानते हुए भी अभी वह उतना नहीं कर सकी है; तो भी इस क्षेत्रमें उसके कामसे दुनियाके और देशोंका मुक़ाबला नहीं किया जा सकता। जन्म पर माँ-बापको हर बच्चेके लिए ४५ रूबल मिलता था, पीछे ९० रूबल होगया और इस वक़्तका आँकड़ा हमारे पास नहीं है। लेकिन वह और भी ज्यादा है। इसके अतिरिक्त प्रसवके वक्त और उसके बाद भी डाक्टर, नर्स और दवा-दारूका खर्च सरकार देती है। माँको बच्चा

जननेसे पहले दो मास और बादमें दो मास (कल्खोजोंमें मीयाद आधे मासकी है) पूरे वेतनके साथ छुट्टी मिल जाती है। पाँचवें लड़केसे माँ-बापको सरकार विशेष रूपसे सहायता देती है। सातवें लड़केसे ५ वर्ष तकके लिए दो हज़ार रूबल वार्षिक सरकारसे मिलता है। और दसवें लड़केसे ५००० रूबल वार्षिक। बालकोंकी मददमें निम्न ३ वर्षोंमें जिस तरह सरकारने रूबल खर्च किया है, उससे उसकी इस विषयकी नीति स्पष्ट हो जाती है—

१६२६	१६३२	१६३६
३२ लाख	१४३२ लाख	७०६० लाख

बच्चोंके लिए जो सरकार इतना ध्यान रखती है, उसका सुपरिणाम भी वैसे ही दिखलाई पड़ता है। जर्मनीसे मुक़ाबला करनेपर मालूम होगा, कि बच्चोंकी मृत्यु प्रति १० हज़ार किस परिमाणमें है—

			१६३५
जर्मनी	..	..	१६·७
सोवियत्	..	..	७·७
उक्रइन्	..	..	६·२

मरे पैदा हुए बच्चोंकी ओर देखनेसे यह फ़र्क़ और भी ज्यादा मालूम होता है।

		१६३५
जर्मनी	..	४·६ प्रति १० हज़ार
सोवियत्	..	०·७ प्रति १० ,,

सोवियत्-भूमिमें स्वस्थ आदमीको बेकार होनेकी नौबत नहीं आ सकती। हरएक आदमीके लिए वहाँ काम मौजूद है। वृद्धावस्था, बीमारी या अंगभंग होनेके कारण यदि कोई आदमी काम करनेके अयोग्य हो जाय, तो उसकी और उसके आश्रितोंकी परवरिश सरकारके ज़िम्मे

होती है। इस मदमें सरकार कितने रूबल खर्च कर रही है, इसे भी देखिए—

१६२४	१६२६	१६३६
१३० करोड़	४४० करोड़	८८० करोड़

१६१७से १६३६ तक चिकित्साके लिए जो आयोजन सरकारने किया है, वह भी ध्यान देनेकी चीज़ है।

		१६१७	१६३६
डाक्टर	..	१६,८००	१,००,०००
अस्पतालमें चारपाइयाँ		१,७३,६३४	६,१६,८००

शिक्षा

शिक्षाके बारेमें सोवियत् सरकारका सबसे अधिक ध्यान है ; यह तो इसीसे मालूम हो जायगा कि सोवियत् सरकारके बजटका २० सैकड़ा शिक्षापर खर्च किया जाता है। आजुर्बाइजानमें १६१४-१५में सिर्फ़ ३ सैकड़ा शिक्षापर खर्च होता था, लेकिन १६३५-३६में सोवियत् सरकारने १७·७ सैकड़ा खर्च किया। १६२६-३०में जो भिन्न-भिन्न देशोंने शिक्षा पर खर्च किया है, उसे भी देखिए—

भारत (ब्रिटिश)	..	३·३ सैकड़ा
फ्रांस	..	११·२
आस्ट्रिया	..	११·५
जर्मनी	..	१३·३
इंगलैण्ड	..	१५·१

शिक्षाकी ओर सरकारका जो इतना ध्यान गया है, उससे स्कूलोंमें छात्रोंकी संख्या बहुत बढ़ गई है। उसके आँकड़े इस प्रकार हैं—

१६१४	१६३६	१६३७
७८ लाख	२ करोड़ ७४ लाख	३ करोड़ १० लाख

३ करोड़ १० लाखमें ८८ लाख नगरोंके विद्यार्थी हैं, २१२ लाख गाँवोंके और १० लाख रेल-कर्मचारियोंके।

सिर्फ़ एक साल १६३६में शिक्षकोंकी वेतन-वृद्धिके लिए सरकारने १ अरब रूबल मंजूर किया।

स० स० स० र०—विज्ञान अकदमी (अकदमी-नावुक) सोवियत्की सबसे बड़ी वैज्ञानिक संस्था है। ज़ारशाही अकदमीकी १८ शाखाएँ थीं। आज भिन्न-भिन्न विषयोंकी उसकी ८० शाखाएँ हैं। जिनमें एक ओरियंटल-इंस्टीट्यूट भी है। एकेडेमीमें काम करनेवाले वैज्ञानिकोंकी सख्या ५० हज़ार है।

मनुष्य (शरीर और मन) पर विशेष अन्वेषणके लिए गोर्की इंस्टीट्यूटके नामसे एक बड़ी संस्था मास्कोसे कुछ मील पर करीब-करीब बन चुकी है। इसमें ६५०० कमरे और हज़ारों विद्वानोंको अपने-अपने विषयके अन्वेषणका काम दिया जायगा।

पुस्तक-प्रकाशन

क्रान्तिके २० सालों (१६१७से १६३७ ई०)में पुस्तकोंके प्रकाशन-में बड़े ज़ोरसे वृद्धि हुई है। सोवियत्ने इन २० सालोंमें देशी विदेशी ग्रन्थकारोंके ग्रन्थोंकी कितनी-कितनी प्रतियाँ छापी हैं, उसके देखनेसे यही नहीं मालूम होगा कि कौन ग्रन्थकार वहाँ अधिक सर्वप्रिय है; बल्कि यदि बाहरके देशोंसे मुक़ाबला किया जाय, तो ग्रन्थोंके परिमाणकी प्रचुरता भी मालूम होगी।

गोर्की	..	३१६ लाख
पुश्किन्	..	१६१ ,,
ल्यू ताल्स्त्वा (टालस्टाय)	..	१४० ,,

चेखोफ़	..	११४ लाख
विक्टर ह्यूगो	..	१७ ,,
रोम्याँ रोलाँ	..	१४ ,,
अनातोल् फ्रांस	..	१२ ,,
बलज़क्	..	१२ ,,
डिकेंस	..	११ ,,
डार्विन	..	१८० हज़ार
आइन्स्टाइन्	..	४८ ,,
हेगेल्	..	४० ,,

*　*　*　　　　*　*　*

ऊपर हम कह चुके हैं कि अभी तक सिर्फ़ ३५॥ सैकड़ा भूमिकी ही पैमाइश होनेपर भी सोवियत् सरकार संसारमें कितनी ही खनिज सम्पत्तियोंमें अव्वल है। १९३७की जुलाईमें अन्तर्राष्ट्रीय-भूगर्भशास्त्री-कांग्रेस मास्कोमें हुई थी। उस वक्त संसारके सभी देशोंके भूगर्भ-शास्त्रवेत्ता मास्कोमें एकत्रित हुए थे। सोवियत् विज्ञानवेत्ता अकदमिक गुब्किन्-ने हिसाब लगाकर बतलाया था कि स० स० स० र०का मिट्टीके तेलका ज़खीरा ६ अरब ३७ करोड़ ६३ लाख टन है, जिसमें ३ अरब ८७ करोड़ ७२ लाख तो काम लगे हुए क्षेत्रोंमें है। इस आँकड़ेको सुनकर बहुतसे वैज्ञानिकोंको सन्देह होगा; यद्यपि इस बातको सभी पूँजीवादी अखबार भी मानते हैं कि तेलमें स० स० स० र०का स्थान संसारमें सर्व प्रथम है।

कांग्रेसको हुए ५ महीने नहीं बीते थे कि आज़र्बाइजान् और दूसरे स्थानोंके तेलके ज़खीरे पहलेके आँकड़ेसे भी बहुत अधिक साबित हुए। वैज्ञानिक गुब्किन् एक जगह लिखता है—

आइए, हम बाकूके इलाकेको देखें। कितनी ही बार लोगोंने प्रश्न उठाया कि अब्शेरोन् प्रायद्वीपाली खानें—सबुन्ची, रामानी और दूसरे

तैल-क्षेत्र—करीब-करीब खतम हो चुके हैं। लेकिन अब भी इन जगहोंमें निकलनेवाले तेलका परिमाण कम नहीं हो रहा है। १९३५में कुछ भूगर्भशास्त्रियोंके अनुसार १९३८के तेलका ज़खीरा थोड़ेसे गहरे स्तरों को छोड़कर खतम हो जानेवाला था। लेकिन पिछले दो वर्षोंके आँकड़े साबित कर रहे हैं कि अब्शेरोन्के तैल-क्षेत्रकी सीमाके भीतर ऐसे दूसरे ज़बर्दस्त ज़खीरे मौजूद हैं जिनका पहले हमें पता नहीं था—जिरव तैल-क्षेत्र और पेश्चानी द्वीपमें हालमें जो बर्मा चलाया गया है और वहाँपर नये ज़खीरे मिले हैं, उनसे साफ़ पता लगता है कि वहाँ तैलका खजाना घटनेकी जगह बढ़ा दिखाई पड़ता है।

बीबी-ऐबत् तैल-क्षेत्रको खतम हुआ-सा समझा जाता था, लेकिन हालके बर्मा चलानेसे मालूम हुआ कि तेलकी कमी खज़ानेके खतम होनेके कारण नहीं थी, बल्कि मशीनकी कमज़ोरीके कारण।

अर्तेम्द्वीपके तेलके बारेमें भी हमें विचार बदलने पड़े हैं। वहाँ खुश्कीके अलावा समुद्रकी तहमें तेल निकला है, और उसके निकालनेके लिए समुद्रकी पेंदीमें बर्मा चलाकर ट्यूब वेल खड़ा किया गया।

इस प्रकार अब्शेरेन् प्रायद्वीपके तेलका खजाना अब भी कम हुआ नहीं दिखाई पड़ता।

बाकूके दक्षिण-पश्चिम पूतिन्स्ककी उपत्यकाकी बग़लमें तेलकी खोज हुई है। मियाजिक्में नये तेलके पता लगानेमें बड़ी सफलता मिली है।

बाकूसे ६० किलोमीतर (४० मील) दक्षिण-पश्चिम पोर-सागत्में एक नया क्षेत्र मिला है। पहले नम्बरके कुएँमें पहले तेल आया लेकिन पीछे पानी भर आया। जान पड़ने लगा कि पहलेकी परीक्षा ग़लत थी। लेकिन उसके पास ही २७ नंबरका कुआँ खोदा जाने लगा, तो १००० टन फेंकनेवाला चश्मा (गशर) निकल आया; जिसने साबित कर दिया कि तेल वहाँ बहुत परिमाणमें है।

आजुर्बाइजान्का तैल-क्षेत्र बहुत पुराना है। उत्तरी काकेशस्में कई नये तैल-क्षेत्र मालूम हुए हैं; जिनमें ग्रोज्नी, माइकोप् और कूबन्के ज़िले तथा दागिस्तान ज्यादा महत्वपूर्ण हैं। ग्रोज्नी क्षेत्रके कुएँ काफ़ी तेल दे रहे हैं। दागिस्तानके तैल-क्षेत्र, काइकेन्त, आर्चासु और इज़्बरिबश्के बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। यहाँके तैल-कूप बड़ी सफलतासे काम कर रहे हैं। दागिस्तानके मखच्कला प्रदेशमें भी ऐसे प्रमाण मिले हैं; जिनसे मालूम होता है कि वह भी अचिर भविष्यमें एक अच्छा तैल-क्षेत्र होगा।

इन खोजोंसे २० मील लम्बा (माइकोप्से उत्तर-पश्चिमकी तरफ फैला) एक नया तैल-क्षेत्र मिला है। १९३६में माइकोप् इलाक़ा प्रतिदिन ३००० टन तेल देता था। १९३७के अन्तिम महीनोंमें वह प्रतिदिन ५००० टन दे रहा था।

क्रान्तिके पहले सिर्फ काकेशस् तैलका क्षेत्र समझा जाता था। पहली पचवार्षिक योजनामें सोवियत्-संघके पूर्वी भाग (सखालिन्)में एक दूसरा तैल-क्षेत्र मिला। यह क्षेत्र साल-बसाल बढ़ रहा है। दस साल पहले उरालमें तैलकी कल्पना भी कोई नहीं करता था; लेकिन अब हालत बदल गई है। १९२९में चूसोवोलग्राद्में तेल निकला; और १९३२में स्तेर्लीतमकके पास ईशिम्बएफ्में एक नया तैल-क्षेत्र मिल गया। यह तैल-क्षेत्र आजकल प्रति वर्ष १० लाख टन दे रहा है। ऊफ़ाके पश्चिममें तुइमाज़िन्स्की क्षेत्र मिला है, जिसके कुएँ प्रतिदिन १०० टनसे १५० टन तक तेल दे रहे हैं।

इससे भी महत्वपूर्ण खोज है, ओरेन्बुर्ग प्रान्तके बुगुरुस्लन्के पास एक तैल-क्षेत्रका पाना। काल-नोकम्स्क, सीज्रन् और स्ताव्रोपोल् वोल्गाके किनारेके इन तीन स्थानोंमें फैला यह एक नया तैल-क्षेत्र है।

कामा नदीकी उपत्यकामें भी नये तैल-क्षेत्रका पता लग रहा है। सिउकेयेवो केस्माके दक्षिणी तटपर क़ज़ान नगरसे १०० किलोमीतर (६०

मील) नीचे है। यहाँ भी तेलके लक्षण मिल रहे हैं। सम्भावना तो हो रही है, कि तेल रूसके केन्द्रीय ज़िलोंमें भी है, और ताजी खोजें इसको पुष्ट कर रही हैं। उक्रइन्के रोम्नी नगरके पास स्पष्ट मिट्टीके तेलका पता लगा है। इस प्रकार उक्रइन् भी तेलसे खाली नहीं है। तुर्कमानिस्तान और मध्य एसियाके दूसरे प्रजातन्त्रोंमें भी तेलका पता लग चुका है।

उराल्-एम्बा जिले प्रति साल ४ लाख ६६ हजार टन तेल दे रहे हैं।

सोवियत्के तैलका ज़खीरा बहुत भारी है, इसमें शक नहीं। लेकिन उसका खर्च भी उतना ही अधिक है। ४ लाख ५० हज़ार ट्रैक्टर (८० लाख घोड़ेकी शक्तिसे भी ज्यादा) और १ लाख २० हज़ार कंबाइन् जो कि १९३७के आखिरमें सोवियत्के खेतोंमें लगी थीं, उन्हींके लिए बहुत तेलकी ज़रूरत है। और उनके अतिरिक्त सोवियत्-संघके मोटर-कारखानोंसे प्रतिदिन ६०० मोटरकार और ७०० लारियाँ निकलती हैं। जिनके लिए भी तेलकी ज़रूरत है। पिछले साल मास्को (स्तालिन् मोटर-कारखाना), गोर्की (मोलोतोफ्-मोटर-फ़ैक्टरी)के कारखानोंका पुनर्निर्माण हुआ है। जिसके कारण और भी मोटरें और लारियाँ बनने लगी हैं। और इसका मतलब है तेलका और खर्च।

मोटर और ट्रैक्टर तक ही काम खतम नहीं हो जाता। सवारी और लड़ाईके हजारों हवाई जहाज़ तथा टैंक और दूसरी सैनिक मशीनें भी तेल चाहती हैं।

वोल्गा-तैल-क्षेत्र—१० दिसम्बर १९३७को एक ज़बर्दस्त तेलका फौवारा (गशर) वोल्गाके दाहने किनारे स्तव्रोपोल नगरकी दूसरी तरफ़ निकला। उसने सिद्ध कर दिया कि वोल्गाका तैल-क्षेत्र भी बहुत भारी है। यह तैल फ़ौवारा ६६० मीटर नीचेसे आया है। इसने एक दिनमें २५० टन बहुत

अच्छे किस्मका पेट्रोल दिया। पहले सिर्फ़ इतना ही कहा जा सकता था कि वोल्गा उपत्यकाके किसी भागमें तेल मौजूद है, इस आविष्कारसे पता लग गया कि वोल्गाका दक्षिणी किनारा तैलका एक बहुत भारी ज़खीरा अपने भीतर छिपाये हुए है। यह तैल-क्षेत्र बहुत दूर तक ओरेन्बुर्गके बुगुरुस्लन्से लेकर स्तव्रोपोल् तक फैला हुआ है।

१६३८में ७ या ८ नये ८५०० मीतर (२५ हज़ार फ़ीटसे अधिक) गहरे कुएँ खोदे जायँगे। इसके लिए बर्मा और भारी मशीनें वहाँ पहुँच गई हैं। अगले साल वोल्गाके दो दूसरे तैल-क्षेत्र—प्रोस्कुरोवो और ओत्वाज्नी-वोव्रग्में भी इसी तरहके गहरे कुओंके खोदनेकी योजना तैयार है। इस प्रदेशमें जहाँ रेलवे और नदीके स्टीमरके कारण बोझा ढोनेका सुभीता है वहाँ केन्द्रीय जगहमें होनेसे और भी अधिक फ़ायदा है।

भूगर्भशास्त्र-संबंधी नई खोजें

१६३७की खोजोंसे कई नई खानोंका पता लगा है। इस साल सोवियत्-संघके भिन्न-भिन्न भागोंमें सैकड़ों अन्वेषक दल भेजे गये थे। इस साल अत्युमिन्स्क प्रान्तके नवो-रोसिस्क इलाक़ेमें कोमाइट्स (एक रासायनिक द्रव्य)के २३ बड़े-बड़े ज़खीरोंका पता लगा है।

दक्षिणी उरालके उफ़ालेइ इलाक़ेमें भी इसका ज़खीरा है।

पिछले साल (१६३७)की खोजोंसे सोवियत्का कोयलेका जखीरा, जितना कि पहले समझा जाता था, उससे दूना हो गया। कोमी स्वायत्त-प्रजातंत्रका इन्तोव (स्वायत्त-रिपब्लिक) बहुत भारी कोयला-क्षेत्र है। पेचोराकी घाटीमें चोर्नया नदीके किनारे एक और बड़ा कोयलेका इलाक़ा मिला है। कज़ाकस्तानके मंग्युस्तउमें नई कोयलेकी खान निकली है। मध्य-एशियामें एग्नोवका कोयला-क्षेत्र सिद्ध हो गया। किर्गिजिस्तानमें कोक्यन्गकामें भी पिछले साल कोयला मिला है; और वह अच्छी जातिका है। सुदूरपूर्व-प्रदेशमें खुंगारि-इस्क कोयला उक्त प्रदेशके उद्योग-धन्धोंके बढ़ानेमें बड़ा सहायक सिद्ध होगा।

कज़ाकस्तानके करातऊ इलाकेमें बड़े ऊँचे दर्जेका फ़ोस्फेट मिला है। उसका परिमाण २० करोड़ टन आँका गया है।

अर्मेनी (अर्मेनिया)के चिबुखलिन्स्क स्थानमें ताँबेकी बड़ी खान निकली है। कज़ाकस्तानके युगाजोर पर्वतमें भी ताँबेकी खान निकली है। इसके ताँबेके पत्थरमें सोना भी मौजूद है।

* * *   * * *

चुकोत्स्क (कम्चत्स्का) सोवियत्-संघके सबसे पूर्वी भागमें जनशून्य अतिशीतल प्रदेश है। वहाँ एक खास अन्वेषक-मंडली वोदिनेत्स्कके नायकत्वमें भेजी गई थी। मंडलीने दिसम्बरके जाड़ोंमें खोज करनेके लिए हवाई जहाज़ोंसे मदद ली। पिछले १० सालमें ३६ बार अन्वेषकोंकी मुहिम वहाँ जा चुकी है। पहले उतनी सफलता नहीं हुई थी। गत जाड़ोंमें हवाई जहाज़ोंकी मददसे चुकोत्स्कका अन्वेषण बड़े विस्तारके साथ हुआ; और वहाँ सोना और दूसरी बहुमूल्य धातुओंके ३ ज़खीरे मिले हैं। उनको खोदनेका प्रारंभिक प्रबन्ध हो चुका है। जाड़ोंमें चुकोत्स्क (६५° अक्षांशसे भी उत्तर ध्रुव-कक्षा)में सर्दी ही अधिक नहीं होती है, बल्कि उत्तर और दक्षिण समुद्रके नज़दीक होनेसे आसमानमें अधिकतर बादल और कुहरा छाये रहते हैं। बादल और कुहरेमें उड़नेका साहस सिर्फ़ ध्रुव-कक्षीय सोवियत् वैज्ञानिक ही कर सकते हैं। श्मित् अन्तरीपसे क्रास खाड़ी तक पहुँचनेमें महीनों लगते थे; लेकिन आज विमानसे चुकोत्स्कके किसी भागमें पहुँचनेमें दो-तीन घंटेसे अधिक नहीं लगते।

अंगाराकी बिजली—अंगारा सिबेरियाकी एक प्रचंड नदी है, जो बइकाल झीलसे निकलकर येनीसेइ नदीमें गिरती है। इसकी धार इतनी तेज़ और पानी इतना अधिक है कि 'सफ़ेद-ईंधन' (बिजली) पैदा करनेका अपरिमित स्रोत है। बिजली पैदा करने वाले कमसे कम ६ भारी स्टेशनोंके लायक़ है। अंगारा हर साल ६१० करोड़ किलोवाट् घंटा बिजली दे सकती है; जो कि १९३७के अंतमें पैदा होने वाली सारे सोवियत्की

बिजलीसे दूनी है। स्मरण रखना चाहिए कि आज भी बिजली पैदा करने में सारे संसारमें सोवियत्का नंबर दूसरा है। योजनाके मुताबिक ८६ लाख किलोवाट् ताक़तके स्टेशन बनाये जाने वाले हैं। उत्तरी अमेरिकामें सेट लारेंस नदीसे बिजली पैदा करनेकी जो योजना है, वह ३६ लाख किलोवाट् ताक़तकी ही है।

अंगाराके सभी बिजलीके स्टेशनोंके बनानेमें कुछ वर्ष लगेंगे; लेकिन पहले स्टेशन बइकाल—जो कि इर्कुत्स्कके पास है—में हाथ लग गया है। इस स्टेशनमें ६ लाख किलोवाट्की क्षमता है; और यह हर साल ४ अरब किलोवाट् घंटा बिजली देगा। इस प्रदेशकी खनिज और प्राकृतिक सम्पत्ति के साथ इतनी बिजलीके मिल जानेपर यह प्रदेश उद्योगका बड़ा केन्द्र बन जायगा।

बइकाल हाइड्रो-इलेक्ट्रिक-स्टेशन इर्कुत्स्कसे प्रायः ५ मील ऊपर अवस्थित है। इस स्टेशनसे प्रायः ६० मीलपर चेरेमूखोवोमें कोयलेका बहुत बड़ा ज़खीरा तथा सेंधा नमक है। कोयला और नमक खोदनेके काममें आनेवाली मशीनें इस बिजलीसे अच्छी तरह चलाई जायेंगी और वहाँ हर प्राणिज रसायनकी तैयारीके लिए भी कारखाने खोले जा सकेंगे। बनावटी रबर बनानेके कारखानोंकी योजना तैयार हो चुकी है। लोहेकी मिश्रित धातुओंको बनानेमें बिजलीकी बड़ी आवश्यकता होती है; और बइकालका स्टेशन इसके लिए बड़ा काम करेगा। अंगाराकी सस्ती बिजलीके सहारे हर साल २५से ५० हज़ार टन अलमोनियम तैयार करनेवाला कारखाना क़ायम किया जायगा। अलमोनियमका कच्चा माल उरालसे रेल द्वारा भेजा जायगा। अंगाराके निचले हिस्सेमें भी बौक्साइट—जो अलमोनियम बनानेमें काम आता है—का काफ़ी ज़खीरा मिला है। मंगानीज़के कारखाने भी यहाँ संगठित होने वाले हैं। चेरेमूखोवोके इलाक़े तथा अंगाराके निचले भागमें बड़े ऊंचे दर्जेकी मंगानीज़ मिली है।

बइकालकी बिजली द्वारा चेरेमूखोवोके कोयलेसे पेट्रोल और तेज़ाब

निकाला जायगा। इस प्रकार इस प्रदेशको दूरसे पेट्रोल लानेकी ज़रूरत न होगी।

बइकाल-विद्युत-स्टेशनका बन्द खिबेरियन रेलवेके क़रीब बन रहा है। यह इतना ऊँचा बनाया जा रहा है, कि इससे नदीका धरातल १०० फ़ीट ऊँचा हो जायगा। इसका असर बइकाल झीलके धरातलपर भी पड़ेगा।

झीलसे नीचेकी ओर जानेके लिए जहाजोंके वास्ते लॉक (अत्यन्त तीक्ष्ण धारको कृत्रिम रूपसे शान्त बनाकर जहाज़ोंके रास्ते) बनाये जायेंगे। उनके कारण इर्कुत्स्क बइकाल झीलका बन्दरगाह बन जायगा।

बइकाल-विद्युत्-स्टेशनके बनानेमें उतना ही खर्च आयेगा, जितना कि वोल्गा नदीके रिब्रिन्स्क स्टेशन—जो कि बड़ी तेज़ीसे आजकल बन रहा है—पर आयेगा। लेकिन विद्युत्-शक्ति वहाँसे यहाँ चौगुनी पैदा होगी। सोवियत्का सबसे बड़ा विद्युत्-स्टेशन द्नीयेपेर् जितनी बिजली देता है, बइकाल उससे ड्योढ़ी देगा। स०स०स०र०में अंगाराकी बिजली सबसे सस्ती पड़ेगी। यह प्रदेश मंगोलिया, याकूतिया और सुदूरपूर्वके मध्यमें होनेसे बहुत महत्त्व रखता है। जितने ही यहाँ उद्योग-धन्धे और आबादी बढ़ेगी, उतनी ही सोवियत्की शक्ति सुदूरपूर्व—जिसपर जापानकी बड़ी आँख है—में बढ़ेगी। इस प्रकार अंगाराके एक करोड़ बीस लाख अश्व-शक्तियोंको बिजलीके रूपमें पकड़नेसे सिबेरियाकी काया-पलट हो जायगी।

वोल्गाकी बिजली—लेना (४४२८ किलोमीतर) नदीके बाद वोल्गा (३८६४ किलोमीतर) सोवियत्की सबसे बड़ी नदी है। तीसरी पंच-वार्षिक-योजनामें वोल्गा नदीपर बिजलीके स्टेशनोंके बनानेकी योजनाको काममें लाया जाने लगा है। इस विशाल नदीपर १३ स्टेशन बनने जा रहे हैं। इनकी ताक़त १ अरब किलोवाट् होगी। प्रति वर्ष वह १४ अरब

किलोवाट् घंटा बिजली देंगे जो कि फ़ांस या इटलीकी सारी बिजलीके बराबर है। जो स्टेशन इस वक्त बन रहा है, वह २५ लाख किलोवाट् ताक़तका है। सारी योजना समाप्त होनेपर इससे २५ लाख वर्ग-किलोमीतर या ७ करोड़ आदमियोंके निवासकी भूमिको दूसरी जगहसे प्रकाश और शक्ति लेनेकी ज़रूरत न होगी, अर्थात् युक्त प्रान्त और बिहार—दोनोंको मिलाकर बने प्रदेशके घरोंमें चिराग़ जलाने, फैक्टरियों के चलाने, ट्रामवे और ट्रैक्टरो तकको काम करनेके लिए तेल या कोयला छोड़ सिर्फ़ बिजलीसे काम लिया जायगा। इतना ही नहीं, वोलूगा में बिजली पैदा करनेके लिए जगह जगह लॉक बनाकर जो पानीकी तह को ऊँचा किया जायगा; उनसे नहरें निकाल कर ३ करोड़ एकड़ खेत की सिंचाई भी होगी।

दूनियेप्रोपेत्रोब्स्क

प्रथम पंच-वार्षिक-योजना (१६२७-३२ ई०)में यूरोपका यह सब से बड़ा विद्युत् स्टेशन बना था। जिस वक्त दूनीयेपेर् नदी पर इसके लिए सीमेंटके बाँध बाँधे जाते थे, उस वक्त यूरोप और अमेरिकाके अखबार मज़ाक उड़ा रहे थे। कह रहे थे—नौसिखिए रूसियोंके बूतेसे यह बाहरकी बात है। देखिए, जैसे ही रास्ता रुका, कि पहलेही मर्तबे महानदी काईकी तरह इस सारी सीमेंटकी दीवारोंको बहा ले जायगी। विद्युत् स्टेशन को काम करते ६ साल हो गये; और इन भविष्यत्-वक्ताओंकी वाणी सच नहीं निकली। अब वे उतना मज़ाक भी नहीं करते। सोवियत्की बनी हुई मशीनों—हवाई जहाज़, मोटर आदि—ने दुनियामें मज़बूती और उपयोगितामें बहुत ऊँचा स्थान पाया है। दूनीयेपेर् पर बने इस विद्युत्-स्टेशनसे जहाँ इतनी अधिक बिजली पैदा होती है, वहाँ लॉक बनाकर स्टीमरको ऊपर-नीचे जानेका रास्ता बना दिया है। पहले जल-प्रपातके कारण काला-सागरके स्टीमर यहीं आकर रुक जाते थे।

जन्म भूमि-गीत

भूमि सोवियत् सब श्रमिकोंकी अतिशय प्यारी।
शान्ति समुन्नतिकी आशा, है अमित दुलारी॥
नहीं देखता देश मही पर कोई उत्तम।
चलते मानी मनुज जहाँ पर मुक्त यहाँ सम॥ टेक॥

मास्कोसे अतिशय सुदूर पैसिफ़िक् सीमा तक।
मेरु-उदधिसे समरकन्दकी वर वसुधा तक॥
मनुज विचरता साभिमान निस्सीम अवनिका।
बनकर स्वामी, गिरा दासता कठिन यवनिका॥

सभी ठौर स्वच्छन्द शस्य जीवन-नद कलकल।
बहता ज्यों गम्भीर प्रखर वोल्गा-जल निर्मल॥
मुक्त क्षेत्र हैं सब तरुणों के सभी हमारे।
सभी जगह सम्मानित होते बूढ़े प्यारे॥

फल-सुपूर्ण हैं क्षेत्र जहाँ था ऊसर बंजर।
बसे नगर हैं वहाँ जहाँ थी भूमि बिना नर॥
कहे जीभ अभिमान पूर्ण 'साथी' यह अक्षर।
इससे देते तोड़ सभी अन्त: सीमान्तर॥

इससे है सब ठौर प्रबल यह संघ हमारा।
लुप्त हुआ संघर्ष बढ़ा निज जन-गण प्यारा॥
साथ साथ तातार यहूदी रूसी सारे।
निर्मित करते शान्ति-सहित सुख-जीवन प्यारे॥

दिन प्रतिदिन सुख-साज हमारा बढ़ता जाता।
है भविष्य जाज्वल्यमान ध्वज सा फहराता॥
हम सा चिन्ता मुक्त नहीं है जगती तल पर।
ऐसा है न विमुक्त प्रेम सुख-हास-प्रभाकर॥

खींचेगा यदि शत्रु हमारे ऊपर प्रहरण।
चाहेगा इस प्रियतम भू पर नाश-प्रसारण॥
दामिनि दमक समान मेघ गर्जनके सम हम।
देंगे उत्तर तीव्र और सुस्पष्ट अनुत्तम[१]॥

———

१ साहित्यरत्न पंडित श्यामनारायण पांडे शास्त्रीकृत पद्यानुवाद।

२. सोवियत-संघ की जातियाँ

सोवियत् विधान में हर एक जातिको अपनी अपनी उन्नतिका रास्ता खुला हुआ है। उसने हर जातिकी संस्कृति और भाषाके स्वतंत्र विकास के लिए पूरा पूरा अवसर दिया है। उससे लाभ उठाकर भिन्न भिन्न जातियाँ कितनी दूर तक आगे बढ़ी हैं, इसके कुछ उदाहरण नीचे दिए जायेंगे।

क्षेत्रफल और जनसंख्या

नाम	राजधानी	क्षेत्रफल (हज़ार वर्ग किलोमीतर)	जनसंख्या (१ जन० १९३३) (हज़ार)
१. र०स०फ०स०र०[1]			
कोमी-ज़िरियन स्वायत्त-जिला	सिक्तिवकर	३७४·६	२७६·३
चुवाश् स्वा० प्र०	चेबोक्सरी	१७·६	९५८·५
मरि स्वा० जि०	लोश्कर्-ओला	२३·३	५५०·६
उद्मुर्द स्वा० प्र०	इज़ेव्स्क	३२·१	८७१·४
बश्किर स्वा० प्र०	ऊफ़ा	१४०·५	२८८९·६
तातार स्वा० प्र०	कज़ान्	६७·१	२७८४·६
कोमी-पेर्य जातीय० जि०	कदिम्कर्	२३·१	१९८·०
मोर्दावी स्वा० प्र०	सरन्स्क	२५·५	१४१४·६
अदिगेत् स्वा० जि०	मइकोप्	३·०	१७३·४

१ रूसी-सोवियत्-फ़ेडरेटेड् (संयुक्त) समाजवादी-रिपब्लिक्

दागिस्तान स्वा० प्र०	मखच्कला	५७·३	६४६·२
कबर्दिनो-बल्कर स्वा० प्र०	नल्चिक्	१२·३	२७८·८
कराचे स्वा० जि०	मिकोयान्-शहर	६·६	१०४·४
उत्तरी ओसेत्स स्वा० जि०	ओद्‌जोनिकिद्‌जे	६·२	२८६·२
चेर्केस् स्वा० जि०	सुलीमोफ़	३·३	८०·७
चेचेन्-इङ्गुश् स्वा० जि०	ग्रोज्नी	१७·७	६५०·५
२. कज़ाकस्तान स०स०र०	अल्मा-अता	२७४४·५	६७६६·६
कराकल्पक् स्वा० प्र०	तुर्त्कुल्	१६८·०	३७३·५
३. किर्गिज़स्तान स०स०र०	फ्रुंज़	१६६·७	१३०२·१
ओस्तिअक्-वोगुल जा० जि०	ओश्तिअक्-ओ-गुलस्क	७५४·६	१०२·२
नेनेत्ज़ (यमल) जा० जि०	सालेइर्द	४६६·०	२६·५
ओइरोत् स्वा० जि०	ओइरोत्-तुरा	६३·१	१२१·७
तइमुर (दोलेन्नेवत्ज़) जा० जि०	दुदिन्का	७४२·६	८·०
एवेन्किस् जा० जि०	तुरिन्स्क	५४१·६	४·६
खकस् स्वा० जि०	अबकन्	४६·६	१७३·३
बुर्यत्-मंगोल स्वा० प्र०	उलन्-उदे	३७६·४	६२०·६
वितिम्-ओले कमिन् (एवैन्किस्) जा० जि०	कलकन्	२१६·८	१०·१
याकूत स्वा० प्र०	याकुत्स्क	३०३०·६	३२७·५
कोरियक् जा० जि०	पेन्ज़ित्स्क	३१०·८	१२·५

चुकोत्स्क जा० जि०	अनादिर	६६०·६	१६·१
यहूदी स्वा० जि०	बिरो-विद्जान्	३६·८	५०·०
४. उकइन् स०स०र०	कियेफ़्	४४३·१	३१६०९·[illegible]
मोल्दावी स्वा० प्र०	तिरस्पोल्	८·४	६१५·५
५. बेलो-रूसी स०स०र०	मिन्स्क	१२६·८	५४६६·४
६. आजुर्बाइजान् स०स०र०	बाकू	८६·०	२८६१·०
नखिचेवन् स्वा० प्र०	नाखिचेवन्	५·४	११७·०
नगोर्नोकराबख् स्वा० जि०	स्तेपनाकेर्त	४·२	१५३·६
७. अर्मनी स०स०र०	एरेवान्	३०·०	११०६·२
८. गुर्जी स०स०र०	त्विलिसि	६६·६	३११०·६
अब्खासी स्वा० प्र०	सुखुमी	८·७	२५६·१
अद्जारिस्तान स्वा० प्र०	बातुमी	२·८	१५३·८
दक्षिणी ओसेती स्वा० जि०	स्तालिनिर्	३·७	६५·३
६. उज्बेक् स०स०र०	ताशकन्द	१७२·०	५०४४·३
१०. तुर्कमानस्तान स०स०र०	अश्काबाद	४४३·६	१२६८·६
११. ताजिकिस्तान स०स०र०	स्तालिनाबाद	१४३ ६	१३३२·७
गर्नो-बदख्शाँ	खरग	६१·१	३५·७

१ [illegible]

क्षेत्रफल	६४,४४,००० वर्गमील
जनसंख्या	१०,६०,००,०००
राजधानी-मास्को	जनसंख्या—४१, ३७, ०००

रूसी और शक—शक जातिका नाम भारत, ईरान और यूनानके इतिहासोंमें आता है। पाणिनि (ईसापूर्व चौथी सदी)ने शक-पार्थिवका नाम लिया है। उससे पहिले भी भारतीय उनका नाम जानते होंगे, क्योंकि कश्मीरसे उत्तर काशगर या तरिम उपत्यकामें शक ताम्रयुग (ईसापूर्व द्वितीय सहस्राब्दी) में ही रहते थे, और कश्मीर और काश्गर दोनोंका कश या खस शकके ही उलटे रूप हैं। ईसा पूर्व द्वितीय शताब्दीमें वर्त्तमान मंगोलियासे जब चीनके प्रहारसे हूणोंकी एक शाखा भागनेके लिये मजबूर हुई, तो उसने गोबीसे कार्पेथीय पर्वत तक फैले शक घुमंतुओंके "महाद्वीप"—"शकद्वीप"के पूर्वी भागपर अधिकार किया। यही पूर्वीभागके शक मध्य एसियाके ग्रीकबाख्तर राज्यका समाप्तकर भारत तक पहुँच यहाँके भी यवनाशेषोंको समाप्त किया। इसी शक वंशकी शाखा कुषाण थी, जिसके प्रतापी राजा कनिष्कका साम्राज्य बंगालसे अराल समुद्र तक था। शकद्वीपके पश्चिमी भागमें अब भी शक रहे, हाँ अधिकतर गाय-घोड़ा-भेड़ पालनेवाले घुमन्तू ही। ये हूण चौथी सदी तक उनके पश्चिमी ओरसे हाते दुनाय (डेन्यूब) तक पहुँच गये, और उसका इतना ही परिणाम हुआ कि शकोंको अपने दक्षिणके प्रदेशको छोड़कर उत्तरकी ओर हट जाना पड़ा। इससे एक हानि हुई—पश्चिमी शकोंने यवन संस्कृतिके संपर्कमें आकर सभ्यतामें उन्नतिकी थी, अब उससे संबंध-विच्छेद होनेसे उनकी प्रगति रुक गई। यही शक—जिनकी सरमात् किमेरी आदि शाखायें थीं—स्लाव जातियोंके पूर्वज थे और पूर्वी स्लावोंसे रूसी, वेलोरूसी और उक्रइनी निकले।

यवन सभ्यतासे प्रभावित कालासागर तटवर्ती शकोंने घुमंतू पशु पालकके जीवनको छोड़कर नागरिक जीवन स्वीकार किया था। हालमें सोवियत् पुरातत्त्ववेताओंने कई जगह उनके ध्वस्त नगरोंकी खुदाईकी है। हालकी खुदाइयोंसे कालासागर तटवर्ती शक राज्यके बारेमें नई बातें मालूम हुई हैं। यह धारणा गलत सिद्ध होती है कि शक बिलकुल असभ्य

घुमन्तू पशुपालक थे। क्रिमिया प्रायद्वीपमें प्रोफेसर प० शुल्त्सके नेतृत्व में खुदाईका काम तथा विस्तृत अनुसंधान हुआ, उससे आठ सदियों तकके शकोंके नागरिकके तौरपर इनका पता लगता है। यह गवेषणा ललित कला म्युजियम, साइंस अकरमीके वस्तुस्थिति संस्कृति इतिहास प्रतिष्ठानकी ओरसे हुई है।

अब तक पश्चिमी शकोंके बारेमें हमारा ज्ञान यवन इतिहासकार हेरोदोतके लेखों और कुछ शकस्तूपोंकी खुदाईपर अवलंबित था। शक नागरिकोंकी जानकारीके बारेमें बहुत कम काम हुआ था। शुल्त्सने क्रिमियामें शकराजधानीने आपोली की खुदाईका काम शुरू किया। इस नगरीका नाम पुराने ग्रंथोंमें आता है। पहिले पहिले इस स्थानके अध्ययनका १८२७-२८में एक रूसी पुरातत्ववेत्ता ने किया। उसने इस स्थानसे पुरातत्त्वकी जो सामग्री प्राप्तकी उससे पता लगा कि वह अपने राजाओंकी स्मारक मूर्तियाँ स्थापित करते थे। किन्तु वह खोज वहीं तक समाप्तसी हो गई, और वस्तुतः सुव्यवस्थित खुदाई १६४५में शुल्तसके अभियानसे आरंभ हुई।

यहाँकी प्राप्त चीजोंसे सिद्ध होता है कि यह शक नगरी आठ सदियों —ईसा पूर्व चौथी सदीसे ईसवी चौथी सदी—तक वर्तमान रही। नगरी बड़े मोटे पाषाण प्राकारके अंदर थी। खुदाईमें एक शक घर मिला, जिसका फर्श चट्टानमें कटा है। यहाँ मद्य-भवनके आँगनमें पाषाण-चषक, भिन्न भिन्न समयोंके शक और यवन मृत्पात्र तथा यवन अभिलेख मिले। यहीं फूलपत्तीवाले शक चित्रका नमूना भी मिला है। चित्र सजीव और मौलिक है, जिसपर ग्रीक प्रभाव नहीं दिखाई पड़ता। आश्चर्य करनेकी कोई बात नहीं, यदि इस तरहकी आकृतियोंसे आज भी उक्रइनके किसानोंकी कुटियाँ और घरके बर्त्तन अलंकृत मिले हैं, आखिर उक्रइन हैं भी तो।

शकोंके ओरेस पुत्र, एक दूसरी शकपुरीकी खुदाईमें छतके मिट्टीके अलंकरण तथा पशुमूर्त्तियाँ रूसी छतोंके अलंकारों और स्लाविक खिलौने

से मिलती हैं। खुदाईसे पता लगता है कि शकोंके मृत्पात्र भी उनकी कलाकी भाँति बहुत ऊँचे तल के थे। वहाँ बर्त्तनोंके पकानेका एक बहुत पेचीदा अवाँ भी निकला।

तीन पुरियोंके ध्वंसोंके खुदाईके अतिरिक्त पुरातत्त्ववेत्ताओंने क्रिमियाके बहुतसे भागोंमें जाकर खोजकी, जिसमें शक राज्यकी सीमाका पता लगाया जा सके। जान पड़ता है, यह शक राज्य दुनाय (डेन्यूब)के तट तक फैला हुआ था।

यह भी पता लगा कि शकोंने शत्रुओंसे अपनी रक्षाके लिये तेहरी मोर्चाबन्दियाँ कर रखी थीं, पहिली मोर्चाबन्दी प्राकार और खाईं सहित पेरेकोपमें थी, जिसे तुर्कोंने पीछे दृढ़ किया था, और इतिहासमें इसका कितनी ही बार जिक्र आया है, द्वितीय विश्वयुद्धमें भी इसका जिक्र तुर्क दीवारके नामसे आया। पेरेकोप क्रिमिया-प्रायद्वीपकी पतली गर्दन होनेसे सैनिक दृष्टिसे बड़ा महत्वपूर्ण स्थान था, इसे कहनेकी आवश्यकता नहीं। दूसरी मोर्चाबन्दी सलगिर नदीके किनारे किनारे थी। तीसरी क्रिर्गीयाके पर्वतोंके सानुपर अल्मा नदीके तटसे थी। इन मोर्चाबंदियोंमें दुर्गोंकी माला सी थी। क्रिमियाके पश्चिमी तट पर भी ७ या ८ किलोमीतरके अंतरपर शकोंके दुर्ग थे। यह दुर्ग एक ओर समुद्री रास्तेसे आक्रमण होनेका बचाव करते थे, साथ ही बन्दरगाहका भी काम देते थे।

क्षेत्रफल* और जनसंख्या दोनोंके ख्याल से र०स०फ०स०र० सोवियत्-संघका सबसे बड़ा प्रजातंत्र है। सोवियत्-संघके क्षेत्रफलका ४/५ और जनसंख्याका २/३ इसी में है। र०स०फ०स०र० पश्चिममें कालिनिनग्राद (कुइनिग्सबेर्ग)से, पूर्वमें कुइराईल द्वीपसमूह (प्रशान्त महासागर) तथा अलास्का (उत्तरी अमेरिका) तक फैला हुआ है। थोड़ेसे दक्षिणी-पश्चिमी भागको छोड़कर सारा सोवियत्-यूरोप तथा सिबेरिया और काम्चत्स्का इसीके अन्तर्गत है।

* १६३८ में लिखित पृष्ठ ६३-१००

प्रायः सारी तुन्द्रा और सम्पूर्ण जंगल प्रदेश इसी संघ-प्रजातंत्रमें है। दक्षिणमें र०स०फ०स०र० कालेसागर और उत्तरी काकेशससे उत्तरी महासागर तक फैला हुआ है।

इसकी भूमिके भीतर अपार खनिज संपत्ति पड़ी हुई है। उराल, क्रिमिया (केर्च) और सिबेरिया (सिवेर)की लोहेकी खानें; कज़्नेत्स्क, पूर्व सिबेरिया, उराल और मास्को प्रान्त की कोयलेकी खानें हैं। अज़ोफ़-कालासागर प्रदेश, उराल, और बशकिरिया के पेट्रोल और मिट्टीके तेल तथा अन्न जगहों पर सोना, प्लेटिनम्, ताम्बा, सीसा और राँगे की खानें मौजूद हैं।

आर्थिक दृष्टि से भी र०स०फ०स०र० सोवियत्-संघका बहुत महत्त्वपूर्ण भाग है। इससे ही कृषि और उद्योगकी उपजका ७० सैकड़ा आता है।

सोवियत्-संघकी जनसंख्याका आधेसे कुछ अधिक रूसी है लेकिन र०स०फ०स०र०की जनसंख्याका ४/५ रूसी जाति है। र०स०फ०स०र०में बहुतसी जातियाँ बसती हैं; जिनकी भाषा और संस्कृतिकी रक्षाके लिए १७ स्वायत्त-प्रजातंत्र और ६ स्वायत्त जिले स्थापित किये गये हैं। उनमें शिक्षा और संस्कृतिका माध्यम स्थानीय भाषा है। १७ स्वायत्त प्रजातंत्रों और ६ स्वायत्त जिलोंका फ़ेडरेशन (समुदाय) होनेसे इसे र०स० फ़ेडरेटेड् साम्यवादी रिपब्लिक कहते हैं। र०स०फ०स०र०के भिन्न-भिन्न भाग अपनी खास-खास विशेषता रखते हैं। इसलिए उनका वर्णन पृथक्-पृथक् किया जाता है—

क-विभाग (क)—बिना काली-मिट्टीका-प्रदेश—(मास्को, यीजेंन्, तुला, इवा-नोवो, और यरुस्लावी ज़िले) ये ही रूसी राज्यके मूल स्थान हैं और आज भी सारे सोवियत्-संघका प्रधान उद्योग-केन्द्र यहाँ है। इसी प्रदेशमें सोवियत्-संघके उद्योगका ३० सैकड़ा और र०स०फ०स०र०का ४० सैकड़ा केन्द्रित है। खास उद्योग हैं; मशीन बनाना, धातु तैयार करना, कपड़ा और रसायनके कारखाने।

मास्को र०स०फ०स०र० और स०स०स०र० दोनों की सिर्फ़ राजनीतिक और सांस्कृतिक राजधानी ही नहीं है, बल्कि यहीं वे बड़ी-बड़ी शिक्षण संस्थाएँ हैं जिनमें सारी सोवियत् भूमिके विद्यार्थी पढ़नेके लिए लिए आते हैं। इन सबसे भी बढ़कर मास्को का महत्त्व है सोवियत्-संघके आर्थिक केन्द्र होनेमें। नक़्शेमें देखनेसे भी मालूम होगा कि यहींसे सोवियत्-यूनियन के चारों कोनोंमें १० रेलोंका जंकशन है।

यहाँके दूसरे उद्योग-केन्द्र हैं—इवानोवो (कपड़ेके कारखाने), यारोस्लाव, ओरेखोवो-जुयेवो और तुला।

इस प्रदेशको कच्चा माल और खाद्य पदार्थ सोवियत्-संघके दूसरे भागोंसे मिलता है; और उसके बदलेमें यहाँसे कलें, रासायनिक पदार्थ, कपड़े और किताबें भेजी जाती है।

(ख)—काली-मिट्टीका-प्रदेश—जिसमें कुर्स्क, ओरेल्, तम्बोफ़् और वोरोनेज़ ज़िले शामिल हैं। यह बड़ी उपजाऊ भूमि है। और आबहवा भी यहाँ उतनी सद नहीं है। ज़ारशाहीके ज़मानेमें अपनी अद्वितीय दरिद्रताके लिए यह प्रदेश बहुत मशहूर था। ज़मींदारों और ताल्लुकेदारोंका यहाँ बहुत बोला-बाला था। उनका अत्याचार उतना ही ज्यादा था, जितनी ज्यादा कि यहाँके किसानोंकी ग़रीबी। लेकिन अब यह प्रदेश खेती में बहुत उन्नत है। चुकन्दर, सूर्यमुखी, सन और आलूके बड़े बड़े खेत हैं। गेहूँकी खेती खास तौरसे होती है। इनके अतिरिक्त यहाँ बहुतसे कल-कारखाने भी हैं, जो वोरोनेज्-लिपेत्स्क, कुर्स्क और ब्रयान्स्क नगरोंमें अवस्थित है।

यह प्रदेश अन्य भागोंको गेहूँ, चीनी, सन, आलू, वनस्पति तैल और सुअरके मांसके साथ साथ धातुकी वस्तुएँ और नक़ली रबरकी चीजें भेजता है।

(ग)—उत्तर-प्रदेश—इसमें लेनिन्ग्राद्, आर्चेंञ्जल और वोलोग्दाके ज़िले तथा करेलिया और कौमीके स्वायत्त-प्रजातंत्र शामिल हैं। दक्षिण-

पश्चिमी भागको छोड़कर यह उत्तर-प्रदेश जंगलोंसे भरा है। यहाँसे लकड़ी बड़े भारी परिमाण में विदेशोंमें भेजी जाती है। दक्षिण-पश्चिमी भाग (लेनिन्ग्राद्—वोलोग्दा रेलके दक्षिण)को बहुत पुराने समयसे जङ्गल काटकर खेतीके लिये तैयार किया गया था ; और प्रागैतिहासिक कालसे ही यहाँ मनुष्योंकी घनी बस्ती बसी थी। यहाँ सन और दूध देनेवाले पशुओंका पालन खास तौरसे किया जाता है।

लेनिनग्राद् यहाँका बड़ा उद्योग-केन्द्र है। साथ ही समुद्र का एक भारी बन्दर है। शताब्दियों तक ज़ारकी राजधानी रहा और अब भी शिक्षा और संस्कृतिका केन्द्र है।

दूसरे उद्योग-केन्द्र हैं—अर्खङ्गेल्स्क (आर्चेंङ्गल), उत्तरी देउना नदीके तट पर अवस्थित है। यहाँ लकड़ीके बहुतसे कारखाने हैं, और यहाँसे उसे विदेशोंमें भेजा जाता है। किरोव्स्क एक बिलकुल नया साम्यवादी शहर है ; और एपेटाइट (रासायनिक वस्तु जो खादके काममें आती है)का संसारमें सबसे बड़ा उद्गम स्थान है।

उत्तर-प्रदेश सोवियत्के और भागोंको कलें, किताबें, एपेटाइट, अलोमीनियम्, लकड़ी, सन, मछली और डेरीकी चीजें (गो-शूकर-मांस, पनीर, मक्खन आदि) भेजता है।

(घ)—पश्चिम-प्रदेश—जिसमें स्मोलेन्स्क और कलिनिन् ज़िले शामिल हैं।

यहाँकी आबोहवा नम और नर्म है। बहुत कीमती जंगल और नर्म कोयला (पीट)का यहाँ बहुत बड़ा ज़खीरा है। खेती यहाँका प्रधान व्यवसाय है, लेकिन उसमें भी अधिक मूल्य वाली फ़सल (सन, आलू, तरकारी, आदि) और डेरीकी चीजें खास तौरसे पैदाकी

जाती हैं। कलिनिन् और स्मोलेन्स्क नगरोंमें बहुतसे कारखाने बनाये गये हैं।

सोवियत्‌के और भागोंमें यहाँसे सन, मांस, मक्खन, पनीर, लकड़ी, दियासलाई, काग़ज़ और कपड़े भेजे जाते हैं।

(ङ)—वोल्गा-क्षेत्र—वोल्गा रूसकी सबसे बड़ी नदी है। ईसाई धर्म स्वीकार करनेसे पहले रूसी लोग इसे गंगाकी तरह पवित्र मानते थे और 'वोल्गा माई' कहा करते थे। उसी पवित्रताके कारण तबसे आज तक लाखों लड़कियोंका नाम वोल्गा रखा जाता है। गोर्कीके अस्त्राखान् (कास्पियन सागर) तक फैले हुए इस प्रदेशमें गेहूँ, तेल, नमक, मछलीकी खास तौरसे अधिक उपज होती है। वोल्गाकी धारा से मकान बनानेकी लकड़ियोंके हज़ारों बेड़े नीचेकी ओर बहाये जाते हैं। जिन जिन जगहों पर रेलें नदीको पार करती हैं, वहाँ बहुतसे शहर बस गये हैं।

वोल्गा-क्षेत्रको उत्तरसे दक्षिण तीन हिस्सोंमें विभक्त किया जा सकता है। जङ्गली-वोल्गा, जङ्गली-पथरीली वोल्गा, पथरीली वोल्गा।

(१) जङ्गली - वोल्गा—इसमें गोर्की और किरोफ़्के ज़िले तथा उद्मुर्द और मरिके स्वायत्त-प्रजातन्त्र शामिल हैं। मास्कोसे उराल और सिबेरियाकी तरफ़ जानेवाले रास्ते इधर ही से गुजरते हैं।

गोर्की जंगली-वोल्गाका सबसे बड़ा औद्योगिक केन्द्र है। लेनिन्ग्राद् से कास्पियन सागरको जानेवाला जल-मार्ग (नेवा और वोल्गा द्वारा) तथा मास्कोसे उरालको जानेवाला जल-मार्ग (ओका और कामा नदियों द्वारा) इसी जगहसे जाता है। पंच-वार्षिक-योजनाओंमें गोर्कीका महत्त्व और भी बढ़ गया है। लाल सेर्मोवो कारखानेमें स्टीमर और रेलवे इंजन बनाये जाते हैं। यहीं पर मोलोतोफ़्-मोटरकार-फ़ैक्टरी है, जोकि यूरोपकी सबसे बड़ी मोटर फ़ैक्टरी है। लकड़ी और रसायनके भी कई बड़े

कारखाने हैं। यह प्रदेश अपने यहाँसे मशीनें, रासायनिक खाद, लकड़ी, सन और मांस तथा दूधकी चीज़ें भेजता है।

(ब) जंगली-पथरीली वोल्गा—जिसमें कुइबिशेफ़्का ज़िला तथा तातार, चुवाश् और मोर्दोवी स्वायत्त-प्रजातंत्र शामिल हैं। इसके उत्तरी हिस्सेमें जंगल ज़्यादा हैं और दक्षिणमें वह कम होते गये हैं। गेहूँकी खेती यहाँ बहुत ज़्यादा होती है। उसके अतिरिक्त सन, आलू, सूर्यमुखी भी बोये जाते हैं। नर्म कोयला, मकान बनानेके पत्थर, मिट्टीका तेल (हालमें सीज़रान्‌में प्राप्त) आदि चीज़ें यहाँकी खानोंसे निकलती हैं।

इस इलाक़ेका प्रधान उद्योग-केन्द्र कज़ान् है, जहाँके तातार खान शताब्दियों तक अपने आस-पासके प्रदेशों पर शासन किया करते थे। कामा नदी इससे थोड़ेही ऊपर वोल्गासे मिलती है। कुइबीशेफ़् दूसरा उद्योग-केन्द्र है जो कि वोल्गा (समर्स्कीयालूका) के घुमावके पूर्वी कोने पर बसा हुआ है।

इस इलाक़ेकी खास उपज हैं—अनाज, लकड़ीकी चीज़ें, मकान बनानेके पत्थर, मोटर, रेल आदिकी मशीनें। यहाँसे दूसरे भागोंको अनाज, पशु, सन, लकड़ी, मकानके पत्थर और मशीनें भेजी जाती हैं।

(स) पथरीली वोल्गा—इसमें सरातोफ़ और स्तालिन्‌ग्राद्‌के ज़िले शामिल हैं। यहाँकी ज़मीन पथरीली और आबोहवा खुश्क है। दक्खिन-पूरब कास्पियनके किनारेका भाग रेगिस्तान सा मालूम होता है। अधिकतर इस इलाक़ेका भाग चरागाहोंके काम आता है। सरातोफ़ और स्तालिन्‌ग्राद्‌के इलाक़ेमें गेहूँ, सूर्यमुखी और तरबूज़े बोये जाते हैं। वोल्गाके मुहाने और पासके कास्पियन तटमें मछलियाँ कसरतसे मिलती हैं। वोल्गाके पूर्वमें बहुत सी नमकीन झीलें हैं जहाँ पर नमककी अपरिमित राशि पड़ी हुई है।

पथरीली वोल्गाका सबसे बड़ा उद्योग-केन्द्र स्तालिन्‌ग्राद् है। यहाँ ट्रैक्टर बनानेका बहुत भारी कारखाना है।

दूसरा उद्योग-केन्द्र अस्त्राखान है जो कि वोल्गाके मुहाने पर कास्पियन तट पर बसा हुआ है। यहाँ मछुआही, मछली सुखाकर टीनमें बन्द करने और जहाज़ बनानेके बड़े बड़े कारखाने हैं।

पथरीली वोल्गा इलाक़ेसे दूसरे भागोंको ट्रैक्टर, सीमेंट, मछली, नमक, पशु, अनाज और तरबूज़े भेजे जाते हैं।

(च)—दक्षिण प्रदेश—इसमें दोन्-ऊपर-रस्तोवका ज़िला, क्रास्नोदर और ओर्द्जोनीकिद्जेके इलाक़े तथा क्रिमिया, कवर्दिनो-बल्कारिया, उत्तर-ओसेतिन्, चेचेन्-इंगुश और दागेस्तानके स्वायत्त-प्रजातंत्र शामिल हैं। यह पूर्वमें कास्पियनसे पश्चिममें अजोफ़् और काला-सागर तक फैला हुआ है। दक्षिणमें काकेशसके प्रजातंत्र हैं। समुद्रकी समीपताके कारण आबोहवा शीतोष्ण है।

इस प्रदेश में शीतोष्ण आबोहवाके कारण खेती बहुत विकसित है। और यात्रियोंके लिए यहाँ बहुतसे स्वास्थ्यकेन्द्र बने हुए हैं। लेकिन सबसे बड़ी चीज़ यहाँकी खनिज सम्पत्ति है। दोन्बासकी कोयलेकी खानें, केर्चका लोहा, ग्रोज्नी तथा कूबन-कालासागर क्षेत्रका मिट्टीका तेल और नोवोरोसिस्ककी सीमेंट खास महत्त्व रखते हैं।

यहाँके मुख्य उद्योग-केन्द्र हैं, रस्तोव् (दोन नदीके ऊपर)में कृषि-संबंधी मशीनोंका बहुत भारी कारखाना है। सख्तीमें कोयलेकी खानें हैं। ग्रोज्नी, नेफ़्तेगोर्स्क और तुआप्सेमें मिट्टीका तेल निकलता है। तगन्रोग् और केर्चमें लोहे और फ़ौलादके कारखाने हैं। नवोरोसिस्कमें सीमेंट तैयार होता है। क्रस्नोदर खाद्यके कारखानोंके लिए मशहूर है।

कृषिके लिए खास जगहें हैं—कूबन्में मक्का, सूर्यमुखी, गेहूँ, साथही गो-शूकर-पालन भी होता है। क्रिमियाके दक्षिणी तट तथा काला-सागरकी तटवर्ती भमिमें सेब, अंगूर आदिके बग़ीचे और तंबाकूकी खेती बहुत

होती है। दोनके तट और साल्स्ककी पथरीली भूमिमें गेहूँ, गोश्त और ऊन पैदा होता है।

स्वास्थ्यदायक स्थान—काला-सागरका किनारा और क्रिमियाका दक्षिण तट है। यहाँ बहुतसे गर्म पानी तथा लोहा गन्धक मिले जलके चश्मे हैं।

दक्षिण-प्रदेश अपने यहाँसे कृषिकी मशीनरी, मिट्टीका तेल, वनस्पति तेल, ऊन, अनाज, तंबाकू और मेवे बाहर भेजता है।

(छ) उराल-प्रदेश—इसमें स्वेर्द्लोव्स्क, चेल्याबिन्स्क और ओरेन्बुर्गके ज़िले तथा बश्किर-स्वायत्त-प्रजातंत्र शामिल हैं। नाना प्रकारकी खनिज सम्पत्तिके कारण यह प्रदेश सोवियत्-संघमें बड़ा महत्त्व रखता है। मास्कोसे सिबेरिया जानेका रास्ता इधरहीसे गुज़रता है। उराल और कुज्नेत्स्क-कुज़बासकी खनिज सम्पत्तियोंको मिलाकर सारे पूर्वी सोवियत्-संघको उद्योगमय बनानेके लिए यहाँ बहुत भारी केन्द्र संगठित हुआ है। पंच-वार्षिक योजनाओंने इस अपरिचित बयाबानका नाम सारे संसारमें मशहूर कर दिया है। कुज्नेत्स्कमें कोयलेकी खानें हैं; और उरालमें लोहा। दोनोंको मिलाकर ये सारे देशके उद्योगकी शक्तिका स्रोत् बन गये हैं। प्रथम पंच-वार्षिक-योजनाने मग्नितोगोर्स्कका संसार-विख्यात लोह-फ़ौलाद-कारखाना बनाया। चेल्याबिन्स्क ट्रैक्टर कारखाना भी इसी प्रदेशमें बनाया गया है। स्वेर्द्लोव्स्कमें मशीनोंके बनानेका बड़ा कारखाना है। नवोतगिल्में मोटरें बनाई जाती हैं। ये बड़े-बड़े कारखाने सिर्फ़ पिछले ६ वर्षोंम बने हैं।

धातु और मशीनके कारखानोंके अतिरिक्त उरालमें लकड़ी, काग़ज और रासायनिक पदार्थोंकी बहुत सी बड़ी-बड़ी फ़ैक्टरियाँ हैं।

उराल्के मुख्य उद्योग केन्द्र हैं, स्वेर्द्लोवस्क, चेल्याबिन्स्क, मग्नीतोगोर्स्क, पेर्म, निज्नीतगिल्, ऊफ़ा और ज़ल्तोउस्त।

यहाँसे बाहर जाने वाली चीजें हैं—धातु और धातुसे बनी चीजें

ट्रैक्टर, खानकी मशीनें, रेलके डिब्बे, लकड़ी, काग़ज़ और रासायनिक खाद्य।

(ज) पश्चिमी सिबेरिया—इसमें ओमूस्क और नवोसिबिस्र्कके जिले तथा अलताई इलाक़ा है। यह बहुत लंबा चौड़ा प्रदेश है। सोवियत्-संघका सबसे बड़ा कोयला-क्षेत्र कुज़्नेत्स्क यहीं है। पथरीली अलताईमें गेहूँ बहुत पैदा होता है। दक्षिणमें बाराबिन्स्क और ईशिम् जंगलोंके इलाक़े हैं। तइगा और तुन्द्रा उत्तरमें लकड़ी, बारहसिंगा-पालन और मछलोंके लिए बहुत अच्छे इलाक़े हैं। हज़ारों वर्षोंसे इस प्रदेश की प्राकृतिक सम्पत्ति अछूती पड़ी थी और उनमें सोवियत्-शासनके बाद हीसे हाथ लगाया गया है।

इस प्रदेश का दक्षिणी भाग सिबेरियाकी रेलवेसे उत्तर-दक्षिण दो हिस्सों में बँटा है। उत्तर तरफ़ ओब्-इर्तुश् नदी उत्तरी महासागरमें मिलती है; और उत्तरी महासागरके स्टीमर इस नदीसे बहुत भीतर तक चले आते हैं।

कुज़्नेत्स्क 'कुज़बास'—जो सोवियत्का सबसे भारी कोयला-क्षेत्र है—का कोयला पहले सिर्फ़ सिबेरियाकी रेलवेके काम भर ही निकाला जाता था; लेकिन अब वह दूसरा दोनबास् हो गया है। कुज़्नेत्स्ककी खानें अब कई गुना ज्यादा कोयला निकालती हैं। यही कोयला उरालके कारख़ानों तक जाता है।

कुज़्नेत्स्कमें भी एक भारी लोह-फ़ौलाद कारख़ाना खोला गया है जिसमें अभी ही १० लाख टन लोहा प्रति वर्ष तैयार होने लगा है; आगे उसे और बढ़ाया जा रहा है। सारे सिबेरिया और सुदूर-पूर्वकी माँगको यह पूरा करने जा रहा है।

पश्चिमी सिबेरिया अपने यहाँसे लोहा-कोयला, अनाज, मांस, मक्खन और लकड़ी बाहर भेजता है।

(झ) पूर्वी-सिबेरिया—इसमें क्रास्नोयार्स्कका इलाक़ा, इर्कुत्स्क और चीताके ज़िले तथा बुर्यत्-मँगोल और याकूत-स्वायत्त-प्रजातंत्र हैं। यह

बहुत लम्बा-चौड़ा प्रदेश है; और येनीसेइकी उपत्यकासे सुदूर-पूर्व प्रदेश तक फैला हुआ है।

पूर्वी सिबेरिया पहाड़ी प्रदेश है। यहाँ पश्चिमी सिबेरियासे भी अधिक सर्दी पड़ती है। इसके ही कारण खेतीके लिये यह उतना योग्य स्थान नहीं था, जिसके परिणामस्वरूप इसमें आबादी बहुत कम है। लेकिन प्रकृतिने इसे उद्योग-सम्बन्धी हर एक सामग्रीके लिये बहुत धनी बनाया है।

येनीसेइ, अंगारा और लेना जैसी बड़ी नदियाँ इस प्रदेश में दक्षिणसे उत्तरको बहती हैं; और इनसे बिजली की शक्ति इतनी पैदाकी जा सकतीहै कि जिनका मुक़ाबला और जगह नहीं हो सकता। चेरेमूखोफ, कान्स्क, येनीसेइ और तुंगुस्कामें भी कोयले के बड़े-बड़े ज़खीरे हैं। जंगल कामकी लकड़ियोंसे भरा है; कीमती पत्थर, सोना तथा दूसरी क़ीमती धातु और टिन यहाँ बहुत निकलता है।

इस प्रदेश में काम अभी-अभी शुरू हुआ है; लेकिन सिबेरियन रेलवेके करीबका देश दक्षिणमें, उत्तरमें उत्तरी जहाजी माल और कुज्बासमें धातु का उद्योग—इन तीन जगहों में उद्योगीकरण बहुत आगे पहुँच चुका है। पूर्वी सिबेरिया सोना, समूरीचर्म और लकड़ी बहुत अधिक परिमाणमें बाहर भेजता है।

* * *

(ञ) सुदूरपूर्व-प्रदेश*—यह व्लादिवोस्तोक्से बेरिंग, सखालिन, कुराइल द्वीपसमूह तक प्रशांत महासागरके तटपर फैला प्रदेश है। मास्कोसे सबसे अधिक दूर यही देश पड़ता है। इसके पड़ोस में साम्राज्यवादी जापान है।

उद्योग और आदमी बसानेका काम अभी अभी शुरू हुआ है। प्राकृतिक सम्पत्ति इसकी अपरिमित है। सखालिन में कोयला और मिट्टी का तेल निकलता है। दूसरी जगह ताँबा, लोहा, सोनाके अतिरिक्त सुन्दर

* १९३८ में लिखित पृष्ठ ८५-८६

जंगल और बकसरत मछलियाँ हैं। जहाँ सोवियत्-समुद्रमें इदसे ज्यादा मछलियाँ हैं, वहाँ जापानके पास वाले समुद्रमें मछलियाँ अपेक्षाकृत बहुत कम हैं। मछुआहीके लिए अक्सर दोनों शक्तियों में झगड़ा रहता है। जापानी लोग सोवियत् समुद्रमें बदबूदार तेलके पीपे छोड़ देते हैं, जिसमें मछलियाँ गन्ध से भागकर उनके समुद्र की ओर चली जाँय।

ज़ारशाही इस प्रदेशको आगेके देशोंको विजय करने के खयाल से इस्तेमाल करती थीं। यहाँकी प्राकृतिक सम्पत्तिको काममें लानेकी ओर उसका खयाल नहीं जाता था। सखालिन् द्वीपको उसने कैदियोंके भेजनेके लिए काला-पानी बनाया था।

आजकल यहाँ पर बड़े जोरोंसे नई फैक्टरियाँ और कारखाने बन रहे हैं। जापानकी लालच भरी निगाहें इसी प्रदेशकी ओर हैं। सोवियत् सरकारने यहाँके सामुद्रिक तटों और स्थल सीमाओं पर बड़ी ज़बर्दस्त किलाबन्दी कर रखी है। पनडुब्बी और युद्ध-पोतोंकी भारी तादादके अतिरिक्त जंगी विमानोंका बहुत बड़ा अड्डा—जिनसे जापान सबसे अधिक डरता है। और जो उसकी राजधानीसे तीन घंटेकी ही उड़ान पर हैं—क़ायम किये गये हैं। सुदूरपूर्वकी महासेनाका नायक है, सोवियत्का यशस्वी सेनापति मार्शल ब्लूखेर। तायगाके जंगलको साफ़ किया जा रहा है। रेल और सड़कें बनाई जा रही हैं। नये-नये नगर आबाद किये जा रहे हैं। मालूम होता है कि यह जनशून्य प्रदेश कुछ ही वर्षोंमें खूब आबाद हो जायगा।

इस प्रदेश से सोना, कोयला, मिट्टीका तेल, समूरी चर्म, मछली और लकड़ी बाहर जाती है।

ख—औद्योगिक क्षमता—

देशके बड़े-बड़े उद्योगधंधे इस प्रजातंत्रमें हैं। यहीं कुज़्नेत्स्क का प्रसिद्ध कोयला-क्षेत्र है। महाक्रान्ति (१९१७)के पूर्व यहाँ का सारा कोयला ट्रान्ससिबेरीय रेलवेमें खप जाता था, किन्तु युद्धके पूर्वकी तीन

पंचवार्षिक योजनाओं द्वारा कोयलेकी उपज इतनी बढ़ गई है कि यह ऊराल के बड़े-बड़े धातु कारखानोंकोकोयला देता है। कुज़्नेत्स्क क्षेत्रसे मग्नितोगोर्स्क (ऊराल) को कोयला ले जाने वाली गाड़ियाँ खाली न लौटें, इसलिये वहाँ से लोह-पाषाण लाकर फौलाद बनानेके लिये इसी क्षेत्रमें स्तालिन्स्क नगर और उसके कारखाने बनाये गये। युद्ध क्षेत्रसे सुदूर होनेके कारण यहाँ कारखानोंकी संख्या और बढ़ी, जिनमें लौहमिश्रित धातुओं और आलमोनियमके विशाल कारखाने भी हैं। सिबेरियाके नगरों में नवनिर्मित कारखाने आज कल तरह-तरहकी मशीनें बना रहे हैं। मशीन बनाने वाले नगरोंमें सबसे बड़ा नवसिबिर्स्क ओब् नदीके तट पर है। प्रथम महायुद्धके पूर्व इसे कस्बा भी नहीं कहा जा सकता था। द्वितीय विश्वयुद्धमें तो यहाँके उद्योगधंधे और भी तेजीसे बढ़े और १९४३ में उनका उत्पादन १९३७ से आठ गुना हो गया। पश्चिमी सिबेरियाके नये उद्योग-केन्द्रोंमें बैर्नाल भी है, जहाँ युद्धपूर्वकी पंचवार्षिक योजनाओंमें कपड़ेकी बड़ी मिलें तैयार हुई थीं। युद्धके समय ही रुब्त्सोव्स्कमें ट्रैक्टर (मोटर-हल) बनानेका विशाल कारखाना तैयार हुआ।

पूर्वी सिबेरिया पश्चिमी सिबेरियासे भेद रखता है। यह अधिकतर पहाड़ियों और घने वनोंसे आच्छादित प्रदेश है। यहाँका जलवायु भी बहुत सर्द है। यद्यपि गर्मी उतनी कड़ी नहीं है किन्तु यह भूगोलका शीततम प्रदेश है। खेतीके लिये यहाँ अपेक्षाकृत बहुत कम सम्भावना है। लेकिन, प्रकृतिने इसे औद्योगिक साधन दिल खोलकर प्रदान किये हैं। यहाँ कितनीही विशाल नदियाँ हैं जिनमें पन-बिजली की अपार शक्ति निहित है। आजकल येनीसेइ नदीकी शाखा अंगारापर एक भारी पन-बिजली—स्टेशन बनाया जा रहा है। चेरेमूखोवो, कन्स्क, येनीसेई और तुगुंज उपत्यकाओंमें कोयलेके भारी क्षेत्र हैं। उपयोगी काष्ठसे भी यह देश भराहुआ है और तरह-तरहकी धातुएँ भी बड़ी भारी मात्रा में यहाँ मौजूद हैं। क्रान्तिसे पूर्व यह ज़ारशाहीका "काला पानी" था और यहाँ कड़ी

मिहनत वाले बन्दी भेजे जातेथे, किन्तु क्रान्तिके बाद यहाँ औद्योगिक और सांस्कृतिक विकास बहुत शीघ्रतासे हुआ।

इस भूमिमें सोनेकी बड़ी-बड़ी खाने हैं। खानका सारा काम मशीनोंसे होता हैं जिनके बनानेके लिये क्रास्नोयार्स्क तथा इर्कुत्स्कमें कारखानें हैं। क्रास्नोयार्स्कमें रेलके इंजन और कटाई की मशीनें—कम्बाइन बनती हैं। काठ-रसायनका उद्योग-धन्धा भी बहुत बढ़ गया है। नये औद्योगिक केन्द्रोंमें येनीसेयी तटपर बसे ईगरका नगर विशेष महत्त्व रखता है; लड़ाईके दिनोंमें कई नये-नये कारखाने यहाँ खोले गये, जिनमें कन्स्क की कपड़ेकी मिलें भी शामिल हैं। पूर्वी सिबेरियामें तुङ्स्तेन् और टिन जैसी कितनी ही दुर्लभ धातुएँ पैदाकी जाती हैं। यद्यपि औद्योगिक विकास तेजीसे होरहा है किन्तु पन-बिजली, कोयला, धातु-पाषाण और काठका यहाँ इतना बड़ा जखीरा है कि उसकी विकास-गतिको और बढ़ाने की कोशिशकी जारही है। रूसी प्रजातन्त्रके पूर्वी भाग को वहाँ सुदूर पूर्व कहा जाता है। इसमें खबरोव्स्क तथा प्रशान्त सागर तटवर्ती प्रदेश है। इसी में सखालिन और कुरिल (कुराइल) के द्वीप-समूह भी हैं। सखालिन का दक्षिणी भाग और कुरिल द्वीप—समूह बहुत सालोंतक जापानके हाथमें रहे और गत विश्वयुद्धके बाद वह फिर सोवियत्में सम्मिलित करलिये गये। अठारहवीं शताब्दीमें यह प्रदेश वन्य और निर्जनसा था फिर रूसी और उक्रइनी कमकर यहाँ पहुँचे। उन्होंने जगलों को काट समतल भूमिमें खेती करनी शुरू की और धीरे-धीरे आमूर तटकी समतल और उवर भूमि में बहुतसे नगर और गाँव बस गये। आमूर नदीमें स्टीमर चलने लगे और सूचनके कोयला-क्षेत्र और सेलमेजीके सुवर्णक्षेत्रमें काम होने लगा। सोवियत् शासन के बाद औद्योगिक विकास बहुत तेज़ीसे हुआ। प्रशान्त महासागर तट पर मछलीके बहुतसे कारखाने खुले। नवीनतम मशीनोंसे सज्जित सुवर्णखनियोंमें काम होने लगा। बहुत सी लकड़ीकी आरा-मिलें बनीं। उत्तरी सखालिनमें मिट्टीका तेल

निकाला जाने लगा। इनके लिये मशीनें तैयार करनेके वास्ते खबरोव्स्क और व्लादीवोस्तक में कारखानें खोले गये। आमूर उपत्यका और खन्का झीलके किनारे भारी परिमाणमें गेहूँ, सोया, चावल और चीनीके चुकन्दरकी खेती होने लगी।

कुज़्नेत्स्कका कोयला लोहा—१९५०में—जोकि वर्तमान पंच-वार्षिक योजनाका अन्तिम वर्ष है सोवियतके सारे फौलादका दस सैकड़ा यानी २५ लाख टन (१९१३ में सारे ज़ारशाही राजकी फौलादका आधा) कुज़्नेत्स्क के स्तालिन-फौलाद कारखानेमें पैदा होगा। कुज़्नेत्स्कका लोहेका कारखाना मग्नितोगोर्स्कके बाद पश्चिमी सिबेरियाका सबसे बड़ा लोहे का कारखाना है। ऊरालसे पूरबवाले पश्चिमी सिबेरिया प्रदेश के उद्योगीकरणमें इस कारखानेका सबसे बड़ा हाथ है।

पश्चिमी सिबेरिया अल्ताई पर्वत के उर्वर सानु-प्रदेश से आरम्भ हो ध्रुवकक्षीय समुद्र तक फैला हुआ है। सोवियत्-संघ के ईंधन और बिजलीके एक तिहाईके स्रोत यहाँ, और खासकर कुज़नेत्स्क उपत्यकामें स्थित है। विशेषज्ञोंका अनुमान है कि यहाँ साढ़े चार खरब टन कोयला है। इस प्रदेशका औद्योगीकरण प्रथम पचवार्षिक योजनासे आरम्भ हुआ और अब तो वह कोयला और फौलाद पैदा करने का एक भारी केन्द्र हो गया है। कोयला लोहा ही नहीं बल्कि इञ्जिनियरिङ्ग लौह-मिश्रित धातु और आलमुनियम के भी यहाँ बहुत बड़े बड़े कारखाने स्थापित हुए हैं। वर्तमान पंचवार्षिक योजनाके अनुसार पश्चिमी सिबेरियामें कितनी ही नयी फेक्टरियाँ, पनबिजली स्टेशन, रेलवे कारखाने और मशीन ट्रेक्टर स्टेशन बनाये जारहे हैं।

जिस तरह बिहार में लोहे और कोयलेकी खाने हैं उसी तरहका सुभीता कुज्नेत्स्कको है। यहाँ भारी कोयलाराशिके पास लोह-पाषाण है, कुज़्नेत्स्क वन-बनस्पतिहीन नंगी प्रकृतिकी गोदमें बैठकर उसको हराभरा कर रहा है। १९३२ ई०में जबकि कारखानेको बनते दो साल हुआ था

उसने ३३ हजार टन फौलाद पैदा किया और अगले पांच वर्षोंमें उपज बढ़कर प्रतिवर्ष १४ लाख साठहजार टन हो गयी। ताताकी तरह यहाँ मशीन बनानेके कारखानोंके लिये कोई रुकावट नहीं थी और थोड़े ही दिनोंमें दर्जनों मशीनके कारखाने उनके नगर और कमकरोंके प्रासाद तैयारहो गये। कुज़्नेत्स्कका लोहा उराल और वोल्गाके तटपर नव-स्थापित ट्रेक्टर कारखानोंमें गया और यहाँकी बनी रेलें तुर्किस्तान सिबेरिया लाइनको बिछाई गयी। जब लड़ाई शुरू हुई तो कुज़्नेत्स्कने ट्रेक्टरों की जगह टेंक बनाना शुरू किया, गोला-बारूद तैयार करने लगा। उसने पचासलाख टेंकों और १२ करोड़ गोलोंके लिए फौलाद दिया।

वर्तमान पंचवार्षिक योजना में कुज़्नेत्स्कका विस्तार और होने जा रहा है। बिजलीसम्बन्धी फौलादका कारखाना बन रहा है, खुलेभट्टोंका पुनर्निर्माण हो रहा है। रेलों और स्लीपरोंके लिये एक नयी रोलिङ्ग मिल तैयार हो रही है और कोक बनानेका छठा कारखाना भी अस्तित्वमें आरहा है।

लोह-फौलाद कारखाना स्वयं कलेवर बदलने जा रहा हैं। इस वक्त सिबेरियाकी खानोंसे सिर्फ आधे लोह-पाषाण मिलते हैं और बाकी बहुत दूर उराल से लाना पड़ता है। अपने यहाँ से लोह-पाषाण निकालनेके लिये पश्चिमी सिबेरियाके निधिको हस्तगत करनेके लिये यहाँ पर लोह-पाषाण निकालनेके नये चन्दवक काटे जा रहे हैं और वहाँ एक नयी रेलवेलाइन बनने जा रही है। यह रेल लोह-पाषाण और कोयलेके अतिरिक्त लकड़ीभी लायगी जिससे नए मकानोंको बनाने में सुभीता भी होगा।

इस इलाकेकी समृद्धिके साथ साथ यहाँका स्तालिन्स्क नगरभी बड़ी तेजीसे तरक्की कर रहा है। १९३० से पहले यह पन्द्रह झोपड़ोंका वेस्सोभोवो नामका छोटासा गामड़ा तोमनदीके तट पर था। जब कार-खाना बनने लगा, उसी समय एक लाख ६५ हजार आदमियोंके रहने

लायक नगरको भी बनानेकी तैयारी होने लगी और युद्ध आरम्भ होने तक यह संख्या और बढ़ गयी थी। आज कल स्तालिन्स्क सवा दो लाख आदमियोंका एक बड़ा नगर है। आबादी बढ़ती ही जारही है और हर साल सैकड़ोंकी तादादमें चौमहले पँचमहले प्रासाद उठते जा रहे हैं। मास्कोके नगर-योजना-इन्स्टीट्यूट ने छै लाखकी आबादीका इसके लिए एक नकशा बनाया है। शहरमें ४०० एकड़का एक विशाल बाग़ तैयार हो रहा है और ऊँचे ऊँचे मकान दो केन्द्रीय महापथोंके किनारे बन रहे हैं।

(२) कज़ाकस्तानप्रजातंत्र*

क्षेत्रफल—१०,५६,००० वर्गमील जनसंख्या—६१,४६,०००

राजधानी—अल्माअता, जनसंख्या—२,३०,०००

सोवियत-संघके सोलह संघ-प्रजातंत्रोंमें कज़ाकस्तान-सोवियत्-संघ-रिपब्लिकभी एक है। रूसी-सङ्घ-सोवियत् रिपब्लिकके बाद क्षेत्रफलमें दूसरा नम्बर इसीका है। यह पश्चिममें कास्पियनसे लेकर अल्ताई तक और दक्षिणमें ताशकन्दके नजदीकसे लेकर उत्तरमें सिबेरियाके तुन्द्रातक फैला हुआ है। लम्बाई इसकी ३,००० किलोमीतर और चौड़ाई उत्तर-दक्षिण १,५०० किलोमीतर है। क्षेत्रफल २८,६०,००० वर्ग किलोमीतर है जो इटली, फ्रांस, जर्मनी तीनोंके बराबर है, तथा हिन्दुस्तानके क्षेत्रफलसे भी बड़ा है। कज़ाकस्तान बहुत सूखा देश है, यहाँ पानीकी बहुत कमी है। मध्य और पश्चिमी कज़ाकस्तानमें वर्षा बहुत कम होती है। सिर-दर्या, उराल, बहली और इर्तिश नदियोंने इस प्यासी भूमिकी तृषाको कुछ शान्त किया है। भूमि समतल है, जिसमें वृक्षोंका कहीं नाम नहीं। कहीं कहीं नङ्गी छोटी-छोटी पहाड़ियाँ हैं, जिनके पास छोटी छोटी घासें उगती हैं। वह ऊँटों और भेड़ोंको चरानेके लिए अच्छी जगहें हैं। यद्यपि कज़ाकस्तानमें पानीकी कमी है; लेकिन उसीके साथ साथ खनिज सम्पत्तिसे वह

* १९३८ में लिखित पृष्ठ ६१-६५

मालामाल भी है। यहाँ करागन्दाकी कोयलेकी खानें, पश्चिममें एम्बा नदीके तैलक्षेत्र, जेज्कजगान और कुनरद् की ताँबे की खानें; तथा कितनी ही जगहों पर निकलने वाले राँगे और सीसे इसको बहुत सम्पत्तिशाली बनाते हैं। जन-संख्यामें ६५ सैकड़ा कज़ाक हैं, बाकीमें ३५ सैकड़ा उक्रइनी और रूसी हैं; और वह अधिकतर उत्तरी सीमा—जहाँ कि वर्षा अधिक होती है—तथा दूसरी कृषि-प्रधान जगहोंमें रहते थे। अब उनमें से कितने ही खानों और कल-कारखानोंकी जगहोंमें पहुँच गए हैं। दक्षिणी भागकी बहुतसी जगहोंमें उजबकभी रहते हैं। इनके अतिरिक्त उइगुर, तुङ्गन, तातार और जर्मन भी कितनी ही संख्यामें बसते हैं।

कज़ाक़ खानाबदोश जाति थी, जिसे कि ज़ारके साम्राज्यने जीतकर अपने हाथ में किया। क्रांतिके समय तक कज़ाकोंका मुख्य पेशा था, भेड़, ऊँट चराना। उस वक्त् तक यहाँ की खानोंमें काम नहीं लगा था। भेड़ ऊँटतो अपने पैरोंपर चलकर बाजारोंतक पहुँच सकते थे; लेकिन खनिज पदार्थोंको एक जगहसे दूसरी जगह पहुँचानेका कोई साधन नहीं था। क्रान्तिके पहले रेलका एक तरहसे बिलकुल अभाव था। ट्रान्स-सिबेरियन रेलवे और ओरेन्बुग-ताशकन्द रेलवे कज़ाकस्तानके सिर्फ किनारों भरको छूती थीं। पहला पंचवार्षिक योजनामें सोवियत् सरकारने तुर्क-सिबिरको १,००० मीलसे लम्बी रेलवे बनाकर ताशकन्दको सिबेरियासे मिला दिया। इसके अलावा और भी कई लाइनें बनाकर करगन्दा और दूसरे उद्योग-केन्द्रोंको मिला दिया। क्रान्तिके पहले जितनी मील रेलवे यहाँ थी, उससे अब ३½ गुना बढ़ गई है। शिक्षामें कायापलट हुई है। जहाँ पहले मुश्किलसे कोई लिख-पढ़ सकनेवाला कज़ाक मिलता था, वहाँ अब सिर्फ कुछ बूढ़े बुढ़ियोंको छोड़कर सभी लिख पढ़ सकते हैं। सोवियत् की और कितनीही भाषाओंकी तरह क्रान्तिसे पहले कज़ाक-भाषाकी न कोई लिपि थी, न कोई साहित्य। आज कज़ाक-भाषा साहित्यिक भाषा है और रोमन लिपिमें लिखी जाती है। साधारण स्कूलोंमें १० लाख विद्यार्थी

पढ़ते हैं। उच्च शिक्षाके लिए विश्वविद्यालय तथा खनिज कालेज डाक्टरी और ट्रेनिंग-कालेज १२ से ऊपर हैं। ८५ टेकनिकल हाई स्कूल हैं। कज़ाक-भाषामें आजकल १५७ पत्र-पत्रिकाएँ निकलती हैं। लेखकसङ्घके ७० सभासद हैं। २४ थियेटर (जिनमें छः नाटकके) हैं। दो सङ्गीत-शालाएँ, एक ओपेरा, एक मूक नाटकशाला है। कज़ाक-भाषामें अपने फिल्म हैं और सैकड़ों सिनेमा-घर जगह जगह फैले हुए हैं।

क्रान्तिसे पहले आधे बच्चे पांच वर्षसे पूर्वही मर जाते थे। ग़रीबी हाथ धोकर लोगों के पीछे पड़ी थी। आज खान, कल-कारखाना सभी जगह रौनक दीख पड़ती है। सारे प्रजातंत्रमें खान और कारखानोंमें काम वाले श्रमिकोंकी संख्या आठ लाख है, जिनमें आधे कज़ाक जातिके हैं। पहले जो लोग अपने अपने पशु अलग पाला करते थे, अब उनकी जगह पंचायत पशुपालनक्षेत्र संगठित हुए हैं। सबसे बड़े पशुपालनक्षेत्रमें एक करोड़ भेड़ें हैं। १९१३ में ५० हज़ार एकड़में कपास बोई गई थी; पिछले साल कपासकी खेती तीन लाख एकड़ भूमिमें हुई। यहाँके खेतोंमें ३० हज़ार ट्रैक्टर, और बहुतसी कम्बाइन कामकर रही हैं। अल्माअता पहले ३० हज़ार आदमी का एक गुमनाम कस्बा था; अब वह कज़ाकस्तानकी राजधानी और दो लाख ३० हज़ार आबादी का एक बड़ा शहर तुर्क-सिबिर रेलवे पर है।

१९२३-२४ में कज़ाकस्तानका राष्ट्रीय आय-व्यय १२ करोड़ ५० लाख रूबल था। १९३२ में वह ७८ करोड़ ५० लाख; और १९३७ में वह दो अरब हो गया।

कज़ाक कलख़ोज़ी किसान बड़ी समृद्ध अवस्थामें हैं। १० से १५ सेर अनाज उनको प्रति दिनके कामकी आमदनी हुई है। पियानो, मोटरसाइ-किल, बाइसिकिल और रेडियो गाँवों तकमें फैल रहे हैं।

पिछले १० सालोंमें कई बड़े बड़े शहर बस गये हैं, जिनमें सेमी-

प्लातिन्स्क डेढ़ लाख, करागन्दा १२०,००० और रिद्दर ५०,००० आबादी के शहर हैं।

पहलेकी अपेक्षा खेती और पशुपालनमें बहुत तरक्की हुई है; लेकिन उससे भी अधिक तरक्की हुई है उद्योगमें। जहाँ पहले खेती और पशुपालनसे ६३७ सैकड़ा आमदनी थी, और उद्योगसे सिर्फ ६३; वहाँ अब उद्योगसे ५३२ सैकड़ा आमदनी है।

* * * * * *

(३)—किर्गिज़िस्तान प्रजातंत्र*

क्षेत्रफल	७८,००० वर्गमील
जनसंख्या	१५,००,०००
राजधानी-फ्रुँजे; जनसंख्या	१,००,०००

चीनी तुर्किस्तानसे लगा हुआ सोवियत्-संघ का यह अङ्ग-प्रजातंत्र है। यह ऊंची पहाड़ी जगह है और उत्तरमें चू और तरस् नदियों तथा पश्चिम में फ़र्ग़ानाके उत्तरी पूर्वी हिस्से (जो कि किर्गिज़स्तानमें है) में ही ज़मीन अपेक्षाकृत कुछ नीची है।

फर्गाना, चू, तरस् की उपत्यकाएँ खेतीके लिये उपयोगी हैं। इन्हीं उपत्यकाओंमें किर्गिज़िस्तानके सभी कल-कारखाने, सभी नगर और अधिकांश जन-संख्या आबाद है। नहरोंसे सिंचाईका वहाँ अच्छा प्रबन्ध हुआ है। प्रजातंत्रके इन्हीं भागोंमें रेलें आ पाई हैं।

किर्गिज़स्तानकी जनसंख्या (१५,००,०००)में ⅔ किर्गिज़ हैं और बाकी में रूसी, उक्रइनी तथा फर्गनामें कितने ही उजबेक भी रहते हैं। उजबेक लोगोंकी तरह किर्गिज़ भी तुर्की वंशसे सम्बन्ध रखते हैं और उन्हींकी तरह इनकी भाषा और साहित्य भी क्रान्तिके बाद ही शिक्षाका माध्यम बन सका है। लिपि रोमन है।

---

* विशेषके लिये देखिये "सोवियत् मध्य-एसिया"

पहले किर्गिज़ लोग खानाबदोश चरवाहे थे; और एक जगह रहने तथा खेती करनेको नीची निगाहसे देखते थे। अब उनमेंसे सबसे अधिक सख्या गाँवों और शहरोंमें बस गई है। खेतीकी भूमि पहलेसे दूनीहो गई है। कारखाने और फ़ैक्टरियाँ स्थापित हुई हैं। मोटर चलने लायक बहुत सी सड़कें बनी हैं। किर्गिजस्तान अपने यहाँ से कपास दूरके प्रजातंत्रोंमें भेजता है और कोयला, पशु, अनाज और चीनी पासके पड़ोसी प्रजातंत्रों में। आवश्यकतासे अधिक कोयला और अनाज पैदा करनेमें मध्य-एसियाके प्रजातंत्रोंमें इसका नम्बर प्रथम है।

प्रधान फसल गेहूँकी है। पहाड़ी ज़िले अपने लिये पर्याप्त अनाज पैदा करते हैं। तियान्-शान् पहाड़की उपत्यकाएँ धीरे धीरे ढलुआ हुई हैं; और वहाँ काफ़ी पानी है। समुद्र तलसे ३,००० मीटर (९७५० फीट) ऊँचे तक खेती आसानीसे होती है।

गेहूँके अतिरिक्त चुकन्दर, कपास और लूसर्न भी पैदा होती है। अनाजके काफ़ी होने पर भी अभी किर्गिज़ लोगोंका प्रधान व्यवसाय पशु-पालन है। अच्छे अच्छे चरागाहोंके होनेके कारण इसके लिए बहुत सुभीता भी है। कल-कारख़ाने ज्यादातर अपने यहाँके कच्चे मालको पक्का करनेके लिए स्थापित हैं। इनमें आटेके कारख़ाने, चीनीकी फ़ैक्टरी, ऊन धोने और कपास साफ़ करनेके गिनियाँ अधिक हैं। फर्गानाकी उपत्यकाकी कोयलेकी खानें दिन पर दिन उन्नत होती जा रही हैं।

* * *   * * *

(४) उक्रइन प्रजातन्त्र

क्षेत्रफल—२,२३,००० वर्गमील जनसख्या ४,००,००,०००

राजधानी—कियेफ़ जनसंख्या—८,४६,०००

उक्रइन प्रजातन्त्रके दक्षिणमें कालासागर है, इसकी पच्छिमी सीमापर **कारपेथियन** पर्वतके जंगल और तीज़ा नदी है—पोलैण्ड और **चेकोस्लावाकिया** इसके पड़ोसी हैं।

जनसंख्याके हिसाबसे यह सोवियत् संघमें दूसरा स्थान रखता है। युद्धसे पूर्व यहाँ सोवियत् संघका आधा कोयला, दो तिहाई कच्चा लोहा, षष्ठांश मशीनें और तीन चौथाई चीनी तथा पंचमांशसे अधिक गेहूँ पैदा होता था। उक्रइनकी रेलें एक तिहाई माल ढोती थीं। इतना महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हुए भी उक्रइन क्षेत्रफलमें सारे सोवियत् संघका $\frac{1}{14}$ भाग है।

उक्रइनी लोग उतना ही एक दूसरेके समीप हैं जितना अवधी और व्रजभाषा भाषी। रूसी जातिका प्रथम इतिहास उक्रइनकी भूमिमें बना। कियेफ़ रूसके शक्तिशाली स्लाव राज्यका केन्द्र-यहींपर था। इन्हीं कियेफ़-रूसोंसे विभक्त होकर रूसी, उक्रइनी और बेलोरूसी जातियाँ बनीं, जिनके आज तीन पृथक् पृथक् प्रजातन्त्र हैं। कितने ही समय तक उक्रइन अलग-अलग रह तुर्कों और पोलोंकी मार खाता रहा। सत्रहवीं सदीमें उक्रइनी महानेता बगदान ख्मेल्नित्स्कीके उद्योगसे उक्रइन रूसके साथ संयुक्त हो गया। यद्यपि इससे उक्रइन पड़ोसियोंके प्रहारसे बच गया किन्तु साथ ही वह रूसी ज़ारके अधीन एक प्रान्त बन गया। महाक्रान्तिने उसे इस पराधीनतासे मुक्त किया।

हिटलरका प्रहार सबसे अधिक उक्रइनपर हुआ। राजधानी कियेफ और महान औद्योगिक नगर खरकोफ़ धराशायीकर दिये गये। हजारों दूसरे गाँव और नगर बर्बाद करके लाखों नर-नारियों और बच्चों तकको बड़ी साँसतके साथ मारकर जर्मन फासिस्तोंने इस सस्य-श्यामला भूमिको अपने "आर्य" लोगोंके लिये खाली कराना चाहा, लेकिन उक्रइनोंने कभी अपनी तलवार न छोड़ी। २५ साल तक करोड़से ऊपर उक्रइनी पोलैण्डकी पराधीनताके जूएके नीचे कराहते रहे, जिन्हें १९३९ में स्वतन्त्र होकर अपने देशमें मिलनेका अवसर मिला। ट्रान्सकारपेथियाके उक्रइनी तो दस शताब्दियों तक अपने दूसरे भाइयोंसे अलग रह पराधीनता भोग रहे थे। गत-युद्धके बाद चेकोस्लोवाकिया और उक्रइन

प्रजातन्त्रकी सन्धिके अनुसार ये लोग अपने उक्रइन प्रजातन्त्रमें मिल गये।

उक्रइन बहुत ही समृद्ध प्रदेश है। इसके मैदान और काली मिट्टी कृषिके लिये बहुत उपयोगी है। इसे "अन्न की बखार" कहा जाता है। जलवायु अपेक्षाकृत नरम है और जनवरीके जाड़ेमें तापमान यहाँ हिम-विन्दुसे पाँच सात डिगरी सेन्टीग्रेडसे अधिक नीचे नहीं जाता। वर्षा भी अपेक्षाकृत काफी होती है।

उत्तरसे दक्षिण उक्रइनको भूमि और वनस्पतिके अनुसार तीन भागोंमें बाँटा जा सकता है। उत्तरके थोड़ेसे भागमें जंगल है जहाँ देवदार और ओकवृक्ष मिलते हैं। यहाँ रस्सीवाले पौधे और आलू बहुतायतसे होते हैं। यहाँसे दक्षिण कियेफ़के समानांतर अक्षांशमें जंगल खतम सा हो जाता है। उक्रइनकी मिट्टी अत्यन्त उर्वर और काली मिट्टी है—सोवियत्‌की काली मिट्‌टी वाली भूमिका सबसे अधिक भाग यहाँ है। यह गेहूँ और चुकन्दर-चीनीकी खान है और अपने पशु-पालनके लिये भी प्रसिद्ध है। दक्षिण जानेपर काला सागरकी प्रान्त-भूमि आती है। इस वृक्षहीन प्रदेश की मिट्‌टी यद्यपि काली है किन्तु वर्षा कम होती है। जौ और गेहूँ तथा बिना सिंचाईका कपास ही यहाँ अधिक होता है। कृषि यहाँ पर बहुत अधिक विकसित है। द्वितीय महायुद्धके आरम्भमें यहाँके कल-खोजों और सोव-खोजोंमें नब्बे हजार ट्रैक्टर और इकतीस हजार कटाई-दँवाईकी कम्बाइनें काम करती थीं।

उक्रइनकी खनिज-सम्पत्ति विपुल और विविध है, साथ ही उद्योग धन्धेके लिये उपयोगी कच्चे खनिज माल आस-पासमें है। दोनबासमें अपार कोयला है—जिससे लोहे के लिये उपयोगी बढ़िया कोक बनाया जाता है। नातिदूर (चार साढ़े चार सौ किलोमीतरपर) क्रिवोइ—रोगकी अधिक लोहांश रखने वाली खाने हैं। दोनबास और उसके आस पास लोहा-फौलाद बनानेके लिये उपयोगी मंगानीस और चूना-पत्थर भी है।

क्रान्तिसे पहले उक्रइनकी अधिकांश खानें और लोह-कारखाने विदेशी पूँजीपतियोंके हाथमें थे। क्रान्तिके बाद वह न केवल सारी जनताकी सम्पत्ति बन गये बल्कि उनका बहुत विकास हुआ। यहाँके बड़े उद्यगोंकी उपज द्वितीय विश्व-युद्धके आरम्भमें प्रथम विश्व युद्धसे दस गुनी हो गयी थी। मशीन निर्माण और रसायनके कारखानों जैसे कितने ही नये उद्योग धन्धे बढ़े।

दोनबास उक्रइनका महान् औद्योगिक-केन्द्र है। यहाँ हर जगह इतने अधिक औद्योगिक नगर हैं कि उन्हें एक महानगरका अंग कह सकते हैं। यहाँ रेलों और बिजलीवाहक तारोंका जाल बिछा है। जहाँ देखिये वहाँ खानोंके चन्दवक और कोयलेके पहाड़ दिखलाई पड़ेंगे। भट्ठों और कारखानोंकी चिमनियाँ अहर्निश धूआँ उगलती रहती हैं। युद्धसे पहले स्तालिनो, माकेयेब्का, येनकीयेवोके कारखाने क्रिवोइरोगके लोह-पाषाणोंको लोहा और फौलादमें परिणत करनेमें लगे रहते थे। वोरोशिलोवग्राद्में रेल-इञ्जन बनते थे और क्रमातोर्स्क मशीनें बनाता था। दोनबास रसायनिक उद्योगका भारी केन्द्र बन गया था और सोवियत्का तीन चौथाई सोडा और आधा नमक यहाँ तैयार होता था।

हिट्लरी ध्वंस—लेकिन हिटलरी सेनाने अपने थोड़े कालके निवासमें सबको ध्वस्त कर दिया। खानोंमें डिनामाइट लगाया और पानीसे भर दिया। लोहेके भट्ठोंको उड़ा दिया, कारखानों और घरोंको जला दिया। एक तिहाई निवासी बेघरके हो गये। किन्तु इस सारे कालमें उक्रइनी गोरिल्ले बराबर लड़ते रहे। जैसे ही जर्मन गये, दोनबासके पुनर्निर्माणका कार्य चालू हो गया। १९४६के आरम्भ तक कोयलेकी खानें आधा कोयला देशको देने लगीं। दो दर्जन लोहोंके भट्ठे खरकोफ्में काम करने लगे और वहाँ टर्बाइन, ट्रेक्टर, बाइसिकिल, फोटो केमरा और दूसरे कारखाने फिर काम करने लगे। द्नियेपरनदी उत्तरसे दक्षिण बहती एक जगह पहाड़ी चट्टानोंसे गुजरती है। यहाँ कितने ही प्रपात बन गये हैं।

इकट्ठा करनेपर उनकी ऊँचाई छै-सात तल्ले मकानके बराबर होगी। महाक्रान्तिसे पहिले यह प्रपात नौकाके यातायातमें सिर्फ बाधा देनेका काम करते थे। प्रथम पञ्चवार्षिक योजनामें इन प्रपातोंको उपयोगी काममें नियुक्त किया गया और ज़ापोरोझ्येके पास भारी बाँध बनाकर इन प्रपातोंको जलमग्न कर दिया गया, जिससे एक तरफ नौकाका यातायात उन्मुक्त हो गया और दूसरी ओर इस पानीसे बिजली बनानेके लिये योरपका सबसे बड़ा पन-बिजली स्टेशन तैयार हुआ। गत-युद्धमें ये बाँध और कारखाने ध्वस्तकर दिये गये और प्रपातोंके चट्टान फिर ऊपर निकल आये। किन्तु जैसे ही जर्मन वहाँसे भगाये गये, पुनर्निर्माणका काम शुरू हो गया और १९४६के अन्त तक एक लाख किलोवात ताकतकी टरवाइन फिर अहर्निश घूमती बिजली तैयार करने लगी।

(ग) पुनर्निर्माण फासिस्तोंने उक्रइनकी खेतीको भी भारी नुकसान पहुँचाया था, किन्तु जर्मनोंके भागते ही किसानोंने इतनी तत्परतासे काम शुरू किया कि १९४५में ही युद्ध-पूर्वके खेतोंका तीन चौथाई अन्न पैदा करने लगा।

कियेफ़ उक्रइनकी राजधानी और सबसे पुरानी नगरी है। जर्मनोंने इसे तबाह करनेकी कोशिश की। युद्धसे पहिले यह सोवियत्का तृतीय महानगर था, जिसकी जनसंख्या १९३९की गणनाके अनुसार आठ लाख छियालिस हजार थी। सोवियत् कालमें कियेफ़ एक भारी और औद्योगिक नगर बननेके साथ एक बड़ा सांस्कृतिक और साइन्स-सम्बन्धी केन्द्र भी हो गया। कियेफ़ सोवियत्के बहुत सुन्दर नगरोंमें था। किन्तु जर्मनोंने अपनी ध्वंस लीलाके द्वारा कियेफ़को मिटा देना चाहा। नव-निर्माणका कार्य यहाँ बड़े जोरोंसे हो रहा है और कियेफ़ पहिलेसे भी अधिक भव्य तैयार हो रहा है।

उक्रइन प्रजातन्त्रने सांस्कृतिक और साइन्स-क्षेत्रमें भी बहुत काम किया है। इसकी अपनी साइन्स-अकदमी है जिसके छब्बीस इन्स्तोत्यूत

(प्रतिष्ठान) युद्धसे पहिले अनुसन्धानका कार्य करते थे। १९४१में यहाँके १६६ कालेजोंमें सारी जर्मनीसे दुगुने विद्यार्थी पढ़ते थे। यहाँके स्कूलोंमें उससे भी अधिक विद्यार्थी पढ़ते थे जितने कि पोलैण्ड, रूमानिया, बुल्गारिया और फिनलैण्डके सारे विद्यार्थी मिलकर होते थे युद्धारम्भके समय यहाँ १३० नाट्यशालायें थीं जिनमेंसे ९७ उक्रइन भाषामें अभिनय करती थीं। विद्या और संस्कृति सम्बन्धी संस्थाओंको जर्मनोंने भारी हानि पहुँचाई थी, किन्तु उनके भागनेपर नव-निर्माणका कार्य भी बहुत जोरसे चल रहा है और डेढ़ सौ से ऊपर कालेज १९४६के आरम्भमें ही अपने मकानोंमें कार्य करने लगे थे।

युद्धोपरान्तकी पंचवार्षिक योजनामें उक्रइनको अपने पुराने उद्योग धन्धे हीको फिरसे स्थापित करना ही नहीं है, बल्कि उसे और आगे बढ़ाना है। दोनबासकी कोयलोंकी खानोंमें साठकी और वृद्धिकी जायगी। प्रजातन्त्रके पच्छिमी भागमें भारी तैल-क्षेत्र होने लगा है और दशव-कियेफ़के बीच चार सौ किलोमीटरके प्राकृतिकगैसके पाइप बन जायेंगे। द्निये‌प्रोपेत्रोव्स्क—पहले धातु नगरके तौरपर प्रसिद्ध—अब मोटर-नगर बनने जा रहा है, जहाँसे साढ़े तीन टनकी साठ हजार लारियाँ हर साल बनकर निकला करेंगी। ओदेस्सा और ल्वोफ़के नगरोंमें मोटरके पुर्जोंके जोड़नेके बड़े कारखाने बन रहे हैं। उक्रइनके नगरोंको काकेशश और क्रिमियासे जोड़नेके लिये नयी मोटर-सड़कें बन रही हैं। उक्रइनके पच्छिमी जिलोंमें उद्योगीकरणकी गति और तीव्र है। हाल तक उक्रइनसे अलग रहनेके कारण ये जिले बहुत पिछड़े हुए थे, अब उन्हें पिछली तीन पंच वार्षिक योजनाओंका काम भी वर्तमान पंचवार्षिक योजनाके साथ साथ पूरा करना है और ल्वोफ़नगर एक भारी सांस्कृतिक और औद्योगिक केन्द्रमें परिणत होने जा रहा है।

कार्पाथीय उक्रइन

कार्पाथियाके पर्वतोंमें लाखों उक्रइनी बसते हैं, लेकिन हजार बरससे

यह मगयार (हंगेरियन) और दूसरे लोगोंकी दासतामें रहे। १९४५में एक सोवियत् पत्रकार इस प्रदेशको देखने गया और उसके बारेमें वह लिखता है :

जिस दिन मैं कार्पाथीय उक्रइनकी राजधानी उज़गोरद्में पहुँचा उस दिन, हजार वर्षसे बिछुड़े भाइयोंको मिलनेका प्रथम वार्षिकोत्सव वहाँ मनाया जा रहा था। उज़गोरद, मुकाचेवो, खुस्तो, त्याचेवो सभी नगर और गाँव झंडा पताका और फूलोंसे सजे हुए थे। नर-नारियोंने उत्सवका परिधान पहिन महोत्सवके उपलक्षमें पहिले गिर्जेघर जाकर पूजाकी, फिर उत्सव आरम्भ हुआ, जिसका कि गान और नृत्य अभिन्न अंग था।

काष्ठ और नमक दो ही चीजें यहाँके लोगोंके लिये धनागमकी साधन थीं। साल भरका समय बहुत कम होता है, किन्तु भूगर्भ-शास्त्री जमीनको सूंघने लग गये हैं। तेलका पता लग गया है। कोयलेकी खानके प्रथम चँदवक काटे जा चुके हैं और धरतीके गर्भसे कोयला निकाला जाने लगा है। नकेद्गिरिके सानुपर लोह-पाषाण खोद निकालनेके लिये खाँखर काटा जा रहा है। अभी यह कामका आरंभ है। गवेषणा पूरी नहीं हुई है। हो सकता है, यहाँ भी दूसरा उराल, नया दोनबास या एक और कज़ाकस्तान बन जाये। जिला सरकारके प्रधान तुर्यानित्साने दृढ़तापूर्वक कहा—"एक बात स्पष्ट है कि इस वक्त हमें अपनी काष्ठ सम्पत्तिके उपयोगको बहुत जल्दीसे आगे बढ़ाना चाहिये। कार्पाथीय पर्वत मालाके वृक्ष देवदार, ओक आदि वृक्षोंके घने जंगलोंसे ढँके हैं। यहाँ पहाड़ोंके ऊपरी भाग या अधित्यकाका वेर्खोविना कहा जाता है। सबसे गरीब लोगोंको यहीं ठाँव मिला था। नीचेकी उर्वर उपत्यकाको जमींदारोंने हड़प लिया था। हंगरीके फासिस्तोंकी छः सालकी हकूमतमें इनकी दरिद्रता और बढ़ी। यह पहाड़ी गाँव दो या तीन दर्जन परिवारोंके होते थे। मकान क्या, लकड़ीके ढांचेके बड़े-बड़े कबूतरखाने थे। मेज, स्टूल, मोटी लकड़ियोंसे छीलकर बनाये होते। उन्हें देखकर पाषाण

युगकी याद आती। बेस्खोंविनाके रहनेवाले घरके बने बहुत मोटे और भद्दे ऊनी कम्बलकी पोशाक पहना करते। जूतेकी जगह बैलके बिना सिझे चमड़ेका टुकड़ा होता, जो चमड़ेके फीतेसे पैरमें बँधा रहता। अभी पिछले साल तक बेस्खोंविनाके लोग अपने खेत लकड़ीके हलोंसे जोता करते। पतले-छोटे खेतोंमें वह थोड़ा बहुत अनाज पैदा कर लेते, किन्तु जबसे उनके पूर्वज निचली उपत्यकासे ऊपरकी ओर भगाये गये, तबसे उनकी जीविकाका प्रधान साधन लकड़ी काटना और चीरना रहा। पीढ़ियोंसे वह नीचेकी उर्वर उपत्यकामें लौटनेका स्वप्न देखा करते। आजकल उनकी मेजोंपर रोटी दिखाई पड़ती है, राज्यकी ओरसे वह भेजी जाती है। लेकिन पहिले जमानेमें रोटी उन्हें बड़े त्यौहारोंपर ही मिलती थी। उनका मुख्य आहार था मक्केकी खिचड़ी। अभी बेस्खोंविनाके मकानोंको बदलनेमें कुछ समय लगेगा। बेस्खोंविना लोगोंकी अतिथि-सेवा सदासे ही प्रसिद्ध है। बकरीका पनीर और दूध अतिथिके लिये तैयार रहता है। अब तो उन्हें कहते भी सुना जाता है—"भूखके दिन गये, अब तो काम करने वाले हरेक आदमीके लिये खाना मौजूद है।"

नवजीवनका प्रकाश कोने कोनेमें फैलना शुरू हो गया है। यसेनिया गाँवमें भी पत्रकारको विद्यार्थी मिले। ये उज़्गोरद् युनिवर्सिटीके छात्र छुट्टीमें घर आये हुए थे। मगयारोंके (हंगेरियनों) राज्यमें उक्रइनी भाषाकी कहाँ पूछ थी? अब वह अपनी भाषामें उच्च शिक्षा प्राप्तकर रहे हैं। यसेनियाके तरुणोंने दिल खोलकर विद्यार्थियोंका स्वागत किया। एक साल पहिले होता तो वह उनसे ईर्ष्या करता, किन्तु अब वह जानते हैं कि युनिवर्सिटीकी उच्च शिक्षा उन्हें भी प्राप्त हो सकती है। उज्गोरद् क्या कियेफ़ या स्वयं मास्को यूनिवर्सिटीमें जाकर वह पढ़ सकते हैं। किन्तु कुछ ही समय पहले यह दूरकी बात थी। यसेनियाके दश हजार निवासियोंमें सिर्फ निकोलाइ त्सूपेर्यक्ने प्राग-युनिवर्सिटीमें शिक्षा पाई और आजकल वह कार्पाथियाके काष्ठ-उद्योगका प्रधान है।

पत्रकार एक दिन बूर्शानी गाँवमें पहुँच गया। गाँव बिल्कुल सूना था। वहाँ न कोई आदम न कोई आदमजाद मिला। घरकी किसी चिमनीसे जरा भी धुआँ नहीं निकल रहा था। दर्वाजे और खिड़कियाँ बंद थीं। बहुत ढूँढ़नेपर उसे एक बूढ़ा मिला जिसकी आयु सौ वर्षसे तो भला क्या कम होगी। घरकी खिड़कीको खुला देखकर पत्रकारने दर्वाजा खटखटाया। बूढ़ेके सिर निकालकर बाहर झाँकनेपर पत्रकारने पूछा—लोग कहाँ गये हैं दादा ?

—लोग ? क्यों ? नीचे भूमिपर गये हैं।

मालूम हुआ, मानो लोग चन्द्रलोकमें गये हों !

हाँ, नीचेकी उर्वर उपत्यका बेचारोंके लिये अभी तक चन्द्रलोककी भाँति ही दुर्गम थी। इन्हें भगाकर जमींदारोंने वहाँ अपना सुनहला संसार बसाया था। अब जमीन फिर अपने मालिकोंके पास लौटी। बूर्शानी वाले सभी परिवार अब तीसर नदीके तट प्रान्तमें अपनी आबादीको ले जा रहे हैं। ऊपर सिर्फ कुछ बूढ़े रह गये हैं, जो घरकी देखभाल करते हैं। हंगेरीय जमीन्दार मोरवायकी सीर-ज़िरात और पासके गाँवमें बूर्शानीवाले बस रहे हैं। पत्रकारकी पहिली मुलाकात फयोदोर सूसिकसे हुई। यह पैंतालीस सालके करीबका आदमी था। उसके शरीरपरसे अब भी गरीबीकी छाप दूर नहीं हुई थी। गाल पचका, आँखें भीतर धँसी, बाँसका चमड़ा खुरखुरा और नाड़ियाँ उभड़ी हुई थीं। उसकी स्त्री मारियाने बतलाया—"जान पड़ता है, अब वह मोटा नहीं होगा। एक सालसे तो हम पेट भर खा रहे हैं। लेकिन अब भी वह वैसा ही है, जैसा मगयारोंने इसे बना दिया था।"

सात व्यक्तियोंका सूसिक-परिवार पिछली गर्मियोंमें ऊपरसे नीचे चला आया। २·४ हेक्टर (प्रायः १० एकड़) जमीनमें ही वह मक्का बो पाये, यद्यपि उनका खेत इससे ज्यादा था। इस साल उन्होंने गेहूँ बोया है और तरकारी भी।

—बीज तुम्हें कहाँसे मिला ?—पत्रकारने पूछा।
इसपर जवाब मिला—सोवियत् सरकारने दिया।
—कब तुम उसे लौटाओगे ?
—लौटाना नहीं पड़ेगा। यह तो सहायता है।
—और मालगुजारी।
—कुछ नहीं। छः साल तककर माफ है।

सूसिकने अपनी फसल दिखलाते हुए बतलाया कि बूर्शानीमें मेरे पास जमीनका एक छोटा सा टुकड़ा था। उसमें जब फसल हो जाती, तो साल भरके लिये पतली खिचड़ी लायक अनाज हो जाता था। जब अन्न होता तो दिनमें तीन बार खा लेते, नहीं तो ऐसे ही पड़े रहते। बूर्शानीके आस पासकी जमीन एक जर्मन काउन्ट सेगेर्ट्शकी थी। सूसिकको उसने लकड़ी काटनेके काममें लगाया था। मजूरी थी, दो-ढाई पेंगोस् रोजाना। पूरे हफ्तेकी कमाईमें एक कुर्ता नहीं बन सकता था और तब जब कि हफ्ते भर भूखा रहनेके लिये परिवार तैयार होता।

सूसिक उस वक्त एक बड़े कमरेमें रहता था जिसमें जमींदार मोरबाय कभी कभी अपना तम्बाकू सुखाता था। पत्रकारके वहाँ जानेके वक्त कमरेमें बहुतसे मेहमान बैठे थे। वह भी पहले लकड़हारीका काम करते थे और सूसिककी तरह ही गरीब थे। अब भी उनके कपड़ोंसे गरीबी झाँक रही थी, लेकिन उनके खेतोंमें अच्छी फसल खड़ी थीं। अब उनके पास काफी रोटी और तरकारी होगी। एक गाय, कुछ जोड़ा सूअर, कुछ बत्तखें भी हैं। स्त्री-बच्चोंके लिये नये कपड़ेकी संभावना पक्की है। प्रौढ़-वयस्क येर्योमा वासिलने कहा—"जल्दी ही हम घर बनाना शुरू करेंगे। सिर्फ लकड़ी आनेकी देर है।"

—लकड़ी तुम्हें कहाँसे मिलेगी ?

—सरकारसे। सब चीज हमें सरकारसे मिली है। जमीन, ढोर, और मकानकी लकड़ी।

—लकड़ी महँगी तो नहीं होगी ?

—बसने वालोंके लिये लकड़ी काठ मुफ्त है।

पत्रकारने चलते चलते पूछा—यदि तुम्हें फिर पहाड़पर जाना हो, और फिर वही पुराना जीवन सामने आये तो ?

सबने एक साथ जवाब दिया—नहीं, उससे तिसामें डूब मरना अच्छा होगा।

बूर्शानीके लोगोंने निश्चयकर लिया है कि वे नया जीवन बितायेंगे। जमीन-सुधारसे जमीन्दारोंकी ५२७३७ हेक्तर (एक हेक्तर प्रायः ढाई एकड़) जमीन किसानोंको मिल गई। ५४,४६२ किसानोंको इससे फायदा हुआ है। फ़्योदोर सूसिक और उसके पड़ोसियोंको मोरवायके खेत मिल गये हैं। जो किसान वोतर और श्वोवोदामें जाकर बसे हैं, वह और भी अच्छी हालतमें हैं। उन्हें प्रति परिवार ६ हेक्तर जमीन, एक घर, अंगूर और फलका बाग मिला है।

—सरकार किस तरहसे सहायता दे रही है ?

पिछले साल सरकारने उन्हें ७३७२ टन बीज दिया था। इस साल बसन्तमें ५००० टन खनिज खाद मिली हैं और सो भी आधे दाम पर। सरकारने नौ मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन खोल दिये हैं। जिनके पास घोड़े नहीं हैं, उन किसानोंके खेत ट्रैक्टर जोत रहे हैं।

पत्रकार सड़कके किनारे एक मदिरालयमें बैठ गया। ड्राइवर मोटरमें पानी डाल रहा था। पत्रकारके साथ कृषि-परामर्शदाता भी बैठा था। किसान खेतोंसे लौट रहे थे। मुसाफिरोंके पास जमा हो जाना उनके लिये स्वाभाविक है। किसीको खाली पाइप निकालते देख कृषिपरामर्शदाताने तम्बाकूकी अपनी थैली बढ़ा दी। पत्रकारने सिगरेटका अपना डिब्बा बढ़ा दिया। मुस्कुराते हुये किसानोंने उसमेंसे तम्बाकू और सिगरेट लिया। कश खींचते हुए वे मगयार फासिस्तोंको गालियाँ देने लगे। पूछनेपर मालूम हुआ कि मगयार फासिस्त उनकी तम्बाकूको जबर्दस्ती और बहुत

कम दाम पर खरीद लेते थे। इसलिये किसानोंने तम्बाकू बोना ही छोड़ दिया था।

—और अब ?—पत्रकारने पूछा।

—अब दूसरी बात है। आओ, इस शरदमें, जैसी चाहोगे वैसी तम्बाकू हम तुम्हें देंगे।

शामसे पहिले पत्रकार उजगोरद लौटा। गिर्जेके घंटे बज रहे थे। पत्रकार भी एक गिर्जेमें गया। उपदेशका विषय था—सोवियत् उक्रइनमें मिल जानेपर कार्पाथियाका सुख और आनन्द। पुरोहित ने एक प्राचीन वाक्यको उद्धृत करते हुए कहा—जो नाविक यह नहीं जानताकि उसे किस बन्दरगाह पर जाना है, उसे अनुकूल हवा नहीं मिलती।

(ङ) ज़ापोरोज्ये-फौलाद कारख़ाना—ज़ापोरोज्ये कारखाना लोहा-फौलादका बहुत बड़ा कारखाना है। यह युद्धारम्भसे थोड़ा ही पहले बनकर तैयार हुआ था। इसके निर्माणमें नवीनतम आविष्कारों और साधनोंका उपयोग किया गया था। जर्मन-आक्रमणके समय यहाँ तीन धौंकू भट्ठे ढला लोहा तैयार कर रहे थे। एक फूँके जानेको तैयार था। फौलाद बनानेके यहाँ दश खुले भट्ठे थे। कारखानेके साथ साथ फौलाद की चादरें और दूसरा सामान बनाने वाली मिलें थीं। उत्कृष्ट फौलाद बनानेका सोवियतमें सबसे बड़ा यही कारखाना था। मोटर, विमान, ट्रैक्टर और मशीनें तैयार करनेके बारीक फौलादी चदरे यहाँ बनते थे। इसकी रोलिंग मिल नवीनतम साधनोंसे सज्जित थी, जो फौलादकी ईंटोंकी गुटैया करके उन्हें लगातार कई मशीन-गर्भसे तैयार पुर्जा निकालती थी। सारे युरोपमें और इंग्लैडमें भी इस तरहका कोई दूसरा कारखाना नहीं था। जर्मनोंने इसीलिए शीघ्रातिशीघ्र द्नियेपर तट पर पहुँचनेकी कोशिशकी थी किन्तु उनके वहाँ पहुँचनेके पूर्व ही मौलिक साधनोंको ऊराल की तरफ भेज दिया गया था जर्मन इसे चला न सके। लेकिन जब सोवियत् सेनाके दबावसे भागनेको बाध्य हुए, तो कारखानेके मकानों

और भट्टोंको बड़ी बुरी तरहसे उड़ा दिया। शायद प्राकृतिक प्रहारसे भी कारखानेकी यह गत न हुई होती। धौंकू और खुले भट्टे सिरके बल गिर गए थे। रोलिंग मिल बर्बाद हो गई थी। सारे ब्वाइलर और गर्मी-बिजलीके स्टेशन शक्तिशाली डेनामाइटसे उड़ा दिये गये थे। जर्मनोंने जितने कारखाने सोवियत्के ध्वस्त किये थे, उनमें सबसे अधिक क्रोध उन्होंने इसी कारखाने पर उतारा था।"

जर्मनोंके भागते ही फिर निर्माणका कार्य आरम्भ हो गया और इस साल उसके निरीक्षणके लिये गये सरकारी निरीक्षक कमीशनके प्रधान अकदमिक इ० प० बर्दिन् ने कहा—"कमकरोंने अपने कामको जिस तरह किया, उसके परिमाण और पेचीदगियाँ देखते वह अद्वितीय है। मकानों और भट्टोंको सीधा करना, नींवमें सीमेन्ट भरना, पुर्जोंको बदलना और उनकी मरम्मत आदि सभी बातोंमें मजदूरोंने कमाल किया है। काम बहुत अधिक और बहुत थोड़े समयमें किया गया।"

कामकी कठिनाईका यहाँ एक प्रसंग है—जिस भट्ठेको ३० जून १९४७ को फिरसे कामपर लगाया गया, उसे जर्मनोंने इस तरह डेनामाइट किया था कि वह १५७ मिलीमीतर अपनी जगहसे हट गया था। उस स्थितिमें भट्ठेको जगाना असम्भव था। उसे तोड़कर फिरसे लगानेमें बहुत समय लगता। इंजीनियर शेलग ने तरकीब बतलाई। धौंकू भट्ठेको दो हिस्सोंमें काट दिया गया। उसका ऊपरी हिस्सा आठसौ टनका था। उसे हैड्रोलिक-जैक से एक तरफ उठा दिया गया। फिर निचले हिस्से को ठीक कर दिया गया। कामकी तैयारीमें बारह दिन लगे, लेकिन भट्ठेको ठीक करनेमें सिर्फ साढ़े पाँच घंटे खर्च हुए। यदि भट्ठेको तोड़कर फिर से जोड़ा जाता, तो महीनों लगते। सोवियत्में यह सबसे बड़े भट्ठोंमें है। इसके अंदर तेरह सौ घन-मीतर धातु समा लेनेकी क्षमता है।

ज़ापोरोज्ये कारखानेके पुनर्निर्माणके लिये जमीनसे सात लाख घन-मीतर मलवा हटाना पड़ा। करीब एक लाखटन धातुकी चीजें खड़ी करनी

पड़ी। अठमहले मकानके बराबर ऊँचे दो भापके बायलर खड़े करने पड़े। शक्तिशाली हवाफूँकू और एक रसायनिक जल-शोधक स्थापित किया गया। धौंकू भट्ठेका सारा काम स्वयंचालित यंत्रोंसे होता है और उत्पादन-प्रक्रिया पूर्णतया यंत्रीकृत है।

ज़ापोरोज्ये का पुन:संचालन बहुत ही महत्व रखता है। साथ ही दि्नयेपरके महान पन-बिजली स्टेशनका काम भी संबद्ध है। तीन सालसे अधिक समय तक लाखों आदमी दि्नयेपरके भारी उद्योग-क्षेत्रको पुनरुज्जीवित करनेमें लगे हैं। १९४७ सालके आरम्भमें ही दि्नयेपरके पन-बिजली स्टेशनकी पहली किन्तु सबसे बड़ी टर्बाइन काम करने लगी और अब ज़ापोराज्ये भी चालू हो गया। इतना ही नहीं, जूनमें दो और धौंक भट्ठोंने काम शुरू किया। एक लियेत्स्क (मध्य रूस) और दूसरा वोरोशिलोव्स्क (दोनबासमें)। क्रिवोइ्रॉगमें लोहेकी दो बड़ी बड़ी खानोंने भी अपना काम शुरू किया।

इस तरह यहाँ नई पंचवार्षिक योजना आगे बढ़ रही है।

५—बेलो रूसिया प्रजातंत्र*

क्षेत्रफल	८९,००० वर्गमील
जनसंख्या	१,०३,८६,०००

राजधानी—मिन्स्क, जनसंख्या-२,३९,०००

यह सोवियत्-संघ के पश्चिमी सीमान्तका प्रदेश पोलैंडके पास अवस्थित है। दूनीना और दूनीयेपेर् नदियाँ इसकी भूमिको सींचती हैं। बाहरी देशों से युद्धके समय इस प्रजातंत्रका स्थान बहुत महत्त्वपूर्ण है। इसीलिए जर्मनी और पोलैंडके आक्रमणोंका ख़याल कर उक्रइन् की तरह इसकी सीमा पर भी बहुत जबर्दस्त किलेबन्दीकी गई है।

बेलो-रूसियाका धरातल दक्षिणकी ओर धीरे धीरे ढालुआँ होता गया

---

* १९३८ में लिखित पृष्ठ १०८-१०

है। अटलांटिक से आनेवाली हवाका यहाँकी आबहवा पर असर है। सोवियत्-संघके यूरोपीय भागके मध्यके प्रदेशोंकी अपेक्षा यहाँ वर्षा ज्यादा होती है। गर्मी भी अपेक्षाकृत कम है और जाड़ा भी बहुत नहीं है। खास कर उत्तर-पश्चिम के कोने पर, जहाँ कि नदियाँ बहुत जल्द जम जाती हैं। बेलोरूसिया में शाहबलूत्, देवदार, माप्ल आदिके वृक्ष जंगलों में बहुत पाये जाते हैं। वर्षाकी अधिकताके कारण पानीके निकास की कमीवाले स्थानों में दलदलें ज्यादा हैं, जैसेकि दक्षिण-पश्चिम में प्रिप्यात् नदीके किनारे पिन्स्ककी विशाल दलदलोंके रूप में देखा जाता है। प्रधान खनिज पदार्थ नर्म कोयला है, जोकि ईंधन और खाद दोनों केकाम में इस्तेमाल होता है। इनके अतिरिक्त दूसरी चीज़ मकान बनाने के पत्थर हैं।

प्रजातंत्रकी जनसंख्या १,०३,८६,००० में ८० सैकड़ा बेलोरूसी (सफ़ेद रूसी) हैं। रंग में अपेक्षाकृत अधिक गोरा होनेके कारण इनको शायद यह नाम मिला है। १० सैकड़ा यहूदी हैं, जो अधिकतर शहरों में रहते हैं। बाक़ी आबादी रूसी उक्रइनी और पोल् लोगोंकी है। ज़ार-शाहीके वक्त में बेलो-रूसिया बहुत पिछड़ा और ग़रीब देश था, जैसा कि आज भी सरहद पार पोलैंडके अधीनका पश्चिमी बेलो-रूसिया है।

पंचवार्षिक योजनाओं ने आर्थिक, सांस्कृतिक सभी तौर से इसे बहुत आगे बढ़ाया है। पहले $\frac{2}{3}$ जनता अनपढ़ थी; लेकिन अब कोई निरक्षर नहीं रह गया। ज़ारकी आज्ञा से बेलो-रूसी भाषाका इस्तेमाल मना किया गया था। आज बेलो-रूसी भाषा शिक्षाका माध्यम है। इसी भाषा में २०० समाचार पत्र और हज़ारों किताबें छपतीं हैं। बेलो-रूसिया में बीसों ऊँची शिक्षा-संस्थाएं और कालेज, वैज्ञानिक-अन्वेषणशालाएँ, बेलोरूसी-विज्ञान-एकेडेमीकी मार्फ़त चल रहे हैं।

पंचायती हो जानेके कारण कृषि में जबर्दस्त उन्नति हुई है। १७ लाख एकड़ ज़मीनकी दलदलोंको सुखाकर खेत और चरागाहके रूप में

परिणत किया गया है। खेतीकी भूमि दो लाख एकड़ से एक करोड़ एकड़ हो गई है। यहाँकी खेती में जानवरोंके लिए घास, और आलू, सन, तथा अनाज खास चीज़ें हैं। डेरी में गायों और सुअरोंका पालना ज्यादा है, बल्कि सुअर पालने में तो बेलोरूसिया सारे सोवियत्-संघ में अव्वल है।

यहाँ का उद्योग १९१३ की अपेक्षा १० गुना बढ़ा है; तथा कृषि, काष्ठ और धातुकी चीज़ोंकी तैयारी इसके कारखानों में की जाती है। यहाँ से सुअर का माँस, सुअर का बाल, लकड़ी, काग़ज़, दियासलाई, सीमेंट, काँच और मशीनें बाहर जाती हैं।

बेलोरूसिया प्रजातन्त्रके पश्चिमी भागको १९३९ तक पोलेंडने दबा रखा था। एक करोड़से बेलोरूसिया जंगलोंसे भरा प्रदेश है, जिसमें जगह-जगह झीलें और दलदलें हैं, जलवायु मास्कोकी अपेक्षा गर्मीमें अधिक शीतल और जाड़ेमें अधिक गर्म है। मास्कोमें जब अभी थोड़ा-थोड़ा हिम जमा रहता है, तो राजधानी मिन्स्कमें बर्फ़ गलने लगती है। बर्फ-गलाव धीरे-धीरे होता है, जिससे वहाँकी नदियाँ मध्यग्रीष्ममें नौका-यात्रोपयोगी बन पाती हैं।

इस वन-प्रधान देशमें ही बेलोवेज़का प्रसिद्ध जगल है। मध्य यूरोपके आदिकालीन अरण्यका एक मात्र अवशेप यहाँ रह गया है। यह यूरपका सबसे बड़ा रक्षितवन-खण्ड हैं, जिसने और जंगली जानवरोंके साथ जगलीविसोन (गोजातीय) भी यहाँ मिलता है। इसकी नदियोंमें प्रधान है, द्नियेपेर और उसकी शाखायें, तथा बाल्तिक समुद्रमें गिरने वाली पश्चिमी द्विना और नीमान यहाँकी लकड़ियोंको बहाकर वृक्षहीन दक्षिणी उक्रइनको देनेका काम द्नियेपेर करती हैं। द्विना और नीमान भी बहुत उपकारक नदियाँ हैं और इनकी ऊपरी धारायें इतनी नजदीक हैं कि उन्हें नहरसे जोड़नेका विचार हो रहा है। बाल्तिक समुद्रसे काला सागरका नौ यात्रा सम्बन्ध द्नियेपेर और बुग नदियोंको नहरसे मिलाकर किया गया है, जिसकी लम्बाई दो सौ किलोमीतर है, यह पश्चिमी बुग

नदी विस्तुलाकी शाखा है, जो कि बालतिक समुद्रमें गिरती है। इस नहरको जर्मनोंने बर्बाद कर दिया था किन्तु अब उसकी मरम्मत हो गयी है और यातायात होने लगा है।

बेलोरूसियामें युद्धसे पहिले दसहजार ट्रेक्टर काम करते थे, रस्सी और कपड़ा बनानेकी फ़्लेक्स यहाँकी खेतीके मुख्य उपज हैं। गेहूँ और "राईके" अतिरिक्त आलू भी बहुत होता है जो कि यहाँके एक दूसरे व्यवसाय शूकर-पालनमें भारी सहायक है।

सोवियत् कालमें दलदलोंको सुखानेके लिये जल-प्रणालियाँ बनाने का काम बहुत हुआ है और युद्धारम्भ तक सोलह लाख एकड़ दलदलको सुखा दिया गया था। दलदलके सुखानेसे सिर्फ खेतीके उपयोगी भूमि का ही लाभ नहीं हुआ बल्कि उसके द्वारा यातायातके लिये नहरें बनीं, मछलियोंका पोसना बढ़ा और नरम कोयले (पीट)की खानें निकल आईं। दूसरी फसलोंके अतिरिक्त बेलोरूसियामें रबरका दूध देने वाली कोकसागुज़की खेती भी बहुत होने लगी है। वस्तुतः पिछली पंच वार्षिक योजनाओंने बेलोरूसियाकी कायापलट कर दी है।

क्रान्तिसे पहिले बेलोरूसिया एक तरह उद्योग-धन्धा-विहीन प्रदेश था, किन्तु सोवियत्-कालने उसे उद्योग-प्रधान बना दिया। देशके जंगलोंकी लकड़ियाँ कारखानोंमें जो कृत्रिम तख्तों, दियासलाइयों और कागजके रूपमें परिणत हो रही हैं। शीशे, जूते, कपड़े, बनियानके बहुत से कारखाने काम कर रहे हैं। राजधानी-मिन्स्कमें मोटर बनानेका एक बड़ा भारी कारखाना बन रहा है। पंचायती खेती और उद्योग-धन्धेके विकासने दरिद्रता-प्रताड़ित बलोरूसियाको एक समृद्ध देशमें परिणतकर दिया। साथ ही बेलोरूसियामें संस्कृति और साइन्समें भी बहुत उन्नति हुई। साइन्स-अकदमी, युनिवर्सिटी और बीस कालेज बतला रहे हैं, कि इस दिशामें वहाँ कितना काम हो रहा है। सोवियत् कालमें ढंढ-मंढ बिखरे घरोंका कस्बा मिन्स्क एक सुन्दर आधुनिक नगरमें परिणत हो

गया। मन्त्रिमण्डलकी लालसेना और युनिवर्सिटियोंकी बहुत ही सुन्दर सुन्दर इमारतें बनी थीं, जिनमें अधिकांशको जर्मनोंने ध्वस्तकर दिया था। लेकिन उन इमारतोंको बनाने वाले हाथ अब भी मौजूद हैं और बड़ी तेजीसे वे गिरे प्रासादों और भवनोंको फिरसे खड़ाकर रहे हैं। बेलोरूसियाके वितेब्स्क, गोमेल, मोगिलेफ और दूसरे नगरोंको भी जर्मनोंने भारी क्षति पहुँचाई, किन्तु उनका भी नव-निर्माण बड़ी तेजीसे हो रहा है। बेलोरूसियाको जर्मनोंने कितनी क्षति पहुँचाई, उसका अन्दाज इसीसे लग सकता है कि जर्मन सबसे पहिले इसी भूमिपर चढ़े और बहुत पीछे वहाँसे निकले। उन्होंने निकलनेसे पहिले प्रायः सम्पूर्ण उद्योग-धन्धेको चौपटकर दिया। कारखानोंको बारूदसे उड़ा दिया। बहुतसे गाँवोंका चिह्न तक नहीं रहने दिया—उदाहरणार्थ लेलचित्सी इलाकेके साढ़े सात हजार घरोंमें सिर्फ बत्तीस घर बच रहे। मिन्स्क नगरके अस्सी सैकड़ा मकानोंको ध्वस्तकर दिया, पानी कलको नष्टकर दिया। युनिवर्सिटीकी इमारतोंको गिरा दिया। अकदमीके प्रतिष्ठानोंको तबाहकर वहाँकी चीजोंको लूट ले गये, राजकीय चित्रशालाकी भी वही गति की। आधे खेतोंमें घासका जंगल उग आया और बगीचे काट डाले गये। राष्ट्रकी प्रायः आधी सम्पत्ति नष्टकर दी गयी।

(६) आजुर्बाइजान् प्रजातंत्र

क्षेत्रफल—३३,००० वर्गमील जनसंख्या—३२,१०,०००
राजधानी—बाकू, जनसंख्या—८,०६,०००

काकेशश्के तीन संघ-प्रजातंत्रों [दूसरे दो हैं गुर्जी (जार्जिया) तथा अर्मनी]में एक है। यह कास्पियन समुद्रके पश्चिमी तटसे काकेशश् पर्वत-मालाके भीतर तक चला गया है। कुश और अरख्की नदियाँ इसमें बहती हैं। दक्षिणमें छोटी काकेशश् पर्वत-माला इसी के अन्दर है। छोटी काकेशश् पर्वत-माला के पूर्वी छोरपर नागोर्नी-कराबख

नामक स्वायत्त ज़िला है। उसकी आबादी अधिकतर अर्मनी लोगोंकी है; और आज़ुर्बाइजान्के अन्तर्गत है।

नखिचेवाम्-स्वायत्त-प्रजातन्त्र आज़ुर्बाइजानी तुर्क क़ौमका है।

सारे संघ-प्रजातंत्रकी आबादीका $\frac{3}{5}$ आज़ुर्बाइजानी (तुर्क) हैं। इनके अतिरिक्त अर्मनी, गुर्जी, कुर्द, रूसी, तात्, तालिश् भी बसते हैं। तात् और तालिश् ईरानी जातिसे सम्बन्ध रखते हैं।

कालासागरकी नम हवा कफ़केशश् पहाड़ोंके कारण आने नहीं पाती, इसीलिये आज़ुर्बाइजानकी आबोहवा शुष्क है। निचली भूमिमें गर्मी काफ़ी होती है, अतएव मिस्रकी तरह यहाँ भी मिस्री कपास बड़ी सफलताके साथ पैदाकी जाती है। सिंचाईका अच्छा प्रबन्ध है। इन जगहोंपर चावल और लूसरन (घास) भी पैदा होती है। पहाड़ी उपत्यकाओंमें अंगूर, सेब आदि मेवोंके बग़ीचे तथा रेशम बहुतायतसे होता है।

आज़ुर्बाइजान सोवियत्के सोलह प्रजातंत्रोंमें महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। बाकूका जगत्प्रसिद्ध तैल क्षेत्र यहीं है। तेलके अलावा कपास, रेशम और ऊन भी यह बहुत भारी परिमाणमें पैदा करता है। चीनका व्यापार-मार्ग जहाँ कास्पियनसे उत्तर उत्तर रूसको जाता था, वहाँ उसकी दूसरी शाखा कुरा नदीके किनारे भूमध्य-सागरपर पहुँचती थी, इसी रास्ते सुन्दर चीनांशुक सारे रोमन साम्राज्यमें पहुँचता था। आर्योंकी एक शाखा इसी रास्ते दक्षिणकी ओर गई थी। शक घुमन्तुओंसे रक्षा करनेके लिये ईरानी सम्राट् कोरोश (कुरु)ने दरबंदको प्राकारबद्ध किया था। यही रोमक, पारसीक, विजन्तियम, अरब, रूसी और तुर्क जातियों और उनकी संस्कृतियोंका संघर्षका क्षेत्र रहा। इसी रास्ते मध्य-एसियाकी जातियोंने यूरोप तकपर धावा बोला। सहस्राब्दियों तक यहाँ भयंकर युद्ध होते रहे। इन युद्धोंने आज़ुर्बाइजानको महादरिद्र और पिछड़े घुमन्तुओंका घर बना दिया। इसी हालतमें वह रूसी ज़ारोंके आनेके बाद भी रहा। यहाँके तेलसे फायदा उठाने वाले भूमिकी असली सन्तान नहीं बल्कि

पीतरबुर्ग और लन्दनके थैलीशाह थे। बाकू मिट्टीके तेल और पेट्रोलकी नगरी है। इसके समुद्र-तटपर मीलों इन्द्रधनुपके रंगोंवाली तेलकी फाँफी तैरती रहती है।

सोवियत्-कालमें बाकू दुनियाके बड़े बड़े शोपकोंका अखाड़ा न रहकर देशकी जनताका धन बन गया। क्रान्तिके पहिले कुछ नये तरहके यूरोपीय बँगले थे, बाकी सारी स्थानीय जनता पुराने कूचों और गंदे मुहल्लोंमें रहा करती थी। मुस्लिम धर्मान्धता वहाँ पैर तोड़कर बैठी हुई थी। स्त्रियोंकी दशा तो और भी दयनीय थी। उनमेंसे कोई कोई कभी कभी बुर्का ओढ़े बाहर दिखाई पड़तीं। वस्तुतः उनकी स्थिति क्रीतदासियोंसे बढ़कर नहीं थी। आज वह सारी बात भूली जा चुकी है। क्रान्तिने उन्हें मुक्तकर पुरुषोंकी तरह पूर्ण नागरिक बना दिया। हजारों स्त्रियाँ प्रजातंत्रके कालेजोंमें पढ़ रही हैं। एक आजुर्बाइजानी अध्यापिका चिम्नाज अस्लानोवा सोवियत् संघकी पार्लियामेंटकी जातीय भवनकी उपप्रधाना है। बाकूमें साइन्स अकदमी और उसके कितने ही अनुसन्धान-इन्स्तीतूत हैं। पन्द्रहसे ऊपर कालेज तथा दूसरी उच्च शिक्षण-संस्थायें हैं।

शहरसे बिजलीकी रेल अपशेरों प्रायद्वीपमें जाती है। यह है तैल-क्षेत्र, जहाँ जंगलकी तरह तैलकूपोंके ढाँचे दिखाई देते हैं। इस क्षेत्रसे सारे सोवियत्मे अधिक तेल निकलता है। वस्तुतः वह दुनियाके सबसे बड़े तैल क्षेत्रोंमेंसे है। १९०१ ई० में भूमंडलका आधा तैल यहाँसे निकला था, किन्तु पीछे इसका ह्रास होता गया। फिर सोवियत्की पंच-वार्षिक योजनाओंने ही इसे आगे बढ़ाया। पहिले इस तैलक्षेत्रका उतना अच्छा अनुसन्धान भी नहीं हुआ था। आज अपशेरों प्रायद्वीपके तेलका पूरी तौरपर अनुसन्धान कर लिया गया है। बहुत गहराई तक तेलके पम्प लगाये गये हैं। बहुतसे नये तैलस्रोतोंका पता लगाया गया है। स्थल हीमें नहीं, इलिच् खाड़ीमें भी तैल-कूपोंके ढाँचे फैले हुए हैं। बाकूके तेलका अस्सी सैकड़ा क्रान्तिके बाद पता लगाये स्रोतोंसे निकाला

जा रहा है, दुनियामें कहीं भी इतने छोटे क्षेत्रमें इतना अधिक तेल नहीं है। अक्सर बड़े शक्तिशाली फव्वारे फूट पड़ते है, जो कभी कभी धरतीके तीन किलोमीतर नीचेसे आते हैं। यद्यपि सत्तर सालोंसे यहाँ तेल निकाला जा रहा है, लेकिन यह अक्षय भंडार चुकनेका नाम नहीं लेता। वर्तमान पंचवार्षिक योजनाके अंतमें तेलका उत्पादन ड्यौढ़ा होने जा रहा है। पेट्रोलको बाकूके कारखाने ही शुद्ध करते हैं और वही उससे निकली दूसरी चीजोंसे मोमबत्ती, वेसलिन आदि बनाते हैं। तेल निकालनेकी उपयुक्त मशीनोंके लिये बाकूको दूसरेका मुँह नहीं जोहना पड़ता, उसके पास मशीन बनानेका अपना विशाल कारखाना है। पाइप बनानेका एक बड़ा कारखाना आजकल बन रहा है।

कास्पियन समुद्रके मत्स्य-धनको बढ़ानेके लिये बहुत अधिक प्रयत्न हो रहा है। कितनी ही तरहकी मछलियाँ कालासागरसे विमानों द्वारा मंगवाकर डाली गई हैं।

कुरा नदीका जहाँ कास्पियनसे संगम हुआ है, उसका निम्न भाग पानीकी कमीसे उतना लाभदायक नहीं है। वर्तमान पंचवार्षिक योजनामें उसकी सम्पूर्ण कायापलट होने जा रही है। उसपर सत्तर मीतर (सवा दो सौ फीट) ऊँचा बाँध बँध रहा है। मिंगेचौर गाँवमें सँकरी घाटीको इस बाँधसे रोककर एक सौ पैंसठ किलोमीतर लम्बे सरोवरके रूपमें उसे परिणतकर दिया जायगा। उसके सत्रह अरब घनमीतर पानीको तीस नहरों द्वारा खेतीमें इस्तेमाल किया जायगा। वर्त्तमान योजनाके अनुसार १,१२,००० हेक्तर जमीनको सींचकर उसमें कपास और अनाज पैदा होगा। इसका दूसरा फल यह भी होगा, कि हमारी कोसीकी तरह कुरासे सौ बस्तियोंको बाढ़का डर नहीं रहेगा और वहाँ मलेरियाका नाम न रह जायेगा। ऊपरसे मिंगेचौर पन-बिजली स्टेशन, बाकू और दूसरी जगहोंको भारी परिमाणमें-विद्युत् शक्ति प्रदान करेगा। यह पन-बिजली-स्टेशन द्नियेपरके बाद यूरोपमें भी सबसे बड़ा बिजलीघर होगा।

वर्तमान पंचवार्षिक योजनामें यह प्रजातंत्र कई और बिजली स्टेशन, मशीन-निर्माणके कारखाने और दूसरी फैक्टरियाँ तैयार करने जा रहा है।

उत्तरकी ओर काकेशशके सानुसार पहुँचता है। यह सेब, अंगूर, खूबानी, तूत, बादाम आदिके बागोंका देश है। यहीं नूखामें दुनियाका एक सबसे बड़ा रेशमका कारखाना बना है।

पश्चिममें एवलखसे रेल कुरा उपत्यकाके किनारे-किनारे ऊपरकी ओर चढ़ती है। यहीं किरोवाबाद (गंजा) का नवीन औद्योगिक केन्द्र है। क्रान्तिके बाद इस स्थानकी समृद्धिके लिये तस्कोफ़से लाकर एक कपड़ेकी मिल स्थापित की गई थी। आजकल तो यह शहर सूती और ऊनी कपड़ोंकी मिलोंका एक भारी केन्द्र बन गया है। किरोवाबादमे दक्षिण शाहदाद पर्वतकी चोटीपर अपेक्षाकृत थोड़ी सी जगहमें बहुत समृद्ध खानें निकल आई हैं, जिनमें मग्नेसन्, अलूमिनित, ताँबा, पूरित् और वरित आदि धातुएं पाई गई हैं। तिफ़लिसका नया लोह-फौलाद-कारखाना यहींके लोह-पाषाणको अपने इस्तेमालमें लायेगा।

लिन्कोरन्के करीब—जहाँ कि पहाड़ समुद्रके तट तक पहुँच गया है—चाय, नीबू, नारंगी आदि गर्म मुल्कोंकी चीजें पैदा होती हैं। आजुर्बाइजान्में पशु-पालन भी काफ़ी होता है।

यह सब होते हुए भी आजुर्बाइजान्का सबसे बड़ा धन धरातलकी उपजसे नहीं, बल्कि उसके हजारों फ़ीट नीचेसे आता है। १९१३में ७० लाख टन पेट्रोल निकलता था, लेकिन १९३६में २ करोड़ १० लाख टन अर्थात् तिगुनी उपज हुई। बाकूसे तेल ले जानेके लिये दो रास्ते बने हुए हैं। एक कास्पियन (कसिस्की) समुद्र द्वारा अस्त्राखान और वहाँसे वोल्गा नदी, फिर वोल्गा-मास्को नहर आदिसे स्टीमर द्वारा रूस और दूसरे देशोंमें जाता है। दूसरा बाकूसे पाइपों द्वारा बातूमी बन्दरको, जहाँसे जहाज द्वारा दुनियाके और देशोंमें (भारतमें भी) जाता है।

७—अर्मनी प्रजातंत्र*

क्षेत्रफल १२,००० वर्गमील
जनसंख्या १३,००,०००
राजधानी—येरेवान, जनसंख्या—२,००,०००

काकेशश् पर्वतमालाके पश्चिम तरफ़ यह प्रजातंत्र अवस्थित है। गुर्जीकी तरह इसके भी दक्षिण तुर्की प्रजातंत्र है; और दक्षिण तरफ़ यह ईरानकी सीमासे मिला हुआ है। गुर्जी इससे उत्तर-पश्चिम और आजुर्बाइजान् उत्तर-पूर्व है। अर्मनी तिब्बतकी तरह एक ऊँचे पहाड़ी मैदानपर अवस्थित है। चारों तरफ़ ऊँची पर्वत-मालाएँ इसे घेरे हुए हैं, जिनके कारण बादल भीतर नहीं पहुँचने पाते; और वर्षा बहुत कम होती है। यहाँकी आबोहवा खुश्क है और अपने अक्षांशोंकी अपेक्षा अधिक सर्द है। वर्षाकी कमीके कारण जंगल नाममात्र हैं। पहाड़ नंगे हैं। भूमि ज्वालमुखोके लावा और राखसे बनी होनेके कारण बहुत उपजाऊ है। अर्मनीके दक्षिणी किनारेपर बहने वाली अरख नदीकी उपत्यका खेतीके लिए बहुत अनुकूल है।

जनसंख्याका ८५ सैकड़ा अर्मनी लोग हैं। संस्कृति और इतिहासमें यह बहुत पुरानी जाति है। एक लाखके करीब अर्मनी सोवियत् संघके भिन्न भिन्न प्रजातंत्रों—विशेषकर काकेशश्में रहते हैं। अर्मनी प्रजातंत्रमें तुर्क, कुर्द, गुर्जी और रूसी भी रहते हैं।

अर्मनी प्रजातंत्रमें कृषि अधिकतर अरख् नदीकी उपत्यका और येरेवान्के खलारमें होती है। यहाँ नहरकी सिंचाईसे कपासकी खेती और मेवोंके बग़ीचे चारों तरफ़ लगे हुए हैं। दूसरी जगहोंमें अधिकतर पशु-पालनका काम होता है, जिनके लिए पहाड़ोंपर जगह जगह चरागाहें हैं। खेती लोगोंकी आवश्यकताके लिए काफ़ी नहीं है।

* १९३८में लिखित पृष्ठ ११७-१८

अर्मेनियाके उद्योग-धंधेमें खाद्य, (टिन-बन्द फल, शराब आदि) कपड़ेके कारखाने और ताँबे तथा इमारतके लिए प्रयुक्त होने वाले पत्थरोंकी खानें हैं।

हालमें बिजली पैदा करनेके लिए कितने ही पावर-हाउस (शक्ति गृह) तैयार किये गये हैं। सेवान् झील अरख्की उपत्यकासे १००० मीतर (प्रायः ३३०० फीट) ऊँची है। जंगा नदी इस झीलका पानी अरख्में ले जाती है। जंगापर कई पावर-स्टेशन बन चुके हैं: जिनमें कानाकेर एक है। सेवान् झीलसे जो सस्ती बिजली तैयार होने वाली है, वह अर्मनीके सारे आर्थिक स्वरूपको बदल देगी।

अर्मनी प्रजातंत्र सोवियत्के अन्य भागोंमें ताँबा, इमारतके पत्थर, मेवे, ब्रांडी, ऊन और चमड़े भेजता है।

* * * * * *

गुर्जी लोगोंकी तरह अर्मेनियन लोगोंको भी इतिहासके आरम्भसे ही संघर्षका जीवन बिताना पड़ा है। सोवियत्-शासनने उन्हें शान्ति, स्वतन्त्रता और समृद्ध तीनों एक साथ दी। आज पुराना अर्मेनिया-देश एक आधुनिक उद्योग-प्रधान देशमें परिणत हो गया है। तिफलिसके पाससे कुरा नदीके किनारे किनारे अर्मेनिया जानेवाली लाइन पहाड़ोंके ऊपर तेजीसे चढ़ती है और अस्सी किलोमीतरमें एक किलोमीतरकी ऊंचाईपर चढ़नेसे हम अर्मेनियाकी अधित्यकापर पहुँचते हैं। यहाँ लारीके दर्रेमें घुसते काकेशश्का बहुत ही सुन्दर नजारा हमारी आँखोंके सामने आता है। दर्रेके नीचे अलावर्दी नामक नगर है जिसके बसाल्ट पत्थरोंके बने ऊँचे मकान दूरसे दिखलाई पड़ते हैं। यहाँ तांबेका बड़ा कारखाना है। तांबेके साथ-साथ गन्धक और तूतिया भी उससे निकालकर तैयार की जाती है। तांबा अर्मेनियन खनिज उत्पत्तिका एक प्रधान भाग है। अर्मेनिया अत्यन्त प्राचीन कालसे तांबेके उत्पादनके लिये प्रसिद्ध रही है

और इतिहासकारोंके मतसे मानवने उन्हें पहले-पहल यहींके तांबेसे अपना प्रथम ताम्रास्त्र बनाया।

अलावर्दीसे आगे **कलागेरान** स्टेशनके पास ज़ोग-पनबिजली स्टेशन है। इसके निर्माणके बाद प्रजातन्त्रका उद्योग-धन्धा बहुत तेजीसे आगे बढ़ा और कितनी ही कपड़े, अंगूरी शराब, फल टिन करनेके कारखाने कायम हुए। मशीनकी फैक्टरियाँ तैयार हुईं। १९२८ ई० में प्रथमपंच-वार्षिक-योजनाके आरम्भिक वर्षमें अर्मेनियाकी उपजमें उद्योग-धन्धेका भाग २८·१% से अधिक न था, जो कि अब ८१ सैकड़ासे भी ज्यादा हो गया है। वर्तमान पंचवार्षिक योजनामें आलमोनियम कारखाना, पनबिजली-विकास और रसायनिक कारखाने बन रहे हैं। १९५०में यहाँकी औद्योगिक उपज १९४०से दूनी हो जायगी।

अर्मेनिया प्राचीन उरर्तु सभ्यताकी उत्तराधिकारिणी है, जो कि आजसे तीन हजार वर्ष पहिले मौजूद थी। लेकिन उस प्राचीन सभ्यताने अर्मेनियाको बहुत आगे बढ़नेमें सहायता न की। उसकी उन्नतिका द्वार सोवियत् क्रान्तिने खोला और ३०००० वर्ग किलोमीतर तथा १३ लाख जनसंख्या वाला यह प्रदेश आज पंचायती खेतीके समृद्ध गाँवों और औद्योगिक नगरोंसे भरा हुआ है। क्रान्तिसे पहले बड़ी संख्यामें अर्मेनियन लोग अपने देशको छोड़ दूर दूर देशोंमें फैल गये थे। दुनियाके बहुत कम ही ऐसे प्रदेश होंगे, जहाँ व्यापार और कामकी सुविधा हो और अर्मेनियन न पहुँचे हों। कलकत्ता और बम्बईमें भी काफी संख्यामें अर्मेनियन रहते रहे हैं। अर्मेनियाकी भूमि जहाँ कई मूल्यवान खनिज पदार्थ पैदा करती है, वहाँ चिर-मृत-ज्वालामुखियोंकी चट्टानों और मिट्टीके कारण वह बहुत उर्वर भी है, किन्तु वहाँ पानीकी बड़ी कमी है। जो पानी है भी, उसके उपयोग करनेका कोई प्रबन्ध नहीं किया गया था, सोवियत्-युगमें इस विषयमें भारी काम हुआ है। अर्पचइ नदीसे शीरक

नहर निकालकर पंचायती खेतोंमें डाल दिया गया और नये हरे-भरे खेत आज वहाँ तरह तरहकी फसल पैदाकर रहे हैं।

पुराना अलेक्सन्द्रोपोल आज लेनिनकानके रूपमें अर्मेनियाका द्वितीय महानगर है। अपने पन-विजली स्टेशन, कपड़ेकी मिल और मांस पैक करनेके कारखानोंसे एक बड़ा औद्योगिक केन्द्र बन गया है। लेनिनकानसे आगे रेल अर्पचइ नदीके किनारे होते अरास नदीके तटपर पहुँचती है। अरास तुर्की और अर्मेनियाकी सीमा है। इसके पार वे ज़िले हैं, जो १९२०से पहिले अर्मेनियामें थे और वहाँ लाखों अर्मेनियन बसते थे। तुर्कीने पचास हजारसे ऊपर अर्मेनियनोंका कत्लेआम किया और बाकीको भागनेके लिये मजबूर करके उस प्रदेशको दबा लिया।

आज अर्मेनिया अपने छीने प्रदेशको माँग रहा है। जो तुर्की और सोवियत्के आपसी वैमनस्यका एक प्रधान कारण बन रहा है। अरासके दूसरे तटपर तुर्कीकी सीमाके भीतर अर्मेनियन लोगोंका सबसे प्रिय और पवित्र तथा सदा हिमाच्छादित अरारात गिरि है जो समुद्र तलसे ५१५६ मीतर (एक मीतर=सवा तीन फुट) ऊँचा है। अरास-उपत्यकाके ऊपर झाँकता यह सुन्दर शिखर दर्शककी दृष्टिको अपनी ओर बहुत आकृष्ट करता है और अर्मेनिया वालोंको तो और भी, क्योंकि यह उनके प्रजातन्त्रके लांछनका एक अभिन्न अंग है। वह सदासे अर्मेनियन जातीय चिह्न रहा है। रेलकी बाईं तरफ अरारात गिरिके सामने अर्मेनियाका सबसे बड़ा शिखर आलागेज (४०९५ मीतर) है। आलागेज़की परिक्रमा करते रेल नीचे उतरकर येरेवानकी निम्नस्थलीमें पहुँचती है। यह आर्मेनियाका सबसे घना बसा प्रदेश है। यहाँ पहाड़ोंसे घिरी अरासकी तरफ धीरे धीरे निम्न होती उपत्यका समुद्र तलसे एक किलोमीतर ऊँचे होते हुए भी अर्मेनियाकी सबसे नीची भूमि है। वृक्ष-वनस्पति-शून्य पहाड़ियोंके बीच ग्रीष्म-सूर्य यहाँ बहुत प्रचंड हो उठता है। ऊपरसे वर्षाकी कमीने इस जलहीन भूमिको निर्जीव बयाबानका रूप दे दिया है।

सोवियत्-युगमें यहाँ नहरें निकालनेका भारी प्रयत्न हुआ है और अब युगोंकी भूखी-प्यासी भूमि सेब, अंगूरके बागों और कपासके खेतोंसे ढँक गई है। आज वहाँ चारों ओर, हरे-भरे खेत एवं किसानोंकी समृद्ध बस्तियाँ दिखाई पड़ती हैं। कपास पैदा करनेमें अर्मेनियाका मुख्य स्थान है। अर्मेनियन अंगूर, खूबानी और सेब अपने स्वादके लिये सर्वत्र प्रशंसित हैं। फसलकी आमदनीने किसानोंको धनी बना दिया है और पुराने अनगढ़ पत्थरों और मिट्टीके मकानोंका स्थान आधुनिक ढंगके साफ-सुथरे और पक्के मकान ले रहे हैं। नंगी प्यासी ज़मीन साल-ब-साल घटती जा रही है और उसकी जगह हरी-भरी बस्तियाँ ले रही हैं। विदेशसे लौटे हजारों आर्मेनियन इन बस्तियोंमें बस रह रहे हैं। येरेवान पहुँचनेसे पहिले येच्मियाजिनका स्टेशन मिलता है। यहीं आर्मेनियाका प्रसिद्ध मठ है, जिसका नाम भी यही है। इस मठकी स्थापना आजसे डेढ़ हजार साल पहिले हुई थी। १४४१ ई०से आर्मेनियन ईसाई चर्चका महागुरु कथोलिकोस् यहीं रहता आया है। सोवियत्-संघका सबसे पुराना घर इसी येच्मियाजिन मठकी दीवारोंके अन्दर है। यहाँका एक गिरजा अपने गुप्त कुएँके साथ ५०० ई०के आस-पास बनाया गया था। अर्थात् उस समय जब कि यूरोप आदिम जंगलोंसे ढँका हुआ था।

येरेवान (अरमेनियाकी राजधानी) यद्यपि साठ किलोमीतर पर तुर्कीकी सीमामें अवस्थित अरारात गिरिसे दूर है, लेकिन अरुणोदय और संध्या-कालमें इसकी स्वर्णित हिमाच्छन्न चोटी जान पड़ती है, येरेवानपर छाया किये हुए है। येरेवान्की भी भारी कायापलट हुई है और १९१४ का उनतीस हजार जनसंख्या तथा तंगी-सँकरी गलियोंवाला कसबा आज दो लाख आबादीका महानगर हो गया है। चार-चार पाँच-पाँच तलोंके गुलाबी, नीले और नारंगी रंगके पत्थरोंके बने मकानोंसे वह आज सुसज्जित है। प्रजातंत्र-भवन सोवियत्-संघकी सुन्दरतम इमारतोंमेंसे है। येरेवानकी पानी-कल, सिवेरनाली, ट्रामवे, सब सोवियत्-कालकी देन हैं।

क्रान्तिके पहिलेका येरेवान अपनी एक मदिरा-भट्टीके लिये मशहूर था, जिसमें सिर्फ सौ आदमी काम करते थे। अब वहाँ कार्बाइट कारखाना, कपड़े और जूतेका फैक्टरियाँ, रेशम, फल तथा मछलोंके पैकिंगके कारखाने, आटा-मिल, दो पन-बिजली स्टेशन, नकली रेशमका-कारखाना, मशीन बनानेका कारखाना आदि आदि तैयार हो गये हैं। येरेवान आर्मेनियाका सांस्कृतिककेन्द्र है। साइन्स-अकदमी, युनिवर्सिटी और कितने ही कालेज-स्कूल हैं।

येरेवानसे मोटरकी सड़क द्वारा उत्तरकी ओर जंगाघाटी होते साठ किलोमीतरपर सवान सरोवरपर पहुँचते हैं। इतनी ऊँचाईपर यह दुनियाका सबसे बड़ा सरोवर है—इसकी ऊँचाई १९१६ मीतर और क्षेत्रफल १४०० वर्गमील है। सरोवरका नीला जल नंगे कंकाल जैसे पहाड़ोंसे घिरा है। इसके किनारे बहुतसे स्वास्थ्यागार और विश्राम-स्थान बन गये हैं। यह सरोवर अपने रोहू मछलियोंके लिये प्रसिद्ध है। इसमें तीस नदियाँ आकर मिलती हैं; किन्तु एक ही जंगा नदी इससे बाहर निकलती है और एक सौ किलोमीतरमें हजार मीतर नीचे गिर अरासमें जा मिलती है।

आर्मेनियाको पानी और पन-बिजलीकी सबसे बड़ी आवश्यकता है और सेवान आवश्यकतासे अधिक जलको हवामें उड़ा देती है। एक भारी सुरंग सेवानके जलको बिजली और सिंचाईके उपयोगमें लानेके लिये खोदी जा रही है, जिसके रास्ते अब जंगा नदीको आना पड़ेगा। अपने रास्तेमें जंगा कितने ही बिजली-स्टेशनोंपर टर्बाइनोंको नचाती चलेगी और अन्तमें अरासकी सूखी उपत्यकाकी-दश लाख एकड़ जमीनको हरी-भरी बना प्रजातंत्रको करोड़ों मन कपास और अंगूर प्रदान करेगी। हिसाब लगाया गया है कि पचास सालके अंदर झीलका जलतल पचास मीतर (सवा सौ हाथके करीब) नीचा हो जायेगा। तलके नीचा होनेसे पानीका भाप बनकर उड़ना भी कम होगा और फैला हुआ पानी संकुचित होकर तटकी काफी भूमिको जनताके उपयोगके लिये छोड़ देगा। जंगाके

सात-पावर स्टेशनोंमें पहला कनाकीर—जिसकी शक्ति एक लाख किलोवात है—तैयार हो चुका है। सबसे बड़ा पन-बिजली-स्टेशन गिउमुस वर्तमान पञ्चवार्षिक योजनाकी अवधिमें तैयार हो जायेगा।

*** *** ***

२७ जून १९४६को "त्रान्सेलवानिया" नामक डीजेल इंजिन परिचालित जहाज कालासागरके बंदर बातुमीपर पहुँचा। इसमें बेरूत और दमश्क (सीरिया)से १८०६ आर्मेनियन नर-नारी अपने घर दक्षिणी आर्मेनिया लौट रहे थे। समुद्र-तटपर उनका स्वागत-समितिके प्रमुख ब-अस्त्वत्-सतुर्यान् और गृह-सचिव इ-मतेवोसोफ़ और कितनी ही संस्थाओंने स्वागत किया बहुतसे नरनारी अपने चिरवियुक्त बंधुओं और मित्रोंसे मिलनेके लिये भी वहाँ पहुँचे थे।

यात्री जहाजसे उतरने लगे, फिर जो मिलनका दृश्य था, वह बड़ा ही करुण और हर्षवर्धक था। आनेवालोंमें तोरोस् करापेत्यान्का बड़ा परिवार भी था, जिसमें एक तरुण फ्रेंच वैमानिक वर्दीमें था। सूखे पत्तोंकी तरह दुनियाके हर स्थानमें बिखरे दूसरे आर्मेनियनोंकी भाँति करापेत्यान भी दुनियामें निराश्रित उड़ते फिरे। वह एक समय आर्मेनियाकी उस भूमिमें रहते थे, जिसे २६ साल पहिले तुर्कोंने हड़प लिया सीधे-सादे तौरसे नहीं बल्कि अर्मेनियोंका कत्लआम करके। करापत्यान् किसी तरह जान बचाकर भाग निकले और भिन्न भिन्न देशोंमें घूमते वह बेरूत (लबनान)में बस गये। बड़ा पुत्र करापत् २४ सालकी उम्रसे ७ साल फ्रेंच सेनाकी सेवामें रहा। वह लिबियाके युद्धमें लड़ा, फिर दे-गालकी वायुसेनामें रहा वीरताके लियेके तमगा और नामस्मरण पाया। युद्ध समाप्त हुआ, सिपाही घरोंको लौटे, किंतु करापत्का घर कहाँ था?

करापत्ने जवाब दिया—"जैसे ही मैंने सुना, कि अर्मेनियन अब सोवियत् अर्मेनिया लौट सकते हैं, मैंने तुरन्त आवेदन-पत्र लिख भेजा, और आज मैं अपने सात बहिन-भाइयों और माँ-बापके साथ यहाँ हूँ।

थोड़ा आगे दो आदमी परस्पर आलिंगन करते अश्रुपूर्ण नेत्रोंसे हँस रहे थे। ये ओगनेस् और मेस्रोप् मेश्रोप्यान् दो भाई थे, जो कि आज २२ वर्ष बाद मिल रहे थे। घरके बड़े-बूढ़े तुर्की हत्याकांडकी बलि हुए। दोनों बच्चे अशरण हो भाग निकले। ओगनेस्को काकेशश् (सोवियत्)में शरण मिली, वह स्कूल कालेजमें गया और पढ़ाईके बाद एरेवान् लौटा, जहाँ आजकल वह आर्मेनिया प्रजातंत्रमें सहायक एड्वोकेट जेनरल है। मेस्रोप् एक देशसे दूसरे देशमें घूमता रहा, और अन्तमें सोवियत् आर्मेनियाने जब अपनी गोद अपने अनाथ बच्चोंके लिये खोल दिया तो फिर आज वह यहाँ है।

आज इन नये सोवियत् नागरिकोंके लिये आनंदका दिन है। उनके अशरण घूमने और प्रवासके दिन खतम हो गये। उनको यह जानकर और संतोष है कि अब उनका भविष्य निश्चित और सुरक्षित है, उन्हें फिर तुर्कीके हत्याकांडका शिकार नहीं होना पड़ेगा।

नवागंतुकोंमें कितने ही अच्छे मिस्त्री और शिल्पी हैं। उन्हें यह सुनकर यह हर्ष हुआ, कि बीसों मिलें, कारखाने, पनबिजली-स्टेशन और नहरें बनाई जा रही हैं। गल्फयानने कहा—अब तक हम महल बँगले, सड़कें और पुल दूसरोंके लिये बनाते रहे; हमारे हाथ अपने लिये, अपने देशके लिये, अपने बंधुओंके लिये काम करेंगे।

प्रवासी बंधुओंका खूब स्वागत हुआ। अब विशेष ट्रेनोंसे वह अपने निश्चित स्थानोंको जा रहे हैं।

८—गुर्जी (जर्जिया) प्रजातंत्र*

क्षेत्रफल	२७,००० वर्गमील
जनसंख्या	३५,४२,०००
राजधानी-त्बिलिसी,	जनसंख्या—५,१६,०००

* १९३८ में लिखित पृष्ठ १२४-२७

(क) सिंहावलोकन—गुर्जी प्रजातन्त्र काकेशश् पर्वत-मालाके पश्चिमी भागमें अवस्थित है। उत्तरकी तरफकी ठंडी हवा काकेशश्के पहाड़ोंके कारण यहाँ नहीं आती ; और पश्चिम तरफसे काला-सागरकी नम और गर्म हवाके आनेका रास्ता खुला हुआ है। इसीलिए यहाँकी प्राकृतिक शोभा, वृक्षों और वनस्पतियोंसे पहाड़ोंकी हरियाली बड़ी मनोहारिणी है। देश सारा पहाड़ी है। यद्यपि सोवियत्-संघके क्षेत्रफलका $\frac{१}{३००}$ हिस्सा ही यह प्रजातन्त्र है, लेकिन इसकी भूमि बहुत उपजाऊ है। जहाँ आबादी नहीं है, वहाँ भी हरे-भरे बड़े-बड़े चरागाह तथा जङ्गल हैं। ऊपर निरन्तर बर्फ़से ढके पर्वत-शिखर हैं। खेत और चाय, नारङ्गी-नीबू के बग़ीचे हर तरफ़ दिखाई देते हैं। यहाँ के जङ्गलोंमें बहुत कामकी लकड़ियाँ हैं। इसकी तेज चलनेवाली पहाड़ी नदियाँ बिजली पैदा करनेके लिए बहुत उपयुक्त हैं और उनपर कितने ही जलविद्युत्-पावर-स्टेशन भी बन चुके हैं। त्क्वर्चेली और त्क्वीगुर्लीमें कोयला और शीरकमें तेल निकाला जाता है। मंगानिज़के लिए संसार का सबसे बड़ा ढेर चियातुरा यहीं पर है। गर्म और गन्धकके पानीके चश्मे तथा उबलते पंकके सोते यहाँ पर कितने ही हैं; जहाँ बीमार तथा अस्वस्थ लोग चिकित्साके लिए आया करते हैं।

जन-संख्या का $\frac{२}{३}$ गुर्जी लोग हैं, जिनकी सभ्यता बहुत पुरानी और उन्नत है। उनके बाद $\frac{१}{१०}$ अर्मनी हैं। अल्प-संख्यक जातियोंमें अब्खाज़ो, ओसेतिन्, रूसी, उक्रइनी, यूनानी और यहूदी हैं।

इस सङ्घ-प्रजातंत्रके अन्तर्गत दो स्वायत्त-प्रजातंत्र हैं—एक अब्खाज़ी जिसकी राजधानी सुखुमी है, और दूसरी अद्जार जिसकी राजधानी बातूमी है। इनके अतिरिक्त ओसेतिन् स्वायत्त-ज़िला है, जिसका केन्द्र स्तालिनिर् है।

गुर्जीके मुख्य कृषिप्रधान प्रदेश हैं—

१—नम और गर्मीला काला-सागरका तट, जिसकी उपज है—चाय, नीबू, नारंगी, युक्लिप्टस्, कपूर और अब्खाज़ियाका अच्छी जातिका तंबाकू (सोवियत्‌में सिर्फ यहीं तुर्की तम्बाकू पैदा होता है)।

२—इमेरेतिया—(केन्द्रमें कुतइसी आदि अंगूर और रेशमके लिए मशहूर हैं।)

२—काखेतिया (कुरा नदीकी शाखा अल्ज़ानीकी उपत्यका) सेब, अंगूर पैदा करती है। अंगूर यहाँ का खास तौरसे मशहूर है।

इस प्रजातन्त्रके औद्योगिक केन्द्र निम्न शहर हैं—

त्बिलिसी (तिफ़्लिस्)—यहाँ कितने ही तरहके कल-कारखाने हैं, जिनमें एक काकेशश्के तीनों सङ्घ-प्रजातन्त्रोंकी आवश्यकताके लिए तेल शराब, रेशम और चायके कामकी मशीनें तैयार करता है।

कुतइसी—यहाँ भोजन, रेशम और रसायनकी बहुत सी फ़ैक्टरियाँ हैं। चियातुरा और जेस्तफ़ोनीमें मङ्गानीज़के निकालने और तैयार करने के कितने ही कारखाने हैं।

बातूमी—मिट्टीके तेलके साफ़ करने तथा भोजनके कारखाने।

सुखुमी—तंबाकू और भोजन के कारखाने।

त्क्विबुली और त्क्वर्चेलीमें कोयले की बड़ी बड़ी खाने हैं।

सोवियत्-शासन की स्थापनाके बाद यहाँ २०० बड़े-बड़े कारखाने और फ़ैक्टरियाँ तैयार हुई हैं; और पानीसे बिजली पैदा करनेके अनेक स्टेशन कायम किये गये हैं। उद्योग-धंधों से गुर्जीको जो आमदनी होती है, वह युद्धके पहलेकी आमदनीसे नौ गुनी अधिक है।

गुर्जी प्रजातन्त्र सोवियत् के दूसरे भागोंमें मंगानिज़, लकड़ी, तम्बाकू, चाय, मेवे, रेशम भेजता है।

* * *   * * *

गुर्जीके यहूदी—यहूदियोंके ऊपर यूरोपमें जुल्मके पहाड़ ढाये जा रहे हैं; इसे हम आये दिन देख-सुन रहे हैं। जर्मनीमें शताब्दियों से बसे हुए

यहूदियों पर हिटलर ने क्या क्या अत्याचार किया, यह सभीको मालूम है। आइन्स्टाइन् जैसे संसारके महान् वैज्ञानिक को देश छोड़कर भागना पड़ा। आस्ट्रियामें हिटलरका कदम पहुँचते ही दुनियाका सर्व्वोच्च मनो-वैज्ञानिक फ्राउड् भागने पर मजबूर हुआ। क्रान्तिके पहले रूसमें भी यहूदियोंके साथ बड़ा बुरा बर्ताव होता था, लेकिन अब हालत बिलकुल दूसरी है।

यहाँ हम गुर्जी (जार्जिया) में पहले से बसे हुए अल्प-संख्यक यहूदियों के बारेमें एक प्रत्यक्ष-दर्शीके वाक्य उद्धृत कर रहे हैं—

सोवियत् शासनकी स्थापनाके पहले जार्जियाके यहूदी शताब्दियोंसे भयङ्कर अत्याचारसे पीड़ित थे। १८ वीं शताब्दीके आरंभसे—जब कि रूसी ज़ारने जार्जियाकी स्वतन्त्रताका अपहरण किया—यहूदियोंकी हालत और भी ख़राब हो गई। यहूदी खेती नहीं कर सकते थे। कारखानोंमें काम नहीं पा सकते थे। हाई स्कूलों और उच्च शिक्षण-संस्थाओंमें उन्हें पढ़ने का अधिकार नहीं था। यहाँ के अधिकांश यहूदी अनपढ़ थे। सब तरफ़ से उनका रास्ता बन्द था। वह फेरी करके या छोटी-छोटी दुकानें रखकर जीविका कमाते थे। १९१७ से २१ तक मेन्शेविकोंके हाथमें जार्जिया थी; उस वक्त यहूदियों पर कोई भी जुल्म करनेसे वे बाज़ नहीं आये। १९२१ में सोवियत् शासनकी स्थापनाके बाद यहूदियों का नया जीवन आरम्भ हुआ। अब उन्हें हर क्षेत्रमें बढ़ने की स्वतन्त्रता थी। आज गुर्जीके ३५ हज़ार यहूदी अपने अन्य देश-भाइयोंकी भाँति ही साम्यवादी नव-निर्माण में लगे हुए हैं।

उनमें २० हज़ार यहूदी कल-कारखानोंमें काम करते हैं। वोज्येत् (यहूदी श्रमिकोंको खेत पर बसाने वाली सभा) ने ५३ प्रकारकी भिन्न-भिन्न दस्तकारियोंमें यहूदियोंको प्रवेश करानेके लिए स्थानीय संस्थाएँ बनाई है। इन दस्तकारियोंसे १९२४ में २ लाख रूबलकी आमदनी हुई थी; और इस साल ९० लाख की। कुनैसी नगरमें यहूदियोंकी बड़ी तादाद बसती

है। उनमें से ६३ सैकड़े आज कारखानोंमें काम करते हैं, जबकि १६२७ में नौ सैकड़ा ही थे। इन कमकरोंमें बहुतसे प्रसिद्ध तूफ़ानी कमकर और रतखानोंकी श्रमिक हैं। इनमेंसे कितनोंके नाम प्रजातन्त्रके सन्मान-फलक (प्रजातन्त्र-भवनमें टँगा एक तख्ता जिसपर प्रसिद्ध प्रसिद्ध पुरुषोंका नाम सन्मानके लिए लिखा रहता है) पर लिखे हुए हैं।

१२ यहूदी-कल्खोज़् सङ्गठित किये गये हैं, जिनमें ४००० आदमी काम करते हैं। अपने खेतोंमें वे चाय, तम्बाकू, गेहूँ, अंगूर तथा दूसरे फल पैदा करते हैं। जिन लोगों को खेतीमें काम करनेका कभी मौक़ा नहीं दिया गया, वह अपने कोल्खोज़ोंमें दूसरोंसे बाज़ी मार रहे हैं। उदाहरणार्थ वनोस्तुसवा कोल्खोज़्को ले लीजिए। इसकी स्थापना १६२७ में हुई थी। आज इसमें ८५ परिवार हैं। पिछले वर्ष यहाँ हर कार्य-दिन पर (कल्खोज़में खास परिमाणमें काम करने का एक एक दिन जिसके अनुसार कि कमकरोंको मज़दूरी मिलती है) ८ सेर गेहूँ, २ सेर सूर्यमुखीका बीज़, (खानेके लिए) १॥ सेर सूर्यमुखी तेल तथा ५॥ रूबल नक़द मिला था। आकोन्खोरीखोली परिवारमें ३ बालिग़ व्यक्ति हैं। इन सबने सालमें १०५० दिन काम किये दूसरा किसान मोशेमामिस्त्वालोफ़् और उसकी स्त्री ने ६२० दिन काम किये। क्रीविलीमेरी नामक एक दूसरे यहूदी कल्खोज़ा किसानने एक सालमें इतना कमाया था, कि उससे अपने लिए एक घर बनाया, एक गाय और कुछ भेड़ें खरीदीं। अपने घर के बाग़में २०० मेवोंके दरख्त लगाये; और उसीमें छोटी सी अगूरकी बग़ीची बनाई।

अख़ल्त्सिख् कल्खोज़में सिर्फ़ फलों और तरकारीका काम होता है। १६३७ में उसने एक लाख रूबल सिर्फ़ सेबके बेचनेसे पैदा किए।

गुर्जी प्रजातन्त्र सरकारने कल्खिदाकी नीची भूमि—जिसे १६३६ में पानीका निकास बनाकर सुखाया था—में से २००० एकड़ विदेश से आए हुए यहूदियोंके लिए देना निश्चित किया है, जार्जियाकी भिन्न भिन्न

जगहोंसे आए हुए १०८ परिवार अभी ही वहाँ बस गये हैं। यहूदियोंको खेतों पर लगानेके लिये एक समिति है, जो वोज़येत्की सहायतासे यहूदियों को बड़ी मदद दे रही है। समिति बाहरसे आये हुए हर एक परिवारको निम्नलिखित चीजें देती है—

आवश्यक चीजोंके साथ एक मकान और ½ एकड़ खेत घरू बग़ीचों के लिए। उन्होंने एक कल्खोज् जार्जियाकी कम्युनिस्ट पार्टीके मन्त्री ल० प० बेरियाके नामसे संगठित किया है। इस कल्खोज्में एक स्कूल, एक क्लब, कुछ बालोद्यान और एक अस्पताल स्थापित किया गया है।

कल्खोजकी नई भूमि पर ५०० परिवार बस चुके हैं। ये लोग सिर्फ़ मेवोंकी खेती कर रहे हैं।

स०स०र०स० की सरकार भी गुर्जीके यहूदियोंकी मदद कर रही है। पिछले दो सालोंमें खेती और उद्योगधन्धेमें उनकी सहायताके लिए उसने ७० लाख रूबल (३२ लाख रुपये) दिए हैं। १९३८ में ८० लाख और दिये जायेंगे। गुर्जी के यहूदी शिक्षा और संस्कृतिमें बहुत तेजीसे बढ़ रहे हैं। उनमें अब एक भी अनपढ़ नहीं रहा। पढ़नेकी अवस्था वाले सभी बच्चे स्कूल जाते हैं। शिक्षा का माध्यम गुर्जी भाषा है, जो कि यहाँके यहूदियोंकी मातृभाषा है। जार्जियाके १,००० यहूदी युवक और युवतियाँ मास्को लेनिनग्राद आदिके विश्वविद्यालयोंमें पढ़ती हैं। गुर्जीके यहूदियोंमें अब कितने ही कृषि-विशेषज्ञ, डाक्टर, अध्यापक, अर्थ-शास्त्री, इंजीनियर और लेखक हैं।

गुर्जी स्तालिनकी जन्मभूमि अनुपम और विभिन्न-शोभाकी धनी है। वहाँ कितने ही पहाड़ों पर सनातन हिम जमा रहता है और नीचेकी ओर हरित बनाली आँखोंको अपनी ओर आकृष्ट करती है। गुर्जी देशकी संस्कृति और सभ्यता बहुत पुरानी है। प्राचीन असीरियाके बाबादर वाले अभि-लेखोंमें इसका नाम मिलता है। परम्परा कहती है, कि प्राचीन युनानियोंने यहाँसे लोहा गलानेकी कला सीखी। शताब्दियों तक वीर गुर्जी युनानियों,

ईरानियों, रोमनों, अरबों और तुर्कोंसे अपनी स्वतन्त्रताके लिए लड़ते और अपनी संस्कृतिको आजतक कायम रखनेमें सफल रहे।

उन्नीसवीं सदीके आरम्भमें गुर्जीने रूसमें मिलकर ईरानी शाह और तुर्की सुलतानसे अपनी रक्षा की, किन्तु ज़ारशाही जनताकी स्वतन्त्रताको कुचलने और स्थानीय सामन्तोंके पृष्ठ-पोषणके लिए ही अपनी शक्ति खर्च कर रही थी। जन-साधारण अत्यन्त गरीबीका जीवन बिताते थे। पन्द्रह घरों पर एक हल और तीन पर एक लकड़ीका पटेला इसके निदर्शन थे।

सोवियत्-कालमें गुर्जीको आगे बढ़नेका मौका मिला और आज वहाँ आठ सौसे अधिक बड़े बड़े कारखाने हैं। कितने ही पन-बिजलीके भारी भारी स्टेशन बन गये हैं। वर्तमान पंचवार्षिक योजनाके अनुसार १९५० में यहाँ की औद्योगिक उपज १९४० से ड्योढ़ी हो जायगी।

आज गुर्जीमें अंगूरी शराब और मंगानीज़के बड़े बड़े कारखाने हैं। मशीन और कपड़ेके बड़े बड़े कारखानोंके अतिरिक्त लकड़ीका भी उद्योग-धन्धा बहुत बड़ा है। आज पैंतीस लाखकी आबादीके इस प्रजातन्त्रमें शिक्षा और संस्कृति सार्वजनीन हो गई है।

(ख) त्बिलिसी—गुर्जीकी राजधानी त्बिलिसी (तिफ़्लिस) पन्द्रहसौ वर्ष पुराना नगर है। पुराने नगरकी सँकरी गन्दी गलियां और श्रीहीन मकान लुप्त हो चुके हैं और आज नगर आधुनिक यूरोपीय-नगरके रूपमें विशाल सौधोंसे सुसज्जित है। कुरा नदीके तट भी पत्थरसे बाँधे हुए हैं और उद्यानों तथा चौड़ी सड़कोंने प्राचीन नगरीको तरुण और सुन्दर नगरीमें परिणत कर दिया है। पिछली पंचवार्षिक योजनाओंसे नगर एक बड़ा औद्योगिक केन्द्र बन गया है। यहाँ मशीन बनानेके कारखानें हैं, तेल, चाय और अंगूरी शराबके कारखाने, ऊन, रेशम और जूतेकी फैक्ट्रियाँ जगह जगह दीख पड़ती हैं। नगरसे नातिदूर कुराके तटपर काकेशशका पहिला लोह-फौलाद कारखाना बन रहा है।

नगरसे समुद्रतट पर जाने वाली रेल पर पहिला स्टेशन म्स्खेता है, जो कि आयुमें राजधानीसे भी पुराना है। छठी शताब्दी तक कुरा और अरग्वाके संगम पर बसा यह नगर गुर्जीकी राजधानी थी। पासके नंगे पर्वतके शिखर पर अब भी उस युगके मकानोंके ध्वंसावशेष खड़े हैं और उसके नीचे कुरातट पर पन-बिजलीके बड़े स्टेशनकी सीमेन्टकी इमारतें खड़ी हैं।

कुराके और ऊपर जानेपर पर्वतके चरणोंमें हरे मेवा-बागोंके बीच गोरीका नगर है। पासकी पहाड़ी पर प्राचीन किलेकी दीवारें अब भी खड़ी हैं। इसी गोरीमें १८८६ ई० में एक गुर्जी चमार के घर स्तालिनका जन्म हुआ था। अब भी वह छोटा सा मकान संगमर्मर और काँचके घेरेमें सुरक्षित रखा गया है और वे सब चीजें सावधानीसे रखी गयी हैं, जिनसे स्तालिनके बाल्यकालका सम्बन्ध था।

क्विरिला नदीकी गहरी घाटियाँ और काली धारा दर्शकको जरूर अपनी ओर आकृष्ट करेगी, किन्तु इसकी बड़ी चीज है चिआतुरीकी मंगानीज़की खानें, जो विश्वकी इस धातुकी सबसे बड़ी खानों मेंसे हैं। खानका अधिकांश काम मशीनों द्वारा होता है और फौलाद बनानेमें अत्युपयोगी इस धातुके तैयार करनेके लिए जेस्तफ़ोनीमें एक बहुत बड़ा कारखाना है। गुर्जीका कुतइसी नगर चारों ओर हरीतिमासे आच्छादित भूप्रदेशमें एक सुन्दर नगर है। यहाँ रेशमी, ऊनी कपड़ों और फल टिन करनेके कई कारखाने हैं। इस वक्त वहाँ मोटर बनानेका कारखाना तैयार हो रहा है।

कुतइसीसे उत्तर स्वेन्तियाका पहाड़ी इलाका है। इसकी चारों ओर उत्तुंग शिखरों वाली पर्वत-माला है जिनमें उशवाकी चोटी चारहजार सातसौ पैंतालिस मीटर ऊँची है। क्रान्तिसे पहले इस इलाकेमें एक भी सड़क न थी। किसान पत्थरके दाँत वाली कुदालियोंको इस्तेमाल करते थे। लोहे की काँटियोंके अभावमें मकानोंकी लकड़ीकी छतें उड़नेसे बचानेके

लिए पत्थरोंसे दाबी जाती थीं। दुर्गम पहाड़ोंमें अवस्थित इस इलाकेमें सामन्तशाही अत्याचारोंका जोर सबसे पीछे तक रहा। भिन्न भिन्न कबीलों में बराबर खूनी लड़ाइयाँ होती रहती थीं। गाँव चौकोर प्राकारोंसे घिरे होते थे, जिनमें बन्दूक दागनेके लिए सूराख बने रहते थे। सोवियत् शासनने युगोंकी जड़ताको स्वेन्‌तियासे हटाया। इंगुर नदीकी उपत्यकामें अब मोटरकी सड़क बनी हुई है और राजधानी मेस्तियामें नये तरहके घर और प्रकाश करनेके लिए पनबिजली स्टेशन हैं। तिफ़लिस और मेस्तिया के बीच नियमित रूपसे विमान उड़ते रहते हैं। इसके जंगलोंकी मूल्य-वान लकड़ियाँ औद्योगिक कामोंके लिए इस्तेमालकी जा रही हैं और हर साल भारी संख्यामें सिलपट इंगुरकी धारमें बहकर ज़ुग्दीदी पहुँचते हैं, जहाँ उन्हें कागज़के रूपमें परिणत किया जाता है।

कुतइसीसे रिवोनी जाने पर जमीन नीची हो जाती है और पहाड़ी दूर चली जाती है। हवा गरम है। समुद्र पचास किलोमीतर आगे, लेकिन उसका प्रभाव यहाँ की आबहवामें मालूम होने लगता है। यहाँ दल-दल और लम्बी घासोंसे भरे बड़े जंगलोंका एक प्रदेश है। सड़क पर अब भी कभी कभी भैंसागाड़ी देखनेमें आती है, रास्तेमें मलेरिया-प्रतिरोधी प्रतिष्ठानके सफेद मकान मिलेंगे, यह है क़ोलचिस। यह गुर्जीका पश्चिमी भाग है। युद्ध-पूर्वकी पंचवार्षिक योजनाओंमें दलदलोंको सुखाने और मलेरियाके मच्छरोंको ध्वंस करनेका बहुत काम हुआ है और साथ ही चाय, तगेरिन, नारंगी, नीबू, अंगूर और तुङ्गके बगीचे बहुत बड़े पैमाने पर लगाये गये हैं।

लड़ाईके पहले तक गुर्जीमें एक ही बड़ी रेलवे-लाइन थी, जो इसे कास्पियन तटपर बाकूसे मिलाती थी। युद्धके समय काला सागरके किनारे किनारे एक नई रेलवे-लाइन बनाई गयी, जिसने मास्कोसे तिफ़लिसके रास्तेको हजार किलोमीतर कम कर दिया।

(ग) कोल्चिस् की कायापलट—काला सागरके तटसे एक रेलवे

लाइन दलदलों और घनी झाड़ियोंके भीतर होती कोलचिस्के अन्दर जाती है।

इतिहासके आरम्भमें भी मनुष्यको कोल्चिसका नाम ज्ञात था, किन्तु ग्रीक प्रवाद इसे देवलोककी तरह प्रकट करता था। लेकिन हिप्पोक्रातने अपनी यात्रामें इसके बारेमें दूसरी तरहसे लिखा है—"फसिस (रियोन) के चारों ओर ज़मीन दलदल और झाड़ियोंकी है। हवा नमी और गर्मी की है। यहाँ सालभर वर्षा होती रहती है और पानी सुसुम तथा गन्दा है। इसी पानीमें लोग रहते हैं। उनके चमड़ेका रङ्ग पीला होता है। जब सूर्य मध्याह्नमें पहुँचता है, तो ये सर्दीसे काँपते हैं और आगकी शरण लेते हैं।"

हिप्पोक्रातसे २००० वर्ष बाद १७ वीं सदीके प्रसिद्ध फ्रेंच यात्री ज़ीन शार्दिन्ने तुर्की जाते हुए अपने जहाजका लंगर कोल्चिसके किनारे डाला। उसने इस स्थानके बारेमें लिखा "भीगी जमीन धधकते सूर्यके तापसे सन्तप्त हो हवा को विषाक्त कर देती हैं, जिससे लगातार रोग फैलता है··· हवा यहाँ की असह्य है। लोग थककर बड़े कुरूप और दुर्बल हो जाते हैं। सिर्फ एक वर्ष रह जानेपर आदमी पीला, सूखा और अशक्त हो जाता है।"

कोलचिस्की भूमिमें रोमन आये, ईरानी और तुर्क आये, मेग्रेलके रावल आए और रूसी ज़ार भी आकर चले गए, लेकिन कोलचिसका मलेरिया, दलदल और बाढ़ एक समान ही बने रहे। दलदल बढ़ते बढ़ते पोतीनगर तक पहुँच गया और कितनी ही वार रियोन नदीका मट-मैला पानी पोती की सड़कों पर बहा। किलेके खँडहरों और महलोंमें जङ्गली रीछ रहने लगे। यहाँ की आबहवा सुमात्रा और लंका जैसी थी, जिसमें दलदली वृक्षों और झाड़ियोंके सिवाय और कुछ नहीं दिखाई पड़ता था।

ट्रेन धीरे-धीरे आगे बढ़ी और जहाँ तहाँ छोटे स्टेशनों पर ठहरी।

यह वह जगह है, जहाँ दलदलकी युद्ध में आरम्भिक विजय मिली थी। चलदीदी वह स्थान है, जहाँ १५-१६ वर्ष पहले सोवियत् अग्रदूतोंकी पहली टोलीने आकर डेरा डाला और खनक मोटरों की घरघराहट द्वारा युगोंकी नीरवता को भंग किया। आगे फिर पतरा-पोती और छोटी पोती आती हैं। पहले आने वाले लोगोंने यहाँ अपना गाँव बसाया। इनके मकान लकड़ीके हैं और छतें लाल टाइल (खपड़ैल) की। पासमें युकलिप्टस्, हिमालयके देवदार, जापानी वृक्ष, नीबू-नारङ्गीके वृक्ष सब जगह लगे हुए हैं। मकानोंकी खिड़कियाँ इस हरियालीमें और भी सुन्दर दीखती हैं। इसे देखकर आदमी कोलचिस्‌के उस भविष्यका दिग्दर्शन पा सकता है, जबकि यहाँ के साढ़े पाँचलाख एकड़ दलदल और जङ्गलको स्वर्गोद्यानमें परिणत कर दिया जायगा।

आगे चलने पर फिर रियोन का नया पुल है। देखनेमें बड़ा सुन्दर। कुछ समय पहले नदीसे काफ़ी दूर हटकर इस पुलको बनाया गया था। यहाँके लोग अचरज करते रहे होंगे, कि सूखी भूमि पर पुल बाँधनेका क्या काम। उस सूखी भूमि पर लम्बी चौड़ी खाई खोदी जा रही थी। एक दिन रियोनकी नाक पकड़कर उस खाईमें डाल दिया गया। एक विशाल बाँध बांध दिया गया, अब पोतीको रियोनका भय नहीं रह गया।

युद्धसे पहले युद्ध-क्षेत्र और शत्रुके बारेमें देखभाल करना आवश्यक है। कोलचिस्‌के युद्धमें भी इसकी आवश्यकता थी। गुर्जीमें सोवियत् शासनके कायम हुए मुश्किलसे तीन वर्ष हुए थे, कि सरकारने साइन्सवेत्ताओंको बुलाकर कहा—“जाओ, स्थानका अच्छी तरह अध्ययन करो और कोलचिस्‌के उद्धारकी योजना बनाओ। प्रकृतिके अन्यायको मिटाना होगा”। हिप्पोक्रातने कहा था यहाँ साल भर वर्षा होती रहती है। ग्रीक यात्रीने बहुत अतिशयोक्ति नहीं की थी। सचमुच कोलचिस्‌में सालमें २५० दिन वर्षा होती है और सीड़ तथा नमी बहुत है, क्योंकि पानीके निकलनेका कोई रास्ता नहीं है। कोलचिस्‌की

जमीन एक चिपटा समतल मैदान है और समुद्रतलसे केवल ७०-८० सेन्तीमीतर (३०० फीट ऊँची) नदीकी तट भूमि आसपासकी भूमिसे अधिक ऊँची हैं, क्योंकि शताब्दियोंसे रियोन ऊपरसे मिट्टी लाकर यहीं रखती रही। सालमें १२५ बार रियोन खुद अपने तटोंको तोड़कर भरती है। बाढ़के वक्त पानी सारी आस-पासकी भूमिको डुबा देता है। जंगल पानी के ऊपर रहता है और नीचे की नरम मिट्टी किसी तरह इन वृक्षोंकी जड़ों को थामे रहती है।

कोलचिस्की भी समस्या सब नहीं तो अधिक अंशमें हमारी कोसी ही जैसी रही।

जहाँ भी छोटी-मोटी धार हो वहाँ नहर खोदी जा सकती थी, सड़ते पानीको निकाला जा सकता था और किनारे पर रोकनेके लिये बाँध बाँधा जा सकता था, लेकिन इन अनेक दलदलों और छोटे छोटे नालोंको क्या किया जाता, जहाँ कोई धार ही नहीं बहती? उनको वैसे ही छोड़ा नहीं जा सकता था, क्योंकि वह पोतीके नजदीक और इलाकेके केन्द्र में थे। इस सबकी दवा एक ही समझमें आई, कि सारे दलदलको पानीसे बहा दिया जाय।

साइन्सवेत्ताओंको याद आया कि दुनिया के सबसे उर्वर नदी-कछारोंमें मिस्रमें नीलकी उपत्यका है। नीलके पानीमें प्रति घन-मीतर डेढ़ किलोग्राम घुली मिट्टी होती है और रियोनके जलमें उससे दूनी मिट्टी थी। वह प्रति वर्ष दस अरब घन-मीतर उर्वर मिट्टी अपने मट-मैले पानीके साथ काला सागरमें पहुँचाती है, जिससे समुद्रका पानी २०० किलोमीतर तक मटमैला बन जाता है। यहीं समस्याके हलकी कुञ्जी थी। अब जान-बूझ कर भूमि पर नदीका पानी डाला जाता है, जब मिट्टी नीचे बैठ जाती है, तो नदीको फिर उसकी नयी धारामें डाल दिया जाता है। इसे इतनी बार किया जाता है, जिससे काफी मोटी मिट्टीकी तह वहाँ जम जाये।

तरीका सफल-सिद्ध हुआ। एक चकमें—जिसे इस तरह तैयार किया गया था—अब युक्लिप्टस, नीबू, नारङ्गी तथा दूसरे गर्म देशोंके फलदार वृक्ष लगे हुए हैं।

मेगरेल और दूसरी जगहोंके कमकर दलदलमें लम्बी नहरें खोद रहे हैं, जिनपर मिट्टी की तहें जमायी जाती हैं। विशाल वृक्ष-ठूठोंको डेनामाइटसे उड़ाया जा रहा है। बाँध, पुल और सड़कें बन रही हैं। पौधेकी नरसरी लग रही है और गाँवके मकान अलग बन रहे हैं।

१६४१ में पतरा-पोती में नींबू, नारंगीके पौधे अभी छोटे-छोटे थे, किन्तु सभी मकानोंमें बिजली जल रही थी और वहाँ दो घर और दो स्कूल थे। युद्धने बीचमें कामको रोक दिया था, लेकिन अब फिर कोलचिस्के उद्धारका काम जारी है और वह दिन दूर नहीं कि कोलचिस्का सहस्राब्दियोंका ताण्डव खत्म होगा है।

६—उज़्बेकस्तान स० स० र०*

क्षेत्रफल	१,५८,००० वर्गमील
जनसंख्या	६२,८२,०००
राजधानी-ताशकंद, जनसंख्या	६,००,०००

मध्य-एसियामें† ताशकन्दसे लेकर अफ़ग़ानिस्तानकी सरहद पर वक्षु (आमू-दर्या) नदी तक उज़्बक प्रजातंत्र फैला हुआ है। यह भी सोवियत् संघके १६ प्रजातंत्रोंमें है। इसके उत्तरमें क़ज़ाकस्तान और किर्गिज़स्तान, पूर्वमें ताजिकस्तान और पश्चिममें तुर्कमानस्तान हैं। उज़्बेकस्तान्का अधिक हिस्सा पहाड़ोंकी जड़ या नीची उपत्यका है; जहाँ नहरकी सिंचाई की बड़ी गुंजायश है। तुर्कमानस्तान, ताजिकस्तान, किर्गिज़स्तान तीनों को मिलाकर नहरकी सिंचाईकी जितनी ज़मीन है, उतनी

* विशेषके लिये देखिये "सोवियत् मध्य-एसिया"

† १६३८ में लिखित पृष्ठ १६६-७३

अकेले उज़्बेकस्तानमें है। फ़र्गानाकी उपत्यका मध्य-एसियाकी सबसे बड़ी उपत्यकाओंमें है। बाबरका ख़ान्दान पहले यहीं शासन करता था। ताशकन्दकी उपत्यका भी बहुत ज़रखेज़ और आबाद है। उज़्बेकस्तानके दक्षिणी हिस्सेमें समरकन्द, बुखारा और ख्वारेज़्मके प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर हैं।

ताशकन्द राजधानी है, जिसकी आबादी नौ-लाखसे ऊपर है; और दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। यहाँ रेशमी, ऊनी और सूती कपड़ोंके बड़े बड़े कारखाने हैं। एक कारख़ाना ट्रैक्टर और मशीनके पुर्जोंके लिए भी बनाया गया है। कपड़ा मिलोंकी मशीनरी बनानेका कारखाना बन चुका है। एक नाइट्रेट खादका कारखाना बन रहा है। चिर्चिकका महान् हाइड्रो-एलेक्ट्रिक-पावर-स्टेशन भी काम करने लगा है।

उज़्बक तुर्कजातिसे सम्बन्ध रखनेवाली एक कौम है। इसमें ईरानी खून का बहुत सम्मिश्रण हुआ है। सोवियत् मध्य-एसियामें जनसंख्या और शिक्षाके लिहाज़से यह सबसे बड़ी क़ौम है। पहले ही से उज़्बक लोगोंकी प्रधान जीविका थी, खेती और बाग़बानी। समरकन्द और बुखाराके अंगूर तथा सेब अपने स्वादके लिए संसारमें प्रसिद्ध थे। आजकल उज़्बकस्तानकी प्रधान खेती है बारीक मिस्री कपास। कितने गाँवों और इलाक़ोंमें तो कपास छोड़ कर दूसरी खेती होती ही नहीं। उज़्बक लोग कृषिकलामें बहुत आगे बढ़े हुए हैं। वे मध्य-एसियाके अन्य प्रजातंत्रोंका भी इस विषयमें पथप्रदर्शन कर रहे हैं। उज़्बकस्तानमें कराकल्पक (वक्षु नदीके निचले भागमें) एक अल्प-संख्यक जाति है; जिसको संस्कृति और भाषाके खयालसे एक सोवियत् स्वायत्त-साम्यवादी-प्रजातंत्रके तौर पर संगठित किया गया है।

उज़्बकस्तान मध्य-एसियाके चारों प्रजातंत्रों (दूसरे तीन किर्गिज़स्तान, ताजिकस्तान और तुर्कमानस्तान हैं) में सबसे धनी है। सोवियत् मध्य-एसियाकी आधी जनसंख्या आधी खेतकी भूमि, $\frac{३}{५}$ कलकारखाने, $\frac{१}{३}$ रेलवे

और सबसे बड़े शहर उज़्बेकस्तान हीमें हैं। अकेला उज़बेकस्तान, मध्य-एशियाके अन्य तीनों प्रजातंत्रोंकी सम्मिलित उपजसे सात-आठ गुनी अधिक कपास पैदा करता है। ऊन और रेशम पैदा करनेमें भी यह मध्य-एशियाका सबसे बड़ा प्रजातंत्र है।

उज़्बेकस्तानमें मेवोंकी पैदाइश बहुत होती है; लेकिन गेहूँ अपने लिए काफ़ी नहीं पैदा करता। इसे वह कज़ाकस्तान, किर्गिज़स्तान और पश्चिमी सिबेरिया (तुर्क-सिबिर रेलवे द्वारा) से पाता है।

लड़ाईके पहलेसे तुलना करने पर उज़बकस्तानकी औद्योगिक उपज छ गुना और कपासकी उपज तीन गुना बढ़ गई है।

* * *

१०—तुर्कमानस्तान स०स०र०*

क्षेत्रफल	१,८७,००० वर्गमील
जनसंख्या	१२,५४,०००

राजधानी-अश्काबाद, जनसंख्या—१,२६,६००

तुर्कमानस्तानमें मिस्रकी तरह काफ़ी धूप और कम वर्षा होती है। सिंचाईसे ही खेतीका होना संभव है; और पानी सिर्फ़ दक्षिणी हिस्सोंमें ही सुलभ है; जहाँकि पासके पहाड़ोंसे नदियाँ आती हैं। पूर्वमें वक्षु नदीकी उपत्यका भी इसके लिए उपयुक्त है। इन्हीं दक्षिण और पूरबके हिस्सोंमें प्राय: सारी आबादी है। बाक़ी प्रजातंत्रमें कराकुम् नामक स०स०र० की सबसे बड़ी मरुभूमि है, जिसके कुछ हिस्सोंसे चरागाहका काम लिया जा सकता है। तुर्कमानस्तानका क्षेत्रफल उक्राइनके बराबर है। लेकिन जन-संख्यामें यह उसका $\frac{1}{२६}$ ही है।

प्रधान आबादी तुर्कमान लोगोंकी है; जो सारी जनसंख्याकी $\frac{3}{4}$ है। वह अभी थोड़े दिनों तक खानाबदोश चरवाहे थे। शहरोंमें रूसी और

---

* विशेषके लिए देखिये "सोवियत्-मध्य एशिया"

अर्मनी भी बसते हैं और गाँवोंमें कितनी जगह उज़बक, ताजिक और करा-कल्पक दिखाई पड़ते हैं।

तुर्कमानस्तान कपासकी खेती करता है। अच्छी जातिके रिसालेके घोड़ोंको पैदा करता है; और कराकुलाकी प्रसिद्ध भेड़ें पोसता है।

औरतें क़ालीन बुनती हैं। खेतीके अतिरिक्त पिछले चन्द वर्षोंमें भोजन-सम्बन्धी वस्तुओंके कारख़ाने तथा दूसरे हलके उद्योग ज्यादा बढ़े हैं। कास्पियन समुद्रके चेलेकन द्वीप और नेबित्दादके पहाड़ोंमें पेट्रोल निकलने लगा है। कराकुमूसे गन्धक निकाली जाती है; और कराबोगज्-गुलकी खाड़ी (कास्पियन सागर) से मिराबिलाइट (रासायनिक कारख़ानों के कामका एक कच्चा माल) प्राप्त होता है।

तुर्कमानस्तान अपने यहाँ से कपास, रेशम, कालीन, मिट्टीका तेल और फल दूसरे प्रजातंत्रोंको भेजता है।

* * * * * *

१५ दिसंबर (१९३७) को निर्वाचनके परिणामकी प्रसन्नतामें अशका-बाद शहरके कार्लमार्क्स-चौकमें २० हज़ार जनता एकत्र हुई थी। सभाने अपने प्रनिनिधि डिपुटी आन्द्रेयेविच् (जोकि अब संघ-सोवियत्के स्पीकर हैं) के पास पत्र भेजा था—

"प्रिय अन्द्रेयेविच्,

"तुर्कमानियाँकी जनता हमारी पार्टीके विश्वासपात्र पुत्र तथा साथी स्तालिन्के सहचर-सैनिक तुम्हें पार्लियामेंट-सदस्य चुने जानेपर बधाई देती है। एकमतसे तुम्हें अपना वोट देकर तुर्कमान जनताने हमारे यशस्वी बोल्शेविक पार्टी और जनताके प्रिय नेता साथी स्तालिन्के प्रति अपना विश्वास प्रकट किया।

"अश्काबाद नगरके ५० हज़ार निर्वाचकोंकी सभामें तुमने यह महत्त्वपूर्ण वाक्य कहे थे—

'साथियो, मैं अपने निर्वाचकोंसे सिर्फ एक ही बात कहना चाहता हूँ; कि मैं आपके अपने ऊपर विश्वासको महान् सोवियत्-संघकी भलाई और सोवियत् तुर्कमानस्तानकी समृद्धिके लिए काम करके अपनेको योग्य साबित करूँगा। और साथी निर्वाचकों, तुमसे यह भी कहता हूँ; कि मैं ज़रा भी बिना इधर उधर हुए महान् लेनिन्के बताये हुए रास्ते पर साथी स्तालिन् का अनुगमन करते हुए चलूँगा।'

"तुर्कमानियाँ जनता तुम्हारे इन शब्दोंको अपने डिपुटीकी महाप्रतिज्ञा के तौर पर याद रखेगी।·········

"आगे बढ़े हुए रूसी श्रमिक-श्रेणीकी मदद, बोल्शेविक् पार्टीके नेतृत्व, जनताके महान् नेता साथी स्तालिन् और उनके सहकारियोंकी सहायतासे तुर्कमानिया—जो पहले रूसी ज़ारका एक परतंत्र उपनिवेश और बहुत पिछड़ा हुआ देश था—अब एक समृद्ध साम्यवादी देश बन गया है। सोवियत् संघके लोगोंकी अटूट मित्रता और भ्रातृभाव दिन पर दिन बढ़ता और मज़बूत होता जा रहा है। ज़ारशाहीकी विनाशपूर्ण नीति—एक जातिको दूसरी जातिसे लड़ाना—हमेशाके लिए नष्टकी जा चुकी है। जातियोंमें ऊँच-नीचके भाव और पारस्परिक वैमनस्य भूतकालकी बात हो गई है। तुर्कमान जनताने अपने कल-कारखानों और कल्खोज़्की खेतीमें स्तखानोफ़्-आन्दोलनको बड़े ज़ोरसे आगे बढ़ाया है। उसका अपनी बोल्शेविक पार्टी और महान् साम्यवादी मातृभूमिके प्रति असीम प्रेम है।

"प्रिय अन्द्रेयेविच्, हम प्रतिज्ञा करते हैं; कि हम हर तरहसे अपनी राजनैतिक जागरूकताको और आगे बढ़ायेंगे। लेनिन्-स्तालिन्की महान् पार्टीके हम सच्चे अनुयायी होंगे। स०स०स०र० की जनताके लोगोंके पारस्परिक भ्रातृभावको सुदृढ़ करेंगे; और तुर्कमानियाके कल-कारखानों और कलखोज़ी खेतीमें स्तखानोफ़्-आन्दोलनको और भी आगे बढ़ायेंगे।"

"प्रतिज्ञा करते हैं कि हम हाथ बन्द कर बैठेंगे नहीं, बल्कि अपनी साम्यवादी जन्मभूमिके हितके लिए काम करेंगे; और अपनी महान् सोवियत्-भूमिकी शक्तिको समुन्नत और सुदृढ़ करेंगे।"

***   ***

११—ताजिकस्तान[1]

क्षेत्रफल	५५,००,०००
जनसंख्या	१४,८५,०००

राजधानी-स्तालिनाबाद, जनसंख्या—१,००,०००

यह १६ संघ-प्रजातंत्रोंमें एक है, और पामीरकी ऊँची पर्वतमालाओंमें स्थित है; इसी लिए सारी ज़मीन ऊँची और पहाड़ी हैं, जहाँकी कोई भी उपत्यका साढ़े तीन हज़ार मीतर (११,३५० फीट) से कम ऊँची नहीं है। पामीर हिमालय पर्वतमाला ही का पश्चिमी छोर है; इस लिए ताजिकस्तान अपने प्राकृतिक दृश्योंमें बहुत कुछ ऊपरी हिमालयसे मिलता है। भारतसे सबसे नज़दीकका सोवियत् भू-भाग ताजिकस्तान ही है। भारत और ताजिकस्तानकी सीमा थोड़ी दूर तक उत्तरकी ओर मिलती है, बाक़ी के बीचमें अफ़ग़ानिस्तानकी एक पतली चिट् डाल दी गई है जो कहीं कहीं सात ही मील चौड़ी है। ताजिकस्तानमें सोवियत्की तैयारियोंको ही देख कर अंग्रेज़ी सरकारने १९३५ ई० गिल्गित्का इलाक़ा कश्मीर-राज्य से लेकर अपने हाथमें कर लिया; और वहाँ हवाई अड्डा और फौजी क़िलाबन्दीका इन्तज़ाम किया गया। ताजिकस्तानकी पूर्वी सीमा चीनी-तुर्किस्तान (सिङ्-क्याङ्) से मिलती है।

स०स०स०र० का सर्वोच्च पर्वतशिखर—स्तालिन्गिरि (७४९५ मीतर[2] =२४,३५९ फीट) और लेनिन्गिरि (७१२७ मीतर=२३,१९३ फीट) यहीं हैं।

---

१. देखो "सोवियत् मध्य-एसिया"

२. १ मीतर=तीन फ़ीट तीन इंचके क़रीब।

वक्षुगंगा (आमू-दरिया) और उसकी बहुतसी शाखाएँ हिसार और वक्ष आदि ताजिकस्तानके हिमाच्छादित पर्वतोंसे ही निकलती हैं।

ताजिकस्तानका पश्चिम वाला निचला भाग खेतीके लिए बहुत उपयोगी है; और यहाँ अच्छी जातिकी मिस्री कपास होती है। फ़र्गानाकी उपत्यकाका ऊपरी भाग (लेनिनाबादके करीब) ताजिकस्तान में है। ताजिकस्तानका दक्षिणी हिस्सा कुछ गर्म और सूखा है; और वहाँ नहरकी सिंचाईकी ज़रूरत पड़ती है। पच्छिमी और उत्तरी ढलानोंमें पानी ज्यादा बरसता है और बिना सिंचाईके ही बहुतसी जमीनमें खेती की जाती है।

ताजिकस्तानकी आबादी का $\frac{3}{4}$ ताजिक् लोगोंका है। इनकी भाषा फारसीकी एक बोली है; जिसे कि क्रान्तिसे पहले लिखने पढ़नेमें नहीं उपयुक्त किया जाता था। अब वह साहित्य और शिक्षाके माध्यमकी भाषा है; और रूसी लिपिमें लिखी जाती है। "ताजिकस्तान-सुर्ख़" राजधानी स्तालिनाबादसे निकलने वाला दैनिक पत्र है। ताजिक बड़ी बहादुर कौम है। सातवीं आठवीं शताब्दीमें इन्होंने अरबोंको नाकों चने चबवाये। मध्य-एसियामें जिनको काबूमें करनेमें अरबोंको सबसे ज्यादा दिक्कत हुई, वह यही ताजिक थे। ताजिकस्तानके अलावा १५ लाखके करीब ताज़िक अफ़ग़ानिस्तानमें बसते हैं; जिनमेंसे बहुत अधिक तो ताजिकस्तानकी सरहदके करीबके अफ़गानी इलाकोंमें रहते हैं। ताजिक् इन्दो-यूरोपीय वंशके होनेसे शकल सूरतमें रूसियों से ज्यादा मिलते हैं; इसी लिए रूसियोंके संग शादी-विवाह करने और पश्चिमी रीति-रिवाज अपनानेमें यह बहुत आगे बढ़े हुए हैं। ताजिकस्तानकी नदियाँ तेज़ और पहाड़ी होनेके कारण सस्ती बिजली पैदा करने के लिए बहुत उपयुक्त हैं; और सोवियत् सरकार उनसे खूब फ़ायदा उठा रही है।

ताजिक्के बाद इस प्रजातंत्रमें बसने वाली दूसरी संख्यामें बड़ी जाति उज़बक है। इनकी बस्ती अधिकतर पच्छिम और उत्तर-पच्छिममें है। पच्छिमी पामीरमें एक और ईरानी कौम गलचा बसती है, जो भाषा और आकारमें ताजिकोंसे बहुत मिलती जुलती है। ऊपरके ऊँचे पहाड़ी भागों पर किर्गिज़ लोग बसते हैं, जोकि कुछ समय पहले तक खानाबदोश चरवाहे थे। पामीर ख़ासमें गोर्नो-बदख्शाँ नामक एक स्वायत्त-ज़िला है, जिसकी जनसंख्या ४० हज़ार है। क्रान्तिके बाद ताजिकस्तान ने बहुत तरक्की की है। कुछ साल हुए तिर्मिजसे एक रेलवे-लाइन राजधानी स्तालिनाबाद (भूतपूर्व दुशाम्बे) तक ले जाई गई। दुर्गम पहाड़ों पर बहुत सी मोटर की सड़कें बनाई गई हैं। स्तालिनाबाद-ताशकन्द, ओश्-खोरोग् (गोर्नो बदख्शाँकी राजधानी) की सड़कें उन्हींमें से हैं। ताजिकस्तानमें कपासके अलावा ऊन, और रेशम भी बहुत पैदा होता है। पेट्रोल और राँगे आदि की खानें निकली हैं; जिनमें काम हो रहा है।

१२—करेलो-फिन-प्रजातंत्र

क्षेत्रफल	७६,००० वर्गमील
जनसंख्या	४,६६,००० (१६३६)

राजधानी-पेत्रोज़ावोद्स्क, जनसंख्या ७०,०००

यह प्रजातंत्र यूरोपीय रूसके उत्तर-पश्चिममें श्वेत-सागर और बाल्तिक के बीचमें फिनलैंडकी सीमापर है। करेलिया झीलों और संगखारेका देश है। करोलियामें झीलोंकी संख्या ३६००० से अधिक है और १५% भूमि उन्हींसे ढँकी है। यूरोपकी दो सबसे बड़ी झीलें लदोगा और ओनेगा यहीं हैं। करेलियाकी झीलोंको आपसमें और पासके श्वेत-समुद्र और फिनलैंड-खाड़ीके साथ जल-प्रपातों वाली अनेकों नदियाँ मिलाती हैं। इन नदियों में १० लाख किलोवोट बिजली पैदा करनेकी शक्ति है। प्रजातंत्रका दो तिहाई भाग देवदारुके घने बनोंसे ढका है। दक्षिणमें करेलियाका प्रसिद्ध

भोजपत्र-वृक्ष मिलता है जिससे घरके सुन्दर सामान बनाये जाते हैं। यहाँकी भूमिमें संगखारा, बलुआ पत्थर, संगमर्मर, अबरक, लोहा, तीतनो-मग्नेतित्, अलोह धातु, कच्चा कोयला (पीट) और और भी बहुतसे खनिज पदार्थ हैं।

ज़ारशाही जमानेमें शोषण और पीड़नसे परास्त करेली लोग दलदलों और घने जंगलोंकी तरफ भागने को मजबूर हुए। उनकी जीविकाके साधन थे—लकड़ी काटना, मछुआही, शिकार और कुछ छोटी-छोटी क्यारियोंमें अनाज पैदा कर लेना। उनमें हद दर्जेकी गरीबी थी और लोग राई (घटिया गेहूँ) के आटेको देवदारुकी छाल और भूसेमें मिलाकर खाते थे। जिस जनताने "कलवेला" जैसे अमर काव्यकी रचना की, उसकी भाषाकी कोई लिपि न थी। करेलीय भाषा निषिद्ध सी थी। गरीब किसानोंके लिए रूसी स्कूल भी वर्जित थे। उद्योग-धंधेके नामपर पेत्रोज़ावोद्स्कमें एक छोटासा लोहा पिघलानेका कारखाना था, जिसकी स्थापना प्रथम पीतरके समयमें हुई थी। करेलियामें सड़कोंका नाम नहीं था। सिर्फ जाड़ेमें सब जगह घूमा जा सकता था, क्योंकि उस वक्त वेगवती नदियाँ और दलदल जम जाते थे। प्रथम विश्वयुद्धके समयमें ही प्रथम रेलवे—मूरमान्स्क रेलवे—करेलियामें बनाई गई।

लेकिन सोवियत् क्रान्तिके बाद देशकी शक्ल बदल गई। रूसी जनताकी सहायतासे करेलियनोंने अपना प्रजातंत्र कायम किया। १९२३ में करेलीय-स्वायत्त-प्रजातंत्र स्थापित हुआ। जबकि सोवियतने फिनलैंड और उसके पृष्ठपोषकोंके मनसूबेको बेकार करनेके लिये फिनलैंडसे लड़ाई छेड़ी और अंतमें फिनलैंडको हार खा अपनी कुछ भूमिको भी गवाँ संधि करनेके लिए मजबूर होना पड़ा। उत्तर-पश्चिमकी नई भूमिको भी मिला मार्च १९४० में करेलो-फिन सोवियत् समाजवादी प्रजातंत्र बना। यह प्रजातंत्र उन सोलह प्रजातंत्रोंमें है, जिन्हें अधिकार है संघसे अलग होने, अपनी सेना और विदेशसे संबंध रखनेका।

करेलियाकी सबसे भारी संपत्ति काष्ठ है। सोवियत्-सत्ताकी स्थापनाके बाद काष्ठका उद्योग बहुत बढ़ा और १६३६ में वह बढ़कर १ करोड़ ४० लाख घनगज हो गया—१६१३ से अठगुना है। पुराने हाथके कुल्हाड़े और आरे बिदा हुए और उनकी जगह बिजलीका आरा आया, लकड़ी खींचनेके लिए ट्रैक्टर पहुँचे। अब अच्छी सड़कें हैं, जो कि घने जंगलोंके भीतर तक जालेकी तरह बिछी हैं। जगह-जगह कमकरोंकी बस्तियाँ बसी हैं, जहाँ बड़े बड़े घर, पंचायती रसोईखाना, अस्पताल और स्कूल हैं। सभी जगह बिजलीकी रोशनी, टेलीफोन और रेडियो है। श्वेत-समुद्रसे मिलने वाली नदियोंके मुहाने पर बहुतसी आरा-मिलें हैं, जो ज़ार के जमाने से पंचगुनी हो गई हैं। यह प्रजातंत्र सोवियत् संघमें सेलुलोस और कागजके उद्योगका सबसे बड़ा केन्द्र है।

सङ्गखारा, सङ्गमर्मर, अबरख आदिकी खानें भी प्रजातन्त्रमें महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं। मशीन और जहाज बनानेके बड़े कारखाने भी हैं। कितने ही बड़े बड़े पन-बिजली स्टेशन हैं, जो कारखानों और घरोंके लिए बिजली देते हैं। झीलों और श्वेत-सागरमें मछलियाँ भरी हुई हैं, और मछुहाईसे प्रजातन्त्रको काफी आमदनी है।

सोवियत्-कालमें प्रजातन्त्रके दक्षिणी भागमें अधिकतर खेतीका काम बहुत आगे बढ़ा है। यद्यपि जौ, बकला, राई और गेहूँकी भी फसल होती है, लेकिन अधिकतर आलू, गोभी और तरकारियोंपर जोर दिया जाता है। क्रांतिके पहलेकी अपेक्षा अब दसगुना फसल अधिक होती है। बहुतसे दलदलोंको सुखाकर, जंगलोंको काटकर खेत तैयार किये गये हैं। पशु-पालनमें अधिकतर दूधवाले जानवर पाले जाते हैं। उत्तरमें बारहसिंगोंके पालनेका रिवाज है।

आज इस प्रजातन्त्रमें यातायातके साधन बहुत हैं। इसके भीतरसे कितनी ही रेल-लाइनें और नहरें निकली हैं। १६३३ में श्वेत-समुद्र-

बाल्तिक सागर नहर बनी, जो १४० मील लम्बी है। सइमा-नहर फिन-लैंडकी खाड़ीको सइमा झीलसे मिलाती है।

करेलियाकी जनसंख्या बड़ी तेज़ीसे बढ़ी है। और १९२० से १९३९ के बीच दुगुनी हो गई। सोवियत-शासनके पहले रूसमें शिक्षितोंकी संख्या ४४% से अधिक नहीं थी, और करेलीय लोगोंमें तो मुश्किलसे १३% लोग लिख पढ़ सकते थे। अब वहाँ शिक्षा प्रायः शत-प्रतिशत है—१९३९ में ९५% नरनारी लिख-पढ़ सकते थे। यहाँ १३ टेक्निकल स्कूल और ३ उच्च शिक्षणालय हैं। करेलीय-कला पुनरुज्जीवित हुई है। नये कवि, कलाकार और नाट्यकार पैदा हुए हैं। कई थियेटर बने हैं। सैकड़ों सार्वजनिक पुस्तकालय, वाचनालय और क्लब हैं।

प्रजातन्त्रके दक्षिणमें युरपकी दो सबसे बड़ी झीलें हैं—लदोगा जिसका क्षेत्रफल ७ हजार बर्गमील और ओनेगा करीब ४ हजार बर्ग मील है। बाल्तिक-श्वेत समुद्र-नहर श्वेत-समुद्रसे ओनेगामें जाती है। ओनेगा का सम्बन्ध स्विर नदी द्वारा लदोगासे है। लदोगाका पानी नेवा होकर लेनिनग्राद होते फिनलैण्डकी खाड़ीमें जाता है। इसी रास्ते बाल्तिकसे श्वेत-समुद्रमें जहाज़ोंका जाना-आना होता है। ओनेगाके दक्षिण तटसे वोलखोफ़ नदीमें जहाज जा सकते हैं। वहाँसे नहरों द्वारा उत्तरी द्विना, वोल्गा और द्नियेपरका सम्बन्ध है।

१३—मोल्दाविया प्रजातंत्र

क्षेत्रफल	१३००० बर्गमील
जनसंख्या	२२०००००
राजधानी—किसिनेफ़्, जनसंख्या	११००००

मोल्दाविया प्रजातन्त्र सोवियत-सङ्घके दक्षिण-पश्चिम सीमान्त पर रूमानियासे मिला हुआ है। इसकी चिपटी समतल भूमि प्रुथसे द्नियेस्तर नदी और उससे जरा आगे तक फैली हुई है। प्रजातन्त्रके बिचले भागमें

ही आके भोजपत्र आदिसे ढँकी छोटी पहाड़ियाँ हैं। गृह-निर्माणकी सामग्री चूना पत्थर, ईंटकी मट्टी और काँच बनानेका बालू यहाँ बहुत है।

प्रथम विश्वयुद्धके अंत होनेसे पहले मोल्दाविया रूसमें थी, किन्तु फिर रूमानियाने जबर्दस्ती इसे द्नियेस्तर तक दखल करके लोगोंको रुमानियन बनाना शुरू किया। मोलदावियाकी आर्थिक तथा सांस्कृतिक अवस्था गिरने लगी। अंगूर, फल, तम्बाकू और पशुपालन सबमें कमी हुई। औद्योगिक उपज नीचे गिरी और कारखानोंके मजदूरोंकी संख्या आधी रह गई। अपने अधिकारके समय रुमानियनोंने तीस हजार मोल्दाविया वालोंका सफाया किया। तीन लाख आदमी देश छोड़ कर सोवियत् या दूसरे देशोंको भाग गये? मोल्दावियाका रूमानियनोंके हाथमें गये भाग बेसराबियाकी हालत बहुत दयनीय हो गई। मृत्युकी संख्या अधिक हो गई, जिसमें हद दर्जेकी गरीबी कारण थी। किसानोंके बच्चे साठ फी सदी मर जाते थे।

किसानोंमें तिहत्तर सैकड़ा और सारे देशमें साठ सैकड़ा आदमी निरक्षर थे। मोल्दाविया भाषा और संस्कृति पर प्रतिबन्ध थे। किन्तु द्नियेस्तर के दूसरे पार सोवियत् सीमाके भीतर अवस्था दूसरी ही थी। वहाँ उस समय मोल्दाविया स्वायत्त प्रजातन्त्र था। कृषि और उद्योग धंधे उन्नति पर थे। मोल्दाविया भाषा और संस्कृति का विकास हो रहा था।

जून १९४० में बेसाराबियाको रुमानियाने सोवियत्को लौटा दिया। २ अगस्त १९४० को सोवियत पार्लियामेंटने मोल्दाविया स्वायत्त प्रजातन्त्रके साथ बेसराबियाको मिलाकर उसे सङ्घ-प्रजातन्त्रोंका दर्जा दिया।

प्रजातन्त्रकी सत्तर सैकड़ा जनता मोल्दावीय है और बाकी रूसी, उक्रइनी और यहूदी। अब मोल्दावीय भाषा और संस्कृतिको स्वतन्त्र विकासका मौका मिला। स्कूलों और सांस्कृतिक संस्थाओंकी संख्या

तेजीसे बढ़ी। एक कृषि और दो ट्रेनिंग कालेज स्थापित हुए। पाँच हजार विद्यार्थी टेकनिकल स्कूलोंमें पढ़ने लगे। जातीय नाट्यशाला स्थापित हुई। मोल्दावीय और दूसरी भाषाओंमें पत्र-पत्रिकायें छपने लगीं। अस्पताल, डिस्पेन्सरी, प्रसूतिगृह, शिशुभवन और बालोद्यान स्थापित हुए।

बे खेत और कम खेतवाले किसानोंको जमीन मिली। बेसराबियामें पाँच लाख एकड़ जमीन इस प्रकार बाँटी गई। किसान कलखोज बनाकर खेती करने लगे। प्रुथ तथा द्नियेस्तर नदियोंके बीचकी उर्वर काली मिट्टीमें ट्रैक्टर और कम्बाइन चलने लगे। मोल्दावियाने अंगूरों और मेवोंके नये बाग लगाये गये, जिनमें खाने और शराबके अंगूर, खूबानी, सेब, नासपाती, नाख, अखरोट, ज्यादा थे। अंगूरोंका बाग़ बढ़कर दो लाख साठ हजार एकड़ हो गया। गेहूँ, जौ और मक्केकी खेती भी बहुत बढ़ गई। दूसरी फसलें थीं चुकन्दर, तंबाकू और सूर्यमुखी। गाय-सूअर और मुर्गी पालनेमें तरक्की हुई। द्नियेस्तर और प्रुथ में मछुआई होने लगी।

उद्योग-धंधा अधिकतर था अंगूरी मदिरा, मांस पैक करना, चर्बी और तेल, मकरोनी बनाना, फल और तरकारीका सिझाना टीनमें बंद करना, तम्बाकू कारखाना, मकानके लिये ईंट और टाईल बनाना आदि। बर्षोंसे बेकार पड़ी तेल-शोधनीको सोवियत् सरकारने फिरसे चालू किया। धातु-उद्योग स्थापित करनेकी भी तैयारी हो रही थी। किन्तु सोवियत्-सरकारको एक ही सालका समय काम करनेको मिला और जून १९४१ में जर्मन फासिस्तोंने आक्रमण कर दिया। युद्ध-कालमें पहलेका किया कराया भी चौपट हो गया, परन्तु अब फिर निर्माणका कार्य आरंभ हो गया है। वर्त्तमान पंचवार्षिक योजना मोल्दावियाके सिर्फ घावोंको ही नहीं भर देगी, उसे बल्कि और भी आगे बढ़ायेगी।

१४—लिथुवानिया प्रजातन्त्र

क्षेत्रफल	२४००० वर्ग मील
जनसंख्या	२८,८०,०००
राजधानी—विलेनुस् जन संख्या	२,५००००

लिथुवानिया प्रजातंत्र बाल्तिक समुद्रके तटपर अवस्थित है। भूमि चौरस है। जगह जगह झीलें और नदियाँ हैं। जमीन उर्वर है और काफी जङ्गलोंसे ढंकी है। कितनी ही कच्चे कोयले (पीट) की खाने हैं।

लिथुवानिया वह यूरोपीय जाति है जिसने सबसे पीछे ईसाई धर्म स्वीकार किया। पन्द्रहवीं सदीमें भी ये लोग उन देवताओंको पूजते थे, जो हमारे वैदिक देवताओंके सगे सम्बन्धी थे। भाषा का रूप भी बहुत पुराना है। संस्कृतकी तरह 'अस्' या 'उस्' प्रत्यय लगाये बिना नाम नहीं लिखा जा सकता। यद्यपि वह रूसीके इतना संस्कृतके नजदीक नहीं है, किन्तु उसके बाद इसीका नम्बर आता है। इस भाषाने प्राचीन शब्द कोषको भी बहुत सुरक्षित रक्खा है, इसीलिये संस्कृत भाषा तत्त्वका अध्ययन लिथुवानियन भाषाके बिना पूर्ण नहीं हो सकता।

सदियों तक लिथुवानियन लोगोंने रूसियोंसे मिलकर जर्मनोंका मुकाबला किया, फिर रूसी और लिथुवानियन जनताने साथ साथ जारशाहीके खिलाफ संघर्ष किया। लेकिन १६१६ में उसे तोड़कर रूससे अलग कर दिया गया और बीस साल बाद १६४० में लिथुवानी जनताने अपने प्रतिगामी शासकोंको निकाल फेंक सोवियत् शासनव्यवस्थाको स्वीकार किया। २१ जुलाई १६४० को वयस्क वोटोंसे निर्वाचित लिथुवानियाकी पार्लामेंटने देशमें सोवियत् प्रजातन्त्रकी घोषणा की। ३ अगस्त १६४० को वह सोवियत संघके सोलह संघ-प्रजातन्त्रोंमें अन्यतम बनकर सम्मिलित हुई।

प्रजातंत्रमें ८५% जनसंख्या लिथुवानियन और बाकी रूसी, पोल,

बेलोरूसी और यहूदी हैं। बाल्तिकके सोवियत प्रजातन्त्रोंमें लिथुवानिया कृषिप्रधान देश है। यहांके लोगोंकी जीविकाके साधन हैं गाय और सूअर पालना; राई-गेहूँ, बकला-जौ, चुकन्दर और फ्लेक्सकी खेती। पशुओंको खिलानेके लिये चारेकी भी खेती बहुत होती है। कल कारखाने यहाँ अधिकतर कृषिकी उपजसे सम्बन्ध रखते हैं—मक्खन, सुअर और मास, आटा आदिके कारखाने। लड़ाईसे पहले चीनीका कारखाना खोला गया था। कपड़ा, चमड़ा और तम्बाकूके भी कारखाने हैं। आरा-मिलके तख्तों का उद्योग भी लिथुआनियामें महत्त्व रखता है। अंबर इतिहासके आरम्भ से लिथुवानियाकी पराय वस्तु रही है।

सोवियत् संघमें सम्मिलित होनेके बाद औद्योगिक विकासका बहुत बड़ा आयोजन किया गया और एक सालके भीतर ही कारखानेके मजदूरों की संख्या तीस प्रतिशत बढ़ी। भूमिका राष्ट्रीय करण हुआ। चौदह लाख एकड़ जमीन बे खेत और कमखेत वाले किसानोंको मिले। लिथु-वानियाके इतिहासमें पहली बार ट्रैक्टर पहुँचे। हर किसानको पचत्तर एकड़ तक जमीन रखनेका अधिकार दिया गया। शिक्षा संस्कृतिको प्रोत्साहन मिला। स्वास्थ्य-रक्षा का बड़े पैमाने पर प्रबन्ध हुआ। विलेनुस् और काउनुस् युनिवर्सिटियोंका और विस्तार हुआ। स्कूल, बालोद्यान, शिशुशालायें बड़ी संख्यामें स्थापित हुईं।

लेकिन सालभर भी नहीं बीतने पाया, कि जर्मन फासिस्तोंने हमला कर दिया। युद्धमें प्रजातंत्रको बड़ी क्षति पहुँची। लेकिन अब फिर पुनर्निर्माण और नवनिर्माण तेजीसे होने लगा है।

१५—लतूविया प्रजातन्त्र

क्षेत्र-फल	२५,००० वर्गमील
जनसंख्या	१६,७१०००
राजधानी—रीगा, जनसंख्या	३,८५,०००

लत्विया प्रजातन्त्र बालतिक समुद्र और रीगाकी खाड़ीके किनारे हरी भरी पहाड़ियों गहरी नदी-उपत्यकाओं और झीलोंका देश है। प्राकृतिक सम्पत्ति है—वन काष्ठ जिससे सत्ताईस प्रतिशत जमीन ढँकी है। खेतीकी जमीनके लिये सिंचाई और जल-प्रणालीकी आवश्यकता है; नदियोंमें ५०,००,००० किलोवाट बिजलीकी शक्ति है। कच्चे कोयले (पीट) की निधि तीन अरब टन कूती गयी है। चूना-पत्थर खड़िया-मिट्टी, जिप्सम् और बहुतसे धातु मिश्रित चश्में हैं।

जनसंख्यामें ५६ सैकड़ा लेत, १६ सैकड़ा उन्हींके समीपी लतगाली हैं। बाकी हैं रूसी, बेलोरूसी, पोल, लिथुवानी और यहूदी।

लतवियाका सम्बन्ध शताब्दियोंसे रूसियोंके साथ रहा है। प्रथम विश्व-युद्धसे लिथुवानियाकी तरह बीस साल (१९१९-३९) अलग रहा। इस बीच में उद्योग धंधेका ह्रास हुआ। कितने ही बड़े-बड़े कारखाने बिलकुल बंद हो गये या उन्होंने उत्पादन कम कर दिया। यह उस समयकी बात है, जब कि सोवियत संघमें पञ्चवार्षिक योजनायें कल-कारखानोंको तेजीसे आगे बढ़ा रही थीं।

२१ जुलाई १९४० को जननिर्वाचित पार्लियामेण्टने लत्वियाको सोवियत्-प्रजातन्त्र घोषित किया, और उसी साल ५ अगस्तको वह सोवियत् संघमें सम्मिलित हुई।

यद्यपि लत्विया अधिकतर कृषिप्रधान देश है, लेकिन बाल्तिक प्रजा तन्त्रोंमें सबसे अधिक कल-कारखाने यहीं थे। बिजली, इंजिनियरिंग, रेलवे कारखाना, लोह-फौलाद कारखाना यहाँ चल रहे थे। रबरकी चीजें रंग, खनिज खाद्य, मोमबत्ती, और काँचके बर्तनोंके भी कारखाने थे। आहारकी चीजोंमें मक्खन, तीसी, तेल, पनीर, मांस, खाद्य, आटा, चीनी, शराब आदिके उद्योग हैं। बाल्तिक समुद्र और रीगा खाड़ी में मछली भी बहुत मारी जाती है। आरा-मिल, कागजमिल, दियासलाई-कारखाना और सीमेण्ट-उद्योग हैं। पनबिजलीके अनेकों

स्टेशन हैं, जिनमें रीगा पावर स्टेशनकी शक्ति ३५,००० किलोवाट है। पश्चिमी द्विना के पन-बिजली स्टेशनकी शक्ति ७५०००० किलोवात है।

कृषि, डेरी (दुग्धव्यवसाय) और मांस यहाँकी प्रधान उपज है। डेरीके पशुओंके लिये सत्ताईस सैकड़ा खेतांमें चारा पैदा किया जाता है। अनाजोंमें गेहूँ, जौ, राई और बकला होता है। फ्लेक्स और चीनीका चुकन्दर भी खास महत्व रखता है।

सोवियत्-संघमें सम्मिलित होनेके बाद औद्योगिक विकासकी बड़ी योजना बनी। पहलेके कारखाने बढ़ाये और कितने ही नये कारखाने खड़े किये गये। बेकारी खतम हो गई। जमीन सार्वजनिक सम्पत्ति बना दी गई। पचहत्तर हजार किसानोंने पचहत्तर एकड़ तक जमीन पाई। खेतोंमें ट्रैक्टर और नई मशीनें चलने लगीं। स्कूलोंमें पचास सैकड़ा लड़के बढ़े। युनिवर्सिटी, कृषि कालेज, कला प्रतिष्ठान और संगीत विद्यालय बढ़ाये गये। साल भर पूरा होते ही जर्मनी ने आक्रमण करके ध्वंस लीला शुरू कर दी।

लड़ाईके बाद पुनर्निर्माण और नवनिर्माण बड़े जोरसे आरम्भ हो गये हैं। नई पंचवार्षिक योजनाकी समाप्तिके साथ लतविया भी आर्थिक विकासमें सोवियत्के दूसरे प्रजातन्त्रोंमें आ जायेगा।

१६—एस्तोनिया प्रजातंत्र

क्षेत्रफल	१८,००० वर्गमील
जनसंख्या	११,३१,०००
राजधानी—तल्लिन्, जनसंख्या	१,४७,०००

एस्तोनिया प्रजातंत्र बाल्तिक तटपर फिनलैंड और रीगाकी खाड़ियों के बीचमें पड़ता है, जिसमें पासके कितने ही द्वीप भी सम्मिलित हैं। एस्तोनियाकी समतलभूमिमें छोटे छोटे पहाड़ और नदीकी उपत्यकायें हैं।

आबोहवा नम और नरम है, जिससे कई तरहके अनाज आसानीसे पैदा किये जा सकते हैं, लेकिन, उसके लिये खाद और सूखी जमीनकी जरूरत है। प्रजातंत्रकी भूमिके बीस प्रतिशत भाग पर देवदारुका जंगल है। खनिज पदार्थ हैं—शेल् (ईंधन) जो पाँच अरब टन कूता गया है; कच्चा कोयला, फासफोरस और नीली मिट्टी आदि।

एस्तोनियाके लोग लतवियाकी तरह भाषाकी दृष्टिसे लिथुवानियासे सम्बन्ध नहीं रखते, बल्कि यह फिन लोगोंके सगे-सम्बधी हैं, (फिन भाषाका दूरका सम्बन्ध द्रविड़-भाषा परिवारसे पड़ता है)।

प्रथम महायुद्धके अन्ततक एस्तोनिया रूसके अन्तर्गत था। अलग रहते समय यहाँके उद्योग-धंधोंका ह्रास हुआ। जून १९४० में जनताकी पार्लियामेंटने अपने यहाँ सोवियत्-प्रजातत्रकी घोषणा की और ६ अगस्त १९४० को एस्तोनिया सोवियत प्रजातंत्र संघमें संमिलित हुआ।

उद्योग-धंधा और कृषि तेजीसे बढ़ने लगी। पहले के कारखानोंका विस्तार किया गया। क्रीनहोम और बाल्तिक कपड़ा मिलके बड़े बड़े कारखानोंके अतिरिक्त बारह और कपड़ेकी मिलें बनीं। ज़हाज-कारखाना रेलडब्बा-कारखाना, सीमेंट कारखाना, आरा-मिल और कागज़ मिल, दियासलाई और लकड़ीके करखाने सभी बढ़े और कितने ही नये बने। चर्बी, शूकर-माँस, और आटाके उद्योगका विकास बहुत अधिक हुआ। बाल्तिकमें मछुआई भी होती। खानोंसे सोलह लाख टन प्रतिवर्ष शेल निकाल कर पेट्रोल और लुब्रिकेट वाला तेल बनाया जाता। एस्तोनिया का तेल-शोधन उद्योग अपनी जातका सबसे बड़ा उद्योग है—दुनिया भरमें अनुपम। कच्चा कोयला निकाला जाता और कुछ कुछ नदियोंकी शक्तिका भी काम लिया जाने लगा। एस्तोनियामें तीस सैकड़ा लोग गाँव में रहते हैं। प्रजातन्त्रमें अट्ठासी सैकड़ा एस्तोनीय और बारह सैकड़ा रूसी बसते हैं। यहाँके सत्तर सैकड़ा निवासियोंकी जीविका खेती, डेरी और मांसोत्पादन है। पशुओंकेलिये चारा बहुत बोना पड़ता है। गेहूँ, राई,

बकला आदि अनाजकी खेतीका स्थान गौण है। कुछ फ्लेक्स (एक प्रकारका पाट)की खेती होती है और उससे माल तैयार करनेके कारखाने भी हैं। व्यापारिक जहाजका यातायात एस्तोनियाकी आमदनीमें विशेष महत्त्व रखता है। सोवियत सङ्घमें सम्मिलित होनेके बाद एस्तोनियाका उद्योग-धंधा खूब बढ़ा और एक साल भरके अन्दर ही राष्ट्रीय आयमें उद्योग का अंश तिरसठ सैकड़ा हो गया। बेकारी बिलकुल खतम हो गई। जमीन का राष्ट्रीयकरण हुआ और हजारों किसानों ने पछत्तर एकड़ ज़मीनें पाईं। खेतोंमें ट्रैक्टर आ गये। स्कूलोंमें छात्रोंकी संख्या तैंतीस प्रतिशत बढ़ गई।

* * *

(उत्सव)—अस्तोनियाका आनन्दी जीवन फिर लौट आया। युद्ध की समाप्तिके बाद वाले दो सालोंमें पुनर्निर्माण और नवनिर्माण जोरोंसे हुआ है। नरनारियोंके चेहरेपर हँसीकी रेखा नाचने लगी हैं। सात सौ साल पहले अस्तोनियाके राष्ट्रीय वीर लेम्बितू ने आक्रमणकारी जर्मनोंके खिलाफ संघर्ष करने में जनताका नेतृत्व किया था। तबसे जूनमें लोग उस ऐतिहासिक संघर्षके उपलक्ष्में महोत्सव मनाते आरहे हैं। १९४६का महोत्सव २९ जूनके रविवारको समाप्त हुआ। दो दिनों तक २५,००० आदमी सामूहिक गायनमें मग्न रहे। अंतिम दिन १५०० अभिनेत्रियों और अभिनेताओंने जातीय संघर्षका अभिनय किया।

२५००० गायक-गायिकाओंको गली-कूचोंसे लाकर खड़ा नहीं कर दिया गया। कई महीने पहलेसे संगीत विद्यापीठके अध्यापक गाँवों, नगरों, और द्वीपोंकी बस्तियोंमें इसके लिये खाक़ छानते फिरे। लाखोंके गान-वाद्य सुन-समझकर २५०००को चुना।

राजधानी तल्लिन्की एक छोरपर गायक-चौरस्ते पर एक प्रकांड रंग-मंच बनाया गया। नगरके सारे होटल गायकोंके लिये रिज़र्व थे, फिर भी

जगहका टोटा रहा। तल्लिनके हजारों कुटुम्बोंने मेहमानों को अपने अपने यहाँ टिकाया। नगरके भोजनालयोंमें कितने ही घंटे अभ्यागतोंके लिये नियत थे।

उत्सवका श्रीगणेश जलूससे हुआ। गायकीय गायिकाएँ अपने जात-परिधानमें फूलोंसे अलंकृत सड़कोंपर गाते-बजाते-नाचते सारा शहर घूमते रहे। नागरिक फुट-पाथों पर खड़े खड़े निर्निमेष तमाशा देखते रहे। जुलूसमें एक लाख नागरिक और देहाती जनता शामिल हुई। उत्सव में संघ-प्रजातन्त्रके मंत्री, पार्लमेंट और कमूनिस्त पार्टीके सदस्य ही नहीं बल्कि मास्को, लेनिनग्राद, गुर्ज़ी, लत्विया, लिथुवानिया, मोल्दाविया, बेलोरूसिया, करेलिया आदि आदिसे आये मेहमान भी सम्मिलित थे। बाजे की ध्वनि पर उत्सवके झंडे बुलन्द किये गये। महामन्त्री ई० प्यल ने संक्षिप्त भाषण दिया। फिर आर्चेस्ट्राके बाजोंके साथ गायकोंने सोवियत् संघ और अस्तोनिया प्रजातंत्रके राष्ट्रीय गीत गाये। प्रसिद्ध एस्तोनीय संगीतकार गस्ताव एर्नेसाक्स् जातीय वेष-भूषामें संगीतका नेतृत्व कर रहे थे। प्रजातन्त्रके सारे रेडियो स्टेशन महोत्सवकी बातें ब्राडकाष्ट करते रहे। संगीतके कई तरहके प्रोग्राम थे। २५ हजार गायकोंके एक साथ गाने का एक प्रोग्राम, फिर १२ हजार गायकों का अलग प्रोग्राम, फिर स्त्रियों और बच्चोंके अलग अलग संगायन। इसी तरह गाँवों और शहरोंके लोगों के भी संगायन हुए। पहले दिनके प्रोग्राममें ४० गीतें गाई गयीं, जिनमें कुछ प्राचीन और कुछ नवीन थीं। कितनी ही गायन-मण्डलियोंने अपने अपने जिलेके अच्छे अच्छे गीतोंको गाया। दूसरे दिन भी गायनका प्रोग्राम जारी रहा। इन दो दिनोंमें करीब करीब प्रजातन्त्रके सारे जन-प्रिय गीत गाये गये। उनमें से कुछ गीत थे—"स्तालिनने हमारा युद्धमें नेतृत्व किया" "हमारा प्यारा देश" "गूँजो मेरी गीत," "गाओ और नाचो" "हमारे दिन" "मैं तुझे भूला नहीं" "सुन्दर बसन्त" "आओ मिलें महादिल" इत्यादि।

दूसरे दिन आधीरात को बिगुल बजा। गायकों ने महामंच छोड़ दिया और १५०० अभिनेता और अभिनायक सामने आये। उन्होंने "लेम्बितू" नाटक का अभिनय किया। इस नाटक को कवि यूहन् स्युतिस्तोने युद्धके समय जर्मन कारागारमें रहते लिखा था। दर्शक उस युगमें चले गये, जब कि अस्तोनियन जनता ने लेमबितूके नेतृत्वमें जर्मन आक्रमणकारियों का पाला नदीके किनारे एक बड़े युद्धमें मुकाबिला किया। युद्ध में लेमबितो बुरी तौर से घायल हुआ और मरते वक्त उसने अपने लोगों से कहा—तब तक लड़ते रहना, जबतक कि एक भी आक्रमणकारी हमारी जन्मभूमि पर रहे।

नाटक समाप्त हुआ, फिर एस्तोनियन सेना, रिसाला और टैङ्क शक्तिशाली सर्चलाइटोंके प्रकाशमें आये। एकपर लेम्बितूका नाम लिखा हुआ था। यह वह सेना थी, जिसने एस्तोनियाकी भूमिसे जर्मनोंको निकालनेके लिये युद्धमें भाग लिया था। फिर तोपोंके गोले छूटे और हजारों राकेटोंने आकाशमें फूटकर मीलों तक प्रकाश फैला दिया।

यह महोत्सव १८५६में आरम्भ हुआ। यह १२वाँ महोत्सव था। पहले महोत्सवमें सिर्फ ७८६ गायक शामिल हुए थे, जिनमें सिर्फ एस्तोनी भाषाके दो मौलिक गीत थे, बाकी जर्मन भाषासे अनूदित। जर्मन बैरन—जिन्होंने एस्तोनियाके सबसे अच्छे भागको अपने हाथमें कर लिया था—इस जर्मन-विरोधी महोत्सवको क्यों पसन्द करने लगे? किन्तु महोत्सव रुक कैसे सकता था? धीरे धीरे एस्तोनियन गीत अधिक और अधिक गाये जाने लगे। किन्तु अधिकतर गोत शोक और करुणारस-पूर्ण होते थे। लेकिन अब उत्साह और आनन्दपूर्ण गीत गाये गये। महामन्त्री प्यालने अपने भाषणमें कहा था—

"किसानोंके गीतोंमें अब जमीनकी भूख नहीं पायी जाती, क्योंकि पुराने जमीन्दारों और बड़े कुलकों (महा-किसानों)की ज़मीनें छीनकर खेतिहर मज़दूरों और गरीब-किसानोंमें बाँट दी गयी। अब इन गीतोंमें भाग्य

और भविष्यके उजाड़नेका रोना नहीं मिलता। यद्यपि युद्धकी आगको बुझे बहुत समय नहीं हुआ, किन्तु आज एस्तोनियामें कोई बेकारीसे भूखा नहीं मर रहा है। लोगोंका जीवन-तल ऊँचा उठ रहा है। सांस्कृतिक जीवन आगे बढ़ रहा है। इन बातोंको हमारे ये गीत प्रकट कर रहे हैं।"

× × ×

(ख) मछुओंका गांव—एस्तोनियाके तरार ज़िलेमें कल्लस्ते एक छोटा सा गाँव है। यह मछुओंका गाँव है, जिसमें १००से कुछ अधिक लकड़ीके छोटे छोटे घर हैं। एक ही अच्छा घर है, जिसमें कस्बेकी सोवियत् (पंचायत)के आफिस हैं। सामने छोटा सा मैदान है, जिसके ऊपर एक साधारण खम्भा है। खम्भेके शिखरपर पंच कोना तारा लगा हुआ है। खम्भेके नीचे कई तरहके फूल लगे हैं। यह उनके स्मरणमें हैं, जो लड़ाईमें अपने देशके लिये मरे।

गाँवकी संकरी सड़क सीधी उल्राइसे पेइपुस-झीलके किनारे पहुँचती। पानीमें मछुओंकी नावें हैं और किनारे बालूपर उनके जाल सूख रहे हैं।

लेकिन कल्लस्ते अब वह पुराना गाँव नहीं है। युगोंका स्वप्न पूरा हुआ, जब कि गाँवके सोवियत्-भवनपर सोवियत् राज-लांछन प्रकट हुआ। गाँवकी मछुआ-सभा इस प्रगतिका भारी चिह्न है। सभाका हाल एक लम्बा किन्तु कम ऊँचा सीधा-सादा मकान है। शामको एक किरासन तेलकी लालटेन सभापतिकी मेजके ऊपर छतसे लटकती है। दिनका काम करके मछुए यहाँ जमा होते हैं और कुछ सेनासे आये तरुण हैं, जिनके शरीरपर अब भी सैनिक-पोशाक है, यद्यपि सैनिक चिह्न हटा दिये गये हैं। उल्यन पेल्शन्कोफ़ सभाका प्रधान कहने लगा—"पंचायती मछुआई, और उसके साधनोंका सार्वजनिक सम्पत्ति होना कल्लस्तेके जीवनके लिये बिल्कुल नयी चीज है, किन्तु अब इसने जड़ जमा ली है। सभा खूब फूल-फल रही है।"

पुराने जमानेमें भी कल्लस्तेकी मछलीका पत्र-पत्रिकाओं और पुस्तकोंमें भी बहुत विज्ञापन होता था जान पड़ता था, गाँव बहुत धनी है। इसमें शक नहीं, कल्लस्तेके किनारेसे बहुत भारी परिमाणमें मछली निकलकर जाती थी, किन्तु गाँवकी अवस्था दयनीय थी, जनसंख्या घटती जा रही थी। मछुए अपने जालोंको छोड़ जिधर तिधर भाग रहे थे—कुछ धनी किसानोंके यहाँ काम करने जाते और कुछ नगरमें मजूरी करते। मछुआईसे जीवन-निर्वाह करना मुश्किल था।

सभापतिने कहा "हम तल्लिन और पर्नूकी सस्ती सामुद्रिक मछलीसे प्रतियोगिता नहीं कर सकते थे। उन्हींके लिये मछुआई लाभदायक थी जिनके पास नयी मोटर-नौकायें और आधुनिक ढंगके जाल थे। हमारा गरीब गाँव था—थोड़ेसे पुराने जाल और कुछ टूटी डोंगिया हर एक परिवारकी सम्पत्ति थीं। हमारे मछुए इस पेशेसे जीविका नहीं कमा सकते थे, इसलिये दूसरी जगहोंपर भागनेके लिये मजबूर हुए।" फिर बूढ़ोंकी तरफ इशारा करके प्रधानने कहा "ठीक कह रहा हूँ न, दादा?"

दीवारके किनारे बेंचपर बैठे बूढ़ोंने सुना। वह बोलक्कड़ नहीं थे, इसलिये उन्होंने सिर्फ शिर हिलाकर स्वीकृति प्रकट की। प्रधानने फिर बात जारी की "नहीं, हम नहीं भूल सकते, और भविष्यमें नये जालके खरीदनेकी व्यर्थ आशामें बैठे नहीं रहा जा सकता था। कितना ही कोशिश करे, गरीब आदमी उतना पैसा नहीं जमाकर सकता था। हमें नये ढंगके जाल तभी मिले, जब हमने मछुआ-सभा संगठित की। हमने अपने साधनोंको इकट्ठा किया, सोवियत् सरकारने भी हमें सहायता दी और जीवनकी खेती फिर हरी होने लगी"।

जिस दिन पहला आधुनिक जाल गाँवमें आया, तो लोगोंने उत्सव मनाया। छोटे छोटे लड़के सड़कपर पागलोंकी तरह दौड़ते इस खबर-को सुना रहे थे। इतने देखने वाले पहुँचे कि जान पड़ा, सभाभवनकी

लकड़ीकी दीवार बाहर निकल जायगी। लोगोंकी आँखें आश्चर्य प्रकट कर रही थीं, जब सुना "जालका दाम सरकारी भावसे १५००० रूबल!"

और अब सभाके पास ऐसे १४ जाल हैं और २८ मछुआ नौकायें भी, जिनमें १४ मोटर नौकायें हैं। आधुनिक जाल, मोटर-नौका, भारी पकड़ और अच्छी आमदनी कल्लस्तेके नये जीवनका यह आधार है।

अब वह एक धनी कस्बा है। यहाँ शासन और संस्कृतिका केन्द्र है। बच्चोंके लिये स्कूल है। मछुओंके लिये जूता बनानेकी एक छोटीसे फैक्टरी है—स्थानीय उद्योग-धन्धा आरम्भ हो गया है। नगर सोवियत् अब मछली सिभ्का टिनमें बन्द करनेके कारखानेके लिये तैयारी कर रही है। प्रथम-शिशु-शाला खुल गयीं, जिसमें ५० नन्हे नन्हें बच्चोंकी दिन भर देखभाल होती है। कस्बेमें अस्पताल है जहाँ लोगोंकी निःशुल्क चिकित्सा होती है। हर डाकसे गाँवके पुस्तकालयके लिये नयी डाक आती है।

हाँ, छोटा कसबा है, लेकिन सजीव और जीवनके आनन्दसे सन्तुष्ट हर जगह काममें सर-गर्मी देखी जाती है। बच्चे हँसते-खेलते हैं। मछुओंकी आँखें चमकती हैं।

३. जातियोंके प्रति सोवियत्की नीति

सोवियत् संघ भारतकी भाँति ही अनेक भाषा-भाषी बहुत सी जातियोंका संघ है। क्रान्तिसे पहले रूसी लोग दूसरी जातियोंसे आर्थिक और सांस्कृतिक तौरपर आगे बढ़े हुए थे। सोवियत्-क्रान्तिने सभी जातियोंको समान अधिकार दिया। समान अधिकारका कोई मतलब नहीं, यदि आर्थिक और सांस्कृतिक तौरसे जातियोंको दूसरेके समान होनेका सुभीता न दिया जाय। सोवियत्ने पिछड़ी जातियोंको आर्थिक दृष्टिसे आगे बढ़ानेका बहुत काम किया है। मध्य-एसियाके पाँचों प्रजातन्त्र—क़ज़ाक़स्तान, उज्बेकिस्तान, किरगिजिस्तान, तुर्कमानिस्तान और ताजिकिस्तान आर्थिक और सांस्कृतिक दोनों तरहसे बहुत पिछड़े हुए थे।

बड़े उद्योग-धन्धोंका तो वहाँ नाम भर था और शिक्षामें एक या दो सैकड़ा लोग साक्षर थे। आज निरक्षता वहाँसे खतम हो चुकी है और इन प्रजातन्त्रोंकी मातृ-भाषायें पिछले तीस सालोंमें हर तरहके साहित्य पैदा करनेमें समर्थ हुई हैं। इन प्रजातन्त्रोंमें उद्योग-धन्धे भी बहुत बढ़े हैं, तथा पंच-वार्षिक-योजनामें उनके उद्योग धन्धोंको बढ़ानेपर खास तौरसे ध्यान रखा गया है,—उदाहरणार्थ जहाँ १६४०की अपेक्षा १६५०में रूसी-प्रजातन्त्रके कल-कारखानोंको ५६ सैकड़ा बढ़ाया जायेगा, वहाँ उज्बेकिस्तानमें ८६ सैकड़ा और कज़ाकिस्तानमें १२० सैकड़ा बढ़ाया जायगा। इंगलैण्डकी जो नीति भारतके प्रति रही, वही नीति इन देशोंके प्रति ज़ारशाही सरकारकी थी, वह इनसे सिर्फ कच्चा माल लेना चाहती थी। वह इनमें उद्योग-धन्धा नहीं बढ़ाना चाहती थी। आर्थिक तौरसे पीछे रखकर सदा अपने ही अधीन बनाये रखना चाहती थी। पराजित देशकी तरह वहाँ अस्त्र-शस्त्र, फौलाद-लोहे और इञ्जीनियरिङ्के कारखाने नहीं कायम होने देती थी, क्योंकि उसे इनसे खतरा था।

अस्तोनिया-प्रजातन्त्र १६४०में सोवियत् संघमें शामिल हुआ, उसे पहली तीन पंच वार्षिक योजनाओंसे लाभ उठानेका मौका नहीं मिला। नयी पंच-वार्षिक-योजनाके अनुसार १६५०में अस्तोनियाके कारखानोंकी उपज १६४०से तिगुनी हो जायगी, खासकरके बिजली, मशीन-निर्माण आहार, सूती-मिलें और शेलके कारखानोंको बहुत बढ़ाया जा रहा है। खेतीके साथ साथ दूध देने वाले पशुओं और सूअरोंकी बृद्धिपर खास तौरसे ध्यान दिया जा रहा है।

भिन्न-भिन्न-प्रजातन्त्रोंकी खुले दिल आर्थिक और औद्योगिक उन्नति सिर्फ वहाँके निवासियोंके जीवनको ही सुखी नहीं बनाती, बल्कि भिन्न-भिन्न जातियोंका भाई-चारा इससे अधिक दृढ़ होता है। वह समझते हैं, कि सोवियत् सरकार हमें पिछड़ा रहने देनेकी इजाजत नहीं दे पहली पाँतीमें लाकर खड़ी करना चाहती है।

(१) रोमनी या जिप्सी

(क) भारतीय जाति—भारतमें अब भी बंजारे, मदारी और दूसरे लाखोंकी संख्यामें लोग हैं, जिनका कोई स्थायी निवास नहीं और वह अपने सिरकीके घुमन्तू घरोंको लिये घूमते भालू बंदर नचाते, नाच तमाशा दिखाते या छोटी मोटी चीजोंको बेंचते अथवा भीख माँगते गुजारा करते हैं। सदा एक जगहसे दूसरी जगह घूमते रहना इनका व्रतसा है। आज इनकी विचरण-भूमि केवल भारत है, किंतु मुस्लिम कालसे पूर्व वह भारतकी सीमासे बाहर तक घूमते रहते थे। पिछली सात-आठ शताब्दियोंमें यह लोग सारे युरोपमें फैल गये। वह अपनेको रोम-रोमनी कहते हैं, जो वस्तुतः डोम-डोमनीका ही अपभ्रंश है। और दूसरे लोग उन्हें जिप्सी (इंगलेण्डमें) या सिगान् (रूसमें), लूली (ईरान और मध्य-एसियामें) कहते हैं। भारतसे बाहर गई यह भारतीय जाति वहाँ भी वही घुमंतू जीवन बिताती रही। उसकी जीविकाके साधन थे नृत्यगीत, भालू-बंदर नचाना, हाथ देखना, घोड़ेकी खरीद बेंच, तथा कुछ दूसरे छोटे-मोटे चलते-फिरते व्यवसाय। पश्चिमी युरोप विशेषकर इंगलैण्ड-में अब घुमन्तू जिप्सी नहींसे रह गये हैं, और अपनी भाषा तो प्रायः सभी ही भूल गये हैं, किन्तु पूर्वी युरोपमें अब भी उनका वही जीवन चल रहा है। सोवियत्में इन सिगानोंकी संख्या कई लाख है, जो अधिकतर अब बस गये हैं। अमरो (हमरो) आछो, (अच्छा), उचेस् (ऊँचे), काको (काका), काकी (काकी), कुच (कुछ), कीरी (चीटी), गबरो (गमारो), च्यौरी (चोरी) छवोरो (छोंड़ा), तातो (तात, गर्म) थूलो (ठूलो, मोटा), पानी (पानी), फूरो (बूढ़ो), फेन (बेन, बहिन), बरो (बड़ो), बकरो (बकड़ा), बरीदिरो (बड़ेडरो, मुखिया), बोखालो (भूखालो, भूखा), बुत (बहुत), बेशी (बइसी, बैठी), ब्याव (ब्याह), मनुस् (मनुष्य), माछो (मछली), मारेला (मारैला—भोजपूरी), मांगेला (मांगैला—भोजपूरी), मीरे (मेरे), राई (राजा), राखेस (राखेस—अवधी), रोवै (रोवै), रूपूये (रुपैया), रिच (रीछ),

लेला (लेला=भोजपूरी), लाज (लाज), शाख (शाग) शुको (सूखो), सिंग (सींग), सानो (सानू, छोटा—गोरखा), ससूई (सास) इन शब्दोंको सुनाकर जब मैंने अपने कुछ सिंगान परिचितोंसे कहा, कि ये हमारे शब्द हैं, तो उन्हें आश्चर्य हुआ। किन्तु संस्कृत-भद्र पुरुष होनेसे वह इनकार भी नहीं कर सकते थे, कि ऐसी समानता आकस्मिक नहीं हो सकती। सोवियत्के सिगान अधिकांश अब बस चुके हैं, किन्तु कभी-कभी मैंने लेनिन्ग्राद्के दूरके महल्लों और सार्वजनिक उद्यानोंमें रोमनियों (डोमनियों)को हाथ देखनेका प्रयास करते देखा। एक बार दो रोमनियोंने मेरे पास आकर हाथ दिखानेके लिये कहा। मैंने कहा—क्या रोमनी रोमका हाथ देखेगी। उसमेंसे एकने कहा—हाँ, रंगरूपसे तो तुम रोम ही हो।

खैर, अब हाथ देखने और भीख माँगने वाले रोमनोंकी संख्या नगण्य सा हो गयी है और आगे तो उन्हें दूसरे सोवियत् नागरिकोंका जीवन अपनाना ही होगा।

(ख) रोमनी नाट्यशाला—मास्कोमें रोम अभिनेताओं और अभिनेत्रियोंने "रोमन तियात्र"के नामसे अपनी नाट्यशाला खोली है। मास्कोकी दूसरी बड़ी बड़ी नाट्यशालाओंकी तुलनामें इसे बहुत छोटी कहेंगे। वहाँ पाँच सात सौ दर्शक बैठ सकते हैं और दर्शकोंकी भीड़ हर अभिनयमें एक सी रहती है। हाँ, एक बात वहाँ और मालूम होती है, जो दूसरी-विशाल नाट्यशालाओंमें नहीं पायी जाती है। यह छोटी नाटयशाला घर सी मालूम होती है, यद्यपि दर्शकोंकी भीड़ रोमनी कलाकारोंको बाध्य कर रही है, कि वह अपने लिये बड़ी नाट्यशाला बनवायें। जहाँ सरकारकी उदार-सहायता इतनी सुलभ हो, वहाँ बड़ी नाट्यशालाका बनना मुश्किल नहीं है। किन्तु तब यह घरूपन जाता रहेगा। मैं इस नाट्यशालामें कई बार गया और उसके स्वाभाविक अभिनय, सीधे सादे नेपथ्य और भारतीय जैसे संगीत और नृत्य मुझे बहुत पसन्द आये।

रोमन नाट्यशाला मास्कोमें केमलिनसे नातिदूर बड़ी सड़कसे जरा सा हटकर है। रङ्गका बाहरी पर्दा हरे या किसी दूसरे रंगका मखमलका है, जिसपर बहुतसे रुपये सोनेके सिक्के टाँके हुए हैं। पर्देके उठाने गिरानेके समय वह खनखनाते हैं। रोमन नाट्यशालामें रोमनी लेखकोंके लिखे रोमनी जीवन-सम्बन्धी नाटकोंके अतिरिक्त गोर्की, पुशकिन तथा कितने ही यूरोपीय-ग्रन्थकारोंके लिखे नाटक खेले जाते हैं। सोवियत्के प्रमुख सूत्रधार और कलामर्मज्ञ जन्मजात रोमनी तरुण-तरुणियोंकी शिक्षा-दीक्षामें दिल खोलकर सहायता करते हैं। पात्रोंको चुनने और पार्ट सिखलानेमें मास्कोके प्रसिद्ध कलाकार सहायता और परामर्श देनेमें संकोच नहीं करते। शताब्दियों घुमन्तू दरिद्र जीवन बिताती जो जाति सिर्फ हाथ देखने और शराबकी दूकानोंमें पियक्कड़ोंका मनोरञ्जन करनेके द्वारा ही अपनी जीविका चलाती थी, अब वह शिक्षित और संस्कृत हो गई है। जहाँ वह अधिक संख्यामें है, वहाँ उनके लड़के लड़कियाँ अपनी भाषामें पढ़ते लिखते भी हैं।

१६३०-३१के करीब रोमनी कलाकारोंने अपनी इस जातीय नाट्यशाला की स्थापना की और पहला नाटक जो खेला गया, वह था "पहियोंपर जीवन"। इसमें दिखलाया गया था, कि कैसे रोमनी अपने कष्टमय जीवनको उस वक्त बिताते थे। क्रान्तिके बाद रोमनी लोगोंको भी नगरोंमें नागरिक पेशोंको सम्भालना या गाँवमें कलखोजका मेम्बर बननेका रास्ता खुल गया। किन्तु जातिका मुखिया (बरीदरो) वंगर—जो स्वयं धनी है—जीवन परिवर्तनको पसन्द नहीं करता। अन्तमें तरुण रोमन-रोमनी बहुमतसे उसकी बात न मान अपने घुमन्तू डेरोंको छोड़ जाकर बस जाते हैं।

पीछे रोमनी नाट्यकारोंके लिखे कितने ही नाटक खेले गये। प्रायः सारे ही दर्शक यहाँके रूसी-भाषा-भाषी होते हैं, इसलिये उनके नाटकोंकी भाषा रूसी होती है, लेकिन बीच बीचमें कुछ रोमनी भाषाकी वाक्यावली

भी आ जाती है और संगीत तथा नृत्यपर तो रोमनीकी छाप होती है। महाकवि पुशकिनके "सिगान" कविताको लेकर एक अच्छा नाटक लिखा और खेला गया। इसमें एक रोमनी तरुणी जेम्फिराका एक नागरिक तरुणसे प्रेमकी कहानी है। तरुण अभिनेताओं और अभिनेत्रियोंने अब मास्कोके नाट्यकला-जगत्‌में अपना स्थान बना लिया है। ल्याल्याचोके मधुर-संगीत और भावपूर्ण-नृत्याको देखनेके लिये साधारण और असाधारण सभी दर्शक उत्कंठित रहते हैं।

युद्धके समय यह नाट्यशाला और भी ज्यादा कार्यशील रही। उसने युद्धके तीस महीनोंमें घूम-घूमकर छै सौ अभिनय किये। गर्मियोंमें अब भी थियेटरके अभिनेता दूसरे शहरोंमें जाकर अभिनय करते हैं।

रोमन नाट्यशालाके अभिनेताओं और अभिनेत्रियोंसे मेरी जो बातचीत हुई, उसने हमें एक दूसरेके बहुत सन्निकट कर दिया। यद्यपि शताब्दियोंसे शीत-प्रधान देशोंमें रहने और कितने ही अंशमें रक्त सम्मिश्रण होनेके कारण हमारे ये रोमनी बन्धु हमसे अधिक गोरे हैं, किन्तु तो भी रूसियोंसे तुलना करनेपर वह साँवले ही मालूम पड़ते हैं। मेरे लड़के ईगरको तो हर एक आदमी रोमनी लड़का समझता है। नाट्यशालाकी अभिनेत्रियोंमें तो वह इतना घुल मिल गया और वह भी उससे इतना प्रेम करने लगीं, कि उसे वहाँसे निकालके लाना मुश्किल हो गया। प्रधान अभिनायिकाने अपनी अति-सुन्दरी तरुणी भतीजी अभिनेत्रीको दिखलाकर मुझसे कहा, मैं तो चाहूँगी कि इसका ब्याह किसी इन्दुस् (हिन्दू)से हो, लेकिन वहाँ कौन ऐसा सौभाग्यशाली भारतीय-तरुण था, जो उससे ब्याह करता। मैंने उनसे कहा, एक बार आप अपनी नाटक-मण्डली लेकर भारतका पर्यटन करें। लाखोंकी संख्यामें सोवियत्‌में रहनेवाले यह रक्त-सम्बन्धी हमारे बहुत अच्छे सांस्कृतिक दूत हो सकते हैं, यदि उन्हें नवीन भारतको देखनेका मौका मिले।

(२) मारी स्वायत्त-प्रजातन्त्र

१६४६में इस छोटेसे प्रजातन्त्रने अपनी २५वीं वर्षगाँठ मनाई। मारी सबसे पुरानी जाति है। आजकल यह वोल्गाकी उपत्यकामें बसती है। ग्रीक इतिहास-वेत्ता हेरोदोतसने ढाई हजार वर्ष पहले इस जातिका जिक्र किया है। पीछेके प्लीनी और ताकितुस भी इन्हें जानते थे। रूसी ऐतिहासिक बारहवीं शताब्दीसे ही इनका नाम लेते हैं। हेरोदोतसने इन्हें फिसागेत्के नामसे याद किया। प्लीनी और ताकितुस्ने चुद और रूसियोंने चेरेमिसके नामसे पुकारा। चेरेमिस नाम उनके देवता केरेमेतीके कारण पड़ा। मारी लोग अपने मेहनतीपन और लड़ाकूपनके लिये सदा प्रसिद्ध रहे। उन्हें बराबर लोगोंने दबाया। बुल्गरों (हूणजातिक)ने उन्हें अपनी भूमिसे भगाकर वहाँ वोल्गाके तटपर अपना राज्य कायम किया। फिर मंगोल और रूसी उनके पीछे पड़े रहे। मारी घने-जंगलोंमें जाकर बस गये। उपयुक्त स्थानोंमें गाँव बसाकर उन्होंने अपने लिये घर बनाया। खेती, पशु-पालन और मधु-मक्खी पालनके साथ फ्लैक्सकी खेती उनकी जीविकाका साधन थी, लेकिन वह कभी भी शान्तिपूर्वक जीवन न बिता सके। अपने शत्रुओंके अत्याचारके विरुद्ध बराबर लड़ते रहे। पहले उनका मुकाबला बुल्गरोंसे रहा, फिर मंगोलों और अन्तमें ज़ारशाही सेनाके साथ—रूसी इतिहासमें चेरेमिस विद्रोहोंका बराबर जिक्र आता है।

रूसी किसान-विद्रोहोंके प्रसिद्ध नेता स्तेपन राजिन और येमेल्यान् पुगाचेफ़के झंडेके नीचे मारी सैनिक लड़े। शताब्दियों बाद फिर मारी सैनिकोंने हिटलरियोंके साथ लड़कर अपनी वीरताका परिचय दिया। दस-हजार मारी सैनिकोंने युद्धके तमगे पाये, जिनमें २३ वीरताके सर्वोच्च-पदकको प्राप्तकर "सोवियत्-संघ-वीर"की उपाधिसे विभूषित हुए।

तातारोंने उन्हें मुसलमान बनाना चाहा और रूसी पादरियोंने ईसाई धर्ममें दीक्षित करना चाहा, लेकिन महाक्रान्तिके समय तक उनके गाँवोंमें पुराने देवता पूजे जाते थे। इनकी भाषामें कोई लिखा साहित्य न था।

यह निरक्षर छोटी जाति शताब्दियों तक आघातको सहती अपने अस्तित्व-को क़ायम रखे रही।

जारशाही रूसने इन्हें नष्ट होनेसे बचानेके लिये कुछ भी नहीं किया।

हजारमें एक मारी बच्चेको गाँवके स्कूलमें पढ़नेकी इजाजत थी और पिछली शताब्दीके २५ सालोंमें सिर्फ़ ५२ मारी साक्षर हो सके।

एक पुराने प्रसिद्ध रूसी नृ-वंश तत्त्व वेत्ताने लिखा था—"चेरेमिस् जातिके बारेमें कुछ लिखना बहुत पीड़ाजनक मालूम होता है। उनका वर्तमान निराशा-पूर्ण है, अतीत भी निराशापूर्ण था और भविष्य तो और भी निराशापूर्ण है। चेरेमिस् जाति आज सर्वनाशके पथपर है। सर्वनाश अचिर भविष्यमें नहीं, बल्कि बहुतसे गाँवोंमें इसी वक्त हो चुका है।"

सचमुच दूसरी छोटी छोटी दर्जनों जातियों—जो कि वोल्गा उपत्यका, उरालसे पूर्व, दक्षिणी और उत्तरी सिवेरिया, काकेशश और मध्य-एसियामें रहती थीं—की तरह यह भी पृथ्वीसे उठ गयी होती, यदि सोवियत् क्रान्ति न हुई होती।

लेकिन अब क्या है? शनिवार १५ जून १६४६के मास्कोके पत्रोंने मारी प्रजातन्त्रपर बड़े-बड़े लेख लिखे। उनमें इनके गाँवों, शहरों, उद्योग-धन्धे और संस्कृतिके बारेमें लिखा गया। मारी प्रजा-तन्त्रके महामन्त्रीने अपने लेखमें बतलाया, कि सोवियत् कालमें ३० हजार मारियोंने हाई स्कूलकी शिक्षा समाप्त की और १५००ने कालेजकी पढ़ाई ख़तम की। मारीका क्षेत्रफल डेनमार्कसे आधा है। यहाँ आज हर ८०० निवासीपर एक स्कूल और हर १३०० जनसंख्यापर एक नगर या ग्राम पंचायत घर है।

सोवियत् सरकारने मारी लोगोंकी उन्नतिके लिये मुक्त-हस्त हो पैसा खर्च किया। कुछ साल पहले एक मारी राजनीतिज्ञने कहा था—"सोवियत् सरकारने पहले दस वर्षोंमें जितना पैसा हमारे ऊपर खर्च

किया, सिर्फ उसीको लौटानेके लिये सब मारियोंको आधी-शताब्दी तक कड़ी मिहनत करनी होती।"

लेकिन सोवियत् सरकारको पैसा लौटानेकी जरूरत नहीं। वह उसकी ओरसे कर्ज नहीं, कर्तव्य-पालन है—पिछड़ी जातियोंको दूसरोंके बराबर लाके रखना सोवियत्का उद्देश्य सारे देशके लाभके लिये है। सोवियत् सरकारने आर्थिक और सांस्कृतिक विकासके लिये पैसे ही नहीं दिये, सैकड़ों रूसी अध्यापकोंने मारी अध्यापक तैयार करनेमें सहायता की। रूसी विद्वानोंने मारी-भाषाकी लिपि तैयार की, साहित्य-रचनामें सहायता की। रूसी डाक्टरोंने मारी डाक्टर बनाये। रूसी इञ्जिनियरों और मिस्त्रियोंने मारी तरुणोंको अपना ज्ञान सिखलाया। सभी क्षेत्रोंमें रूसी और दूसरे लोगोंने उनके उद्योग-धन्धे और संस्कृतिके विकासमें हाथ बँटाया।

१९१७में खतम होने वाले पुराने युगमें मारी किसान अपने प्राचीन हलोंसे खेती करते थे। उनके शहर इओश्कर-ओलाकी जनसंख्या दो हजार थी। वहाँ उद्योग-धन्धा नगण्य सा था। आज इस प्रजातन्त्रमें डेढ़ सौ भिन्न-भिन्न प्रकारके बड़े बड़े कारखाने हैं, जिनमें एक बहुत बड़ा कागजका कारखाना है। मारी प्रजा-तन्त्रके पास अपने कागज-कारखाने आहार-, हल्के उद्योग-काष्ट-, धातु-, बिजली-समानके कारखाने हैं।

आज मारियोंमें साइन्सके विद्वान् इञ्जिनियर, लेखक और अभिनेता हैं। कितने ही मारी-इञ्जिनियरों और डिज़ाइनरोंने स्तालिन-पारितोषिक-विजयमें सफलता पाई। अखिल सोवियत् कृषि प्रदर्शनीमें कितने ही मारीकल-खोजों और वैयक्तिक किसानोंने अपने कार्यके लिये पदक पाये हैं। मारियोंके खेत बोल्गाकी दोनों तरफ मीलों तक फैले हुए हैं। आज लकड़ीके हलोंकी जगह वहाँ १२०० ट्रेक्टर और ३०० कम्बाइन काम करते हैं। पिछले २५ वर्षोंमें यहाँ गेहूँके खेत आठ गुने हो गये, और कारखानोंके कच्चे मालकी फसलें दुगुनी, आलू तथा दूसरी तरकारियाँ

चौगुनी। चार हजार मारी किसान ट्रेक्टरों और कम्बाइनोंके ड्राइवर हैं।

क्रान्तिके पहले स्तारेवो कोकूशाइस्कके नामसे मशहूर बड़ा गाँव आज इओश्करओल्गाके नामसे मारीकी राजधानी है। आज वहाँ ११ हाई स्कूल-कालेज हैं। इनके अतिरिक्त जंगल-, ट्रेनिङ्ग-, वैज्ञानिक अनुसन्धान की संस्थायें, चश्मा-, जंगल-, और मेडिकल स्कूल हैं। एक राज-नाट्यशाला-एक बड़ा पुस्तक प्रकाशन गृह और दो दैनिक-पत्र राजधानीसे निकलते हैं।

नयी पंच वार्षिक योजना मारीको और भी समृद्ध करने जा रही है। मारीकी भूमिमें भारी बन-सम्पत्ति है—३० लाख एकड़ घना जंगल है। लकड़ीके घर बनानेके उपयोगके अतिरिक्त कागज़ ही नहीं बल्कि काष्ठ-रसायनका उद्योग बढ़ाया जा रहा है। नये स्कूल, इन्स्टीट्यूट, क्लबघर और सिनेमा बनाये जा रहे हैं। २५वीं वर्ष गाँठके समय २,५६,७४४ मारियोंके हस्ताक्षरसे स्तालिनके नाम लिखे गये पत्रमें कहा गया है—

"महान् परिवर्तनकी।महती योजनाको
हमारे जनने पूरे दिलसे स्वीकारा।
अहो, कितना धन हमारी जातिको मिलने वाला है,
और इस प्रदेशमें कितनी प्रगति यह करने वाला है।"

× × ×

प्रजातन्त्रके महामंत्री निकोलाय रेप्चिकोफने बतलाया, कि हमारे गाँव और शहरोंके स्कूली उम्र वाले सभी बच्चे स्कूल जाते हैं।

२३,५०० वर्ग किलोमीतर और पाँच लाख जनसंख्याके इस प्रजातंत्रमें आज ७६६ प्रारम्भिक और माध्यामिक स्कूल हैं, जिनमें ८५,२५०से विद्यार्थी—मारी, रूसी, तातार, उदमुर्त और चुवाश—पढ़ते हैं। मारी भाषा अब वह पहिलेकी लिपि-साहित्य-विहीन भाषा नहीं है, स्कूलोंके पुस्तकालयोंमें मारी भाषाकी ३००० पुस्तकें मिलेंगी। प्रजातंत्रमें दो ट्रेनिंग कालेज और एक जंगल-कालेज भी है, जिसमें १९४७में १००० विद्यार्थी

पढ़ रहे थे, और इतने ही विद्यार्थी मास्को, लेनिन्ग्राद् आदिमें जाकर पढ़ते हैं।

जंगल-कालेज बहुत बड़े महत्वकी चीज है। यहाँके दो सौ ग्रेजुएटोंकी ओर लोगोंकी नजर लग रही है। काष्ठको बिजलीके आरेसे काटना और ट्रैक्टरसे खींचकर दूसरी जगह पहुँचाना आदि आदि सभी काम मशीनोंसे होते हैं। प्रजातन्त्रकी ७५% जमीन जंगलसे ढँकी है। जंगलमें चारों तरफ मोटरके रास्तों और रेलोंका जाल बिछा है। यहाँ काम करनेके लिये बहुतसे भारी इंजीनियर हैं। अगले तीन सालोंमें तीन हजार विद्यार्थियोंको जंगल-कालेजमें भेज़ना है।

(३) चुवास स्वायत्त-प्रजातन्त्र

(क) प्रगति—ईसापूर्व दूसरी शताब्दीमें आधुनिक मंगोलियामें बसनेवाली और मंगोलो तथा तुर्कोंकी पूर्वज हूण-जाति चीनियोंके प्रहारसे पच्छिमकी ओर भगी। रास्तेमें आधुनिक क़ज़ाक़स्तानमें बसनेवाले पूर्वी शकोंको दक्षिणकी ओर भगाती धीरे धीरे वह वोल्गा और अतिलाके हूणोंके रूपमें ईसाकी चौथी सदीमें दुनाय (डेन्यूब) महानद तक पहुँच गई। इसी हूण जातिसे पीछे उत्पन्न होने वाली जातियोंमेंसे एक थी बुल्गर जाति, जो कि मध्य वोल्गाके तटपर बसती थी। इन्हीं हूण बुल्गरों के वंशज़ आजकलके चुवाश हैं, जो मध्य-वोल्गाके बायें किनारे रहते हैं। क्षेत्रफलमें चुवाशिया हालैंडकी आधी है। युद्धसे पहले उसकी जनसंख्या दस लाख थी, जिसमें अस्सी सैकड़ा चुवाश जातिके लोग थे। ज़ारशाहीके जमानेमें इस जातिका वर्णन करते हुए, एक दर्जनसे अधिक पंक्तियाँ लिखना आवश्यक नहीं समझा गया और उसमें भी बतलाया गया था कि तीन चौथाईसे अधिक चुवाश ट्रकोमा रोगसे पीड़ित हैं और उनके नगर चेकाक्सारीमें गिर्जोंके सत्तावन टन भारी एक सौ बाईस घंटे हैं। और यह भी लिखा गया था कि यह जाति मरणासन्न है।

चुवाश जातिके पुनरुज्जीवनके लिये सोवियत् सरकारने जो काम किया है, वह सदा स्मरणीय रहेगा। तीन लाख पन्द्रह हजार आदमियोंके हस्ताक्षरके साथ स्तालिनके पास पत्र भेजते हुए चुवाशोंने कहा था—यह महान् रूसी जातिकी दी हुई सहायता तथा जातियोंके सम्बन्धमें सोवियत्की नीति ही थी, जिसने हमें अपने पैरोंपर खड़ा होने दिया, एक राज्य बनाने तथा आर्थिक सांस्कृतिक क्षेत्रमें बढ़नेका मौक़ा दिया और अवनतिके गहरे गर्तसे हम ऊपर उठ सके।

मेहनती होते हुए भी चुवाश क्रान्तिके पहले भयंकर दरिद्रताके शिकार थे। तो भी कोई चुवाश भीख माँगते कभी नहीं देखा गया। भीख माँगनेको वह "अक्षम्य अपराध" समझते थे। छोटे छोटे खेतोंमें काम करके वह अपनी जीविका उपार्जन करते थे। इसके अतिरिक्त शिकार, मछुआही, तिनकेका चप्पल और टोकरी बनाना उनकी जीविकाका साधन था। कितने ही मलाही करते नावोंको गुन (रस्सी)से खींचते वोल्गाके किनारे सैकड़ों मील दौड़ते फिरते थे। लेकिन तो भी किसी चुवाशने कभी किसीके सामने भीखके लिये हाथ नहीं फैलाया।

यह छोटी सी जाति अपनी स्वाभाविक परिश्रमशीलताका पूरा उपयोग सोवियत्-युगमें कर पाई। कलखोज़ने दीहातसे दरिद्रताको मार भगाया। चुवाश किसानोंने राज्यको सत्तर लाख पूड (एक पूड=अठारह सेर) अधिक अनाज पहले चार वर्षोंकी अपेक्षा पिछले चार वर्षोंमें दिया।

आज चुवाश जातिमें ट्रकोमाका न कहीं पता है, न निरक्षरताका। १६४४में इस प्रजातंत्रने शिक्षापर उस रकमका एक सौ पचीस गुना खर्च किया, जितना कि ज़ारशाही सरकारने १६१४में चुवाशियाके ऊपर सारे मदोंमें ख़र्च किया। आज प्रजातन्त्रके निवासियोंमें हर पाँच आदमीमें एक स्कूलमें पढ़ रहा है। चुवाश-साहित्य, कला, संगीत और नाटक बहुत विकसित हो चुका है।

चुवाशिया अब वह उद्योग-धंधा-विहीन देश नहीं है। वहाँ अब रसायनिक कारखाने हैं। रेलकी गाड़ियोंकी मरम्मतका एक कारखाना है। कपड़े और जूतेकी कई फैक्ट्रियाँ हैं। सबसे खास बात यह है, कि इन कारखानोंमें अधिकांश मैनेजर खुद चुवाश लोग हैं, जिन्होंने टेक्निकल कालेजोंमें अपनी शिक्षा समाप्त की है। १९३८में अपने प्रजातन्त्रकी पार्लियामेंटमें बोलते हुए एक मंत्रीने औद्योगिक विकासकी बड़ी सम्भावनाओंका जिक्र करते हुए फास्फोराइट और आग्नेय शेल (ईंधन) के निकलनेकी बात कही। यह खबर चुवाश भाषाके अड़तालीस पत्रोंने लंबी सुर्खियोंके साथ छापा। आज इन दोनों पदार्थोंके कई कारखाने काम कर रहे हैं।

हिटलरी जर्मनोंके साथ लड़नेमें चुवाश उद्योग-धन्धेने जिस तरह सहायता की, उसी तरह चुवाश सैनिकोंने भी भाग लिया। चुवाशियाके पुत्रोंने लालसेनामें बड़ी बहादुरी दिखलाई, यद्यपि इससे पहले कभी वह ऐंठ दिखलानेके आदी न थे, बल्कि पुराने ऐतिहासिक उन्हें युद्ध-भीरु बतलाते थे। किंतु अब इतना परिवर्तन हो गया है। २८ हजार चुवाश योद्धाओंको बहादुरीके तमगे मिले, जिनमेंसे ४६ने सोवियतकी सर्वोच्च उपाधि 'सोवियत-संघ-वीर' प्राप्त की। लालसेनाके छ चुवाश जेनरलोंमें एक कर्नल जेनरल रहा। वे युद्धके हरेक क्षेत्रपर लड़े और अपनी सोवियत-भूमिके लिये अपनी जन्म-भूमि चुवाशियासे दूर-दूर जाकर लड़ाई की।

(ख) प्रेसीडेंट अन्द्रेयेवा—ज़ोया अन्द्रेयेवा चुवाश स्वायत्त प्रजातन्त्रकी प्रेसीडेण्ट है।

१९२४का वसन्त था। चुवाशके एक दूरके गाँव यंगोरिनोमें एक गाँवकी मीटिंग हो रही थी। एक स्थानीय तरुण-अध्यापिका सभामें बोल रही थी। वह चुवाश-भाषामें बोल रही थी, इस लिये सभी उसकी बातको समझ रहे थे। वह सोवियत्के खेत-सम्बन्धी नये कानूनके बारेमें बात कर

रही थी—"६ साल हो गये, जब कि साथी लेनिन्ने सोवियत् सरकारसे कानून बनवा भूमिको कमकर-किसानोंके हाथमें दे दिया। उस कानूनके अनुसार पुरुषोंकी तरह स्त्रियोंको भी भूमि पानेका हक है। क्यों हमारे यहाँ साथी लेनिन्की शासन-घोषणाको नहीं पाला गया? क्यों हमारे यहाँ स्त्रियों को जमीन नहीं दी गयी?"

स्कूलकी अध्यापिकाने ये वाक्य कहे, इन वाक्योंने गाँवको दो दलोंमें बाँट दिया। दोनों एक दूसरे से लड़नेके लिये तैयार थे। कुलक (धनी-किसान) इसके लिये तैयार न थे। वे स्त्रियोंको समानाधिकार देनेके विरोधी थे और "स्त्रीके मुँह" से वह भूमिको स्त्रियोंमें नहीं बाँटेंगे। गाँवके गरीब और तरुण अध्यापिकाके दलमें थे और लेनिनकी शासन-घोषणाके अनुसार जमीनके बाँटे जाने पर जोर दे रहे थे। अध्यापिका-के दिलमें यह ख्याल आया और वह सबको साथ लिये स्कूलके पास बहती छोटी नदीपर गई। उसने कहा—"जो सोवियत्के कानूनको नहीं मानता और भूमिको फिरसे बाँटना नहीं चाहता, वह नदीके उस पार जाय। फिर हम देखेंगे कि कितने ऐसे लोग हैं।"

सारे गाँवके लोगोंके लिये नदीके उस पार जाना आसान काम नहीं था—सभी जानेवालोंकी ओर देखकर हँसते और परिहास करते। इस-लिये कुलक और कुछ पुरान पथी सफेद दाढ़ी वाले ही उस पार गये। देखनेसे मालूम हो गया, कि अधिक लोग उनके साथ नहीं हैं। गाँवके गरीबोंकी विजय हुई।

गाँवकी अध्यापिकाके दिलमें इस सफलतापर संतोष हुआ और उसका आत्मविश्वास बढ़ा। उसने समझा, कि मैं स्कूलकी चहारदीवारी के बाहर भी कुछ कर सकती हूँ। वह विचारने लगी—अभी और कितना काम करना है, जिसमें चुवाश जनता भी उस नवजीवनके प्रकाशको देख सके, जिसका उदय ७ नवम्बर १९१७को हुआ।

वह स्कूल अध्यापिका ज़ोया अनन्त्येव्ना अन्द्रेयेवा थी, जो कि आज चुवाश स्वायत्त सोवियत् समाजवादी प्रजातन्त्रकी प्रेसीडेन्ट और सोवियत् संघकी महापार्लियामेंटकी मेम्बर है। उस दिनकी उसी मीटिंगमें उसके सामने भविष्यका कार्यपथ खुल गया। उसने अपने समयको अधिकाधिक जन-सेवामें लगाना शुरू किया, और अन्तमें सारा समय उसीमें लगने लगा। उसके गाँववालोंने ज़ोयाको जिला-सोवियत्के एक उच्च पदके लिये चुना।

ज़ोया एक चुवाश डाक्टरकी सहायिका और एक रूसी साधारण स्त्रीकी लड़की थी। गाँवके स्कूलको छोड़नेके बाद उसने हाई स्कूल में दाखिल हो स्वर्ण-पदकके साथ मेट्रिक-परीक्षा पास की। उसके सहपाठी कज़ान या मास्कोकी युनिवर्सिटीमें जा रहे थे, उन्होंने उसपर भी चलनेके लिये जोर दिया; लेकिन परिवारकी आर्थिक अवस्थाने उसे वैसा न करने दिया। उसे डाक्टर बननेकी बड़ी इच्छा थी। उसे रोककर वह काम करके अपने परिवारका पालन करने लगी। इस तरह १९१७ की शरदमें उसने चुवाशके इस दूर के गाँवमें स्कूल खोल कर पढ़ाना शुरू किया।

घना-अन्धेरा जंगल, चट्टानोंसे टकराकर बहती धारायें, नदीके चौड़े घुमावोंमें नीली झीलें, जलपूर्ण वोल्गा जिसपर लकड़ियोंके ठाठ एकके पीछे एक बह रहे, बे-छिले शहतीरोंकी दीवारों वाले घरोंसे भरे गाँव, जिनके किनारे पर हवाई पनचक्की होती—यह चित्र था क्रान्तिसे पहले चुवाश-देशका। देशमें बस्तियाँ बहुत कम और जंगल अधिक था। यहीं चुवाश लोग लकड़ी काटकर जीविका चलाते और ज़ारशाही सरकारके सभी हुकुम और बेगारोंको चुपचाप बजाते थे। चुवाश-जनता महामारियोंसे धीरे-धीरे ख़तम हो रही थी और अधिकांश लोग ट्रकोमाकी बीमारी द्वारा अपनी आँखोंसे हाथ धो रहे थे। सभ्यताकी प्रगति इन जंगलोंके किनारे आकर रुक गई थी। कभी कभी वह दूरकी आवाज सुनते थे, रूसमें बड़े-बड़े

शहर हैं, देशके एक छोर से दूसरे छोर तक रेलें दौड़ती हैं, वोल्गा और सुरा नदीमें स्टीमर भोंपू बजाते चलते हैं। चुवाश अपने उन्हीं बिना चिमनी की धुएँसे काली लकड़ीकी कोठरियोंमें रहते, लकड़ीके हलोंसे अपने खेत जोतते या तिनकेके जूतोंको पहने लकड़हारी करने जाते थे।

कोई ही चुवाश लड़का स्कूल जानेकी हिम्मत करता था। लेकिन चुवाश बहादुरीके साथ अपनी जातीय-भाषा और संस्कृतिको सुरक्षित रखे थे। वह अपने पुराने जमानेके पँवाड़ों को सुनते, पुरानी गीतों को गाते और नयीको बनाते जीवन बिता रहे थे। समृद्ध-रूसी संस्कृतिका जो भी दाना उनके देशमें पहुँच जाता, उसे भी चुनकर रखते जाते थे। एक तरुण स्कूल-अध्यापक और कवि कंस्तन्तिन इवानोफ—जो कि आजकल चुवाश-साहित्य का प्रथम कलाकार समझा जाता है—ने पुश्किन्, लेर्मन्तोफ और नेक्रोसोफ़की कविताएँ स्कूलमें पढ़ने वाले बच्चों के लिये सुलभ कीं। १९१७ की महान् क्रांतिके समय यह थी चुवाशिया। पिछले ३० वर्षोंमें चुवाशियामें आमूल परिवर्तन हो गया। ज़ोयाने इसमें भाग लिया, लोगोंके श्रद्धा-विश्वासको प्राप्त किया और भिन्न भिन्न पदों पर रहते अन्तमें सामाजिक हितके जन-मन्त्री के पद पर पहुँची। सोवियत् संघमें स्त्री को सबसे पहला जन-मन्त्री पद उसीको मिला था और अब वह चुवाश प्रजातंत्रकी प्रेसीडेन्ट है।

ज़ोयाने अपने प्रजातंत्रकी प्रगतिसे प्रसन्न होकर कहा—"२९ वर्षमें चुवाशिया कितना आगे बढ़ी? सिर्फ दो आँकड़े देखो। १९२२ में प्रजातन्त्रका बजट २,९०,००० रूबल था और १९४६ में २०,००,००,००० रूबल है।

लाखों शरणार्थी युद्धमें चुवाशिया आये। शत्रुसे आक्रान्त भूमिके बहुत से कारखानों और मिलोंने भी चुवाशियामें शरण ली। चुवाश कमकरोंने सेना और देशकेलिये अन्न, हथियार और यन्त्रसाधन दिये। ज़ोया उन दिनों बराबर एक जगहसे दूसरी जगह घूमती रहती। वह सब जगह

अपनी भाषा चुवाशमें भाषण देती। उसके भाषण लोगोंमें स्फूर्ति पैदा करते। सेनाके चुवाश और लिथुवानियन डिवीजनकी संरक्षकताके काम में वह व्यस्त रहती। वह भेंट लेकर युद्धक्षेत्रमें सैनिकोंसे मिलने जाती और अस्पतालोंको देखती।

ज़ोया अन्द्रेवाके दिमागमें हर वक्त अपनी मातृभूमि चुवाशियाका ख्याल रहता है। राजधानी मास्को, दूसरे बड़े शहरों या और प्रजातंत्रोंमें जानेपर वह सदा इसी फिक्रमें रहती है, कि कौनसी चीज चुवाशियाके हितकेलिये वहाँसे ले चले। वह पड़ोसी बास्किरिया प्रजातंत्रके रजत-जयंती-महोत्सवमें सम्मिलित हुई। महोत्सवके बाद मेहमानोंको राजधानी ऊफाके कारखाने और दूसरे नगर दिखलाये गये। ज़ोयाको विटामिन-सी, का कारखाना देखकर बड़ी दिलचस्पी हुई। उसके फैक्टरी मैनेजर से पूछा—यह विटामिन कौनसी चीजसे बनाया जाता और कच्चा माल कहाँ से आता है? कारखानेके लिये यंत्रसाधन आसानीसे मिल सकते हैं या नहीं? मैनेजरने बतलाया—"विटामिन जङ्गली गुलाबके फलोंसे निकाला जाता है। हम उन्हें पहले मध्य-एसियासे मँगाते थे, किन्तु रास्तेमें वह चुचक जाते थे, इससे उनका गुण कम हो जाता था। अब हम उन्हें चुवाशिया से मँगाते हैं। तुम्हारे यहाँ वोलगाके किनारे गुलाबोंकी बे-अन्त झाड़ियाँ हैं।"

ज़ोयाने मनेजर को धन्यवाद दिया और अपनी राजधानी चेवोकसारी में पहुँचते ही विशेषज्ञोंको बुलाया। पता लगा, चुवाशियामें विटामिन-सी का कारखाना खोला जा सकता है। ज़ोया जी-जानसे फैक्ट्री-निर्माण में जुट गई और १९४५ में इस फैक्ट्रीने दश लाख टिकिया (विटामिन-सी) बनाकर दीं।

ज़ोया अपने आफिसके कामके अतिरिक्त भी समय निकाल लेती है, जिसमें कलखोजके किसानों, मजदूरों, योद्धाओंसे मुलाकात करती है। तीन हजार मिलने वाले और तीन हजार चिट्ठियाँ सालमें उसके पास

आती रहती हैं। गाँवों और शहरोंसे निमंत्रण तो हर वक्त आते ही रहते हैं। खेत-कटाई जिला-अध्यापक-सम्मेलन, किसी फेक्टरी या बड़े स्कूलके उद्घाटनका महोत्सव...में वह लोगोंमें पहुँचती ही रहती है। जनताके जीवनको वह अपनी आँखों देखना चाहती है। कैसे कलखोजोंमें काम हो रहा है? सहयोग-समितियोंके दस्तकार कैसे अपना काम कर रहे हैं। लोक-गीत और नृत्यमें किस प्रकार लोग दिलचस्पी ले रहे हैं? यह सब वह जानना चाहती है। ज़ोयाने अपने एक मेहमानसे उल्लसित होकर कहा—"आप हमारे चुवाश गीत सुनेंगे?"

युद्धके समय चुवाशियामें बहुतसे नये कारखाने खुले—पीट (कच्चा कोयला) निकालना, कपड़े, सिगरेट, बनियान, बिजली-समान, और जूतेके कारखाने खुले। नई पंचवार्षिक योजना-पूर्तिके अंत—१९५०—में २६ करोड़ रूबलकी पूँजी यहाँके कारखानोंमें लगेगी, १२१ कलखोज़ोंके पन-बिजली स्टेशन गाँवके घरोंको प्रकाशित करेंगे, वोल्गा पारमें पीट अधिक निकाली जायेगी, जिससे चेबुकसारीके घरों और कारखानोंके लिये दूनी बिजली मिलेगी।

खकासिया स्वायत्त जिला

खकासिया सिबेरियाके दो लाख ७१ हजार खकास (तुर्की) जाति का स्वायत्त-जिला है। इसका क्षेत्रफल पचास हजार वर्ग-किलोमीतर है। येनिसेई नदीके बायें तटपर यह जिला पूरी तौरपर पहाड़ोंसे घिरा है। ठंडे और गर्म समुद्रोंसे हजारों मील दूर इस भूमि की आबोहवा अपेक्षाकृत नरम है। जाड़ा लम्बा और ठंडा होता है, किन्तु बर्फ बहुत कम पड़ती है। ग्रीष्म गर्म और खुश्क होता है। खेती ऐसी सूखी जमीनपर सिंचाईसे ही सम्भव है। खकास-अनुसंधान कृषिफार्ममें सिंचाईके तजर्बे किये गये हैं, जिससे मालूम हुआ कि पानीकी सिंचाईका इन्तिजाम हो जानेपर वहाँ अच्छे किस्मका गेहूँ ही नहीं

बल्कि चीनीका चुकन्दर, तेल्हन और फलकी खेती भी की जा सकती है। सबसे अधिक सूखे भाग उइवतमें सिंचाई करनेपर प्रति-एकड़ चालीस बुशल गेहूँ और बारह टन चुकन्दर पैदा हुआ।

खकास पिछले पन्द्रह सालोंमें—जबसे कि उनका स्वायत्त जिला बनाया गया—कुछसे कुछ हो गये हैं। पचीस साल पहले यह लोग घुमन्तू थे। इनकी कोई लिपि या साहित्य न था, किन्तु अब इनका अपना अक्षर अपना साहित्य, अपने अध्यापक, अपने डाक्टर और अपने कृषि-विशेषज्ञ हैं। सोवियत् सरकारने उन्हें नई जमीनें आबाद करनेमें सहायता दी, उनके लिये मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन कायम किये। क्रान्तिके पहले मुश्किलसे ६६,००० एकड़ खेतीके लायक जमीन थी और अब वह बढ़कर सात लाख एकड़ हो गई है। कृषिमें बड़ी तेजीसे उन्नति हुई है। मशीनोंके अधिक उपयोगसे उपज भी खूब बढ़ी है। पन्द्रह साल पहले अनाज प्रति-एकड़ नौ बुशल होता था और अब वह दूना ही नहीं हो गया है, बल्कि सिंचाई वाले इलाकोंमें उपज अब चालीस बुशल प्रति-एकड़ तक पहुँच गई है।

खकासियामें उपज बढ़ानेके लिये जलको सुलभ करना सबसे जरूरी काम था। वहाँ इसके लिये एक बड़ा काम हो रहा है। येनिसेइ नदीकी शाखा अबकानको उसके संगमसे तीस किलोमीतर ऊपर बाँधा जा रहा है। अगले कुछ सालोंमें इसके पानीसे दो लाख एकड़ सूखी जमीन-को हरे भरे खेतोंमें परिणत कर दिया जायगा। इससे सन ४६में ही बावन हजार एकड़की सिंचाई होने लगी थी। स्थानीय इंजिनियर और कमकर बड़ी तत्परतासे नहरका काम पूरा करनेमें जुटे हुए थे। इस कामके लिये चार लाख घन-मीतर मिट्टी निकालनी थी, नहर सम्बन्धी कई ढाँचे तैयार करने थे। अक्तूबर १९४५के अन्त तक बहुत सा काम समाप्त हो गया था। नहरका कितना ही भाग उसी साल तैयार हो गया। १९४६में नहर-महकमेके मकान और बाकी काम तेजीसे होने लगे।

(५) बुर्यत् मंगोलिया

राजधानी उलन्उदे आधुनिक ढंगका उद्योग-प्रधान नगर है। यहाँ रेलके इंजन और डब्बे बनते हैं। एक काँचका कारखाना, रसायन और धातुके कारखाने, टिनमें माँस बंद करनेके कारखाने और आँटेकी मिलें हैं। यह पारे-सिबेरियन रेलपर है। यहाँसे एक सड़क और रेलवे उत्तरकी तरफ बरगुजिनको, और दक्षिणकी तरफ सेलेंगा-उपत्यका होते क्याख्ता जाती है। क्याख्तासे मंगोलिया होते चीनका रास्ता है।

नाट्यमंच-बुर्यत मंगोल जाति यद्यपि भारतीय-धर्म और संस्कृतिसे प्रभावित होनेसे उतनी पिछड़ी जाति तो नहीं कही जा सकती, किन्तु तो भी उसके विकासके लिये अनुकूल वातावरण सोवियत्-क्रान्तिने ही पैदा किया। नाट्यकला तो एक तरह वहाँ थी ही नहीं। अब नाट्यकलाका इतना विकास और जनतामें कलाके प्रति इतना प्रेम पैदा हो गया है, कि राजधानी उलन-उदेमें एक सुन्दर नाट्यशाला बन रही है। उलन-उदे उस इलाकेमें है, जहाँ भूकम्प आनेकी संभावना रहती है, इसलिये नाट्यशाला बनानेमें इसका खास तौरसे ध्यान रखा गया है। इस नाट्य-शालामें ८०० दर्शकोंके बैठनेकी जगह रहेगी। नाट्यशालाका प्लान बनानेवाले फ्योदोरोफ़ बहुत बड़े वास्तुशिल्पी हैं। इन्होंने ही मास्कोके स्तानिस्लाव्स्की थियेटरके पुनर्निर्माणका प्लान बनाया था। लेकिन इसका मतलब यह नहीं, कि उन्होंने रूसी वास्तुकलाके आधारपर बुर्यत-नाट्यशालाके बनानेका प्लान बनाया है। प्लानमें पूरा ध्यान रखा गया है, कि नाट्यशाला पूर्णतया मंगोल जातीय कलाकी हो। मंगोल जातीय कलामें भारतीय कलाका बहुत काफ़ी सम्मिश्रण है, इसलिये आश्चर्य करनेकी आवश्यकता नहीं, यदि यह प्लान भारतीय वास्तुकलासे अनुप्राणित मालूम होता है।

(ख) कलाकार गम्बो—मंगोल नाट्यकलाके विस्तारमें सबसे अधिक हाथ जन-कलाकार गम्बो चूदेनज़योफ़का है। गम्बो बिहारमें बचपनसे

ही भिक्षु बनाकर रख दिया गया था और उसने १६ वर्षकी उम्र तक वहीं जीवन बिताया। इसी वक्त महाक्रान्ति आयी, उसपर भी उसका असर हुआ और १६ वर्षका गम्बो विहार छोड़कर भाग गया। क्रान्तिने बुर्यत लोगोंके लिये स्वतन्त्र विकासका रास्ता खोल दिया और ज़ारशाही शोषण और अत्याचार दूरकी बात हो गयी। क्रान्तिकी लहरमें नाट्य-नृत्य और संगीत भी सहायता दे सकते हैं, यह विचार जन्मजात अभिनेता और कलाकार गम्बोके मस्तिष्कमें आई। उसने एक चलती-फिरती संगीत-मंडली क़ायम की, जिसमें कई और तरुण उसके साथी हुए। मंडली जन-गीतोंको गाती और कभी कभी स्थानीय जीवनको लेकर छोटे मोटे अभिनय करती। गम्बोको इसके लिये प्रजातन्त्रके कोने कोनेमें घूमना पड़ता। उसकी पैनी दृष्टिने भाँप लिया और उसने अपने लोगोंके जन-संगीत, जन-काव्य, जन-नृत्यका ध्यान-पूर्वक अध्ययन किया। तब भी अभी बुर्यत मंगोलियाकी जातीय-नृत्य नाट्यशालाकी सम्भावना दूरका स्वप्न थी।

गम्बोकी मडली इसी तरह कई वर्षों तक घूमती रही। १९२९में वह स्वप्न चरितार्थ होता दिखाई पड़ा, जबकि राजधानीमें प्रथम-जातीय थियेटर स्तुदियोका संगठन हुआ। रूसी थियेटर-विशेषज्ञ और संगीतकार वहाँ पहुँचे और उन्होंने तरुण मंगोलोंको कलाका प्रथम पाठ पढ़ाया।

लेकिन गम्बो इन प्राथमिक विद्यार्थियोंमें नहीं था। वह मास्को चला गया था। उसने निश्चय कर लिया था, कि सरकारी थियेटर इन्स्तीत्यूटमें बाकायदा भरती होकर इस कलाका गम्भीर अध्ययन करे। गम्बो प्रवेशिका परीक्षामें पास नहीं हो सका, क्योंकि साधारण शिक्षा उसने पायी नहीं थी। लेकिन गम्बोका उत्साह ढीला नहीं हुआ, उसने वयस्कोंकी रात्रि-पाठशालामें जाकर अपनी शिक्षाकी कमी पूरी की। दो साल बाद वह फिर परीक्षामें बैठा और अबकी बार पास हो गया।

उधर १९३२में उलन्-उदेके स्तुदियोने शिक्षा दे कलाकारोंकी पहली टोलीको बाहर निकाला। अब थियेटरके लिये कला-शिक्षित मंगोल अभिनेता

अपने पास मौजूद थे। पहले उन्होंने अपने ही लिखे नाटकोंको खेला, यद्यपि उनमें परिष्कार और गम्भीरताकी कमी थी, लेकिन साथ ही उत्साह और सजीवता अधिक थी। मंगोल दर्शकोंके लिये तो वे मनोरञ्जनके अपूर्व साधन थे, इसमें सन्देह नहीं। बुर्यत् थियेटरने पहला ओपेरा "बादुर" (वीर) खेला था। इसका विषय एक पुराने कथानकसे लिया गया था। इसके लिये संगीत पावेलबेर्लिन्स्कीने गम्बोके गाये गीतों और तानोंके आधारपर बनाया था और स्वयं गम्बोने नृत्यों, विवाह-सस्कारों, चेहरेवाले नृत्यों तथा दूसरी चीजोंका निर्माण किया था।

गम्बो मास्कोमें पढ़ते वक्त भी गर्मीकी छुट्टियोंको अपने प्रजातन्त्रमें बिताता। अभी वह राज-थियेटर इन्स्तीत्यूतके प्रथय वर्षका विद्यार्थी था, तबसे ही वह अपने साथी अभिनेताओंको अपने ज्ञानसे लाभ पहुँचाने लगा। स्तानिस्लाव्स्कीके अभिनेताओंकी शिक्षण-प्रक्रियाका गम्बोने अपने साथियोंके ऊपर तजर्बा किया और तजर्बा सफल मालूम हुआ। छुट्टियोंमें वह उलन-उदेमें भावी कलाकारोंको पढ़ाता और नये अभिनयोंकी तैयारी करता।

प्रतिवर्ष उलन-उदेमें तरुण-मंगोल-कलाकी सहायताके लिये मास्कोसे अधिक और अधिक रूसी अध्यापक, गायक-मण्डली-नेता आने लगे। थियेटर स्तुदियोके साथ साथ एक संगीत-विद्यालय सा तैयार हो गया, जिसमें वाइलिन, पियानो आदि वाद्ययन्त्रों तथा मौखिक-संगीतकी क्लासें लगती थीं।

अभिनेताओंने होनहार बच्चोंको ढूँढ़नेके लिये प्रजातन्त्रमें घूमना शुरू किया और धीरे-धीरे सह-संगीत, नाटक-मंडली, बालेत्-नर्तक, नाटक-अभिनेता, ओपरा-(पद्यमय-नाटक)-नट आकर जमा होते गये। थियेटरकी शालामें उत्साही तरुणोंकी सदा तत्परता देखी जाती—कहीं पढ़ाई हो रही है और कहीं रिहर्सल हो रहा है। इसी बीचमें अभिनयके लिये नाटकोंकी संख्या बढ़ने लगी। कितने ही अपने नाटक लिखे गये और

कितने ही रूसी और युरोपीय प्रसिद्ध नाटकोंके अनुवाद हुए। इन अनुवादोंमें मोलियेर, गोल्दोनी, गोर्की और शेक्सपियरकी कृतियाँ सम्मिलित हैं।

गम्बोने इन्स्तीत्यूतका स्नातक बन बुर्यत थियेटरके कला-डायरेक्टरका स्थान ग्रहण किया। एक महत्त्वपूर्ण घटना गम्बोके नाट्य जीवन और बुर्यत्के अभिनेता मंडलीके भी जीवनमें हुई। शेक्सपियरके प्रसिद्ध नाटक "ओथेलो" के अभिनयमें गम्बो ने नायक का पार्ट लिया। इसके लिये उसने रूसी भाषामें मौजूद शेक्सपियर-सम्बन्धी सारे साहित्यको बड़े ध्यानसे पढ़ा। अभिनेता और अभिनेत्रियाँ रात दिन अपने पार्टको सीखने में लगी रहीं। ओथेलोके रूपमें बड़ी सफलताके साथ उसने मूरके भावों और उसके डेसडेमोनाके प्रति बच्चोंके से विश्वास और कोमलता को प्रकट करनेमें सफलता पाई।

१६२८ के मास्कोके नाट्य-महोत्सवमें बुर्यत थियेटरने भी भाग लिया और काफ़ी प्रशंसा प्राप्त की।

युद्ध-कालमें गम्बोकी ओपेरा-मंडली युद्ध-क्षेत्रमें घूम-घूम कर अपने अभिनय द्वारा लालसैनिकोंका मनोरंजन करती रही, उसके अभिनय सैनिकों में अत्यन्त प्रिय थे।

(६) मंगोलिया जन-प्रजातन्त्र

चिंगिस् ख़ान के मंगोलोंका नाम कौन नहीं जानता। १३वीं सदीके पूर्वार्द्धमें मंगोलोंके राज्यमें कोरिया, मंचूरिया, सारा चीन, वर्तमान मंगोलिया, सारा पूर्वी-पश्चिमी तुर्किस्तान, ही नहीं बल्कि अफ़गानिस्तान, ईरान, इराक़, सिरिया, काकेशशका बहुत सा भाग और प्रायः सारा रूस था। १५ वीं सदीके समाप्त होते होते विशाल मंगोल साम्राज्य भी लुप्त हो गया और आगे मंगोल जाति भी पराधीन हो अपने गौरव को खो बैठी। मंगोल-जाति किन्तु अब भी जीवित है। सिबेरियामें बहुकाल

के किनारे उनका बुर्यत स्वायत्त प्रजातन्त्र है, जोकि रूसी फेडरल प्रजातन्त्रका एक अंग है। तुलामें भी मंगोल जातिकी एक शाखा बसती है। सोवियत् संघके इन दो प्रदेशोंके अतिरिक्त सोवियत् से बाहर मंगोलिया और भीतरी मंगोलियामें मंगोल बसते हैं। भीतरी मंगोलोंके भाग्यका निबटारा अभी नहीं हुआ है। बाहरी मंगोलिया का अपना स्वतन्त्र प्रजातन्त्र है, जो २६ सालोंसे कायम है। यद्यपि २६ सालोंसे बाह्य मंगोलिया वस्तुतः स्वतंत्र रहा है, किन्तु चीनने उसपर से अपना दावा नहीं छोड़ा था। १९४६ में जनताके वोट ने फैसला कर दिया और चीनने अपना दावा हटा लिया।

बाह्य मंगोलिया यद्यपि राजनैतिक तौरसे सोवियत् संघका भाग नहीं है, किन्तु आरम्भ ही से मंगोलियाकी स्वतत्रतामें सोवियत् सदा सहायता करती रही। सिर्फ स्वतंत्रताकी प्राप्ति ही में नहीं बल्कि उसकी आर्थिक, सांस्कृतिक और सामरिक उन्नतिमें भी सोवियत्ने हाथ बँटाया। १९४६ में मंगोलिया जन-प्रजातन्त्रने अपनी २५वीं वर्षगाँठ मनाई। एक रूसी यात्रीने मंगोलियाकी सर्वतोमुखी प्रगतिका वर्णन किया है, जिसके आधार पर हम उसके बारे में यहाँ कुछ लिखते हैं।

मंगोलिया अब वह पुराने तम्बू लिये घूमते ऊँट, भेड़, घोड़ोंके चरवाहोंका देश नहीं है। मंगोल संस्कृति और सभ्यताके क्षेत्रमें बहुत तेजीसे बढ़ रहे हैं। पिछले २५ वर्षोंमें मंगोलियाने अपनी जन-कला, आधुनिक नाट्यशाला, साहित्य, संगीत और सिनेमाकी कलामें बहुत प्रगति की है।

मंगोलियाकी राजधानी उलन्बातोर अब वह पुराना छोटा सा गन्दा कस्बा नहीं है, अब वह आधुनिक नगरके रूपमें परिणत हो गया है। नगरकी प्रधान-सड़क पक्की है, जिसकी दोनों तरफ वृक्ष लगे हुए हैं। प्रतिदिन सड़कपर लारीसे छिड़काव होता है। सड़क पर सैकड़ों कार,

बसें और लारियाँ चलती रहती हैं। नगरके मुख्य चौरस्ते पर मंगोल जातीय-थियेतर की इमारत बिलकुल जातीय ढंग पर तैयार हो रही है। मंगोल-नेता और प्रधान-मन्त्री मार्शल छोइबल्सानकी उसमें बड़ी दिलचस्पी है। राजधानीके सारे निवासी ही नहीं, बल्कि दूसरे जिलोंके लोग भी नाट्यशालाके बनानेमें हाथ बँटा रहे हैं।

उलनबातुरकी दूकानोंमें जो चीजें बिक रही हैं, उनसे पता लगता है, कि मंगोलियाने उद्योग-धन्धेमें बहुत तरक्की की है। वहाँ मंगोलियाके चमड़े से अपने कारखानेमें बने युरोपीय और देशी ढंगके जूते बिक रहे थे। अच्छे अच्छे कपड़े, जिनसे युरोपीय ढंगकी भी पोशाकें तैयार की जा सकती हैं, वहाँ मौजूद थे। इसी तरह खानेकी भी बहुत सी चीजें मौजूद थीं। उलनबातुरमें बहुतसे चीनी भी बसते हैं और दोनों जातियों का सम्बन्ध बहुत ही मित्रता-पूर्ण है। मंगोल-सरकार चीनी संस्कृतिके विकासमें भी दिलचस्पी रखती है। नगरमें एक चीनी नाट्यशाला है जिसमें ६०० दर्शक आरामसे बैठ सकते हैं। इस नाट्यशालासे पहिलेकी तुलना क्या की जा सकती है? इस वक्त यहाँ चीनी ड्रामा खेला जाता था। कला डायरेक्टर बाक्सी, सुचतुर सूत्रधार मुख्यअभिनेत्री नम्-खन्-ते का अभिनय बहुत ही प्रभावोत्पादक था। शाला दर्शकोंसे भरी थी।

मंगोलनाट्यशालामें ऐतिहासिक और आधुनिक नाटक खेले जाते हैं। इसके अभिनेता और अभिनेत्रियाँ आधुनिक ढंगसे नाट्यकलाकी शिक्षा पाये हुए हैं। इनके अभिनय चीनी नाटक की तरह परम्परानुयायी नहीं बल्कि वस्तुवादी हैं। यहाँ मंगोल जन-अभिनेत्री एरदेन्बातिन तथा ओयुन्द्वारा लिखा और खेला गया नाटक "विजय और संघर्षका पथ" उसवक्त अभिनय किया जा रहा था। ओ-युन एक प्रतिभा शाली लेखिका और अभिनेत्री है, उसने कई नाटक लिखे हैं। एक दूसरी अभिनेत्री तथा वाद्यनिपुणा छोग्-डोल्माका भी अभिनय

बहुत सराहनीय था। चीनी जन-गीत "फुनियान" को उसने बहुत सुन्दर ढंगसे गाया था।

नादोम्के जातीय त्योहारमें डेढ़ लाख आदमी जमा हुए थे, जिनमें अधिकांश किसान और पशुपालक थे। राजधानीके बाहर उनके हज़ारों तम्बू गड़े हुए थे। महोत्सवकी खास चीज थी घुड़दौड़। मंगोल हमेशा से बहुत अच्छे सवार होते रहे। सात और बारह वर्षके लड़के लड़-कियाँ भी ३२ किलोमीतरकी घुड़दौड़में भाग ले रहे थे। निर्णायक लोग सारे रास्ते पर जहाँ तहाँ खड़े थे और अन्तिम २—३ किलोमीतर तक बच्चोंके सम्बन्धी भी साथ-साथ घोड़े दौड़ा रहे थे। इस वर्ष घुड़दौड़ का विजेता एक ६ वर्षका लड़का था।

मंगोल लोगोंका संगीतमें बहुत प्रेम है। शहरों और ऐमकों (गाँवों) में भी लोग गीत बनाते हैं। उलन्बातोरमें एक मंगोल सेम्फोनी ओर्चेस्त्रा (समूह-वाद्य-मंडली) है, जिसमें बहुत तरहके मंगोल वाद्य-यन्त्र सम्मिलित हैं।

उलनबातोरकी किताबकी दुकानोंमें संगीत पर मंगोल, चीनी, रूसी और अंग्रेजी भाषाओंमें किताबें मिलती हैं। मंगोलियामें संगीतके लिये अन्तर्राष्ट्रीय संकेत-लिपिको स्वीकार कर लिया गया है, इससे संगीतके प्रचारमें बहुत सहायता मिली है। क्लबघरोंमें एक या दो बड़े पियानो जरूर देखनेमें आते हैं। मंगोल-थियेटर में तो उनकी संख्या ६ थी।

तन्ज़िन् सुरेन् मंगोलिया का महाकवि बहुत ही संस्कृत और सुशिक्षित व्यक्ति है। वह रूसी खूब अच्छी तरह बोलता है और पश्चिमी युरोपके साहित्यसे उसका अच्छा परिचय है। उसने अपने मेहमान से कहा "दूसरी मर्तबे आने पर आप हमारे शहरको पहचान न सकेंगे। उस समय नयी नाट्यशालाके अतिरिक्त एक बड़ा सिनेमा और कलाकार-



याकूत युवती कमकर (पृ० १८५)



बच्चोंमें स्तालिन (पृष्ठ ५६)







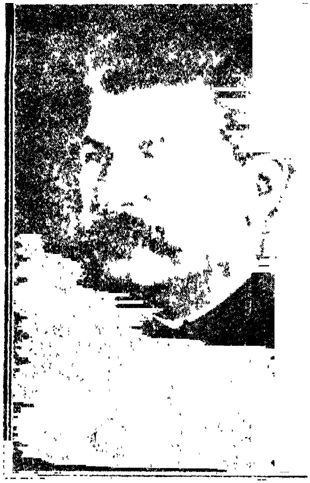
आ[illegible] ([illegible]४)



[illegible]क्काया (पृ० [illegible]२३)



ज़ोजन्स्का (पृ० २६४)



स्तालिन (पृ० २५८)



मार्शल वोरोशिलोफ़ (पृ० २६४)



मार्शल बुद्योन्नी (पृ० २६६)

क्लब भी तैयार हो गयी रहेगी, ईंट और सीमेंटके बहुतसे नये-नये मकान राजधानीमें दिखलाई पड़ेंगे ।

(७) याकूतिया स्वायत्त प्रजातंत्र*

(क) तब—उत्तरी सिबेरियाके सबसे ठंडे प्रदेशोंमें याकूतिया एक है। यह बइकाल झीलके पास उत्तरीमहासागर तक फैली हुई है।

सोवियत्की अन्य जातियों की तरह याकूतिया (३,२७,५०० जन) भी शताब्दियों तक ज़ारशाहीके निरंकुश शासनसे पीड़ित रही। ज़ारकी सरकारकी नीति थी, याकूतिया और उसके निवासियोंको हर तरहसे चूसना। रूसी व्यापारी और कारखाने-वाले याकूत सामन्तों (तोइवोन्) की मदद से देशके क़ीमती समूरी चर्म तथा दूसरी चीज़ों को लूट रहे थे। उनके तरीक़ोंमें एक तरीक़ा था, याकूत तथा दूसरी जातियों (एवेन्की, चुकूची) में शराब और वोद्काके व्यसन को ज़ोर शोरसे फैलाना।

जिस तरहकी आर्थिक लूट वहाँ हो रही थी, उससे प्रदेशमें रहने वाली जातियाँ—याकूत, एवेन्की—दरिद्रताकी पराकाष्ठा तक पहुँच गई थीं; और उनका सर्वनाश बहुत नजदीक था। उनमें क्षय-रोगका बड़ा ज़ोर था; और पाँच वर्षके भीतर पैदा हुए बच्चोंमें १०० में ७० मर जाते थे। पैदाइशसे मौतकी संख्या अधिक होने के कारण देशका बहुत सा भाग उजाड़ हो गया था।

याकूत लोगोंकी सांस्कृतिक उन्नतिके लिए कुछ भी नहीं किया जाता था। अगर लोगोंमें कभी इस तरहका ख़याल भी आने लगता; तो उसे तुरन्त ही बड़ी ज़बर्दस्तीके साथ दबा दिया जाता। स्कूल वहाँ थे नहीं और जो थे भी, उनमें प्रायः रूसी अफ़सर, व्यापारी और पुरोहितोंके लड़के ही पढ़ते थे। याकूत् विद्यार्थियोंकी संख्या १५ सैकड़ा थी; और

*१९३८ में लिखित पृष्ठ १८५

वह भी साधारण याकूत् जनताकी सन्तान न होकर ज़ारशाही के गुलाम धनियों और कुलकोंके लड़के थे। स्कूलकी पढ़ाई सिर्फ़ रूसी भाषामें होती थी। दो सैकड़ा से ज्यादा याकूत पढ़ लिख नहीं सकते थे। याकूत भाषामें समाचार निकालनेकी सख्त मनाही थी।

क्रान्तिसे पहले याकूतिया कृषिप्रधान देश था। कृषिके साथ पशुपालन और शिकारका काम भी होता था, किंतु कल-कारखानोंका नाम भी न था। ३० लाख वर्ग-किलोमीतर भूमिमें फैली वहाँ की अनन्त प्राकृतिक सम्पत्तिके उपयोग का कोई प्रयत्न नहीं किया गया था। १९१७ में सभी छोटे बड़े उद्योग-धन्धोंकी उपज सिर्फ १,५७,००० रूबल थी।

(ख) अब—२० वर्षमें जो साम्यवादी निर्माण हुआ है, उसमें पिछड़ी तथा परतंत्र याकूतिया बदल कर एक औद्योगिक साम्यवादी देश बन गई है। चूसनेवाली श्रेणियाँ लुप्त हो गईं और वहाँ मनुष्यके श्रम को मनुष्य लूट नहीं सकता। बहुतसे नये कल-कारख़ाने स्थापित हुए हैं। जहाँ पहले देशकी आमदनीका ज़रिया अधिकतर खेती थी, वहाँ अब राष्ट्रीय आयका ६६ सैकड़ा कल-कारख़ानोंसे है। उद्योग-धंधे से सारी आमदनी पिछले साल ३ करोड़ ९६ लाख रूबल हुई थी (तुलना कीजिए १९१७ के १,५७,००० रूबलसे)। नये-नये कल-कारख़ानों की स्थापनाके कारण कारख़ानोंमें काम करनेवाले कमकरोंकी संख्या अब २० हज़ार है।

याकूतियामें सोनेकी बड़ी बड़ी खानें हैं। सोना पैदा करनेमें संसारमें सोवियत्-भूमि का नम्बर दूसरा है; और सोवियत्के सारे सोने का १५ सैकड़ा याकूतिया से आता है। कई कोयलेकी खानोंमें काम हो रहा है और अब उत्तरी महासागर तथा सिबेरियाकी बड़ी-बड़ी नदियोंमें चलने वाले जहाज़ोंको कोयला और जगहसे लानेकी ज़रूरत नहीं। याकूतिया की भूमिमें राँगा संसार भरमें सबसे ज्यादा है। उसमें भी उसकी खान और कारख़ानेका काम ज़ोरसे चल रहा है। पेट्रोल और मिट्टीके तेलके

कुएँ नोर्दविक, अमृगा और तुल्वामें खोदे जा रहे हैं; और तृतीय पंच-वार्षिक योजनामें बाहरसे तेल मँगानेकी ज़रूरत न पड़ेगी।

याकूतियामें देवदार तथा दूसरी तरहकी लकड़ियोंका बहुत भारी जङ्गल है। लकड़ीका उद्योग भी बहुत आगे बढ़ा रहा है; और याकूतिया अपने कामसे भी अधिक लकड़ी दे रही है। मकानों, आफ़िसों और दूसरी इमारतोंमें लकड़ीके इस्तेमालमें कंजूसीकी आवश्यकता नहीं। नदियोंमें चलनेके लिए पेलेदुये और ओसेत्रोवोमें जहाज़ बनानेके बड़े-बड़े कारखाने स्थापित हुए हैं।

शिक्षाके प्रचारके साथ-साथ याकूतियामें प्रेसका काम बहुत बढ़ गया है। १९१७ में छपाईपर ३२,३०० रूबल खर्च हुए थे और १९३६में वह खर्च था ४७,३६,५०० रूबल।

तीसरी पंचवार्षिक योजनामें पेट्रोल, सोना, राँगा, कोयला और लकड़ी-की उपजको और भी कई गुना बढ़ानेके साथ-साथ भोजन-संबन्धी उद्योग-में बहुत अधिक उन्नति करनेकी योजना रखी गई है।

कृषिमें याकूतियाने विशेष उन्नति की है। क्रांतिके बाद सभी खेत किसानोंके हाथमें चले गये। फिर पंचायती खेतीने लोगों को कामके लिए और भी उत्साहित कर दिया और बहुतसे नये-नये कलखोज़् आबाद किये गये। १९१७में जितना खेत था, वह अब उससे तिगुना हो गया है। याकूत लोग अधिकतर बारहसिंगा आदि पशुओंको पालकर जीविका कमाते थे। अब उनका सारा ध्यान पंचायती खेतीकी ओर है। पिछले साल (१९३७) याकूतियामें कल्खोज़् ६७ सैकड़ा और सोव्खोज़् (सरकारी खेती) १८ सैकड़ा थी। अब १५ सैकड़ा खेती ही छोटे-छोटे किसानोंके हाथमें है।

सोव्खोज़् और कल्खोज़् स्थापनाके साथ-साथ खेतीके काम को मशीनसे करना आरंभ हुआ। १९३२में खेतीके यंत्र (जिनमें ट्रैक्टर, कंबा-इन आदि शामिल हैं) सिर्फ २,००० थे। १९३६में उनकी संख्या

२८,४४० हो गई। उन जगहोंमें, जहाँ अनाजकी खेती असंभव समझी जाती है, वहाँ लिसेंकोंके आविष्कार किये बीज-संस्कार (वेर्नलाइ-जेशन्)के तरीकेसे फसल पैदा होने लगी है—उदाहरणार्थ ६२° अक्षांश-से उत्तर २६४० एकड़ खेती बोई गई। यह बात सिर्फ याकूतियाके लिए ही आर्थिक महत्त्व नहीं रखती, बल्कि इसका महत्त्व सारे वैज्ञानिक संसारके लिये है।

पशुपालनमें भी बहुत उन्नति हुई है। कल्खोज़ोंने नई तरहकी पशु-शालाएँ बनाई हैं; और साँड़के चुनाव तथा संकर-क्रियासे पशुओंकी जाति-में विकास किया जा रहा है।

याकूतिया अब समुद्रके रास्ते उत्तरी रूससे सम्बद्ध है। १९३६ में मास्को आदि कारखानोंका बना १५,००० टन माल इस रास्ते याकूतिया आया। याकुत्स्क याकूतिया प्रजातंत्रकी राजधानी है। इर्कुत्स्कसे याकुत्स्क तक नियमपूर्वक हवाई-यात्रा होती है। याकुत्स्कसे याकूतियाका हर इलाका हवाई जहाज़ों द्वारा सम्बद्ध है। सिबेरियाके रेलवे-स्टेशनोंसे देशके भीतर तक कितनी ही मोटर-सड़कें बनाई गई हैं।

क्रान्तिके बाद नदी द्वारा मालका यातायात बहुत तेज़ीसे बढ़ा है। याकूत नदीमें, जहाँ १९११में ३२ छोटे-छोटे बजरे थे, वहाँ १९३६ में ११३ स्टीमर चल रहे थे। लेना नदी द्वारा १९११की अपेक्षा १९३६में सातगुना ज्यादा माल आया। कोलीमा, इन्दिगिर्का, याना और वोलेनेक् नामक उत्तरी नदियोंमें भी कई बेड़े माल ढोनेके लिए तैयार किये गये हैं।

क्रान्तिसे पहले याकूत भाषा एक असभ्य भाषा समझी जाती थी। उसका न कोई साहित्य था न लिपि। अब वह रूसी अक्षरोंमें लिखी जाती है; और स्कूलोंकी सात वर्षकी पढ़ाई उसी भाषा द्वारा होती है। आरंभिक और हाई स्कूलोंके विद्यार्थियोंमें १५ गुना वृद्धि हुई है। याकूतियामें सात वर्षकी शिक्षा निःशुल्क और अनिवार्य है। अब

शिक्षितोंकी संख्या ८० प्रतिशत है (जन-संख्या ३२७।। हजार); बाकी २० सैकड़ा वे ही बूढ़े लोग हैं, जो कुछ ही वर्षोंके मेहमान हैं।

पिछले २० सालोंमें याकूत लोगोंने अपने लिए अध्यापक, डाक्टर, इंजीनियर आदि बहुत अधिक तादादमें पैदा किये हैं। वहाँ १२ टेकनिकल स्कूल, तीन फ़ैक्टरी-उम्मेदवार-स्कूल, दो कमकर-तैयारी-स्कूल हैं; जिनमें २४३० विद्यार्थी पढ़ते हैं। इनके अतिरिक्त दो ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट हैं। ४०० याकूत विद्यार्थी मास्को, लेनिन्ग्राद् आदि विश्वविद्यालयोंमें पढ़ रहे हैं।

आर्थिक उन्नति और शिक्षाके प्रचारके साथ-साथ अखबारों, किताबों रेडियो और सिनेमा वगैरह की माँग बहुत बढ़ गई है। स्कूली किताबोंके अतिरिक्त सैकड़ों दूसरे ग्रन्थ याकूत भाषामें छपे हैं। अब उसमें १८ समाचारपत्र और कितनी ही मासिक पत्रिकाएँ निकलती हैं। कई सौ अध्ययन-परिषद्, ग्राम-वाचनालय, कलखोज़्-क्लब, सांस्कृतिक-भवन प्रजातन्त्रके कोने-कोनेमें फैले हुए हैं। एक नाटक-थियेटर, एक कलखोज़्-थियेटर, और एक जन-कला-भवन स्थापित हुआ है। याकूतियामें बस्तियाँ बहुत दूर-दूर पर बसी हैं। गाँवोंके लिए चलते-फिरते सिनेमाका प्रबन्ध है। याकुत्स्क नगरके रेडियो-स्टेशनसे हर रोज़ अपनी भाषामें ब्राडकास्टिङ्ग होती है। रेडियो-यंत्रसे कोई गाँव खाली नहीं है। याकूत भाषा और संस्कृतिकी खोजके लिए कई अन्वेषण पीठ हैं। कृषि-संबंधी अन्वेषणके लिए अलग संस्था है। जल-आकाश-सम्बन्धी अन्वेषणके लिये एक विज्ञानशाला है। जङ्गल, समूर और खनिज पदार्थोंकी खोजके लिए एक विद्वत्-परिषद् है। संक्षेपमें याकूत जाति और उसकी प्राकृतिक सम्पत्तिका वैज्ञानिक अन्वेषण सुव्यवस्थित रूपसे हो रहा है।

स्वास्थ्य-रक्षापर सोवियत् सरकारका बहुत ध्यान है। १६११में कुछ

थोड़ेसे चिकित्सालय थे; जिनमें १६ डाक्टर काम करते थे। १६३६में वहाँ अस्पतालोंकी संख्या १४३ हो गई, डाक्टर अब १६१ हैं।

१६२५-२६में राष्ट्रीय आय ४३ लाख रूबल थी; लेकिन १६३७में वह १० करोड़ ७० लाख हो गई। ४ करोड़ ६० लाख रूबल शिक्षा और सांस्कृतिक काममें खर्च किया गया, अर्थात् आदमी पीछे १३६ रूबल (या ६० रुपया) याकूत जनताने अपने २० वर्षकी समृद्धिके लिये कृतज्ञता प्रकट करते हुए स्तालिन् को लिखा—

"याकूत जब जंगलमें जाता है, तो अपने रास्तेको घासमें आग लगाकर प्रकाशित करता है; जिसमें कि उसे लौटनेमें दिक़त न हो।

"लेनिन् और स्तालिन् ये दोनों हमारे बड़े प्रकाशित मार्ग हैं, जिन्होंने हमारे हृदयोंको आलोकित किया है। इन्हीं प्रकाशित-मार्गों द्वारा हम दासता, अकाल और दरिद्रताके जङ्गलसे निकलकर सुखमय जीवनके प्रकाश-पूर्ण मार्ग पर पहुँचे।"

(ग) याकूतिया और चतुर्थ पंचवार्षिक योजना

याकूतिया (सिबेरिया) रूसी फेडूल प्रजातन्त्रके १२ स्वायत्त प्रजातन्त्रोंमें क्षेत्रफलकी दृष्टिसे सबसे बड़ा है। इसके ३० लाख वर्ग-किलोमीतर भूमिमें ढाईलाख जन—याकूत, एवेन्की (तुन्गुस्) और दूसरे सिबेरीय लोग—बसते हैं।

याकूतियाके महामन्त्री इल्या विनोकुरोफने कहा कि योजनाके अन्तिम वर्षमें सरकारी सहयोगी उद्योग और कृषिकी उपज युद्धपूर्वसे ३६% अधिक होगी, स्थानीय उपयोगमें ही अधिक आनेवाला ईंधन तिगुना, आहार (जिसमें दूध और मांस भी सम्मिलित है) दुगुना, और मछलीकी उपज डेढ़गुनी हो जायगी। याकूतियाकी बहुतसी भूमि वनाच्छादित है—३७ करोड़ एकड़ जमीनमें जङ्गल है। काष्ट काटनेका काम १६५० तक युद्ध पूर्वसे डेढ़गुना हो जायेगा।

याकूतियाकी कृषि भी बढ़ने जा रही है—आलू दूना होने जा रहा है। घोड़ोंमें $\frac{1}{3}$ और दूसरे पशुओंमें $\frac{1}{4}$ की वृद्धि होगी। सबसे अधिक वृद्धि होने जा रही है समूरी जानवरोंके पोषण और शिकारमें।

विनोकुरोफने कहा—इन आंकड़ोंसे पता लगेगा, कि याकूतियाने इन २५ वर्षोंमें कितनी तेजीसे तरक्की की, और करने जा रही है।"

क्रान्तिसे पूर्व रूस छोड़ आधे युरोपके बराबर इस भूखंडके बारेमें लोग क्या जानते थे? इसका विशाल आकार है, लोग पिछड़े। दुनियाकी बड़ी नदियोंमें एक लेना इसके भीतरसे बहती है। यहाँकी भूमि चिर हिमीभूत और पृथिवीका शीततम स्थान है, जहाँ तापमान—७०° सेंटीग्रेड (ऋण सवासौ फार्नहाइट) तक नीचे गिरता है। याकूतियाकी खनिज सम्पत्ति—सोना, लोहा, कोयला, सीसा—मालूम थी, यद्यपि उसे बहुत कुछ अछूता रक्खा गया था। खेती अत्यन्त पुराने ढंगसे की जाती थी और याकूत लोग अक्सर फसलको अपने साधारण चाकूसे काटते या हाथसे नोचते थे।

अब वह पुरानी याकूतिया नहीं रही। याकूत, उसके बीबी बच्चे, बूढ़े मा-बाप, ढोर, कुत्ते, बिल्ली अब भूखे नहीं रहे और १६११में लिखे इस वाक्य पर विश्वास नहीं आयेगा "यह कहा जा सकता है कि उसके यूर्त (तम्बू)में चूहा भी भूखा है, क्योंकि घरमें खानेके लिये कोई भी चीज नहीं है। यह लगातार भूखका देश है।" याकूतियाके महामन्त्री वीनोकुरोफ़ ने कहा—"अब परतन्त्र भूख-पीड़ित पुरानी याकूतिया कबकी नहीं चली गयी, उसकी प्राकृतिक कठिन परिस्थितियाँ भी बदली जा रही हैं। कृषि और ढोरके विशेषज्ञ याकूत कलखोजियोंकी सहायता कर रहे हैं और सदासे हिमीभूत जमीनको भी फसल देनेके लिये मजबूर और पशुओंको भी अधिक दूध-माँस देने लायक बना रहे हैं। ट्रेक्टर, कम्बाइन और अनेकों तरहकी खेतीकी दूसरी मशीनें प्रजातन्त्रके खेतोंमें काम कर रहे हैं। क्रान्तिके पहलेकी अपेक्षा आठगुना अधिक जमीन खेतोंमें परिणित हो गई है। सूखा या अवर्षण याकूतियाके लिये सबसे बड़ी आफत

रही, लेकिन आज साइन्सवेत्ता और व्यवहार-पटु किसान, बर्फ और धरतीके नीचेके यखके उपयोगकी समस्याके सम्बन्धमें अनुसन्धान कर रहे हैं।

उद्योग-धन्धेमें और भी तेजीसे परिवर्तन हुआ है। पिछली पंचवार्षिक योजनाओं द्वारा उद्योग-धन्धेकी उपज ५०गुना बढ़ी है। लेनाकी सुवर्ण-खनियाँ पहले भी मशहूर रही हैं। १६२२में अल्दनके सुवर्ण-क्षेत्रका पता लगा। दो सालके भीतर इस निर्जन-भूमिमें १३ हजारकी आबादी-का शहर बस गया। १६३६में अल्दन सुवर्ण-क्षेत्र अपनेसे पुराने जुग्जुर सुवर्ण-क्षेत्रका प्रतिद्वन्दी बन गया।

भूगर्भ-शास्त्री तथा दूसरे प्राकृतिक सम्पत्तिकी नापी वाले बराबर काम कर रहे हैं और उन्हें कई मूल्यवान धातुओंका यहाँ पता लगा है। तेल, कोयला, तुँग्स्तेन, मोलिब्देनम्, राँगा और दूसरे धातुओंका काम तुरन्त होने जा रहा है। यातयातकी सुविधाओंपर नयी पंचवार्षिक योजनामें खास तौरसे ध्यान दिया गया है। नदी यातायातके पाँच संगठन स्थापित हुए हैं और युद्धके समाप्त होनेके साथ ही १३० स्टीमर, सैकड़ों बड़ी नौकायें, घाट और जहाज निर्माणके कारखाने आदि काम कर रहे हैं। लेनाके मुहानेपर एक आधुनिक ढंगकी बन्दरगाह तैयार हो गई। याकुत्स्क प्रजातन्त्रकी राजधानी एक स्वच्छ-स्वस्थ और समृद्ध नगरोंमें परिणत हो गई है। प्रजातन्त्रके हर जिलेके साथ इसका विमान द्वारा सम्बन्ध है। यही नहीं मास्को और सुदूर-पूर्वमें भी यहाँसे विमान बराबर उड़ते रहते हैं। पहले याकुत्स्कसे मास्को जानेमें ४५ से ५० दिन लगते थे, और सो भी गर्मी गर्मीमें, और अब हर समय सिर्फ दो दिनमें उड़कर मास्को पहुँचा जा सकता है।

क्रान्तिसे पहले मुश्किलसे २ सैकड़ा याकूत पढ़ लिख सकते थे, अब वहाँके ५०० स्कूलोंमें साठ हजार विद्यार्थी पढ़ रहे हैं।

याकूत इञ्जीनियर, डाक्टर, कृषिविशेषज्ञ और अध्यापक पाँच हजार-की तादादमें हैं।

देशमें उद्योग-धन्धा; कृषि और संस्कृतिके शीघ्र विकासने विशेषज्ञों-की माँग बढ़ा दी है। कृषि, उद्योग, भवन-निर्माण, आयुर्वेद और साइन्स हर विषयमें बहुत भारी संख्यामें लोगोंकी आवश्यकता थी। इसलिये प्रजातन्त्रकी सरकार याकुत्स्कमें युनिवर्सीटी खोलनेका विचार कर रही है—अपनी भाषामें पढ़ानेवाली युनिवर्सिटी। और अधिक संख्यामें होनहार विद्यार्थी रूसी युनिवर्सिटियों और साइन्स-अकदमीके अनुसंधाना-लयोंमें भेजे जा रहे हैं।

विनोक्रोफ़ अपने लोगों का मेहनती, सजग और सङ्गठन-निपुण नेता है। याकूतियाका यह महामन्त्री ५० सालसे कुछ ही अधिकका है। उसका शरीर हट्टा-कट्टा और कद मध्यम है। उसकी संकरी तिर्छी मंगोलीय आँखोंसे प्रतिभा और सजगताकी झलक आती है। वह रूसी भाषा बोलता है। वह एक गरीब किसान-परिवारमें पैदा हुआ। बचपन हीमें बापके मर जानेसे वह धनी व्यापारियोंके यहाँ मजदूरी करता रहा। कुछ समय एक ईसाई स्कूलमें उसने पढ़ा भी, फिर निर्वासित रूसी क्रान्तिकारियोंसे कुछ सीखा। लड़कपनमें उसने अपने इलाकेमें मजदूरी की, फिर वह उत्तरकी ओर चला गया और नवोसिबिर्स्क द्वीपोंमें मछली मारने और शिकारसे गुजारा करता रहा।

सोवियत् सरकारकी स्थापनाके बाद १९२०में वह देश लौटा। शुरू हीसे वह सार्वजनिक काममें पिल पड़ा। वह पार्लियामेंटका मेम्बर चुना गया। देहाती इलाकेका चेयरमैन, फिर जिलों के सोवियतोंका चेयर मैन चुना गया। साथ-साथ समय बचाकर पढ़ता भी रहा। १९३८में वह सोवियत्-संघकी पार्लियामेंट, रूसी प्रजातन्त्रकी पार्लियामेंट और याकू-तिया स्वायत्त प्रजातन्त्र पार्लियामेंट का मेम्बर चुना गया। उसी साल वह अपने प्रजातन्त्र का स्वास्थ्य-मन्त्री बना और अगले साल उप-महामन्त्री।

युद्धका संघर्ष जिस वक्त जोरों पर था, उस वक्त (१६४३ में) उसने महा-मन्त्री का काम संभाला।

(क) कमचत्का (चुखोत्स्क)

मगदन और मेरु समुद्रके बीचकी जमीन बिल्कुल निर्जन सी है। पहाड़, जंगल और बर्फ सब जगह यही दिखाई पड़ते हैं। लोग शिकारी और बारहसिंगा पालनसे जीविका करते हैं। अखोत्स्क समुद्रके पार कमचत्काका प्रायद्वीप है। इसकी लंबाई ७॥ सौ मील है। हिमाच्छादित ऊँचे पहाड़ प्रायद्वीपके दोनों किनारोंपर फैले हुए हैं और बीच में एक उपत्यका है। सुदूरपूर्व के सबसे ऊँचे पहाड़ यहाँ हैं। १६ हज़ार फीट ऊँचा ज्वालामुखी क्लुचेप्स्काया यहीं है, जिसके बीच निम्न-उपत्यकामें उर्बर खेत और घासके मैदान हैं। इसी उपत्यकासे निकल कमचत्का नदी उत्तराभिमुख जाकर समुद्रमें गिरती है—किंतु पेत्रोपावलोव्स्कसे बहुत दूर आगे और उल्टी दिशामें बहती हुई। क्लुचेप्स्कायाके अतिरिक्त और भी १६ जीवित ज्वालामुखी हैं। करीब ५० ज्वालामुखी-शिखर तथा सुप्त ज्वालामुखियाँ हैं। बहुतसे गेसर और गर्म पानीके चश्में भी हैं।

यहाँकी आब-हवा सिबेरिया जैसी है। प्रशांत महासागरके तटपर होने से वर्षा बहुत होती है। बर्फ और तूफान भी आया करते हैं, लेकिन पर्वतोंके बीचकी उपत्यकामें सर्दी कम और मौसम भी सूखासा होता है। अधिकांश प्रायद्वीप जंगलोंसे भरा है। कमचत्का नदी के करीब छ-छ दस-दस फीट लंबी घासोंके मैदान हैं। यह पशुपालोंके लिये स्वर्ग है। कुछ अनाज और तरकारीकी भी फसल होती है, किंतु पशुपालन सबसे अधिक है। यहाँके अधिकांश निवासी खेती नहीं नदी और समुद्रकी मछुआईपर जीविका करते हैं। यहाँके निवासियोंके लिये मछलीका महत्त्व उतना ही है, जितना हम लोगोंके लिये रोटीका। वही उनका और उनके सहायक पशुओंका भी खाद्य है—और वह पशु हैं कुत्ते;

जो इनकी बेर्शहियेकी गाड़ियोंको खींचते हैं। श्वान-शकट कमचत्काके यातायातका सबसे बड़ा साधन है।

मछलियोंमें श्रेष्ठ सामोन (साल्मोन) वहाँ बहुत पैदा होती है। गाँव वाले अपने खर्चके लिये मछली अपने घरोंके बाहर सुखा लेते हैं, किंतु अधिक भाग सिझाकर टीनमें बंद करने वाली फैक्टरियोंमें जाता है। पेत्रोपावलोत्स्क, कमचत्का नदी तथा समुद्रके संगमपर अवस्थित उस्त-कमचात्स्कमें इस तरहकी कितनी ही फैक्ट्रियाँ हैं, जिनमें सारा काम मशीनोंसे होता है। सील और ह्वेलका शिकार भी किया जाता है, किंतु मुख्य व्यवसाय है मछलीका ही। कमचत्कामें सोने और तेलके भी कारखाने हैं। मछुआई-के बाद लोगोंको एक दूसरा बहुत महत्त्वपूर्ण व्यवसाय है शिकार। यहाँके जंगलों और पहाड़ोंमें सफेद रीछ, समूरी जानवर शावले और जंगली भेड़ें होती हैं। शिकारी लोग शिकारके साथ-साथ बारहसिंगे भी पालते हैं।

पेत्रोपावलोत्स्क बड़ा शहर है। नगरमें बिजलीकी रोशनी है। जहाज बनाने, मछली तैयार करनेके कारखाने हैं। यहाँसे एक सड़क पश्चिमी तटको गई है। बेयरिंग जल-डमरूमध्यसे अखोत्स्क समुद्रके किनारे-किनारे अमूर नदीके सागर-संगम तक रेलवे लाइन बनानेका विचार है। उसीके साथ मिलानेके लिये पावलोत्स्कसे एक रेलवे लाइन ले जायी जायेगी। पावलोत्स्क नौसैनिक और वायुसैनिक अड्डा भी है। अमेरिकासे जिस तरह-का संबंध आजकल है, उससे यदि बेयरिंग-आमूर रेलवे जल्दी बनने लगे, तो कोई आश्चर्य नहीं। अमेरिकाने भी उधर समुद्रके दूसरी तटपर अलास्काके साथ जोड़नेमें वही काम किया है। कमचत्काके निवासियोंमें आधे से कम एस्किमो जातियाँ—कमचदल, कोरियक, एवेन्की और लामूत—हैं, बाकी रूसी हैं जिनकी संख्या ३५ हजारके करीब होगी। एक चौथाई रूसी पेत्रोपावलोत्स्कमें रहते हैं।

× × ×

(ख) चुखोत्स्क प्रायद्वीप—यह सोवियत-भूमिका सबसे पूर्वी भाग

है। बीचमें सोवियत और युक्त राष्ट्र अमेरिकाकी सीमाको एक साढ़े तीन मीलका पानी अलग करता है। एक द्वीपमें एस्किमो रहते हैं और दूसरेमें अमेरिकन। शायद यही जगह है, जहाँ होकर प्रागैतिहासिक कालमें अमेरिकन 'इंडियन' एसियासे उधर गये। जाड़ोंमें समुद्र जम जाता है, इसलिये आने-जानेकी रुकावट नहीं होती। गर्मियोंमें नावें इधरसे उधर चलती रहती हैं। युद्धके वक्त अमेरिकाने अलास्का तकका बड़ा खर्चीला राजपथ बना दिया। सोवियतके जहाज, जो अर्कटिक समुद्रके किनारे-किनारे चलते हैं, इसी रास्ते मूर्मान्स्कसे प्रशांतसागर पहुँचते हैं।

यह प्रायद्वीप उत्तर और दक्षिण दो भागोंमें बटा है। बीचमें अनादिर पर्वत किनारेसे पश्चिमकी ओर चला गया है। इस पर्वतकी सबसे ऊँची चोटी ६५०० फीट है। यहाँके अधिकांश बाशिंदे चुकूची और कोरियक हैं। जनसंख्या पंद्रह हजार से ज्यादा नहीं है। चुकूची अधिकांश घुमंतूसा जीवन बिताते हैं। जाड़ोंमें किसी आड़की जगहमें रहते हैं और गर्मियोंमें अपने बारहसिंगोंके साथ आधेके करीब चुकूची अपने जातीय प्रदेशमें ही रहते हैं। कितने ही चुक्ची गाँव भी हैं और और भी बसते जा रहे हैं। कीमती पोस्तीन (कादली मृगचर्म), सील, वलरस आदिका शिकार करते हैं। यात्रा अधिकतर श्वान-शकठसे होती है। रूसी इस प्रदेशमें बहुत कम हैं, अधिकतर वही हैं, जो यहाँकी जातियोंमें शिक्षाका काम कर रहे हैं या रेडियो तथा दूसरे अनुसंधान-प्रतिष्ठानोंमें काम करते हैं। बेयरिंगके तटके निकट सोना, चाँदी, राँगा, सीसा और ग्रेफाइट पत्थरकी खानोंमें काम होता है। अनादिरकी उपत्यकासे आने-जाने वाले जहाजोंके लिये कोयला भी मिल जाता है। अनादिर जहाँ समुद्रसे मिलती है, वहीं अनादिर नामक नगर बसा हुआ है।

(ग) एस्किमो स्कूल—सोवियत्-भूमिके पूर्वी छोरपर चुकोत्स्क प्रायद्वीप है, जहाँ पिछड़ी हुई एस्किमो जातिके लोग रहते हैं। समुद्रके किनारे एक सीधी चट्टानके ऊपर एक इमारत है, जो दूरसे देखनेमें

समुद्रके ऊपर अधरमें लटकी मालूम होती है। यह नौकन स्कूल है, जिससे सबसे नजदीकका रेलवे स्टेशन ६ हजार किलोमीतर पर है। यहाँका समुद्र शीतल, क्रूर और तूफानी है और इसके तटके ऊपर नंगे कंकाल-जैसे घिनौने पहाड़ हैं।

किनारेसे देखनेसे इस इमारतके अतिरिक्त वहाँ कोई मानव-चिह्न दिखलाई नहीं पड़ता। पासमें वालरस (समुद्री जंतु)के चमड़ोंके यरंगी (तंबू) अवश्य हैं, जिन्हें खूँटेसे जमीनमें गाड़कर उड़ न जानेके लिये पत्थरोंसे दबा दिया गया है, किंतु यह तंबू दूरसे मानव-निवासकी अपेक्षा पत्थरके बड़े-बड़े ढोकोंसे ज्यादा मिलते हैं। हवा यहाँ इतनी तेज़ चलती है कि कितनी ही बार आदमीको उड़ाकर समुद्रमें फेंकते देखा गया है। तूफानके वक्त नमकीन फेन स्कूलकी खिड़कियोंपर पड़ता रहता है। उस वक्त लड़कोंको एक-दूसरेके साथ रस्सीमें बाँधकर सँकरे रास्तेको पार कराया जाता है।

स्कूल बड़े सबेरे ही शुरू हो जाता है। सबेरे सात बजे ही मोमबत्तीकी शिखा दीवारसे लटकती कपड़ेकी लालटेनोंमें नाचने और घरकी चिनगी धुआँ देने लगती है; जिससे मालूम होता है, कि स्कूलका लोहेका चूल्हा जला दिया गया है। स्कूलमें चार कमरे हैं, जिनमें सबसे बड़ा पाठ-स्थान है। दूसरा कमरा रसोई, शयनागार और मेहमानखानेका काम देता है। बाकी दो कमरोंमें स्कूलका हेडमास्टर और लेनिनग्रादकी रहनेवाली प्रस्कोव्या कुज़मिनिच्ना वेलिकोवा—एक प्रौढ़ा अध्यापिका रहती है।

प्रस्कोव्याके प्रातराश समाप्त कर लेनेपर घड़ीने भी आठ बजाया। इसी वक्त लेनिनग्राद और मास्कोके दूसरे स्कूलोंकी तरह इस छोटेसे एस्किमो स्कूलमें भी घंटी बजाई गई। रात खत्म होनेमें तो अभी और देर है, इसलिये किरासिनकी लालटेन पढ़नेके कमरेमें जला दी गई। तुरंत भारी किवाड़ी फटाफट करने लगी और नन्हें-नन्हें बच्चे अपनी

समूरी पोस्तीनोंमें ठीक भालुओंकी तरह भीतर आने लगे। उनके गाल ठंढसे गुलाबी और उनकी काजलसी काली आँखें उत्सुकतासे चमकती दीख पड़ती थीं।

तुरंत कमरेमें नीरवता छा गई, बाधा देने वाली अगर कोई चीज़ वहाँ थी, तो वह थी मोमबत्ती या लालटेनकी सिमसिमाहट अथवा खिड़कीके बाहर अंधकारमें सनसनाती हवा। प्रस्कोव्या वेलिकावोके सामने कितनी ही लिखनेकी कापियाँ थीं। वह विद्यार्थियोंके घरके कामको देखने और संशोधन करनेकी कोशिश करने लगीं। कई लड़के उसके संशोधनको बड़ी दिलचस्पीके साथ देख रहे थे। उन्हें यह बहुत आकर्षक सी बात मालूम होती थी और किसी अशुद्ध उच्चारणका अध्यापिका द्वारा संशोधन होनेपर विद्यार्थियोंमें कुछ उत्तेजना भी आ जाती।

प्रस्कोव्या अपने विद्यार्थियोंसे बहुत प्रेम करती है और वह भी उसे बहुत मानते हैं। उनका प्रेम और सम्मान उस दिन प्रमाणित हुआ, जब कि चुकोत्स्ककी झंझाने एक दिन वेलिकोवाके साथ निर्दयताका बर्ताव किया। एक दिन वह अपने रोगी शिष्यके पास गई थी। तूफानी आँधीने उसके पैरोंको हवामें उठा एक चट्टानसे दे मारा। नहीं मालूम क्या होता, यदि किसी स्थानीय निवासीने उसे उठाकर घरपर न पहुँचा दिया होता।

प्रस्कोव्या अपने मित्रसे कह रही थी 'कुछ दिनों तक मैं काफी बीमार रही। डाक्टरने पूर्ण विश्राम लेनेकी आज्ञा दी। हमारे स्कूलकी दीवारें बहुत मोटी नहीं हैं और क्लासके कमरेकी हरेक आवाज़ मेरे कमरेमें सुनाई देती है। लड़कोंका व्यवहार बहुत ही अच्छा था—उनका भला हो। कभी-कभी यदि आवाज आती थी, तो वह केवल कलमके खर-खर करनेकी या दूसरोंको चुप करनेके लिये 'अस्खन' कहनेकी, सो भी साँय-साँयकी आवाजमें। एक और भी बात देखी। दरवाजेसे बाहर जाते वक्त

वह अत्यंत नीरवताके साथ किवाड़ बंद करते थे, हालाँकि मेरे अच्छे होनेपर फिर वह किवाड़ोंको उसी तरह फटाफट बंद करने लगे।"

स्कूलमें काफी जगह और काफी अध्यापिकाओंके न होनेकी वजहसे पढ़ाना बारी-बारीसे पड़ता है। पहले वर्गके विद्यार्थियोंके पढ़ लेनेके बाद दूसरे वर्गके विद्यार्थी आ पहुँचे। इनमें कुछ वयस्क भी थे। उदाहरणार्थ निकुल्यक इक्कीस सालका शिकारी है। वह रात-रात इस प्रतीक्षामें बैठा रहता है, कि क्लास ऊपर आये। शिकारसे लौटकर घर आने तक सुबहके पाँच बज जाते हैं। उसके पास जल्दी-जल्दी जलपान करने भरका समय है और फिर कुछ घंटे लेटनेके बाद स्कूल जाना जरूरी है। जब उसे कहा गया, कि तुम्हारे दिमागपर बहुत जोर पड़ेगा तो निकुल्यक अवज्ञाकी हँसी हँसते हुए बोला—'मेरी चिंता मत करो, मैं इतना स्वस्थ हूँ जितना भालू'। और वह एक भी पाठमें अनुपस्थित नहीं रहा।

जिस वक्त वेलिकोवासे उसका मित्र बात कर रहा था, उसी वक्त एक लड़की कमरेमें एकाएक चली आई और तुरन्त अपनी बीमार माँको देखनेके लिये उसने प्रार्थना की। वेलिकोवा मित्रसे क्षमा-प्रार्थना करते तुरन्त अपने समूरी कोटको पहन और प्राथमिक सहायताके थैलेको ले लड़कीके साथ उस बर्फ, अंधकार और आँधीमें चल पड़ी। घंटे बाद लौटी। स्त्रीने कुछ हेलका मांस खा लिया था, जिससे पेटमें विष फैल गया था। प्राथमिक सहायताके प्रयोगसे उसे कुछ आराम होने लगा।

गंभीर बीमारियोंमें वेलिकोवा बस्तीके सोवियतके प्रधानके पास जाकर तुरन्त वेलेनसे डाक्टर बुलानेके लिये जोर देती है। प्रधान वेलिकोवाका बहुत सम्मान करता है। वह अक्सर स्कूलमें आता, उसके साथ स्थानीय समस्याओंपर विचार करता और कठिन प्रश्नोंमें उसका परामर्श चाहता है। वेलिकोवाके पास आने वालोंमें सोवियतका प्रधान अकेला नहीं है,

स्थानीय निवासियोंके लिये वेलिकोवा डाक्टर भी है, वकील भी है, मित्र भी है।

वेलिकोवाने एक साहित्य-गोष्ठी संगठित की है, जो सप्ताहमें कई संध्याओंको बैठती है और उसमें रूसी और दूसरे विश्वके महालेखकोंकी पुस्तकें ऊँचे स्वरसे पढ़ी जाती हैं। वेलिकोवा अबकी बार वेलेन (प्रधान नगर)से तीन-चारसौ किताबें लाई और वह धीरे-धीरे स्थानीय निवासियोंमें साहित्यके प्रति प्रेम पैदा कर रही है। उसके शिष्योंमें उन पुस्तकोंके प्रति रुचि पैदा हो गई है और कितनी ही बार वह अपने साथ 'रुस्लान और लुद्‌मिला' अथवा 'कप्तानकी कन्या'को सुननेके लिये अपने माँ-बापको भी लाते हैं। यह सोचना कठिन है, कि बीस साल ही पहले इस प्रदेशमें एक भी ऐसा आदमी नहीं था, जो लिखना-पढ़ना जानता हो।

मध्य-रात्रिके करीब अंतमें स्कूल सूना हो जाता है। पहाड़ों और ध्रुवकक्षीय बर्फपर थप्पड़ लगाते महाबवातकी भीषण ध्वनिको सुनते वेलिकोवा सोनेकी तैयारी करती है। उस वक्त उसे याद आते हैं, हजारों मील दूरके महानगर, उनकी दुकानोंकी प्रकाशमान खिड़कियाँ, और अस्फाल्टकी सड़कोंपर चमचमाती मोटरोंकी नीरव फिसलन। फिर वह सोचती है हिमाच्छादित उस विस्तृत तुंद्रा और ताइगाको, जो कि उसके और उन नगरोंके बीचमें है। फिर उसे एकाएक ख्याल आ जाता है, कि मैंने अपनी तरुण एस्किमो अध्यापिकाको अगले दिन पढ़ानेके लिये एक पुस्तक देनेका वचन दिया है।

(६) दाग़िस्तान स्वायत्त प्रजातंत्र

पहाड़ी गाँव उरखीके निवासी महमेद मेजिदोफ दाग़िस्तान प्रजातंत्रके शिक्षामंत्री हैं। उन्होंने बतलाया, कि किस तरह सोवियतकी अनिवार्य शिक्षाका कानून इस प्रजातंत्रमें काममें लाया जाता है। यहाँ छत्तीस भिन्न-भिन्न भाषायें और बोलियाँ बोली जाती हैं।

दागिस्तान अल्बानियासे भी छोटा देश है । जनसंख्या दस लाखसे ज्यादा नहीं और कोई भी एक राजभाषा नहीं । इसके गाँव काकेशस-पर्वत-मालामें बिखरे हुए हैं, जहाँ जाड़ेमें आपस का तथा बाहरी दुनियाका सम्बन्ध बिल्कुल कट जाता है । मंत्रीने बतलाया, कि उसके जन्म गाँव—उरखी—से तीन किलोमीतरके घेरेमें कितने ही गाँव हैं, जो भिन्न-भिन्न भाषायें बोलते हैं । कुबाची गाँव—जो अपने सोने और और रूपेकी दस्तकारीके कामके लिये विश्वविख्यात है—के लोग ऐसी एक भाषा बोलते हैं, जिसका काकेशसकी दूसरी बोलियोंसे कोई सादृश्य नहीं ।

शिक्षा-मंत्रीने कहा—"सोवियत सरकारकी स्थापनासे पहले सौमें तीन आदमी पढ़ लिख सकते थे । सारे दागिस्तानमें कुछ हजार ही आदमी आरम्भिक शिक्षा-प्राप्त थे ।"

सार्वजानिक अनिवार्य शिक्षाका दाग़िस्तानमें जारी करना बड़ा टेढ़ा काम था । भाषा-शास्त्री सहायताके लिये पहुँचे और उन्होंने छत्तीस बोलियों-मेंसे छको शिक्षाका माध्यम चुन लिया । यह थीं—(१) अवार, कुमिक, दर्गिनि, लेसगिन, लक और तत्रसरन्त्सी लोगोंकी भाषायें प्रजातन्त्रके विधानमें इन छ और रूसी भाषाको राजभाषा घोषित किया गया । फिर इन भाषाओंके लिये लिपि और साहित्यिक रूप देनेका काम शुरू हुआ । मेजिदोफ स्वयं दर्गिन हैं । उन्होंने अपनी भाषाके सम्बन्धमें कहा—दर्गिन भाषाकी कई बोलियाँ हैं । विद्वानोंने इन बोलियोंमें बहुप्रचलितको आधार बनाया और फिर सभी बोलियोंसे आवश्यक शब्द लेकर दर्गिन भाषाको समृद्ध किया । उच्चारणको देखकर अक्षर तैयार किये गये, जो पहले रोमनसे लिये गये थे और १६४१ के बाद रूसी अक्षरसे । फिर दर्गिनि भाषाका व्याकरण और कोष बनाया गया, पाठ्य पुस्तकें छापी गई । ट्रेनिंग स्कूलों और इन्स्टीट्यूटोंमें दर्गिनी विभाग खोले गये । दर्गिनी बहु-मत वाले सात जिलोंमें इसी साहित्यिक दर्गिनी भाषामें समाचार-पत्र और

पुस्तकें प्रकाशित होने लगीं। थोड़े ही समय बाद लेखक और कवि मैदान-में आने लगे।

दागिस्तान प्रजातन्त्रमें सबसे अधिक संख्या अवार लोगोंकी है, वह ढाई लाखके करीब हैं, और सबसे छोटी सन्खया तबसरन्सी ३५ हजार संख्या रखते हैं। सभी दागिस्तानी उक्त मूल छ आधारभूत जातियोंसे जोड़ दिये गये हैं। इस तरह दागिस्तानमें बसने वाली सारी जातियोंकी शिक्षाकी नींव रखना संभव हो सका।

साहित्यिक भाषाका निर्माण धीरे ही धीरे होता है, बल्कि वह काम अब भी पूरा नहीं हुआ है। इस कामके लिये एक खास वैज्ञानिक-अनु-सन्धान-प्रतिष्ठान (इस्टीट्यूट) कायम किया गया है। वह उच्चारणके नियमोंको सम्पादित और पूर्ण करनेके कामको कर रहा है और साथ ही पाठ्य-पुस्तकों, ट्रेनिंग तथा कोशकी पुस्तकोंको भी तैयार कर रहा है। उधर कालेजोंमें शिक्षकोंकी ट्रेनिंग हो रही है। दागिस्तानी पहाड़ियोंका—जो कि शताब्दियोंसे एक दूसरेसे अलग थे—शब्दकोश बराबर समृद्ध हो रहा है। इस कामको पूरा करनेके लिये एक क्या दो दशाब्दियाँ चाहिएँ। इस बीचमें स्कूलोंमें चार क्लासों तक ही जातीय भाषाओंमें पढ़ाई हो रही है। पाँचवीं क्लास और ऊपरकी शिक्षा रूसी भाषामें होती हैं। अगले पाँच सालोंमें आशा है, कि मातृ-भाषा छठी-सातवीं क्लासका माध्यम बन जायगी, लेकिन यह विद्वानों और अध्यापकोंके आवश्यक पाठ्यपुस्तकोंके तैयार करने तथा अध्यापकोंको उच्च क्लासों-सम्बन्धी शिक्षापर निर्भर करता है।

सरकारी कारबार जिलोंमें छ सरकारी भाषाओंमें से किसी एकमें किया जाता है, किंतु दूरके पहाड़ी गाँवोंमें स्थानीय बोलियोंका भी उपयोग होता है। मंत्रियोंके विभाग तथा दूसरी प्रजातन्त्रीय संस्थाएँ आपसमें रूसी भाषाका व्यवहार करती हैं। स्थानीय संस्थाओंके साथ पत्र-व्यवहारमें जातीय भाषाओंका उपयोग होता है। शिक्षा-विभागके

कितने ही कर्मचारी रूसी तथा छहों जातीय भाषाओंको बोल सकते हैं, इस लिये प्रजातन्त्र-सम्बन्धी हरेक निश्चयको सातों राजभाषाओंमें अनुवाद कर दिया जाता है—महमेद मेजिदोफ़् रूसीके अतिरिक्त दो और भाषाएँ जानते हैं।

दागिस्तानके मन्त्रिमण्डलमें कई जातियोंके प्रतिनिधि शामिल हैं। प्रधानमन्त्री अवार हैं, जोकि शिक्षामें इंजीनियर हैं। उनका एक सहायक शिक्षा-सम्बन्धी उच्च-ट्रेनिंग-प्राप्त दर्गिन है। म्युनिस्पलशासन-मन्त्री सिविल इंजीनियर और जातिसे क्युमिक हैं। मन्त्रियोंमेंसे हरेक कई राजभाषाओंके जाननेवाले हैं। मन्त्रि-मण्डलकी बैठकें रूसी भाषामें होती हैं, लेकिन स्थानीय सोवियतों (पञ्चायतों) और संस्थाओंके प्रतिनिधि आम तौरसे अपनी भाषामें बोलते हैं, जिसे जरूरत पड़नेपर रूसीमें अनुवादित कर दिया जाता है।

प्रजातंत्रकी भाषा-समस्याको भौगोलिक कारण और पेचीदा बना देते हैं। दागिस्तानमें बहुतसे छोटे-छोटे गाँव है, जिनमें से कितने हीमें दो या तीन सौ आदमी बसते हैं। जाड़ोंमें बर्फके पड़ जानेसे इन गाँवोंका सम्बन्ध नगरोंसे क्या अपने पड़ोसी गाँवोंसे भी टूट जाता है। इन गावोंके बच्चोंकी पढ़ाईके वास्ते चार क्लासके बौने स्कूल सरकारकी ओरसे खोले गये हैं। किसी किसी बौने स्कूलमें बारह विद्यार्थी और एक अध्यापक रहता है। कहीं कहीं विद्यार्थी दो बारीमें आकर पढ़ते हैं।

चार क्लासोंको समाप्त करके पहाड़ी लड़के और लड़कियाँ सातवीं क्लासके स्कूलोंमें जाती हैं, जहाँ उनके रहनेका भी इन्तिजाम है। १२५ हाई (दस क्लास तक) स्कूलों और ११ सौ छोटे (सात क्लास तकके) स्कूलोंमें लड़के-लड़कियोंके रहनेके छात्रावास हैं। हाई स्कूलोंमें छात्रोंके खाने-पीनेका सारा खर्च सरकार देती है।

दागिस्तानमें कितने ही चलते-फिरते स्कूल हैं। यह उन जिलोंमें

हैं, जहाँके लोग अपने ढोरोंको चरानेके लिये बसंत और ग्रीष्ममें पहाड़ोंकी ऊपरी चरागाहोंमें जाते हैं और जाड़ोंमें नीचे अपने घरोंमें चले आते हैं। इन स्कूलोंके अध्यापक अपने विद्यार्थियोंके साथ चरागाहों-में घूमते रहते हैं।

शिक्षा-मन्त्रीने कहा 'इन सारी कठिनाइयोंके रहते भी आज दागिस्तान-की जनता शत-प्रति-शत साक्षर है', हाँ कुछ हजार बूढ़े स्त्री-पुरुषोंको छोड़ करके। स्कूलमें पढ़नेकी आयुके सभी बच्चे स्कूलोंमें पढ़ने जाते हैं, चाहे वे कहीं भी रहते हों।

बिना माता-पिताके बच्चोंका भी बोझ सरकार अपने ऊपर उठाती है। इसके लिये बाल-भवन स्थापित हैं। शिक्षा-मन्त्री मजीदोफ स्वयं बिना माँ-बापके होनेसे बाल-भवनमें ही शिक्षित हुए। पीछे वह ट्रेनिंग स्कूलमें भेजे गये। कई सालोंकी पढ़ाईके बाद फिर उन्होंने कुछ साल फिजिक्स और गणितकी शिक्षा पाई। मन्त्रि-मण्डलमें सिर्फ अर्थ-मन्त्री ही ऐसे मन्त्री हैं, जिन्होंने कालेजकी शिक्षा नहीं प्राप्त की है। लेकिन वह भी १९४७में कोष-सम्बन्धी इस्टीट्यूटके ग्रेजुएट बनने वाले थे।

मजीदोफ़ने अंतमें कहा 'हमारे आर्थिक जीवनकी कोई शाखा ऐसी नहीं है, जिसका संचालन हमारी जातिके विद्वान् न करते हों। यह है काम जिसे २५ वर्षकी स्वतन्त्रताने पूरा किया।'

(११) अबखाज़िया स्वायत्त-प्रजातंत्र

अबखाज़िया काकेशसका एक छोटासा प्रजातंत्र है। १९४६ के आरंभ में दस हजार एकड़में यहाँ नीबू-नारंगीके बगीचे थे, तेईस-हजार एकड़में चाय और साढ़े दस हजार एकड़में तुंगके बाग थे। वर्तमान पंच-वार्षिक योजनामें अधिक बाग और अधिक उपजपर जोर है। खास करके नींबू-नारंगीके बगीचों को नब्बे प्रतिशत बढ़ाना है। चायके बागोंमें पाँच हजार एकड़ और तुंगके बागोंमें ढाई हजार एकड़की वृद्धि होगी। योजना-का एक बड़ा भाग है, एक करोड़ दस लाख युक्लिप्टसके पेड़ लगाना।

अबखाज़िया की अबोहवा दार्जिलिंगकी तरहकी है। इसलिये वहाँ चाय, नींबू, युक्लिप्टस् और बांसकी उपज अच्छी होती है। जहाँ ये नये तरहके वृक्ष लगे हैं, वहाँ पहले क्या था? अचिन्वरी चायबागके डाइरेक्टर निकीफोर अब्लोतियाने एक पहाड़की पीठपर खड़े हुए कहा—यह सब बगीचा, कमकरोंके मकान और दूसरी इमारतें जहाँ हैं, वहाँ पहले जंगल था। मैं इसी प्रदेशमें पैदा हुआ। मुझे याद है कि कैसे लोग जंगली भेड़ियोंसे यहाँ भय खाते थे। बाग़ तैयार करनेके लिये सिर्फ़ जंगल काटना और चायके पौधे लगना भर ही काफी न था, बल्कि कमकरोंके रहनेके वास्ते अच्छे मकान, जल-कल और दूसरी चीजोंका भी इन्तिजाम करना था।

पहला बगीचा गली जिलेमें लगाया गया। चायका बाग ही नहीं बल्कि स्कूल भी बनाना था। यहाँ कलखोजी किसानोंने चाय लगाना, झाड़ों को सँभालने और पत्तियाँ चुनने का काम सीखा। अब सारा गली जिला चाय-बगानका इलाका है।

पहले-पहल चाय-बागमें दो सौ एकड़ ज़मीनमें चाय लगी। वहाँ पाँच सौ कमकर काम करते। अब कुल मिलाकर बस्तीमें पन्द्रह सौ आदमी रहते हैं। बस्तीमें अपना स्कूल, नर्सरी (शिशुशाला), बालोद्यान, चिकित्सालय और सिनेमाघर है।

यही कहानी इलिच सरकारी बागकी भी है। यहाँ अबखाज़ियामें ही नहीं बल्कि सारे गुर्जी में सबसे बड़ा नींबू-नारंगी-उद्यान है। पहले भी यहाँ फल के बाग थे, लेकिन उनमें नींबू-नारंगीके वृक्ष नहीं थे। पुराने मालिक ने कोशिश की थी, लेकिन वह सफल नहीं हुआ। लोगोंने समझ लिया था, कि यह भूमि नींबू-नारङ्गीके अनुकूल नहीं हैं। लेकिन सोवियत बागवानोंने बतला दिया, कि उनकी धारणा गलत थी। इलिच-बाग सिर्फ़ फल ही नहीं पैदा करता, बल्कि दूसरे बागोंको पौधा और परामर्श भी देता है।

कलखोजों (सामूहिक खेती)ने गर्म देशके फलवृक्षोंके लगानेका ढंग सीख लिया है, उनसे आमदनी भी अच्छी होती है। सरकारने आरम्भमें उन्हें बिना सूदके कर्ज दिया। अब उनको उसकी जरूरत नहीं। तो भी सरकार अधिक पैदावार दिखलाने वालोंको मूल्यके ऊपरसे बोनस भी देती है। लेकिन कलखोजोंने दूसरे फलोंकी बागवानी छोड़ नहीं दी है। इसके अतिरिक्त उनके पास काफी एकड़ अंगूर, सेब, तुगं वृक्ष, सब्जी ही नहीं काफ़ी ढोर और मधुछत्र भी हैं।

नई पंचवार्षिक योजनाका प्रभाव भी साफ दिखलाई पड़ रहा है। हर जगह नई जमीन तोड़ी जा रही है। भारी संख्यामें पौधकी आवश्यकता होगी, इसलिये नर्सरी भी इसके लिये तैयार हो रही हैं—सिर्फ नींबू-नारंगीके ही ३४ लाख पौधें अवश्यक होंगे।

इस समय फिर सरकार गर्म मुल्कके फलोंके बढ़ानेके लिये कलखोजोंको मदद दे रही है। सरकार प्रत्येक हेक्तर इन फलोंके लगानेपर एक टन अनाज देती है, बाग लगा देनेपर प्रत्येक वृक्षके लिये दो किलोग्राम अन्न मुफ्त प्रतिवर्ष पाँच साल तक देती रहेगी। साइंस भी अच्छी जातिके बीज तैयार करनेमें सहायता कर रहा है।

अबखाज़ियामें घूमने वाले यात्रीके ध्यानको यहाँकी सड़कें भी खींचे बिना नहीं रहेंगी। इनमें कितनों हीपर अस्फाल्ट बिछा हुआ है, कितनी ही पत्थरके गोल ढोंकों की हैं, किन्तु सभी सड़कोंके किनारे वृक्ष लगे हुए हैं।

अबखाजियाके किसानोंके घर एक-महले हैं, कितनोंपर लाल टाइलकी छतें हैं, कितने ही कुटीर सड़कसे हटकर फलवृक्षों और हरी बाढ़ोंसे ढँके हैं। कलखोजोंके आफ़िसों, देहाती अस्पतालों, क्लबघरों या स्कूलोंकी इमारतें बड़ी और चित्ताकर्षक हैं। प्रत्येक गाँवमें स्कूल है। आज जिस इलाकेमें ४५ कलखोज हैं, वहाँ ज़ारके जमानेमें सिर्फ एक स्कूल था, और वह भी दो क्लास तक। लड़कोंमें खेलोंके लिये दिलचस्पी है। स्कूलोंमें बोलीबालका क्षेत्र और दूसरे तरहके खेलोंका प्रबंध है। कहीं-कहीं तो फुटबालका

भी मैदान है। बच्चे स्वस्थ, हँसमुख और चुस्त हैं। अवखाजियाँ सूर्य-चुंबित फलोंको ही नहीं बल्कि सूर्यतप्त, स्वस्थ, शिक्षित संतानोंको भी पैदा कर रही है।

(११) कबरदीय स्वायत्त-प्रजा-तन्त्र

कबरदीय स्वायत्त सोवियत् समाजवादी प्रजातन्त्रने १९४६में अपनी २५वीं वर्षगाठ मनाई। यह प्रजातन्त्र रूसी फेडरल प्रजातन्त्रके भीतर काकेशस पर्वत-माला की एक छोरपर अवस्थित है। लोगोंकी जन-संख्या चंद लाखसे अधिक नहीं है।

सदियोंकी दासताके बाद सोवियत् क्रान्तिने कबरदीय जनताको स्वतन्त्रया प्रदानकर उसके लिये अपनी आर्थिक उन्नति और जातीय विकासका दरवाजा खोल दिया। सोवियत्की सहायताने कबरदीयोकी उन्नतिमें कितना काम किया, इसके बारेमें स्तालिनको पत्रमें—जो कि पहली सितम्बरके समाचार पत्रोंमें छपा था—लिखते हुए उन्होंने बतलाया—

"अक्तूबरकी समाजवादी महाक्रान्तिके पहले कबरदाकी कमकर-जनताका जीवन भारसम और अत्यन्त दयनीय था। शताब्दियोंसे वह कबरदी सरदारों, तुर्क खानों और ज़ारशाही हाकिमोंके जूएके नीचे पिस रहे थे। हमारी सारी सम्पत्ति, भूमि, पशु और चरागाहें उनके हाथमें थीं। ज़ारशाही सरकारकी इन अरूसी जातियोंके प्रति यही नीति थी, कि उनमें स्वतन्त्रताका बीज उगने न पाये, उनकी संस्कृतिको बढ़ने न दिया जाय, भाषाको दबा दिया जाय और उन्हें सदा अज्ञानमें रखा जाय।"

महाक्रान्तिने कबरदाकी जनताको युगोंके अत्याचारसे मुक्त किया, लेकिन जनताके शत्रुओंने सोवियत्-राज्यके विरुद्ध युद्ध छेड़ा। मध्य-वर्गीय राष्ट्रवादियोंकी क्रान्ति-विरोधी गुट्टोंने जनताको आतंकित कर जातीय-वैमनस्यकी आग भड़काई और साथ ही उत्तरी काकेशसमें जेनरल देनिकिन्के क्रान्ति-विरोधी लुटेरोंने उपद्रव मचाया। उक्त पत्रमें इसके बारेमें लिखा गया—

"हमारे इतिहासके इस कठिन समयमें काकेशसमें सोवियत् सत्ताकी स्थापनाके लिये पहाड़ी लोगोंका संघर्ष हुआ, जिसका नेतृत्व, साथी स्तालिन! तुम्हारे आदेशसे सेर्गेइ मिरनोविच किरोफ़ और सेर्गो ओर्जोनीकिद्ज़ेने सँभाला। उन्होंने उत्तरी काकेशसके बोलशेविक संगठनोंको एकता-बद्ध किया। गरीब पहाड़ियोंकी गोरीला टुकड़ियाँ सङ्गठित कीं और उन्हें क्रान्तिविरोधियोंसे लड़नेके लिये तैयार किया। मार्च १९२० में कबरदामें सदाके लिये सोवियत् सत्ता स्थापित हो गयी।

"योसेफ़ विस्सारियोनोविच्! हमें तुम्हारा वह ऐतिहासिक भाषण याद है, जब कि नवम्बर १९२०में तेरेक-जनोंकी कांग्रेसमें तुमने पहाड़ी लोगोंके लिये सोवियत् स्वायत्त-शासनकी घोषणा की। तुमने कहा था, कि आजसे पहाड़ियोंकी दासता और उनके ऊपर अत्याचारका युग सदाके लिये चला गया। और वही बात हुई। सोवियत्-सत्ताने हमें स्वतंत्रता और सुखका जीवन प्रदान किया। हम तुम्हारे अत्यन्त कृतज्ञ हैं, योसेफ़ विस्सारियोनोविच्! उस पितृवत् वात्सल्यके लिये, जिसे तुमने सदा कबरदाकी जनताके प्रति दिखलाया।"

उक्त पत्रसे मालूम होता है, कि महाक्रान्तिसे पहले कुछ छोटी-छोटी आटा-मिलें, आरा-मिलें, ईंटा-चूना-खपड़ाके छोटे-छोटे भट्ठोंके सिवा कबरदामें कोई उद्योग-धन्धा न था। सोवियत्-कालमें इस प्रजातन्त्रमें कई कारखाने बने—तुंगुस्तेन और मौलिब्देनम्की फेक्टरी, मशीन बनानेका कारखाना तथा और कितनी ही फेक्टरियाँ खुलीं! प्रथम पंचवार्षिक योजनामें बक्सन्का पन-बिजली स्टेशन बना, जिसकी बिजली सिर्फ इसी प्रजातन्त्रमें काम नहीं आती, बल्कि स्तावोपोल इलाकेके हवाखोरीवाले शहरोंमें भी जाती हैं।

१९१३में कबरदाकी खेती १,१७,००० हेक्तर (१ हेक्तर = २.४७) थी, किन्तु युद्धसे पूर्व-ही वह बढ़कर ढाई लाख हेक्तर (सवा छ लाख

एकड़) हो गई। खेतीके पुराने हथियार कबके भूले जा चुके और उनकी जगह ट्रेक्टरों और कम्बाइनोंने लिया।

द्वितीय विश्व-युद्धके आरम्भमें इस प्रजातन्त्रमें १६ मशीन-ट्रेक्टर स्टेशन थे और ७५% खेती ट्रेक्टरोंसे होती थी। फसलकी उपज साल-ब-साल बढ़ती गयी। १६१३में प्रति हेक्टर ५२० किलोग्राम गेहूँ पैदा होता था, किन्तु युद्धारम्भ (१६४०)में वह १.३ टन दूनेसे अधिक हो गया। ढोरोंकी संख्यामें भी बहुत वृद्धि हुई है। घोड़ोंकी प्रजातन्त्रने एक नयी जाति पैदा की है, जो अपने बल, परिश्रम-सहन और दृढ़ताके कारण रिसालेके लिये बहुत उपयोगी सिद्ध हुए हैं। कृषि और सांस्कृतिक प्रगतिके लिये प्रजातन्त्रको सोवियत् सरकारका सर्वोच्च सम्मान "लेनिन् आर्डर" प्राप्त हुआ।

क्रान्तिके पहले कबरदा लोग बहुत पिछड़े हुए थे। प्राय: सारी जनता निरक्षर थी। उनका न कोई लिखित साहित्य था न लिपि। सोवियत् कालमें उन्हें अपनी लिपि मिली, अपने साहित्यको उन्नत करनेका अवसर मिला। उनकी जातीय संस्कृति आगे बढ़ी। आज कबरदीय लड़के २११ स्कूलोंमें अपनी भाषामें शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। उनके अपने शिक्षक, ट्रेनिङ्गस्कूल, दो कृषि-स्कूल और एक नर्सरी शिक्षा-स्कूल हैं। उनके पास अपना साहित्य और भाषा-अनुसंधान-इन्स्टीट्यूट है, प्राकृतिक इतिहास म्यूजियम है, कबरदीय नाट्यागार हैं। वहाँसे दो प्रजातन्त्रीय और सात जिलेके पत्र छपते हैं।

पत्रमें लिखा है—"जारशाहीके जमानेमें सारे कबरदामें सिर्फ एक अस्पताल था, जिसमें १२ रोगी रह सकते थे। कबरदा लोगोंका लोप होनेवाला था। आज हमारे पास दर्जनों अस्पताल और पोलीक्लीनिक (रोगनिदान-चिकित्सालय), सैकड़ों डिस्पेन्सरी, औषध-केन्द्र, प्रसूतिगृह, नर्सरी और दूसरी चिकित्सा: संस्थायें हैं।"

उस समय कबरदी स्त्रियोंकी स्थिति तो और भी दयनीय थी। अ-

शिक्षा, अज्ञान और अत्याचारसे पीड़ित रहते उन्हें बाहर निकलनेका अधिकार नहीं था। धनियोंने दरिद्रता और पक्षपातके द्वारा जान बूझकर उन्हें दब्बू बना रखा था। सोवियत्-सत्ताने हमारी स्त्रियोंको मुक्त करके समाजवादी समाजका सक्रिय निर्माता बना दिया। आज बहुत सी कबरदी स्त्रियाँ अध्यापिका, डाक्टर, कला और संस्कृतिके क्षेत्रमें काम कर रही हैं। हमारे पंचायती और सरकारी खेतोंमें हजारों तरुण लड़कियाँ फसल और ढोरोंको बढ़ानेमें अनथक काम कर रही है।

"सोवियत् सत्ताकी स्थापनाके बाद हमारी अपनी जातिका बुद्धिजीवी वर्ग तैयार हुआ है।"

मातृ-मुक्ति-युद्धमें कबरदी तरुण बड़ी वीरतासे लड़े। हजारों कबरदियोंने युद्ध-पदक पाये और १६ तो "सोवियत्-संघ-वीर"के सर्वोच्च सम्मानसे सम्मानित हुए।

"जर्मनोंने उत्तरी काकेशसपर अधिकार कर वहाँ जुल्म ढाना शुरू किया, उस वक्त भी कबरदी जनताने फासिस्तोंके सामने घुटने नहीं टेके, बल्कि उनके खिलाफ हथियार उठाया। हमारे प्रजातन्त्रके सुपुत्र गोरीला टोलियोंमें शामिल हो गये। उन्होंमें अत्याचारका बदला लेते हुए सैकड़ों फासिस्तोंको मारा, उनके बहुतसे सामानको ध्वस्त किया। तरुण गोरीला शूरा कोजुत्र और ब्लादीमिर मेलीक्यन्तसके वीरतापूर्ण साहस-कार्योंको हमारी जनता कभी न भूलेगी। वह अपना प्राण देकर भी अमर है।

"अपने थोड़ेसे समयके अधिकारमें जर्मनोंने चार हजार बूढ़े स्त्री-बच्चोंको सासत करके मारा, हमारे उद्योग और कृषिको भारी क्षति पहुँचाई। बक्सन पन-बिजली-स्टेशन और दूसरे कितने ही कारखानोंको बारूदसे उड़ा दिया। वह कबरदाकी राजधानी नलचिकको डीह बनाकर चले गये। कृषिको उन्होंने खास तौरसे हानि पहुँचाई। मशीन-ट्रेक्टर स्टेशन पूरी तौरसे बर्बाद कर दिये गये। २६ हजार खेतीकी मशीनें तोड़ डाली गयीं। २,३७,००० हेक्तर अनाजके खेत और १,४८६ अंगूरों और

मेवोंके बाग धूलिमें मिला दिये गये। जर्मनोंने कबरदाको ढाई अरब रूबलकी आर्थिक क्षति पहुँचाई।"

जर्मनोंके भगते ही कबरदा लोग कमर बाँध कर देशके पुनर्निर्माणमें जुट गये। सारे मशीन-ट्रेक्टर-स्टेशन, कलखोज और सोवखोज फिरसे पहिली अवस्थामें काम करने लगे। साल-ब-साल खेतीकी भूमि बढ़ाई जा रही है। कारखाने भी काम करने लगे हैं। तुंग्स्तेन, मोलिब्देयम्का बड़ा कारखाना युद्धके पहले जैसा उत्पादन करने लगा। बक्सन पन-बिजली-स्टेशन भी पूर्ववत् काम कर रहा है। हजारों लड़के पहलेकी तरह अपनी शिक्षामें लगे हैं। अस्पताल और स्वास्थ्य सम्बन्धी संस्थायें और बढ़ी हैं। नलचिकमें एक नयी नाट्यशाला बनायी गयी है।"

पत्रमें आगे कहा गया—"हमें अच्छी तरह मालूम है, साथी स्तालिन! कि हमने अबतक जो कुछ किया है, वह उसके सामने बहुत कम है, जो आगे हमें करना है। हम जानते हैं, कि हमारे सामने नयी पंच-वार्षिक योजनाको पूरा करनेका भारी काम है।...हम कबरदा प्रजातन्त्रके कमकर जन तुम्हारे सामने शपथ करते हैं, कि हम नयी पंचवार्षिक योजना को पूरा करेंगे और योजनासे अधिक पूरा करेंगे; और इस तरह सोवियत्-सङ्घकी कृषि और उद्योगके पुनर्निर्माण और विकासमें अपना आवश्यक भाग पूरा करेंगे।

"नयी पंचवार्षिक योजनामें हम अपने उद्योग-धन्धोंकी केवल पुनः स्थापना ही नहीं करेंगे, बल्कि बहुतसे नये कारखानोंको बनायेंगे और उपजको युद्धके पहलेके तलसे ऊपर ले जायेंगे। हम अपने पहाड़की नहरों, नदियोंको विद्युत-शक्तिमें परिणत करेंगे। नये पन-बिजली-स्टेशन बनायेंगे और अपनी सारी शक्ति लगाकर अपने प्रजातन्त्रकी खनिज और प्राकृतिक सम्पत्तिका अधिक उपयोग करेंगे।

"कबरदी प्रजातन्त्रके कल-खोजी और सोव-खोजी किसान, मशीन-ट्रेक्टर-स्टेशनोंके कर्मी और कृषि-विशेषज्ञ अपने अनुभव और ज्ञानका

उपयोग करते अपनी सारी शक्ति लगा देंगे, जिसमें अधिकसे अधिक अनाज और कृषिकी उपजको देशको दें। पंचवार्षिक-योजनाके अन्तमें प्रतिहेक्तर कमसे कम डेढ़ टन अनाज, डेढ़ टन सूर्यमुखी दाना और दस टन आलू देंगे।

"हमारे सामने सबसे महत्त्वपूर्ण काम है, सार्वजनिक शिक्षा, साहित्य, साइन्स और कलाको और ऊँचे तलपर ले जाना। प्रिय योसेफ़ बिस्सारि-योनोविच्! हम तुमको बचन देते हैं, कि हम अपनी जातीय संस्कृति को हर तरहसे विकसित करेंगे।"

अध्याय ३

(सोवियत्‌नेता *)

लेनिन्

(क्रान्ति-विजेता)

(प) जीवनी

वोल्गा रूसकी विशाल और पवित्र नदी है। इसकी पवित्रता रूसके ईसाई-धर्म स्वीकार करनेसे पहले भी थी। विशालता तब भी थी और अब भी है। यह विशालता उसकी लंबाई, चौड़ाई और पानीकी गहराईके ही कारण नहीं, बल्कि यह सदा वीरप्रसविनी रही है। और कैसे वीर ! जिन्होंने दलितोंके लिए युद्ध किया। पुगाचोफ़् यहीं हुआ था, राज़िन् यहीं पैदा हुआ था। उन्होंने पीड़ित किसानोंके पक्षमें तलवार उठाई थी।

१८७० की २२ अप्रैलको उसी वोल्गाके मध्यवर्ती प्रदेशके सिम्बिर्स्क (वर्तमान उल्यानोफ़्) नगरमें ब्लादिमिर् इलिच् उल्यानोफ़् पैदा हुआ।

ब्लादिमिर् का बाप इल्या निकोलायेविच् उल्यानोफ़् सिम्बिर्स्क प्रान्तके प्राइमरी-स्कूलोंका इंस्पेक्टर था। उसकी पत्नी मरिया अलेक्सन्द्रोब्ना एक छोटेसे संभ्रान्त ज़मींदारकी लड़की थी। उसके बापकी ज़मींदारी कज़ान् प्रान्तमें थी। गर्मीके दिन अकसर परिवारके लोग वहाँ बिताया करते थे।

इल्या उल्यानोफ़्के छः बच्चे थे। सबसे बड़ा अलेक्सन्द्र था, फिर ब्लादिमिर, फिर दूमित्रि। अन्ना, वोल्गा, मरिया तीनों छोटी बच्चियाँ थीं। हमें काम है ब्लादिमिर्से। ब्लादिमिर्के छोटे भाई-बहनोंने भी क्रांतिके

---

* १९३८ में लिखित पृ० २१३-५२

लिए काम किया, लेकिन व्लादिमिर्की चमकमें उनको पहचानना मुश्किल है। हाँ अलेक्सन्द्रका व्लादिमिरके जीवनके निर्माणमें खास स्थान है। इसलिए उसे छोड़ा नहीं जा सकता।

शताब्दियोंसे ज़ारका निरंकुश शासन रूसकी भूमिपर चलता आ रहा था। जिनको आत्मसम्मानका कोई ख़याल न था, जो संसारके सुखदुख, पीड़ा-अत्याचारको अदृश्य शक्तिके हाथका खेल समझ कर सन्तोष कर सकते थे, उन्हें ज़ारके अत्याचारके खिलाफ़ क्यों शिकायत होती? ज़ारके नीचे बहुतसे सामन्त, या ज़मींदार-राजा थे। कितनी ही बार ज़ारके बर्तावसे इनके आत्मसम्मान को ठेस लगी। कभी इन्होंने विद्रोह भी किया, लेकिन विद्रोहका कारण अधिकतर भावुकतापर निर्भर था, वह किसी ठोस आर्थिक भित्तिपर अवस्थित न था। ज़ारको भी इन थोड़ेसे आदमियों—जिनका स्वार्थ ज़ारके स्वार्थसे बद्ध था, और समाजमें भी जिनका स्थान ज़ारके बाद सबसे ऊँचा था—को ख़ाम-ख़ाह चिढ़ानेकी आवश्यकता न थी। यदि किसी ज़ारने चिढ़ाया, तो यह उसकी अदूरदर्शिता थी। और यदि कोई चिढ़ा, तो यह भी वैसी ही बात थी।

प्रथम पीतर् चाहता था, कि रूस भी पश्चिमी यूरोपका समकक्ष बने, वह भी उसके ज्ञान-विज्ञानसे लाभ उठाये। पीतरसे पहले रूस भी एशिया का ही यूरोपके भीतर घुस गया भाग सा मालूम होता था। आज भी रूसियोंके बर्तावमें बहुतसी बातें एसियासे मिलती हैं। पीतर् यह भी चाहता था, कि उसके यहाँ भी बनियों और व्यापारियोंकी सत्ता बढ़े और देश अधिक समृद्ध हो। उस वक्त बनियोंका पक्ष लेनेका खयाल लेकर ज़मींदार-राजाओंने पीतर्का कुछ हल्कासा विरोध किया। पीछे रूसमें भी कल-कारखाने बढ़े। सम्पत्तिके साथ साथ बनियोंकी मानमर्यादा भी कुछ ऊपर चढ़ी; लेकिन ज़मींदारोंका प्रभुत्व १९१७की क्रान्ति तक बना रहा। ज़ारके बाद उन्हींका स्थान था। बीचमें इतना ही हो सका था, कि किसानोंके

बहुतसे विद्रोहोंसे डर कर उन्हें खरीदे दासकी अवस्थासे कुछ साँस लेने लायक बना दिया गया था।

ज़ार और उसके पिट्ठू ज़मीदार अधिकारियोंके खिलाफ़ मध्यम श्रेणी-के शिक्षितोंमें कुछ स्वतन्त्रताका भाव पैदा होने लगा; जबकि उन्होंने १८ वीं शताब्दीके कितने ही फ्रेंच और अंग्रेज़ लेखकोंके स्वतन्त्रता-सम्बन्धी ग्रंथ पढ़े। मध्यम श्रेणीमें शिक्षाके साथ साथ ज़ारके निरंकुश शासनके प्रति दुर्भाव भी बढ़ता गया। यह दुर्भाव हम रूसके पुश्किन और लेर्मन्तोफ़् जैसे उच्च कोटिके कवियोंमें भी पाते हैं। क्रोपत्किन और ल्यु ताल्स्त्वा (टाल्स्टाय) भी उसी भावको आगे बढ़ाते हैं। क्रान्ति वे चाहते थे, और किसके खिलाफ़? ज़ारकी निरंकुशताके खिलाफ़। इसमें शक नहीं कि इस निरंकुशताके भीषण रूपको दिखलानेके लिए मज़दूरोंकी सड़ी गली झोपड़ियाँ, उनके कृश-मलिन गात्र, उनकी दिन-रातकी असह्य वेदनाओंको वे चित्रित करते थे। लेकिन वह इनके लिए क्रान्ति नहीं करना चाहते थे। उनकी क्रान्तिका ध्येय था, मध्यम वर्गको अधिक स्वतंत्र करना—आर्थिक सामाजिक दोनों दृष्टियोंसे। मध्यम वर्गकी स्वतंत्रतासे हो सकता है, जाँगर चलाने वालोंकी हालतमें भी कुछ फ़र्क हो, लेकिन निश्चय ही वह १९१७की क्रान्ति और उसके परिणामको न पसन्द करते।

हाँ, यह मानना होगा कि १९१७की क्रान्तिकी बुनियाद रखनेमें राष्ट्रीय विचारके इन क्रान्तिकारियोंका हाथ था।

कार्ल मार्क्स—ज़मींदार-सामन्तोंके खिलाफ़ पश्चिमी यूरोपके बनियोंने आवाज़ उठाई और इसी आवाज़ने राष्ट्रीयताको जन्म दिया। वे राष्ट्रके नामपर राजाओं और सामन्तोंकी मनमानीका विरोध करते थे। उनके पास कारखानों और वाणिज्यकी आमदनीसे अपार सम्पत्ति आ गई थी। इतनी सम्पत्ति आ गई थी, जिसके सामने ज़मींदार-सामन्त कोई हैसियत नहीं रखते थे। राष्ट्रके नामपर बनियोंने हल्ला मचाना शुरू किया। अपने

इस काममें जाँगर चलाने वालोंको भी सम्मिलित किया। हाँ, अपने ही स्वार्थके लिए। इसका फल भी हुआ। राजाओंकी निरंकुशता और सामन्तशाही डरी। पश्चिमी यूरोपमें राज्यशक्ति अब बनियोंके हाथमें जाने लगी। उसी समय जर्मनीमें एक विचारक पैदा हुआ—हिटलरकी जर्मनी उसे माननेको तैयार नहीं। इस विचारकके कानोंमें भी बनियोंकी राष्ट्रीयताका हल्ला पहुँचा। उसने सोचा, क्या राष्ट्रीयताकी पुकार बनिये जाँगर चलाने वालोंके हितके लिए कर रहे हैं? उसने वर्षों इसके लिए लगाये। विदेशोंमें वह मारा मारा फिरा, कितने ही मुल्कोंकी ख़ाक छानी, ढेरकी ढेर पुस्तकोंमें रातकी रात डूबा रहा। अन्तमें उसने देखा, बनिये धोखेबाज़ हैं। राष्ट्रीयताकी पुकार निस्सार है; जहाँ तक जाँगर चलानेवालों का संबंध है। सामन्तशाहीके दिनोंमें और उससे पहले आदमी गाय और घोड़ेकी तरह दामपर बिकते थे। बनियोंने उनकी यह बिक्री छुड़ाई। लेकिन दासता अब भी नहीं छूटी। फ़र्क इतना ही था, कि ज़ारों और सामन्तोंकी चलतीके वक्त गुलाम ख़रीदे जाते थे; लेकिन मालिक पूँजीके डूब जानेके डरसे उनके खाने पीनेकी सुधि लेता था, वैसे ही जैसे कोई अपने घोड़े और बैलकी सुधि लेता है। पश्चिमी बनियोंने अभिमानके साथ कहा—हमने गुलामोंको आज़ाद कर दिया। लेकिन वह आज़ादी कैसी थी? उन्होंने कपड़ेके कारख़ाने खोले। लाखों जुलाहे बेकार हो गये। उन्होंने लोहेके कारख़ाने खोले। लाखों लोहार हाथपर हाथ धर कर बैठ गये। क्यों? क्योंकि कल-कारख़ानोंसे बनी चीज़ें अधिक सस्ती होती थीं। बाज़ारमें महँगी चीज़ें लेनेके लिए कोई तैयार नहीं था। बनियोंने बेकारोंसे कहा—आओ, हमारे कारखानोंमें काम करो। गाँव छोड़ छोड़कर बेकारीके शिकार वे जाँगर चलानेवाले शहरोंमें फैक्टरियोंके दरवाज़ोंपर दौड़ने लगे। कुछको भीतर आनेके लिए इजाज़त मिली और कुछ कलकी आशामें बाहर मँडराने लगे। बढ़ईका बसूला छूटा, लोहारका हथौड़ा; जुलाहेका कर्घा छूटा, और धुनिएकी धुनकी। बनियेने

उन्हें 'कल' दी। ऐसी कल जिसे सात जन्मकी कमाईमें भी वह खरीद नहीं सकते। उनके स्वतंत्र पाँखको काट दिया। अब कलके भरोसे उन्हें रहना था। सामन्तशाहीके ज़मानेका मालिक अपने गुलामके पेटकी ओर ख़याल करनेके लिए मजबूर था, यह ख्याल कर कि, बीमार होनेपर कामका हर्ज होगा, मरनेपर उसमें लगी पूँजी डूब जायगी। बनिएके ऊपर कोई पाबन्दी न थी। बीमार हो, कारख़ाना छोड़कर चले जाओ। मर गये, कोना सूना थोड़े ही होगा। एककी जगह १० जो दरवाजेपर मँडरा रहे हैं। सारांश—बनिया जिसे दासतासे मुक्ति दिलाना बतलाता है, वह है, न नौकरके पेटका ख़याल करना, न मरने जीनेका। इस दृष्टिसे तो वह पुरानी दासता उतनी ख़राब न थी।

ऐसा सोचनेवाला वह विचारक कौन था? कार्ल मार्क्स। उसने बनियोंकी पोल खोली। उसने बतलाया, बनियोंकी दयालुता बिलकुल बनावटी है, राष्ट्रीयता अपना मतलब गाँठनेके लिए है। बनिया जाँगर चलानेवालोंको सबसे अधिक लूटता है। वह उनके जाँगरकी कमाईका पूरा बदला न देकर जो हड़प लेता है, उसीको नफ़ा कहता है। व्यापार-दक्षता, प्रबन्ध-कुशलता—जिसके नामपर बनिया लाखोंका वारा-न्यारा करता है, वह सब बेचारे जाँगर चलानेवालोंके श्रमकी लूटका सम्मानित नाम है।

मार्क्सने विश्लेषण किया। ख़ाली किताबों हीके बलपर नहीं, बल्कि जाँगर चलानेवालोंकी रोज़-बरोज़की ज़िन्दगीको नज़दीकसे देखकर। यही नहीं, उसने बनियोंके पहले सामन्तोंकी दुनियाको भी अपनी दिव्य दृष्टि (बुद्धि)से देखा। उससे भी पहले राजाओंकी निरंकुशताको देखा। और भी पहले कबीलोंके आपसमें लड़ते वक्त प्रभुताशाली योद्धाओंको राजा बनते देखा। उससे भी पहले नग्न आदमियोंको पत्थरके हथियारोंको लेकर जंगलके जानवरोंपर विजय पाते देखा।

उसने मनुष्यके ऐतिहासिक विकासपर गौर किया। इतिहास

के विकासकी खास स्थितिमें विशेष समुदायोंकी आवश्यकता है। यदि वह समुदाय उस अवस्थामें न आवे, तो विकासकी परंपरा टूट जायगी। सामन्त न होते तो राजाओंकी निरंकुशता न बन पड़ती। बनिए न होते, तो सामन्तशाही और राजाओंकी मनमानीको धक्का न लगता।

बनियोंने राजनीतिक शक्ति—जो सभी शक्तियोंकी जननी है—अपने हाथमें ली। जाँगर-चलानेवालोंको हथियारसे बेहथियार किया। पीढ़ियोंके घरसे बेघर किया। उनको हवामें उड़ता सूखा पत्ता बना दिया। उनकी विपदाएँ अधिक कर दीं। लेकिन उसी बनियेने इन अक्रीत दासोंके हाथमें मुक्तिके लिए एक हथियार भी दे दिया। छिट-फुट रहनेवाले असंगठित ग्रामीण दरिद्रोंको हज़ारोंकी तादादमें एक जगह जमा कर दिया। एक ही शहरमें नहीं, एक छतके नीचे जमा कर दिया।

एक जगह जमा होनेपर उन्हें अपनी ताक़तका ज़रा ज़रा भान होने लगा। अत्याचारोंको मूक रह कर बर्दाश्त करनेको वह अनुचित समझने लगे। मार्क्सने कहा—"संसारके कमकरो, एक हो जाओ।"

"तुम्हारे पास हारनेके लिए है ही क्या? सिवाय पैरोंकी जंजीर के।"

मार्क्सने अँधेरेमें एक चिराग़ जलाया। पहले कितने ही प्रश्न करते थे—यह चिराग़ है या भूतकी आग?

जैसे जैसे समय बीतता गया, मार्क्सकी आगने जंगलकी आगका रूप धारण किया। राष्ट्रीयताके नामपर लोगोंको आह्वान करनेवालोंका गला क्षीण होने लगा। जाँगर-चलानेवालोंके वास्तविक हितकी ओर ध्यान आकर्षित होने लगा।

* * * * * *

व्लादिमिर्का बड़ा भाई अलेक्सन्द्र राष्ट्रीय क्रान्तिके युगके अन्तमें हुआ था। ज़ारके निरंकुश शासनको उलटनेके लिए राष्ट्रीय क्रान्तिकारी सभी तरहका त्याग करनेके लिए तैयार थे। क्रोपत्किन् जैसे कितनोंने इस प्रवाहको आगे बढ़ाया।

१ मार्च १८८१को रूसका ज़ार अलेक्सन्द्र द्वितीय मार डाला गया। कितने ही लोग पकड़े गये और कितनोंको प्राणदंड मिला। लेकिन वह निरकुशता जिसके दूर करनेके लिए ज़ार अलेक्सन्द्र मारा गया था, अब भी मौजूद थी। इसलिए क्रान्तिका मार्ग रुक नहीं सकता था। १८८७ में फिर तत्कालीन ज़ार अलेक्सन्द्र तृतीयकी हत्या करनेकी साज़िश कुछ नौजवानोंने की। उनका अगुवा अलेक्सन्द्र उल्यानोफ़् था। साज़िश करने-वाले असफल रहे। पुलिसने अलेक्सन्द्र उल्यानोफ़् और उसके साथियों-को पकड़ लिया। कितने दिनों तक जेलमें रखा। आखिर, उसी साल उसे फाँसीपर चढ़ा दिया गया।

व्लादिमिर् अभी लड़का था। लेकिन इतना लड़का नहीं था, कि अपने आसपासकी घटनाओंको न समझ सकता हो। उसी साल वह हाई स्कूलकी पढ़ाई समाप्त करनेवाला था। अलेक्सन्द्रके फाँसी पर चढ़ाने का असर सारे उल्यानोफ़् परिवार पर पड़ा। वह पुलीसकी निगाह-में खटकने लगा। स्कूलके हेडमास्टर (इसे संयोग कहिए, क्रान्तिके वक्त रूसके प्रधान मन्त्री तथा लेनिन्के प्रतिद्वन्द्वी करेन्स्कीका वह पिता था) ने व्लादिमिर्की बड़ी मदद की; और वह हाई स्कूलकी परीक्षामें बैठ सका। व्लादिमिर् असाधारण प्रतिभाशाली विद्यार्थी था। परीक्षामें अव्वल नम्बरका इनाम उसे मिलना ही चाहिए था। व्लादिमिर् कज़ान् के विश्वविद्यालयमें पढ़ने लगा। विद्यार्थियोंने कुछ राजनैतिक गड़बड़ की। व्लादिमिर् भी जवाबदेह समझा गया और विश्वविद्यालयसे निकाल दिया गया।

कितनी ही बार पढ़नेके लिए दरख्वास्त दी, लेकिन पुलिसने न रूसी विश्वविद्यालयमें ही भर्ती होने दिया, न देशसे बाहर जानेकी अनुमति ही दी। दो तीन वर्ष इसीमें चले गये। उस वक्त इन सारे अन्यायोंके साथ साथ फाँसी पर लटके अपने भाई अलेक्सन्द्रकी तसवीर उसके सामने रहती

थी। हर घंटे, हर मिनट ज़ार और उसके शासनके प्रति अपार घृणा उसके दिलमें उत्पन्न होती थी।

दो तीन वर्ष बर्बाद करा अन्तमें १८६०में व्लादिमिर् को बाहरके विद्यार्थीके तौरपर परीक्षामें बैठनेकी इजाज़त मिली। उसने पीतर्बुर्ग (वर्तमान लेनिन्ग्राद्)को परीक्षाके लिए चुना; और १८६१में विश्वविद्यालयकी डिग्री प्राप्त की।

उसे बैरिस्ट्री करनेकी भी इजाज़त मिली। एक सालसे अधिक उसने समारामें प्रैक्टिस की।

१८६३में वह फिर पीतर्बुर्ग चला आया; और वहाँको अदालतमें प्रैक्टिस करने लगा।

व्लादिमिर् जैसा प्रतिभाशाली तरुण परिस्थितियों पर गंभीरता-पूर्वक विचार किये बिना नहीं रह सकता था। विशेष कर, जबकि उन परिस्थितियोंका फल उसको और उसके परिवारको बड़े कड़वे रूपमें भोगना पड़ रहा था। अलेक्सन्द्र उसका सगा भाई था, उससे उसको बहुत प्रेम भी था। फिर वह आज़ादीके लिए शहीद हुआथा। इस तरह व्लादिमिर्का ध्यान अलेक्सन्द्रके रास्तेकी ओर अधिक आकर्षित होना ही चाहिए था। लेकिन राष्ट्रीयताकी क्रान्तिके दिन अब समाप्त हो रहे थे। मार्क्सको मरे अभी दस बारह ही साल हुए थे; लेकिन उसकी जलाई आग अब दूर तक फैल गई थी। अलेक्सन्द्र राष्ट्रीय क्रान्तिके लिए मरा था लेकिन व्लादिमिर् सिर्फ भावुक नहीं था, वह गभीर विचारक था। उसे मार्क्स का पथ पसन्द आया।

पीतर्बुर्गमें आनेके बाद व्लादिमिर् बहुत दिनों तक अपनी प्रेक्टिस नहीं चला सका। थोड़े ही दिनों बाद उसे सब छोड़कर अपना सारा समय समाजवादके प्रचारके लिए देना पड़ा।

व्लादिमिर्को पहले पहल १८८८ में मार्क्सके ग्रंथोंको पढ़नेका मौक़ा मिला था।

१८६१में जब वह समारा गया, तो वहाँ उसने तरुण शिक्षितोंकी एक मार्क्सवादी मण्डली क़ायम की। पीतर्बुर्गमें दोबारा आनेसे पहले जो कुछ काम व्लादिमिर् ने किया था, वह अधिकतर समाजवादके अध्ययनके लिए, लेकिन १८६३से अब वह समाजवादी क्रांतिके लिए कटिबद्ध हो गया। पीतर्बुर्गके कमकरोंमें भी काम करना शुरू किया। क्रान्ति व्लादिमिर् के लिए क्या थी, इसे एक उसके प्रतिद्वन्द्वीने इस प्रकार कहा है—"उसके जैसा दूसरा आदमी नहीं मिलेगा, जो कि हर रोज़, २४ घंटा क्रान्तिमें तल्लीन रहता हो, जिसे क्रान्ति छोड़ और कोई ख़याल नहीं आता हो, और जो सोने पर भी क्रान्ति छोड़ दूसरा स्वप्न नहीं देखता हो।"

व्लादिमिर्का क़द छोटा था, बाल थोड़े भूरे थे, और समयसे पहले ही सिर चँदला हो गया था। उसकी ज़रा तिर्छी हो गई भौंहें मङ्गोल रक्तके असरको बतलाती थीं। आँखें चमकीली तथा हास्यसे पूर्ण थीं। व्लादिमिर् अपने स्वभावमें बहुत सीधा सादा था। किसी तरह का उसे शौक न था। वह शराब नहीं पीता था, और किसी समय मांस भी नहीं खा रहा था। लेकिन ऐसे परहेज़को वह सिद्धान्तके तौर पर नहीं मानता था।

पीतर्बुर्गमें १८६३की शरद् ऋतु आनेपर व्लादिमिर्ने अपना काम खूब लगनसे शुरू किया। यह नगर उस वक्त ज़ारकी राजधानी होनेसे जहाँ राजनैतिक केंद्र था, वहाँ शिक्षा और संस्कृतिका भी मुख्य स्थान था। समाजवादियोंका भी यही अड्डा था। व्लादिमिर् उल्यानोफ़्की विद्वत्ताका हल्ला पहले हीसे था। समाजवादियोंने उसका दिलसे स्वागत किया। एक तरफ़ व्लादिमिर्के मार्क्सवादके गंभीर ज्ञानका लोगों पर बहुत प्रभाव था, दूसरी ओर कमकरोंमें उसकी निस्संकोच भावसे मिलनेकी आदतने उसे ज्यादा जनप्रिय बना दिया था। १८६४-६५ में व्लादिमिरने

मार्क्सवादके प्रचारके लिए खूब काम किया। तरुण क्रान्तिकारी इधर बहुत आकर्षित हुए।

१८८७से, जबकि व्लादिमिर् को कज़ान् विश्वविद्यालयसे निकाला गया था, उसके ऊपर पुलीसकी कड़ी निगाह रहती थी। वह विदेश जाना चाहता था, लेकिन पुलीस उसे इजाज़त नहीं देती थी। इसी समय एक ख़तरनाक बीमारी हुई और बाहर जानेके लिए उसे इजाज़त मिल गई। वह स्विट्ज़रलैंड गया। वहाँ पुराने मार्क्सवादी रूसी क्रान्तिकारी प्लेखानोफ़्से उसकी मुलाकात हुई। नौजवान व्लादिमिर्का प्लेख़ानोफ़् पर बड़ा असर हुआ। उसने कहा—'यह भविष्यमें रूसका रोबेपियेर (फ्रांसकी राज्य-क्रान्तिका नेता) होगा।' रूसी क्रान्तिकारियोंसे मिल कर सलाह ठहरी कि एक गुप्त समाचारपत्र निकाला जाय। उल्यानोफ़् स्विट्ज़लैंन्डसे लौटते वक्त इसके लिए आवश्यक सामान लेता आया। पत्रका नाम रखा गया 'कमकरोंका काम, ("रबोचेइ-देलो")। दिसंबर १८९५के आरम्भमें इस ग़ैरकानूनी गुप्त पत्रका पहला अंक तैयार हुआ, लेकिन पुलीसकी आँखें पहले हीसे थीं। उसने छपी कापियाँ और उसके साथ सभी कार्यकर्ताओंको पकड़ लिया।

राजनैतिक अपराधियोंको अदालतमें सज़ा नहीं दी जाती थी, उनके मुक़दमेका फ़ैसला पुलीसके अध्यक्षकी सम्मतिसे ज़ार स्वयं करता था। लेनिन् और उसके साथियोंको एक सालसे अधिक तक हवालातमें बन्द रहना पड़ा। हवालातकी तकलीफ़ें इतनी भयङ्कर थीं, कि बहुत कम उनसे जीते बच कर निकलते थे। उल्यानोफ़्का स्वास्थ्य अच्छा और शरीर सुदृढ़ था। शरीर और मन पर वह बहुत सयम रखता था। इसी लिए काल कोठरीने उसपर बहुत बुरा असर नहीं डाला।

एकान्तवासके वक्त भी क्रान्तिकारियोंने ऐसा ढंग खोज निकाला, कि बाहरकी बातें उन्हें मालूम होती रहें, और भीतरसे वह अपने संदेश बाहर भेज सकें। मई १८९६ में जो बड़ी बड़ी हड़तालें हुई थीं, उनमें उल्या-

नोफ़्का भी हाथ था। हवालातके समय ही उसने "रूसमें पूँजीवादका विकास" का बहुत हिस्सा लिखा था, बाकी भागको सिबेरियामें समाप्त किया। १८९९में यह ग्रंथ छपा।

जनवरी १८९७में उल्यानोफ़् और उसके साथियोंका फ़ैसला हुआ। उन्हें तीन वर्षकी सज़ाके रूपमें पूर्वी सिबेरियामें निर्वासनका दंड मिला। ऊपरी येनीसेइके मिनुसिंस्क ज़िलेके शूसेन्स्कोये गाँवमें उसे रखा गया; और तीन साल तक (फरवरी १९००) वह वहीं रहा।

पीतर्बुर्गमें काम करते हुए उल्यानोफ़् के साथियोंमें एक नौजवान लड़की नादेज़्दा कान्स्तन्तिनोव्ना क्रुप्स्काया भी थी। १८९८ में वह भी सज़ा पाकर वहाँ आ गई और उसी साल जुलाईमें दोनों ने शादी कर ली। तबसे सारे जीवन भर क्रुप्स्काया अपने पतिके काममें सहायक रही। असलमें शादीके भीतर भी क्रान्तिका काम ही कारण था।

शुसेन्स्कोयेमें उल्यानोफ़् का दिमाग़ और कलम बराबर चलती रही। यहीं पहले पहल 'लेनिन्' के नामसे उसने लेख लिखे; और दुनियाने उसी नामको जाना और स्वीकार किया।

१९००के आरम्भमें लेनिन् की सज़ा खतम हुई और वह प्स्कोफ़् (पीतर्बुर्गके नातिदूर रूसकी पश्चिमी सीमाके पास)में जाकर रहने लगा। सिबेरियासे लौटे हुए क्रान्तिकारियोंको उसने संगठित करना शुरू किया। अपने इस कामको साथियोंके ज़िम्मे देकर वह फिर रूससे बाहर निकला। देशमें किसी तरहके क्रान्तिकारी पत्र या ग्रंथका छापना बड़ा मुश्किल था। इसीलिए लेनिन् अबकी बाहर निकला। १९००के अंतमें उसने म्यूनिच (जर्मनी) से 'इस्क्रा' (चिनगारी) नामक पत्र निकाला। पुलीसके तङ्ग करने पर जून १९०२में 'इस्क्रा' को वह लन्दन ले गया। पत्र और पुस्तिकाएँ छाप कर चोरीसे रूस भेजी जाती थीं। अधिकतर यह काम जहाज़के मल्लाहों द्वारा होता था। लन्दन और पीतर्बुर्गके बीच आने जाने वाले जहाज़ोंकी संख्या कम न था।

अगस्त १९०२में 'इस्क्रा' के संपादकीय विभागमें एक रङ्गरूट भर्ती हुआ। यह २३ सालका नौजवान था ल्योन् त्रोत्स्की; जो सिबेरियासे भाग कर आया था। उसकी क़लम ज़बर्दस्त थी और थोड़े ही दिनोंमें वह प्रसिद्ध क्रान्तिकारी लेखक हो गया।

१९०३-४में जनतंत्रक-समाजवादी क्रान्तिकारियोंमें दो दल हो गये। गर्म दल, जिसका नेता लेनिन् था, बहुमतमें था। इसी लिए उस दलका दूसरा नाम बोल्शेविक (बहुमतीय) हुआ और नर्म दल वाले मेन्शेविक् (अल्पमतीय) कहे गये। १९०४-५में लेनिन्को मेन्शेविकोंके ख़िलाफ़ अपनी शक्ति अधिक लगानी पड़ी। मेन्शेविक ऐसे शिक्षित क्रान्तिकारी थे, जो कमकरोंके लिए काम तो करते थे, लेकिन क्रान्तिकी सफलताके लिए कमकरों पर उनका उतना विश्वास नहीं था, जितना अपने ज्ञान पर। अपने व्यक्तित्वको वह अधिक महत्त्व देते थे; और उसके खोनेके डर से क्रान्तिके खूनी मैदानमें आनेसे हिचकिचाते थे। असल बात यह होने पर भी वह दोष देते थे, कमकरों की असमर्थता या अज्ञान को।

१९०४में रूस और जापानकी लड़ाई हुई। जापानने रूस को बुरी तरहसे हराया। अपने शासकोंकी शक्ति रूसी कमकरोंकी नज़रमें गिर गई। पिसते हुए श्रमिकों को सिर उठानेका साहस हुआ। पहले उन्होंने हड़ताल की, फिर ज़ार—जिसे कि वह छोटा ईश्वर मानते थे—के दया और न्याय पर विश्वास करके निवेदन-पत्र लेकर वे शरद्-प्रासाद (पीतर्बुर्ग)को जा रहे थे। २२ जनवरी १९०५ एतवारका दिन था; जब कि श्रद्धा-भक्तिसे लाये हुए विनतीपत्रको स्वीकार करने की जगह ज़ार ने गोलियाँ चलवाई। सैकड़ों आदमी मरे। यही वह खूनी एतवार था, जिसने ज़ारके प्रति जनताके बचे खुचे विश्वासको नष्ट कर दिया।

उस वक्त लेनिन् जेनोवामें था। खूनी एतवारकी गोलियोंने जनता-

के जोशको नष्ट नहीं कर पाया। क्रान्तिकी लहर ज़ोरसे फैलती जा रही थी। नवम्बरमें लेनिन्‌को पीतर्बुर्गके क्रांतिकारियोंकी सफलताका पता लगा।

विदेशमें रहने वाले क्रान्तिकारियोंमें लेनिन् पहला था, जो रूस लौट आया। उसने कई सार्वजनिक सभाओंमें व्याख्यान दिया। लेकिन नाम और वेष बदले रहनेके कारण पुलीसको पता नहीं लग सका। क्रान्तिकारियों को लेनिन्‌ने कुछ सहायता भी की, लेकिन इस बारेमें वह खुलकर उतना काम नहीं कर सका, जितना कि १९१७में उसे करनेको मिला।

लेनिन्‌ने पिछले वर्ष युद्ध-विज्ञानका विशेष तौरसे अध्ययन किया था। ज़ारके हाथसे तलवारके बलपर अधिकार छीनना था और यह निर्भर करता था अस्त्र-शस्त्रकी पर्याप्त मात्रा, योद्धाओंके संगठन तथा ज़ारकी सेनामें सफलता-पूर्वक अविश्वासके प्रचार पर। यह पहला सशस्त्र विद्रोह था; जो पीतर्बुर्ग-मास्को-जैसे बहुतसे शहरों और दूसरी जगहोंमें फैला। इस विद्रोहको उतनी आसानीसे ज़ारशाही दबा भी न सकी। लेकिन अंतमें क्रान्ति असफल रही। ज़ारशाही ने हज़ारोंको निर्दयताके साथ तलवारके घाट उतारा।

इस क्रान्तिमें मेन्शेविकोंकी मदद नाम मात्र थी; और असफलताके बाद उन्होंने उसके लिए अफ़सोस किया। उनके नेता प्लेखानोफ़्‌ने कहा—"हथियार उठाना भूल थी।" लेनिन्‌का विचार इस असफलताके बारेमें दूसरा ही था। दोषों और कमज़ोरियोंको स्वीकार करते हुए भी उसने कहा—"यह असफलता सफलतासे कम मूल्य नहीं रखती। इसने हमें बतला दिया कि क्रान्तिकारी कमकरोंमें कितनी लड़ाईकी शक्ति और साहस है"। उसका जनता पर पूरा विश्वास था। वह जानता था कि जनताकी शक्ति और साहसके स्रोतको ऐसी दर्जनों असफलताएँ सुखा

नहीं सकतीं। दो वर्षका पुराना कड़वा तजर्बा, तत्कालकी भूख और जाड़ेके सामने उनकी स्मृतिसे मिट जाता है।

क्रान्तिके वक्त लेनिन् छिप कर रूसमें रह रहा था। उसकी असफलता पर पुलीसका ज़ोर बहुत बढ़ गया था। इसलिए लेनिन्का वहाँ रहना खतरेसे खाली नहीं था। पहले वह फ़िनलैंड चला गया। फ़िनलैंड रूसके आधीन रहते हुए भी कुछ स्वायत्त-शासन पा चुका था। लेकिन वहाँ भी आख़िर पुलीस उसके पीछे पड़ी और १६०७में वह फिर विदेश चला गया।

१६०३में पार्टीमें जो झगड़ा पैदा हुआ था, उसके कारण लेनिन्को बहुत मानसिक चिन्ता हुई थी; और १६०७से १६१४ तकका समय भी ऐसा ही था। उसके कितने सहयोगी इस निराशाके समय अलग हो गये और इस प्रकार बोल्शेविक पार्टीमें निर्बलता आगई। लेनिन्का साथ छोड़कर जानेवालोंमें त्रोत्स्की भी था। लेनिन्की कलम और दिमाग़ अब भी उसी तरहसे चल रहे थे। वह बराबर लेख और पम्फलेट बाहरसे भेजा करता था।

लेनिन् बोल्शेविक पार्टीकी बिखरी शक्तिको एकत्र करनेका बराबर प्रयत्न कर रहा था, चारों ओर निराशाकी काली घटाएँ छाई हुई थीं, लेकिन वह लेनिन्को हताश नहीं कर सकती थीं। १६०५की क्रान्तिके फलस्वरूप ज़ारने निर्वाचित दूमा (पार्लियामेंट) स्थापित करनेका वचन दिया था। १६१२के चुनावमें कमकरोंके प्रतिनिधि होकर आने वाले दूमाके छहों सदस्य बोल्शेविक थे; और यह लेनिन्के लिए बड़ी विजयकी बात थी। १६१२से १६१४ तकका लेनिन्का काम रूसी क्रांतिके इतिहासमें बड़ा ही महत्त्व-पूर्ण है। विदेशमें रहते हुए भी इसी वक्त उसने रूसी कमकरोंमें समाजवादी खयालका जबर्दस्त प्रचार और सशस्त्र मुक़ाबलेकी तैयारीका संगठन किया। यही समय था, जब कि लेनिन् रूसी कमकरोंका सर्वमान्य नेता माना जाने लगा। रूसमें समाचारपत्र 'प्राव्दा' (सत्य) और

दूमाके अन्दरकी बोल्शेविक पार्टी उस समय रूसमें लेनिन्का मुख थी। बोल्शेविक पार्टीका गुप्त रूपसे सब जगह ज़बर्दस्त सङ्गठन था। डरने और हिचकने वाले पिछली निराशाके समयमें खुद छँट चुके थे। लेनिन्की हर बातको बोल्शेविक-केन्द्रीय-पार्टी पूरा करनेके लिए तैयार थी।

इतना होनेपर भी दूमाकी बोल्शेविक पार्टीका नेता रोमन् मालीनोव्स्की, जो लेनिन् और रूसकी पार्टीके बीच सम्बन्ध रखनेका ज़रिया था, खुद ज़ारकी ओरका खुफ़िया था। यह खबर १९१३में ही फैली हुई थी, लेकिन लेनिन्ने इस पर विश्वास नहीं किया। युद्धके आरंभ होनेके बाद सन्देह इतना बढ़ा, कि मालीनोव्स्की इस्तीफ़ा देकर गुम हो गया। क्रान्तिके बाद पुलीसके दफ्तरमें जो काग़ज़ मिले, उनसे यह सिद्ध हो गया कि मालीनोव्स्की सचमुच पुलीसका आदमी था।

युद्धके बारेमें लेनिन्की राय स्पष्ट थी। सच्चे मार्क्सवादीकी तरह उसका कहना था—"साम्राज्यवादियोंकी विजयसे कमकरोंको कोई फ़ायदा नहीं। इस युद्धको अपने देशके साम्राज्यवादियोंसे लड़नेके रूपमें परिणत कर देना चाहिए। रूसी समाजवादियोंको खास तौरसे समझना चाहिए, कि ज़ारशाहीकी हारसे श्रमिक-श्रेणीका कोई नुक़सान नहीं। कमकरोंके लिए यही अच्छा मौक़ा है। बाहरके दबाव और उसके मुक़ाबले के लिए की गई सैनिक तैयारीके कारण शासकोंका बल भीतर वालोंके लिए बहुत कमज़ोर हो गया है, इसलिए साम्यवादियोंको इस युद्धको गृह-युद्धके रूपमें परिणत कर देना चाहिए।"

लेनिन् अब रूसकी सीमाके नज़दीक रहना चाहता था; इसीलिए वह गेलीसियामें आया। आस्ट्रियाके अधिकारियोंने उसे पकड़कर जेलमें डाल दिया। लेकिन वहाँके समाजवादी नेता विक्टर एड्लर्ने यह कहकर उसे छुड़वानेमें सफलता पाई, कि लेनिन् ज़ारशाहीकी मदद नहीं कर सकता। युद्ध छिड़नेके बाद पुलीसने फिर ज़ोर दिखलाना शुरू किया।

दूमाकी बोल्शेविक पार्टीके सभी सभासद् जेल भेज दिये गये। नेताओंमें भी अधिकांश या तो सिबेरिया भेज दिये गये, या भागकर उन्हें विदेश चला जाना पड़ा। १।। सालके महायुद्धके बाद जन-धनके क्षय तथा भीतरी असन्तोष और अव्यवस्थाके कारण १९१६के अन्तमें जब परिस्थिति क्रान्तिके अनुकूल मालूम होने लगी; तो उस वक्त कमकर क्रान्तिकारियोंका नेतृत्व करनेके लिए कोई न रह गया था। लेनिन्का तअल्लुक रूससे उस वक्त टूट सा गया था।

दिसंबर १९१६ तक पहुँचते पहुँचते युद्धमें रूसकी दशा बहुत खराब हो गई। हिंडेनबर्गने हारपर हार दी और लाखों सैनिक और बहुत सी रूसकी भूमि जर्मनोंके हाथमें चली गई। रूसी सैनिकों और सेनानायकों दोनोंका साहस टूट गया। सिपाही मैदान छोड़ छोड़कर अपने घरोंकी ओर भाग रहे थे। चारों ओर असन्तोष ही असन्तोष दिखलाई पड़ता था। दूमाके नर्म दलीय लोगोंको भी गर्म गर्म बात करनेका साहस हो चला था। ज़ारीनाने २४ फ़रवरीको ज़ारके पास पत्र लिखते हुए लिखा—

"मैं चाहती हूँ कि दूमा-वाला करेन्स्की अपने भयंकर व्याख्यानोंके लिए फाँसीपर चढ़ा दिया जाय। युद्धके समय यह ज़रूरी है। इससे दूसरोंको शिक्षा मिलेगी। तुमको सख्तीसे काम लेना चाहिए।"

राजधानीमें हड़तालोंपर हड़तालें हो रही थीं। ज़ार और ज़ारीनाका गुरु साधु रस्पुतिन् मारा जा चुका था। ज़ार ज़ारीनाके हाथकी कठपुतली था, और ज़ारीना इतना अधिक मिथ्याविश्वास रखनेवाली थी, कि वह रस्पुतिन्को ईश्वरकी तरह मानती थी। एक बार उसने लिखा था— "अगर वह हमारे पास न होता, तो कभीका हमारा सर्वनाश हो गया होता।"

अन्तमें हालत इतनी बिगड़ गई कि ज़ार निकोलाको (२ मार्च १९१७) सिंहासनसे इस्तीफ़ा देना पड़ा। अपनी डायरीमें उस दिन निकोलाने लिखा था—

"आज सबेरे रुस्की आया। उसने रद्ज़ियँकोके साथ तारपर हुई लम्बी बातचीत मुझे पढ़कर सुनायी। उसके कहनेसे मालूम होता है, कि पेत्रोग्राद् (लड़ाईमें जर्मनोंके प्रति जो क्रोध आया, और उसके लिए जर्मन शब्दोंसे भी द्वेष उत्पन्न हो गया, इसी लिए पीतर्बुर्गका जर्मन नाम हटाकर 'पेत्रोग्राद्' रखा गया)की अवस्था इतनी नाज़ुक है, कि राजकीय दूमाके जनसत्ताक-समाजवादी (कम्युनिस्ट पार्टीका पूर्व नाम) सदस्योंका मंत्रिमंडल कुछ नहीं कर सकेगा। क्योंकि जनसत्ताक समाजवादी कर्मकर कमेटीके रूपमें इसका विरोध कर रहे हैं। मेरा पदत्याग आवश्यक है। रुस्कीने अलेक्सेयेफ़् (महासेनापति) तथा दूसरे प्रधान सेनापतियोंको इसकी सूचना दी। १२॥ बजे (दिन) जवाब आया। रूसकी रक्षा और मैदानमें सेनाको क़ायम रखनेके ख़यालसे मैंने ऐसा करना निश्चित किया। मैंने स्वीकार किया और उन्होंने हेडक्वार्टर्स (केन्द्र)से पद-त्यागका मसविदा भेजा। शामको गुश्कोफ़् और शुल्गिन् पेत्रोग्राद्से आये। उनसे इस बारेमें मैंने बातचीत की और संशोधन करके पत्रपर हस्ताक्षर कर दिया। १ बजे सबेरे मैंने भरे दिलसे प्स्कोफ़्को छोड़ा। मेरे चारों तरफ़ कायरता, धोखाबाज़ी और विश्वासघात है।"

लेनिन्ने जैसे ही मार्च (पुराने रूसी पंचागके अनुसार फ़रवरी)की क्रान्तिकी खबर पाई, वैसे ही वह रूस पहुँचनेके लिए बेक़रार हो गया। लेकिन उसका नाम मित्र-शक्तियोंके खुफिया-विभागकी काली सूचीमें दर्ज था। अंगरेज़ अधिकारियोंने अपने देशसे होकर जानेके लिए आज्ञा न दी। रूसी वैदेशिक-विभागने सोवियतोंकी माँगसे मजबूर होकर सभी रूसी निर्वासितोंको रूस लौटनेके लिए मित्र-शक्तियोंको लिखा। लेकिन साथ ही यह भी कह दिया, कि अन्तर्राष्ट्रीयतावादियोंको न आने दिया जाय। लेनिन्का रास्ता इस तरह बन्द था। वह लौटनेका कोई उपाय सोच रहा था। एक बार उसको यह भी ख़याल आया, कि स्वीडेनका पासपोर्ट ले जर्मनीके रास्ते जाय, लेकिन वह स्वीडिश् भाषाका एक शब्द भी नहीं

जानता था। तब उसने गूँगा बननेकी सोची। अन्तमें उसे स्पष्ट हो गया, कि जर्मन अधिकारियोंकी सहमतिके अनुसार जर्मनीके रास्ते ही लौटा जा सकता है। जर्मनीने निर्वासित राजनीतिकों—विशेषकर अन्तर्राष्ट्रीयतावादी सोशलिस्टों—के रूस लौटनेमें अपना नुक़सान नहीं समझा। इसीलिए स्विट्ज़रलैंडके समाजवादी प्लाटेन्के बहुत लिखा पढ़ी करनेपर जर्मनीने इस शर्तपर अपने भीतरसे जानेके लिए आज्ञा दी, कि वे सभी निर्वासित रूसी जिस ख़ास ट्रेनमें भेजे जायेंगे, उससे उतरें नहीं और न रास्तेमें किसीसे बातचीत करें। लेनिन्को रूस पहुँचनेसे मतलब था। उसने स्वीकार कर लिया और मुहरबंद ट्रेनसे लौटा। जिस वक्त वह फ़िन्लैंड और रूसकी सरहद पर पहुँचा, तो बोल्शेविक् नेताओंने मिलकर उसे परिस्थिति समझाई। पेत्रोग्राद् स्टेशनपर उसका शाहाना ठाटसे स्वागत हुआ। हज़ारों फ़ौजी सिपाही पाँतीसे सलामी दागनेके लिए खड़े थे। सैकड़ों लाल झंडे फहरा रहे थे। लेनिन्ने उस ज़बर्दस्त स्वागतको देखकर समझ लिया, कि काम करनेकी कितनी स्वतंत्रता है और लोगोंमें कितना उत्साह है। लेनिन्के पेत्रोग्राद् पहुँचनेसे १ मास बाद त्रोत्स्की भी लौटा। उसके विचारोंमें भी परिवर्तन हुआ था, और अब वह लेनिन्के विचारोंके साथ था।

नई सरकार भी धनियोंकी सरकार थी। ज़ारकी निरंकुशता चली गई थी, और उसके हटानेमें जनताकी शक्तिने काम किया था। इसी लिए लेखन-भाषणकी स्वतंत्रता देना ज़रूरी था। लेकिन अभी किसानों और कमकरोंका राज्य कायम होना दूरकी बात थी।

लेनिन्के अन्तर्राष्ट्रीयतावादके विचारको अधिकांश बोल्शेविक भी माननेको तैयार नहीं थे। लेनिन्का कहना था—'लड़ाईसे हमें अपना हाथ एकदम हटा लेना चाहिए।' सहयोगियोंका कहना था—'तब तो जर्मन बेधड़क सारे रूसको दख़ल कर लेंगे और हम ज़ारशाहीसे बचकर जर्मनशाहीके हाथमें चले जायेंगे।' नया मंत्रिमंडल मित्र-शक्तियों

के साथ मिलकर जर्मनीसे लड़ाई जारी रखना चाहता था। लेनिन्को अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितिका खूब ज्ञान था। उसे मालूम था कि यदि जर्मनीकी कुछ अरुचिकर शर्तोंको भी हम मान लेंगे, तो वह हमारा पीछा और ज्यादा नहीं करेगा, क्योंकि उसे फ्रांस और इंगलैंडसे भी लड़ना है।

लेनिन्ने कहा—"अब जब कि रुसमें भाषण और लेखनकी पूर्ण स्वतंत्रता है, तो हमारा सबसे पहला काम है, कि शासनको कमकरों और ग़रीब किसानोंको हाथमें लेने दें। अस्थायी सरकारको कोई मदद नहीं देनी चाहिए। यह पूँजीवादियोंकी सरकार साम्राज्यवादी छोड़ और हो ही क्या सकती है?"

उस वक्त शहरों, ज़िलोंके शासनका अधिकार निर्वाचित सोवियतों (पंचायतों)के हाथमें था; जिनमें निम्न मध्यम श्रेणीके व्यक्तियोंकी प्रधानता थी। लेनिन्ने कहा—सोवियतोंको कमकर और किसानोंके हाथमें होना चाहिए। ज़मींदारोंकी ज़मींदारीको छीनकर किसानोंको देना चाहिए। अलग अलग बैंकोंको मिलाकर एक राष्ट्रीय बैंक बना देना चाहिए। समाजवादकी स्थापना तुरन्त नहीं हो सकती; लेकिन राष्ट्की उपज और उसके वितरणको सोवियतोंके हाथमें चला जाना चाहिए। जनसत्ताक-समाजवादी (बोल्शेविक) पार्टीका नाम कम्युनिस्ट (साम्यवादी)के रूपमें बदल देना चाहिए कि जिससे मालूम हो कि हम पैरिसकी कम्यून् (साम्यवादी समाज)के नमूनेपर साम्यवादी राष्ट्रकी स्थापना करना चाहते हैं।"

लेनिन्के ये विचार रूसके तत्कालीन राजनैतिकोंके ऊपर बमकी तरह पड़े। बोल्शेविक नेता तक घबड़ा गये। उन्होंने कहा—"यह शेख-चिल्ली का महल है। वास्तविकतासे इसका कोई ताल्लुक नहीं है। लेनिन्ने १० साल तक रूस देखनेका मौक़ा नहीं पाया; इसी लिए वाही-तवाही बोल रहे हैं।" कितने लेनिन्को जर्मनोंका एजेंट कहते थे, और तरह

तरहसे उनके ऊपर आक्षेप किये जाते थे। लेकिन लेनिन्को जितना ही अधिक जनतासे मिलनेका मौक़ा मिल रहा था, उतना ही वह उन्हें अच्छी तरह समझानेमें सफल हो रहा था। ३ महीने लगातार लेनिन्की क़लम और ज़बान ज़ोरसे चलती रही। बोल्शेविक पार्टीका केन्द्र उस वक्त क्शेसिन्स्की भवनमें था। सामनेकी सड़कपर लेनिन् रोज़ व्याख्यान देते थे। और वे व्याख्यान क्या थे, एक एक शब्द दहकते हुए अंगारे थे। हर एक बातके साथ दृढ़ दलील थी और वह इतने सीधे सादे शब्दोंमें कही जाती थी, कि श्रोताके अन्तस्तलमें सीधी चली जाती थी। कुछ ही समयमें लेनिन् अपनी बातोंको मनवानेमें समर्थ हुए। कमकरोंको तो पहले हीसे उनपर विश्वास था, लेकिन अब बोल्शेविक पार्टीके नेता भी उनसे सहमत हुए। वे देख रहे थे कि अस्थायी सरकारके ज़ोर देनेपर भी मैदान छोड़कर सैनिक भागते ही जा रहे हैं। जर्मन फ़ौजें आगे बढ़ती ही आ रही हैं। इसलिए अच्छी शर्तपर जर्मनोंसे सुलह कर लेनेमें ही अच्छा है।

जुलाईमें अस्थायी मंत्रिमण्डलमें परिवर्तन होकर केरेन्स्कीके नेतृत्वमें नई सरकार बनी थी। पहले तो वह लेनिन्से विरोध उतना सख्त नहीं कर रही थी, पर जब उसने देखा कि लेनिन्का पलड़ा भारी है, और उसे जर्मनोंका दूत कहनेसे भी कुछ फ़ायदा नहीं चलता; तो करेन्स्कीकी सरकारने खुले तौरसे देश-द्रोहका दोषारोपण किया और लेनिन्का जीवन खतरेमें हो गया। अब फिर लेनिन्को छिपकर काम करनेके लिये मजबूर होना पड़ा।

अभी तक अस्थायी मन्त्रिमण्डलका काम जहाँ तक भीतरसे ताल्लुक था, शान्तिके साथ चल रहा था; लेकिन इसी समय प्रधान सेनापति कोर्निलोफ़् और करेन्स्कीमें झगड़ा हो गया। सितम्बरके आरंभमें कोर्निलोफ़् ने कई दूसरे सेनापतियोंकी सहायतासे करेन्स्कीको अल्टीमेटम् दे दिया; और सेना लेकर पेत्रोग्राद्पर कब्ज़ा करनेके लिए चल भी पड़ा। करेन्स्की अब मज़बूर था जनतासे मदद लेनेके लिए। इस समय कोर्निलोफ़्से

मुक़ाबिला करनेके लिए सबसे आगे बढ़ने वाले थे बोल्शेविक। जनता जानती थी कि वे ही उनके शुभचिन्तक वास्तविक नेता हैं। करेन्स्कीने अब अपना नया मंत्रिमण्डल बनाया। इसमें भी नरम दलीय ही अधिक थे। जिनमें जेनरल वेर्खोव्स्की और एडमिरल वेर्देवेव्स्की भी थे। ये दोनों सैनिक समाजवादी नहीं थे, तो भी उन्होंने अपने मंत्रिमण्डलके साथियोंको कहा—सेना और नहीं लड़ सकती, लड़ाई बन्द करनी चाहिए, और सेनाको मैदानसे लौटाना चाहिए। लेकिन मित्र-शक्तियोंके पिट्ठू करेन्स्की और उसके साथियोंने मंजूर नहीं किया। अब दूसरी क्रान्ति अनिवार्य हो गई।

लेनिन् अब भी छिपे हुए काम कर रहा था। पेत्रोग्राद्के किनारेपर एक कमकरके मकानमें वह पहले रहा। फिर फ़िनलैंडकी सीमाके पास एक सुनसान झोपड़ेमें। और अन्तमें हेल्सिङ्फोर्स (फ़िनलैंड)की म्युनिसिपलिटीके प्रधान पुलीस-अफ़सरके घरमें छिपा रहा। यद्यपि करेन्स्कीके आदमी उसके पीछे पड़े हुए थे, तो भी लेनिन्ने केन्द्रीय पार्टी और पेत्रोग्राद्की कमेटीसे संबंध कायम रखा था, और उनके संचालनमें उसका पूरा हाथ था। तो भी इस वक्त एकान्तमें इस प्रकार छिपे रहनेके कारण लेनिन्के पास समय था। उसका दिमाग़ चुप बैठने वाला न था। इसी वक्त उसने "राज्य और क्रान्ति" नामक अपना श्रेष्ठ ग्रन्थ लिखा। किताबको वह समाप्त नहीं कर सका था, कि उसी वक्त उसे फिर मैदानमें आना पड़ा। अपूर्ण ग्रन्थके प्रथम संस्करणमें उसने टिप्पणी दी थी—"किताब लिखनेकी जगहपर यह कहीं सुखद और लाभप्रद है, कि आदमी क्रान्तिके तजर्बेसे फ़ायदा उठाये।"

* * *   * * *

लेनिन्को जैसे ही मालूम हुआ कि कोर्निलोफ़्के षड्यंत्रने शान्तिपूर्वक सोवियतोंके हाथमें शासन शक्ति नहीं आने दी, और उसकी जगह एक बहुत सड़ा सा गंगा-जमुनी मंत्रिमण्डल अधिकारी बना, तो उसने

बोल्शेविक् केन्द्रीय समितिको लिखा—"नई सरकारसे किसी तरहका सहयोग न किया जाय।" अस्थायी सरकार एक अस्थायी-परिषद् बनाना चाहती थी, और उसके जरिए करेन्स्कीकी सरकारको वैध साबित करनेका प्रयत्न किया जा रहा था। बोल्शेविक केन्द्रीय-समितिने लेनिन्की बात न मानकर करेन्स्की द्वारा बुलाए जनसत्ताक सम्मेलनमें भाग लिया, लेकिन उनको अपनी ग़लती मालूम होते देर न लगी। सरकार ज़मींदारोंकी ज़मीनको अब भी उन्हें नहीं दे रही थी, जिससे जगह जगह किसानोंने बलवा कर दिया। युद्धके मैदानसे कितने ही सेनाके प्रतिनिधि—जिनमेंसे कुछ असमाजवादी अफ़सर भी थे—पेत्रोग्राद् आये। उन्होंने सोवियतोंको साफ़ कहा—सेना अब लड़ाई लड़नेके लिए बिलकुल तैयार नहीं है। वह तुरन्त खाइयोंको छोड़कर लौटने वाली है। खेतों और स्वतंत्रता पा लेने मात्रसे वह सन्तुष्ट नहीं होगी, यदि युद्धको बन्द कर सेनाको पीछे नहीं लौटाया जाता। शासन-यंत्र टूट रहा था। रेलोंका काम बन्द हो रहा था। नगरोंमें अनाजके बिना अकाल पड़नेका डर था। साथ ही पूँजीपतियोंने अपने कारखानोंको बन्द कर दिया, जिसके कारण भारी संख्यामें कमकर बेकार हो गये। पेत्रोग्राद्के पासका समुद्र जर्मनोंके हाथमें था और पता लगा था, कि नौसेनाके बड़े बड़े अफ़सर जर्मनोंके हाथमें बिक चुके हैं। इन सब खतरोंके कारण जनताका विश्वास अब बोल्शेविकोंकी तरफ़ बढ़ने लगा। सितंबरके अन्त तक चुनावोंसे पता लग गया, कि पेत्रोग्राद्, मास्को तथा कितने ही और प्रान्तीय नगरोंकी सोवियतोंमें बोल्शेविकोंका बहुमत है। पेत्रोग्राद् सोवियत्ने त्रोत्स्कीको अपना सभापति चुना। किसानोंकी सोवियतोंने भी बोल्शेविक न होनेपर भी उन्हींका पक्ष लिया। गवर्नमेंट पार्टीके भीतर भी कितने ही लोग लेनिन्के साथ सहानुभूति रखने लगे। इसी समय (सितंबर) जर्मन नौसेनामें विद्रोह हुआ और इससे लोगोंका और भी विश्वास बढ़ा, कि क्रान्ति और देशोंमें भी होने जा रही है।

लेनिन्ने लगातार कई पत्र केन्द्रीय समितिको लिखे और उसे शीघ्र सशस्त्र विद्रोह करनेके लिए तैयार होनेको कहा। वह यह भी देख रहा था, कि जितनी ही अशांति और अव्यवस्था बढ़ेगी, उतना ही जनताके ढिलमिल-यकीन आदमी निराश होने लगेंगे। उसने कहा—यदि जाँगर चलानेवालोंने अपना अधिनायकत्व न स्थापित किया, तो बनिये और सेनाके अफ़सर अपना अधिनायकत्व स्थापित करेंगे। सेनानायकोंने जिस ज़ोरसे धावा बोला था, उससे डर होता था, कि किसी भी समय पेत्रोग्राद् उनके हाथमें चला जा सकता है। यदि बनिए अपनेमें क्षमता न देखेंगे, तो वह जर्मनोंको भी बुलानेसे बाज नहीं आयेंगे; क्योंकि चारों ओरसे उनकी सम्पत्तिपर प्रहार हो रहा था। यह और भी हानिकारक होगा, इससे करेन्स्कीकी पूँजीवादी सरकारको मदद मिलेगी। डर था कहीं बाल्तिक् नौसेना तथा पेत्रोग्राद् के कमकरोंकी संगठित सशस्त्र-शक्ति नष्ट न कर दी जाय।

लेनिन्के बराबर लिखते रहनेपर भी पार्टी वाले अभी हिचकिचा ही रहे थे; और १८ अक्तूबरको जाकर उन्होंने लेनिन्की बात मानी। प्रजातंत्र परिषद्से अपने सदस्योंका निकाल लेना सरकारको युद्धके लिए निमंत्रण देना था। २३ तारीख़को अंतमें निकल आना निश्चय किया गया; और २६ तारीख़को पार्टीने क्रान्तिके पक्षमें निर्णय दिया।

यदि लेनिन्के कहे अनुसार यह निर्णय कुछ सप्ताह पहले हुआ होता, तो बहुत संभव है, क्रान्ति उतनी भयंकर न हो पाती। लेकिन इस बीचमें विपक्षी भी अपनेको मजबूत कर रहे थे। यह देर करनेमें मुख्य कारण था, कि त्रोत्स्की तथा उसी तरहके कुछ और पार्टी नेताओंकी असहमति स्वेर्द्लोफ़् और स्तालिन् शुरू हीसे लेनिन्के पक्षमें थे। मज़दूर और नौसैनिक भी हर वक्त धावा बोलनेके लिए तैयार थे। त्रोत्स्की इसी लिए देर करना चाहता था, कि अब वह पेत्रोग्राद् सोवियत्का सभापति था, जो कि एक कानूनी शासन-संस्था थी। वह चाहता था, सोवियतोंकी

दूसरी कांग्रेसके उद्घाटनके दिन ७ नवंबर (२६ अक्टूबर)को युद्ध शुरू किया जाय। उसको दिखलाना यह था; कि जनताके निर्वाचित प्रतिनिधि बोल्शेविकोंके साथ हैं। लेनिन् एक दिनकी देरीको भी नहीं पसंद करता था। लेकिन त्रोत्स्कीके आग्रह और कामेनेफ़् तथा जिनावियेफ़्के विरोधके कारण ७ नवंबरसे पहले काम शुरू नहीं किया जा सका। पार्टीके शिक्षित लोग सरकारकी सैनिक शक्तिसे डर रहे थे। उनको यह भी डर था, कि जल्दी करनेसे मदद देनेवाली पार्टियाँ कहीं विरुद्ध न हो जायँ।

जब अन्तिम निर्णय हो गया, तो युद्धके संचालनके लिए सैनिक-कार्य-कारिणी-समिति स्थापित हुई। उन्होंने सैनिकोंकी छावनियोंमें बड़े ज़ोरसे अपने उद्देश्यका प्रचार किया। पेत्रोग्राद्के कमकर कितनी ही हड़तालों और विद्रोहोंको देख चुके थे; इसलिए वह सबसे ज्यादा मज़बूतीसे लड़नेको तैयार थे; लेकिन अभी तक उन्होंने बदूक उठाकर बाक़ायदा लड़ाई लड़नेका कभी अवसर नहीं पाया था। बाल्तिक्के नौसैनिक बोल्शेविकोंके पक्षमें थे; लेकिन पेत्रोग्राद्के कमकरोंकी तरह अपने राजनैतिक उद्देश्यका उन्हें उतना ज्ञान नहीं था। दूसरी छावनियों-के बारेमें बोल्शेविक इतनी ही आशा रख सकते थे, कि वह उनके विरुद्ध गवर्नमेंटका साथ न देंगी।

असल सवाल था—क्या गवर्नमेंट कसाक् और सैनिक, स्कूलियोंकी इतनी संख्याको विरोधियोंके मुक़ाबिले खड़ा कर सकती है; जिसमें कि उनका विरोध बेकार हो।

इस युद्धमें लेनिन्ने सीधा नेतृत्व किया। लेकिन जिस आसानी से और सबसे पहले नगरके शक्तिकेन्द्र तार-घर, बिजली-कारख़ाना, बैंक आदिपर कब्ज़ा किया गया, उससे मालूम होता है, कि लेनिन्ने १९०५ के तजर्बेसे फ़ायदा उठाया। राजनैतिक और नौसेना-संबंधी दाँव-पेंच-

का सारा नेतृत्व लेनिन्ने किया। इसमें सन्देह नहीं, लेनिन्के दिमाग़के बिना अक्तूबरकी क्रान्ति सफल न होती।

७ नवंबरको लड़ाई शुरू हुई। (पुराने रूसी पंचांगके अनुसार उस दिन २५ अक्तूबर था; इसीलिए "लाल क्रान्ति" को अक्तूबर-क्रान्ति भी कहते हैं। ३ महीनेके बाद १ फ़रवरी १६१८से पुराना पंचांग छोड़कर यूरोपमें सर्वत्र प्रचलित पंचांग स्वीकार किया गया)। पेत्रोग्राद्के चौरस्ते और सड़कें युद्ध-क्षेत्र बन गईं। कहीं बाल्तिक्के नौसैनिक लड़ रहे थे और कहीं कारखानोंके मज़दूर—जिनमें औरतें भी थीं—अपने रोज़मर्रेके कपड़ोंमें राइफल लेकर दुश्मनों पर धावा बोल रहे थे। उसी दिन शामको सोवियतोंकी दूसरी कांग्रेसके उद्घाटनके समय नई सरकारके शासनारूढ़ होनेकी घोषणा की गई। कांग्रेसमें बोल्शेविकोंका बहुत अधिक बहुमत था। घोषणाके समय तक शरद्-प्रासादको छोड़कर सारी राजधानी सैनिक-क्रान्तिकारिणी-समितिके हाथमें आ गई थी। करेन्स्की संयुक्त-राष्ट्र-अमेरिकाके दूतावासकी मोटरमें बैठकर भाग गया था। बाकी अस्थायी सरकारके मंत्रिमंडलकी उस समय शरद्-प्रासादमें बैठक हो रही थी। कुछ ही घंटोंमें शरद्-प्रासाद उनके हाथोंमें था और अस्थायी सरकारके सदस्य बन्दी थे। इस विजयकी घोषणा लेनिन्ने खुद कांग्रेसमें आकर की। पिछली जुलाईसे अब तक यह पहली बार था, जब कि लेनिन् जनताके सामने आया। किस उत्साह और आनंदके साथ लोगोंने उसका स्वागत किया, इसके कहनेकी आवश्यकता नहीं।

दूसरे दिन नई सरकार स्थापित हुई। लेनिन् सभापति और त्रोत्स्की वैदेशिक सचिव बने। सरकारका नाम रखा गया सोवियत्-जनता-कमीसर (सोवेत् नरोदिनक कोमिसरोफ़् या सोव्-नर्-कोम्)। अस्थायी मंत्रिमंडलके सदस्योंको मन्त्री कहा जाता था, इसीलिए उनसे भेद करनेके लिए कमीसर नाम रखा गया। प्रथम सोव-नर्-कोम्के सभी सदस्य

बोल्शेविक थे। कामेनोफ़्, जिनोवियेफ़्, सिकोफ़्, लूनाचार्स्की, रियाज़नोफ़् जैसे सर्व्वोच्च शिक्षित बोल्शेविकोंने लेनिन्को धमकी दी, कि यदि वह दूसरी समाजवादी पार्टियोंको नहीं लेंगे तो हम सहयोग न देंगे। लेकिन लेनिन् जानता था, कि जिस आगको वह सुलगा रहा है, उसमें गंगा-जमुनी मन्त्रिमंडल हानिकारक सिद्ध होगा। उसने उनकी बात माननेसे इनकार कर दिया और कहा—जो हमारी योजनाको नहीं मानते, उन्हें हम नहीं ले सकते। उसका प्रोग्राम था—सभी शक्ति सोवियतोंके हाथमें देना, लड़ाईको तुरन्त बन्द करना, रूसके भीतर बसनेवाली सभी जातियोंको आत्म-निर्णयका अधिकार देना; भूमि और उद्योग-धंधोंको व्यक्तियोंके हाथसे छीन कर राष्ट्रके हाथमें देना।

लेनिन्ने अधिकार सँभालनेके बाद जो पहला काम किया, वह थी भूमि-संबंधी घोषणा। कांग्रेसकी दूसरे दिनकी बैठक (८ नवंबर)में प्रस्ताव पास हुआ कि सभी अ-किसान जमींदारियाँ तथा उनके साथके पशु और कृषि-संबंधी यंत्र आदि ज़ब्त किये जाते हैं; और उनको सँभालनेका भार किसानों द्वारा निर्वाचित स्थानीय भूमि-समितियोंके हाथमें दिया जाता है।

इस प्रस्तावने किसान-सोवियतोंकी कांग्रेस—जो कि कुछ ही दिन बाद बैठी—को लेनिन्के पक्षमें कर दिया और इस प्रकार उन समाज-वादियोंको निराश होना पड़ा, जो किसान-सोवियत्से बोल्शेविकोंके विरोधकी आशा रखते थे।

सोव्नर्-कोम्ने अपने बोल्शेविक-प्रोग्रामको बड़ी ईमानदारीसे पूरा किया। एक सप्ताहके भीतर ही उसने बैंक और उद्योग-धंधोंको राष्ट्रीय बना दिया। काफ़ी समय तक नई सरकारने पूँजीवादियोंके साथ नर्मीका बर्ताव किया। इस नर्मीका उन्होंने फ़ायदा उठाना चाहा। कलम-जीवी लोगों जैसे—बैंक-क्लर्क, और टेलीफ़ोनकी लड़कियों आदिने नई सरकारका बाइकाट किया, लेकिन कलम-जीवी श्रेणी बड़ी कायर थी, देर तक

विरोधके लिए टिक न सकती थी। दिलमें हर पूँजीवादीको सोवियत्-शासनसे घृणा थी, लेकिन सामने आनेकी हिम्मत न थी। विरोध करनेवाले थे सेनाके बड़े-बड़े अफ़सर तथा शासन-विभागके कुछ अफ़सर। उनके साथ सैनिक स्कूलके तरुण विद्यार्थी थे, जो कि प्रायः सभी धनिकोंके लड़के थे।

पेत्रोग्राद्से बाहर भी सोवियत्-शासनके फैलनेमें उतनी दिक्कत नहीं हुई।

* * *   * * *

सोवियत्-प्रजातंत्रका विधान उस वक्त तक नहीं बना था। कई महीनों बाद जुलाई १९१८में पाँचवी सोवियत्-कांग्रेसने विधानको तैयार किया। उसके बाद सातवीं बोल्शेविक-पार्टी-कांग्रेस हुई, जिसमें लेनिन्के प्रस्तावानुसार पार्टीका नाम जनसत्ताक-समाजवादीकी जगह कमूनिस्त पार्टी (साम्यवादी-दल) रखा गया। 'कमूनिस्त' नाम रखनेमें खास भाव काम कर रहा था। यही नाम उस पार्टीका भी था, जिसे कार्ल मार्क्सने १८४८में स्थापित किया था। और इसी नामको दुनियाके श्रमजीवियोंको मिलकर लड़ाई करनेके लिए आह्वान करते समय अपनी पुस्तिका 'कमूनिस्त घोषणा'में भी इस्तेमाल किया। इसके साथ यह भी खयाल था, कि कमूनिज्म या साम्यवाद समाजवाद (सोशलिज्म)से ऊपरकी अवस्था है; जब कि जीवनकी सामग्रीकी उपज और उपभोगके बारेमें नियम होगा—"हर एकसे उसकी योग्यताके अनुसार काम लेना और हर एकको उसकी अवश्यकता के मुताबिक भोग-सामग्री देना"। चूँकि लेनिन् यह आदर्श भविष्यके लिए रखना चाहता था, इस लिए भी उसने यह नाम पसन्द किया। १७९२में फ्रांसमें भी पैरिसके कमकरोंने धनिकोंका राज्य उठाकर अपना शासन स्थापित किया था

और इतिहासमें उसे 'पेरिस् कमून्' कहते हैं। यह ख़याल भी नाम बदलते वक्त लेनिन्के सामने था।

* * *

शासन सँभालनेके समय ही सोवियत् सरकारने युद्ध बन्द करनेका प्रस्ताव स्वीकृत किया था। इसलिए लेनिन्को इसे भी कार्य-रूपमें परिणत करना था। नई सरकारने एक शान्ति-घोषणा प्रकाशित की; जिसमें उसने स्वीकार किया, कि बिना कब्ज़ा और बिना हरजाना लिए सुलह करना न्यायानुमोदित सुलह है। लेकिन लड़ाईमें जिस तरह घोर नर-संहार हो रहा है, उसको देखकर गवर्नमेंट और भी विचारपूर्ण शर्तपर सुलह करनेके लिए तैयार है। वह घोषित करती है कि ज़ारशाही के सभी गुप्त सुलह-नामोंको प्रकाशित कर दिया जायगा। ३ महीनेके लिए सभी युद्ध-क्षेत्रोंमें लड़ाई बन्द की जाय और लड़नेवाली सभी शासक और अशासक जातियोंका इसके लिए सम्मेलन किया जाय। घोषणामें इंगलैंड, फ्रांस, जर्मनीके कमकरोंसे ख़ास तौरसे अपील की गई थी।

मित्र-शक्तियोंने घोषणाका जवाब तक न दिया और सोवियत् सरकारको न स्वीकार करनेका निश्चय कर लिया। गवर्नमेंटने प्रधान-सेनापतिको लड़ाई बन्द करके सुलहकी बातचीत करनेके लिए आज्ञा दी। उसके इनकार करनेपर मंत्रिमंडलने एक बोल्शेविक किलेंकोको प्रधान सेना-पति बनाया। २७ नवम्बरको सरकारने अपने प्रतिनिधि जर्मनोंके पास भेजे। उसी दिन मित्र-शक्तियोंको फिर सुलहके लिए दावत दी गई, लेकिन उसका कोई फल नहीं हुआ। ५ दिसम्बरको सोवियत् सरकार और जर्मनीमें युद्ध बन्द करनेका प्रस्ताव स्वीकृत हुआ और १२ दिसम्बरको ब्रेस्त-लितोव्स्कमें सुलहकी बात शुरू हुई।

सुलहकी बातमें जर्मनोंकी शर्तें कड़ी थीं। लेनिन्ने उसे तुरन्त

तुरन्त माननेके लिए कहा; क्योंकि वह जानता था, देरका मतलब और भी जगहोंसे हाथ धोना है। त्रोत्स्की इसे पसन्द न करता था, और एक मर्तबे लेनिन्‌की बातको बोल्शेविक-केन्द्रीय-समितिने भी बहुसम्मतिसे अस्वीकृत भी कर दिया। उसके पक्षमें सम्मति देनेवालोंमें स्वेर्द्लफ़् और स्तालिन् भी थे। लेकिन अन्तमें कमेटीने देखा कि लेनिन्‌की ही बात उस समय अनुकूल है। लेनिन्‌ने कहा था—यदि जर्मनोंकी शर्त हो, कि बोल्शेविक सरकार हटा दी जाय, तभी हमें लड़नेके लिए तैयार होना चाहिए। २३ फ़रवरीको केन्द्रीय-समितिने जर्मन शर्तोंको मंजूर किया।

* *   * *

गृह-युद्ध (मई १६१८से नवम्बर १६२० तक)—गृह-युद्ध क्रान्तिके ६ महीने बाद आरंभ हुआ। क्रान्तिके वक्त रूसको सबसे अधिक ख़तरा था जर्मनीसे। जर्मनोंने यद्यपि रूसके दक्षिणी भागपर दोन् तक अपना अधिकार किया था, और वहाँपर वह स्थानीय जनता, धनिकों और ज़मींदारोंको सोवियत् शासनके ख़िलाफ़ उभारता भी था, लेकिन उसकी पश्चिमी सीमापर मित्र-शक्तियोंकी ओरसे बड़ा प्रहार हो रहा था। इसीलिए लुडन्डर्फ़ चाहता था, कि रूससे समझौता कर लिया जाये, जिसमें अपनी सेनाको पश्चिमी युद्ध-क्षेत्रपर भेजा जा सके। इसीलिए उस वक्त गृह-युद्धका ज़ोर उतना अधिक बढ़ने नहीं पाया।

सबसे कठिन समय सोवियत्-शासनके लिए तब आया, जब जर्मनी परास्त हो गया। उस वक्त मित्र-शक्तियोंकी सेनायें जहाँ-तहाँ युद्ध-क्षेत्रके कामसे छुट्टी पा रही थीं। इंगलैंड, फ्रांस, अमेरिका और जापानमेंसे कोई भी सोवियत्-शक्तिको फूटी आँखसे भी देखनेको तैयार नहीं था। वे समझते थे, सोवियत्-शक्तिके रूपमें सारे पूँजीवादी संसारका एक बड़ा

दुश्मन पैदा हो गया है, यदि रूसमें इस शासनने सफलता पाई, तो सारी दुनियाके जाँगर चलानेवालोंकी हिम्मत बढ़ जायगी।

सोवियत्-शक्ति ज़ारशाहीके सभी हिस्सोंमें करीब करीब फैल गई थी। लिथुआनिया, लत्विया, एस्थोनिया और फ़िनलैण्ड—जो पहले ज़ार-शाही साम्राज्यके एक भाग थे—की स्वतन्त्रताको सोवियत् सरकार ने स्वीकार कर लिया। पोलैण्डका भी रूसके मातहत वाला हिस्सा अलग हो गया। काकेशस् और मध्य-एसियामें भी सोवियत्-शासनकी बात शुरू हो चुकी थी। इसी समय २६ मई १९१८को गृह-युद्ध शुरू हुआ। चेको-स्लावक सिपाहियोंने—जो ब्लादीवोस्तोक्से चलनेवाले थे, और सिबेरियाकी रेलवे पर पेंज़ासे इर्कुत्स्क तक फैले थे—सोवियतके खिलाफ़ विद्रोह कर दिया। विद्रोह मित्र-शक्तियोंकी शहसे हुआ था। चेक सैनिकोंने सिबेरियामें रेलके किनारेको सभी जगहोंसे सोवियत्-शासनको उठा दिया। पुराने ज़मानेके ज़मीदारों और धनिकोंको पूजाकाती मित्र-शक्तियोंने दिल खोलकर धन और गोला-बारूदसे मदद देना शुरू किया। नवंबर १९१८—जबकि जर्मनीपर मित्र-शक्तियोंने विजय पाई—से सोवियत् शासनके ऊपर और काले बादल मँडराने लगे। अब सवाल था, एक तरफ़ श्रमजीवियोंके अधिनायकत्वका और दूसरा तरफ़ पूँजीवादियोंके अधिनायकत्वका।

मई १९१८को मालूम होने लगा, कि शहरकी जनताको भूखा मरना पड़ेगा। यातायातके रास्ते बन्द हो गये थे। रूबलका दाम गिर गया था। किसान अपने अनाजको देना नहीं चाहते थे। इस समय लेनिन्ने बड़े मौक़ेपर पथप्रदर्शन किया। उसने कहा—"अनाजसे फ़ायदा उठानेवालोंके खिलाफ़ जबरदस्त जहाद बोलनी चाहिए। अनाजके व्यक्तिगत व्यापारको बिल्कुल मना कर देना चाहिए। खर्चसे अधिक अनाजको निश्चित दर-पर गवर्नमेंटको देना चाहिए। अतिरिक्त अनाजको छिपाना दण्डनीय

समझना चाहिए। इस अतिरिक्त अनाजको रजिस्टरमें दर्ज करना चाहिए और सभी नागरिकोंको रोटी बाँटनेमें न्याय करना चाहिए।"

यह नीति गृह-युद्धके अन्त तक कायम रही; और अगर इस नीति-को न स्थापित किया गया होता, तो भूखके मारे जो अव्यवस्था होती, उसके कारण लाल-सेना लड़ नहीं सकती थी। लेकिन साथ ही इस नीतिने वोल्गा और सिबेरियाके बहुतसे किसानोंको सोवियत्के खिलाफ़ भड़का भी दिया। राज़ी-ख़ुशीसे वह अपने अनाजको सरकारके हाथमें नहीं देना चाहते थे।

मित्र-शक्तियोंने चेकोस्लावक-सेनाको (महायुद्धके पूर्व चेकोस्लावकियाका अधिकांश भाग आस्ट्रियाके अधिकारमें था, लेकिन स्लाव जातिके होने-से वह रूसियोंके अधिक नज़दीक थे। रूसने चेकोस्लावकियाको आस्ट्रिया-के चंगुलसे छुड़ानेका आश्वासन दे अपने साथ कर लिया। इन्हीं राष्ट्रीय चेकोंकी सेना रूससे मित्रके तौरपर सिबेरियामें पहुँची थी) सोवियत्के खिलाफ़ खड़ा किया। अंग्रेज़ोंने आर्खेङ्गल् (उत्तरी रूस)में अपनी सेनाएँ उतारीं। बाकूके तेलोंपर नज़र रखते हुए उन्होंने काकेशस्में षड्यंत्र किया।

राजधानीके भीतर भी असन्तुष्ट होकर कुछ क्रान्ति-विरोधियोंने गड़-बड़ मचानी शुरू की। बोल्शेविक नेताओंके मारनेका षड्यंत्र रचा जाने लगा। पेत्रोग्राद्की खुफ़िया-पुलीस (चेका)का प्रधान उरित्स्की ३० जून-को मार डाला गया; और ख़ुद लेनिन्पर एक स्त्रीने पिस्तौलसे हमला किया। उसकी एक गोली लेनिन्के फेफड़ेमें लगी और दूसरी गर्दनसे हड्डीको बचाते निकल गई। लेनिन् कमकरोंकी सभामें व्याख्यान देकर अपनी मोटरपर चढ़ रहा था, उसी वक्त गोली चलाई गई। लेनिन्ने उस वक्त हदसे ज्यादा हिम्मत दिखलाई। घरकी सीढ़ीपर उठाकर ले जानेको स्वीकार नहीं किया और खुद अपने पैरोंसे चलकर गया, लेकिन घाव साधारण न था। कई दिनों तक वह जीवन और

मृत्युके बीच लटकता रहा। लेकिन अन्तमें वह खतरेसे बाहर हुआ, तो भी उसका स्वास्थ्य फिर पहले जैसा नहीं हो सका। जिस वक्त जनताको इसकी खबर लगी, तो उनके शोक और क्रोधका ठिकाना नहीं था। इस १३ अगस्तकी घटनाने दिखला दिया, कि रूसकी जनतामें लेनिन्के लिये क्या स्थान है।

अभी लेनिन्की अवस्था सुधरी नहीं थी, कि मित्र-शक्तियोंकी मददसे सफ़ेद-सेना (सोवियत् विरोधियोंकी सेना) ने ज़ोर पकड़ा। सोवियत् शक्ति-के लिए उतना खतरनाक वक्त कभी नहीं आया जैसाकि १९१९के जुलाई-अगस्तमें था। लेकिन साथ ही साथ राजनैतिक दृष्टिसे बोल्शे-विकोंका पक्ष अब भीतरकी तरफ़से मज़बूत भी हो गया। लोगोंको साफ़ मालूम होने लगा, कि एक तरफ़ रूसकी स्वतंत्रताका प्रश्न है और दूसरी तरफ़ विदेशी पूँजीवादकी अधीनताके साथ साथ रूसकी स्वतन्त्रताका अन्त। इस ख्यालने बहुतोंको सोवियत्की तरफ़ खींच लिया। सिबेरियासे सफ़ेद सेनापतियोंका निकालना एक तरहसे वहाँ हीके स्वतन्त्रता-प्रेमी निवासियोंका काम था।

लेनिन्को एक तरफ़ भीतरसे इस गृह-युद्धमें विजय पानेकी चिन्ता थी और दूसरी तरफ़ वैदेशिक नीतिकी ज़िम्मेवारी भी थी। गृह-युद्ध दोनों तरफ़से बढ़ता ही गया। एक बार तो देनिकिन्की सेना काकेशस्की तरफ़से बढ़ती हुई, मास्कोके १०० मील पास तक पहुँच गई थी। उधर सिबेरियाकी तरफ़से कोल्चक्को भी उसी तरह सफलता मिल रही थी। बोल्शेविकोंके लिए यही असली परीक्षाका समय था। लेकिन जैसे जैसे समय बीतता जाता था, तजर्बा उन्हें और भी दृढ़ और सचेत बनाता जाता था। इंगलैण्ड, फ्रांसके मज़दूरोंको यह मालूम होते देर नहीं लगी, कि उनकी गवर्नमेंट संसारके एक मात्र मज़दूर-राज्यका गला घोंटना चाहती है। इस पर मज़दूरोंमें उत्तेजना फैली। कर्जन-चर्चिल जैसे साम्राज्यवादियोंने चाहा था, कि जर्मनीके खिलाफ़ लगी शक्तिको सोवियत्के

खिलाफ़ इस्तेमाल किया जाय; लेकिन उस वक्त इंगलैण्डके मज़दूरोंने सोवियत्‌के साथ ऐसी सहानुभूति दिखलाई कि ब्रिटिश सरकारको और आगे बढ़नेकी हिम्मत नहीं हुई।

लड़ाई चली ही जा रही थी, इसी वक्त अमेरिकाने सोवियत् सरकार और सफ़ेद सेनापतियोंके सामने प्रस्ताव रखा, कि जो इलाक़ा जिसके पास है, वह उसके पास ही रहे, और वहींकी जनताके ऊपर छोड़ दिया जाय कि वह लाल निशानको पसन्द करती है या सफ़ेद। लेनिन् इसके लिए तैयार था, क्योंकि वह जानता था कि जनताको अधिक दिनों तक सफ़ेद ज़मींदार भ्रममें नहीं डाल सकते। लेकिन सफ़ेद सेनापतियोंने इस योजनाको अस्वीकार कर दिया। सुदूर-पूर्व-प्रजातंत्रमें जापानके ज़ोर देनेके कारण यह समझौता मान लिया गया था, लेकिन वही बात हुई जिसकी लेनिन् आशा रखता था। कुछ ही दिनोंमें जनताने सफ़ेद सेनापतियोंके राजसी ठाट और हकूमतसे तंग आकर उन्हें निकाल बाहर किया।

मार्च १९१९में लेनिन्‌के परामर्शानुसार साम्यवादियोंका एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन हुआ। इसी वक्त तृतीय कमूनिस्त-इन्तर्नेश्नल् (सारे संसारके साम्यवादियोंकी सभा) की स्थापना हुई।

लेनिन्‌ने रूसी साम्राज्यकी भीतरी जातियोंको स्वभाग्य-निर्णयका अधिकार जो दिया, उससे उस वक्त त्रोत्स्की जैसे कितने ही असन्तुष्ट हुए थे। लेकिन तजर्बेने बतलाया, कि लेनिन ठीक रास्तेपर था। इससे दो बातोंका फ़ायदा हुआ—एक सोवियत्‌को केन्द्रीय शक्तिकी शकलमें रूसी साम्राज्यवादको पुनर्जाग्रित होनेका मौक़ा नहीं मिला और दूसरे उन जातियोंके पूँजीवादियोंको जातीयताके नामपर सोवियत् शक्तिके खिलाफ़ लोगोंको भड़कानेका मौक़ा नहीं मिला। छिपे हुए रूसी साम्राज्यवादके लिए जो थोड़ी बहुत गुंजायश रह भी गयी थी, वह दिसंबर १९२२में खतम

हो गई ; जब कि रूसी सोवियत् समाजवादी रिपब्लिकमें से रूसका नाम ही हटा दिया गया और उसकी जगह संघ-सोवियत्-समाजवादी-रिपब्लिक नाम रखा गया।

मार्च १६२०में मालूम हो रहा था, कि अब गृह-युद्ध खतम होनेको है। कोल्चक और देनिकिन हार चुके थे और इंगलैंड अपने हाथको खींच रहा था। लेकिन इसी समय फ्रांस आगे बढ़कर रंगलकी मदद करने लगा। रंगलने देनिकिन्की बची-खुची सेनाको क्रिमियामें फिर-से संगठित किया। फ्रांसका शह पाकर पोलैण्डके नये राष्ट्रने रूस-पर हमला कर दिया। रंगल दक्षिणसे उत्तरको बढ़ रहा था और मईके अन्तमें पिल्सुद्स्की (पोएलेंड)ने उक्रइन्पर चढ़ाई शुरू करके कियेफ़्पर कब्ज़ा कर लिया। लेकिन सोवियत्की शक्ति अब बहुत मज़बूत हो चुकी थी। ३ वर्षके युद्धने लाल-सेनाको खूब संगठित और सुदृढ़ बना दिया था। उसने पोलिश् सेनाको उक्रइनसे ही नहीं भगाया, बल्कि पोलैण्डके भीतर भी घुस गई, और चाहती थी, वर्साँवा (पोलैण्ड की राजधानी वार्सा) पर अधिकार करके सारे पोलैण्ड-को सोवियत्-प्रजातंत्रका रूप दे दे। लेनिन्ने इसे पसन्द नहीं किया, लेकिन दूसरे क्रान्तिकारियोंने अन्तर्राष्ट्रीय क्रान्तिके लिए इसमें अच्छा मौक़ा देखा। इसमें शक़ नहीं, यदि लाल-सेनाने वर्साँवा दख़ल कर लिया होता और इस प्रकार वह पोलैण्ड में साम्यवादी सरकार स्थापित करनेमें सफल हुई होती, तो इसका असर पड़ोसी जर्मनी—जहाँपर युद्धके बादके कई वर्षों तक समाजवादकी शक्ति बढ़ी हुई थी—पर ही नहीं बल्कि सारे संसार पर पड़ता। लेकिन पोलैण्ड वाले बहुत वर्षोंसे रूसकी पराधीनताका मज़ा चख चुके थे, और वह मीठा न था। बहुत दिनोंके बाद आस्ट्रिया, जर्मनी और रूसके बीच टुकड़े टुकड़े बँटा हुआ पोलैण्ड एक राज्य बन सका था। रूसके हमलेसे उसे फिर खतरा हो गया और राष्टीय स्वतंत्रताके नामपर

सारी पोलिश् जनता—कमकर भी—एक हो गई और अगस्त १९२०में सोवियत् सेनाको वर्सावामें हार खानी पड़ी।

लेनिन्‌ने यहाँ भी कुछ हद तक दबकर सुलह कर ली। अब लाल-सेना रैंगलके मुक़ाबलेके लिए छुट्टी पा गई थी और नवम्बर १९२०में रैंगलके पतनके साथ गृह-युद्धका अन्त हुआ।

* * * *
* *

नवंबर १९१७से नवंबर १९२० तक साम्यवादी सरकारको भयंकर युद्धोंसे गुज़रना पड़ा और इसके लिए युद्धकालीन साम्यवादको खास नीति निर्धारित करनी पड़ी थी। गृह-युद्धके समाप्त हो जानेपर अब नष्टप्राय उद्योग और त्यक्त-प्राय रेलोंके पुनर्निर्माणका ही सवाल नहीं था, बल्कि प्रश्न था, कैसे किसी भी उपायसे लोगोंको कुछ सुस्तानेका मौक़ा दिया जाय। मार्च १९२१में दशम पार्टी कांग्रेसमें लेनिन्‌ने नई-आर्थिक-नीति सामने रखी। इसके ज़रिए वह चाहता था, कि किसानोंके विरोधको कम करके सारी शक्ति औद्योगिक पुनर्निर्माणमें लगाई जाय। इस नीतिके अनुसार किसानोंके लिए लगान निश्चित कर दी गई और उन्हें अतिरिक्त अनाजको जहाँ चाहें वहाँ बेच सकनेका अधिकार मिला। इससे वैयक्तिक लाभको उत्तेजना मिली। व्यापार व्यक्तियोंके हाथमें जाने लगा और छोटे-छोटे कारखाने तक भी वैयक्तिक सम्पत्ति बनने लगे।

नई-आर्थिक-नीतिसे लोगोंको उतना लाभ नहीं हुआ, क्योंकि उसी साल फसलके खराब होनेसे अकाल पड़ गया।

मार्च १९२२की अंतिम पार्टी कांग्रेस थी, जिसमें लेनिन्‌ने भाग लिया। २७ मार्चका उसका व्याख्यान खास महत्त्व रखता है। साम्यवादियोंको कारबार चलानेका ढंग पूँजीवादियोंसे सीखना चाहिए; इसके बारेमें उसने कहा—"हमारी तरफ़से कहा जाता

है—"पूँजीवादी काममें लगा है। उसका काम लुटेरेकी तरह है। वह नफ़ा चाहता है।" चाहे जो हो, वह अपने कामको जानता है। लेकिन तुम—तुम एक नये तरीक़ेके लिए कोशिश कर रहे हो। तुम्हें नफ़ा नहीं करना है। साम्यवादके सिद्धान्त, उच्च आदर्श, तुम्हारे सामने हैं। तुम पवित्र आदमी हो, तुम धर्मात्मा पुरुष हो, तुम स्वर्गमें जाकर रहने लायक आदमी हो। लेकिन क्या तुम्हें अपने कामका ढंग मालूम है? हमें झूठा अभिमान नहीं होना चाहिए।......हमें यह सीधी-सादी बात जाननी चाहिए, कि एक नये और असाधारणतया मुश्किल कामको नये तौरपर फिरसे सीखना है। अगर एक आरंभ तुम्हें ग़लत रास्तेपर ले जाता है, तो फिरसे आरम्भ करो। उसी कामको दोबारा दस बार करो, लेकिन लक्ष्यपर तुम्हें पहुँचना चाहिए। आत्म-श्लाघी मत बनो। साम्यवादी होनेका अभिमान मत करो।........."

साम्यवादी पार्टीके बारेमें कहते हुए लेनिन्ने कहा—"महान् जन-समुदायमें समुद्रमें बूँदकी तरह हम हैं। हम तभी शासन कर सकते हैं, जब कि जनताके मनोभावको हम अपने काममें प्रकट करें।......आज तक जितने भी क्रान्तिकारी दलोंने हार खाई, उसका कारण यह था कि उन्हें बड़ा अभिमान हो गया। वह देख नहीं सकते थे, कि कहाँ से उन्हें शक्ति मिली है, और वे अपनी कमजोरियोंको कहनेसे डरते थे। हम लोगोंका पतन नहीं होगा, क्योंकि हम अपनी कमजोरियोंको कहनेसे डरते नहीं। अपनी कमजोरियोंको कैसे हटाया जाय, इसे हम सीखेंगे।"

* * *   * * *

१९२२के आरम्भमें लेनिन्का स्वास्थ्य फिर ख़राब हो गया। इतना ख़राब हुआ कि उसे काम छोड़ देना पड़ा। मईमें लक़वा मार गया और दाहिना हाथ और पैर उठ नहीं सकते थे। हालत बहुत खतरनाक समझी जाती थी। जुलाईमें स्वास्थ्यमें कुछ सुधार होने लगा। इस वक्त

डाक्टरोंने उसे काम करनेसे बिलकुल मना कर दिया था। तो भी वह कुछ कर ही लेता था। अक्तूबरमें स्वास्थ्य इतना अच्छा हो गया, कि फिरसे कामपर आनेकी बात प्रकाशित हो गई थी। लेकिन दिसम्बर में हालत फिर खराब हो गई। अब शासनका काम उसे अपने हाथसे छोड़ देना पड़ा। इस वक्त भी लेनिन्ने कुछ लेख लिखे। उसका सबसे अन्तिम लेख था—"सहयोगके ऊपर।" इसमें लेनिन्ने किसान-समस्यापर प्रकाश डाला है, जिसमें आजकलके कलखोजोंका पूर्वाभास मिलता है।

मार्च १९२३में दोबारा लक़वा मारा और अब उसे सब काम छोड़ देना पड़ा। मास्कोके पास गोर्कीके गाँव वाले घरमें ले जाया गया, जहाँ वह अपने जीवनकी अन्तिम घड़ियों तक रहा। १९२३के अन्तिम महीने और जनवरीके पहले सप्ताह कुछ आशा होने लगी थी, लेकिन वह दिखलावा भर था। २१ जनवरी १९२४को फिर एक-ब-एक बीमारी बढ़ गई, और उसी दिन शामको ६ बजकर ५० मिनटपर लेनिन्का देहान्त हो गया।

* * * * * *

(३) स्तालिनका उद्गार

२८ जनवरी १९२४को लेनिन्की मृत्युके ६ दिन बाद स्तालिन्ने क्रेम्लिन् सैनिक विद्यार्थियोंके सामने लेनिन्के ऊपर एक व्याख्यान दिया था—

शाहबाज—पहले पहल मेरा परिचय लेनिन्से १९०३में हुआ। लेकिन यह प्रत्यक्ष परिचय नहीं था। यह परिचय पत्र-व्यवहार द्वारा स्थापित हुआ था। इसने मेरे दिलपर ऐसी अमिट छाप छोड़ी, जो कि कभी मेरे दिलसे नहीं हटी………। उस समय मैं सिबेरियामें निर्वासित था। १८९०के अन्तसे ही मुझे लेनिन्के कामोंका पता था। लेकिन १९०१में 'इस्क्रा'के प्रकाशनके बाद खास तौरसे मुझे विश्वास हो गया

कि लेनिन् साधारण आदमी नहीं है। मैं उसे पार्टीका एक नेता मात्र नहीं समझता था, बल्कि उसका निर्माता समझता था.........। जब कभी भी मैं अपनी पार्टीके और नेताओंसे लेनिन्की तुलना करता था, तो मुझे मालूम पड़ता था कि प्लेखानोफ्, मर्तोफ्, अखेल्रोद् और दूसरे लेनिन् के कन्धे ही तक पहुँचते थे। वह नेताओंमें से एक नहीं था, बल्कि बहुत उच्च श्रेणीका नेता था। वह पहाड़ी शाहबाज़ था, लड़ाईसे ज़रा भी डरता नहीं था। उसने साहसके साथ पार्टीको रूसी क्रान्तिकारी आन्दोलनके अज्ञात पथ पर चलाया। उस समय मेरे दिल पर लेनिन्का ऐसा प्रभाव पड़ा था, कि मैंने अपना भाव अपने एक घनिष्ट मित्र—जो कि उस समय लेनिन्की तरह विदेशमें रह रहे थे—को लिखा; और उनसे अपनी राय देनेके लिए पूछा। थोड़े समय बाद (१९०३के अन्तमें)—जब कि मैं निर्वासित करके सिबेरिया भेज दिया गया था—मेरे पास लेनिन्का एक बहुत गंभीर पत्र आया। मालूम हुआ, मित्रने मेरे पत्रको लेनिन्के पास भेज दिया...। मुझे बड़ा अफ़सोस होता है, कि मैंने लेनिन्के पत्रोंको जला दिया, लेकिन उस समय हमारे जैसे गुप्त क्रान्तिकारियोंके लिए ऐसा करना ज़रूरी था। उस समयसे मेरा लेनिन्के साथ परिचय आरम्भ हुआ।

सादृगी—पहले पहल मुझे लेनिन्का दर्शन दिसम्बर १९०५में तमफोर्स (फ़िनलैण्ड)में बोलशेविकोंके एक सम्मेलनमें हुआ। मैं वहाँ अपनी पार्टीके पहाड़ी शाहबाजको देखनेकी आशा करता था। महान् पुरुष राजनीति हीमें महान् नहीं, बल्कि शरीरमें भी होते हैं। क्योंकि मैंने लेनिन्का एक अलग ही चित्र कल्पित कर रखा था। वह बड़ा कद्दावर होगा, मोटा-ताजा, और रोबदार होगा। लेकिन मुझे बड़ी निराशा हुई, जब कि उसे एक ऐसा साधारण आदमी देखा; जो औसत ऊँचाईसे भी छोटा था और किसी प्रकार भी, हाँ सचमुच किसी प्रकार भी, साधारण

आदमीसे उससे भेद नहीं किया जा सकता ।······बड़े आदमियोंके लिए यह मानी हुई बात थी, कि बैठकमें वे पीछे आयें, जिसमें कि पहलेसे जमा हुए लोग बड़ी उत्सुकताके साथ टकटकी लगाये उनके आगमनकी प्रतीक्षा करें और बड़े आदमीके आगमनके ज़रा ही पहले एकत्र जनता कह उठे—'चु······चुप······वह आ रहा है'। मैं समझ रहा था, कि यह पद्धति बहुत आवश्यक है, क्योंकि इससे रोब पड़ता है और गौरव बढ़ता है। लेकिन मेरी निराशाका ठिकाना नहीं रहा, जब मैंने सुना, कि लेनिन् प्रतिनिधियोंके आनेसे भी पहले पहुँचा हुआ है और एक कोनेमें बैठकर मामूली बातचीत कर रहा है, कान्फ्रेंसके मामूली प्रतिनिधियोंके साथ। मैं इसे तुमसे छिपाना नहीं चाहता, कि उस समय एक आवश्यक नियमका इस प्रकार उल्लङ्घन मैं ठीक नहीं मानता था।

पीछे मेरे तजर्बेने यह बतलाया, कि लेनिन्की यह सादगी और विनम्रता, यह अपनेको ज़ाहिर न करनेका प्रयत्न या हर समय अपनेको प्रधान करके न दिखलाना, अपने ऊँचे पदका प्रदर्शन न करना—यह गुण लेनिन्के सबसे ज़बर्दस्त गुणों में है : जो कि नई जनताके नये लीडर, सीधी सादी और मामूली जनताके नायकके लिए······बड़ी ताक़तकी चीज़ है।

तर्क-शक्ति—उस सम्मेलनमें तत्कालीन राजनीतिज्ञ घटनाओं और किसानोंकी समस्यापर जो व्याख्यान लेनिन्ने दिये थे, वे बहुत गम्भीर थे। दुर्भाग्यसे उनकी रिपोर्ट सुरक्षित नहीं रखी गई। वह इतने जोशीले और अन्त:प्रेरणादायक व्याख्यान थे, जिन्होंने सारे सम्मेलनमें जोश और उत्साह भर दिया। साधारण पार्लियामेंटरी वक्ताओंसे लेनिन्के व्याख्यानोंमें कितनी ही विशेषताएँ थीं। उनमें असाधारण आत्मविश्वास-की मात्रा होती थी। युक्ति देनेमें सादगी, और स्पष्टता थी। उसके छोटे-छोटे वाक्य सभीके समझने लायक होते। वहाँ अभिनयका अभाव था।

गर्जन-तर्जनका नाम न था। ऊँचे ऊँचे वाक्यों और शब्दोंके मायाजालका भी पता न था।

लेकिन लेनिन्के व्याख्यानोंकी ये विशेषताएँ नहीं थीं, जिन्होंने कि उस समय मुझे अपनी ओर आकर्षित किया। मैं आकर्षित हुआ था, लेनिन्के व्याख्यानोंकी अकाट्य युक्तियोंके कारण। वे थोड़ी रूखी ज़रूर थीं, लेकिन श्रोतृ-मंडलीपर पूर्णतया प्रभाव डालती थीं, और धीरे धीरे उसमें विद्युत्-संचार करके सारी जनताको अपने हाथमें कर लेती थीं।......

मैं समझता हूँ, लेनिन्के व्याख्यानोंकी यह विशेषता उसकी वक्तृत्वकलाका सबसे मजबूत अंश था।

चिड़चिड़ापन नहीं—दूसरी बार लेनिन्को मैंने पार्टीके स्टाकहोलम कॉंग्रेसमें १९०६में देखा। सब लोग जानते हैं, कि इस कॉंग्रेसमें बोलशेविक अल्पमतमें थे और उनकी हार हुई थी। यह पहली बार था, जब कि मैंने लेनिन्को पराजितके रूपमें देखा। लेनिन् उन नेताओंकी तरह नहीं था, जो कि हार जानेपर चिड़चिड़ा जाते हैं और ज़िदपर उतर आते हैं। इसके विरुद्ध हारने लेनिन्के भीतर और साहस भर दिया था। उसने उसके अनुयायियोंको नई लड़ाइयों और भविष्यकी विजयके लिए उत्साहित किया।..............

गर्व नहीं—उसके बाद मैंने लेनिन्को लन्दनमें १९०७में देखा। बोल्शेविक यहाँ विजयी हुए थे। मैंने वहाँ लेनिन्को पहले पहल विजेताके रूपमें देखा। आमतौरसे 'जय' नेताओंके दिमाग़को फेर देती है। उनमें गर्व और ग़रूर भर देती है। प्रायः ऐसे समयमें वह अपने जयका प्रदर्शन करते हैं............। लेकिन लेनिन् इस तरहके नेताओंमेंसे नहीं था। इसके विरुद्ध बल्कि ऐसी ही विजयके बाद लेनिन् और भी जागरूक, और भी सजग हो जाता था। मुझे याद है, लेनिन् किस तरह दिलसे प्रतिनिधियोंको समझा रहा था—'पहली बात है कि विजयसे फूल

मत जाओ। गर्व मत करो। दूसरी बात है विजयको स्थायी बनाओ। तीसरी बात है, विरोधियोंको पीस दो क्योंकि, वह सिर्फ़ पराजित हुए हैं, वह पूरी तरह पिसे नहीं हैं।'...........जयका गर्व न करना लेनिन्के स्वभावकी यह खास विशेषता थी; जो कि ध्यान-पूर्वक शत्रुओंकी शक्तियोंको तौलने और पार्टीपर अचानक प्रहार होनेसे बचानेमें लेनिन्की सहायता करती थी।

सिद्धान्तवादी—पार्टीके नेताको अपनी पार्टीके बहुमतकी रायको बहुमान्य समझना चाहिए। बहुमत एक ऐसी शक्ति है, जिसका ध्यान नेताको हमेशा सामने रखना चाहिए। लेनिन् इस बातको किसी भी दूसरे पार्टी-नेतासे कम नहीं समझता था। लेकिन लेनिन्ने कभी भी अपने को बहुमतका दास बनाना पसन्द नहीं किया। विशेषकर जब कि बहुमतके लिए किसी सिद्धान्तका आधार नहीं। हमारी पार्टीके इतिहासमें ऐसे समय आये हैं, जब कि बहुमत या पार्टीका तत्कालीन लाभ जाँगर चलाने वालोंके मूलहितके विरुद्ध हुआ। ऐसे अवसरोंपर लेनिन् बिना हिचकिचाये दृढ़ता-पूर्वक पार्टीके बहुमतके खिलाफ़ सिद्धान्तकी ओर रहा। ऐसी अवस्थाओंमें अकेला होनेका भी उसने डर नहीं किया। वह समझता था, जैसा कि वह कहा करता था—'सिद्धान्तपर अवलम्बित नीति ही ठीक नीति है'।...............

जनतामें विश्वास—पार्टियोंके नेता और सिद्धान्तवादी, जो जातियोंका इतिहास जानते हैं, जिन्होंने आदिसे अंत तक क्रान्तियोंका इतिहास पढ़ा है; वे कभी-कभी एक बुरी बीमारीसे पीड़ित होते हैं। यह बीमारी है, जनतासे भय खाना। जनताकी रचनात्मक योग्यतामें विश्वास न करना। कभी-कभी इसी कारणसे लीडर लोग जनता—जो यद्यपि क्रान्तियोंके इतिहासकी जानकारीमें उतनी दक्ष नहीं है, लेकिन पुरानेको तोड़ना और नयेका बनाना उसीके हाथमें है—के सामने बड़प्पनका ढोंग दिखलाते हैं।.....................................। जनता

बहुत अधिक तोड़ न डाले। नर्स (दाई)की तरह वह चाहते हैं, कि जनताको किताबोंसे सिखलायें, लेकिन वे खुद जनतासे सीखना नहीं चाहते। यह है इस प्रकारके बड़प्पनके भावको दिखलानेका कारण।

लेनिन् ऐसे नेताओंसे बिल्कुल उलटी तबीयतका था। मैं किसी भी ऐसे दूसरे क्रान्तिकारीको नहीं जानता, जिसे जाँगर चलानेवालोंकी रचनात्मक शक्ति और अपनी श्रेणीकी अन्तर्दृष्टिकी क्रान्तिकारी क्षमतापर इतना विश्वास हो।.........मुझे याद है, लेनिन्‌की एक बात। एक साथीने कहा—"क्रान्तिके बाद साधारण व्यवस्था स्थापित हो जानी चाहिए।" लेनिन्‌ने व्यंग्यके साथ कहा—"यह बड़े अफ़सोसकी बात है, कि ये लोग जो क्रान्तिकारी बनना चाहते हैं, इस बातको भूल जाते हैं कि इतिहासमें अत्यन्त साधारण प्रकारकी व्यवस्था क्रान्तिकारी व्यवस्था है।" इसीलिए लेनिन् उन लोगोंको घृणाकी दृष्टिसे देखता था, जो कि हलके दिलसे जनताको नीची निगाहसे देखते हैं, और उन्हें किताबोंसे सिखलाना चाहते हैं। इसीलिए लेनिन् बराबर कहता था, कि हमें जनतासे सीखना चाहिए, उसकी क्रियाओंको समझना चाहिए और जनताकी जद्दो-जहदकी क्रियात्मकताका ध्यानसे अध्ययन करना चाहिए.....................

क्रान्तिका ऋषि—लेनिन् क्रान्तिके लिए पैदा हुआ था। सचमुच वह क्रान्तिकारी विप्लवका ऋषि था, क्रान्तिकलाका महाकलाकार था। वह अपनेको उतना स्वतंत्र और प्रसन्न कभी नहीं पाता था; जितना कि क्रान्तिकारी विभ्राट्‌के युगमें। ऐसा कहनेसे यह न समझें, कि लेनिन् हर प्रकारके क्रान्तिकारी विभ्राट्‌को पसन्द करता था, या वह हर समय और हर परिस्थितिमें क्रान्तिकारी विप्लवका अनुमोदक था। बिलकुल नहीं। मेरे कहनेका मतलब सिर्फ इतना ही है, कि लेनिन्‌की गंभीर अन्तर्दृष्टि उतनी पूर्णता और स्पष्टताके साथ कभी नहीं चलती थी, जितनी कि क्रान्तिकारी विप्लवके समय। क्रान्तिकारी द्वन्द्वोंके दिनोंमें वह भविष्य-द्रष्टाकी तरह मालूम होता था। वह श्रेणियोंकी चालोंको पहलेसे देखता

था और यह भी कि क्रान्तिका टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता किधरसे जायगा। वह उन्हें अपने हाथकी रेखाकी तरह स्पष्ट देखता था। हमारी पार्टीमें कहा जाता था—'इलिच् क्रान्तिकी लहरोंमें वैसे ही तैर सकता है, जैसे कि मछली पानीमें'। यह कहना निरर्थक न था।............मुझे दो घटनाएँ खास तौरसे याद हैं, जो लेनिन्के इन विशेष गुणोंको प्रकट करती हैं।

पहली घटना—अक्तूबरके विप्लवके पहलेके समयमें, जब कि लाखों कमकर, किसान और सिपाही युद्ध-क्षेत्र और घरोंकी आफ़तोंके मारे शान्ति और स्वतंत्रताकी माँग करते थे; जब कि सेनावादी और पूंजीवादी आखिरी दम तक युद्धके उद्देश्यसे सैनिक अधिनायकत्वकी तैयारी कर रहे थे; जब कि सभी तथाकथित 'सार्वजनिक सम्मति' और सभी तथाकथित 'समाजवादीदल' बोल्शेविकोंके विरुद्ध थे; उन पर 'जर्मन भेदिया' होनेका लांछन लगाते थे, जब कि बोल्शेविक पार्टीको करेन्स्की नेस्तनाबूद करना चाहता था और उसमें कुछ सफल भी हुआ; जब कि अब भी शक्तिशाली और संगठित आस्ट्रिया और जर्मनीकी सेना हमारी थकी और विशृंखलित सेनाके मुक़ाबलेमें खड़ी थी; और जब कि पश्चिमी यूरोपके समाजवादी 'अन्तिम विजय' तक युद्धके उद्देश्यसे अपनी-अपनी सरकारोंकी मित्रताका आनन्द लूट रहे थे.. ......ऐसे समयमें विद्रोह उठानेका क्या मतलब था? ऐसी परिस्थितिमें विद्रोह उठानेका मतलब था, अपने सर्वस्वको दाँवपर रख देना। लेकिन लेनिन् सर्वस्वकी बाज़ी लगानेसे डरता नहीं था; क्योंकि वह जानता था, वह अपनी क्रान्तिदर्शी आँखोंसे देखता था, कि विद्रोह अनिवार्य है। विद्रोह विजयी होगा। रूसमें विद्रोह साम्राज्यवादियोंके युद्धका अन्त नजदीक लावेगा। रूसमें विद्रोह साम्राज्य-वादी युद्धको गृह-युद्धमें परिणत करेगा। विद्रोह एक सोवियत्-प्रजातंत्रको उत्पन्न करेगा। वह सोवियत्-प्रजातंत्र सारे संसारके क्रान्तिकारी आन्दोलनोंके लिए ढालका काम देगा।

यह सबको मालूम है, कि लेनिन्‌की क्रान्तिकारिणी दूरदर्शिता पीछे अभूतपूर्व निश्चयात्मकताके साथ ठीक उतरी।

दूसरी घटना—अक्तूबर क्रान्तिके आरंभिक दिनोंमें जब कि जन-कमीसर्-कौंसिल (सोवियत्-मंत्रिमंडल या सोव्‌नर्‌कोम्)ने विद्रोही जेनरल प्रधान-सेनापति दुखोनिन्‌पर ज़ोर देना चाहा, कि वह युद्धको बन्द करे और जर्मनोंके साथ सुलहकी बात-चीत चलाये। मुझे याद है, लेनिन्, क्रिलेन्को (भावी प्रधान-सेनापति) और मैं पेत्रोग्राद्‌के प्रधान सैनिक केन्द्रमें इसलिए पहुँचे, कि सीधे तार द्वारा दुखोनिन्‌से बात करें। अवस्था बड़ी विकट थी। दुखोनिन् और जेनरल-स्टाफ़्‌ने सोव्‌नर्‌कोम्‌की आज्ञाके पालन करनेसे साफ़ इनकार कर दिया। सेनाके अफ़सर पूर्णतया जेनरल स्टाफ़्‌के हाथमें थे। जहाँ तक सिपाहियोंका संबंध था, यह कहना मुश्किल था, कि एक करोड़ २० लाखकी सेना—जो कि सोवियत् सरकारके विरोधी सैनिक संगठनके आधीन थी—क्या करेगी? खुद पेत्रोग्राद्-में सबको मालूम था, कि धनी खानदान वाले सैनिक विद्रोह करनेके लिए तैयार हो रहे हैं। इसके ऊपर करेन्स्की पेत्रोग्राद्‌पर धावा कर रहा है। मुझे याद है, तारपर ज़रा सा ठमक जानेके बाद लेनिन्‌के चेहरेपर असाधारण प्रकाशकी किरणें दौड़ गईं। यह मालूम होने लगा कि वह किसी निश्चयपर पहुँचा है। उसने कहा—"आओ, रेडियो-स्टेशनपर चलें। वह हमें मदद देगा। हम जेनरल दुखोनिन्‌को पदच्युत करने तथा साथी क्रिलेंकोको उसके स्थानपर प्रधान सेनापति नियुक्त करनेके लिए एक खास आज्ञा निकालेंगे। और अफ़सरों से बिना पूछे सीधे सिपाहियों-से अपील करेंगे, कि जेनरलोंको पकड़ लें, युद्धको बन्द करें, आस्ट्रिया-जर्मनीके सिपाहियोंके साथ सम्बन्ध स्थापित करें, और सुलहका काम अपने हाथमें लें।"

यह अँधेरेमें कूदना था। लेकिन लेनिन् कूदनेसे डरनेवाला नहीं था, बल्कि उल्टा वह उसका स्वागत करनेवाला था; क्योंकि वह जानता था;

कि सेना शांति चाहती है। वह शांतिके रास्तेकी सभी रुकावटोंको तोड़ फेंकेगी और शान्तिको लेकर रहेगी। वह जानता था, कि इस तरहकी शान्तिकी स्थापनाका तरीका, आस्ट्रिया, जर्मनीके सिपाहियोंपर असर डालेगा।..................

गज़बकी दूरदर्शिता, होनेवाली घटनाओंके आन्तरिक मर्मको योग्यताके साथ अति-शीघ्र पकड़ लेना और उससे फ़ायदा उठाना—यह लेनिन्का गुण था ; जिसने कि लेनिन्को इस योग्य बनाया, कि वह क्रान्तिकारी आन्दोलनके एक महत्त्वपूर्ण कालमें एक साफ़ कार्यक्रम तथा ठीक दाँवकी योजना करे।

२. स्तालिन्

(१) जीवनी

जार्जिया (गुर्जी) काकेशस्में काला-सागरकी तरफ़ अवस्थित एक छोटा सा पहाड़ी देश है। यह यूरोपमें न होकर एसियाका एक भाग है। गुर्जीके प्रधान शहर त्बिलिसी (तिफ़लिस)से थोड़ी दूरपर गोरी नामक एक छोटा कस्बा है। यहाँ विसारियोन जूगश्विली नामका चमार रहता था। विसारियोन् जूता भी बनाता था और किसान भी था। इसीके घर १८७६ में एक लड़का पैदा हुआ। माँ-बापने उसका नाम योसेफ़् (युसुफ़् या योजेफ़) रक्खा। बाइबिलमें आये यूसुफ़की तरह इस लड़केमें भी कोई विशेष सुन्दरता थी, यह नहीं कहा जा सकता। तो भी किस माँ-बापको अपना लड़का सुंदर नहीं जान पड़ता। विसारियोन्की आर्थिक अवस्थाके बारेमें इतना ही कहा जा सकता है; कि वह भूखा नहीं मरता था। उसकी स्त्री एकातेरिना एक खास ख़यालकी औरत थी। अगर विसारियोन्की चलती, तो वह योसेफ़को भी हमेशाके लिए जूता ही बनाने लायक होने देता; लेकिन एकातेरिना (कैथ्रिन) अपने लड़केके लिए दूसरा स्वप्न देख रही थी। यद्यपि वह स्वप्न उतना ऊँचा नहीं था, जहाँ कि उसका लड़का पहुँचा।

योसेफ़ने कस्बेके स्कूलमें कुछ पढ़ा। माँकी इच्छा हुई, कि योसेफ़ धर्मोपदेशक (पादरी) बने। ६ वर्षकी उम्रमें १ सितंबर १८८८को वह कस्बेके पादरियोंके स्कूलमें दाख़िल किया गया और तब से १ जुलाई १८९४ तक वहीं पढ़ता रहा। बाइबिल और ईसाई-धर्मकी बारीकियोंका गम्भीर अध्ययन ही पाठशालाका पाठ्य विषय था। इन्हीं दिनों समाजवादी क्रान्तिकारियोंका आन्दोलन ज़ोर-शोरसे आरम्भ हुआ था। तरुण लेनिनने अपनी बैरिस्ट्री छोड़ समारा और पीतर्बुर्गमें धूनी रमाई

थी। पीतर्बुर्ग कहाँ और कहाँ मास्को! और फिर कहाँ गोरीका गुमनाम क़स्बा? लेकिन विचारोंके पंख बड़ी तेज़ीसे उड़ते हैं। गोरीके भविष्यके इन पादरी विद्यार्थियोंकी कोठरियोंमें भी वह खयालात पहुँचे बिना नहीं रहे। योसेफ़् अपनी कक्षामें इसका नेता था। राजनैतिक हलचलों-पर पुलीसकी खास निगाह थी। योसेफ़ उसकी आँखोंसे बच नहीं सका, नतीजा यह हुआ, कि पाठशालाके अधिकारी पादरियोंने उसे स्कूलसे निकाल बाहर किया।

एकातेरिनाको योसेफ़के भविष्यके लिए कितनी चिन्ता हुई होगी, इसके कहनेकी आवश्यकता नहीं। एकातेरिना अभी हाल तक गोरीमें रहती रही। अब ४४ वर्ष बाद शायद उसे इसका अफसोस न होता रहा होगा।

योसेफ़्ने अब अपना सारा समय क्रान्तिके लिये देना शुरू किया। १८६८से १६१७ तक—इन १६ वर्षोंमें १६ बार उसे सिबेरियामें निर्वासित किया गया; और एक छोड़ हर बार वह निकल भागनेमें सफल हुआ। उसने गोरीमें तहखानेके भीतर छोटा सा प्रेस रखा था, और उसके द्वारा क्रान्तिकारी पुस्तिकाएँ छापता था। बाकूमें रहकर उसने गुर्जी भाषामें "बाकू मज़दूर" (बाकू प्रोलेतरी) नामक पत्र निकाला। सबसे पहले लेनिन्-का सम्पर्क १६०३में पत्र द्वारा हुआ; और तबसे वह बराबर लेनिन् का भक्त और शिष्य रहा।

पार्टीको अपने कामके लिए पैसोंकी आवश्यकता थी। दूसरे मुल्कोंकी तरह रूसके क्रान्तिकारियोंको भी यह आवश्यकता डकैतीसे पूरी करनी पड़ती थी। उस समय योसेफ़् तिफ्लिसकी पार्टीका नेता था, जब कि १६०७में ऐसी एक डकैती हुई थी। खज़ाना बाहर भेजा जा रहा था। योसेफ़के आदमियोंने बमोंसे हमला किया; और २० आदमी जानसे मारे गये। एक लाख रुपया हाथ आया। इतनी बड़ी हत्याको ऊपरके नेताओं-ने पसन्द नहीं किया, लेकिन परिस्थितिने एककी जगह २०को मारनेके लिए मजबूर किया।

योसेफ़्को अधिकतर अपना काम भेस बदलकर करना पड़ता था। कई बार पार्टीके कामसे उसे स्टाकहोल्म, प्राग (ज़ेकोस्लाविया) और लन्दन भी जाना पड़ा। लेकिन यह सिर्फ़ कान्फ्रेंसके वक्तमें ही। अधिकतर उसे रूसके भीतर ही रहकर काम करना पड़ता था। १६१२में उसने 'समाजवाद और जातीय समस्या' पर एक पुस्तक लिखी। उसकी सबसे महत्त्वपूर्ण पुस्तक है "लेनिनवाद" (लेनिनिज्म), जिसे उसने लाल क्रान्तिके बहुत पीछे लिखा। उस समय वह 'दूमा' (रूसी पार्लियामेंट)के बोल्शेविक दलके सदस्योंका नेता था। और पार्टीके पत्र 'प्राव्दा' (सत्य)के सम्पादकोंमेंसे एक था। १६१३में उसे फिर पकड़ा गया और आखिरी बार सिबेरियामें निर्वासित कर दिया गया; जहाँसे ज़ारके पदच्युत होनेके बाद ही उसे मुक्त होनेका मौक़ा मिला।

छिपकर काम करनेके वक्त असली नाम छिपानेके लिए क्रांतिकारियोंको दूसरे नाम रखने पड़ते थे। योसेफ् विसारियोनोविच् जूगशविलीका भी इसी तरहसे 'स्तालिन्' नाम पड़ा। किन्हीं किन्हींका कहना है, कि लेनिन्ने उसे यह नाम दिया। कुछ लोग कहते हैं कि अपने फौलादी मनसूबेके कारण उसका नाम स्तालिन् (फौलादी) पड़ा।

१६१७से पहलेका जीवन तैयारीका जीवन था। स्तालिन्का असली जीवन लाल क्रान्तिके बाद शुरू होता है। स्तालिन् वक्ता नहीं है, इसका यह मतलब नहीं, कि वह व्याख्यान नहीं दे सकता, और उसके व्याख्यानका असर नहीं होता। कहनेका अभिप्राय यह है, कि उसके व्याख्यानमें वह वक्तृत्व-कला नहीं दिखलाई पड़ती, जो त्रोत्स्की और दूसरे प्रसिद्ध वक्ताओंमें देखी जाती थी। और रही प्रभावकी बात, सो वह सिर्फ़ वक्तृत्व-कलापर निर्भर नहीं रखता। गांधीजीके व्याख्यानमें कौनसी वक्तृत्वकला है? ठीक उसी तरह स्तालिन्के व्याख्यानमें भी न स्वरोंका उतार-चढ़ाव है, न लच्छेदार शब्द हैं, न मेज़पर हाथ पटकना

है, न सारे शरीरको कँपानेका अभिनय है। स्तालिन्‌की वक्तृता होती है युक्तियों और उदाहरणोंसे भरी। वह रेखागणितके साध्योंकी तरह अपने व्याख्यानमें हर एक बातकी प्रतिज्ञा और फलको उन्हीं शब्दोंमें दोहराता है।

स्तालिन् लाल-क्रान्तिके समय पार्टीके राजनैतिक ब्यूरो (पोलित्-ब्यूरो या राजनीति-संचालक-मंडल)का एक सदस्य था। दूसरे सदस्य लेनिन्‌के अतिरिक्त त्रोत्स्की, ज़िनोवियेफ़्, कामेन्येफ़्, सोकोल्‌निकोफ़्, और बुग्नोफ़् थे। इसके अतिरिक्त मंत्रिमंडलमें दो विभागों—किसान-मज़दूर निरीक्षण और जातिक विभागका कमीसर (मंत्री) भी था। स्तालिन्‌की विशेषता थी, सुन्दर संगठन और मन्तव्यको सुचारु रूपसे कार्य रूपमें परिणत करना। व्यवहार-ज्ञानको पुस्तकके ज्ञानसे वह अधिक महत्त्व देता है। दृढ़तासे पूर्ण मनोयोगके साथ बराबर काम किये जाना यह स्तालिन् ही जानता है। स्तालिन्‌की कलममें ताक़त नहीं है, सीधा सादा होनेपर भी उसके भाषणमें शक्ति नहीं है, या वह सोचनेकी शक्ति नहीं रखता है—यह बात नहीं है। असल बात यह है, कि हर एक ज्ञानको वह व्यवहारिक उपयोगिताकी कसौटीपर कसता है। लेनिन् अगर क्रान्तिकी सफलताके लिए सोचनेमें कमाल रखता था, तो स्तालिन् उसे व्यवहारमें लानेमें कुशल है। लेनिन्‌को स्तालिन्‌की इस शक्तिका पता था। इसीलिए जब कभी संगठन और व्यवहारके कामकी ज़रूरत पड़ती, तो वह स्तालिन् हीको वह काम सौंपता था।

स्तालिन्‌को बिना दिखावेके काम करनेकी आदत है। मार्च १९१७में करेन्स्कीकी सरकारने स्तालिन्‌को मुक्त किया। दूसरे राजनैतिक कैदी बड़े स्वागत और प्रदर्शनके साथ पेत्रोग्राद् आते थे, लेकिन स्तालिन्‌को कोई जानता नहीं, कि कब पेत्रोग्राद् पहुँचकर 'प्राव्दा'के सम्पादकीय विभागमें दाखिल हो गया। ऐसा कभी मौक़ा नहीं आया, जब कि स्तालिन् लेनिन्‌के विरुद्ध हुआ हो। लेनिन्‌के लिए उसके हृदयमें कितनी श्रद्धा

है, वह उसके इस वाक्यसे मालूम होगी—"मैं लेनिन्का एक शिष्य हूँ। मेरी यही एक मात्र इच्छा है, कि उसका योग्य अनुयायी रहूँ।" लेनिन्की महान् पीतर्से तुलना करते सुनकर उसने कहा—"मैं इतना ही कहूँगा कि मन्दिर बनानेके लिए पीतर् सिर्फ़ एक ईंट लाया था; लेकिन लेनिन्ने सारी इमारत खड़ी कर दी। मैं केवल उसका शिष्य भर हूँ।"

१९१८-२०में त्रोत्स्की सोवियत् सेनाका सेनापति-सा था। कारण यह था कि बोल्शेविकोंका ज़ारशाही अफ़सरोंपर विश्वास न था, इस लिए वह अपने ही मेंसे किसीको दायित्वपूर्ण पदोंपर रखते थे। देनिकिन्ने दक्षिणसे हमला शुरू किया था। सफ़ेद सेना आगे बढ़ती आ रही थी। लेनिन्ने स्तालिन्को दक्षिणी युद्ध-क्षेत्रका काम सौंपा। वहाँसे भेजे हुए एक पत्रमें उसने लिखा—"यह मानी हुई बात है, कि सभी महत्त्वपूर्ण युद्ध-संबंधी कार्रवाइयोंकी सारी ज़िम्मेवारी मैं अपने सिरपर लूँगा।" त्रोत्स्कीने उस समय अनेक आज्ञाएँ मास्कोसे भेजीं। स्तालिन्ने उनपर कोई ध्यान नहीं दिया। ऐसे एक आज्ञापत्रकी पीठपर "इसकी ओर कोई ध्यान मत दो" लिखकर उसने अपने एक अफ़सरके हाथमें दे दिया। त्रोत्स्की जला भुना हुआ था। उसने इसकी शिकायत लेनिन्से की। लेनिन्ने त्रोत्स्कीकी आज्ञा माननेके लिए स्तालिन्को मजबूर किया। स्तालिन् मान गया। १९१९की बात है। देनिकिन्को रोकनेके लिए त्रोत्स्की और स्तालिन् दोनों गये हुए थे। त्रोत्स्की कलमका धनी था। लम्बे लम्बे खरीते वहाँसे भेजता था। त्रोत्स्कीने इन खरीतोंमेंसे बहुतोंको छाप दिये हैं। स्तालिन्के भी खरीते आते थे, लेकिन वे अभी तक छपे नहीं हैं। इन खरीतोंमेंसे एकमें सत्तर पंक्तिकी एक योजना थी। त्रोत्स्की और दूसरों-ने लम्बे-लम्बे पुलिंदोंमें योजना बनाई थी। स्तालिन्की ये सत्तर पंक्तियाँ उसके विरुद्ध पड़ती थीं; लेकिन मास्कोमें सरकारने स्तालिन्की इन सत्तर पंक्तियोंको मंजूर किया। परिणाम यह हुआ कि देनिकिन्को भागना पड़ा,

दोन और उक्रइन आज़ाद हो गये। इससे पता लगेगा, कि स्तालिन किस धातुका बना है।

लेनिनका स्तालिन पर अधिक विश्वास और स्नेह था। लेनिन उस वक्त यूरोपमें रहता था, स्तालिन रूसके किसी कोनेमें। लेनिनको कितने ही समयसे कोलबा (स्तालिनके गुप्त नामोंमेंसे एक)का पता न लगा था। उसने पूछा—"कहाँ है हमारा कोलबा? अद्भुत गुर्जी! मैं उसे भूल ही गया था! मेरी तरफ़से उसे लिखो।"

त्रोत्स्की साहित्यिक आदमी था, शब्दोंका धनी था। किताबी ज्ञानपर उसे बहुत अभिमान था। इसीलिए वह लेनिनको भी सङ्कोच हीके साथ अपने ऊपर मानता था, सो भी क्रान्तिके समय तथा अपनी जवानीके दिनों हीमें। उसे अपने ज्ञानका बहुत अभिमान है। लेकिन वह यह नहीं समझता था, कि उसी किताबी ज्ञानका मूल्य है, जो ठोस धर्तीसे निकला हो। और यही उसकी सबसे बड़ी कमज़ोरी है। इसीके कारण वह दस साल तक लेनिन के खिलाफ़ होकर मेन्शेविक् दलमें मिला रहा।

स्तालिन कामको कितना पसन्द करता है, यह इसीसे मालूम होता है, कि १९०७में जब रूसके राजनैतिक आकाशमें निर्जीवता आ गई थी, तो त्रोत्स्की रूस छोड़कर बाहर निकल गया, और १९१७ की क्रान्तिसे पहले नहीं लौटा, किन्तु स्तालिन उस वक्त लेनिनके सभी आदेशोंके पालन करने और पार्टीके कार्योंके संचालनके लिये रूसमें डटा रहा।

लाल-क्रान्तिकी सफलताका सबसे बड़ा श्रेय लेनिनके बाद बोल्शेविक पार्टीको है। लेनिन स्तालिनकी योग्यता और विश्वास-पात्रताको जानता था, इसीलिये उसने उसे पार्टीका मन्त्री बनाया।

लेनिनकी मृत्युके बाद त्रोत्स्की लेनिनका स्थान ग्रहण करना चाहता था, लेकिन स्तालिन और त्रोत्स्कीके काम करनेके ढंगमें बहुत अन्तर था। त्रोत्स्कीके लिए जनता बेवकूफ़ोंकी भीड़ थी। वह समझता था, हमारे जैसे ऊँचे दिमाग़से निकली हुई बातको पालन करना ही जनताका धर्म है।

हाँ, वह यह देखनेका ख़्याल रखती है, कि जो काम हम करना चाहते हैं, वह उसके हित के लिए हैं या नहीं। वह आदर्शवादी था। लेकिन उसका आदर्शवाद क्रियात्मकताकी परवा नहीं करता था। स्तालिनके लिए कोई सच्चाई, कोई सिद्धान्त चाहे वह शिक्षितोंकी दृष्टिमें कितना ही ऊँचा समझा जाता हो, सच्चाई और सिद्धान्त नहीं है, जब तक कि जनताके सामने व्यवहारकी कसौटीपर वह ठीक न उतरे। त्रोत्स्की अपने ऐसे कुछ दिमाग़-दारोंपर प्रभाव डालकर सन्तुष्ट रहना चाहता था और उन दिमाग़-दारोंमें भी अभिमानी त्रोत्स्कीको माननेवाले कितने थे, यह इसीसे पता लगता है, कि लेनिनकी मृत्युके समय सोवियत्के १८ प्रधान व्यक्तियोंमें सिर्फ़ ४ उसके दोस्त थे। जब दिमाग़दारोंकी यह हालत थी, तो साधारण जनताके बारेमें—जिनके विषयमें उसकी राय बहुत बुरी थी—कहना ही क्या है?

लेनिनने मृत्युके समय युद्ध-कालीन समाजवादको समाप्तकर नवीन-आर्थिक-नीतिका प्रोग्राम चलाया था। इसके कारण ग्रामोंमें समाजवाद-को अपनी बहुतसी जीती हुई जगह छोड़कर पीछे हटना पड़ा था। ऐसी अवस्थामें स्तालिन मैदानमें आया।

त्रोत्स्कीका कहना था—"हमने शहरोंमें क्रान्ति इसलिए नहीं की, कि गाँवोंमें एक नई किस्मके पूँजीपति तैयार हों। क्रान्ति स्थायी है।" स्तालिनका कहना था—क्रान्तिकी पूर्ण सफलता एक दिनमें नहीं हो सकती, इसलिए हमें अवस्थाको देखकर आगे बढ़ना चाहिए।

त्रोत्स्की चाहता था, कि गाँवोंमें भी तुरन्त ज़ोर-शोरसे समाजवादका प्रोग्राम जारी किया जाय। स्तालिन्‌को कहना था—पहले हमें उद्योग-धंधें-को—जो कि १६१३से भी बहुत गिरी अवस्थामें पहुँच गया है—ठीक करना चाहिए, फिर गाँवोंकी तरफ़ चलेंगे। लोग स्तालिन्‌के साथ थे। उसके प्रोग्रामको काममें लाया गया; और १६२७तक सोवियत् उद्योग-धंधा १६१३की अवस्थासे आगे बढ़नेमें सफल हुआ। त्रोत्स्कीका विरोध

बराबर जारी रहा। जिस वक्त सारा राष्ट्र एक मनसे होकर किसी योजना-को पूरा करनेके लिए लगा हो, उस वक्त बराबर उसके विरोधमें लोगोंको उकसाते रहना, जनताके उत्साहको कम करनेका काम कर सकता है। स्तालिन् और सोवियत्की जनताने ३ वर्ष तक त्रोत्स्कीके हर तरहके विरोधको सहा। लेकिन अब वह पंच-वार्षिक योजनाओंकी तरफ़ बढ़ने वाले थे। पाँच वर्षमें उन्हें पूजीवादी देशोंकी सौ-सौ वर्षकी औद्योगिक उन्नतिको अपने मुल्कमें लाना था। त्रोत्स्कीकी बकवाद किसी तरह बन्द न होती थी। वह कहता था—संसार-व्यापी क्रान्तिके लिए रूसमें लाल क्रान्ति हुई थी। स्तालिन् सिर्फ़ सोवियत्-भूमिको देखता है। अन्त-र्राष्ट्रीयतावादसे हटकर वह राष्ट्रीयताकी ओर लोगोंको ले जा रहा है। क्रान्तिका खून हो रहा है। अन्तमें लाचार होकर सोवियत् सरकार त्रोत्स्कीको देशसे निकालनेपर मजबूर हुई। और पीछे तो अपनी क्रान्ति-युगकी पुरानी कमाईपर जीना और उससे लाभ उठाकर सोवियत् साम्यवादी सरकार और उसके नेताओंको बुरा भला कहना यही उसका काम हो गया। जिस साम्यवादी सरकारको कायम करनेके लिए, जिस अपने आदर्शको धरतीपर साकार रूपसे स्थापित करनेके लिए, उसने अपने जीवन और शक्तिका इतना भाग दिया था; व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा और उसीके कारण उत्पन्न हुए वैमनस्यकी वजहसे उसने क्रान्तिके फल सोवियत्की स्वतंत्रताको फ़ासिस्त पूँजीवादियोंके हाथमें बेचनेसे भी आनाकानी नहीं किया। आदमीका पतन कहाँ तक हो सकता है, त्रोत्स्की इसका एक उदाहरण था। किताबी ज्ञानवाले कितनी कम सोचनेकी शक्ति रखते हैं, इसे आप त्रोत्स्कीके ऐसे अनुयायियोंको देखकर समझ सकते हैं, जिनके लिए इतना दूर चले जानेपर भी त्रोत्स्की उसी सम्मानका पात्र रहा।

त्रोत्स्कीकी पुरानी सेवाओं, और आज कल पूँजीवादियोंके साम्यवादको बदनाम करनेके अभिप्रायसे त्रोत्स्कीकी प्रशंसाके पुल बाँधनेको पढ़कर

कितने ही लोग भ्रममें पड़ जाते हैं, और वह समझते हैं कि स्तालिन् धोखे और ज़बर्दस्तीसे नेता बन गया। रदेक् स्वयं इसके बारेमें कहता है—"लेनिन्की मृत्युके बाद कार्यकारिणी समितिके हम १६ सदस्य एकत्रित हुए और बड़ी उत्सुकताके साथ अपने नेताकी अन्तिम हिदायतकी प्रतीक्षा कर रहे थे। लेनिन्की विधवा हमारे पास एक पत्र लाई। स्तालिन् हमें ज़ोरसे पढ़कर उसे सुनाने लगा। जब वह पढ़ रहा था, सब लोग चुप थे। त्रोत्स्कीके बारेमें पत्रमें लिखा था—'उसका अबोल्शेविक भूत एक आकस्मिक घटना न थी।' एक दम त्रोत्स्कीने रोककर पूछा—'क्या है यह?' वाक्य फिर दोहराया गया। सिर्फ़ यही शब्द थे, जो उस वक्त बोले गये।"

लेनिन्के इन छ शब्दोंने फैसला कर दिया, कि नेतृत्व स्तालिन्को मिलना चाहिए या त्रोत्स्कीको।

(२) प्रथम पंचवार्षिक योजना—१९२७के बाद स्तालिन्ने देशकी कृषि और उद्योगको ज़ोरसे आगे बढ़ानेके लिए पंचवार्षिक योजनाओंका आरंभ किया। पहली पंच-वार्षिक योजना १ अक्तूबर १९२८को शुरू हुई थी और ३१ दिसंबर १९३२ अर्थात् ५ वर्षका काम ४ वर्षमें करके खतम हुई। इस समय औद्योगिक उन्नति कितनी हुई, यह इसीसे मालूम होगा कि जहाँ १९२८में राष्ट्रीय आय १५६६ करोड़ रूबल थी वहाँ १९३२में वह ४१९० करोड़ हो गई। उससे पहले सोवियत् भूमिमें ट्रैक्टर और विमान बनते न थे। दूसरी मशीनें भी अधिकतर पश्चिमी यूरोप और अमेरिकासे मँगाई जाती थीं। लेकिन इस प्रथम पंचवार्षिक योजनाने सोवियत्को इन चीज़ोंमें स्वावलंबी बना दिया। पेट्रोल और कोयलेकी उपजमें वह संसारमें प्रथम हो रहा। तुर्किस्तान और काकेशस्में जहाँ पहले फ़ैक्टरियाँ नहीं थीं, वहाँ कितनी ही फ़ैक्टरियाँ खुलीं। कपासकी उपज दूनी हो गई और कपड़ेकी बड़ी-बड़ी १३ मिलें खुलीं और १९३०में ३ अरब गज़ कपड़ा तैयार हुआ। पहले कारखानोंमें ४९० करोड़

रूबल लगा था, किंतु प्रथम पंचवार्षिक योजनाके अन्तमें २४०० करोड़ लगाया गया। १६२८में कारखानोंमें काम करनेवाले ७,२३,००० आदमी थे, जो १६३२में ३१,२५,००० हो गये। १५०० नई फैक्टरियाँ बनीं। प्रथम पंचवार्षिक योजनाने मशीन बनानेवाली मशीनोंके उद्योग-धंधेमें सोवियत्को बहुत प्रबल बना दिया, खेतीके $\frac{2}{3}$को पंचायती कर दिया।

(३) द्वितीय पंचवार्षिक योजना (१६३३से १६३७ तक)—पहली जनवरी १६३३को आरंभ हुई और ३१ दिसंबर १६३७को समाप्त। यह योजना अपने समयसे ६ मास पूर्व ही खतम हो गई थी। पहले पंचक (पंचवार्षिक योजना)के अन्तिम वर्षमें ३ अरब गज़ कपड़ा बना था और १६३७में ५ अरब गज़से अधिक बना। इसी तरह १६३५में जहाँ १० करोड़ गज़के करीब ऊनी कपड़ा तैयार हुआ था, वहाँ १६३७में २२॥ करोड़ गज़से ऊपर बना। द्वितीय पंचकके प्रथम ४ वर्षोंमें ४६ अरब रूबल नये कारखानोंके बनानेमें लगाये गये; जब कि प्रथम पंचकमें ४४ अरब ही लगे थे। खेतीमें भी इस पंचकके अंतमें ६६ फ़ी सदी खेत पंचायती हो गये और १६३७में ७००० करोड़ पूड या साढ़े एकतीस अरब मन (१ पूड = १८ सेर) अनाज हुआ जो कि १६१३की उपजका दूना था।

(४) तृतीय पंचवार्षिक योजना—१ जनवरी १६३८में यह योजना शुरू हुई और ३१ दिसंबर १६४२को खतम होने वाली थी। ट्रैक्टर, सोना तथा और भी कितनी ही औद्योगिक चीज़ोंकी उपजमें सोवियत् संयुक्त-अमेरिकासे भी आगे बढ़कर संसारमें अव्वल स्थान ग्रहण करना चाहता था। कल-कारखानोंकी उपजमें १६३८में पिछले सालकी अपेक्षा १० सैकड़ा बढ़ा, लकड़ीकी उपज ६ सैकड़ा और रेलवेमें ५$\frac{1}{2}$ सैकड़ासे ऊपर।

पंचवार्षिक योजनाओंके कारण आर्थिक, सांस्कृतिक सैनिक सभी दृष्टिसे

सोवियत्-संघ बहुत आगे बढ़ा है। और आज सारी दुनियामें सोवियत्की इन पंचवार्षिक योजनाओंकी नकल करनेकी कोशिश हो रही है।

पंचवार्षिक योजनाओंकी कल्पना और सफलतापूर्वक पूरा करना स्तालिनका सबसे बड़ा काम है। स्तालिन्ने पिछड़े हुए रूसको संसारमें बहुत आगे बढ़ाया। समाजवाद जो शहरों तक सीमित था, उसे गाँवोंमें पहुँचा दिया।

पद और वेतन—१६३४के आरम्भसे स्तालिन् न कम्युनिस्ट पार्टीका मंत्री रहा, न गवर्नमेंटमें मत्री या कमीसर। लेकिन उससे उसके प्रभावमें कोई कमी नहीं हुई। पंचवार्षिक योजनाओंकी सफलताने उसे उतना ही सर्वप्रिय बना दिया है, जितना कि लेनिन था।

वैयक्तिक जीवन—स्तालिनके वैयक्तिक जीवनके बारेमें लिखते हुए एक अंगरेज लेखक लिखता है—

वह मास्कोमें रहते वक्त क्रेमलिनमें रहता है। क्रेमलिन इमारत नहीं है, बल्कि दीवारोंसे घिरा एक किला है, जिसके भीतर ४०-५० इमारतें, कुछ पुराने गिर्जे, बग़ीचे और सिपाहियोंकी बैरकें हैं। स्तालिनके लिए इसमें ३ कमरे हैं। वह क्रेमलिनमें सदा नहीं रहता। स्तालिन्के बारेमें लोगोंने ख़बर उड़ाई है, कि वह क्रेमलिनकी दीवारोंके भीतर हमेशा रहता है और एक तरहसे कैदी है। यह बिलकुल ग़लत है। उसे काम करनेके लिए क्रेमलिनसे बाहर पार्टीकी केन्द्रीय समितिकी इमारतमें स्तारया चौकमें जाना होता है; और यह चौक मास्कोका बहुत भीड़वाला चौक है। अपना बहुत सा समय वह मास्कोसे एक घंटेके रास्तेपर उसोवा अर्खान्गेल्स्कया जिलेमें मास्को नदीके तटपर बने एक कुटीरमें बिताता है। एकान्तके कारण यह जगह उसे बहुत पसन्द है। इस कुटीरको पहले किसी करोड़पति बनियेने बनवाया था। उसीने १० एकड़ जमीनको ऊँची दीवारसे घेर दिया था। उन दीवारोंको स्तालिनने ढहवाया नहीं

तो भी स्तालिन् हिटलर और मुसोलिनीकी तरह हर वक्त बहु-संख्यक शरीर-रक्षकोंसे घिरा नहीं रहता। उनकी अपेक्षा वह अधिक बाहर आता है। कितनी ही बार ओपेरा (नाटक) देखकर साथियोंके साथ बात करते हुए भीड़के भीतरसे वह अकेला लौटता देखा गया है। हर साल दोनों महोत्सवों—१ मई और ७ नवम्बर—के दिनोंमें स्तालिन लेनिनकी समाधिपर खड़ा होता है; और कई लाख आदमी उससे ३० क़दम परसे गुज़रते हैं।

तड़क-भड़कसे उसे बिलकुल प्रेम नहीं है। वह खास वर्दी नहीं पहनता। एक कालासा बंद गलेका कोट और एक घोड़सवारीका पाजामा (ब्रिचेस) और बूट—यही उसकी पोशाक है। जब वह बाहर जाता है, तो सिरपर छज्जेवाली टोपी रहती है।

स्तालिन्के काम करनेका ढंग अधिकतर ऐसा है, वह एक सप्ताह या अधिक खूब ज़ोरसे काम करता है, इसके बाद २-३ दिनके लिए मास्कोसे बाहर अपने कुटीरमें चला जाता है। मनोविनोदकी चीज़ोंमें बहुत शौक नहीं है, लेकिन कितनी ही बार वह नाटक और सिनेमा देखने जाता है। चपायेफ़् (लाल क्रान्तिका एक बहादुर सेना-नायक) फ़िल्म-को देखनेके लिए वह ४ बार गया था। वह पढ़ता बहुत है और कभी कभी शतरंज खेलता है। पाइपमें डालकर तंबाकू पीनेकी उसे बड़ी आदत है। खानेके वक्त भी मेज़पर सुलगता पाइप रखा रहता है; और खानेके बीच बीचमें वह फूँक लगा लेता है। फ़ुर्सतके वक्त मित्रोंके साथ एकाध ग्लास शराब भी पी लेता है।

स्तालिन्की पहली औरत १९१७में निमोनियासे मर गई। उससे उसको एक लड़का है, जो अब ३६-३७ वर्षका सैनिक अफसर है। पढ़ने-लिखनेमें वह ढीला ढाला ही था, फिर वह तिफ़लिस्की एक फैक्टरीमें काम करने लगा। १९१९में स्तालिनने अपने एक दोस्तकी लड़की नाद्येद्ज़ा (नाद्या)-सेशादी की। उसके २ बच्चे हैं—वासिली २६-२५ वर्षका पुत्र है और

स्वेत्लाना २०-२१ वर्षकी लड़की। स्वेत्लानासे स्तालिनको बहुत प्रेम है। स्तालिनकी स्त्री नकली रेशमके सम्बन्धमें स्कूलमें पढ़ने जाया करती थी; और वहाँ किसी तरहका उसके लिए दिखावा नहीं था। वह मामूली ट्राम या बसमें जाया करती। उसकी इच्छा थी, किसी नकली रेशमके कारखानेकी प्रबन्धिका बनने की। ८ नवंबर १९३२को नादेज्दा स्तालिनकी अकस्मात् मृत्यु हो गई। कहा जाता है, स्तालिनके भोजनको वह चख लिया करती थी, और उसीमें ज़हरकी शिकार हुई। लेकिन असल बात यह नहीं थी। उसकी अंतड़ीमें भारी दर्द हो रहा था। किंतु कई दिनों तक उसने उसकी परवा न की। मामूली दर्द समझ कर उसने उसे अपने पतिसे भी नहीं कहा। अपने बच्चोंके साथ स्तालिनका प्रेम है। लेकिन उसने इसका पूरा ध्यान रखा है, कि स्कूलमें उसके बच्चोंके साथ वैसा ही बर्ताव किया जाय, जैसा और बच्चोंके साथ। मामेनोव्स्की सड़कके ऊपर अवस्थित उनका २५ नम्बरका स्कूल मास्कोके अच्छे स्कूलोंमें है। स्तालिन इस स्कूलको देखने कभी नहीं गया।

अपने साथियोंके साथ स्तालिन का तू-तू का सम्बन्ध है। उसके नाम योसेफ़् को छोटा करके कहनेका कोई उपाय नहीं (रूसमें प्यारके लिए मिखाइलको छोटा करके 'मिश्का' कर दिया जाता है) इसलिए जैसे क्लिमेंती वोरोशिलोफ़का 'क्लिम' हो जाता है, वैसे योसेफ़ को प्यार या बराबरीके खयालसे नाम छोटा करके बोलने की गुञ्जायश नहीं।

एक अमेरिकन लेखक स्तालिनके बारेमें लिखता है—लम्बा क़द और दृढ़ शरीर। कलेजेकी बीमारी, लेकिन और तरहसे शारीरिक शक्ति और सहनशक्ति बहुत ज्यादा है। न वह हिटलरकी तरह स्वप्नचारी है, न मुसोलिनीकी तरह भावुकता-शून्य। अगर उसमें नसें हैं तो चट्टानोंकी। वह होशियार, चतुर है, आखिर है भी तो वह पूर्वीय! वह

इसे स्वीकार भी करता है। एक जापानीसे मिलते वक्त उसने कहा था—'स्वायत, मैं भी तो एशियाई हूँ।'

स्तालिनकी प्रतिभा इसीसे मालूम होगी कि एच्० जि० वेल्स जैसे (उच्च कोटिके लेखक)से बात करते हुए उसने प्रश्नकर्त्ताको अपने उत्तरोंसे दबा दिया था। १९२७में अमेरिकाके श्रमजीवियोंका प्रतिनिधि-मंडल स्तालिन्से मिला था। उस समय उनके पूछे हुए नाना विषयके कठिन प्रश्नोंका उत्तर वह ४ घंटों तक देता रहा। सब बातें मुँह-ज़बानी थीं, लेकिन सभी संलाप परस्पर-संबद्ध रहा। ११,८००० शब्दोंमें उसने जवाब दिया था। जब प्रतिनिधि-मंडल प्रश्न करते करते थक गया, तो स्तालिनने पूछा—क्या मैं भी कुछ प्रश्न अमेरिकाके बारेमें कर सकता हूँ? और फिर उसने दो घंटे प्रश्न किये और उस प्रश्नसे मालूम होता था, कि उसको हर विषयका कितना ज्ञान है। स्तालिनने अकेले जितनी खूबीके साथ ४ घंटे जवाब दिये थे, उतनी खूबीसे प्रतिनिधि-मंडल नहीं दे सका। इस पूरे छः घंटेकी बात-चीतमें न कोई टेलीफ़ोनकी घंटी बजी और न कोई सेक्रेटरी बीचमें आया। इससे मालूम होता है, कि स्तालिन हाथमें आये कामके ऊपर कितनी एकाग्रतासे लग जाता है।

* * * * * *

(५) एक लेखक के विचार

जर्मन लेखक एमिल् लुडविग् स्तालिनसे मिला था। उसके व्यक्तित्व के बारेमें वह अपनी सम्मति देते हुए लिखता है—

उसकी जैसी तसवीर मैंने देखी थी और कहानियाँ जो मैंने सुनी और पढ़ी थीं, उसका (फौलादी स्तालिन) जैसा नाम है, वह उसके लिए उपयुक्त नहीं है। मैंने खयाल किया था, कि मुझे पुरानी ज़ारशाहीका कोई रोबीला गंभीर कठोर ग्रांड-ड्यूक मिलेगा, लेकिन उसकी जगह मुझे ऐसा अधिनायक देखनेको मिला, जिसके हाथोंमें मैं अपने बच्चोंको खुशीसे छोड़ सकता

हूँ। मैंने पढ़ा था कि वह जनतामें नहीं आता; क्योंकि चेचकने उसके चेहरेको बड़ा कुरूप बना दिया है। लेकिन यहाँ उसका कोई चिह्न या दाग़ मिलना मुश्किल था। मैंने यह भी पढ़ा था, कि जब वह शहरसे अपने प्रासाद जैसे देहातके निवास-स्थान गोर्की—जिसमें बीमारीके समय लेनिन रहा और मरा—को प्रतिदिन जाता है, तो उसके आसपास ५ मोटरकारें रहती हैं। गोर्कीके बारेमें कहा जाता था, कि रातदिन हथियारबन्द कसाक् वहाँ पहरा देते हैं। यह भी कहा गया था, कि स्तालिन प्रतिदिन क्रेम्लिन्के एक दरवाज़ेसे भीतर जाता है और दूसरेसे बाहर आता है। खानेके वक्त ज़ारके खानेके सोनेके बर्तनोंमें भोजन परोसा जाता है। यहाँ तक कहा गया है, कि वह अपनी तरुण स्त्री को तुर्कीके सुल्तानकी तरह घरमें ताला बन्द करके रखता है।

लेकिन सचाई इससे बिलकुल उलटी है। लेनिनकी मृत्युके बाद वह कभी गोर्कीके प्रासादमें नहीं गया। जब मैं मास्कोमें उससे मिला; उस वक्त वह अपनी स्त्री और बच्चोंके साथ शहरके बाहर एक सीधे-सादे घरमें रहता था। वह अपने आफ़िसमें अपनी अकेली कारमें जाता है और उसी द्वार से, प्रतिदिन जाता है। दरवाजे पर संतरी कोई विशेष सलाम नहीं देता। उसका खाना रहना-सहना साधारण आदमी सा है। वह सुव्यवस्थाको बहुत पसन्द करता है; और अपने पासके कामके समयको ठीकसे बाँटनेमें बड़ा ध्यान रखता है। उसकी रुचि बहुत सीधी-सादी है।.........

जब मैं स्तालिनसे मिला, मैंने उसे एकान्तप्रिय आदमी पाया। धन, सुख और महत्त्वाकांक्षा तकका भी उसपर प्रभाव नहीं। यद्यपि अपार शक्ति उसके हाथोंमें है, लेकिन उसके लिए उसे अभिमान नहीं।............ मैं कहूँगा कि स्तालिनके स्वभावमें दो बातें अधिकतासे पाई जाती हैं। पहली बात है धैर्य और इसको उसने अंतिम दर्जे तक पहुँचा दिया है, और दूसरी बात है, दूसरोंपर बिना अवलम्ब किये पूर्णतया आत्मावलम्बी होना।......

वह अब (१९३३) ५०के करीब पहुँच रहा है। एक वर्षमें ३, ४ से अधिक यूरोपियनोंसे भेंट नहीं करता। इसलिए जब कोई पाश्चात्य आदमी पहले पहल उससे मिलने आता है, तो उसे 'अन्‌कुस' सा मालूम होता है। मुझे इससे आश्चर्य हो रहा था, क्योंकि मैं अच्छी तरह जानता था, कि मैं संसारके छठे हिस्सेके वास्तविक शासकके सामने हूँ।...... अगर मेरा दिल ठीक कहता है, तो मैं कहूँगा, कि स्तालिन् स्वभावसे ही अच्छे दिलका आदमी है। लेकिन उसके पदने उसे कठोर और आग्रही बना दिया है। उसमें कल्पनाका अभाव नहीं है, लेकिन उसकी उड़ानकी शौकीनीसे वह इनकार करता है। वह महत्त्वाकांक्षी नहीं है, लेकिन अपने प्रतिद्वन्द्वियोंसे नर्मी नहीं रखना चाहता। स्वभावसे ही वह रूखा और लागू चित्त वाला है। जिस कर्तव्यके पालनमें उसने अपना जीवन लगाया, उसने उसे सुन्न और गंभीर बना दिया है। पिछले ३५ वर्षोंसे उसके दिमाग़में सिर्फ़ एक ही बात रही है, जिसके लिए उसने अपना यौवन, अपना स्वास्थ्य, अपनी सुरक्षा तथा जीवनके सभी दूसरे आनंद कुर्बान कर दिये। इसलिए नहीं कि वह खुद शासन करे, बल्कि इसलिए कि उन सिद्धान्तोंके अनुसार शासन हो, जिनके लिए कि उसने शपथ ली है। उसने मुझसे कहा—'मेरे जीवनका उद्देश्य है कि जाँगर चलानेवाली श्रेणी को और ऊपर उठाया जाय। जातीय राज्य बनानेका ख़याल नहीं है, बल्कि एक समाजवादी राज्य चाहता हूँ, जो कि संसारके सभी कमकरोंके स्वार्थकी रक्षा करेगा। अगर मेरे जीवनका हर एक क़दम उस राज्यकी स्थापनाकी ओर नहीं ले जाय, तो मैं समझूँगा कि मैं व्यर्थ ही जिया।' वह बड़ी नर्मीसे बोल रहा था। और धीमी आवाज़ ऐसे निकल रही थी, मानों वह अपने आपसे बात कर रहा था।.........

मेरे एक प्रश्नके उत्तरमें उसने कहा—'मेरे माता-पिता अशिक्षित थे। लेकिन उन्होंने मेरे लिए बहुत किया। मसारिक (जेकोस्लावियाके राष्ट्र-निर्माता)को जैसे धुन हुई, वैसे मैं ९–१० या १२ वर्षमें समाज-

वादी नहीं हो गया। जबतक मैं पादरियोंकी पाठशालामें रहा, मैं समाज-वादी नहीं बना। फिर प्रचलित शासन-प्रथाका विरोधी हुआ। शासन-प्रथा क्या थी, खुफ़ियाका पीछा करना और धोखा देना। हम ६ बजे सवेरे चायके लिए बुलाये गये और जब कोठरीमें लौटे, तो देखा कि सभी दराज़ोंकी एक-एक करके छान-बीन हुई है। वह हमारे काग़ज़ोंकी छानबीन नहीं कर रहे थे, बल्कि हमारे दिलोंके एक एक कोनेकी छान-बीनकर रहे थे। यह असह्य था। मैं किसी भी हद तक और किसी भी प्रथाके पक्षमें जानेके लिए तैयार होता, यदि मैं समझता कि मैं उस शासन-व्यवस्थाका विरोध कर सकता हूँ। उसी समय रूसी समाजवादियोंका एक कानून-विरोधी समुदाय काकेशस्के पहाड़ीमें आया। उन्होंने मुझपर बहुत प्रभाव डाला और उसी समयसे निषिद्ध साहित्यका मुझे चस्का लगा।'

'........मेरा साथी एक तरुण पत्रकार था, जो कई भाषाओंको खूब अच्छी तरहसे बोल और ठीकसे अनुवाद कर सकता था।...'

स्तालिन् और मुस्तफ़ा कमाल दो ही ऐसे आदमी हैं, जिनसे बात करते समय मुझे दुभाषियाकी ज़रूरत पड़ी। जिस कमरेमें हम प्रविष्ट हुए, वह लम्बा था, उसके एक छोरपर एक मझोले क़दका आदमी भूरे रंगके बन्द गलेका कोट पहने कुरसीके पास खड़ा था। उसकी पोशाक उतनी ही साफ़ थी, जैसा कि वह कमरा।...एक लम्बा मेज़ बीचमें रखी थी,...जिस पर पानीकी झारी, गिलास और राखदानी पड़ी थी। हर एक चीजसे सु-व्यवस्था टपकती थी। दीवारें गहरे हरे रंगसे रँगी थीं। लेनिन्, मार्क्स तथा कुछ मेरे अपरिचित व्यक्तियोंके फ़ोटो टँगे हुए थे। स्तालिन्की लिखनेकी मेज़ भी सुव्यवस्थित तौरसे रखी थी। उसपर लेनिन्का एक फ़ोटो था। बग़लमें ४–५ टेलीफ़ोनके यंत्र वैसे ही रखे थे, जैसे कि गवर्नमेंट आफ़िसोंमें होते हैं। लड़खड़ाती रूसीमें मैंने कहा—"दोब्रे उत्रा" (सुप्र-भातम्)। उसने मुसकरा दिया और कुछ सकोचा भी, लेकिन वह बड़ा ही विनम्र था। उसने एक सिगरेट मुझे देनेके लिए उठाया। उसने

विश्वास दिलाया, कि आप जो भी प्रश्न पूछना चाहें, पूछ सकते हैं। और मेरे पास १॥ घंटा समय है, लेकिन जब समयके खतम होते वक्त मैंने अपनी घड़ी निकाली, तो उसने मना करनेका संकेत किया और आध घंटा और पास रखा। कुछ मात्रा तक संकोच, यह एक शक्तिशाली पुरुषके लिए उतनी ही अच्छी बात है, जैसा कि एक सुन्दर स्त्रीमें।.........

चूँकि वह दुभाषियाके सहारे मुझसे बात कर रहा था, इसलिए प्रायः बराबर वह मुझसे दूसरी ओर देखता था। सारे दोनों घंटे कागज़के टुकड़े पर वह चीन्हा खींचता रहा। एक लाल पेंसिलसे वृत्त और दूसरी शकलें खींचता तथा अंक लिखता था। उसने पेंसिलके दूसरे छोरको नहीं बदला। यद्यपि उधर नीला रंग था। हमारे बात करनेके समय उसने कई टुकड़े कागज़के लाल रेखाओंसे भरे और समय समय पर उनको मोड़ कर फाड़ दिया।............स्तालिन् का स्वभाव है, बिना हिलेडोले बैठने का। वह बोलते वक्त किसी शब्द पर ज़ोर या हाथ मुँह हिलाना नहीं जानता। ....मुख्य बात उसके बारेमें जो मेरे दिलमें धँसी, यह थी, कि वह संयत है। स्तालिन वह आदमी है जिसके नामसे कितने नर-नारी रोबमें पड़ जाते हैं। लेकिन एक बच्चा या पशु वैसा नहीं कर सकता। पुराने युगमें ऐसे पुरुषको लोग देशका पिता कहते।.........

यद्यपि मेरे सभी प्रश्नोंके लिए उसने तैयारी नहीं की थी, और उसे हमारी यूरोपीय सरकारोंके मन्त्रियों—जिनसे कि वही प्रश्न हफ्ता बाद हफ्ता पूछे जाते हैं—जैसा अनुभव नहीं था। और वह यह भी जानता था, कि उसके उत्तरको मैं सारे संसारके लिए प्रकाशित करूँगा। सभी ऐतिहासिक घटनाएँ और नाम उसको कंठाग्र थे। मेरे दुभाषियाने जो हमारे वार्तालापको लिखा था, उसकी उसने कापी नहीं माँगी और न किसी संशोधनकी इच्छा प्रकट की। इस प्रकारका आत्मविश्वास मैंने कहीं नहीं देखा। दुनियाके और नेताओंसे, जिनसे मैंने वार्तालाप किया है, उनके कहनेको मैंने उसी वक्त कागज पर नहीं उतारा, बल्कि पीछे उतारकर उनको स्वीकृति

लिये दिया। लेकिन यहाँ मैंने दूसरे आदमी द्वारा त्वरित लिपिमें लिखे हुए लेखको लिया और जब मैंने उसे ग़ौरसे मिलाया, उसमें ज़रा भी कोई बात छूटी नहीं देखी तो भी वाक्यावली बिलकुल दुरुस्त।..................
जब मैं अपने मनमें अपने ग़रीब मंत्रियोंकी आदतको खयालमें लाता हूँ, जो कि अपने पार्लियामेंटमें देनेवाले व्याख्यान या संवाद देते वक्त अपने प्रेस-विभागके अध्यक्ष द्वारा उसका संशोधन कराते हैं, तो इस काकेशस्के जूते बनानेवालेके लड़केके लिए सम्मानसे मेरा दिल भर जाता है।......

मैंने कहा—"तुमने षड्यन्त्रका जीवन बहुत काल तक बिताया है। क्या तुम समझते हो, कि तुम्हारे वर्तमान शासनमें ग़ैरकानूनी आन्दोलन संभव नहीं है?"

"यह संभव है, कमसे कम कुछ हद तक।"

"क्या इसी संभावनाके डरके मारे अब भी, क्रान्तिके १५ वर्षके बाद भी, इतनी सख्तीसे शासन करते हो?"

"नहीं! इसके लिए प्रधान कारण क्या है, इसे मैं कुछ ऐतिहासिक उदाहरण देकर बतलाऊँगा। जब बोल्शेविक अधिकारारूढ़ हुए, तो अपने शत्रुओंके प्रति वह नरम और सरल थे। उदाहरणार्थ उस समय मेन्शेविक् (नरम समाजवादी) और समाजवादी क्रांतिकारी भी अपने अपने समाचारपत्र कानूनन छाप रहे थे। फौजी केडेट (धनिकोंके सैनिक पुत्र) भी अपने समाचार-पत्र निकालते थे। जब सफेद बालवाले जेनरल क्रास्नोफ़्ने लेनिन्ग्राद् पर धावा किया और हमने उसे गिरफ्तार किया, तो फौजी कानूनके अनुसार हम उसे गोली मरवा सकते थे, या कमसे कम जेलमें भेजवा सकते थे, लेकिन उसके वचन देने पर हमने उसे छोड़ दिया। लेकिन, पीछे यह बात साफ़ मालूम होने लगी, कि ऐसा करनेसे हम उस संस्थाको ही खतरेमें डाल रहे हैं; जिसके निर्माणके लिए हमारी इतनी कोशिश है। हमने ग़लती करते हुए अपना काम आरंभ किया। ऐसी शक्तिके साथ नर्मी श्रमिक-श्रेणीके साथ अन्याय करना है, यह जल्दी ही

स्पष्ट हो गया। दक्षिण-पक्षीय समाजवादी क्रान्तिकारियों और मेन्शेविकोंने बोग्दानोफ़् और दूसरोंके साथ मिलकर उस समय जुंकर (धनिक श्रेणीके सैनिक)का विद्रोह किया। वे सोवियत्के साथ दो साल तक लड़ते रहे। मामोन्तोफ़् भी उनसे मिल गया। हमें यह मालूम करनेमें देर नहीं हुई, कि इन सबकी पीठपर पश्चिमकी महाशक्तियाँ और जापानी हैं। तब हमने अनुभव किया, कि हमारे लिए एक ही रास्ता है कि पूरी सख्ती दिखलायें।"............

मैंने कहा—"यह निर्दयताकी नीति लोगोंमें बहुत भयका कारण हुई है। इस देशमें मुझे मालूम होता है, कि हर एक आदमी आतंकित- है। और आपका यह महान् तजर्बा एक ऐसी ही जातिमें कामयाब हो सकता है, जिसने चिर कालसे पीड़ित रहकर आज्ञाकारिताका पाठ पढ़ा है।"

स्तालिन्ने कहा—"तुम भूल कर रहे हो। लेकिन तुम्हारी भूल आम है। क्या तुम समझते हो, कि लोगोंको आतंक दिखलाकर १४ वर्ष तक शासन-शक्ति अपने हाथमें रखी जा सकती है? असंभव! ज़ारोंको अच्छी तरह मालूम था, कि आतंकसे शासन कैसे चलाया जा सकता है। यूरोपका यह पुराना तजर्बा है। फ्रांसके पूँजीवादियोंने इस आतंक-प्रदर्शनकी नीतिमें जनताके खिलाफ़ ज़ारोंकी मदद की। लेकिन क्या परिणाम हुआ? कुछ नहीं।"

मैंने जवाब दिया—"लेकिन इसके द्वारा रोमनोफ़् तीन शताब्दियों तक अधिकारारूढ़ रहे।"

"हाँ, लेकिन कितनी बार विद्रोहके कारण वह अधिकार छिन गया। पुरानी बातोंको छोड़ दीजिए, (उदाहरणार्थ) १६०५की क्रान्ति हीको ले लीजिए।......आप इसके द्वारा एक-दो सालके लिए आतंक पैदा कर सकते हैं या कुछ अंशमें उतने समय तक शासन कर सकते हैं। लेकिन आतंक-प्रदर्शनके बलपर किसानोंपर शासन नहीं कर सकते। दूसरी बात यह

है, कि सोवियत्-संघके किसान-कमकर चिरकाल पीड़ित रहनेके कारण उतने भीरु नहीं हैं, जितना कि तुम समझते हो। हमारी जनता भीरु और सुस्त है, यह बहुत पुराने ज़मानेका खयाल है। पहले इस पर विश्वास किया जाता था, क्योंकि उस समय धनी ज़मींदार, रईस पेरिसमें जाकर अपना पैसा खर्च करनेके सिवा और कुछ नहीं करते थे। इसीसे लोग समझने लगे, कि रूसी सुस्त होते हैं। लोग सोचते थे, कि किसान आसानीसे डराये और अधीन किये जा सकते हैं। यह ग़लत खयाल था। और कमकरोंके संबंधमें तो यह ग़लती तिगुनी थी। कमकर फिर अब एक आदमीका शासन सहन नहीं कर सकेंगे। ऐसे व्यक्ति, जो यशके सर्वोच्च शिखरपर पहुँच गये थे, उसी वक्त उनका पतन हो गया, जब कि उन्होंने जनतासे संबंध तोड़ा। प्लेखानोफ़्के हाथमें बहुत भारी शक्ति थी, लेकिन जब राजनीतिमें उसने गड़बड़ की, उसी समय जनताने उसे भुला दिया। त्रोत्स्कीको भी बहुत अधिकार मिला था, हाँ, उतना ऊँचा नहीं, जितना कि प्लेखानोफ़्को। और आज वह भी भूला जा चुका है। यदि कभी लोग उसे याद भी करते हैं, तो बड़ी घृणाके साथ।" (इस वक्त स्तालिनने लाल पेंसलसे कोई जहाज़ सा अंकित किया था)।

मैंने कहा—"जब मैं बार-बार 'जनताकी शक्ति, जनताकी शक्ति' को दोहराये जाते सुनता हूँ, तो मुझे ताज्जुब होता है, कि इतनी वीर-पूजा—जो कि जितनी यहाँ है, उतनी संसारमें और कहीं नहीं है—कैसे सम्भव है? क्योंकि यह बात आपके इतिहासके भौतिक विचारके खिलाफ़ जाती है। तुम्हारा यह भौतिकवाद[1] नेताओं और लांछनोंको सहकोप[2] मूर्तियों

१ सभी चीजें पंचभूतोंसे बनी हैं। मनुष्य भी पंचभूतोंकी उपज है। उसीसे उत्पन्न होकर उसीमें हमेशाके लिए लीन हो जाता है। इसलिए उत्पन्न-विलीन होती पंचभूत-परम्परा या मनुष्य-परम्पराको महत्त्वपूर्ण कार्योंका श्रेय होना चाहिए, न कि क्षणविध्वंसिनी मनुष्य व्यक्तिको।

और चित्रोंके रूपमें प्रदर्शित करनेके खिलाफ़ है। तुम लोगोंके लिए यही उचित है, कि अज्ञात सिपाही या किसी दूसरे व्यक्तिका सम्मान किया जाये। कैसे तुम इस विरोधका परिहार करोगे ?"

"तुम भूल कर रहे हो। मार्क्सके उस भागको पढ़ो, जिसमें वह दर्शनकी दरिद्रताके बारेमें लिखता है।"

स्तालिनके सिरके ऊपर श्वेत केश कार्ल मार्क्सका चित्र लटक रहा था। जब-जब हमारे वार्तालापमें उस महान समाजवादीका ज़िक्र आता, मैं उसके चित्रकी ओर देखनेको मजबूर होता।

"वहाँ तुम्हें मालूम होगा, कि मनुष्य इतिहासका निर्माण करते हैं। किंतु वैसे नहीं, जैसे कि तुम्हारी कल्पना कह रही है। मनुष्य इतिहासका निर्माण करता है, लेकिन उस निश्चित वातावरणकी प्रतिक्रियाओंमें, जिस वातावरणमें कि वह डाल दिया गया है। प्रत्येक पीढ़ीको एक नये वातावरणका सामना करना पड़ता है। साधारणतया यह कहा जा सकता है, कि महान पुरुषोंका मूल्य केवल इसीमें है, कि वह अपनी परिस्थितिके वातावरणोंका योग्यताके साथ मुक़ाबला कर सकते हैं। नहीं तो वह शेख़-चिल्ली है।...........मेरी रायमें यह इतिहास है, जो कि मनुष्योंको बनाता है। मैं तीस सालसे मार्क्सको पढ़ रहा हूँ।"

मैंने कहा—"लेकिन हमारे प्रोफेसर दूसरी तरहसे व्याख्या करते हैं।"

"वह ऐसा करके मार्क्सवादको आम-फ़हम बनाना चाहते हैं। मार्क्सने खुद कभी वीरके कामके महत्त्वसे इनकार नहीं किया है। दरअसल उसके कामका महत्त्व बहुत बड़ा है।"

"क्या मैं इससे यह मतलब निकाल सकता हूँ, कि यहाँ मास्कोमें भी एक आदमी शासनकर्त्ता है, समिति नहीं। और मैं मेज़की बग़लमें १६ कुर्सियाँ देख रहा हूँ।"

स्तालिनने कुर्सियोंकी तरफ़ देखा—"व्यक्ति नहीं निर्णय करते। हर एक कौंसिल (समिति)में ऐसे लोग होते हैं, जिनकी सम्मतिका खयाल

करना होता है। लेकिन ग़लत सम्मति भी मौजूद होती है। हमें तीन क्रान्तियोंका अनुभव है, जिनमें १०० व्यक्तियोंके किए निर्णयोंमें ६० एक-तर्फ़ा थे। हमारी मुख्य संस्था है पार्टी (कम्युनिस्ट)की केन्द्रीय समिति और उसके ७० सदस्य। इन ७० सदस्योंमें कितने ही हमारे योग्य उद्योग-निष्णात हैं, कितने ही सहयोग-निष्णात हैं, कितने ही श्रेष्ठ व्यापारी हैं, और कितने ही सहयोगी और वैयक्तिक कृषिके विशेषज्ञ हैं, और कितने ही ऐसे आदमी हैं, जो कि नाना जातियों—जिनसे हमारा सोवियत्-संघ बना है—से कैसे बर्ताव करना चाहिए, इसका उच्च दर्जेका ज्ञान रखते हैं।......यह समिति व्यक्तिको मौक़ा देती है, कि वह अपने आंशिक पक्षपातका संशोधन करे। समितिके साधारण हितके लिए हर एक आदमी अपना अनुभव प्रदान करता है। इस ढंगके बिना बहुत ज्यादा भूलें होंगी। चूँकि हर एक आदमी निर्णयमें भाग लेता है, इसलिए हमारा फ़ैसला बहुत कुछ ठीक होता है।..........."

घड़ीकी सूई—जिसे कि मैंने सामने टेबुलपर रखा था—बतला रही थी, कि हमारे पास समय बहुत कम है। मैंने एक दूसरा प्रश्न ऐसी बेतकल्लुफ़ीसे रक्खा, जिससे मालूम होता था, कि मैं अमेरिकाके प्रति रूसके ख़यालको नहीं जानता। मैंने कहा—"इस देशमें हर जगह देखता हूँ अमेरिकाका सन्मान किया जाता है। एक ऐसा राज्य जिसका उद्देश्य है—पूँजीवादको उलट देना, कैसे एक ऐसे देशका सन्मान करता है, जहाँपर कि पूँजीवाद अपने विकासके सर्व्वोच्च शिखरपर पहुँच चुका है।"

एक क्षणके लिए भी रुके बिना स्तालिनने एक अत्यन्त सुन्दर उत्तर दिया—"आप बातको बढ़ाकर कह रहे हैं। अमेरिकाकी हर एक बातके लिए हमारे यहाँ सन्मान नहीं है। उद्योग, साहित्य, व्यापारके हर एक काममें व्यावहारिकताका जो ध्यान अमेरिकामें पाया जाता है, उसीके लिए हमारे यहाँ सन्मान किया जाता है। वे मजबूत आदमी हैं, या कमसे कम

वहाँ बहुतसे मजबूत आदमी हैं—दिमाग़में भी और शरीरमें भी मजबूत। काम और प्रतिदिनकी घटनाओंके बारेमें उनका सारा व्यवहार मजबूत है। अमेरिकन जीवनका व्यावहारिक कार्य तथा उसकी सादगी हमारे सन्मानका पात्र है।..............."

"जहाँ तक मुझे मालूम है, तुम्हें कुछ ही महीने यूरोपमें रहनेका मौक़ा मिला है। जब कि लेनिन् वहाँ २० साल रहा। तुम्हारे विचारमें घरमें रहकर क्रान्तिकारी नेतृत्वकी तैयारी अच्छी रही या विदेशमें रहकर ?"

उसने 'हाँ' और 'न'में जवाब न देकर इसकी एक साधारण व्याख्या की।

उसने कहा—"लेनिनको मैं अपवाद समझता हूँ। रूसके भीतर रहनेवालोंमें भी ऐसे बहुत कम थे, जो देशमें होती घटनाओंका वैसा पूरा-पूरा ज्ञान रखते हों, लेकिन लेनिन देशसे बाहर रहते भी उनका पूरा ज्ञान रखता था। मैं उससे कई बार (१९०७, १९०८ और १९१२ ई०) बाहर जाकर मिला और मैंने आमतौरसे देखा, कि वह रूसी राजनीतिकों-के पुलन्देके पुलन्दे पत्र पाता था। रूसमें क्या घटित हो रहा है, इसे वह उन लोगोंसे भी ज्यादा अच्छी तरह जानता था, जो कि देशके भीतर रहते थे। तो भी इसे वह अपना बड़ा दुर्भाग्य समझता था, कि उसे हमेशा बाहर रहना पड़ रहा है। जो लोग रूसमें रह गये थे—और उनकी संख्या बहुत अधिक थी—उन्होंने आन्दोलनकी निश्चय ही खूब मदद की। जिन्होंने बाहर जाकर आन्दोलनकी मदद की, उनकी संख्या घरमें रहकर काम करनेवालोंकी अपेक्षा २००में एक थी और आज केन्द्रीय समितिमें ३ या ४ ही ऐसे सदस्य हैं, जो कि विदेशमें रह चुके हैं।.........

मैंने कहा—"हमें बड़ा आश्चर्य हुआ, जब कि समानताकी स्थापना-को तुमने मध्यम वर्गका दुराग्रह बतलाया।"

स्तालिनने जवाब दिया—"एक पूर्णतया समाजीकृत राज्य, जिसमें हर एक व्यक्तिको एक ही परिणाममें मांस-रोटी मिले, एक ही प्रकारके कपड़े मिलें, वही सामग्री और उतने ही परिणाममें हर एक सामग्री मिले—ऐसा समाजवाद मार्क्सको स्वीकृत नहीं था। मार्क्स सिर्फ इतना ही कहता है, कि जब तक श्रेणियोंका भेद बिलकुल नष्ट नहीं हो जाता, और जब तक श्रम, इच्छा—क्योंकि अभी बहुत लोग कामको बोझा समझते हैं—का विषय नहीं हो जाता, तब तक ऐसे बहुतसे लोग मिलेंगे, जो चाहेंगे कि दूसरे उनसे ज्यादा कामका बोझा उठावें। जब तक कि श्रेणियोंका भेद बिलकुल नष्ट नहीं हो जाता, तब तक लोगोंको तनख्वाह उनके कामके मूल्य—अधिक उपजकी योग्यता—के अनुसार हर एकको दिया जाय। यह है, मार्क्सवादका सूत्र, समाजवादकी पहली अवस्थाके लिए। जब समाजवाद अपनी पूर्ण अवस्थापर पहुँच जायगा, तो हर एक आदमी अपनी कार्य-क्षमताके अनुसार काम करेगा और अपने कामके लिए आवश्यकताके मुताबिक उसे वेतन मिलेगा। यह बिलकुल स्पष्ट है, कि भिन्न-भिन्न लोगोंकी छोटी और बड़ी भिन्न-भिन्न आवश्यकताएं हैं। समाजवादने कभी नहीं इनकार किया, कि व्यक्तियोंकी अपनी अपनी भिन्न-भिन्न रुचि और भिन्न-भिन्न आवश्यकताएँ—प्रकार और परिमाण दोनोंमें—हैं। स्टर्नर और गोथाकी योजनाका मार्क्सने जो खंडन किया है, उसे पढ़ो। वहाँपर मार्क्सने समानताकी स्थापनाके सिद्धान्तका खंडन किया है। समानता स्थापित करना दकियानूसी किसानी मनोभावका अंश है, यह समाजवादी नहीं है। पाश्चात्य लोग बातोंको इस तरह और ऐसे दकियानूसी ढंगसे देखते हैं, कि वे खयाल करने लगते हैं, कि हम हर एक चीज़को बराबर बाँटना चाहते हैं। यह बाबेकोफ़का मत है। उसे वैज्ञानिक समाजवादका कुछ भी ज्ञान नहीं था।......"........

मैंने कहा—"कहा जाता है कि तुम पँवारा बनानेके खिलाफ़ हो और

तो भी तुम्हारी प्रसिद्धिमें कोई चीज़ उतनी सहायक नहीं हुई, जितना यह पँवारा, कि स्तालिन् हमेशा पाइप (तंबाकू) पीता रहता है।"

वह हँस पड़ा—"तुम देख रहे हो, कि मुझे उसकी कितनी कम आवश्यकता है। आज मैं उसे घर छोड़ आया।"

"तो क्या तुम सचमुच पँवारा के खिलाफ़ हो?"

"नहीं, यदि वह ग्रामीण (जनता का) पँवारा हो।"

"देर हो गई। क्या कृपया आप अपनी दी हुई इस पुस्तिकापर अपना हस्ताक्षर कर देंगे?"

उसने सिर हिलाया; लेकिन वह किंकर्तव्यविमूढ़ सा दिखाई पड़ा, क्योंकि वह इस यूरोपीय प्रथा का आदी नहीं था। "हाँ, अच्छा! लेकिन मुझे क्या लिखना होगा?"

दुभाषियेने कहा—"तुम्हारा अपना नाम। और हेर् लुड्विग्का भी।

उस वक्त के उसके संकोचने मुझे बहुत ज्यादा उसकी ओर आकर्षित किया। उसने लाल पेंसिल—जिससे कि चीन्हें खींच रहा था—को उठाकर पुस्तिकापर लिख दिया। मैंने गिना, ३ ताव काग़ज़ पूर्णतया उसकी चिन्हारियोंसे भरे हुए थे।......मैंने खड़े होकर उससे पूछा—"आप आश्चर्य तो नहीं करेंगे मेरे एक प्रश्न पूछनेपर?"

"रूसमें होनेवाली कोई भी बात मुझे आश्चर्यित नहीं कर सकती!"

"दिमाग़का ढाँचा अन्तर्राष्ट्रीय है। जर्मनीमें भी होनेवाली कोई बात हमें आश्चर्यित नहीं कर सकती। क्या भाग्यपर तुम्हारा विश्वास है?"

वह बड़ा गंभीर हो उठा और मेरी तरफ़ मुँह करके उसने अपनी नज़र मेरे चेहरेपर गड़ाई, फिर थोड़ी गंभीर नीरवताके बाद बोला—"नहीं, मैं भाग्यको नहीं मानता। यह बिलकुल मिथ्या-विश्वास है। यह निर्बुद्धिपूर्ण विचार है।"

वह हँस पड़ा और धीरे धीरे मन्द-स्वरमें जर्मन भाषामें कहा—"स्चिकसल् स्चिकसल (भाग्य)"।

फिर वह अपनी भाषामें बोलने लगा—"ठीक वैसे ही जैसे यूनानियोंका। उनके देवी और देवता थे, जो ऊपरसे हर बातके होनेकी प्रेरणा करते थे।"

मैंने कहा—"तुम सैकड़ों ख़तरोंसे होकर गुजरे हो। जेल और निर्वासनके समयोंसे, क्रान्तियों और युद्धोंसे। यह सिर्फ़ भाग्य ही है, कि तुम मारे नहीं गये; और आज यहाँ तुम्हारी जगहपर दूसरा आदमी नहीं है।"

उसे कुछ अनकुस सा लगा, लेकिन ज़रा ही देरके लिए। फिर उसने साफ़ और ठनकती आवाज़में कहा—"भाग्य नहीं, हेर लुडविग! भाग्य नहीं। शायद वहाँ आन्तरिक और बाह्य कारण थे, जिनके कारण मेरी मृत्यु नहीं हुई। लेकिन यह हो सकता था, कि यहाँ मैं नहीं दूसरा बैठा होता।"

मालूम होता था, कि वह इस घने और अनकुस लानेवाले बादलको चीरकर अपनी स्पष्ट तर्क-श्रेणीपर लौट जाना चाहता था। उसने कहा—"भाग्य! उद्यमके सिद्धान्तके विरुद्ध है। यह कुछ छायावाद सा है। और ऐसी छायावादी बातमें मुझे विश्वास नहीं। ज़रूर ऐसे कारण थे, जिनकी वजहसे मैं इन सारे ख़तरोंसे बच निकला। यह सिर्फ़ अकस्मात् या भाग्यसे नहीं हुआ।"

शिचस्कल (भाग्य, भवितव्यता)! इस ज़बर्दस्त जर्मन शब्दकी प्रतिध्वनियाँ अब भी मेरे कानोंमें गूँज रही थीं, जब कि मैं अपनी मोटरपर आकर बैठा।

*** ***

(६) स्तालिनपर गीत

चिरकालसे लोग अपने वीरोंकी प्रशंसाके गीत गाते और उनके

विषयमें अपने हृदयोद्गार प्रकट करते आये हैं। सोवियत्-संघकी नाना भाषा-भाषी जनताने भी लेनिन और स्तालिनके गीत बनाये हैं। अत्याचार और भूखसे जिन्होंने उन्हें मुक्त किया, जिन्होंने अथाह अन्धकारसे निकालकर उन्हें प्रकाशमें रखा, जिन्होंने परतंत्रताकी बेड़ी काटकर मुक्त किया; २० ही वर्षके भीतर उन्होंने अपनी आँखोंके सामने ऐसा संसार देखा, जिसकी वह कल्पना भी नहीं कर सकते थे। ऐसे महापुरुषोंके लिये कृतज्ञतासे दिलका भर जाना बिलकुल स्वाभाविक है। लेनिन और स्तालिनकी प्रशंसामें बने गीत सिर्फ साहित्यिक कवियों हीने नहीं बनाये हैं, बल्कि उनमेंसे कितने ही साधारण जनताके हृदयसे निकले हैं, और बहुतोंके कर्त्ताओंका तो नाम भी दुनिया नहीं जानती। स्तालिनके संबंधमें बनी कुछ कविताओंको हम यहाँ उद्धृत करते हैं—

(१)

जब कभी जनताके लिए तुम्हारे शब्द निकलते हैं;
तो मँडराते बाज़ जैसी हमारी नज़र हो जाती है।
जो कोई तुम्हारे बुद्धिमत्ताके शब्द सुनता है,
उसे वह सदाके लिए अपने हृदयपर उत्कीर्ण करता है।

(२)

तुम्हारा आजमाया हुआ फौलाद हमारे सभी दुश्मनोंके ऊपर,
बिना विचलित हुए और किसीको न छोड़े गिरता है।
अपने नेता सूर्य-मित्रका मैं सम्मान करता हूँ,
जो कि हमारे शत्रुओंका एक एक करके संहार करता है।

(३)

मनुष्यका सुख तुमने हमें दिया;
यह स्तालिनके हाथका काम था।
तुम्हारी अंगुलियोंने इसे शब्द शब्द लिखा;
हमारे इस देशके विधानपर।

सुखमय श्रममें सभी बराबर,
सबको अद्भुत है अधिकार ।
स्तालिनके शब्द अति स्पष्ट सरल,
स्तालिनके शब्द अति महान और सत्य ।

(४)

महान नेता ! हमें एक ढाल दी तुमने,
रत्नजटित तारा आड़नेके लिए ।
दी जवानी कालके आघातसे अनाशमान,
अनन्त सुखमय दिनोंकी ।

इन ग्रामीण कविताओंके कवि अज्ञात हैं ।

चुवाश जातिके कवि 'शेलेपि'ने 'सर्प' कविता लिखी है । सर्पका मतलब यहाँ युद्धकी आग भड़काने वाले साम्राज्यवादी फ़ासिस्टोंसे है ।

(५)

सर्पोंके गुम्बदके ऊपर,
है श्रमिकोंकी भूमि ।
सर्पोंके गुम्बदके ऊपर,
है श्रमिकोंका कानून ।

(६)

तेरी निर्मल दृष्टि हे प्रिय नेता,
है दृष्टि हमारी ।
तेरे निर्मल सुविचार सभी,
हैं स्पष्ट विचार हमारे ।

बहुत सी कविताओंमें स्तालिनकी प्रशंसा और उपमाओंमें निम्न प्रकारके वाक्य उपयुक्त हुए हैं—

(७)

"शिखर जहाँसे क्षितिज दीखता"
"नेता और भ्राता"
"बाज़, हज़ारों बाज-बच्चोंके साथ"
"जनताका इंजीनियर"
"चट्टान यूसेफ़ स्तालिन"
"पार्टीका हीरक अतिप्रकाशमान"
"चन्द्र-सूर्यके नीचे अतिचतुर मनुज"
"निर्भय योद्धा"
"महान लेनिन-जैसा"

(८)

यदि होते दो हृदय मेरे सीनेमें,
मैं लेकर चढ़ घोड़ेपर।
ले आता उन्हें मास्को,
पुर-द्वार उतरता अश्वसे।
लेता निकाल कटिबन्द रेशमी,
रखता उसपर दो ज्वलित हृदय।
देता रख सुघड़ पावड़ोंपर,
कहता पुकार दरबानोंको।
उपहार स्तालिनके लिए एक रेशमी पोटलिका,
पोटलिसे हृदयद्वय जल उठते,
जल उठते, जैसा महा हृदय,
जगमग करता क्रेमलिनमें।

—अज्ञात कवि।

(६)

दाग़स्तानी कवि सुलेमान स्ताल्स्की कहता हैं–

जीवन बढ़ता है आगे,
दल करता है नेतृत्व।
श्रमिकोंका महाप्रयाण,
साथ तुम्हारे उनके ध्वज।
स्तालिन !

तव तरुणायीमें चमकी,
तव ज्योति दिखाती पथ श्रमिकोंको;
नेतृत्व जहाँ तव शोक नहीं,
जीवन है सुखमय।
स्तालिन !

वर्षों बीते और कभी नहीं,
जबसे हमको त्राण दिया;
आया दुर्भग वत्सर कोई।
उत्तुंग शिखरसे तुमको,
है साफ़ दीखते दूर क्षितिज,
स्तालिन !

अरिभुजको तुमने भग्न किया,
दृढ़ किया हमारे भुजको।
और पूर्ण विजय मालाको,
दे दिया शीर्ष दुर्बल के।
एक कुंजी नवजीवनकी
स्तालिन !

तेरा, ओ मेरे युगप्रसिद्ध !
जिसका है नाम,
है सुन्दर कृतियोंकी संज्ञा ।
तेरा कि जिसने शब्द सुने,
औ समझे मन दुखियोंके,
तेरा गाता हूँ मैं यश ।
स्तालिन !

(१०)

ऊपर ऊपर घाटीके,
गिरि-शिखर तुंग ।
ऊपर ऊपर शिखरोंके,
है नभ महान ।
किन्तु स्तालिनके आगे,
है खर्व गगन ।
सम सम हैं तेरे केवल,
वे उच्च विचार ।
ऊँचे उगते हैं नभ में,
तारे और रजनीपति ।
रवि सन्मुख होते मलिन किन्तु,
वह रवि भी होता मलिन,
चमक तेरीके सन्मुख ।
रवि-किरण लुप्त होती,
रजनीके सन्मुख;
पर बुद्धि पारकर उसे चमकती ।
अति कठिन धातु है,
यह कठिन लौह,

पर धातु कल्पनाकी तेरी,
है कठिन कठिनतर ।
तू नभसे है अति महान,
सन्मानित है इससे ही,
इन सभी पर्वतों भीतर ।
औरोंके ऊँचे ऊँचे,
नभचुम्बी सुविचारोंको;
ऊँचे पर्वतके वासी,
नहिं लाते मनमें ।
जन-नेत्र चमत्कृत होते,
उन गिरिबाज़ोंसे,
जब शब्द पहुँचते तेरे,
आदेश हमें देनेको ।
जो शब्द तेरे सुनता है,
नहिं उसे बिसर वह सकता
जो कोई अवगम करता,
तेरी उस हितशिक्षाको;
जय-शिक्षा पाई उसने,
हारेगा कभी न रणमें ।
उत्सुक हैं सारे जनगण,
ऊँचे पर्वत-पुंजोंमें ;
कि देवें दिल दो अपने ।
तेरी सच्ची शिक्षामें ।
मुँह फेर ज़रा तो देखो,
शत-शत हैं पीछे तेरे ।
वे हैं तेरे अनुयायी,

क्यों कि सत्पथ है तेरा ।
एक बार जो तेरा अनुचर,
नहिं वह मरनेसे डरता ।
स्तालिन !

—अज्ञात कवि

(११)

सीमासे सीमा भू तक घाटी और वन पर्वतमें,
जँह बाज़ परम अभिमानी मँडराता केवल ऊपर ।
अति प्रेम-पात्र स्तालिन् सुचतुरके (गुण-गौरवको लेकर),
जनताके हृदयोंसे उठता संगीत ।
द्रुततर बाजोंकी गतिसे यह गीत उड़ रहा नभमें,
कम्पित हैं अत्याचारी सब इसके भय-भैरवसे ।
कंटकित-तार-संरक्षित औ दुर्ग-गुप्त सीमाएँ,
अवरुद्ध न कर सकतीं हैं संगीत सतत-प्रसरणको ।
नहिं कोड़ा और न गोली कर चुप सकता है इसको,
यह साभिमान लँघ जाती खाई औ मोर्चा-बन्दी ।
रिक्शोंके चलते पहियों औ ओठोंसे कुलियोंके,
हलवाहोंके हलसे भी है गीत निकलता इसका ।
जयकर्त्ता ध्वज सा इसको ऊँचे स्वरसे वह गाते,
जनताका संयुत-संगर बढ़ रहा प्रबल पंक्तीमें ।
ऊँचे और ऊँचे स्वरसे साहस और अग्नि बढ़ाता,
बढ़ रहा बढ़ाता अपने अत्याचारीको मगसे ।
कर प्राप्त विजय हम याँ पर अब साभिमान हैं गाते,
स्तालिनके युगको मिलकर हम सम्मानित हैं करते ।
सुखमय अद्भुत नवजीवनको गाते हैं हम अपने,

अपनी पाई विजयोंके गाते सुखके गीतोंको।
सीमासे सीमा भू तक घाटी औ वन पर्वतमें,
घहराता यान गगनका, मोटर गर्जन करती जहँ;
जनताके अतिशय प्रेमीका भाजन जो है स्तालिन,
यह विजयी जनता सारी उस सुचतुरके यश गाती।

—मिखाइल इन्युश्किन

* * * * * *

लोरी

लाउ लाउ लाउ ला।
रात आई मेरे बच्चे सो जा।
सो जा मेरे छोटे भूरी आँखों वाले!
मैं गाती हूँ तेरे लिए,
बड़े दिन होंगे।
तेरा भाग्य।
ओ मेरे प्रसिद्ध,
खेत और जंगल,
सरिता और गिरिवर,
जो कुछ देखता है मेरे धनी,
सब तेरे।
मेरे छोटे भूरी आँखों वाले!
रात आई,
हो गए राजपथ सूने,
खेतोंका काम बन्द हुआ,
सुनता है घर आनेके गीत,
दूरसे ट्रैक्टर ड्राइवरोंके।

जल्दी ही मेरे बच्चे तू होगा बड़ा,
जब बढ़के तू मर्द होगा,
तू भी पुत्र, कम्बाइन चलायेगा।
हाँ मेरे छोटे भूरी आँखों वाले !
तू सिद्ध करेगा अपनेको मेरा पुत्र,
बढ़नेको है तेरे समाजवादी सम्वत्सर।
तेरे सीनेपर अच्छे कामोंके लिए,
चमकेंगे रंग पदकके।
तू होगा सम्मानित अपने काममें,
तू पिछड़ेगा नहीं संगरमें।
कौन तुझसे हाथ मिलायेगा ?
हमारा स्तालिन,
वह मिलायेगा तेरे छोटे हाथोंसे।
लाउ लाउ लाउ ला।
सो जा कोमल औ गहरी नींद,
ओह ! कैसा चमकीला यश,
तेरे लिए रक्खा है,
कैसा सुन्दर और यशस्वी जीवन।

—जुरियत् शकोवा

(चेरकास, स्वायत्तप्रजातन्त्र)

३. सोवियत्के कुछ नेता

स्तालिन सोवियत्का हर समयका नेता है। सोवियत् ही नहीं, बल्कि समाजवादका जब इतिहास लिखा जायगा, तो मार्क्स और लेनिनके बाद उसीका तीसरा नंबर आयेगा। सिद्धान्तकी खोज निकालना मार्क्सका काम था, अब उसके बारेमें कोई दूसरा मार्क्स नहीं हो सकता; चाहे भले ही वह वैज्ञानिक समाजवादके कुछ नये नियमोंको खोज निकाले। इसी तरह दुनियामें समाजवादी क्रान्तियोंकी हर जगह सम्भावना है; और उन क्रान्तियोंको सफल बनानेके लिए प्रतिभाशाली नेताओं-की आवश्यकता होगी। उनके सामने भी समस्या वैसी ही विकट होगी, लेकिन प्रथम साम्यवादी क्रान्तिकी सफलताका सेहरा लेनिनके सिरपर ही रहेगा; यह हम कह चुके हैं। समाजवादी समाजका—और सो भी शहरोंसे लेकर गाँवों तक—निर्माण करनेका प्रथम श्रेय स्तालिनको ही रहेगा।

स्तालिन एक कालका नेता नहीं है, इसलिए उसे सोवियत्के साधारण नेताओंमें नहीं गिना जा सकता। स्तालिनके बाद सोवियत्का सबसे बड़ा सर्वप्रिय नेता क्लेमिन्ती एफ़्रेमोविच् वोरोशिलोफ़् है।

(१) वोरोशिलोफ़्

वोरोशिलोफ़्का जन्म १८८१ ई०में एक मज़दूर परिवारमें हुआ था। ६ सालकी उम्रसे ही उसे खानमें काम करनेके लिए जाना पड़ा। वह कभी स्कूलमें नहीं गया। जो कुछ पढ़ा अपने आप पढ़ा। भूख और अप-मान समाजवाद को ढूँढ़कर पकड़ते हैं। वोरोशिलोफ़से बढ़कर दरिद्रता-का अनुभव किसको था? समाजवादकी लहर जो लेनिन और उसके साथियोंने चलाई, उसका असर उसपर भी पड़ा; और १९०३में वह

कम्युनिस्ट पार्टीमें दाखिल हुआ। अभी वह लड़का ही था, कि एक ज़ारशाही अफ़सरके सामने टोपी न उतारनेके कारण उसे गिरफ्तार किया गया। उसी वक्तसे उसका क्रान्तिकारी जीवन आरंभ हुआ। १९०५ की क्रान्तिमें वह लुगाँस्कके कमकरोंकी सोवियत्का अध्यक्ष था; और उसने भी क्रान्तिमें भाग लिया था। एक तरह सोवियत्के भविष्यके प्रधान सेनापतिको १९०५की क्रान्तिमें ही सैनिक विज्ञानका क-ख पढ़ना पड़ा था। स्तालिन्की तरह वोरोशिलोफ़् भी रूसके भीतर ही छिपकर काम करता रहा। लड़ाईके पहले उसे भी कई बार पुलीसके हाथमें पड़ना पड़ा।

१९१७की क्रांतिमें वह प्रकट होकर काम करने लगा। जब गृहयुद्ध आरंभ हुआ, तो उसने उक्रइनमें-लाल-सेनाकी पहली टुकड़ी सगठित की। इस प्रकार लाल-सेना का भावी प्रधान सेनापति ही उसका आरंभकर भी था। पहले वह पंचम उक्रइनी पलटनका सेनानायक बना, फिर दसवीं पलटनका। दोनकी भूमिमें जर्मनोंसे लड़नेमें उसने अपने कौशलका परिचय दिया; और त्सरित्सिन्में जर्मन सेनाको इस तरुण सेनानायकके हाथसे हारकर बहुत लज्जित होना पड़ा। १९१९में वोरोशिलोफ़् सारे सोवियत्की सवार-सेनाका सेना-नायक बनाया गया। १९२४-२५में वह मास्को सैनिक इलाकेका सेना-नायक था। वोरोशिलोफ़् बराबर स्तालिनका घनिष्ठ मित्र रहा है। अब भी मास्कोके बाहर दोनोंके रहनेके बँगले नज़दीक नज़दीक हैं। १९२७में त्रोत्स्कीके हटाये जानेपर वोरोशिलोफ़् सोवियत्का युद्ध-मंत्री बना। फिर वही संसारकी सबसे ज़बर्दस्त सेना (जो संख्या और योग्यता, शिक्षा और यान्त्रिक शक्ति सबमें अव्वल है। सोवियत्के हर एक सिपाहीके पीछे प्रायः १० अश्वशक्तिके यंत्र पड़ते हैं। संसारमें अधिकसे अधिक यंत्र प्रयुक्त करनेवाली सेनाओं—जैसे फ्रांस और जर्मनी—में प्रति सिपाही ३ अश्व-शक्तिसे ज्यादा यंत्र नहीं हैं) का प्रधान सेनापति बना।

वोरोशिलोफ़ का चेहरा बहुत प्रभावशाली है। जितने विदेशी उससे मिले हैं, सभी उसके स्वभावकी प्रशंसा करते हैं। वह न तो महत्वाकांक्षी है, न राजनीतिज्ञ। उसका विषय है सेना-विज्ञान। सोवियत्-भूमि को अपराजित रखना यही रात-दिन उसकी धुन है।

वोरोशिलोफ़के बाल भूरे हैं, बदन गठीला जैसा कि एक सिद्धहस्त-घुड़सवार के लिए होना चाहिए। सेनामें 'क्लिम्'की पूजा होती है। वह इतना प्रिय है, लेकिन विनयके नाम पर सिपाहियोंको अपनेसे नीचा समझना उसका सिद्धान्त नहीं है। सिपाहियोंमें वह हिल-मिल जाता है। एक बार नौसैनिकोंका उत्सव था। सेनापति बुद्योन्नीके साथ वह भी मौजूद था। सिपाही नाच रहे थे। बड़ी देरकी नाचके बाद एक सिपाहीने अपने साथीके कानमें कुछ कहा। वोरोशिलोफ़ पूछ बैठा—"क्या कहता है?" बतलाया गया—'कह रहा है कि साथी बुद्योन्नी नहीं नाचे।' वोरोशिलोफ़ने हँसते हुए बुद्योन्नी की ओर देखा। अपनी विकराल मूँछोंके लिए मशहूर तथा पोलिश सेना को खदेड़नेवाला सोवियत्-सेनापति बुद्योन्नी खड़ा हो गया। उसने ओवरकोट अलग रखते हुए ललकारा—'जो तुममें सबसे ज़बर्दस्त नाचनेवाला है, वह सामने आये।' बुद्योन्नी तीन घंटे तक नाचता रहा। साथी थककर बैठ गया। बुद्योन्नी अब भी मूँछ फटकारे खड़ा था।

पक्षपात या दो निगाहसे देखना वोरोशिलोफ़को छू नहीं गया है। निशाना उसका अचूक होता है और इसके लिए सैनिक वोरोशिलोफ़को अपना आदर्श मानते हैं। व्याख्यानमें मज़ाक़ करनेमें वह बड़ा सिद्धहस्त है। एक बार पार्टीकी कांग्रेसमें बोलते हुए उसने कहा—"कौन सी कठिनाई बड़ी है मानसिक या भौतिक? निश्चय ही मानसिक ज्यादा बड़ी है। और वह है क्या? प्रारम्भिक विनयके अभावमें सभी चीज़ोंका असंगठन। मैं नहीं समझता हूँ कि यह कहकर भेद खोल रहा हूँ। (हँसी और हर्ष-ध्वनि)



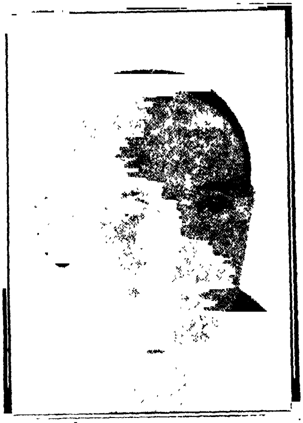
बस्ती बागीरोवा (पृष्ठ ३११)



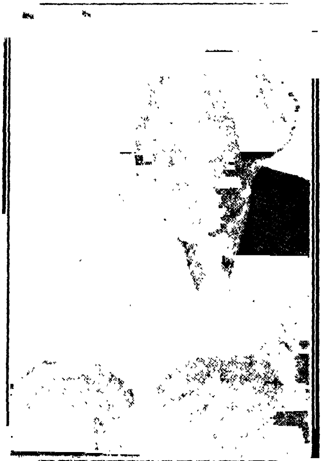
गोर्की (पृष्ठ ३१६)



उपन्यास का एक चित्र



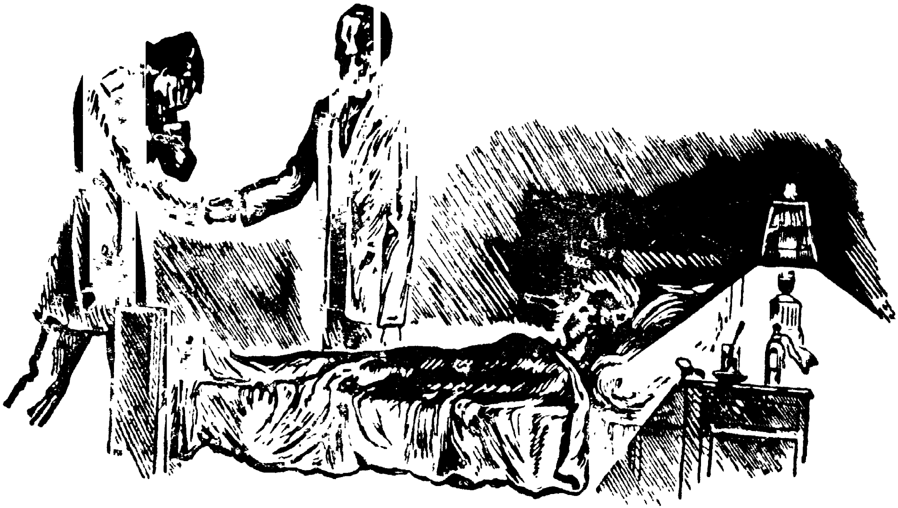
उपन्यासकार शोलोख़ोफ़ (पृष्ठ ३१६)



अलेक्सीई ताल्स्त्वा (पृष्ठ ३२४



मास्को— तिमोथियेफ़ की मूर्त्ति



उपन्यास का एक चित्र



विदेश मंत्री मोलोतोफ़ (पृ० २६७)



सखारोवा (पृष्ठ ३०३)



वायु सैनिका—रसगिना

कगानोविच् मंचपर मौजूद था। वह बीचमें बोल उठा—'अगर तुम कोई भेद खोलो भी, तो पार्टी-कांग्रेसमें हम उसे मना नहीं करेंगे।'

सेनाकी हर एक बात गुप्त रखी जाती है। और उसीको लेकर मज़ाक़िया तौरपर वोरोशिलोफ़् बोल रहा था।

१९३७में सोवियत्की स्थायी सेना ९,४०,००० थी। इतनी बड़ी स्थायी सेना संसारमें और कहीं नहीं थी। इसके दो मुख्य भाग थे। एक जापानके मुकाबलेके लिए पूर्वी सिबेरियामें रखी गई थी और दूसरा जर्मनीके मुकाबलेके लिए पश्चिममें पोलैंडकी सीमाके पास। एक अंगरेज़ लेखकने सोवियत् सेनाके बारेमें लिखा था—

"लाल-सेना संसारकी योग्यतम सेना है। संख्यामें वह जैसी बड़ी है, वैसी ही जोश और हिम्मतमें भी। वह नवीन अस्त्र-शस्त्रोंसे सुसज्जित है। उसके सेनानायक भी योग्य हैं। यूरोपकी सभी सेनाओंसे इसमें मशीनोंका इस्तेमाल अधिक है। १९२९में प्रतिसैनिक २·६ अश्व-शक्ति यंत्र था। १९३०में ३·७ और १०३३में ७·७४।...........लाल सेनाके सिपाहियोंमें ७० सैकड़ा मशीनका काम जानते हैं।"

(२) मोलोतोफ़्

सर्वप्रियतामें स्तालिनके बाद मोलोतोफ़्का नंबर है। वह लेनिनके पुराने साथी क्रान्तकारियोंमें है। बोलशेविक पत्र 'प्रोस्वेश्चेन्ये' में उसके लेख १९११से निकलने लगे थे। वह सोवियत्के अच्छे वक्ताओंमें है, और स्तालिन्का बहुत विश्वासपात्र मित्र है।

(३) कगानोविच्

पहिलेके सोवियत् मन्त्रियोंमें यह सबसे कम उम्रका है। काले बाल और काली मूँछोंवाला लम्बे औ सुदृढ़ शरीरका यह सोवियत्-मन्त्री शरीरसे बड़ा प्रभावशाली और सोवियत्का सर्वश्रेष्ठ वक्ता है। वह जातिका यहूदी है। स्तालिन्का इसके ऊपर बहुत अधिक प्रेम और विश्वास है।

कठिनसे कठिन काम इसे दिया गया और उसे इसने सफलतापूर्वक निबाहा। रेलकी समस्या सोवियत्की सबसे बड़ी समस्या है। पंच-वार्षिक-योजनाओंमें यदि कोई भाग पिछड़ा रहता था, तो यह रेलविभाग हो। कगानोविच्के हाथमें आते ही उसमें उसने नई जान डाल दी, और उसकी प्रगति तेज़ीसे बहुत आगे बढ़ी। उसके व्याख्यानमें बहुत विनोद होता है। एक बार सरकारी आफ़िसों और विभागोंकी सुस्तीपर मज़ाक़ करते हुए कह रहा था—'कृषि-मंत्रि-विभागके पास २६ बोर्ड हैं और २०२ लोकल-बोर्ड।' (लोगोंने ओह ओह कहा)। कगानोविच् ने कहा—"अभी यह तो कुछ नहीं है। हर एक लोकल-बोर्ड सारे स०स०म०र० का प्रबंध करता है।" (हँसी)

एक मर्तबे उसने एक रस्सीके कारखानेके दो अधिकारियोंका किस्सा सुनाया। 'उसमें एकका नाम था, नेवोस्लाब्नी (अनथक) दूसरेका नाम था प्रेलोस्तकोफ़् (सुन्दर)। एक था रस्सी बटनेवाले विभागका अध्यक्ष और दूसरा था रस्सी उधेड़नेवाले विभागका अध्यक्ष। जिस वक्त एक बटता था, उसी वक्त दूसरा उधेड़ता जाता था।' (हँसी)

एक बार उसने ज़िक्र किया—"किसी गवर्नमेंटके पास एक विभाग था निर्णय-सफलता-निरीक्षण विभाग। उसे ५ दिनके कामका निरीक्षण करनेमें ५ महीने लगे। इस विभागके शब्दोंके आरंभिक अक्षरोंको लेनेसे 'सोज़ाना' बनता है।

"लाल-उषा मोज़ेकी फैक्टरीको भिन्न भिन्न मन्त्रिविभागों, बोर्डों और ४६ लोकलबोर्डों ने निरीक्षण किया। निरीक्षणकर्त्ताओंने फैक्टरी-को ६० प्रकारकी भिन्न भिन्न हिदायतें दीं और उनमेंसे हर एक दूसरेको खंडित करती थीं। योजना बराबर बदली जाती रही। नतीजा यह हुआ कि फैक्टरीको बिना योजनाके ही काम करना पड़ा। १६३३की योजना अन्तमें ४ जनवरी १६३४को स्वीकार की गई। इस प्रकार १६३३की योजनाके कामका आरंभ सिर्फ १ साल ४ महीना पिछड़कर हुआ।"

अयोग्यताके खिलाफ़ वह बड़ी निर्दयताके साथ हाथ धोकर पड़ता है। एक बार उसने मज़ाक करते हुए कहा—"एक फैक्टरीको कहींसे चीज़ों-की माँग आई। उसमें कुत्तेका कालर इतने परिमाणमें था, जितसे ज़िलेके हर एक कुत्तेका बदन सिरसे पैर तक ढँक जाय; और कई टन लालटेनके बर्नर, बिना लैम्पके शीशेके, और बहुतसे लैम्पके शीशे, बिना बर्नरके माँगे गये थे।

कगानोविच् १८६३में उक्रइन्के एक गरीब यहूदी घरमें पैदा हुआ। उसे सिर्फ दो साल प्रारंभिक पाठशालामें पढ़नेका मौक़ा मिला, इसके बाद जीविकाके लिए मज़दूरी करनी पड़ी। १६११में वह पार्टीमें दाखिल हुआ और उसने क्रान्ति और गृह-युद्धमें भाग लिया। पार्टीके कामके लिए तुर्किस्तान तथा समारा आदि जगहोंपर उसे रहना पड़ा। वहीं स्तालिन्-को इसकी योग्यताका पहले पहल पता लगा। फिर १६२२में वह उक्रइन्-के पार्टी-संगठनका अधिष्ठाता हुआ। १६२८में केन्द्रीय सरकारमें मास्को चला आया। आजकल वह सोवियत्-सरकारके अत्यन्त प्रभाव-शाली व्यक्तियोंमें है।

(४) लित्विनोफ़्

माखिम् माखिमोविच् लित्विनोफ् संसारका सबसे ज्यादा चतुर वैदेशिक मंत्री रहा है। १८७६में वह ब्यालिस्तोकमें पैदा हुआ था। उस वक्त यह जगह रूसके अधीन थी, पीछे पोलैंडमें चली गई। वह शिक्षित यहूदी घरमें पैदा हुआ था। उसे बाक़ायदा हाई स्कूलकी शिक्षा पानेका अवसर मिला। ५ साल तक वह ज़ारकी सेनामें भर्ती होकर मामूली सिपाही रहा। अपने क्रान्तिकारी कामोंके लिए १६०१में उसे पकड़कर सिबे-रियामें निर्वासित कर दिया गया; लेकिन रास्तेमेंसे ही चकमा देकर भाग गया। स्वीज़रलैंडमें लेनिन्से उसकी मुलाक़ात हुई। १६०३में पार्टीमें आया। कितनी ही बार भेस बदलकर वह रूस आता था, कितनी

ही बार षड्यन्त्रोंमें शामिल होता था। उसके लेख कितने ही नामोंसे छपते थे, जिनमेंसे कुछ थे—पापाशा, फेलिके, दाविद्, मोर्देसेइ, फिन्केल्स्ताइन्, लित्विनोफ़्, हैरिसन्, लुविन्ये, एम्० जी० हैरिसन्, मुस्ताफ़्, ग्राफ़्। उसका असली नाम था मोयोशियेकव ालख। १६०५के षड्यंत्रमें वह शामिल था और चुपकेसे हथियार भेजनेका काम उसे सुपुर्द किया गया था।

१६०६में कानूनन् पितर्बुर्गसे निकलनेवाले समाचार-पत्र 'नवजीवन'-का संपादक बना। १६०७में फिर उसे बाहर जाना पड़ा और काम था, लाख रुपयेके करीबके उन नोटोंका भुनाना, जिन्हें कि स्तालिन्ने तिफ़्लिसके बैंकको लूटकर जमा किया था। लित्विनोफ़् पैरिस् गया। नोट भुनानेका काम हो गया। पीछे फ्रांस सरकारने उसे देशसे निकाल दिया। फिर वह रूस आया, लेकिन फिर भागकर उसे लन्दन जाना पड़ा। फिर कई साल उसे विदेश हीमें रहना पड़ा।

दोहरा जीवन रखनेमें वह बड़ा सिद्धहस्त था। दिनके वक्त वह किसी प्रकाशकका मुंशी बनकर हस्तलेख पढ़ता, प्रूफ़ देखता, हिसाब-किताब रखा करता, और रातके वक्त फिर वह क्रान्तिका प्रचार चलता था। पेटकी रोटी उसे प्रकाशककी मुंशीगीरी या एक जर्मन बिजली-का कंपनीकी नौकरीसे मिलती थी; और राजनीतिक भूखको मिटाने वाली रोटी लेनिन्से।

लाल-क्रान्ति होनेके बाद १६१७में सोवियत्का प्रतिनिधि बनाकर उसे लदन भेजा गया। अगस्त १६१८में ब्रिटिश सरकारने उसे क़ैद कर लिया; क्योंकि सोवियत् सरकारने अँगरेज़ोंके एक आदमीको क़ैद किया था। अंगरेज़ी प्रतिनिधिके छूट जानेपर वह भी छोड़ दिया गया; और फिर मास्को लौट आया। वहाँ सहायक वैदेशिक मंत्री बना। १६३० में चिचिरेन्की जेनोवामें हत्या कर दी गई; तब लित्विनोफ़् सोवियत्का वैदेशिक मंत्री बना।

१९१५में जब लित्‌विनोफ़्‌ लंदनमें था, उसी समय एक प्रसिद्ध सुन्दरी इवी (सर सिड्‌नी लोकी भतीजी)से उसने शादी की।

१९३३में लित्‌विनोफ़्‌ अमेरिकासे दूत-सबंध स्थापित करनेके लिए वाशिंगटन गया था; और उसमें उसे कामयाबी हुई। लित्‌विनोफ़्‌ने वहाँ-से अपनी स्त्रीसे टेलीफ़ोनपर बात की—

लित्‌०—हेलो ?

इवी—हेलो प्रियतम ! मैं तुम्हारी बात खूब अच्छी तरह सुन रही हूँ।

लित्‌०—धीरेसे बोलो, सुन रही हो ?

इवी—तुम कहाँ हो ?

लित्‌०—धवलगृह (ह्वाइटहाउस)में।......प्रेसीडेंट रूज़वेल्ट तुमसे नमस्कार करनेको कह रहे हैं।

इवी—बहुत बहुत धन्यवाद। मेरी तरफ़से उनसे कहो।... ...मिश्का तुमसे बोलना चाहता है।

लित्‌०—मिश्का तुम्हारे पास है ? हलो मिश्का ! तुम्हारी पढ़ाई कैसी हो रही है।

मिश्का—बहुत अच्छी। पापा ! तुम कैसे हो ?

लित्‌०— कैसा मौसम तुम्हारे यहाँ है ?

इवी—सुंदर साफ़ बर्फ़ ! दूतके कामकी सफलताके बारेमें क्या हुआ ? सब ठीक है न ?

लित्‌०—हाँ !

इवी—हम कब तुम्हें देख सकेंगे ?

लित्‌०—प्यार और चुम्बन ! पुनर्दर्शनाय।

(५) स्त्रियाँ

सोवियत्‌-संघमें स्त्री-पुरुषोंके संबंधमें भारी और मौलिक परिवर्तन हुआ है। लेकिन पूँजीवादी लेखक और पत्र उसे बढ़ा चढ़ाकर इस

प्रकार दिखलाना चाहते हैं, जिसमें बाहरके अधकचरे सहानुभूति रखने वाले लोग भड़क उठें। इस संबंधमें जो परिवर्तन हुआ है, वह दो बातोंके कारण हुआ है। सोवियत् राष्ट्रने सिर्फ सिद्धान्तके रूप हीमें स्त्री-पुरुषको बराबर नहीं माना है; बल्कि क्रियात्मक रूपसे उसने इसे दिखला दिया है। दरअसल स्त्रियोंकी काग़ज़ी स्वतंत्रता तब तक वास्तविक रूप धारण नहीं कर सकती, जब तक कि उन्हें आर्थिक स्वतंत्रता न हो। पूँजीवादी देश चाहे यूरोपके हों या एसियाके, अमेरिकाके हों या अफ्रीकाके, विवाह-संबंधको स्त्रियोंके लिए जीविकोपार्जनका एक पेशा मानते हैं। सामाजिक नियम राजनैतिक कानूनसे भी बलवान् होते हैं; और वह कभी इस बातके लिए उत्साह नहीं देते, कि स्त्री अपनी रोज़ी कमानेमें पुरुषापेक्षी न रहे। रोज़ी कमानेवाली स्त्रीको नीची निगाहसे देखा जाता है। डाक्टरी, वकालत, प्रोफेसरी—जैसे कुछ काम ऐसे ज़रूर हैं, जिनमें जानेवाली स्त्रियोंको उतनी नीची निगाहसे नहीं देखा जाता; लेकिन इनमें जानेवाली औरतें कितनी हैं हो? जिनमें प्रतिभा और शिक्षा है, उनके लिए भी वहाँ पुरुषोंसे जबर्दस्त प्रतियोगिता है। कैसे पुरुषोंसे? जो शताब्दियोंसे इन स्थानोंपर अपना पक्का अधिकार जमा चुके हैं। स्त्री जो कुछ स्वतंत्र जीविका कर भी सकती थी, उसमें भी आये दिन बाधा उपस्थित की जा रही है। हिटलर-शासित जर्मनीने विवाहित स्त्रियोंको नौकरी करनेसे वंचित कर दिया था। उसके अन्दर यही विचार काम कर रहा था, कि विवाह स्त्रीके लिए एक पेशा मिल ही चुका है; उसे दूसरे पेशेकी जरूरत क्या?

सोवियत्ने स्त्रियोंको स्वतंत्र पेशा अख्तियार करनेके लिये सारे दर्वाजे खोल दिए हैं। आज वहाँ ऐसी स्त्रीका मिलना मुश्किल है, जो पतिकी कमाईपर गुज़ारा करती हो। स्थलीय, समुद्री और वायवीय—तीनों सेनाओंमें साधारण सिपाहीसे लेकर बड़े बड़े अफसर बननेतकका अधिकार स्त्रियोंको प्राप्त है। वायुसेनामें तो उनकी काफी तादाद है। राजनीति-

में वह खुलकर हिस्सा लेती है; और राष्ट्रीय प्रजातंत्रों तथा सोवियत्-संघ-प्रजातंत्रके मंत्री जैसे दायित्वपूर्ण पदोंपर वह पहुँच रही हैं। पार्लियामेंट के मेंबरोंमें उनकी खासी संख्या है। इंजीनियर, प्रोफेसर, डाक्टर ही नहीं, बड़ी बड़ी फैक्टरियोंमें कितनी ही डाइरेक्टर तथा डिप्टी-डाइरेक्टर तक स्त्रियाँ हैं।

(क) **सखारोवा**—सोवियत् पार्लियामेंटके सबसे कम उम्रके सदस्य क्लाउदिया सखारोवाको ही ले लीजिए। सखारोवाकी उम्र १९३७में १९ साल थी। वह रोन्दिको स्थानमें पैदा हुई थी। उसके माँ बाप उसी जगह कपड़ेकी मिलमें मजदूर थे। आजकलकी बोल्शेविक-बुनाई-मिल, जिसकी सखारोवा डिप्टी-डाइरेक्टर है, क्रान्तिके पहले एक व्यापारी-की सम्पत्ति थी। उस वक्त घंटोंका नियम नहीं था; और सखारोवाके माँ-बाप कामके मारे पिसे जाते थे। सखारोवाके जन्मके समय लाल-क्रान्ति हो चुकी थी, लेकिन अभी गृह-युद्ध भयंकर रूप धारण किये हुए था। धीरे धीरे सभी जगह सोवियत्-शासन स्थापित हुआ, और हर जगह श्रमजीवियों और किसानोंके लिए स्कूल और दूसरी शिक्षण-संस्थाएँ क़ायम हुईं। सखारोवाने स्कूलमें प्रवेश किया। सोलह वर्षकी उम्र तक उसने प्रारम्भिक शिक्षा और अपने भाविष्यके व्यवसायकी शिक्षा प्राप्त की। १९३५में बुनकरके तौरपर उसने काम शुरू किया। साम्यवादी सरकारने अच्छा काम करनेमें उत्साह पैदा करनेके लिए वेतन और पुरस्कार भी अधिक नियत कर रखा है। जिस साल सखारोवाने काम करना शुरू किया, उसी साल अलेक्सेइ स्तखानोफ्‌ने सोवियत्‌के श्रमिकोंके सामने बुद्धिपूर्वक तत्परतासे काम करनेका एक नया उदाहरण पेश किया। उसने काम करनेके विभाग और यंत्रके उपयोग द्वारा साधारण ढंगसे कई गुना अधिक कोयला उतने ही समयमें निकाला। स्तालिन्‌ने जब यह खबर पाई तो स्तखानोफ़्को सुदूर-दक्षिण दोन्‌की खानोंसे बुलाकर क्रेम्लिन्‌में उसका सम्मान किया; और चन्द ही दिनोंमें स्तखानोफ़की कीर्ति बाल्तिक-समुद्रसे

प्रशान्त महासागर तक फैल गई। सखारोवाने भी स्तखानोफ़्का नाम सुना। पहले वह दो कर्घोंपर काम करती थी। फिर उसने सोचा, किस तरह वह अकेले चार कर्घोंका संचालन कर सकेगी। उसमें वह सफल हुई। फिर कुछ दिनों बाद वह छ कर्घोंको चलाने लगी। इस सफलतापर उसका मानसिक हर्ष और उल्लास ही नहीं बढ़ा, बल्कि उसे नक़द इनाम मिले। मास्को और काकेशस्की सैरके लिए टिकट और पैसे मिले; और सबसे बड़ी बात यह हुई कि वह कारख़ानेके प्रधान बुनकरोंमें गिनी जाने लगी।

निश्चय ही अगर सखारोवा किसी पूँजीपतिके कारख़ानेमें काम करती होती, तो उसे यह सुभीता न होता। पहले तो उसे इतना अच्छा काम करनेका, जितना चाहिए उतना, पुरस्कार न मिलता; और यदि दोसे चार कर्घोंको पकड़ती, तो एक मज़दूर बेकार हो जाता। छ कर्घे तक पहुँचने तक तो दो मजदूर बेकार हो जाते। इस प्रकार वह अपने सहयोगी मज़दूरोंके कोपका भाजन बनती। सोवियत्में किसीके बेकार होनेका डर नहीं। अव्वल तो उनके लिये काम बहुत है, और जब काम कम हो, तो आदमीको बेकार करनेकी अपेक्षा कामके घंटोंको कमकर वह अधिक आदमियों को काम दे सकते हैं।

सखारोवा सिर्फ़ अपने ही कामोंसे सन्तुष्ट न थी; दूसरे साम्यवादी श्रमजीवियोंकी तरह अपने अनुभवसे दूसरे साथियोंको फ़ायदा पहुँचाना भी वह अपना कर्तव्य समझती थी। उसने खुद कहा है—"मैं ने अपने कारख़ानेके युवक-युवती श्रमिकोंको सुधरे हुए ढंग सिखलानेमें मदद दी। मैंने कुछ बुनकरोंको लेकर उन्हें सिखलाया, कि जिन चीज़ों-पर काम करना है, उनकी सावधानीसे देखभाल करनी चाहिए। मशीन और पुरज़ोंको साफ़ और बाक़ायदा रखना चाहिए।" बोल्शेविक-मिलमें आज दर्जनों ऐसे चतुर उत्साही कार्यकर्ता हैं; जिनको सखारोवाने इतनी थोड़ी उम्रमें सिखाकर आगे बढ़ाया। उसी फैक्टरीमें एक तरुण बुनकर वान्या स्मिरनोफ़ भी काम करता था। उसका काम बहुत ख़राब था।

जब वह पहलेपहल कारखानेमें आया, तो उसने इतना कपड़ा और सूत खराब किया, कि उसे कामसे हटा दिया गया। सखारोवाने यह बात सुनी। उसने प्रबन्ध-समितिसे उसे फिर लेनेके लिए प्रार्थना की; और फिर सिखलाना शुरू किया। पहले ही महीनेमें उसने अपने हिस्सेसे एक सौ सात सैकड़ा अधिक काम किया; और कुछ ही महीनोंमें स्मिर्नोफ़्‌ने अपने कामके ढंगको इतना सुधारा, कि वह अपनी फैक्टरीके अच्छे कमकरोंमें हो गया।

सखारोवा सिर्फ काम करनेमें ही अपने साथियोंको मदद नहीं देती, बल्कि वह शिक्षा-संबंधी और सामाजिक क्षेत्रमें भी आगे बढ़ी हुई है। वह स्वयं पढ़नेकी बड़ी शौकीन है। रूसी और विदेशी साहित्य, राजनैतिक और उद्योग-संबंधी पुस्तकोंको पढ़नेका उसे बहुत शौक़ है। वह ख़ुद पढ़ती है, और अपने साथियोंकी प्रवृत्ति भी पढ़नेकी ओर करती है। दो वर्षके छोटेसे समयमें जब कि सखारोवा १८वें सालसे जरा ही आगे बढ़ी थी, उसने अपने कार्य द्वारा सबपर अपना सिक्का जमा लिया; और प्रबन्ध-समितिने उसे कारखानेका सहायक डाइरेक्टर (सहायक संचालक) निर्वाचित किया। बोल्शेविक्‌-मिल हमारे यहाँ जैसी कोई छोटी-मोटी मिल नहीं है, इसमें ११००० मज़दूर काम करते हैं। सत्रह वर्षकी लड़कीके लिए किसी पूँजीवादी देशमें क्या ऐसा स्वप्न भी देखनेको मिलता!

जिस वक्त क्लाउदिया सखारोवाको यह पद मिला, तो वह भी इसके भारी उत्तरदायित्वको समझकर सहम सी गई थी। उसने कहा—"मुझे डर मालूम होता था, कि मैं इस उत्तरदायित्वको निभा न सकूँगी। लेकिन मज़दूर-संघ, इंजीनियर और पार्टीके सदस्योंने इस नये काममें मेरी मदद की। पहले हमारा कारखाना अपनी योजनाको पूरा नहीं करता था, लेकिन अब हमने अपनी उपजको योजनासे भी ऊपर बढ़ा दिया है।"

सखारोवाके माँ-बाप अभी ज़िन्दा हैं। उसके दो छोटे भाई और

एक बहन है। लड़के अभी स्कूलमें पढ़ रहे हैं। सखारोवाके माँ-बाप-के आनन्दके बारेमें क्या पूछना है? कहाँ वह पुराने सौदागरके कारख़ाने-में १२-१२ घंटे खटना और उसपर भी पेटको अन्न तथा तनको कपड़ा दुर्लभ! और कहाँ अब उन्हें सात घंटे रोज़का काम और अच्छा वेतन! और उनकी बेटी इस छोटी उम्रमें फैक्टरीमें सहायक संचालक और इसके बाद देशकी सर्वोपरि पार्लियामेंटकी सदस्या! सखारोवाके माँ-बापके घरमें, जहाँ चूहे कलाबाज़ियाँ खेला करते थे, अब रेडियो, फोनोग्राफ और सिलाईकी मशीन है। खाना, पीना, रहना, सभीका तल काफी ऊँचा है। पार्लियामेंटका सदस्य चुने जानेपर सखारोवाने कहा—"कहाँ मैं एक १६ वर्षकी कपड़ेके कारखानेकी मज़दूरिन् थी और वही मैं अब राजनीतिज्ञ बन गई! मैं जानती हूँ, मेरे ऊपर कितनी भारी जवाबदेही है। दुनियाके किसी भी देशमें मेरी जैसी कमसिन लड़की शासन-संचालनमें हाथ डालने-का अधिकार नहीं पा सकती।" सखारोवा अब भी अपने कारख़ानेकी सहायक-संचालक हैं; और साथ ही उसे पार्लियामेंटके सदस्यका कर्तव्य भी पालन करना पड़ता है। अभी हालमें वह अध्ययनार्थ औद्योगिक एकेडेमीमें इंजीनियरका डिप्लोमा पानेके लिए दाखिल हुई है।

* * * * * *

(ख) स्त्रियाँ समान—हम लोग पतिव्रता, सती, आदि शब्दोंसे अपने यहाँकी स्त्रियोंको पृथ्वीकी नहीं, आसमानकी चीज़ बना देते हैं, और इन शब्दोंसे जैसा चित्र हमारे सामने खिंचता है, हम मान लेते हैं, कि वैसा ही रूप हमारी स्त्रियोंका नहीं है। प्रेमको हम दैवी विभूति कहते हैं। पहले तो यह भी विचारणीय बात है, कि स्त्रियोंके बारेमें जो हमारी भावना है, क्या वास्तवमें वह भावना सौमें सत्तर भी ठीक है? खैर, कुछ भी हो, हम इसी भावनाके बटखरेसे सभी जगह तौलना चाहते हैं; और इस तरह हमारे देशके कितने ही लोगोंकी नज़रमें रूसकी स्त्रियाँ भ्रष्टाचारकी पराकाष्ठामें पहुँच गई जँचती है। लेकिन वास्तविकता क्या है? हमारे

यहाँ एक लड़की विवाहित होती है। विवाहके पीछे भी माँ-बापका खयाल होता है—कहाँ हमारी लड़कीको खाने-कपड़ेका सुख होगा? वे लोग खाना-कपड़ा देनेवालेको ढूँढ़ते हैं। पतिका मतलब है खाना-कपड़ा देनेवाला। पत्नीका मतलब है खाना-कपड़ा पानेके लिए जो एक पुरुषकी मुहताज है। पतिव्रत और सतीत्वका मतलब है, जो तुम्हें खाना कपड़ा देता है, मन-वचन-कर्मसे उसकी ताबेदारी करो। पति चूँकि खाना-कपड़ा देता है, इसलिए पत्नीपर वह खास अधिकार रखता है। यदि स्त्री खाने-कपड़ेके लिए किसी दूसरेकी मुहताज न हो, तो निश्चय ही पुरुषका यह अधिकार गिर जाता है। शास्त्र और समाज सभी स्त्रीके लिए तो गंभीरता-पूर्वक पातिव्रत्य और सतीत्वका उपदेश ही नहीं देते हैं, बल्कि जरा भी चूक होनेपर भयंकरसे भयंकर दंड देनेके लिए तैयार हैं। उसे अनजान शहरमें छोड़ आयेंगे, उसे जानसे मार डालेंगे, और उसे समाजमें ज़िन्दगी भर अपमानित और लांछित कर नरककी जिन्दगी बिताने-के लिये मजबूर करेंगे। लेकिन पुरुषका भी स्त्रीके प्रति कोई कर्तव्य है, इसकी तरफ़ उतना ध्यान नहीं है। बहुत हुआ, तो हल्के दिलसे कह दिया, पुरुषको पत्नीके साथ सहानुभूति रखनी चाहिए। किसी भारीसे भारी चूक करनेपर भी पुरुषके लिए कोई दण्ड नहीं। वह एक पत्नीके रहते दो-चार-दससे विवाह कर सकता है; और समाजमें उसका चौधराना कम नहीं होता। वह बिना विवाह किये खुले आम भी अनेक स्त्रियोंको रख सकता है; लेकिन 'मर्द-बच्चा' कहकर उसके इस दुराचारको टाल दिया जाता है। अनिच्छासे रोगी, कुरूप, दुर्गुणी पतिसे विवाहित स्त्री असन्तुष्ट हो किसी दूसरे पुरुषसे यदि प्रेम करना चाहती है, तो उसके लिये उसे भयंकरसे भयं-कर दंड; किन्तु पुरुषके लिये सात खून माफ़ क्यों? यह है हमारा स्त्री-पुरुष सम्बन्धी सदाचार और न्याय?

सोवियत्‌में स्त्री और पुरुष दोनों बराबर हैं। समाजकी दृष्टिमें भी, कानूनकी दृष्टिमें भी, और आर्थिक दृष्टिमें भी। वहाँ स्त्रीके लिए ज़रा

सी चूकपर प्राण-दंड और पुरुषके लिए सात-खून-माफ़का नियम नहीं है। माँ-बाप खाने-कपड़ोंकी तलाशमें किसी लड़कीको किसीके गले नहीं मढ़ते। वह जानते हैं, कि लड़की अपनी रोज़ी आप कमा सकती है। वहाँ हर एक युवती अपनी इच्छानुकूल जिस पुरुषको पसन्द करती है, उससे ब्याह करती है। इसमें सिर्फ़ दोनोंकी सम्मति भर अपेक्षित है। न वहाँ जातिका ख़याल है, न धन का ख्याल है, न रंग का प्रश्न है, न धर्म का विचार है, ना आयु का ध्यान है। विवाह हो जानेपर भी पति इसलिए भौंस दिखाकर पत्नीको अपने काबूमें नहीं रख सकता, कि वह उसका पति है। खाना-कपड़ा देनेका तो सवाल ही नहीं है, स्त्री खुद अपने लिए कमाती है। सन्तान होनेपर उसके भरण-पोषण का भार जैसे पति वहन करता है, वैसे ही पत्नी भी अपने हिस्से का वहन करता है। कहनेके लिए स्त्रीको हमारे यहाँ अर्द्धाङ्गिनी कहते हैं, लेकिन स्त्री अर्द्धाङ्गिनी तभी हो सकती है, जब पुरुष अर्द्धाङ्ग हो। लेकिन पुरुषपर क्या कभी अर्द्धाङ्गका नियम लागू होता है?

सोवियत्में पति-पत्नीका सम्बन्ध मित्रका सम्बन्ध है। दोनों एक दूसरेसे प्रेम रखनेका वादा करते हैं, और वादा-खिलाफ़ीका हक़ नहीं रखते। कुछ साल पहले विवाहके बाद अनबन हो जानेपर तिलाक बड़ी आसानीसे मिल जाता था, लेकिन अब सरकार ने तिलाकके कानून-को कड़ा कर दिया है। वह चाहती है, कि लोग पहले ही भली प्रकार देख भाल लें, एकदूसरेके स्वभावसे भली भाँति परिचित हो जायँ, और विवाह करनेमें जल्दी न करें। विवाह हो जानेपर तुरन्त तिलाकको वह पसंद नहीं करती। पहले तिलाकमें दंड-स्वरूप कुछ थोड़ा रुपया सरकार-को देना पड़ता है। दूसरी बारके तिलाकमें दंडकी मात्रा तिगुनी चौगुनी कर दी जाती है, और तीसरी बार तो इतना जुरमाना देना पड़ता है, कि उसके लिए तिलाक चाहनेवालेको वर्षों खट कर रुपया जमा करना होगा। तिलाकके लिए जो इतनी रोक-थाम की गई है, उसके भीतर सरकार-

की जन-संख्या बढ़ानेकी नीति काम कर रही है। भारतसे सात गुना सोवियत्‌का क्षेत्रफल है; और आबादी हमारे यहाँसे आधी (२० करोड़) है। सोवियत् सरकार चाहती है, कि वहाँ अधिक बच्चे पैदा हों, जिससे कि गैर-आबाद जगहोंको आबाद किया जा सके। क्रान्तिसे पहले रूस-साम्राज्यमें हर दसवें साल १७ प्रतिशत जनसंख्या बढ़ती थी; लेकिन अब वह वृद्धि २४ फी सदी हो गई है। इधर दो वर्षोंमें कुछ और बढ़ी है। इसका मतलब है, हर दसवें साल चौथाई जनसंख्याका बढ़ जाना। १६३८में यदि १८ करोड़ है; तो १६४८में २२॥ करोड़ हो जायगी; और १६५८में २६ करोड़के करीब। इस प्रकार बीसवीं शताब्दीके अन्तमें ७० करोड़ आदमी सोवियत्-भूमिमें बसने लगेंगे। जनसंख्याकी वृद्धिको रोकना उनके हाथमें वैसा ही है, जैसे पंचवार्षिक योजनाओं द्वारा औद्योगिक और कृषि-संबंधी उपजको अपने हाथ रखना। वर्तमान शताब्दीके अन्त तक तो सोवियत् सरकारको जनसंख्याकी वृद्धिको रोकनेको ज़रूरत न पड़ेगी।

जनसंख्याके बढ़ानेकी नीतिने तिलाक़को कम करनेका विधान बनाया है; उसी प्रवृत्तिने गर्भ गिरानेको भी क़ानूनन दंडनीय बना दिया है। दो साल पहले अस्पतालोंमें गर्भ गिरानेका बाक़ायदा इन्तज़ाम था। कोई भी स्त्री जिसका गर्भ तीन महीनेसे कमका है, यदि बच्चा पैदा करना पसन्द नहीं करती थी, तो वह अस्पतालमें चली जाती थी; और विशेषज्ञ डाक्टर और नर्सकी सहायतासे गर्भ गिरा देती थी। अब गर्भ गिराना बन्द कर दिया गया है। गर्भ वे ही स्त्रियाँ गिरा सकती हैं, जिनके बारेमें डाक्टरकी राय है कि यदि उक्त स्त्री बच्चा पैदा करनेके लिए मजबूरकी जायगी, तो उसके शरीर और जीवनके लिए अनिष्ट होगा।

स्त्री-पुरुषके संयोगको दो हिस्सोंमें बाँट कर, जहाँ तक संभोग-सुखका सम्बन्ध है, वहाँ तक सरकारने पुरुष-स्त्रीको स्वतन्त्र छोड़ दिया है। यह उनका वैयक्तिक कार्य समझा जाता है। लेकिन सन्तानके बारेमें वह

उदासीन नहीं हो सकती। इसी लिए जहाँ तक सन्तानके भविष्यका सम्बन्ध है, पुरुष-स्त्रीके संभोग-सम्बन्धी स्वातन्त्र्यमें वह बाधक है। विवाहका मतलब वहाँ है, जाकर दफ्तरमें रजिस्ट्री करवा देना। रजिस्ट्री करवाये बिना भी दोनों स्त्री-पुरुषके तौरपर रह सकते हैं। इसके लिए न समाजकी ओरसे भर्त्सना है, न सरकारकी ओरसे दंड। यदि सन्तान होगी, तो वह हरामी नहीं समझी जायगी; और माँ-बापकी भूलका दंड बच्चेको नहीं मिलेगा। हरामी बच्चा सोवियत्-नियमके अनुसार कोई हो ही नहीं सकता। बापके बिना लड़का तो पैदा नहीं होता, फिर वह हरामी या बे-बाप का कैसे? हाँ, ऐसी अवस्थामें यदि बाप लड़केके भरण-पोषणकी ज़िम्मेवारी न लेना चाहे, तो माँ पर अधिक बोझ पड़नेका डर है। किन्तु ऐसे झगड़ोंमें जहाँ पुरुष लड़केका बाप होनेसे इनकार करता है, वहाँ माँकी बात मान ली जाती है। तो भी जिसमें झगड़ेकी गुञ्जायश न रहे, इसके लिए सरकार उत्साहित करती है, कि लोग अपने विवाहकी रजिष्ट्री करा लें।

स्त्री-पुरुषके सम्बन्धमें, इसमें शक नहीं, वहाँ बहुत भारी क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ है; और जितना परिवर्तन अब तक हो चुका है, आगे उससे और भी बड़ा होगा। लेकिन सहस्राब्दियोंसे इस सम्बन्धमें लोगोंकी ऐसी धारणा बन गई है, कि अब भी पुराने भाव लटके हुए हैं। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ था, जब मैंने एक सुसंस्कृत महिलाको इसी सम्बन्धमें बात करते हुए कहते सुना कि ऐसी भी युवतियाँ हैं जिनको विवाहके बिना यदि गर्भ रह जाय, तो वह आत्महत्या कर लेंगी। मैंने पूछा—"उन युवतियोंको लज्जा और भय तो अपने संबंधियोंसे ही होगा न? मान लो उनके संबंधी भाई-बन्धु साम्यवादी दलके सदस्य हैं, ऐसी अवस्थामें विवाह-सम्बन्धी मूर्खतापूर्ण रूढ़िको वह कोई महत्व नहीं दे सकते। फिर उस युवतीको आत्महत्याकी क्या आवश्यकता? और विवाह तो पुरुष स्त्रीके प्रेमका नाम है, रजिष्ट्री करानेसे कौनसी ज्यादा बात हो जाती है।" उत्तर

मिला—"साम्यवादी दलके सदस्य भाई-बहन भी ऐसा मनोभाव रखते हैं, कि यदि अपनी बहनको उक्त अवस्थामें देखें, तो देहलीपर पैर रखनेसे मना कर देंगे।"

इस उदाहरणसे पता लगेगा कि आर्थिक स्वतन्त्रताके कारण स्त्रियाँ यद्यपि पुरुषोंकी गुलाम नहीं रही हैं, तो भी संभोग-सम्बन्धी स्वच्छन्दता-पर अब भी बहुतसे अंकुश हैं। आपको सोवियत्के स्त्री-पुरुषोंके दुराचार और मिथ्याचारकी बहुत सी कथाएँ सुनाई जायँगी, लेकिन आपको एक बात याद रखनी चाहिए। सोवियत्में रुपयेके बलपर औरतकी आबरू नहीं खरीदी जा सकती। सिर्फ एक इसी बातसे पता लग जाता है, कि सोवियत् और उसके बाहरके देशोंमें इस संबंधमें कितना ज़मीन और आसमानका अन्तर है। भय और प्रलोभन वहाँ किसी स्त्रीको मजबूर नहीं कर सकते। अपनी इच्छासे वे एक दूसरेके प्रेम-पाशमें फँस सकते हैं। वहाँ वेश्यावृत्तिकी कोई गुंजायश नहीं और वेश्यावृत्तिके कारण पैदा होनेवाले अनेक रोग सोवियत्-भूमिसे लुप्त हो चुके हैं।

* * *   * * *

(ज) बस्ती बागीरोवा—सोवियत्-स्त्रीको आगे बढ़नेका कितना मौक़ा है, इसका एक और उदाहरण देकर मैं इस परिच्छेदको समाप्त करता हूँ। बस्ती बागीरोवा या पूरा नाम बस्ती मासिम् किज़ी बागी-रोवा है। वह सोवियत्के एसियाई भाग आज़ुरबाईजान्के एक खेतिहर मज़दूरकी लड़की है, लेकिन आज कोई ऐसा सोवियत् नागरिक न होगा, जिसने बागीरोवाका नाम न सुना हो। ७ नवम्बर १९३७को जब लाल क्रान्तिका बीसवाँ महोत्सव बड़ी धूम धामके साथ मनाया जा रहा था, तो आज़ुरबाइजान् प्रजातंत्रका कोई नगर, गाँव, क़स्बा न होगा, जिसके जलूसमें उसका फोटो आगे आगे न चलता हो। यदि आपको उस दिनके बाकू शहरके जलूसको देखनेका अवसर मिलता, तो वहाँ बागीरोवाके एक नहीं, अनेक फ़ोटो देखनेमें आते। इस महोत्सवके जलूसोंमें कहीं बागी-

रोवाको स्तालिन्से हाथ मिलाते हुए दिखाया गया था, कहीं उसे दोनों हाथोंसे कपास चुनते दिखाया गया था, कहीं उसे तरुण कन्याओंके सामने चुननेकी कला बतलाते हुए दिखाया गया था।

कपासके चुनने और उसकी सफल खेती करनेमें बागीरोवा अपने ही प्रजातंत्रमें नहीं, बल्कि सारी सोवियत्में प्रसिद्ध है। इस शाल ओढ़े ठिगनी औरतके सम्बन्धमें कितनी ही कविताएँ लिखी गईं। दूरसे और नज़दीकसे उससे इतने आदमी मिलने आते हैं, कि कुसुम्-इस्माइलोफ़् ज़िलेके वोरोशिलोफ़् कलेखोज़्में उसे अपने सीधे सादे घरमें कितनी ही चारपाइयाँ तैयार रखनी पड़ती हैं। पिछले ७ नवम्बरको जब वह बाकूकी एक नाट्यशालामें नाटक देखने गई, तो बीचके अवकाशके समय नाट्यकारने अपने नाटकके विषयमें उसकी राय पूछी—"आप इसे कैसा समझती हैं? हमारे अभिनयमें कोई दोष तो नहीं है? संगीतमें तो किसी तरहकी कमी नहीं हुई? पर्दा तो कोई बेमौक़े नहीं है" जनवरी सन् १९३७ ई०में आज़ुरबाइजान प्रजातंत्रके जो प्रतिनिधि सोवियत्-सरकार द्वारा सम्मानित किये गये थे, उनमें बागीरोवा भी थी। १९३५में अखिल सोवियत् पंचायती खेतीके प्रधान कार्यकर्ताओंका जो द्वितीय सम्मेलन हुआ था, बागीरोवा उसमें सम्मिलित ही नहीं हुई थी; बल्कि वह उस समितिका भी सदस्या थी, जिसने पंचायती खेतीके विधानका मसौदा तैयार किया था। अखिल-सोवियत्-संघ-कांग्रेसका आठवाँ (विशेष) अधिवेशन जो दिसंबर १९३६में हुआ था, उसने सोवियत्का नया शासन-विधान तैयार करनेके लिये जो समिति बनाई थी, बागीरोवा भी उसकी एक सदस्या थी। आज बागीरोवा सोवियत् पार्लियामेंटकी एक सम्माननीय सदस्या है।

लेकिन इस बागीरोवाकी जीवन-कहानी क्या है? वह आज़ुरबाइजानके एक गाँवमें एक गरीब किसानके घर पैदा हुई थी। उसके माँ-बाप दिन रात अपने और अपने मालिकोंके खेतोंमें मर-मरकर काम करते

थे। लेकिन तब भी एक साँझ पेट भरकर खाना उनके लिये हराम था। उसके आठ भाई-बहनोंमें छ बचपन हीमें मर गए, और बाप भी जल्द ही उनका अनुगामी हुआ। बागीरोवाको लड़कपन हीसे खेतोंमें काम करना पड़ा। कपास बोनेमें कुछ अधिक फायदा था। बागीरोवाकी माँने अपने खेतमें कपास बोई, लेकिन ज़मीनदार (बेग)ने सींचनेके लिए पानी देनेसे इनकार कर दिया, पौधे वहीं धूपसे सूख गए। लाल क्रान्ति (७ नवंबर १९१७)से दो-एक वर्ष पहले बागीरोवाकी १५ वर्षकी अवस्थामें शादी हो गई। उसका पति भी उसीकी तरह गरीब था। न उसके पास खेत था न हल-बैल। लेकिन क्रान्तिके होनेके साथ बागीरोवाके भविष्यका रास्ता खुल गया। ज़मींदारोंकी ज़मीदारी छीन ली गई। सोवियत् सरकारने किसानोंको खेत दे दिये। अब बागीरोवाके पास खेत हो गया। हल और बैल भी हो गये। अब दोनों स्त्री-पुरुष अपने लिए काम करते थे, बेग-के लिए नहीं। अब उन्हें खुली हवामें साँस लेनेका मौक़ा मिला। बेगोंके साथ मुल्ला और मौलवी भी ख़तम हुए और साथ साथ पर्देका भी अन्त हुआ।

लेकिन अब भी बागीरोवाको अपना जौहर दिखानेका मौक़ा नहीं मिला। यह मौक़ा तब आया, जब कलखोज़ (पंचायती खेती)का आरम्भ हुआ। छोटे-छोटे खेतोंकी मेंड़ें तोड़ दी गईं; और उनकी जगह बड़े-बड़े खेत बन गए। एक-एक, आधे-आधे हलोंकी जुताईकी जगह सारे गाँवके ५०-५० पंचायती हल एकके पीछे एक चलने लगे। कल्खोज़की बात सुनते ही बागीरोवाने उसका मतलब समझ लिया; और १९३०में जब पहले-पहल उसके गाँवमें कल्खोज़का संगठन हुआ, तो वह सबसे पहले उसमें शामिल हुई और प्रबन्ध-समितिकी सदस्या निर्वाचित हुई। वैज्ञा-निक ढंगकी जुताई और वैज्ञानिक खादके इस्तेमालका मौक़ा मिला। भूमि कपासके योग्य समझी गई; इस लिए गाँवने कपासकी खेती करना निश्चय किया। १९३१की गर्मियोंमें (जाड़ोंमें अधिक सर्दीके कारण उस

देशमें खेती नहीं होती) बागीरोवा ५० सेर कपास प्रतिदिन लोढती थी। उस वक्त तक एक ही हाथसे कपास लोढ़नेका रिवाज था। बागीरोवा-ने सोचा, यदि एक हाथसे मैं ५२ सेर कपास चुन सकती हूँ; तो दो हाथ-से चुननेपर १०० सेर चुन सकूँगी। जितनी ही ज्यादा मैं कपास जमा कर सकूँगी, उतना ही अधिक कपड़ा मेरे देशके भाई-बहनोंको मिलेगा; और उतना ही उनका जीवन सुखमय होगा। इस तरहके विचार बागीरोवा-को उस वक्त नहीं आये थे, जब वह अपने खेतमें अकेले खेती करती थी। बागीरोवाने दोनों हाथोंसे कपास चुनना शुरू किया। पहली फ़सलमें उसने ८५ सेर प्रतिदिनके हिसाबसे चुना। दूसरे साल ११८ सेर, फिर २७० सेर, फिर ४६४ सेर और १९३७में उसने ६४८ सेर (१९३८) प्रतिदिनके हिसाबसे चुना। इस गतिमें वृद्धिके लिए मशीन भी कुछ सहायक बनी।

इतना ही तक उसने बस नहीं किया। उसने कपासकी खेतीको अधिक लाभदायक बनानेकी ओर ध्यान दिया। खाद और सिंचाईका पूरा प्रबन्ध किया गया। अब वहाँ कोई ज़मींदार नहीं था, कि बागीरोवाको सिंचाईके पानीके लिए रोकता। इसका परिणाम यह हुआ, कि १९३७में उसने प्रति ढाई एकड़ ४८०० सेर (१२०५) कपास पैदा की। पिछले साल तक इसके तिहाईको ही आजुर्बाइजान्‌में सबसे बड़ी फ़सल कहते थे।

बागीरोवाका ध्यान हमेशा रहता है, कि जिस मुस्तैदी और योग्यता-के साथ वह काम कर रही है, उसी मुस्तैदी और योग्यताके साथ उसके साथी भी करें। वह अपना ज्ञान उन्हें सिखाती है। वह उन्हें उत्साहित करती है। १९३५के नवम्बरमें अपने प्रजातन्त्रकी ओरसे उसका स्वागत किया गया था। उस वक्त उसने कहा था—"योग्य कार्यकर्त्ताओंपर सब कुछ निर्भर है। कैसे योग्य कार्यकर्त्ता? जो कि पूरे दिलसे अपने कामको प्यार करते हैं; और हमेशा सोचते रहते हैं, कि कैसे वह और अधिक शीघ्रता और योग्यताके साथ अपना काम कर सकेंगे? हम सबको

ऐसे ही बनना चाहिए। मैं खुद तथा कुद्‌रत् और दूसरे कोशिश कर रहे हैं, कि अधिकसे अधिक कल्खोज़ियोंको दोनों हाथोंसे कपास लोढ़नेकी कला सिखाई जाय।"

आज बागीरोवाके सैकड़ों शिष्य और शिष्याएँ सारे आज़रबाइजान्‌में फैली हुई हैं। उनमें कोई कोई तो गुरुसे भी बाज़ी मार ले गए हैं। उदाहरणार्थ १९३६में बाग़ीरोवाने ४६४ सेर कपास प्रतिदिन लोढ़ी थी। लेकिन उसकी शिष्या मनिया करीमोवाने ५०४ सेर लोढ़ी। बागीरोवा अपनी इस शिष्याको बहन कहती है। १९३७में बागीरोवाने प्रतिदिन ६४८ सेर लोढ़ा; लेकिन उसकी दूसरी शिष्या पसिरा हुसेनोवाने ६५० सेर लोढ़ा। इस सालके लिए बागीरोवाने तय किया है कि १००० सेर या एक पूरा टन कपास एक दिनमें लोढ़ेंगी।

(६) सोवियत्-लेखक

(क) लोक-कवि—सुखी समाज यदि उन्नतिकी तरफ़ अग्रसर नहीं हो रहा है, तो वह विलासितापूर्ण मृत्युकी तरफ लेजानेवाला साहित्य पैदा करेगा। दुखी समाज यदि निराशापूर्ण अवस्थामें पड़कर किंकर्तव्यविमूढ़ नहीं हो गया है; तो वह घनान्धकारको चीरकर आती किरणोंकी भाँति जीवन-संदेश-वाहक साहित्यको पैदा करेगा। ज़ारशाही रूसमें एक तरफ़ चन्द लोग विलासिताकी सभी सामग्रियोंमे पूर्ण जीवन बिता रहे थे, और दूसरी तरफ़ अधिकांश लोग दरिद्रता और दुःखमय जीवनके सबसे निम्न तलपर पहुँचे हुए थे। इस दूसरी श्रेणी और उससे सहानुभूति रखनेवालोंने रूसी भाषामें इस प्रकारका साहित्य पैदा किया, जिसने परम अवसाद को प्राप्त हुई जनतामें आशा और जीवनके लिए प्रेरणा प्रदान की। पुश्किन्, लेर्मेन्तोफ़्, तुर्गनियेफ्, क्रोपत्किन् जैसे लेखक इसी श्रेणीके थे। जिस वक्त रूसी पीड़ित जनताको काली घटाओंके सिवा और कुछ नहीं दिखाई देता था, उस समय इन लेखकोंने उत्साह प्रदान किया।

अलेक्सेइ गोर्कीने कलम उस वक्त उठाई थी, जब कि अमावस्याकी काल-रात्रिमें प्रकाशकी कोई छींट दिखलाई न पड़ती थी। उसने अपनी सफल लेखनीसे 'माँ' जैसी शक्तिप्रद सुन्दर कृति निर्माण की। क्रान्तिकारियोंके साथ सम्पर्क रखनेके कारण वह ज़ारशाहीके कोपका भाजन बना। तो भी रूसकी विद्वन्मंडली अलेक्सेइ माखिमोविच् पेश्कोफ़् (मक्सिम् गोर्की) की क़लमका लोहा मान चुकी थी। २१ फ़रवरी सन् १९०२को गोर्की रूसी अकदमीके सभासद जैसे परममाननीय पदके लिए निर्वाचित हुआ। ज़ार इस समाचारको सुन आपेसे बाहर हो गया। उसने ५ मार्चके पत्र-में लिखा—'गोर्कीके वैज्ञानिक अकदमीके सभासदके तौरपर चुने जाने-की ख़बरने मेरे मनको ऐसे ही धक्का लगाया, जैसा कि उसने हर एक ठीकसे विचारनेवाले दूसरे रूसीके दिलपर लगाया। मुझे समझमें नहीं आता, कि योग्य और चतुर पुरुषोंने कैसे इस कामको पसन्द किया? न गोर्कीकी उम्र ही इतनी है, और न उसकी थोड़ी सी कृतियाँ ही काफ़ी हैं, कि उसे ऐसे सम्माननीय पदके लिए निर्वाचित किया जाय। और सबसे बढ़कर बुरी बात यह है कि वह विचाराधीन अपराधी है। वर्तमान कठिन समयमें अकदमी ऐसे आदमीको अपना सभासद् चुने, इसपर मुझे बहुत असन्तोष होता है।...निकोला।'

अकदमीने अपने निर्वाचनको रद्द कर दिया और इसके विरोधमें कोरोलेन्को और चेखोफ़्ने उसकी सभासदीसे इस्तीफ़ा दे दिया। गोर्की तब-से १९३७ तक—जिस साल कि मृत्यु हुई—बराबर साहित्यके निर्माणमें लग्न रहा। उसने खुद ही साहित्य-निर्माण नहीं किया, बल्कि कितनोंको उसने रास्ता बतलाया, कितनोंको प्रोत्साहित किया और कितने ही धूल-में पड़े हीरोंको उठाकर उनको योग्य आसनपर आसीन कराया। कज़ाक कवि जम्बुल्, दागिस्तानी कवि सुलेमान स्तात्स्की ऐसे ही धूलके हीरे थे; जिन्हें गोर्कीकी परखनेवाली आँखोंने परख लिया और उनकी कृतियोंका सम्मान सारी सोवियत्-भूमिमें होने ही नहीं लगा, बल्कि उन्होंने

दुगुने उत्साहसे नये उत्पन्न हुए समाजके लिए नये साहित्यका निर्माण किया। जम्बुल् १९४६में ९३ सालमें प्रविष्ट हुआ है। यद्यपि वह अक्षर-ज्ञानसे वंचित था, तो भी उसने सच्चा कवि-हृदय पाया था। क्रान्तिसे पहले भी उसने कितनी कविताएँ की थीं और हवाने उड़ाकर उन्हें कज़ाक-के गाँवोंमें पहुँचा दिया था। लेकिन उस वक्त इस अनपढ़ कविकी कृतियोंसे सिर्फ़ अनपढ़ खानाबदोशोंका ही मनोरंजन होता था। क्रान्तिके बाद बिलकुल संसार ही बदल गया। कज़ाक भाषा, जो अब तक लेखबद्ध नहीं हो पाई थी, रूसी लिपिमें लेखबद्ध ही नहीं हुई, बल्कि वह आरंभिक, माध्यमिक और टेकनिकल शिक्षाका माध्यम बन गई। अब जम्बुल्की कविताओंकी कदर करनेवाली सिर्फ़ अशिक्षित जनता ही नहीं, शिक्षित जनता भी हो गई। उसकी कविताएँ रूसी तथा सोवियत्की दूसरी भाषाओंमें अनुवादित हुईं और इस प्रकार सारे सोवियत्-प्रजातंत्रमें जम्बुल्की महिमा फैल गई। जम्बुल्ने कितने ही गीत विद्रोहियों और क्रान्तिकारियों-के यशोगानमें बनाये हैं। किसान विद्रोही पुगाचेफ़् और लाल क्रान्तिके वीर सैनिक चपायेफ़्की तारीफमें उसके बनाये गीत बहुत प्रसिद्ध हैं। वर्तमान जीवनसे वह कितना सन्तुष्ट है, वह उसके निम्न वचनसे मालूम हो जायगा, जिसे कि उसने २२ दिसम्बर १९३७को एक प्रेस-प्रतिनिधिसे वार्तालाप करनेके अवसरपर कहा था—"मैं जनताके नेता स्तालिन्की जन्मभूमि गुर्जीके दर्शनके लिए जा रहा हूँ; और पहली बार जा रहा हूँ। मैं गोरी शहरको देखूँगा, जहाँ स्तालिन् उत्पन्न हुआ और बड़ा हुआ। मैं गुर्जीके अंगूरोंके बगीचोंको देखूँगा और देखूँगा गुर्जीके आकाश-को। मैं गुर्जीके नाटकोंको देखूँगा और गुर्जी (जार्जिया)के ग्राम-गायकों-की आवाज़ सुनूँगा। सोवियत् प्रजातंत्रका सौन्दर्य, विशालता और शक्ति मेरे अन्दर आनन्दपूर्ण भावोंको पैदा कर देती है; जिन्हें मैं अपने गीतोंमें व्यक्त करता हूँ। कज़ाकस्तानका विस्तृत मैदान, अराल् समुद्र, महान् वोल्गा, रूसकी सुविशाल भूमि सभी सानन्द और सुखपूर्ण

जीवनमें है ; और अनेक शताब्दियों बाद पहली बार पूर्णतया खुशहाल है। मुझे यह जानकर खास तौरपर अभिमान होता है, कि यह हमारी अद्भुत् पितृ-भूमि १७ वर्षोंसे युद्ध-रहित हो शान्तिका सुख अनुभव कर रही है। जिस पितृ-भूमिकी हिफ़ाज़तमें लाल-सेना सर्वदा तत्पर है, जिस सेनाका सेनापति दुर्जेय वोरोशिलोफ़् है। गृध्र-दृष्टि सोवियत् गुप्तचर-विभाग देशके प्रेम-भाजन नायकोंके नायकत्वमें बड़ी तत्परताके साथ अपना काम कर रहा है। सोवियत्के भीतरकी सभी जातियाँ—रूसी, गुर्जी, कज़ाक, तुर्कमान्, किर्गिज़, उज़बेक आदि तथा सभी देश वोरोशिलोफ़् और ......की सहायतामें हैं। मैं एक तेज चलनेवाली ट्रेनकी आरामदेह गाड़ीमें सफ़र कर रहा हूँ। अपने चारों तरफ़ हँसमुख और प्रसन्न चेहरोंको देखता हूँ। मेरी पितृ-भूमिके लोग प्रसन्न और सुखी हैं। मैं अपना दिली उमंगोंको छिपा नहीं सकता; यह खयाल करके कि मैं क्रेमलिन्को देखूँगा, जिसमें साथी स्तालिन् रहते और काम करते हैं; और मैं उस प्रदेशको देखूँगा जिसमें स्तालिन् पैदा हुए। सोवियत्-संघकी जनताने मनुष्यता द्वारा निर्माण किये गये सभी संस्कृति और कलाके खज़ानोंको अपनाया है। रूसी, पुश्किन् और गोर्की, उकरैनी शेवचेंको, कज़ाकी कुननबायोफ़्, ईरानी कवि फिरदोसी, अंग्रेज़ शेक्सपियर और गुर्जी रुस्तावेली—सभी हमारे अत्यन्त प्रिय हैं। मैं एक गीति-महोत्सव और हर भाषाके कवियोंके मैत्री-पूर्ण सम्मेलनमें शामिल होनेके लिए जा रहा हूँ। मेरे आनन्दपर सिर्फ़ एक ही शोककी छाया पड़ी है, कि तिफ़्लिसमें मैं अपने दोस्त तथा सोवियत्-भूमिके महान् गायक सुलेमान स्तालस्कीको न देख सकूँगा। अपने समयसे कुछ पहले वह मर गये। कुछ ही दिन और रहते, तो सोवियत् पार्लियामेंटके निर्वाचित सदस्य होनेके गौरवको वह अनुभव करते।

"सुलेमान और मुझमें बहुत सी समानताएँ थीं। मैं और वह दोनों निरक्षर थे। हमने कभी नहीं लिखा। हमेशा पद्यबद्धकर अपने गीतोंको

गाया। हम दोनोंने पूँजीवादी जगत्के जुएका अनुभव किया है; और क्रान्तिके बाद ही सुख क्या है, इसका हमें अनुभव हुआ। सुलेमान् और मैं दोनोंने इस सुख, इस पुनरुत्पन्न जनता और इस महान् स्तालिनीय युग और अपनी पितृ-भूमिका गान गाया।

"जनताका संगीत कभी इतना मधुर और भावपूर्ण नहीं हुआ। गलीचे और आभूषण इससे पहले कभी इतने सुन्दर नहीं बनाये गये। जनताकी कला कभी इतनी कुड्मलित और प्रफुल्लित नहीं हुई, जैसी कि इस स्तालिनीय युगमें।"

* * *　　　* * *

(व) मेखाइल् शोलोखोफ़्का स्थान सोवियत् उपन्यासकारोंमें बहुत ऊँचा है। इसके दो ग्रंथ 'शान्त दोन्' (तिखी दोन्) और 'धरती उलट-पलट'के अनुवाद अंग्रेज़ीमें And Quite flows the Don, Soil Upturned के नामसे प्रकाशित हो चुके हैं। दोन् सोवियत्की विशाल और सुंदर नदियोंमें है। ईसाई-धर्मके प्रचारसे पहले यह गंगाकी तरह ही पवित्र नदी समझी जाती थी; और सन्मानके लिए इसे 'दोन् बाबा' कहते थे। सोलहवीं, सत्रहवीं शताब्दियोंमें सामन्तोंके अत्याचारके कारण कितने ही रूसी किसान परिवार दोन्-तटकी दुर्गम उपत्यकामें आकर बस गये। यहाँ उन्हें खुली हवामें साँस लेनेका अवकाश मिला और इस स्वतंत्रतासे उन्हें इतना प्रेम हुआ कि उसकी रक्षाके लिए वह अपने प्राणोंको भी तुच्छ समझने लगे। इस प्रकार परिस्थितिने उन्हें जन्मजात योद्धा बना दिया। इन्हीं दोन्-तट-वासियोंका नाम पड़ा 'कसाक्'। अपनी वीरताके कारण यह ज़ारके सबसे बहादुर और विश्वस्त सैनिकोंमें माने जाने लगे। दाहिने कानमें बाली कसाक् पुरुषका जातीय चिह्न, उनके लिए बड़े सन्मानकी चीज़ थी। धीरे-धीरे उन्होंने अपनी एक अलग जाति कायम की और वह दोन्के राजपूत बन गये। कोई कसाक् लड़की ग़ैर-कसाक्से विवाह-संबंध करनेपर अपनी जाति खो बैठती

थी। ऐसे विवाहसे उत्पन्न सन्तानके लिए उस पुराने ज़माने—जिसको गुज़रे अभी २० ही साल हुए हैं—में अपमानके सिवा और कुछ नहीं धरा था। वेशोंस्काया नगरके पास क्रुशूलिनो गाँव कसाकोंकी बस्ती थी। अलेक्सान्देर् शोलोखोफ़् एक नवागत गैरकसाक तरुणका क्रुश्लनोकी एक कसाक विधवासे प्रेम हो गया। विवाह हुए बिना ही उनको १९०५ ई०में एक बच्चा पैदा हुआ। लड़केका नाम मिखाइल् रक्खा गया। उस ज़मानेमें कहाँ कोई अनुमान कर सकता था, कि यह एक विधवाकी सकर सन्तान सोवियत्-संघके विशाल प्रजातंत्रके सर्वोच्च लेखकोंमें होगा। लड़कपनसे ही मिखाइल्को दोन्की स्वच्छ शुद्ध हवा खानेका अवसर मिला, पहाड़ी भूमिपर तपते सूरजकी धूपमें दौड़ने और गर्म हवामें खेलनेका मौक़ा मिला। उसी वक्त वह देख रहा था, कि कैसे गंभीर और विशाल दोन् शान्त भावसे उसके गाँवके नीचे बह रही है। दोन्के किनारेके कसाकोंके गाँव, उनके छोटे छोटे घर, खलिहान और ऊँचे नीचे खेत उसके चित्तको अपनी ओर बराबर आकर्षित करते रहते रहे। अपने कसाक् हमजोलियोंके साथ वह कभी धूल पड़ी और कभी घास उगी सड़कों और गलियोंमें खेला करता था। जब वह कुछ बड़ा हुआ, तो कसाक् तरुण और तरुणियोंके साथ निर्मल चाँदनीमें सड़कोंपर गाता और हँसता बेफिक्र घूमता था। कसाक् बड़े ही खुशदिल, हँसमुख और विनोदप्रिय लोग हैं। जहाँ कहीं वह जमा हो जाते हैं, हँसी मज़ाक और ठट्ठेसे आस पासकी मनहूसी भाग जाती है। उनके गीत बड़े सुन्दर और प्रभावशाली होते हैं, दिलके अन्तस्तल तक चुभ जानेवाले होते हैं। कसाक् भाषा बड़ी चलती, तीक्ष्ण, चित्र-विचित्र, और सजीव भाषा है। शोलोखोफ़् ने अपनी माँके दूधके साथ उस भाषाको पिया और इस भाषाके मुहावरोंको बड़ी स्वतंत्रताके साथ अपने ग्रंथोंमें प्रयुक्त किया। मिखाइल्के पिताने अपने लड़केको आरंभिक स्कूलमें दाखिल किया। अपनी श्रेणीमें वह हमेशा अव्वल रहा करता था। मिखाइलकी माँ अब

तक भी अक्षर-ज्ञानसे परिचित न थी, लेकिन अपने लड़केके साथ पत्र-व्यवहार रखनेके लिए उसने लिखना-पढ़ना सीखा। माँ और बेटेके बीच लिखे गये इन पत्रोंके देखनेसे मालूम होता है, कि शोलोखोफ़्‌ने कहाँसे लेखन-प्रतिभा पाई थी। शोलोखोफ़्‌ अभी बारह ही सालका हो पाया था कि लाल-क्रान्ति आई। उसने शहरसे गाँव तक ऐसी झंझावात बहाई कि जिससे कितने ही कूड़ा-कर्कट, पुराने रीति-रस्म, धनियों और ज़मींदारोंके साथ साथ बहा दिए गए। कसाकोंकी भूमिमें भी रूसके और भागोंकी तरह दो टुकड़े हो गये। गरीबोंने क्रान्तिका अनुगमन किया। धनी क्रान्तिके विरोधी बने। शोलोखोफ़्‌के सामने भी धीरे-धीरे यह प्रश्न आया—किस तरफ़? पन्द्रहवें वर्षमें पहुँचते पहुँचते उसने निश्चय कर लिया किस तरफ़? उसने पोथी-पत्रा बाँधकर ताकमें रखा और क्रान्तिके भँवरने उसे अपने चक्करमें खींच लिया। शोलोखोफ़्‌ एक गरीब घरमें पैदा हुआ था। साथ साथ माँ-बापके जिस तरहके सम्बन्धसे उसका जन्म हुआ था, उससे भी उससे लांछित रहना पड़ता था। उसको मालूम था कि दरिद्रता और अपमान किसे कहते हैं। पीड़ितों और मेहनत करते करते मरनेवालोंकी भलाईकी चिन्ता उसके दिलमें आगकी तरह जल रही थी। उसने क्रांति-विरोधियोंसे युद्ध किया। क्रान्तिके सफल होनेपर जब उसने देखा कि धनी किसान (कुलक) आगे बढ़नेमें बाधक हैं तो वह उनके विरुद्ध खड़ा हो गया। जब बन्दूककी ज़रूरत नहीं रही, तो उसने क़लम हाथमें ली और आज तक वह वैसी ही सफलताके साथ चल रही है जैसे कि उसकी बन्दूक। गृह-युद्धके समय शोलोखोफ़्‌ने दोन्‌-प्रदेशके कोने कोनेकी खाक छानी थी। फिर डाकुओंके खिलाफ़ वह तब तक लड़ता रहा, जब तक कि १९२२में डाकुओंको तितर बितर नहीं कर दिया गया।

१९२३में शोलोखोफ़्‌ तरुण कम्युनिस्ट पार्टीका मेम्बर था। उसी वक्त उसने लिखना शुरू किया। उसकी छोटी कहानियोंकी पहली पुस्तक

१९२५में छपी। इसी सालसे उसका साहित्यिक लेखक-जीवन आरंभ होता है।

वेशेंस्काया स्तानित्सा (ग्राम) दोन् नदीके बिलकुल किनारेपर बसा है। इसकी चौड़ी सड़कोंके किनारे सफ़ेदी किये हुए साफ सुथरे कसाकोंके घर हैं। सड़कपर वृक्षोंकी अपेक्षा धूल अधिक है। नदी-के ढलुआँ किनारेपर हरी घास दिखलाई पड़ती है। नदीसे थोड़ी दूर-पर एक नया घर है जिसमें शोलोखोफ़् आज कल रहता है। अपने लिखने पढ़ने के कमरेके बारेमें मज़ाकसे कहता है—'गर्मीमें बहुत गर्म और सर्दीमें बहुत सर्द।'

शोलोखोफ़् अपना काम रातको करता है। ऐसी आदत बनानेके लिए उसे मजबूर होना पड़ा, क्योंकि दिनमें उससे मिलनेवालोंका ताँता बना रहता है। कसाक पंचायती खेतिहर, मज़दूर, फ़ौजी अफ़सर, विद्यार्थी, देशी-विदेशी यात्री, वृद्धाएँ, बच्चे, सम्वाद-दाता, लेखक, गायक, अभिनेता, नाटक-कार, कवि, सभी उसके पास पहुँचते रहते हैं। कोई मोटरपर आता है, कोई घोड़ेपर, कोई नावपर, कोई स्टीमरपर और कितने ही हवाई जहाज़पर। शोलोखोफ़् सबका दिल खोलकर स्वागत करता है, बात करता है, समझता है, सहायता करता है और राह बतलाता है।

शान्त दोन्, जिसे होश सँभालनेके साथ साथ शोलोखोफ़्ने देखा, अब भी उसके प्रेमकी सबसे बढ़कर पात्र है। उसकी रूखी हवा, उसके चमकीले सूरज, उसकी झुलसाती तथा गर्म पहाड़ी भूमि और खड्ड, उसमें रहने वाले पशु-पक्षी सभी उसके चित्तको आकर्षण करते हैं। दोन्में बहुत तरहकी मछलियाँ होती हैं; और शोलोखोफ़्को वंशी लगाने का बहुत शौक है। कसाक मछुओंसे उसकी बड़ी घनिष्ठता है। उसके उपन्यासोंमें पैने चुभते मुहावरे इस्तेमाल हुए हैं, वह उसे इसी घनिष्ठताके फलस्वरूप मिले हैं। दोन्में मछलियोंका मारना और

सूर्योदयसे सूर्यास्त तक आस पासकी पहाड़ी भूमियों—जिनमें जहाँ तहाँ पंचायती खेतियाँ बिखरी हुई हैं—में शिकार खेलना उसके शरीरमें स्वास्थ्य और स्फूर्तिका संचार ही नहीं करता, बल्कि वहींसे अपने उपन्यासोंके लिए वह सामग्री भी इकट्ठा करता है। दोन् नद, पहाड़ी उपत्यका, कसाक और उनका इतिहास, जीवन और मनोभाव ये सब शोलोखोफ़्के खमीरमें दाखिल हो गए हैं।

एक शामको शोलोखोफ़् पहाड़ियोंसे घोड़ा दौड़ाता घरकी तरफ़ आ रहा था। गाँवमें पहुँचनेसे पहले ही जिस वक्त वह एक तरफ़से मोड़पर आया, उसी वक्त एक तेज़ दौड़ती मोटरकार पहुँच गई। घोड़ा दूसरी तरफ़ मुड़ गया और शोलोखोफ़् एक तरफ़ ज़मीनपर आ पड़ा। अगर ज़रा सी देर हुई होती, तो सवार और घोड़ा दोनों मोटरके पहियोंके नीचे कुचल जाते। ड्राइवरने झटपट ब्रेक लगाया। मोटर-सवारोंने बाहर कूदकर घुड़सवारसे माफी माँगना चाहा। उन्होंने ले जाना चढ़ाकर चाहा किंतु शोलोखोफ़्ने—'सब ठीक है, कोई परवा नहीं' कहकर उनकी प्रार्थना अस्वीकृत कर दी। शोलोखोफ़् फिर घोड़ेपर बैठा। उसके ख़यालमें एक घुड़सवारके लिए यह बड़े अपमानकी बात है, कि वह मोटरपर चढ़े या लगाम पकड़कर घोड़ेको साथ ले चले। जिस वक्त वह गाँवमें घुस रहा था, तो उसने देखा, कि घोड़ेके जबड़े पर खून लगा हुआ है। ऐसी अवस्थामें गाँवमें घुसना उसके लिए असह्य बात थी। वह नदीकी तरफ़ मुड़ा। किनारेपर उतरकर घोड़ेको पकड़े पानीमें ले गया और मुँह और पैरोंको अच्छी तरह मल मलकर धोया। उसके पैरमें दर्द हो रहा था, लेकिन उसकी उसने कुछ परवा न की। हिम्मत करके वह फिर घोड़ेपर चढ़ा। घरपर पहुँचनेपर वह खुद उतरनेमें असमर्थ हो गया था। दूसरे लोग उठाकर उसे कमरेमें ले गये। घुड़सवारीके बूटको पैरोंसे निकालना असंभव था। पैर फूलकर काला हो गया था; और सूखे काठकी तरह निर्जीव मालूम होता था। बूटको टुकड़े टुकड़े काटकर निकालना पड़ा।

शोलोखोफ़्ने साबित कर दिया कि वह सच्चा कसाक है। चाहे वह घायल भले ही हुआ हो, लेकिन उसका घोड़ा बाक़ायदा होना चाहिए।

शोलोखोफ़् अकसर किसी कल्खोज़्में पहुँच जाता है और वृद्ध तरुण स्त्री-पुरुषोंमें शामिल होकर खुले दिलसे गाता-नाचता है, उनसे युद्ध, क्रान्ति, कल्खोज़ी जीवन तथा दूसरे प्रकारकी कथाओं-को बड़े ध्यानसे सुनता है। वह खेतीके हर एक कामको बड़ी बारीकी-से जानता है। उसने इसे दूर रहकर सीखा पढ़ा नहीं है, बल्कि कितनी ही बार जोतने और बोनेके काममें औरों से पीछे न रहकर खुद योग दिया है।

शोलोखोफ़् अपने ग्रामके सामाजिक जीवनमें पूरा भाग लेता है। वह कम्युनिस्ट पार्टीका मेम्बर है। अपने गाँवमें उसने तरुण नाटकमंडली संगठित की है। उसका गृहस्थ-जीवन बहुत सुखमय है। वह तीन बच्चों-का बाप है।

सच्चाई, सहृदयता, आन्तरिक सौन्दर्य और कलापूर्णता शोलोखोफ़्-के ग्रंथोंकी विशेषताएं हैं। उसके रंग-बिरंगे तथा अतिगंभीर मनोवैज्ञा-निक विश्लेषणका पाठकोंके ऊपर बड़ा प्रभाव पड़ता है। उसकी किताबें बहुत सी यूरोपीय भाषाओंमें अनुवादित हो चुकी हैं। वह कितनी ही बार विदेशोंकी यात्राएँ कर चुका है और विदेशी लेखकों और पाठकोंको उसके सत्संगसे सोवियत्-सम्बन्धी ग़लत-फ़हमियोंको हटानेका मौक़ा मिला है।

* * *   * * *

(ग) अलेक्सीई तालस्त्वा (मृत)—गोर्कीके बाद सोवियत्-प्रजातंत्र-का सबसे बड़ा उपन्यासकार अलेक्सीई तालस्त्वा है। उसकी कितनी ही पुस्तकोंके अनुवाद अनेक यूरोपीय भाषाओंमें हो चुके हैं। "प्रथम पीतर" आदि उसके प्रसिद्ध ग्रंथ हैं। तालस्त्वाकी अवस्था ४५से ऊपर है। वह क्रान्तिसे पहले स्वयं भी एक कौंट (ग्राफ़) था, जिसका कौंट टाल्स्टाय-

के परिवारसे सम्बन्ध था। अपने नामराशि पुराने लेखक और आदर्शवादी टाल्स्टायकी भाँति यह भी सिर्फ लेखक और विचारक ही नहीं, बल्कि एक आदर्शवादी व्यक्ति है। सोवियत् जनता और सरकारने उसके ग्रंथोंका बड़ा आदर किया है। सबसे बढ़कर उसका सम्मान हालमें हुआ है; जब कि पिछली १२ दिसम्बरको वह सोवियत् पार्लियामेंटका सभासद चुना गया। यहाँ उसके चुनाव-सम्बन्धी एक सभाका वर्णन हम दे रहे हैं। स्तारया-रूसा (वृद्ध-रूस) ज़िलेसे ताल्स्त्वा पार्लियामेंटकी सभासदीके लिए खड़ा हुआ था। अनीश्वरवादी-कोल्खोज़्‌के वोटरोंके सामने व्याख्यान देनेके लिए वह पहुँचा। श्रोताओंमें सिर्फ वोटर ही नहीं थे, बल्कि कितने ही ऐसे पाठक और पाठिकाएँ भी थीं। वे १८ वर्षसे कम उम्र होनेके कारण वोट देनेके अधिकारी न थे। कोल्खोज़्‌के संस्कृति-भवनके पुस्तकालयमें ताल्स्त्वाके ग्रन्थोंकी प्रदर्शिनी की गई। कोल्खोज़्‌के सबसे वृद्ध किसान करयोफ़्‌ने वक्ताका स्वागत किया। उसने भूमिकाके तौरपर स्तारया-रूसाके किसानोंकी पुरानी जीवनीपर संक्षेपसे प्रकाश डाला। उस वक्त बहुतसे गाँव वाले खेत-बिना अत्यन्त गरीबी और निरक्षरताकी जिन्दगी बितानेके लिए मजबूर थे। बे-खेतके ग्रामीण किसानोंके सामने सिर्फ एक ही स्वप्न था कि, कैसे एक छोटासा टुकड़ा खेतका मिल जाय; लेकिन पीढ़ियों तक यह स्वप्न ही रहा। खेत जमींदारों और धनी किसानोंके अधिकारमें था। करयोफ़्‌ने एक पुरानी कहानी सुनाई। एक ज़मींदारने अपने गाँवके बे-खेतके मज़दूरोंसे कहा—बिना रुके दौड़ते जाओ और सूर्यास्त तक जितनी भूमिपर तुम घूम जाओगे, वह तुम्हारी होगी। गरीब किसान सूर्यास्त तक कहाँ दौड़ सकता था; वह उससे पहले ही चल बसा। आज ज़मीनके लिए दौड़नेकी ज़रूरत नहीं। सोवियत्-सरकारने कल्खोज़ियोंको मुफ्त ज़मीन हमेशाके लिए दे दी है।

गाँववालोंने ताल्स्त्वासे बड़े अभिमानसे कहा—हमारे गाँवका हर

एक बच्चा स्कूलमें जाता है। हमारे इलाक़ेमें ७०० अध्यापक और एक ट्रेनिंग स्कूल है। १९३५में १८० अध्यापक ट्रेनिंग पाकर निकले थे और १९३६में ४६८ अध्यापक ट्रेनिंग पा रहे हैं।

गाँवके तरुण शिक्षक निकितिन् और कुछ दूसरे नौजवानोंने लेखकके ग्रन्थ 'हरे नगर'के बारेमें वार्तालाप किया। एक किसान ने कहा—हरे नगर सोवियत् प्रजातंत्रमें बसाये जा चुके हैं। मग्नितो-गोर्स्क, कोम्सोमोल्स्क, किरोब्स्क ऐसे ही नये शहर हैं, जो चन्द बरसोंमें लाखोंकी जनसंख्या और हरे भरे बाग बग़ीचोंके साथ ज़मीनके भीतरसे निकल आये।

ताल्स्त्वा ने अपने भाषणमें कहा—"आज जब नौजवानों और प्रति-भाशाली पुरुषों द्वारा अपने प्रति कहे गये शब्दों को मैंने सुना, तो मैंने निश्चय किया कि दूनी ताक़तसे सारी शक्ति लगाकर अपनी पितृ-भूमिके बारेमें, तुम्हारे बारेमें अपने बन्धुओंके लिए, अपने देशके लिए, बहुत सी किताबें लिखूँ (ज़ोरकी करतलध्वनि)। सोवियत् क्रान्तिके पहले रूस और सारे संसारमें सिर्फ़ एक ही प्रथा थी और वह थी ज़मीदारी और पूँजीवादकी। मैं उसका विवेचन करने नहीं जा रहा हूँ। उसके बारेमें सिर्फ़ इतना ही कहना काफ़ी है, कि इस प्रथाने साम्राज्यवादियोंके युद्ध-को हमारे सिरपर गिराया। उस युद्धमें डेढ़ करोड़ आदमी बलि चढ़े। इन डेढ़ करोड़को साकार बना कर, आँखोंके सामने लानेके लिए ज़रा सोचिए, दो करोड़ मन मनुष्यका मांस। जर्मन व्यवहार कुशल हैं। उन्होंने इससे फ़ायदा उठाया; और युद्धके समयमें मनुष्यके मांससे वे ग्लेसिरन् निकाल रहे थे।

"आज फ़ासिस्त देश—जर्मनी, जापान और इताली—अपनी सारी ताक़त लगाकर एक नये संसार-व्यापी युद्धकी कढ़ाई चढ़ाना चाहते हैं। मैं पच्छिम (यूरोप) में था, और मैंने इसे अपनी आँखोंसे देखा। हमारी क्रान्तिने एक नई साम्यवादी प्रथा स्थापित की। यह बिलकुल ही भिन्न

राष्ट्रीय अर्थ-नीति थी। साम्यवादी अर्थनीतिके विकासके लिए सर्वत्र शान्ति आवश्यक चीज़ है। सारे समाजके लिए सुख और सम्पत्ति, हर एक नागरिकके लिए सुख और सम्पत्ति, यह है ध्येय साम्यवादी अर्थ-नीतिका।

"खानेसे भूक लगती है—एक रूसी कहावत है। सुख और सम्पत्ति के लिए कोई सीमा नहीं है। और न कोई सीमा या बन्धन होना चाहिए।

"इस साल हमने दो अरब दस करोड़ तुमन (७ अरब पुड, १ पुड =१२ सेर) गेहूँ पैदा किया। इस सालके लिए शाबास, लेकिन भविष्य-में हमें इससे भी बड़ी फ़सल काटनी है। हमने निरक्षरताको दूर कर दिया। बिना अपवादके अब सभी बच्चे पाठशालामें पढ़ते हैं। इतना काफी नहीं है। हमें कोशिश करनी चाहिए कि हमारा हर एक बच्चा हाई स्कूल-की शिक्षा समाप्त करे और पीछे कोशिश करनी होगी कि हमारा हर एक जवान लड़का-लड़की विश्वविद्यालयकी शिक्षा प्राप्त करे।

"पुराने ज़मानेमें गाँवकी जिन्दगी गंदगीकी जिंदगी थी। आप किसी झोपड़ीमें घुसते. और उसे खटमलोंसे भरा पाते। यदि पूछें—'दादी, तुम्हारे घरमें इतने खटमल क्यों भरे हैं?'। 'कुछ नहीं बच्चा, ये हमारे ही हैं।' जवाब मिलता था।"

"आज बिजली और रेडियो गाँवमें घुस गये। घर साफ़ हैं। ढोरोंके लिए गर्म रखी जानेवाली गोशालाएँ बनी हैं। बाग लगाये गये हैं और जाड़ेके दिनोंमें सब्ज़ी पैदा करनेके लिए काँचके गर्म घर तैयार किये गये हैं, तो भी इतना काफ़ी नहीं है। गाँवको देहातका नगर बनना होगा। यहाँपर भी अस्फाल्ट (सख्त पत्थर)की सड़कें, मोटर-खाने, सुन्दर और विशाल क्लबघर, दाईखाने, बड़े स्कूल और विस्तृत खेलके मैदान होने चाहिये।...............२० साल पहले जर्मनी ज़ारशाही ज़मींदारोंके रूसकी अपेक्षा अधिक शक्तिशाली और अधिक संस्कृत देश था। आज

सोवियत् रूस जर्मनी हीसे अधिक शक्तिशाली और वैभवशाली नहीं है, बल्कि जापान और इतालीके जर्मनोंके पल्लेपर बैठ जानेपर भी हमारा पल्ला भारी है। आप पूछेंगे, और अधिक संस्कृत भी? 'हाँ, अधिक संस्कृत भी।' यद्यपि हम जानते हैं कि हमें और कितनी ही सांस्कृतिक आदतें सीखनी हैं।.........हम अधिक संस्कृत हैं, क्योंकि किसी जातिकी संस्कृति हैं वह समस्याएँ और वह आदर्श, जिसे वह जाति सामने रखती है। मेरी रायमें हमारे गाँवका वह अध्यापक, जो पुस्तकोंके पढ़ने और सोवियत् मानवताके आदर्शको सीखनेमें रात-रात खर्च करता है, वह उस जर्मन प्रोफेसरसे अधिक संस्कृत है, जो जर्मन-जातिकी लम्बी खोपड़ियोंकी उच्चतापर व्याख्यान झाड़नेमें अपना सारा समय खर्च करता है।

"हमारी कल्खोजी किसान स्त्री, जिसने ज्यादा सन उपजानेके लिए स्तालिन्को वचन दिया है, और इसके बारेमें काम करनेके बाद रातों पढ़ती है, उस जर्मन प्रोफेसरकी स्त्रीसे अत्यधिक सुसंस्कृत है, जिसका उद्देश्य है बच्चे पैदा करना।—हाँ, दोसे अधिक नहीं, और रसोई-खानेमें हँड़िया पकाना, कमरेकी धूलको झाड़ना और फुरसतके वक्त दूसरी घरनियोंसे गप मारना। हम एक उत्कृष्ट संस्कृतिका निर्माण कर रहे हैं। और सारे ससारकी शान्तिकी रक्षा कर रहे हैं। जब कि फ़ासिस्ट संस्कृति-को मटियामेट कर रहे हैं, युद्धको भड़का रहे हैं।.........याद रखिए स्तारया-रूसा (वृद्ध-रूस)ने स्वतंत्रताके युद्धमें शताब्दियाँ बिताई हैं। शताब्दियों तक स्वातंत्र्य युद्धको सारी रूसी जाति चलाती रही। जब उन्होने देखा कि जमींदारोंके अत्याचारको अधिक नहीं सह सकते, तो बोल्तूनिकोफ्, रजिन्, पुगाचेफ़्के नायकत्वमें विद्रोह किया! यह १७वीं शताब्दीके अन्त और १८वीं शताब्दीमें हुआ। १९वीं सदीमें कितनी ही बार सिपाहियों और किसानोंने बलवा किया। अन्तमें १९०५की क्रान्ति आई। और फिर १९१७की महाक्रान्ति! जनताने एक भयंकर चोटके साथ ज़ार, ज़मींदार, बनियों और धनी किसानोंके जुल्मको खतम कर

दिया। जनता भूमिकी मालिक बनी। उसने अपने मज़दूर-किसान-राज्य का निर्माण किया।...............चिरंजीव सोवियत्-संघकी जातियाँ! चिरंजीव स्तालिनीय विधान!! चिरंजीव वह महान् ऐतिहासिक साम्यवादका पथ, जिसपर साथी स्तालिन हमें अग्रसर कर रहे हैं!!!

१९४६में तालस्त्वाका देहान्त हो गया।

***   ***

(६) ब्लादिमिर् मायाकोव्स्की—यह सोवियत् युगका सर्वश्रेष्ठ कवि था। वर्तमान शताब्दीके आरंभसे कुछ वर्ष पहले काकेशसके एक छोटे गाँव बगदादीमें पैदा हुआ था। उसका जन्म एक जंगल-कर्मचारीके घरमें हुआ था। मायाकोव्स्की-खानदान पहले गाँवको छोड़कर कुतइसीमें चला गया था। वहीं ब्लादिमिरने स्कूलमें प्रवेश किया। कुतइसीके स्कूलमें १८७२की लिखी एक पीले काग़ज़पर अर्जी है। चौथे दर्जेका विद्यार्थी ब्लादिमिर् मायाकोव्स्की उसमें लिखता है—"मेरा पिता अत्यन्त गरीब है, और उसके ऊपर सात व्यक्तियोंके परिवारका बोझ है, जिनको वह बड़ा मुश्किलसे खिला पाता है। अपनी दुस्सह दरिद्रताके कारण मैं प्रार्थना करता हूँ, कि मेरी फ़ीस माफ कर दी जाय।" उसी अलमारीमें एक दूसरी अर्जी भी पाई जाती है, जो कि ब्लादिमिर् माया कोव्स्की नामक एक दूसरे विद्यार्थीने फ़ीस माफ करनेके लिए दी थी। दोनों अर्जियाँ एक ही हाथकी लिखी हुई थीं। दोनोंकी तारीखमें ३० सालका अन्तर है, पहलीमें ब्लादिमिर् कान्स्तान्तिनोविच् माया-कोव्स्कीने अपने लिए फीसकी माफी चाही थी और दूसरी अर्ज़ीमें अपने पुत्रके लिए।

३० वर्षोंने उसके जीवनमें कोई परिवर्तन नहीं किया। १९०५की क्रान्ति, हड़तालें, सभाएँ और पुलीसके साथ सशस्त्र मुक़ाबला ये घटनाएँ थीं, जिन्होंने कि बालक ब्लादिमिरपर अपनी गहरी छाप छोड़ी।

१२ वर्षकी उम्रमें मायाकोव्स्कीने अपनी बड़ी बहनको एक पत्र लिखा "........अब तक कुतइसीके ऊपर कोई आफत नहीं आई। यद्यपि अपर स्कूल और महाजनी पाठशालामें हड़ताल हुई। अपर स्कूलमें तोपों-की प्रदर्शिनी हुई। महाजनी पाठशालामें और बढ़ चढ़कर किया गया। वहाँ तोप लगा दी गई और घोषित कर दिया गया, कि अगर किसीने ज़रा भी मुँह खोला, तो वह इस जगहकी धुस उड़ा देंगे।............... कुतइसी हथियार-बन्द हो रही है, सड़कमें चारों ओर मार्सेई (के क्रान्ति-कारी गीत) की आवाज सुनाई देती है।"

मायाकोव्स्कीके दिमागमें इन घटनाओंने ऐसी उत्तेजना पैदा की, कि वह स्कूल छोड़कर मार्क्सीय स्वाध्याय-मण्डलमें प्रविष्ट हो गया। उसने राजनैतिक और साम्यवादी ट्रैक्ट पढ़े और वह रियोन नदीके किनारे भाषण का अभ्यास करने लगा। वह यूनान्‌के महान् वक्ता देमोस्थेनेस्‌की तरह उत्तम वक्ता होनेके लिए उसी तरह मुँहमें पत्थर डालकर अभ्यास भी करता था।

१९०६में मायाकोव्स्कीका पिता मर गया; और परिवारको मास्को चला जाना पड़ा। माँको थोड़ी सी पेंशन मिल रही थी, जो कि ६ आदमियोंके परिवारके लिए पर्याप्त न थी, इसलिए परिवारने अपने घरके एक कमरेको काकेशस्‌के दो विद्यार्थियोंको भाड़ेपर दे दिया। व्लादिमिर्‌ने उनसे दोस्ती की और गुप्त क्रान्तिकारी-दलसे सम्बन्ध स्थापित किया।

२८ मार्च १९०८को मायाकोव्स्की पहली बार गिरफ्तार हुआ। वह कुछ गैरकानूनी काग़ज़ों और अखबारोंको लिए जा रहा था। उम्र बहुत छोटी होनेसे छोड़ दिया गया, लेकिन पुलीस उसपर बड़ी कड़ी निगाह रखने लगी। जनवरी १९०९में पकड़कर छोड़ दिया गया। जुलाई १९०९ में तीसरी बार पकड़ा गया और उसे ६ महीने जेलकी हवा खानी पड़ी। क्रान्तिकारियोंकी गुप्त बैठकें और पुलीसकी धर-पकड़ने उसके लिए

शिक्षाका काम दिया। उन्होंने उसकी हिम्मतको मजबूत कर दिया। जेलसे निकलनेके बाद उसके सामने प्रश्न हुआ, कि वह किस व्यवसायके लिए अपनेको तैयार करे। अन्तमें उसने कलाकार बननेका निश्चय किया। १६१३के अन्तमें उसने चित्र सम्बन्धी एकेडेमीसे एंट्रेंस पास किया। यही उसकी अन्तिम पाठशाला थी, जिसमेंकि वह चित्रकार बननेके लिए दाखिल हुआ था, किन्तु निकला एक कवि बनकर। इसी समय उसके प्रथम पद्य प्रकाशित हुए, जिनका संग्रह १६१३में प्रथम भविष्यत् वादी काव्य-संचयके रूपमें छपा। संग्रहका नाम था—"स्वतन्त्रकला की हिमायतमें" और हेडिंग था "जन-रुचिके गालपर एक थप्पड़।" मायाकोव्स्की की प्रथम कविताओंका विषय था, नगर का विस्मृत अकिंचन प्राणी। जन-प्रिय होनेका गुण और सभामें भाषण करने का कौशल उसे रंगमंचकी तरफ खींच ले गया। और इसके फलस्वरूप उसने 'ब्लादिमिर मायाकोव्स्की' दुःखान्त नाटक लिखा। विषय है—कवि सभी दीनों और दुखियोंके लिए दुःख सह रहा है। वह मनुष्य जातिके शोकको स्वयं वहन करना चाहता है। लोग उसके पास सहायताके लिए आते हैं, लेकिन वह असमर्थ है। सिवाय संवेदनाके और कुछ नहीं प्रदान कर सकता।

उसके गर्म विचारोंके कारण चित्रकलाकी एकडमीने मायाकोव्स्कीको निकाल दिया। इसपर वह मास्कोसे पीतर्बुर्ग चला गया। वहाँ उसने अपना सारा समय लिखनेके लिए अर्पण किया। १६१३के अन्तमें उसका नाटक एक छोटी सी नाट्यशालामें खेला गया। विरोधके साथ साथ कितनोंने उसकी दाद दी। इससे वह उत्साहित हुआ। उसमें विश्वासकी मात्रा बढ़ी। उसकी कलम और निर्भीक हो गई। १६१४-१५में '१३वाँ शिष्य' के नामसे उसने अपना दूसरा बड़ा काव्य ग्रंथ लिखा। सेंसरने नाम बदलनेके लिए ही मजबूर नहीं किया, बल्कि कितने ही हिस्सोंको निकलवा दिया। 'पतलूनवाले बादल'के नामसे वह ग्रंथ प्रकाशित हुआ।

इसमें भी उसने पीड़ितों और दलितोंकी हिमायत की। लेकिन, यहाँ दलितों और पीड़ितोंकी बेबसीके गीत नहीं गाये गये हैं। वह कहता है— दानके तौरपर समयकी भिक्षा मत माँगो और आगे बढ़ो। जो तुम्हारा है, उसे अपना अधिकार समझकर ले लो। अत्याचारी वह कहता है पहले धनियोंको फिर उन कवियों और लेखकों को, जो इन मोटी तोंदवाले मालिकोंको खुश करनेके लिए क़लम घिसते हैं। और अन्तिम अत्याचारी वह खुदाको कहता है, जो इन सभी अत्याचारों और अन्यायोंको उचित ठहराता है।

क्रान्तिके बाद 'पतलूनवाले बादल' अपने असली रूपमें फिरसे प्रकाशित हुआ। उसके चारों परिच्छेदोंके हेडिंग हैं—'तुम्हारे प्रेमका क्षय हो', 'तुम्हारी कला का क्षय हो,' 'तुम्हारे समाजका क्षय हो', 'तुम्हारे धर्म का क्षय हो,। अभी भविष्यका प्रोग्राम कविने निश्चय नहीं कर पाया था, लेकिन विद्रोही होना वह सबसे ज़रूरी समझता था। आनेवाली क्रान्तिका स्वागत वह इन शब्दोंमें करता है—

"वह समयके भीटेको पार कर रहा है।
मैं उसे देख रहा हूँ, जो कि अब भी अदृश्य है।
क्योंकि उस दूरीपर दृष्टि असफल हो जाती है।
भूखोंके मुंडोंके साथ
विद्रोहके काँटोंकी माला पहने
सन् १९१६ आ रहा है।"

अभी तक मायाकोव्स्की अकेला था, और इस अकेलेपनका उसपर प्रभाव पड़ रहा था। १९१५में पहलेपहल वह गोर्कीसे मिला। गोर्कीने तुरन्त उसकी अप्रतिम प्रतिभा और विद्रोही कवित्वको पहचान लिया। १९१५के अन्त में गोर्कीने अपना मासिक पत्र निकाला और मायाकोव्स्की नियमपूर्वक उसमें लिखने लगा। क्रान्तिके कुछ ही समय पूर्व जब चारों ही ओर निराशा ही निराशा दिखलाई पड़ती थी, उसने लिखा था—

"कैसी बुरी
बाई चढ़ी रातमें,
कैसे मूढ़ ने,
मुझे निर्मित किया।
मैं इतना बड़ा
इतना निरर्थक।"

जब १९१७की क्रांति आई, उस वक्त मायाकोव्स्की सैनिक-सेवा-में था। क्रान्तिके पहले दिनोंमें उसने 'क्रान्ति' नामसे कविता लिखनी शुरू की और बोल्शेविक् कलापर व्याख्यान दिया। क्रान्तिके बाद कितने ही लेखक और कवि अभी सोच ही रहे थे, कि नवयुगका स्वागत किया जाय या नहीं। मायाकोव्स्की पहले ही दिनसे अपने लिए निश्चय कर चुका था। वह अपनी जीवनीमें लिखता है—'स्वीकार करें, या अस्वीकार करें? अपने बारेमें मेरे सामने ऐसा कोई प्रश्न नहीं था। क्रान्ति मेरी है, मैं स्मोल्नी चला गया और काममें लग गया। जो करनेको था, किया।'

१७ नवम्बर सन् १९१७को कलाकार-संघकी बैठक थी। शिक्षा कमीसर लुनाचार्स्कीका प्रस्ताव था—देशके कला-संबंधी जीवनको संगठित किया जाय। उपस्थित कलाकारोंमें कितने बोल्शेविकोंके अधिकारारूढ़ होनेकी निन्दा करते थे और कह रहे थे, कि सहयोग नहीं देना चाहिए। लेकिन अधिकांश सदस्य कोई निश्चय नहीं कर पा रहे थे और चुप थे। मायाकोव्स्कीने सीधे और साफ़ शब्दोंमें प्रस्ताव किया—'नई शक्तिका स्वागत किया जाय और उसके साथ सम्बन्ध जोड़ा जाय।'

जिस वक्त क्रान्तिकी आग धक-धक जल रही थी, उस वक्त कितने ही लेखनीके धनी इस कहावतको चरितार्थ कर रहे थे—"जब तोपकी आवाज चलती है, तो कविता देवी चुप हो जाती हैं। मायाकोव्स्कीने कहा—मैं ऐसी कविताएँ नहीं लिखता, जो कि अच्छे समयकी प्रतीक्षामें दराज़में बन्द रहें। मेरे पास ऐसे ज़ोरदार शब्द हैं" जो तोपके साथ स्वर

मिलाकर बोल सकते हैं। मैं शब्दके ऐसे बमोंको ढाल सकता हूँ, जो शत्रु-को चिथड़े चिथड़े उड़ा सकते हैं।

वह कविताएँ लिखता था और जब उसने काग़ज़की कमी देखी, तो क्रान्तिकी प्रशंसामें ऐसे नाटक लिखे, जिन्हें देशकी हजारों नाट्यशालाओं-में लाखों आदमी देख सकते थे। १९१८में उसने "रहस्यमय सैलाब" नाटक लिखा। उसने बाइबलमें आये बड़े जलप्लावनसे क्रान्तिकी उपमा दी। क्रान्ति वह बाढ़ है, जो पुराने संसारकी सभी गन्दगियोंको डुबाती बहाती साफ़ कर देती है। नाटककारने इस नाटकको क्रान्तिके प्रथम वार्षिकोत्सवसे एक मास प्रथम समाप्त किया था। इसका सभी जगह बड़ा स्वागत हुआ। सोवियत्-नाटक-साहित्यमें इसका विशेष स्थान है। यह सोवियत्-युगका सोवियत्-कवि द्वारा सोवियत्-शक्तिकी प्रशंसामें लिखा गया पहला नाटक था।

१९१८में बोल्शेविक नौसैनिकोंने मायाकोव्स्कीको कविता-पाठके लिए निमंत्रित किया। कविने पुरानी कविता पढ़नेकी जगह उस समयके लिए एक नई कविता बनाई, जो 'बाँऍ चलो'के नामसे उसकी अत्यन्त प्रसिद्ध कविता है, और ससारकी बहुत सी भाषाओंमें उसका अनुवाद हो चुका है। १९१९में उसने '१५ करोड़' नामक अपना महाकाव्य समाप्त किया। इस महाकाव्यमें लेखकका नाम नहीं दिया गया। वह मानता था, कि १५ करोड़ सोवियत्-जनता इसकी निर्माता है, जिसने कि क्रान्ति-को सफल बनाया।

गृह-युद्ध बड़े ज़ोरसे चल रहा था। तरुण सोवियत्-प्रजातंत्र सर्वस्वकी बाज़ी लगाकर अपनी रक्षा कर रहा है। उस वक्त प्रेसों और छापनेकी मशीनोंकी बड़ी कमी थी। जो थीं भी, वह ठीकसे काम नहीं कर सकती थीं। कुछ कलाकारोंने सोचा कि प्रचारके लिए वह हाथसे पोस्टर तैयार करें। उन्होंने रूसी तार-विभागके सामने अपनी इच्छा प्रकट की और उसके स्वीकार करनेपर परिहासमय "रोस्तजंगले"के नाम से

कार्टून निकालने शुरू हुए। यह कार्टून अधिकतर तत्कालीन समस्याओंको लेकर तैयार किये जाते थे। ये क्रान्ति-विरोधियोंके खिलाफ़ प्रचार ही नहीं करते थे, बल्कि ताज़ी समस्याओं द्वारा समाचारका भी काम देते थे। रोस्तजंग्ले थोड़े ही दिनोंमें सारे देशमें फैल गये। मायाकोव्स्की इस योजनाका प्रधान-नायक था और उसने हजारों कार्टून खुद बनाये। कितनी ही बार उसकी कविताएँ रोस्तजंग्लोंमें निकलीं। इस वक्त मायाकोव्स्कीको चित्रकार और काव्यकार दोनोंकी शक्तिका पूरा पूरा उपयोग लेनेका अवसर मिला। तत्कालीन सभी घटनाओंपर कार्टून खींचे गये। सफेद जेनरल देनिकिन्, उदेनिन्, रेंगल्‌से लेकर पोल् सामन्तों तथा दूसरे हज़ारों विषयोंपर कार्टून निकाले गये। वह जनताके ध्यानको अपनी ओर आकर्षित करनेमें बहुत सफल हुए। अहम्मन्य कवि और कितने ही अहम्मन्य पाठक उस समय मायाकोव्स्कीको बड़ी नीची निगाहसे देखने लगे। उनके ख्यालमें था, कि ऐसा छोटा काम किसी ऊँचे कविके लिए शोभा नहीं देता। मायाकोव्स्कीके खयालमें कोई काम छोटा-बड़ा नहीं है। जो उपयोगी हो और जिसकी आवश्यकता हो, वही बड़ा काम है।

गृह-युद्धके समाप्त हो जानेके बाद भी कितने ही समय तक रोस्त-जंग्ले कार्टूनोंसे अलंकृत होते रहे। अब निर्माताओंने आर्थिक योजना, देशकी पुनर्रचनासे लेकर इन्फ्लुएंज़ा, भूख और अव्यवस्थापर कार्टून बनाने शुरू किये। १९२२के मार्चमें जाकर यह कार्टून-प्रचार बन्द हुआ। ५ मार्चकी "इज़्वेस्तिया"में मायाकोव्स्कीने बहुत दिनों बाद एक कविता लिखी। जवाबदेह कार्यकर्ताओंपर अधिक सभाओंके बोझका लादना यही कविताका विषय था। दूसरे दिन लेनिन्‌ने अखिल रूसी धातुके कारखानोंके मज़दूरोंकी कांग्रेसमें इस कविताकी तारीफ़ करते हुए कहा—अपनी कवितामें कम्युनिस्टोंके बहुत अधिक सभा करनेका वह उपहास करता है। उसकी कवितामें कवित्व कितना है, यह तो मैं नहीं

जानता, लेकिन जहाँ तक राजनीतिका संबंध है, मैं कह सकता हूँ कि वह बिलकुल उचित है।

अब मायाकोव्स्कीने नियमित रूपसे अपनी कविताएँ समाचार-पत्रोंमें भेजनी शुरू की और इस कार्यको वह मृत्युके समय तक करता रहा। उसके काव्य 'लेनिन्' और 'अच्छा' पत्रोंमें प्रकाशित हुए। अब भी उसकी कविताएँ तात्कालिक समस्याओंको ही लेकर होती थीं। कितनी ही बार जब संपादकने मायाकोव्स्कीको फोन किया, कि अमुक विषयपर कोई कविता होती, तो अच्छा था। और उत्तर मिलता—'हाँ, मैं समझता हूँ। इसपर आधा मैं लिख भी चुका हूँ।'

१९२०में लेनिन्की पचासवीं वर्ष गाँठपर मायाकोव्स्कीने जो कविता लिखी थी, उसकी दो पंक्तियाँ थीं—

*करता हुआ लेनिन्-प्रशंसा सूक्ष्म अपने ज्ञानसे।
निज विश्व-आशाकी प्रशंसा कर रहा हूँ ध्यानसे॥

जब लेनिन्की बीमारीकी पहली सूचना निकली, तो मायाकोव्स्कीने लिखा—

क्रान्ति चाहती है अपने सीनेके भीतर।
नितके लिए समोद प्रेमसे लेनिन्-उर-वर।

२७ जनवरी १९२४को लाल-मैदानमें लेनिन्की अर्थीके साथ माया-कोव्स्की मौजूद था। उसने उस समयके दृश्यको इस प्रकार वर्णित किया—

अतिशय नीरव सुन्दर अर्थी,
जगके ऊपर निश्चल।
होंगे किन्तु बगलमें उसकी,
हम वाचाल अमितचल॥

मायाकोव्स्की व्यक्तिका बड़प्पन व्यक्तिकी विभूति नहीं समझता।

---

* साहित्यरत्न पंडित श्यामनारायण पांडे, शास्त्री द्वारा पद्यबद्ध।

उसके विचारमें व्यक्ति समाजकी उपज है, वह ऐतिहासिक आवश्यकता है। वह लिखता है—

दो सौ वर्ष हुए आनेका,
समाचार था आया।
धन्य भाग्यसे भूने पहले,
लेनिन्‌को जब पाया॥

पूँजीवादियोंकी लूट और वर्गद्वन्द्वने लेनिन्‌को पैदा किया—

इसीलिये सिम्बिस्र्क पुरीमें,
जन्मा वह था शुभ दिन।
(लिये हाथमें आग क्रांतिकी)
साधारण शिशु लेनिन्॥

वह सच्चे कम्युनिस्टकी तरह सारी शक्तिका स्रोत जनता को मानता था। वह एक जगह लिखता है—

श्रेणी की वर्गवंदियों को,
लेनिन् ने छुआ (अभय सभक्ति)।
उस छूनेसे ही उसको थी,
मिल गई ज्योति मिल गई शक्ति॥
उस शक्ति ज्योतिसे जनताकी,
वह सदा बढ़ा ऊँचा लेनिन्।
उन्नतिकी उन्नत चोटी पर,
श्रेणीके साथ चढ़ा दिन-दिन॥

१९२२ और १९२९के बीच प्रायः हर साल मायाकोव्स्की विदेश-यात्राके लिए जाता था। इन ७ वर्षोंमें उसने लत्विया, जर्मनी, फ्रांस, स्पेन, क्यूबा, मेक्सिको, संयुक्त-राष्ट्र अमेरिका, पोलैण्ड और जेको-स्लावियाकी सैर की। १९२४ में मायाकोव्स्की संसार-यात्राके लिए निकला। वह इसके लिए पेरिस गया और अमेरिका जानेके लिए

बीज़ा लेना चाहा, लेकिन उसमें वह सफल न हुआ। दूसरे साल उसे सफलता मिली। जिस वक्त वह जहाजसे अमेरिकाको जा रहा था, उसी वक्त उसने "अटलांटिक महासागर" "छ साधुनियाँ", "कृक्रिस्तफ़र कोलम्बस" और "गहरे स्थानमें, छिछली फ़िलासफी" कविताएँ लिखीं।।

न्यूयार्कको देखनेपर उसने एक कविता लिखी। कविता यह है—

न्यूयार्क बढ़ाता है मस्ती,
मैं करता हूँ स्वीकार इसे।
पर टोपी शिरपर रही, न मैं,
दे सकता हूँ सत्कार इसे॥
हम वीर सोवियत् जान रहे,
किसका करना सम्मान उचित।
पूँजीवादी-मानव-गण का,
आदर करना अतिशय अनुचित॥

मायाकोव्स्की इस थोथी धारणाको नहीं मानता था, कि कविको उत्प्रेरणा अन्दरसे आती है, बाहरसे प्रेरणा सच्चे कविकी चीज़ नहीं है। मायाकोव्स्की बड़े ज़ोरसे इसका प्रतिवाद करता है। उसका कहना है—एक महान् युगकी आवश्यकताएँ और समस्याएँ सच्चे कविके दिलमें उस से कहीं अधिक सबल प्रेरणा उत्पन्न कर सकती हैं, जैसी कि ऋतुओंके परिवर्तन या कविके सफल-असफल प्रेमके परिणाम। उसने एक जगह कहा है—

तुम अन्य सुमन-गणको रहने,
दो चयन-प्रतीक्षामें सन्तत।
मुझको तो आर्थिक मेजों पर,
बस स्वेद बहाने दो शतशत

कविके लिए वह कहता है—

कवि चाहे यदि सदियों तक,
वह बना रहे यश-धारी।
कवि चाहे मानवताका,
संकेतक बनना भारी॥
तो जगतीके रस जिनसे,
वह पीता है निशि-वासर।
उन नलियोंके रहने दो,
पद गड़े मही के भीतर॥
ले हँसवे और हथौड़े,
जग से श्रमजीवी आते।
कवि-नभसे उनके भुजमें,
जाते, जब प्रेम न पाते॥

१९२८–२९में मायाकोव्स्कीने "खटमल" और "स्नानागार" नामक दो नाटक लिखे। दोनोंमें सोवियत्-जीवनके बचे खुचे विरोधियोंकी कश्‌मकशको चित्रित किया गया है। मायाकोव्स्कीकी अन्तिम कविता 'गला फाड़ कर' १९३०में समाप्त हुई।

स्तालिन्‌के शब्दोंमें 'मायाकोव्स्की हमारे सोवियत्-युगका सर्वोत्तम तथा अत्यन्त प्रतिभाशाली कवि था और है।'

*** ***

सोवियत् लेखक और कवि अपनी कलाके निर्माणमें सारे संसारमें सबसे अधिक स्वतंत्र हैं। शर्त यह है, कि वह वास्तविकतासे बिलकुल नाता तोड़कर गगन-बिहारी बनना न चाहें। वहाँ उनके सामने जीविका का प्रश्न नहीं है। अच्छेसे अच्छे सरकारी कर्मचारी ही नहीं, बड़े बड़े विशेषज्ञोंसे भी अधिक उनकी मासिक आय है। अपनी कृतिके निर्माणमें जैसे एकान्त और शान्त-निवास तथा जितने साधनोंकी आवश्यकता है, वे सब उनके लिए तैयार हैं। वह अपने कामके लिए सुविशाल सोवियत्

प्रजातंत्रमें काम्स्चत्का (कनाडाके पास)से लेनिन्ग्राद् तक ही चक्कर नहीं लगा सकता, बल्कि अगर दूसरे देशोंकी तरफ़से रुकावट न पैदा की जाय, तो सारे संसारमें घूम सकता है। उसकी कृतिमें यदि वास्तविक गुण है, तो उसे किसीकी सिफ़ारिशकी आवश्यकता नहीं और न प्रकाशकोंके सामने गिड़गिड़ानेकी ज़रूरत। सबसे बड़ी बात यह है, कि भूतकी रूढ़ियाँ और धारणाएँ उसके रास्तेमें ज़रा भी रुकावट डालनेकी शक्ति नहीं रखती। बल्कि ऐसे स्वतंत्र विचारवान् लेखकके लिए तो वहाँ सबसे अच्छा सहानुभूति-पूर्ण क्षेत्र है। सोवियत्-साहित्य बिल्कुल २० सालकी चीज़ है। अभी वह अत्यन्त शैशवमें है, लेकिन इतने हीमें उसने अपनी धाक संसारमें जमा दी है। यदि नोबुल-पुरस्कारके संचालकोंको सोवियत्का नाम भड़कने वाला न होता, तो अब तक कितने सोवियत्-लेखक साहित्य-के पुरस्कार पा चुके होते। गोर्की जैसा संसारका सर्वोत्तम लेखक जब नोबुल-पुरस्कारके योग्य नहीं समझा गया, तो इसीसे समझ लीजिए कि नोबुल-पुरस्कारका क्या मूल्य रह जाता है।

* * *   * * *

(ङ०) **सुलेमान स्ताल्स्की**—दागिस्तानका यह गायक ६८ वर्षकी उम्रमें दिसम्बर (१९३७)के पहले सप्ताहमें मर गया। इसकी जीवनी भी इस बातका उदाहरण है, कि सोवियत्-शासन धूलिमें पड़े हीरेको कितना जल्दी पहचानता है। सुलेमानका जन्म दागिस्तानके एक छोटेसे गाँव अशाग-स्तालमें हुआ था। बचपन हीमें उसका बाप मर गया। फिर वह गाँवके धनी किसानोंकी चरवाही करके पेट पालता था। कुछ बड़ा होने पर उसने मज़दूरी तथा गाँवके किसी आदमीकी सईसी भी की। गाँवकी मज़दूरी इतनी कम थी, कि उससे पेट चलाना भी मुश्किल था। मजदूरी-की तलाशमें वह दर्बेन्त पहुँचा और वहीं ४ वर्ष रहा। इसी वक्त उसे मालूम हुआ कि मध्य-एसियामें रेल बनाई जा रही है। वह वहाँ पहुँचा और समर-कन्द रेलवे पर मज़दूरी करने लगा। वहाँ से लौटकर बाकूके तेलके कुओं-

पर उसे काम मिला। उसने कुछ रुपया भी कमाया। अब वह ३० वर्षका हो चुका था; इसलिए शादीके लिए और देरी नहीं करना चाहता था। शादी करके गाँवमें चला आया। उसने नया झोपड़ा बनाया। पैसेसे नया झोपड़ा तो बना लिया, लेकिन रोज़ीका सवाल वैसा ही था। बीबीको लेकर फिर बाकू जाना नहीं चाहता था, इसलिए गाँव हीमें दूसरोंके खेतों पर मज़दूरी करने लगा।

होश सँभालते वक्त हीसे सुलेमानको तुकबन्दीकी आदत थी। जवानीकी ठंडी और गर्म आँधीसे होकर जब वह गुज़र रहा था, तो उसे इस शौकसे आनन्द और सन्तोष मिलने लगा। मुल्ला, गाँवके पंच, ज़मींदार, सरकारी नौकर, महाजनके खिलाफ़ अपनी भाषामें वह पद्य बनाता था। पद्य इतने रोचक होते थे, कि लोग ले उड़ते थे, एक मुँहसे दूसरे मुँहमें होकर वह सर्वत्र फैल जाते थे। लेकिन दो-चार आदमियोंको छोड़ कोई नहीं जानता था, कि इन पद्योंका कर्त्ता कौन है। शादी किये १८ वर्ष गुज़र गये। सुलेमान ४८ सालका हो गया था। बच्चों और परिवारके बोझने उसकी कमर तोड़ दी थी। इसी बीच लाल-क्रान्ति हो गई और क्या हुआ, यह सुलेमानके शब्दों हीमें सुनिए—"बोलशेविक भूकंप ने पुराने संसारको तर-ऊपर कर दिया। हमारे चिर-कालीन दुःखके पहाड़ ढह गये; और हमारी अन्धकारपूर्ण घाटीको अक्तूबरके महान् प्रकाशने आलोकित कर दिया।"

सुलेमानके कहनेके मुताबिक अब उसे नया जीवन ही नहीं मिला, बल्कि नई जवानी मिली। सोवियत्-सरकारने हर जातिकी उन्नतिके लिए उसी की भाषाको साधन बनाया। अब गँवारू भाषाएँ भी साहित्यिक बन गईं। सुलेमानने अक्षरज्ञान पानेका कभी सौभाग्य नहीं पाया। वह अपने पदोंको कंठ हीमें जोड़ता था। उसके पद अब दागिस्तानी भाषामें लिपिबद्ध हुए। पढ़नेवालोंके दिलसे दागिस्तानीके गँवारू भाषा होने का खयाल उठ चुका था। वह देखने लगे कि यह अनपढ़ कवि

अपनी कवितामें कैसे बहुमूल्य मोतियोंको पिरो रहा है। अब सुलेमानकी पुरानी कविताओं, मुल्लों और ज़ारशाहीके नौकरोंके खिलाफ़ जो कही गई थीं—क' शिक्षित लोग भी बड़े आदर से पढ़ने लगे। सुलेमानने अब क्रान्ति और नये युग पर अपनी सरस्वतीको जगाना शुरू किया। कुछ ही दिनोंमें उसकी कविताको दागिस्तानसे बाहर तक जाना पड़ा। उसके कुछ पद्य रूसी भाषा में अनुवादित हो कर छपे। गोर्कीने देखा, वह दंग हो गया। उसने सुलेमानसे परिचय प्राप्त किया, उसकी बहुतसी कविताओंको रूसी भाषामें अनुवादित करवाया। स्तालस्की (स्ताल् गाँववाला)की कविताओं-का बहुत बड़ा भाग सोवियत्की दूसरी भाषाओंमें अनुवादित हो चुका है। सरकारकी ओर से उसे पेंशन मिली थी। जनताकी ओरसे अपार सम्मान देते। उसे पार्लियामेंटका उम्मेदवार खड़ा किया गया था। लेकिन निर्वाचन-दिनसे चार पाँच दिन पहले उसकी मृत्यु हो गई।

स्तालस्की ऐसे निरक्षर प्रतिभाशाली कवि भारतमें भी है और हुए होंगे। अपनी गाँवकी भाषा में वह भी सजीव चुभती और ललित कविताएँ करते होंगे, लेकिन इन प्रतिभाओंको आगे बढ़नेका मौका कहाँ? स्तालस्की भी यदि ज़ारशाहीके ही दागिस्तानमें मर गया होता, या हिन्दुस्तानमें पैदा हुआ होता, हो उसकी गति क्या होती?

अध्याय ४

१. औद्योगिक प्रगति

(१) क्रान्तिके बाद प्रयत्न

सोवियत्-भूमिमें उसके उद्योग-धंधोंकी जो उन्नति हुई है, वह संसारके इतिहासमें अभूतपूर्व है। देशके उद्योगीकरणको एक तरहसे उन्होंने खाली हाथ शुरू किया था। मुल्कके पहलेके स्थापित कारखाने प्रायः बन्द हो चुके थे। ३ वर्षके खूनी गृह-युद्धने रेलों, जहाज़ों, स्टीमरोंको प्रायः बिलकुल ही नष्ट कर दिया था। यंत्र और मेकेनिकल इजीनियरिंगकी विद्या अभी रूसी लोगोंको छू भर ही गई थी। नये कारखानोंके खोलने और बाहरसे मशीनोंके मँगानेके लिए पैसेकी ज़रूरत थी। देशमें न पैसा था, न बाहरका कोई देश एक पैसा भी ऋण देनेके लिए तैयार था। ज़ारशाहीने इतने रुपये इंगलैंड, अमेरिका आदिसे उधार किये थे, कि उनके सूद तकका भी देना नवजात सोवियत्-शासनके लिए असंभव था। तीन वर्षके महायुद्धको चलानेके लिए ज़ारशाहीने इन कर्ज़ोंका अधिक भाग लिया था। कर्जकी ज़िम्मेवारीसे इन्कार कर देनेके सिवा सोवियत् सरकारको कोई चारा न था। तीन वर्ष तक इँगलैंड, फ़्रांस, जापानने रूसके गृहयुद्धमें पैसा और गोला-बारूद तथा कभी-कभी फ़ौजें भी देकर क्रान्तिविरोधियोंकी मदद कीं। उसमें तो वे विफल हुए, लेकिन अब भी सोवियत्-शासन को उन्होंने स्वीकार नहीं किया था, न राजदूतोंका परस्पर परिवर्तन किया था।

यह हालत थी, जब कि सोवियत्-सरकारने देशका उद्योगीकरण आरंभ किया।

उसके पास लकड़ीका अटूट् खजाना था। उसके पास बाकूका तेल

और पेट्रोल था। अपना पेट काटकर वह कुछ गेहूँ भी बचा सकते थे। ये ही तीन चीजें थीं, जिनकी मददसे सोवियत्के कर्णधारोंने देशमें नये नये-कल-कारखानोंको स्थापित करना शुरू किया। वह उन चीज़ोंको जर्मनी, अमेरिका जैसे देशोंके पास भेजते और बदलकर नई मशीनें खरीदते थे। जैसे गाँवोंमें किसान जौ-गेहूँ देकर साग-भाजी बेचनेवालों या छोटे दूकानदारोंसे चीजें बदलते हैं, ठीक इसी तरह यह काम जारी हुआ। न्यूयार्कमें प्रासादोंका एक बड़ा भारी मुहल्ला जारकी सम्पत्ति थी। अमेरिकावालोंने उसे अपने क़र्ज़में कुर्क कर लिया। बाज़ारमें एक पैसेकी भी साख न रहनेसे व्यापारीको जैसी दिक्कतें पड़ती हैं, सोवियत्-सरकारको भी वैसी ही दिक्कतें उठानी पड़ीं।

उन्होंने बड़े उत्साह, बड़े त्याग और बड़ी होशियारीके साथ अपना काम किया। १९२० तक ज़ारशाही रूसी साम्राज्यका बहुत सा हिस्सा सोवियत्-शासनके हाथमें आ गया था। लेकिन काकेशस्-और दूसरे कुछ भागोंमें अब क्रान्ति-विरोधियोंका कब्ज़ा था। लेनिन्ने इस अवस्थामें भी उद्योग-धंधा, कल-कारखाने और सोवियत्के उद्योगको अपने पाँवपर खड़ा करनेकी कोशिश की। व्यापार, व्यक्तियोंके हाथसे राष्ट्रके हाथमें आ गया। मकान आदिके स्वामित्वमें भी कितनी ही दूर तक समाजवादकी स्थापना हो चुकी थी, लेकिन मुल्कका आर्थिक ढाँचा इतना खराब हो गया था, कि लेनिन्को अपनी समाजवादी नीतिको कुछ ढीला करना पड़ा। और नवीन आर्थिक नीति (न-आ-नी) का निश्चय करना पड़ा, जिसमें कितने ही क्षेत्रोंमें जहाँ समाजवाद आगे बढ़ चुका था, वहाँसे उसे पीछे हटना पड़ा। लेनिन्ने कहा—न-आ-नी द्वारा पीछे हटना वस्तुतः पीछे जानेके लिए नहीं है; बल्कि सारी शक्ति लगाकर और आगे कूदनेके लिए। न-आ-नीको देखकर पूँजीवादी घरोंमें घीके चिराग़ बलने लगे। उन्होंने समझा, रूसमें समाजवादका तजर्बा नाकामयाब साबित हुआ।

(२) स्तालिनपथ—न-आ-नीको उद्घोषित किये दो वर्ष भी नहीं हुए

थे, कि २२ जनवरी १९२४को लेनिन्का देहान्त हो गया। देशका उद्योग-धंधा अभी उस अवस्थासे भी बहुत पीछे था, जहाँ कि ज़ारशाही रूस १९१३ ई०में था। पार्टी और देशका नेतृत्व जनताके सबसे नज़दीक और सबसे अधिक प्रिय स्तालिन्के सिरपर आया। उसने देखा, कि देशका कल्याण उद्योग-धंधोंको आगे बढ़ाये बिना नहीं हो सकता। कल-कारखानोंको बिना बढ़ाये और मज़बूत किये समाजवादकी नींव देशमें दृढ़ नहीं हो सकती। न-आ-नीने हमें थोड़ा सा साँस लेनेका मौक़ा दिया है। किंतु, अगर वह देर तक रह गई, तो समाजवादको बहुत नुकसान होगा।

उस वक्त सोवियत्में तीन दल थे। बुखारिन्के नेतृत्वमें नरम दल कह रहा था—हमने बहुत जल्दी की है, इस तरह देशको शीघ्र बदलनेमें बहुत हानि होनेकी सम्भावना है। लोग हर रंज़की कठिनाइयोंको ज्यादा दिनों तक बर्दाश्त नहीं करेंगे। अच्छा यही है कि रेलों, जहाज़ों, बड़े बड़े कारखानों आदिको समाजके हाथमें रखकर बाक़ी व्यक्तियोंके हाथमें छोड़ देना चाहिए; और समझा बुझाकर लोगोंको समाजवादके लिए तैयार करना चाहिए।

स्तालिन्—जो पार्टीके बहुमतका अगुवा था—का कहना था: हमारी गति तीव्र होनी चाहिए। रूसमें शीघ्रसे शीघ्र हमें समाजवादकी नींव दृढ़ कर देनी चाहिए; और इसके लिए संसार भरमें साम्यवादी क्रान्तिके लिए प्रयत्न और प्रतीक्षाकी जगह यही अच्छा है, कि हम अपने देशको उद्योग-प्रधान करके पक्का समाजवादी बना दें।

गर्मदलीय कहे जानेवाले त्रोत्स्की और उसके अनुयायी कहते थे—समाजवाद सिर्फ़ एक मुल्कमें स्थापित नहीं हो सकता। उसके लिए सारे संसारमें समाजवादी क्रान्ति होनी चाहिए। इसलिए हमारी शक्तिका सबसे अधिक अंश संसारमें जल्दीसे जल्दी क्रान्ति करानेमें खर्च होना चाहिए। देशमें उद्योग-धंधे बढ़ें, लेकिन प्रधानता हमें संसार-व्यापी क्रान्ति-

को ही देनी चाहिए; और उसीके लिए अपने श्रम, समय और धनका अधिक व्यय करना चाहिए।

स्तालिन् परिस्थितिको बड़ी पैनी दृष्टिसे देख रहा था। वह समझता था, कि पूँजीवादी देश चार वर्ष के महायुद्ध के कारण थक गये हैं। अपनी आर्थिक और सामरिक शक्तिको फिरसे मज़बूत करनेके लिए उन्हें कुछ समय चाहिए। संसार-व्यापी क्रान्ति इतनी सरल नहीं है कि रूस अपनी शक्तिसे उसे सफल कर दे। क्रान्तिकी सफलता हर एक देशमें अधिकतर निर्भर करती है वहाँके लोगोंके ऊपर। फिर उस क्रान्तिके ऊपर भरोसा करके अपनी गतिको धीमी कर देना बुद्धिमत्ताका काम नहीं होगा। हमारा कर्तव्य है, अपने देशका उद्योगीकरण कर समाजवादको मज़बूत करना।

दाहने और बाएँ दोनों ओरसे विरोधोंके रहते स्तालिन्ने १९२४ के आरम्भसे देशके कल-कारखानोंको बढ़ानेका काम शुरू किया। रूसकी जनता और साम्यवादी दल उसके साथ था। पूँजी पासमें न थी, उधार भी मिलनेवाला न था, लेकिन ३२ करोड़ हाथ काम करनेके लिए तैयार थे। धरतीके भीतर अपरिमित प्राकृतिक और खनिज सम्पत्ति मौजूद थी। स्तालिन्ने कमकरोंके दिलमें नव-निर्माणके लिए उत्साह फूँका और पेट्रोल, गेहूँ, और लकड़ीसे बदलकर आई मशीनोंके द्वारा पुराने कारखानोंको फिरसे खड़ा करने, नष्ट और परित्यक्त रेल-लाइनोंके फिरसे चलनेका काम आरम्भ हुआ। तीन वर्ष बीतते बीतते १९२७ में सोवियत्का उद्योग धंधा वहाँ पहुँच गया, जहाँ कि महायुद्धसे पहले (१९१३) वह था।

जैसी बे-सरो-सामानीसे काम शुरू किया गया था, और दृढ़ता, त्याग और लगनके कारण जितनी सफलता इन तीनों वर्षोंमें हुई, उससे स्तालिन् और साम्यवादी दलका उत्साह और बढ़ा। अब तक छिटफुट कारखानोंको खड़ा करने या सुधारनेका काम हुआ था। स्तालिन्ने

सोचा, छिटफुट काम करनेकी जगह अच्छा होगा कि सारे देशकी आवश्यकताओं और संभावनाओंको देखकर उद्योगीकरणकी देश-व्यापी योजना तैयार की जाय; और देश-व्यापी उत्साहके साथ उसे सफल बनाया जाय। उसने देखा, कि हमारा देश उन उद्योगोंमें बहुत पिछड़ा हुआ है, जो कि सभी उद्योगोंकी जड़ है। उदाहरणार्थ—सोवियत्, हवाई जहाज़ोंको खुद नहीं बना सकती थी। मोटरें, लारियाँ, रेलें, इंजन और कपड़े आदि तैयार करने वाली मशीनोंके बनानेवाली मशीनें उसे बाहरसे मँगानी पड़ती हैं। सोवियत् देश चारों ओरसे पूँजीवादी देशोंसे घिरा हुआ है। ये देश जानते हैं। कि अगर सोवियत् दूसरे देशोंमें क्रान्ति मचानेका खयाल छोड़ भी दे, तो भी यदि अपने देशमें सफलता-पूर्वक लोगोंको सुख और सन्तोषका जीवन देनेमें सफल हुई, तो इसका फल उनके देशके श्रमजीवियोंपर जो पड़ेगा, वह पूँजीवादी शासनके लिए सबसे अधिक खतरनाक साबित होगा। निश्चय ही पूँजीवादी ज्यादा दिन तक सोवियत्-शक्तिको उन्नतिके पथपर अग्रसर होते या देर तक तमाशा नहीं देख सकते। यदि आगे चलकर सोवियत्को अपने शत्रुओंसे लड़ना पड़ा, और उस वक्त पूँजीवादी देशोंने युद्धकी आवश्यक सामग्रियों—हवाई जहाज़, टैंक, मोटर आदि—को देना बन्द कर दिया, तो सोवियत्का गला घुट जायगा।

इन विचारों और इन परिस्थितियोंमें प्रथम पंच-वार्षिक योजनाका जन्म हुआ।

दो पंचवार्षिक योजनाएँ सफलता-पूर्वक समाप्त हो चुकी हैं। तीसरी पंच-वार्षिक योजना १९३८से आरम्भ हुई है। इन योजनाओंके बारेमें हमने अन्यत्र लिखा है। इसलिए उसे यहाँ दोहरानेकी ज़रूरत नहीं। इन पंचवार्षिक योजनाओंने सोवियत् जनताके जीवनमें उससे कम परिवर्तन नहीं किया है, जैसा कि क्रान्तिके कारण हुआ।

सोवियत्की आर्थिक नीति समाजवादके आधार पर है। वहाँ मनुष्य-

का श्रम असल चीज है। चीजोंकी उपजमें श्रम ही सब कुछ करता है। नफेका खयाल आते ही उपज विषके रूपमें परिणत हो जाती है। मशीनें थोड़े समय और थोड़े परिश्रममें मनुष्य-जीवनकी उपयोगी चीजें बहुत परिमाणमें दे सकती हैं। इससे तो मनुष्यका जीवन अधिक सुखमय होना चाहिए; लेकिन दुनियामें हम देखते क्या हैं? एक पुतलीघरका कर्घा तैयार होता है और ५० जुलाहे भूखों मरने लगते हैं। एक चावलकी मिल तैयार होती है, और हज़ारों चावल कूटकर जीनेवाली औरतोंको फ़ाका छोड़कर कोई रास्ता नहीं रह जाता। एक टैक्सी या लारी आती है, तो सैकड़ों एक्के-ताँगेवाले बेकार हो जाते हैं। कुछ लोग इतनी बेकारियों, इतनी भुखमरियोंको देखकर सारा दोष मशीनके ऊपर मढ़ देते हैं, और कहने लगते हैं—मशीन हीको संसारसे विदा कर देना चाहिये। वे लोग उसी नादान बन्दरकी तरह हैं, जो मक्खी उड़ानेके लिए नाक काट बैठा। समाजवाद बतलाता है, मशीन ख़राब चीज़ नहीं है, खराब है नफेका खयाल। यदि मशीन व्यक्तिगत नफ़ेके खयाल से अलग करके समाजकी आवश्यकताओंकी पूर्तिके लिये काममें लाई जाय, तो ये सारे दोष उत्पन्न ही न होंगे। कपड़ेकी मशीन इस लिए होनी चाहिये कि सारी जनताको पर्याप्त परिमाणमें कपड़ा मुहय्या करे। अगर बीस जुलाहोंके कामको मशीनके ज़रिये दो आदमी कर सकते हैं, तो १८ आदमियोंको बेकार डालनेकी जगह यह अच्छा है, कि उस कामके घंटेको बाँटकर हर एकको ५४-५४ मिनटका काम दिया जाय और फ़ुर्सतके वक़्तको खेल, कूद, मनोरञ्जनमें बितानेके लिए सबको मौक़ा दिया जाय। आज मशीनें बेकारीका कारण बन रही हैं। नफ़ेका खयाल छोड़ देनेपर वह मनुष्यको नून-तेल, लकड़ीकी फ़िक्रसे आसानीसे मुक्त-कर उसके जीवनको अधिक संस्कृत, अधिक आनन्दित और अधिक निश्चिन्त बना सकती हैं।

पूँजीवादी देशोंमें जहाँ मशीनें नफेके लिए इस्तेमाल की जाती हैं,

क्या हालत है ? हर एक अपने मालको बेचनेके लिए बाज़ार ढूँढ़ता है। इसीलिए दूसरे मुल्कोंको परतंत्र बनाता है। फिर दूसरा पूँजीवादी देश बाज़ार ढूँढ़नेके लिए संसारमें निकलता है। वह देखता है, वह पिछड़ कर आया। तब पहलेके दखलकारोंको वह बेदखल करनेकी सोचता है। और यह है भयंकर युद्धोंका कारण।

एक आदमी कारखाना खोलता है, उसको नफ़ा होता है। पड़ोसी को भी उसे देखकर कारखाना खोलनेका लोभ होता है। दोनों माल तैयार करते हैं। गाहक उनके नपे-तुले हैं। इधर मशीनोंमें नये नये सुधार होते हैं जिससे मालकी उपज और भी बढ़ जाती है। माल-गोदामोंमें मालके भर जाने पर कारखानेवाले क़ीमत घटानेमें एक दूसरेसे बाज़ी मारना चाहते हैं; तो भी ग्राहकोंकी आवश्यकता या सामर्थ्यसे अधिक माल रखा हुआ है। अब मालकी क़ीमत भयंकर तौरसे गिर जाती है। संसारमें मन्दी छा जाती है। हज़ारों करोड़पतियोंके दिवाले निकलते हैं। पैसोंकी महँगीके कारण किसानोंका ख़ून-पसीने एक किया हुआ गेहूँका भाव भी गिर जाता है। झोपड़ीसे लेकर महल तक हाहाकार मच जाता है। अब कारखानेवाले छ दिनकी जगह तीन दिन काम कराते हैं। छ हज़ार मज़दूरोंमेंसे तीन हज़ारको जवाब दे देते हैं। दिवालेसे कुछ बच जाते हैं। अब मालकी उपजमें बहुत कमी कर देनेसे गोदाममें भरा हुआ माल धीरे धीरे खपने लगा। उसके खतम होने पर बाज़ारमें फिर मालकी माँग बढ़ी। ३००० से फिर ५००० मज़दूर किये गये। तीन दिनकी जगह फिर हफ्तेमें छ: दिन काम होने लगा। कुछ दिन तक तो माँगने माल खींचा, लेकिन उपजकी चाल तेज़ है। ८-९ वर्ष बीते। फिर गोदामोंमें माल भर गया, फिर दर गिरानेमें कारखानेवाले एक दूसरेका गला काटने लगे। फिर मन्दी, फिर सत्यानाश!

समाजवादी अर्थ-नीतिमें मन्दीका डर नहीं। क्योंकि वहाँ चीज़ें नफ़ेके

लिए नहीं पैदा की जातीं; और इसीलिए बाज़ारोंकी तलाशमें दूसरोंसे लड़नेकी भी आवश्यकता नहीं।

* * * * * *

(३) मंदीके समय

१९२९में पूँजीवादियोंके प्रतापसे भयंकर मन्दी आई। तीन चार साल तक उसकी भयंकरता बढ़ती गई। उसके बाद बाज़ारमें चीज़ोंकी कुछ माँग बढ़ी, दाम बढ़ा और कारखानेवाले भविष्यको कुछ आशापूर्ण दृष्टि से देखने लगे। लेकिन १९३७का अन्त भी नहीं होने पाया कि फिर मन्दीके काले बादल पूँजीवादी देशों पर दौड़ने लगे। युक्त राष्ट्र अमेरिका संसारका सबसे बड़ा पूँजीपति देश है। १९३७की अंतिम तिमाहीसे वहाँ मन्दीके पूर्व-लक्षण दिखलाई देने लगे। कारखानेवाले बहुतसे मज़दूरोंको जवाब देने लगे। कोयला, तेल, लोहा आदि सभी चीज़ोंकी उपजको कामके दिनोंऔर हाथोंको घटा कर कम करने लगे। दिसम्बर (१९३७) के आरम्भमें वहाँके लोहे के कारखाने अपनी सामर्थ्यका २७·५ सैकड़ा ही काम करते थे। एक साल पहले वे ही कारखाने ७४ सैकड़ा काम करते थे। कपड़ेके कारखानेवालोंने २५ सैकड़ा उपज कम करनेका पिछले दिसम्बरमें ही निश्चय कर लिया। उसी समय नकली रेशमके कारखानोंने अपनी उपजको ८५ सैकड़ासे ६५ सैकड़ा कर देना तय कर लिया।

सोवियत्के उद्योग-धंधेसे मुक़ाबला करनेपर मालूम होगा कि वहाँ उपजके घटानेकी कौन कहे, वह बढ़ती ही जा रही है। पिछले सालकी अपेक्षा १९३६में कारखानोंने २४ सैकड़ा माल ज्यादा तैयार किया। १९३७में यह और आगे बढ़ा और १९३७की अपेक्षा इस साल (१९३८) १५·३ सैकड़ा बढ़ानेकी योजना है।

* * *

(४) क० कारखोक—

सोवियत्‌की औद्योगिक उन्नतिके दिग्दर्शनके लिए उसके कुछ कारखानोंसे हम पाठकोंका परिचय कराते हैं—

(क) मारीइन्स्क-सेलूलाइड कागज़-कारखाना—

मारीइन्स्कमें सेलूलाइड और कागज़की मिलोंके साथ साथ बिजली का पावर-हाउस भी है। पावर-हाउसमें १२,००० किलोवाटकी ताक़त है। कागज़की मिल २८,००० टन सालाना कागज़ देगी। ये कारखाने इसी जनवरी महीनेमें तैयार हुए हैं।

(ख) लाल-तीतन-रबर-फैक्टरी मास्को—पचास साल पहले १८८७में पहले पहल यह कारखाना बना था। तबसे इन ५० वर्षोंमें कितना भारी परिवर्तन हो गया है?

१९३७में इस फैक्टरीने १४ करोड़ ७ लाख ७ हजार रूबल (प्राय साढ़े छै करोड़ रुपये)का माल तैयार किया। इस साल अपने हिस्सेकी योजनाको १०५·७६ सैकड़ा पूरा किया। उसने ३ करोड़ १६ लाख जोड़े रबरके जूते और ५ लाख ४५ हजार दस्ताने बनाये। १९३६से मुक़ाबला करनेपर १९३७में ३६ सैकड़ा माल अधिक तैयार हुआ।

१८८७में जब यह कारखाना खोला गया था, तब वह छोटी सी दस्तकारीकी दूकान थी; जिसमें ६० मज़दूर काम करते थे। आज इसमें काम करनेवाले लोगोंकी संख्ता १२ हज़ार है। १८९१में हर रोज ३० जोड़े रबरके जूते यहाँ बनते थे। उस समय कमकरोंको साढ़े ग्यारह घंटा काम करना पड़ता था और तनख्वाह बहुत कम थी। आठ और दस वर्षके लड़के इसमें पीसे जाते थे। आज कोई लड़का काम करनेवाला नहीं है। किसी कमकरको सात घंटासे अधिक काम नहीं करना पड़ता। हाथसे करनेका काम भी बहुत कुछ मशीनसे किया जाता है।

लाल-तीतन्‌ने १९३६से नकली रबरका इस्तेमाल शुरू किया है; और मशीनसे जूतेका ढालना और फिर दबाकर उसमें सीवन आदि पैदा कर देना उसी मालसे शुरू हुआ है। पहले इस कारखानेमें असली रबर

इस्तेमाल होता था। सोवियत् देशमें कोई भी स्थान इतना गर्म नहीं है, जहाँ रबरका वृक्ष लग सके, इसी लिए बाहरसे माल मँगानेको कम करने तथा स्वावलंबी बनानेके लिए वहाँ वैज्ञानिक नक़ली रबरका व्यवहार बहुत अधिक किया जाता है। लाल-तीतन् अब सिर्फ २० सैकड़ा ही विदेशी रबर खर्च करता है।

स्तखानोफ् आन्दोलनने यहाँकी जाँगरकी उपज-शक्तिमें बहुत बढ़ा दी है। कमकरोंमें ७० सैकड़ा तूफ़ानी कमकर और स्तखानोवी हैं।

पिछली दो पंचवार्षिक योजनाओंने जहाँ कारखानेको बहुत आगे बढ़ाया है, वहाँ उसने बहुतसे कमकरोंको ऊँचे अधिकारोंपर पहुँचाया है। ग्यारह साल पहले स्त्रोकिना प्रयोगशालामें एक साधारण कमकर थी। छुट्टीके समयमें उसने पढ़ा। कालेजसे ग्रेजुएट हुई और अब रबर जोड़नेके विभागकी अध्यक्ष है। नज़रोवा १९२६में इस कारखानेमें आई। कारखानेसे सम्बद्ध विद्यालयमें खाली समयमें उसने पढ़ा, फिर कारखानेने उसे विश्वविद्यालयमें भेज दिया। वहाँसे इंजीनियरीकी डिग्री लेकर वह भी अब एक अध्यक्ष है।

कारखानेके कमकरोंके लिये कई संस्थाएँ हैं। एक टेकनीशियन (यंत्रशिल्पी) भवन, दो क्लब-घर, एक कमकर-तैयारी-स्कूल, एक साधारण शिक्षण और टेकनिकल स्कूल, एक विदेशी-भाषा-पाठशाला, दो पुस्तकालय, नौ किन्डरगार्टन और बहुत सी दूसरी संगीत, नाट्यशाला आदि संस्थाएँ हैं। इसके हज़ारों कमकर अपनी योग्यता बढ़ानेके लिए छुट्टीके वक़्त पढ़ते हैं।

१९३८से यह कारखाना सिर्फ नकली रबर इस्तेमाल करेगा। इस सालकी उपजको पिछले सालसे २७ सैकड़ा आगे बढ़ाना है।

* * *

(ग) ज़ापो रोज्ये-फौलाद्-कारखाना—उक्रइनमें यूरोपका यह सबसे बड़ा लोहेका भट्ठा है। पिछले जनवरी (१९३८) महीनेसे इसमें काम

शुरू हुआ है। अब भी कारखानेका कुछ हिस्सा पूरा तय्यार नहीं है। उसके निर्माणमें २० हज़ार कमकर लगे हुए हैं।

यह एक भट्ठा प्रति दिन १६ हज़ार टन लोहा तैयार करेगा, जिसे कि क्रान्तिके पहलेवाले २० भट्ठे तैयार करते थे। यह एक नये प्रकारका धौंकनेवाला भट्ठा है; १३०० घन मीटरकी गुंजाइश है।

१६३१में जो भट्ठे बनाये गये थे, उनका परिमाण ६३० घन मीटर था। इस भट्ठेकी नई किस्मके चौदह भट्ठे स०स०स०र०में तैयार किये गये हैं। इन भट्ठोंके ज़रियेसे स०स०स०र०ने संसारमें लोहा पैदा करनेके परिमाणके नये रेकार्ड कायम किये हैं। इनके सफलतापूर्वक काम करनेमें जर्मनी और अमेरिकाके धातु-शास्त्रियोंकी इस बातको झूठा साबित कर दिया, कि भट्ठोंके आकारको बहुत अधिक बढ़ाना खतरनाक और हानिकारक है। अकदमिक (एकेडेमीशियन) म० अ० पावलोफ़ने मग्नीतोगोर्स्कके धौंकू भट्ठोंपर अन्वेषण किये हैं। उसने उक्त सम्मतिको झूठा साबित कर दिया है। असलमें भट्ठोंके आकारको बहुत बढ़ाना पूँजीवादी देशोंके लिए दूसरे कारणसे ठीक नहीं है। वहाँके बनियोंके पास सोवियत्के जितनी मोटी थैली नहीं है।

पावलोफ़की वैज्ञानिक खोजें बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। उसीकी खोजके आधारपर सोवियत् इंजीनियरोंने इतना साहस किया और ऐसा धौंकू भट्ठा तैयार किया, जो आज तकके बड़ेसे बड़े भट्ठेसे ड्योढ़ा है।

जनवरीसे जापोरोज्स्ताल (यही इस कारखानेका नाम है) भट्ठेने काम शुरू किया है। इसके मशीन और उपजके और तरीकेमें नयेसे नये आविष्कारोंको बर्ता गया है। इसमें यह यूरोपके भट्ठोंमें ही श्रेष्ठ नहीं है, बल्कि अमेरिकाके अच्छेसे अच्छे भट्ठे भी इसका मुकाबला नहीं कर सकते। इस अद्वितीय भट्ठेमें छोटेसे छोटा काम भी मशीनसे लिया जाता है! इसे हर मिनट ४१०० घन मीटर हवा २·५ हवाई दबाव-

के साथ चाहिए । इतनी हवा भट्ठेमें डालनेके लिए १२००० अश्वशक्ति एक टर्बाइनकी है ।

सभी मशीन और बिजलीकी कारीगरी संबंधी सामग्री, सभी धातुओं-की बनावट तथा नापने, नियमन करने आदिके पुर्जे, सभी अग्निसे न जलनेवाले पदार्थ सोवियत्-भूमिमें सोवियत्के कारखानोंमें, और सोवियत्-के कच्चे मालसे बने हैं । इस भट्ठेका उद्घाटन सोवियत्कारीगरीकी एक बड़ी विजय है ।

जारोज्स्ताल्के फ़ौलादी चद्दर बनानेके कारखानेमें भी बड़े जोरसे काम हो रहा है । परीक्षा हो रही है । परीक्षाके समाप्त होनेके बाद संसारका सबसे बड़ा लोह-चादर बनानेवाला कारखाना काम शुरू करेगा । इस कारखानेकी चिपटी करनेकी शक्तिशाली मशीन (जो कि युरोपमें सिर्फ एक और अमेरिकामें वैसी दो हैं) प्रति वर्ष २० लाख टन फ़ौलादकी ईटोंको चिपटी किया करेगी । बड़े कारखानेकी जो दूसरी शाखा बन रही है, वह है एक दबानेवाली मशीन । जिसमें मध्यम आकारका फ़ौलाद तैयार किया जायगा । फ़ौलादकी पतली चद्दर बनानेवाली मशीन तथा ठण्डे फ़ौलादको दबानेवाली मिल आदि भी करीब करीब तैयार हैं । चद्दर बनानेवाली शाखा प्रतिवर्ष तेरह लाख टन फ़ौलादी चद्दर बनाया करेगी ; इनमें नौ लाख टन बहुत ऊँचे दर्जेके फ़ौलाद की होंगी । यह शाखा कारखाना एक मीलसे ज्यादा लम्बा है । इसकी बिजलीकी मोटर पचास हजार अश्वशक्तिसे ज्यादा ताकतकी है । यह प्रति मिनट ३ टन फ़ौलाद तैयार करेगी । फ़ौलादकी इतनी अधिकतासे उत्पत्ति मोटर और हवाई जहाजके उद्योगको और आगे बढ़ावेगी ।

पतली चद्दर बनानेवाली मिल अपने सहायक यन्त्रोंके साथ इसी साल काम करने लगेगी । यह भट्ठेके चलनेका इन्तजार कर रही है । भट्ठेके हज़ारों टन लोहे, कोयले और दूसरे पदार्थोंके साथ दहकते हुए

भट्ठेसे जो गैसें निकलेंगी, वही इस चद्दर बनानेवाली मिलको संचालित करेंगी। उसके लिए अलग ईंधनकी ज़रूरत न होगी। इस प्रकार इस बड़े कारखानेमें यह ध्यान रखा गया है कि कोई गैस, कोई पुर्ज़ा कोई लोहा बेकार न जाने पाये। दूसरी बड़ी शाखा इस कारखानेकी है, मिगेके सिद्धान्तके अनुसार बिजलीके कितने ही बहुत भारी भट्ठे लोहेकी मिश्रित धातुओंको तैयार करेंगी। ज़ापोरोज़्स्ताल् निस्सन्देह एक साधारण कारखाना है। यहाँ पुर्ज़ोंकी फ़ौलादी वर्कशापमें बहुत भारी ताकत वाले बिजलीके भट्ठे हैं, जिनके सब काम मशीनसे होते हैं। कार्बोन् फ़ौलाद और फ़ौलाद मिश्रित धातुओं—जो कि पुरज़ों और औज़ारोंके बनानेमें काम आती हैं—के बनानेका यूरोपमें यह सबसे बड़ा केन्द्र है। फ़ौलाद-मिश्रित धातु-निर्माण-विभाग तो ख़ुद एक बड़ा भारी कारखाना है; और यूरोपमें इतना बड़ा कारखाना दूसरा कोई नहीं है। नया भट्ठा, पतली फ़ौलादी चद्दर कारखानेसे मिलकर ज़ाकोरोज़्स्तालको उच्चकोटिके फौलाद पैदा करनेवाले दुनियाके कारखानोंमें अव्वल स्थान दिलावेगा।

❀ ❀

(घ) किरोफ़्-फ़ैक्टरी (लेनिन्ग्राद्)—६ जनवरी सन् १९१८में स्तालिन्की अध्यक्षतामें जनता-कमीसरोंकी कौंसिलने प्रस्ताव स्वीकृत किया कि पुतिलोफ़् फ़ैक्टरीको राष्ट्रीय बना दिया जाय। उसमें कहा गया था—"कार्पोरेशनकी सभी सम्पत्तिके साथ पुतिलोफ़्-फ़ैक्टरी रूसी प्रजातन्त्रकी मिलकियत होती है।" स० म० किरोफ़्के शब्दोंमें "पितरबुर्गके कमकरोंकी यशस्वी क्रान्तिकारिणी परम्परा ही लेनिन्ग्राद् में पुरानी चीज़ रह गई है। बाकी सभी चीज़ें नई हो गई हैं।" १२८ साल पहले जहाँ पूँजीवादी पुतिलोफ़् फ़ैक्टरी खड़ी थी, वहाँ अब भीमकाय किरोफ़् प्लान्ट (कारख़ाना) खड़ा है। १९३७में इस कारखानेने १९१३की अपेक्षा सोलह गुना माल अधिक तैयार किया था।

पुतिलोफ़् फ़ैक्टरीको क्रान्तिके आरम्भिक दिनोंमें राष्ट्रीय बनाना कोई आकस्मिक बात न थी। इस कारखानेके कमकर बहुत पहलेसे क्रान्तिकारी होते आये थे। पहली हड़ताल यहाँ १८७१में हुई थी; और मार्क्सवादियोंका संगठन १८८०में आरम्भ हुआ था। १८६४में यहाँके कमकरोंने 'श्रमिक-श्रेणी-स्वतन्त्रता-युद्ध-संघ' स्थापित किया। लेनिन्ने पुतिलोफ़्के साम्यवादी संगठनका पथ-प्रदर्शन किया था। जनवरी १६०५ की क्रान्ति इसी फ़ैक्टरीसे आरम्भ हुई थी। १६१२—१४में यहाँके कमकरोंने हड़तालोंपर हड़तालें कीं। फरवरी १६१७की घटना—जिसने ज़ारको उसके ताजसे वंचित किया—पुतिलोफ़्के श्रमिकोंकी हड़तालसे आरम्भ हुई थी। लेनिन्के आगमनके बाद यह फ़ैक्टरी बोल्शेविक केन्द्र बन गई।

यहाँके कमकर सबसे पहले थे, जिन्होंने पूँजीपतियोंके हाथसे फ़ैक्टरी-को छीन लिया। पुतिलोफ़्के दस हज़ारसे ज्यादा कमकर गृहयुद्धमें कोल्चक्-यूदेनिच् और दूसरे क्रान्ति-विरोधियोंसे लड़े। लेनिन्के नामसे संगठित सशस्त्र-रेलवे-ट्रेनमें भरती हो ग़ज़ाके नायकत्वमें सभी युद्ध क्षेत्रोंमें शामिल हुए—उसमें इस फैक्टरीके मज़दूर ज्यादा थे। इनमेंसे सैकड़ों वीरकी तरह युद्धक्षेत्रमें काम आये। कितने ही सोवियत् नेताओंको तैयार करनेका श्रेय इस फ़ैक्टरीको है। उनमें म० ई० कालेनिन् (सोवियत् राष्ट्रपति) और न० ई० येज़ोफ़् (गृह-सचिव) भी हैं।

जिस वक्त फैक्टरीको राष्ट्रीय बनाया गया, उस वक्त यह मुफ़्तकी बला थी। लड़ाईके ज़मानेमें साधारण समयसे तिगुने और चौगुने मज़दूर कामपर लगाये गये थे। मशीन और पुर्जे घिस और टूट गये थे। करेन्स्कीके जेनरलोंने कमकरोंको मज़ा चखानेके लिए और भी इस फैक्टरीको खराब कर दिया। कोयला और धातु क़रीब क़रीब खतम हो चुकी थी। कारबार अव्यवस्थित हो गया था। बीसियों रेलवे इंजन

हातेमें बेकार होकर पड़े हुए थे। खुले भट्ठे और दबानेकी मिल नष्ट हो चुकी थीं। केन्द्रीय गर्म करनेका प्रबन्ध काम नहीं कर रहा था। उसके बदले वर्कशापमें छोटे छोटे चूल्हे थे। कारखानेमें लाई लाइन टूट-टाट गई थी। १२००० के करीब कमकर बेकार हो गये थे।

राष्ट्रीयकरणके बाद पुतिलोफ़्के श्रमिक बड़ी तत्परताके साथ नष्ट प्राय कारखानेको पुनः संगठित करनेमें लग गये। उन्होंने इसके लिए ईंधन और धातु जमा किया। वे शान्तिपूर्वक काम आरम्भ करना चाहते थे। उसी समय गृह-युद्ध आरम्भ हो गया। अधिकांश कमकर युद्धके मैदानकी ओर चले गये। कारखानेके लिए ईंधन और धातु एवं कमकरोंके लिए रोटीके अभावसे फैक्टरीमें कोई कार्य हो नहीं सकता था। जो कमकर पीछे न जा सके थे, विशेषकर पुतिलोफ़्की औरतें भूखी रहनेपर भी छुट्टीके दिनमें बड़े स्वार्थ-त्यागके साथ इंजनों और सशस्त्र ट्रेनोंकी मरम्मत किया करती थीं। जिस वक्त युदेनिच् पेत्रोग्राद्की ओर बढ़ता आ रहा था, उस वक्त वे भूतकी तरह काम करती थीं। जुलाई १६२२ तक कारखाना एक तरह सूना हो गया था। वहाँ सिर्फ १५८८ कमकर और ४२० आफिसमें काम करनेवाले रह गये थे।

१६२०में गृह-युद्ध खतम हुआ, लेकिन पुतिलोफ़्को दो साल और इन्तज़ार करना पड़ा। १६२२के अन्तमें खुले मुँहका भट्ठा पहले पहल चलाया गया। १६२३में पहले पहिल इंजन और गाड़ियाँ बनकर निकलीं।

वोल्खोफ़्के पहले स्टेशनके लिए इस कारखानेने २७० टन फौलाद-का ढाँचा दिया। सोवियत् पुतिलोफ़्-वर्क्सके बने पहले चार ट्रैक्टर १ मई १६२४को लेनिन्ग्राद्के ऊरित्स्की चौकमें प्रदर्शित किये गये थे। आज पुतिलोफ़् ट्रैक्टर-फैक्टरीके एक लाख ट्रैक्टर सोवियत्-संघके कोल्खोज़ोंमें

काम कर रहे हैं। इनमें आधे सुधरे हुए ट्रैक्टर हैं। नये ढंगके सुधरे ट्रैक्टर १९३४से यहाँ बनने लगे।

पहली पंच-वार्षिक योजनामें इस फैक्टरी की उपज चौगुनी हो गई। ५॥ करोड़ रूबल कारखानेके पुनः निर्माणमें खर्च किये गये। ३००० किलोवाटकी ताक़तकी पहली टर्बाइन (जिसके चक्केके पंखोंपर पानी गिरनेसे तेजीसे घूमकर बिजली पैदा करता है) सर्व प्रथम १ मई सन् १९३१को बनी। १९३४के करीब पुतिलोफ़्का नाम बदलकर किरोफ़् हो गया। १९३७में किरोफ़् कारख़ानेसे बनी टर्बाइनें सोवियत्-संघके ११० विद्युत् स्टेशनोंमें बिजली तैयार कर रही थीं।

द्वितीय पंच-वार्षिक योजनाके समय कारखानेका और विस्तार हुआ। सारी प्रथम पंच-वार्षिक योजनामें जितना माल इसने तैयार किया था, उतना १९३७के सिर्फ एक सालमें तैयार किया।

१९२४--२५की अपेक्षा इस कारख़ानेने १९३७में १९ गुना अधिक माल तैयार किया।

कारख़ानेके २७ हज़ार कमकरोंका जीवन एकदम दूसरा हो गया है। पहले कारखानेके आसपास ५९ शराबख़ाने, १२ गिर्जे और बहुत सी सरायें थीं। अब उनकी जगहपर किरोफ़्के कमकरोंके लिए ऊँचे प्रासाद जैसे एपार्टमेंट घर बन गये हैं। बीस स्कूल हैं। लेनिन्ग्राद्का सबसे बड़ा विक्रय-भंडार (डिपार्टमेंट स्टोर) यहीं है। गोर्की सांस्कृतिक-भवनकी विशाल इमारत भी यहींपर है। सिनेमा, थियेटर, बग़ीचे कितने ही हैं। पहलेकी धूल उड़ती कच्ची सड़ककी जगहपर एक विस्तृत पक्की सड़क बनी है।

१९३७में सरकारके ख़र्चसे १९५२ आदमी सेनीटोरियममें भेजे गये; और हजारों अपनी छुट्टीमें काला सागरके तटवर्ती स्वास्थ्यप्रद प्रदेशोंमें स्वास्थ्य सुधारने गये।

१९३७में कमकरोंके ५०० लड़के बालचर-कैम्पमें दूर भेजे गये।

दूसरे लड़कोंने गर्मियोंको विश्राम-गृहों और सेनीटोरियममें बिताया। कारखानेमें बहुतसे बच्चेखाने और किंडरगार्टन हैं। ४५० विद्यार्थियोंके लिए एक कला-विद्यालय है।

सिर्फ कारखानेके ट्रेड यूनियन् (मज़दूर-संघ)ने ही १९३७में २५ लाख रूबल क्लब, शिक्षा, खेल और मनोविनोदपर खर्च किये।

कमकरोंमेंसे काफी संख्या स्वाध्यायमें लगी है। ४०६५ कमकर और आफिस कार्यकर्ता कालेजों, टेकनिकल स्कूलों, कमकर-तैयारी-स्कूलोंमें पढ़ रहे हैं। ६५०० व्यक्ति कम्युनिस्ट पार्टी और तरुण कम्युनिस्ट-संघके स्कूलों और अध्ययन-केन्द्रोंमें राजनैतिक शिक्षा पा रहे हैं। १५०० कमकर सथानोंके स्कूलमें पढ़ते हैं। ६०० मज़दूर-संघके आन्दोलनका अध्ययन करते हैं।

इस साल (१९३८)में कारखानेके राष्ट्रीय होनेका बीसवाँ वार्षिकोत्सव था। इसने कमकरोंमें स्तखानोव-आन्दोलनकी बड़ी लहर पैदा कर दी। प्रति दिन उपजके परिमाणको ऊँचा ऊँचा बढ़ते देखा जा रहा है। कई सौ कमकर स्तखानोवी हैं; और उन्होंने अपने हिस्सेका काम अधिक परिमाणमें पूरा किया। इस प्रकार पुतिलोफ़्की क्रान्तिकारी परंपरा अब भी सजीव रूपमें है।

* * *

(ङ) **दियासलाईके कारखाने**—महायुद्धसे पहले रूसमें ११५ दियासलाई बनानेको छोटी-छोटी फैक्टरियाँ थीं। क्रान्तिके बाद दियासलाईका उद्योग फिरसे संगठित किया गया। सभी काम मशीनसे होने लगा तथा फैक्टरियोंकी संख्या अधिक न रखकर थोड़ी किन्तु बड़ी फैक्टरियाँ कायम की गईं। उदाहरणार्थ—

वर्ष	चलने वाली फैक्टरी	स्वसंचालितमशीन फैक्टरी	उपज (डिबिया)
१९१४	१५५	२	४ अरब ५० करोड़

१९३५	२३	९३	१० अरब ८४ करोड़ २० लाख

१९३५में दियासलाई बनानेमें सोवियत्-संघका नंबर अव्वल रहा, जैसा कि निम्न उल्लेखसे मालूम होगा—

स०स०स०र०	११ अरब (डिबिया)
यु० रा० अमेरिका	८ " "
चीन	६ " "
जापान	४ " "
स्वीडेन	२ " "

विदेशमें दियासलाई भेजनेमें स०स०स०र०का नंबर दूसरा है। अव्वल नंबर है स्वीडेनका।

स०स०स०र०के दियासलाईके कारखाने देशमें चारों ओर फैले हुए हैं। वह बड़ी अच्छी तरह संगठित हैं, और नईसे नई मशीनोंसे सुसज्जित हैं। तीलीके लिए सबसे अच्छी लकड़ी इस्तेमाल की जाती है। वेलोरूसिया, लेनिन्ग्राद् और पश्चिमी रूसमें बड़े-बड़े कारख़ाने हैं।

❀ ❀ ❀

(च) सोवियत् चाय—चायका उद्योग सोवियत्में एक नई चीज़ है। यद्यपि चायकी खेती काकेशस्में ४० वर्ष पहले आरंभ की गई थी। लेकिन १९३०के क़रीब तक २९४५ एकड़ तक ही वह पहुँची थी। वार्षिक उपज ५॥ सौ टन होती थी। तीन छोटी-छोटी फैक्टरियाँ थीं, जिनमें हर एक सौ-सवा सौ टन प्रतिवर्ष चाय तैयार करती थीं।

१९२५के अंतमें 'चाइ गुर्जिया' (जार्जियाकी चाय)के नामसे संस्था संगठित की गई। तबसे चायका उद्योग बड़ी तेज़ीसे आगे बढ़ा। १९३६में जार्जियाकी चाय ९४,२५० एकड़में थी। इनमें ६६,५६० एकड़ कोल्खोज़ने तैयार किये। ७० हज़ारसे ज्यादा किसान-घर चायकी खेतीमें लगे हुए हैं। 'चाइ गुर्जिया' सोवखोज़ (सरकारी खेती) अकेला १८,४७५

एकड़ बग़ीचोंका मालिक है। उसके पास नईसे नई मशीनोंवाली ३२ फैक्टरियाँ हैं। १९३९में इन फैक्टरियोंने १९२॥ करोड़ किलो (सेरसे कुछ अधिक) हरी पत्तियाँ और ४७॥ लाख किलो तैयार की हुई पत्तियाँ बाज़ारमें रखीं।

इस प्रकार १० वर्षोंके भीतर चायके बग़ीचे ३० गुना बढ़ गये हैं और उपज ४० गुना। चायके बारेमें जो वैज्ञानिक खोज सोवियत् विज्ञान-वेत्ताओंने की है, उसके कारण १९३९में उपज १९३२की अपेक्षा ढाई-गुना अधिक बढ़ गई है। किसी किसी जगहपर एक एकड़में ६० मन तक पत्ती निकली है।

यहाँ यह ध्यान देनेकी बात है, कि जिन वर्षोंमें पूँजीवादी देशोंने बाज़ारकी मन्दीसे डरकर अपने अपने यहाँ चायकी उपजको बहुत कम किया है; उसी समय सोवियत्‌ने अपने यहाँ उपजको कई गुना बढ़ाया है।

परिमाणमें ही सोवियत् चाय नहीं बढ़ी, बल्कि गुणमें भी उसने खास स्थान प्राप्त किया है। लन्दनके चायके विशेषज्ञोंने इसे विदेशकी चुनी हुई चायोंके मुक़ाबलेमें रखा है। डाक्टर हेरल्डमान प्रसिद्ध चायके विशेषज्ञ कितनो ही बार जार्जिया आये हैं। और उनकी रायमें जार्जियाकी चाय संसारकी सबसे अच्छी चाय है। वह दार्जिलिंगसे मुक़ाबलाकर सकती है! रसायनिक पदार्थ किस चायमें किस परिमाणमें है, वह यहाँ दिया जाता है—

स्थान		निचोड़	टैनिन्	काफेइन्	नेत्रजन्
दार्जिलिंग	..	४५·७८	१३·७६	३·५६	४·०२
गुर्जी (उच्च)	..	४४·०५	१४·५२	३·००	५·११
चीनी (उच्च)	..	३८·८१	१२·७४	२·९९	४·२६
गुर्जी (मध्यम)	..	३३·७०	१२·१३	२·८३	४·७४
चीनी (मध्यम)	..	३२·७४	११·९७	३·०२	४·२६

१९३७में ३६ फैक्टरियाँ हो गईं और उनसे २ करोड़ ६३ लाख ७१ हज़ार किलो हरी चाय निकली। जिसमें ६३ लाख किलोउच्च प्रकारकी चाय है।

❀ ❀ ❀

(छ) सिनेमा-व्यवसाय—सिनेमा उद्योग सोवियत्में बड़े ज़ोरसे बढ़ा है। यहाँके फ़िल्म ही संसारमें बहुत ऊँचा दर्जा ही नहीं रखते हैं बल्कि उनके तैयार करनेके लिए देशके भिन्न-भिन्न भागोंमें बहुतसे स्टुडियो तैयार हुए हैं, जिनमें, कला, शिक्षा, टेक्निक, सार्वजनिक विज्ञान, समाचार सम्बन्धी फ़िल्म तैयार होते हैं।

१—समाचार सम्बन्धी फ़िल्म मास्को, लेनिन्ग्राद्, रोस्तोफ़, कियेफ् तथा सोवियत्की और और जगहोंपर अवस्थित शाखाओंमें तैयार किये जाते हैं।

२—सोवियत् फ़िल्मको विदेशमें भेजनेके लिए एक अलग संस्था (सोयूज़िन्तोर्गकिनो, मास्को) बनी हुई है। कुछ फ़िल्म स्टुडियोके नाम इस प्रकार हैं—

३—मास्को कला-फ़िल्म (मोस-फ़िल्म)

४—लेनिन्ग्राद् कला-फ़िल्म (लेन्-फ़िल्म)

५—मास्को शिशु-फ़िल्म (सोयुज़-देत्-फ़िल्म)

६—मास्को सजीव कार्टून (सोयेज-मुल्त्-फ़िल्म)

७—यल्ता-कला फिल्म

८—मास्को-दोहरौनी-फैक्टरी

९—लेनिन्ग्राद्-दोहरौनी-फैक्टरी

१०—मास्को वैज्ञानिक शिक्षा-देशरक्षा और टेक्निक् सम्बन्धी फिल्म (मोस्तेच् फिल्म)

११—लेनिन्ग्राद् (लेन्-तिज़्-फिल्म)

१२—नोवो सिबिर्स्क (लेन्-तिज़्-फिल्म)

१३—मास्को लैन्टर्न्स-स्लाइड फैक्टरी

१४—श्वोस्त्का-फिल्म-फैक्टरी

१५—येरेस्लाव्ल्-फिल्म फैक्टरी

१६—लेनिन्ग्राद् रोयन्तगेन् फिल्म फैक्टरी

१७—कज़ान् फोटो रसायन फैक्टरी

१८—लेनिन्ग्राद् फिल्म-यंत्र फैक्टरी (लेन्-फिन्-आर)

१९—ओदेसा फिल्म यंत्र फैक्टरी (किन्-अस)

२०—कुईविशेफ् यंत्र फैक्टरी (किन्-अस)

२१—मास्को किन्-अस० परीक्षण फैक्टरी

२२—मास्को फिल्म फैक्टरी यत्र-उत्पादक वर्कशाप

२३—अखिल संघ-फिल्म-वितरण एजेंसी

२४—अखिल संघ फिल्म उद्योग-योजना-एजेंसी

२५—औद्योगिक गृह-निर्माण ट्रस्ट

२६—कज़ान कम्पनी गृह-निर्माण ट्रस्ट

२७—सोयूज़-किनो-तियात्र एजेंसी (लेनिन्ग्राद् और मास्कोके बहुतसे सिनेमा-घरोंकी संचालिका संस्था)।

२८—अखिल संघ सिनेमा इंस्टीट्यूट (वगइक)

२९—लेनिन्ग्राद् सिनेमा इंजीनियरिंग इंस्टीट्यूट (लइकइ)

३०—सिनेमा फोटोग्राफी रिसर्च इंस्टीट्यूट (नइकफइ)

३१—मास्को-सिनेमा-गृह

३२—लेनिन्ग्राद् सिनेमा-गृह

सोवियत्की भिन्न भिन्न जातियोंके लिए अपनी भाषामें फिल्म बनानेके लिए अलग स्टुडियो हैं। यथा—

१—उक्रइन् फिल्म स्तुदियो (कियेफ़्)

२—बेलोरूसी फिल्म स्तुदियो (मिन्स्क)

३—गुर्जी फिल्म स्तुदियो (त्विलिसि)

४—अर्मनी फिल्म स्तुदियो (येरवान्)

५—आज़ुर्बाइजान् फ़िल्म स्तुदियो (बाकू)
६—उज़बेकस्तान फ़िल्म स्तुदियो (ताशकन्द)
७—तुर्कमानस्तान फ़िल्म स्तुदियो (अश्काबाद)
८—ताजिकिस्तान फ़िल्म स्तुदियो (स्तालिनाबाद)

*** ***

(५) व्यवसाय

(क) **सोवियत् मशीन निर्यात्**—सोवियत्में जब पहले पहल नये कारखाने स्थापित हुए तो पश्चिमी विशेषज्ञ समझते थे, कि रूसी लोग टिकाऊ और बारीक मशीनें नहीं बना सकते। लेकिन क्रान्तिके बाद और खासकर पिछले १० वर्षोंमें उन्होंने बड़ी सफलताके साथ बारीकसे बारीक मशीनें बनाई हैं। तो भी जिन लोगोंको सोवियत् मशीनोंको देखनेका सौभाग्य नहीं हुआ, वह सन्देह हीमें थे। लेकिन अब जब सोवियत् मशीनें बाहरके बाज़ारोंमें आने लगीं, तो लोगोंकी पिछली धारणा दूर हो गई।

२७ देश आजकल सोवियत् मशीनें खरीद रहे हैं। और १२० प्रकारकी मशीनें सोवियत्से बनकर बाहर जाती हैं।

कृषि-संबंधी मशीनोंका विशेष रूपसे निर्यात होता है। १९२४ हीमें सोवियत्की बनी जोतने, सिराने, दाँवनेकी मशीनें ईरानमें पहुँची। उसके बाद तुर्कीमें भी। १९३१से नाना प्रकारकी कृषि-संबंधी मशीनें लिथुआनियाँ आदि बाल्तिक देशों और पीछे हालैंड, डेनमार्क, बेल्जियम, यूनान, फिलिस्तीनमें भी पहुँचीं। १९३७में सोवियत्की कृषि-संबंधी मशीनें रूमानियाँ आदि देशोंने भी लेना शुरू किया। नार्वे, मिस्र और साइप्रस, द्वीपमें भी नमूने पहुँच चुके हैं। मंगोल-जन-प्रजातंत्र, तुआ-जन-प्रजातंत्र और पश्चिमी चीन भी कई वर्षोंसे खेतीकी मशीनें खरीद रहे हैं। १९३७ ई०में २० हज़ार कृषि-संबंधी मशीनें बाहर भेजी गईं। ट्रैक्टर तथा दूसरी मशीनें लत्विया, फिनलैंड, हालैंड, ईरान, तुर्की और यूनानके खेतोंमें चल रही हैं। १९३७में तुर्की और इस्तोनियामें होनेवाली प्रदर्शिनियोंमें

सोवियत् मशीनोंने बड़ी प्रशंसा पाई है। खेतीकी मशीनोंके अतिरिक्त बहुतसे बारीक यंत्र भी पूर्व और पश्चिमके देशोंमें, जिनमें इंगलैंड और हालैंड भी शामिल हैं, भेजे जा रहे हैं। सोवियत्की बनी हुई सिलाईकी मशीन बहुतसे देशोंमें सर्वप्रिय हुई है। ये मशीनें पूर्व हीमें नहीं बल्कि पश्चिमके इङ्गलैंड, फ्रांस जैसे देशोंमें भी जा रही हैं। प्रेसकी मशीनें भी अब सोवियत्से बाहर जानी शुरू हुई हैं।

बिजलीकी छोटी-बड़ी मशीनें, बल्ब आदि भी निर्यातकी चीज़ोंमें हैं। कुइबिशेफ़्का कारख़ाना बाहर भेजनेके लिए १५.से १००० वाट तकके बल्ब तैयार कर रहा है। रेडियो स्टेशनोंके बल्ब, नापके औज़ार भी बाहर जा रहे हैं।

ट्रैक्टर, खुली लारी, स०स०स०र०के निर्यातके विशेष भाग हैं। यह दिलचस्प बात है कि पहला ट्रैक्टर रूसमें विदेशसे आया था। सोवियत् शासनमें भी १९३१ तक बाहरसे ट्रैक्टर मँगाये जाते रहे। १९३२से सोवियत् फैक्टरियोंने बड़े अधिक परिमाणमें ट्रैक्टर बनाने शुरू किये। १९३५के अन्त तक कई विदेशी व्यापारी सोवियत् ट्रैक्टरमें दिलचस्पी लेने लगे। पहला ट्रैक्टर हालैंडमें बिका था। यह खर्कोफ़की ट्रैक्टर फैक्टरीमें बना था। अब सोवियत्के बने ट्रैक्टर एस्थोनिया, लत्विया, रूमानिया, तुर्की, ईरान, अफ़ग़ानिस्तान और मंगोलियामें बड़े जोरसे जा रहे हैं। नार्वे, इंगलैंड, डेनमार्क और ज़ेकोस्लावाकियासे भी नमूनोंकी माँग आई है। १९३६की अपेक्षा १९३७में चौगुने ट्रैक्टर बाहर भेजे गये। सोवियत् लारीकी विदेशोंमें बड़ी माँग है। वह पासके बाल्तिक देशों हीमें नहीं जा रही हैं, बल्कि तुर्की, मंगोलिया, चीन, ईरान, अफ़ग़ानिस्तान, इराक, सिरिया, रूमानिया, हालैंड, और नार्वे तककी सड़कोंमें दौड़ रही हैं। ३ टन वाली लारियोंके बाहर भेजनेमें संसारमें सोवियत्का नम्बर दूसरा है। अव्वल स्थान युक्तराष्ट्र अमेरिकाका है। १९३७के पहले ९ महीनोंमें १९३६के सारे सालकी अपेक्षा १५४ सैकड़ा मोटर और लारियाँ

बाहर गई। मंगोलिया, चीन, और तुआ-जन-प्रजातंत्र सोवियत्से लारियाँ और फ़ायर-इंजन खरीद रहा है। १९३७में पहली बार मास्कोके स्तालिन्-मोटर-कारख़ानेमें बनी ज़इस् १०१ मोटरकार मंगोलिया भेजी गई। इनके बारेमें आस्ट्रिया, जेकोस्लावाकिया, बुल्गारिया और भारतसे भी पूछताछ हुई है।

❀ ❀ ❀

बीमा—बीमा करना सोवियत्-संघमें सरकारके अधीन है। इसके लिए गोसुस्त्राख़ या राज्य-बीमा-विभाग १९२१में स्थापित हुआ। यह, जीवन ही नहीं, बल्कि कोल्खोज़् तथा सरकारी विभागोंकी सम्पत्ति, मकान, माल, फ़सल, पशु आदि सबका बीमा करता है। सारे सोवियत्-संघमें जगह-जगह इसकी शाखायें हैं। ३१ दिसंबर १९३५को इसके पास २८५ करोड़की सम्पत्ति थी, और सालमें प्रीमियम्की आमदनी १ अरब २८ करोड़ ७७ लाख ३० हज़ार रूबल हुई।

स०स०स०र०से बाहर या भीतर जानेवाला सभी माल गोसुस्त्राखके पास बीमा किया जाता है। इंगलैंड, जर्मनी और दूसरे देशोंमें इसके एजेंट रहते हैं। ३१ दिसंबर १९३५का लेखा इस प्रकार है—

पावना	रूबल
नक़द बैंकमें	७५,४६,७२,५४८·४७
माल और लगानी	१,७६,६३,३३,०४४·९७
शेयर	१५,४०,६६१·५०
स्थावर जंगम सम्पत्ति	५८,३४,८९०·०८
क़र्ज़	१२,६८,२५९·६६
क़र्ज़दार	४,२९,१६,११४·६७
अगवड़ खर्च	१८,४६,४७,७३७·५२
शाखाओंमें	९,१५,६२,३६०·९८
	२,८४,८७,७५,६१७·८८

देना	रूबल
पूँजी	१००००००००
संरक्षित	२५००००००
विशेष संरक्षित फंड	६८,१२,२१,३४८·१२
रोकथाम फंड	१४,६०,७६,६४१·२१
आफिस कार्यकर्त्ताओंके लिये फ़ंड ..	२०,१३,६२६·०५
दूसरे फंड	८,३७,७०६·५६
प्रीमियम् संरक्षित	८६,२२,६१,३१२·६६
माँग संरक्षित	१,६३,६६,६४७·६२
क़र्जदार	६४,८३,०६६·११
क़र्जदार खाता	६,३२,५८,५१७·२२
(शाखा) लाभ	७२,७७,२०,७४५·६७
	२,८४,८७,७५,६१७·८८

२. साम्यवादी होड़

समाजवादके सिद्धान्तोंका समझना उन लोगोंके लिए भी आसान नहीं है; जिन लोगोंको कि उससे सबसे ज्यादा फ़ायदा होनेवाला है। अगर कमकर लोग इसको समझते तो इंगलैंड—जहाँ हर एक बालिग़ स्त्री-पुरुषको वोट देनेका अख्तियार है—कभीका समाजवादी हो गया होता और एक एक बार ३०--३० लाख आदमी भूखे न मरते फिरते। सहस्राब्दियोंसे मनुष्यने, कृत्रिम ही सही, ऐसा वातावरण अपने चारों ओर बना रखा है, कि न वह अपनी भलाईको दूर तक समझ सकता है, न साफ़ देख सकता है। खानदान, शादी-ब्याह, जातपाँत लगातार बदलते जा रहे हैं। एक आदमीके ५० वर्षके जीवनमें भी इतना परिवर्तन देखा जाता है, कि यदि वह उसपर विचार करे तो उसे बड़ा आश्चर्य होगा। तो भी उन्हीं क्षणभंगुर सामाजिक नियमोंको प्रलय तक अमर रखनेके यत्नमें मनुष्य अपने वास्तविक हितको भूल जाता है। अपने और अपनी सैकड़ों पीढ़ियोंको नरकका जीवन भले ही बिताना पड़े, लेकिन सामाजिक रूढ़ियोंको तोड़नेका उसमें साहस नहीं। इसीलिए समाजवादके सिद्धान्तोंको माननेमें उसे डर लगता है।

सोवियत्-भूमिमें समाजवादके सिद्धान्तकी विजय ७ नवम्बर १९१७को ही हो गई थी। लेकिन १५ करोड़ जनता उसके जीवन, उसकी सामाजिक रूढ़ियाँ ७ नवम्बरकी आधी रात तक समाजवादके साँचेमें नहीं ढाली जा सकती थीं। इसके लिए उन्हें बड़ी जद्दो-जहद करनी पड़ी। उनका रास्ता नाकके सामने सीधा नहीं; बल्कि नदीके मार्गकी तरह टेढ़ा-मेढ़ा था। नदीको एक बार पूर्वकी तरफ़ जाते देख आदमी सन्तुष्ट हो—'हाँ, यह समुद्रको जायगी', फिर वह उसे उत्तरकी ओर घूमता देखे और

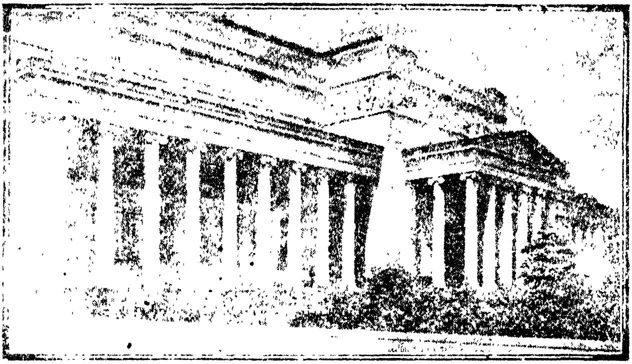
घबड़ा जाय 'यह तो उलटे जा रही है'। नदीकी तात्कालिक गतिको देखकर कम-समझ आदमी भले ही चिन्तामें पड़ जाय लेकिन समझदार जानता है कि पानी हमेशा नीचेकी ओर जाता है। निम्नतम स्थानमें वह ज़रूर जाकर रहेगा। बीचके टेढ़े-मेढ़े रास्तेसे घबड़ानेकी ज़रूरत नहीं। रूसमें समाजवादी क्रान्तिके लिए भी ठीक ऐसी ही बात है। उसे जीवित मनुष्य-समाजसे काम पड़ा था; जिसका मानस-तल धरातलसे भी ज्यादा सम-विषम है। धार्मिक भावनाएँ, सामाजिक रूढ़ियाँ, सिद्धान्तको ठीकसे न समझना भविष्यको शंकित निगाहसे देखना आदि कारणोंसे क्रान्तिका रास्ता टेढ़ा-मेढ़ा ज़रूर रहा है। लेकिन उसका रुख हमेशा समाजवादकी ओर—सम्पत्ति व्यक्तिकी नहीं, समाजकी, उपजके साधनोंका मालिक समाज, व्यक्ति नहीं, हर एक व्यक्तिको आगे बढ़नेके लिए बराबरका अवसर—रहा है। पहले शासनको मुट्ठी भर आदमियोंके हाथसे निकालकर किसानों और कमकरोंके हाथमें किया गया, फिर कल-कारखानोंको समाजकी सम्पत्ति बनाया गया। फिर खेतीका समाजीकरण हुआ।

सम्पत्तिका तो इस प्रकार समाजीकरण हुआ, लेकिन सम्पत्ति और श्रम दोनों मिलकर मनुष्यके जीवनको सुखदायक बनाते हैं। सिर्फ जीने भरके लिए साधारण श्रम भी काफी है। लेकिन समृद्ध जीवनके लिए जीवन-सामग्रियाँ अधिक आवश्यक होती हैं; और उनके पैदा करनेके लिए अधिक श्रमकी आवश्यकता होती है। समाजवादकी स्थापनासे पहले काम करने, न करनेमें आदमी बेपरवाई बरत सकता है, क्योंकि वहाँ नफा-नुकसान सिर्फ एक व्यक्तिका है, लेकिन समाजवादमें श्रममें ढीलाढालापन छूतकी बीमारी है; और उसका बुरा असर सारे समाजपर पड़ता है। इसीलिए श्रमको दिल लगाकर करना समाजवादी समाजके लिए अत्यन्त आवश्यक है। ऐसी आदत पैदा करनेके लिए सोवियत् शासनको बहुत प्रयत्न करना पड़ा है। बहुतसे नये तजर्बे करने पड़े हैं। पूर्ण समृद्ध जीवन

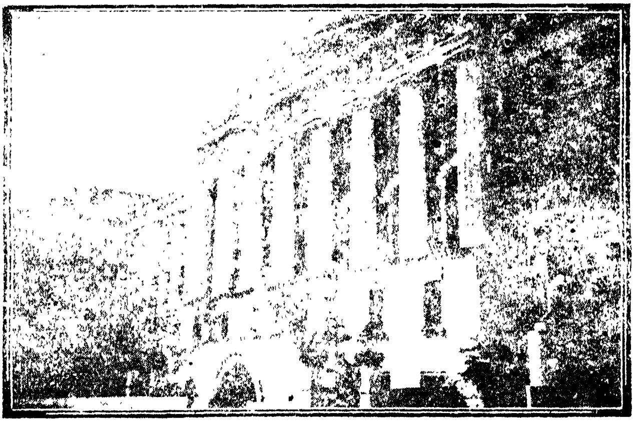
अब वहाँ श्रमपर निर्भर करता है। कमकरों और बुद्धिजीवियोंके वेतनमें जो भेद देखा जाता है, उसका हटाना अब श्रमको उन्नत करनेपर निर्भर है। समाजवाद (जिसमें हर एकसे उसकी योग्यताके मुताबिक काम लेना और हर एकको उसके कामके मुताबिक वेतन देना) से साम्यवाद (हर एकसे उसकी योग्यताके मुताबिक काम लेना और हर एकको उसकी आवश्यकताके मुताबिक जीवन-सामग्री देना) तक तभी पहुँचा जा सकता है जब कि श्रम अच्छी तरह संगठित यंत्र-परिचालित और बुद्धि-पूर्वक चलकर उपजको बहुत ऊँचा बढ़ा दे।

जाँगर (श्रम) जितना ही अधिक उपजाऊ होगा उतना ही समाज साम्यवादके पास पहुँचेगा। सामूहिक श्रममें आलस्य और वैयक्तिक स्वार्थके कारण ढिलाई ज्यादा आ सकती है; इसलिए सोवियत् नेताओंको श्रमका महत्व लोगोंके सामने रखना पड़ा। जो व्यक्ति अपने जाँगरको जितनी ही लगन और मिहनतसे चलाता है, उसका सम्मान वैसे ही बढ़ाया जाता है। पहले इस तरहसे लगन लगाकर काम करने वालोंको तूफ़ानी कमकर या उदार्निक कहते थे। ढाई साल पहले स्तख़ा-नोफ़्ने शारीरिक मिहनतके साथ-साथ दिमाग़ी ताक़त लगाकर उपजको कई गुना बढ़ाया, उस समयसे श्रमकी उपजको बढ़ानेवाले प्रयत्नको स्तखानोफ़्-आन्दोलन कहा जाता है; और उसमें सम्मिलित होनेवाले कमकरोंको 'स्तख़ानोवी'।

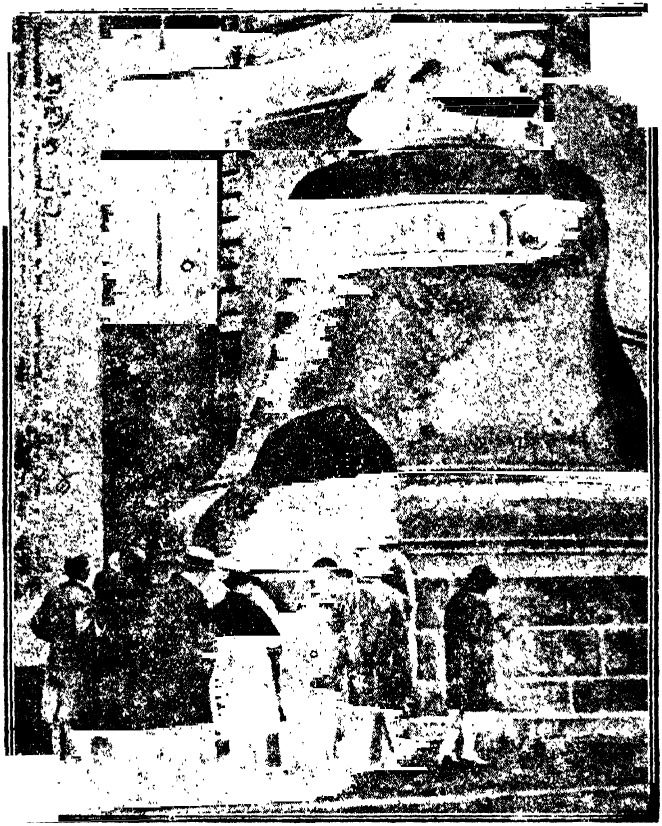
साम्यवादकी दृष्टिसे देखनेपर स्तालिन्‌का काम मार्क्स और लेनिन्‌से कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। वास्तविक समाजवादी समाज निर्माण करनेमें स्तालिन्‌ने अपनेमें अप्रतिम प्रतिभाका परिचय दिया। जिस वक्त उसे स्तखानोफ़्की सफलता मालूम हुई, खबर मिलते ही उसने स्तख़ानोफ़्का बड़े जोशके साथ स्वागत किया; और उसे जनताके सामने सोवियत्‌के एक महान् वीरके तौरपर उपस्थित किया। आज स्तखानोवी कमकर सोवियत्-जनताके सबसे प्रिय, सबसे अधिक सम्माननीय व्यक्ति हैं। यदि



मास्को का म्यूज़ियम (पृ० ४२६)



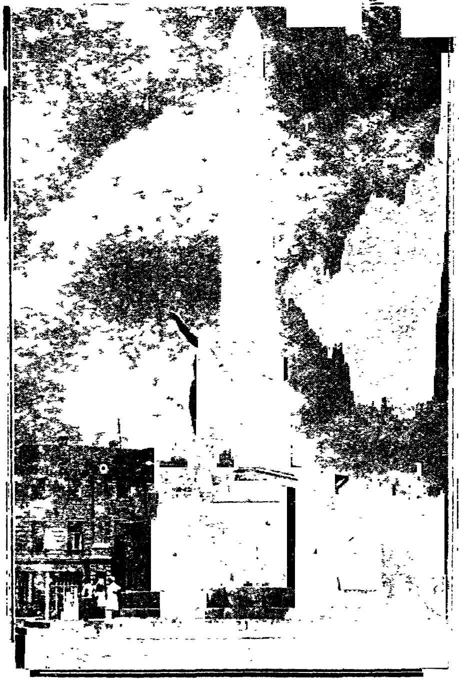
मास्को विश्वविद्यालय पृ० ४०६)



मास्को का घंटा (पृ० ४२०)



मेत्रोपोल् होटल



मास्को जयस्तम्भ (पृ० ३६६)



स्तखानोफ़ (पृ० ३७०)



मास्को—चिड़ियाखाना



सोवियत्के ११४३ डिपुटियोंकी ओर देखें तो उनमें सैकड़ों स्तखानोवी नर-नारी मिलेंगे। यदि सोवियत्के कारखानोंको देखें, तो उसमें हज़ारों स्तखानोवी डाइरेक्टर, मैनेजर, अध्यक्ष, उपाध्यक्ष मिलेंगे। यदि सोवियत् के पंचायती और सरकारी खेतोंको देखें, तो वहाँ भी बड़े-बड़े पदोंपर स्तखानोवी नर-नारियों हीको पायेंगे।

हम इस आन्दोलनको अच्छी तरह हृदयंगत करनेके लिए यहाँ कुछ उदाहरण देते हैं—

(१) १२ दिसंबर १९३७को नये विधानके अनुसार सोवियत् पार्लियामेंटके साधारण निर्वाचनके उपलक्ष्यमें १० दिन स्तखानोवी होड़ सारे प्रजातंत्रमें चली थी। इस होड़में सारे देशके कारखानों और कमकरोंने भाग लिया था। गोर्की-मोटर-कारखानेको योजनाके अनुसार प्रतिदिन ५१४ मोटरकार और लारियाँ तैयार करके निकालनी थीं, लेकिन उसने ५७० तैयार कीं। मास्कोका मोटर-कारखाना अपने हिस्सेको १०० सैकड़े पूरा करता रहा।

उरालके कुबिशेफ़् कारखानेके खुले भट्ठेने १४ दिसम्बरको १३० टन फौलाद तैयार किया। योजनाके मुताबिक उसे ९५ टन देना था।

लेनिन्ग्राद्की शोरोखोद्-जूता-फैक्टरीने १९३७की योजनाको १९ दिन पहले (१२ दिसम्बर)को पूरा कर दिया। उसने इस साल १८२४ लाख रूबलका माल तैयार किया। सालके अन्त तक २०५ लाख जोड़े जूते वह दे रही है।

मास्कोके स्तालिन्-ज़िलेके स्तखानोवियोंने १० दिनकी होड़में बड़ी लगनके साथ हिस्सा लिया। जहाँ दिसम्बरसे पहले इस ज़िलेके कारखाने अपनी वार्षिक योजनाका १८.३ प्रतिमास पूराकरके १७७ लाख रूबलका माल तैयार करते थे, वहाँ होड़के १० दिनोंमें अपनी वार्षिक योजनाका ३९.१ काम पूरा किया; और ३ करोड़ ७३ लाख १६ हजार रूबलका माल तैयार किया। कुइबिशेफ़्के बिजलीके कारखानेने इन १० दिनोंमें

सालकी योजनाका ३ ·८ सैकड़ा पूरा किया। लेब्से-कारखानेने अपने सालके प्रोग्रामको ३० नवंबर तक ही पूरा कर दिया था। इस १० दिनकी होड़में सालके प्रोग्रामका ६६·२ सैकड़ा और पूरा किया। इस कारखानेके १८० कमकरोंने १२ दिसम्बरको अपने दिनके कामको ३॥ गुनासे पौने १२ गुना तक किया।

काशिरा उद्योग-संघने अपनी पूरी योजना इन १० दिनोंमें ही पूरी की। इसके ४ स्तखानोवी कमकरोंने १० गुना काम किया। किरोव कपड़ेका कारखाना (इवानोवी)—जो कुछ दिनोंसे अपनी योजना पूरा करनेमें पिछड़ रहा था—होड़में उसने अपना काम पूरा किया; और १० दिनोंमें १५ लाख गज़ कपड़ा तैयार किया। १२ दिसम्बरको खास तौरसे जबर्दस्त होड़ रही। उस दिन कितने ही ब्रिगेडों (२०० कमकरोंका दल)ने सवा गुना काम किया। बाकूकी स्तालिन्-तैल-शोधनी—जो कि स०स० स०र०का सबसे बड़ा मिट्टीका तेल सफा करनेका कारखाना है—ने होड़में बहुत ज़ोरके साथ भाग लिया। उसने सालकी योजना ढाई हफ्ता पहले पूरी कर दी; और ८० हज़ार टन गेसोलिन-केरासिन, लिगोरिन्, तथा ४५॥ हज़ार टन लुब्रिकेटिंग तेल योजनासे ऊपर दिया।

(२) १२ दिसम्बरको दोन्बासके कोयलेकी खानवालोंने—जो कि इधर कुछ दिनोंसे अपनी योजना पूरी करनेमें पिछड़े हुए थे—उसे पूरा किया और उस दिन २॥ लाख टन कोयला निकाला। उपजमें यह वृद्धि एकदम नहीं हुई है बल्कि धीरे-धीरे। इसलिए इसे स्थायी समझना चाहिए—

१० दिसम्बर	२,२६,३००	टन कोयला
११ ,, ...	२,३२,१६५	,, ,,
१२ ,, ...	२,४६,७०३	,, ,,

१२ दिसम्बरको अपनी योजनासे ७·६ सैकड़ा अधिक कोयला निकाला गया। दोन्बासकी २६० खानोंमें २१४ने १२ दिसम्बरको योजनासे

अधिक कोयला दिया। अर्तेम् खानके २००० खनकोंने १२ दिसम्बरको अपने हिस्सेसे तिगुना और चौगुना कोयला खोदकर दिया। शोलोगुब् कमकरने चार सहायकोंके साथ ४० गुना कोयला तैयार किया। उसी खानमें कोब्लेफ़ने एक सहायकके साथ २२ गुना काम किया।

(३) ओर्जोनीकिद्ज़े-मशीन-निर्माणालय (मास्को)के प्रसिद्ध स्तखानोवी कमकर इवान् गुदोफ़ने अपने ७ घंटेके काममें ११५२ पुर्जों को तैयार किया; और इस प्रकार ४५८२ सैकड़ा अपना काम पूरा किया। उस ७ घंटेमें उसने १०८८ रूबल और ८८ कोपेक कमाये। उसका शिष्य नेस्तेरोफ़् भी गुरुसे पीछे नहीं रहा। उसने २ दिसम्बरको अपने कामका २५२८ सैकड़ा पूरा किया। दूसरे शिष्य अलाविनने २०७० सैकड़ा काम किया। ३ दिसम्बरको उस कारखानेके २ और स्तखानोवियोंने दस गुना काम किया।

निजुनेद्नियेप्रोब्स्क (उक्रइन)के एक मशीनके कारखाने में—जिसके लिए कि एक अँगरेज़ी कंपनीने २३१ चक्का प्रतिदिन (७ घंटा) की गारन्टीकी थी—४ दिसम्बरको स्तखानोवी ज़रुविन और उसके ब्रिगेडने ४५७ पहिया, और ६ दिसम्बरको ४६० तथा ७ दिसम्बरको ४८० पहिये बनाये; और इस प्रकार संसारके रेकार्डको तोड़ा।

दिसम्बरके पहले ५ दिनोंमें करागन्दाकी कोयलेकी खानोंने ६२,८६७ टनकी जगह ६४,६३८ टन पैदा किया। वोरोशिलोफ़्-ग्राद् (उक्रइन)के इंजनके कारखानेने दिसम्बरके पहले ५ दिनोंमें ५से ६ इंजन तक तैयार किये; और ६से १० दिसम्बरके ५ दिनोंमें १५ रेलवे इंजन बनाये।

(४) दिसम्बरमें स्वर्मोवो-कारखाना गोर्कीके कमकर बोल्शीरेफ़ने जिसने कि पिछले महीने १२॥ गुना काम किया था, ३॥ दिनोंके २६ घंटोंमें ३३८ घंटोंका काम किया। इन २६ घंटोंके कामसे उसने ८०० रूबल कमाये।

शाख्तीके फ्रंजे कोयलेकी खानके एक खनक उशाकोफ़ने २१

दिसम्बरको १३० वर्ग मीतर कोयला काटकर १६ गुना काम किया; और एक दिनमें २७६ रूबल कमाये।

(५) क्रमातोर्स्कके मशीन बनानेके कारखानेके एक कमकर कोलेस्निकोफ़ने २८ दिसम्बरको ५ घंटेमें सवा सात गुना काम किया। वहींके दूसरे कमकर कोवालेफ़्ने ६०७ सैकड़ा काम उतने ही समयमें किया। एक दूसरे कमकर ज़ुकोफ़ने ६ गुना किया। उस दिन पहली शिफ़्टमें कारखानेके ५६ कमकरोंने नया रेकार्ड स्थापित किया; और २१३ स्तखानोवियोंने दूना काम किया।

मग्नीतोगोर्स्कके लोह-फौलाद-कारखानेके खुले चूल्हे वाले वर्कशाप नं० २के कमकरोंने दिसम्बरको सालका काम पूरा कर दिया। इस साल उन्होंने ७ लाख टन फौलाद बनाया। २७ दिसम्बरको वहाँके तार बनानेवाले वर्कशापने अपने प्रोग्रामसे १२५ टन अधिक तार बनाया। सोकोलोफ़्के ब्रिगेडने ६८७ टनकी जगह ८२४ टन लोहेका तार बनाया। २७ दिसम्बरको मोलोतोफ़्-मोटरकार-कारखानेके कमकर गह्मेत्दिनोफ़्ने २६००की जगहपर ६००० पुर्जोंको तैयार किया। दूसरे कमकर वर्न्नाकोफ़्ने २८ दिसम्बरको ५६ स्टीयरिंग पहिये मोटरमें लगाये। योजना २८ पहियेकी थी। देशके चीनीके कारखानोंने—जो कि १९३७में ३ महीने काम करते रहे—२५ दिसम्बर तक १९ लाख ११ हज़ार २५० टन चीनी तैयार कर दी थी। पिछले साल इतने समयमें १५ लाख ४० हज़ार ३ सौ टन चीनी तैयार हुई थी।

(६) दोनबासके स्तालिन् चंद्वक—जहाँ कि स्तखानोफ़् आन्दोलनका जन्म हुआ—के कमकरोंने दिसम्बरमें १५४७ टन कोयला निकाला। यह योजनासे १८·४ सैकड़ा अधिक है।

मारीउपोलके इलिच् लोहेके कारखानेके १० कमकरोंने भट्ठोंकी ताक़तसे अधिक फौलाद तैयार किया। लाज़िनने १३·५ टन प्रतिवर्ग-मीतर उष्णतल और नेदेल्कोत या त्युल्याकोफ़्में से हर एकने ११ टनसे

अधिक पैदा किया। ओर्जोनीकिद्जेग्राद् नगरके लाल प्रोफिन्टर्न कारखाने-के ६२६० कमकर बराबर अपने कामको योजनासे १।। गुनासे ३ गुना तक करते रहे। ३० दिसम्बरको बढ़ई ब्रिगेडने ४ गुना काम किया, ब्वायलर-ब्रिगेडने ३ गुना और मशीनी-हथौड़ा ब्रिगेडने ६।। गुनासे ज्यादा काम किया।

लाल-पताका-कारख़ाना (लेनिन्ग्राद्)के स्तख़ानोवी मिस्त्री पश्शा-कोफ़्ने ३१ दिसम्बरको ५ घंटा ३५ मिनटमें अपनी योजनाका १६८ गुना काम पूरा किया। उस दिन उसने ११८२ रूबल कमाया और फैक्टरीमें उसके सम्मानमें एक बड़ी सभा करके उसे बधाई दी गई।

ख़र्कोफ़् जूता कारखाना न० ५के ११५ कमकर—जो पहले अपने प्रोग्रामको पूरा नहीं किया करते थे—अब उससे अधिक कर रहे हैं।

उसी शहरके हँसुआ-हथौड़ा-कारखानेमें १ जनवरी १६३८को स्तख़ानोवी कमकरोंकी संख्या २३०० थी, जिनमेंसे ८१६ दुगुना काम करते हैं। एक साल पहले १ जनवरी १६३७को वहाँ १५४६ ही स्तखानोवी थे।

स्वेद्लोव्स्क प्रान्तकी सेरेदोविना सोनेकी खानके कमकरोंने साल-में ६५.५ सैकड़ा अधिक काम किया।

खर्कोफ् प्रान्तके कारखानोंके कमकरोंने १६३७में जो सुधार सुझाये थे, उनके काममें लानेसे कारखानोंको २ करोड़ रूबलकी बचत हुई। १६३७के पहले ६ महीनोंमें ७०५६ सुधार संबंधी सुझाव पेश किये गये थे। कोतेल्निकोफ कमकरने बिजलीके कारखानोंके संबंधमें ३० सुझाव पेश किये थे। पिश्मा (स्वेर्दलोफ प्रान्तके)के ताँबा-बिजली कारखानेमें १७० सुझाव पेश हुए थे; जिनके कारण एक सालमें १,६१,००० रूबल-की बचत हुई।

स्तख़ानोव आन्दोलन चीज़ोंकी उपजमें ही काम नहीं कर रहा है, बल्कि वितरणमें भी कमकर वैसा ही जोश दिखा रहे हैं। मास्कोके भंडारों-

ने नव वर्षके उपलक्ष्यमें ३१ दिसम्बरको ५.२१ लाख रूबलका माल बेचा। दिसम्बरके दूसरे दिनोंकी बिक्रीसे १६० लाख यह ज्यादा है। दिसम्बर ३० और ३१को भोजनके सबसे बड़े भंडार गस्त्रोनोम् नं० १ने ५ हज़ार बोतल शम्पेन, २००० टोकरे फल, २००० बक्स नीबू, १५०० बक्स नारंगी, ३ लाख सेब १०००० बक्स देवदार वृक्षोंकी सजावटके सामान तथा बहुत भारी तादादमें ताजी और सूखी मछलियाँ, चटनी, मुरब्बा, बिसकुट आदि चीजें बेचीं।

(७) तृतीय पंच-वार्षिक योजना पहली जनवरी १९३८से आरम्भ हुई है। नये निर्वाचनके अनुसार महासोवियत्का अधिवेशन १२ जनवरी-को हुआ। इन दोनों बातोंके उपलक्ष्यमें सोवियत् कमकरोंने इस जनवरीके महीनेको स्तखानोवी होड़का महीना घोषित कर दिया।

इस होड़में स्तालिन्-विद्युत-टर्बाइन-कारखाना (खर्कोफ्)के १००० कमकर दुगुनासे ज्यादा काम कर रहे थे। इस कारखानेकी ७२ वर्कशाप स्तखानोवी है; और उसकी कोशिश है कि सारा कारखाना स्तखानोवी हो जाय। उसी शहरके दूसरे कारखाने कोमिन्तर्नके एक विभागने १ शिफ्टमें २४९ सैकड़ा काम किया और दूसरे विभागने १९९ सैकड़ा। द्नोयेप्रो--पेत्रोव्स्क नगरकी जेर्जिन्स्की लोह-वर्कशापने जनवरीके पहले ६ दिनोंमें योजनासे १२९ टन अधिक लोहा पैदा किया। ६ जनवरीको वर्कशाप नं० २ने योजनासे ७२ टन अधिक लोहा तैयार किया। उसी नगरके दूसरे कारखाने लीब्नूक्नेख्तने अपने छोटे खुले भट्ठेकी वर्कशाप-से पहले ५ दिनोंमें कामको १२४.२ सैकड़ा किया और ६ जनवरीको १९.४४ सैकड़ा।

क्रमातोर्स्क नगरके ओर्जोनी-किद्जे कारखानेके जर्या नामक कमकर-ने १२६६ सैकड़ा काम पूरा किया। ७ जनवरीको उसे भी मात कर लेसित्स्की एक तरुण साम्यवादीने १६५२ सैकड़ा काम किया। उसी दिन वर्कशापके ६३ स्तख़ानोवियोंने ड्यौढ़ा काम किया।

कालिनिनके सभी कपड़ेके कारखाने जनवरीके पहले ५ दिनोंमें योजनासे अधिक काम कर रहे थे। कालिनिन बुनाई मिलने ४८ सैकड़ा अधिक काम किया। यज़्दानोफ़ मिलकी बहुत सी स्ताख़ानोवी स्त्री-जुलाहोंने २५ सैकड़ा अधिक और एकने ३३ सैकड़ा अधिक काम किया।

ओर्जोनीकिद्ज़ेकी लाल-प्रोफ़िन्तर्न कोयलेकी खानमें दो तरुण साम्यवादी रैब्को और मिशानोफ़ आपसमें होड़ लगाये हुए थे, उन्होंने सारे जनवरी महीनेका काम ५ तारीखको ही खतम कर दिया। यह स्तखानोवी खनक अब अपना ढंग अपने साथियोंको सिखा रहे हैं।

* * * * * *

(१) चेल्याबिन्स्कके ट्रैक्टर-कारखानेके बढ़ई सुरकोफ़्ने साधारण निर्वाचनकी खुशीमें की गई सभामें प्रस्ताव किया, कि १९३८के सारे सालको स्तख़ानोवी होड़का साल बना दिया जाय। उसने प्रतिज्ञा की, कि मैं बराबर दूना काम करता रहूँगा।

(२) अक्तूबर-कल्खोज् (कालिनिन् प्रान्त)की स्त्रियोंके ब्रिगेडके नायक गुवानोवाने प्रतिज्ञा की—"पिछले दो साल तक लगातार मेरे ब्रिगेडने प्रति एकड़ ४०० किलोग्राम (प्राय: १० मन) सन पैदा किया। अगले साल हम मोल्याकोफ़के तजर्बेको इस्तेमाल करेंगे और सनकी उपजको और बढ़ायेंगे।......हमारी कारेली जाति ज़ारशाहीके ज़मानेमें दलित और परतंत्र समझी जाती थी। आज स०स०स०र०की जनताके परिवारमें हमें समानताका अधिकार है। हम इस बातको खूब समझते हैं,..............।"

(३) इलिच-कल्खोज (स्मोलिन्स्क प्रान्त)ने प्रतिज्ञा-पत्र लिखा—"हमारा जीवन अब आनन्दमय है। हम जानते हैं कि हमारा कल आजसे भी बेहतर होगा। युद्धके सर्वनाशसे स्वतंत्र हुए हमें १६ वर्ष हो गये। इन वर्षोंमें हमने शान्तिके वातावरणमें अपने जीवनका नव-निर्माण किया।"

(४) स्तखानोफ़-आन्दोलनके जड़ पकड़नेके साथ साथ उपज बढ़ती जा रही है। दोन्बास् स०स०स०र०की एक बहुत महत्त्वपूर्ण कोयले की खानोंका क्षेत्र है। सितंबर १९३७में इसके कोयलेका प्रतिदिनका औसत १९७ हज़ार टन था। दिसंबरमें वह २३० हज़ार टन हो गया। एक दिन तो २४० हज़ार टन तक पहुँचा था।

दो महीना पहले दोन्बास्के १५००० खनक दूना काम करते थे, लेकिन जनवरीके आरंभमें इस श्रेणीके मज़दूरोंकी संख्या ३०००० हो गई। हज़ारों स्तखानोवी मैनेजर आदिके दायित्वपूर्ण पदपर पहुँच गये हैं। कितने ही साधारण स्तखानोवी कमकर पढ़कर इंजीनियरके पदपर पहुँच हैं। इस प्रकार किताबी और क्रियात्मक दोनों ज्ञानोंके मिल जानेसे यहाँकी खानोंमें नये जीवनका संचार हुआ है।

कोयलेकी उपजमें यह वृद्धि बहुत महत्त्वपूर्ण है। पिछले ४ सालों-से पार्टी और गवर्नमेंटकी कोशिश थी, कि दोन्बास्के खानोंके कोयले की उपजको १,३०,००० टन रोज़से ऊपर बढ़ाया जाय। इसीके लिए खानका हर एक काम मशीनसे करनेका प्रबंध किया गया। कोयले-की देशको बहुत ज़रूरत है। हज़ारों नई फैक्टरियाँ, पावरहाउस, नये औद्योगिक नगर और सैकड़ों मीलकी नई रेलें, ये सभी कोयला माँगती हैं। १९३६ तक दोन्बास्की खान पिछड़ी हुई थीं। २० ट्रस्टोंमें सिर्फ़ १ योजनाके करीब रहनेकी कोशिश कर रहा था। मैनेजर अधिकतर ऐसे आदमी थे, जो खुद सुस्त थे और कामको आगे बढ़ने देना नहीं चाहते थे।

जबसे ल० म० कगानोविच् भारी-उद्योगका मंत्री बना, तबसे अवस्था बदल गई। उसने मौकेपर पहुँचकर बारीकीसे उन कारणोंकी जाँच की, जिनसे खानें पीछे पड़ी हुई थीं। उन कारणोंमें थे—खानोंका कुप्रबन्ध, यातायातके इन्तज़ाममें ढीलापन, दुर्घटनाएँ। उसने इन दोषों-को हटानेके लिए बड़ी तत्परता दिखलाई। उसने इंजीनियर और

यंत्रशिल्पी, फ़ोरमैन् और कमकर सबसे पूछताछ की। उसके इस काम-में पार्टीकी बैठक (फ़रवरी-मार्च १९३७)में स्तालिन्के इस वाक्यने पथ प्रदर्शन किया—

"नेतृत्वका असली मतलब है—

१. समस्याका उचित हल ढूँढ़ना। लेकिन समस्याका उचित हल ढूँढ़ना तब तक असंभव है, जब तक जनता—जोकि हमारे नेतृत्वके फलको अपने सिरपर अनुभव करती है—के तजर्बोंको ध्यान में न लाया जाय।

२. ठीकसे हलकी सफलताको संगठित करना, जोकि जनताकी सीधी मददके बिना नहीं किया जा सकता।

३. इस हलकी सफलताको कसौटीपर कसनेका संगठन करना और यह भी जनताकी साक्षात् सहायताके बिना नहीं हो सकता।"

(५) मास्कोके प्रसिद्ध स्तखानोवी कमकर गुदोफ़के ढंगको गोर्की-के कमकर गनोखिन्ने इस्तेमाल किया और वह ३½ घंटामें १५३६ सैकड़ा काम करनेमें समर्थ हुआ। पहले वह २५०से २७० सैकड़ा तक अपने कामको पूरा कर सकता था। खर्कोफ़के हँसुआ-हथौड़ा इंजीनियरी कारखानेके मिस्त्री लितृविश्कोने अपना काम १ जनवरी को १०—१९ सैकड़ा पूरा किया। पिछले साल वह नियमसे पँचगुना काम करता था; और कितनी ही बार अठगुना नवगुना करनेमें भी सफल हुआ।

जेर्जिन्स्की-लोह-फ़ौलाद-कारखाना (द्नीयेप्रोपेत्रोव्स्क)में ३५७ स्तखा-नोवी मामूली मज़दूर अब सहायक फ़ोरमैन तथा और ऊँचे पदोंपर नियुक्त किये गये हैं। गा० ई० इवानोव्स्की—जो सोवियत् पार्लियामेंटका डिपुटी है, और पहले एक धौंकू भट्टेका मुखिया था—अब क्रिवोइरोग लोह-फ़ौलाद कारखानेका डाइरेक्टर बनाया गया है। लेकिन जो पहले एक धौंकू भट्टा विभागका सहायक मुखिया था, अब उसी कारखानेका प्रधान इंजीनियर बनाया गया है।

(६) मोलोतोफ़् मोटर-कारख़ाना (गोर्की)के रँगाई विभागको ५ महीनेमे अपने ऊँचे कामके लिये लाल-पताका (सरकारी इनाम) मिली। वह बराबर अपने कामकी योजनासे अधिक पूरा करता जा रहा है। १९३७की योजनाको उसने समयसे बहुत पहले पूरा किया। श्रेष्ठ स्तख़ानोवियोंमें से कितने ही मैनेजर आदिके पदपर नियुक्त हुए हैं। इस विभागके ३६० स्तख़ानोवी बराबर दूना और तिगुना काम कर रहे हैं। कई शयोद्लेस्नी और कोरोलेफ़् जैसे दसगुना और उससे अधिक काम करने वाले कमकर भी हैं।

दोनेत्स्क कारख़ानेके स्तख़ानोवी और तूफ़ानी-कमकर छुट्टीके समयमें पढ़कर अपनी योग्यता बढ़ा रहे थे। उनमेंसे कितने ही इंजीनियर हुए और मैनेजर बनाये गये। १९३७में दोनेत्स्क औद्योगिक इंस्टीट्यूटसे ३५४ छात्र इंजीनियरकी डिग्री पाकर निकले। जनवरी १९३८ में १०६ कमकर शामको उक्त इंस्टीट्यूटमें पढ़ते थे।

(७) ताशकन्दमें रेलवे इंजनका इंजीनियर वासिलीयेवकी एक प्रसिद्ध स्तख़ानोवी है। चुनावमें वह जातिक-सोवियत्का डिपुटी चुना गया है। वह उज्बेकिस्तान स० स० र० की प्रबन्ध-समितिका उपाध्यक्ष भी है।

३. नगरोंकी कायापलट

(१) स्तालिन्स्क (सिबेरिया)—क्रान्तिके बाद दो दो चार-चार लाख आबादी वाले कोड़ियों नये शहर आबाद हुए हैं। स्तालिंस्क भी पश्चिमी सिबेरियामें उसी तरहका एक शहर है। नगरकी वृद्धि कितनी तेज़ीसे हुई है, और वह कितना समृद्धिशाली है, यह निम्नलिखित वर्णन-से समझा जा सकता है। लेखक—जो एक रूसी पत्रका संवाददाता है—दिसम्बर (१९३७)में वहाँ गया था।

अँधेरा होने लगा था, जब कि हमारी ट्रेन स्टेशनपर पहुँची। जाड़ेके मारे रेलके शीशे बाहरसे हिम-जटित हो गये थे; इसलिए बाहर देखने-के लिए दरवाजे खुले हुये थे। मुसाफ़िर चारों ओर दिखाई दे रहे थे। कोई घरकी तरफ़ जल्दी-जल्दी जा रहा था और कुछ लोग स्टेशनको बड़ी दिलचस्पी और आश्चर्यसे देख रहे थे।

एक भाई देर तक बाहर रहकर लौट रहा था। उसने देखा—एक कोलाहलपूर्ण लम्बे चौड़े स्टेशनपर सिबेरियाकी उस सर्दीमें भी स्टेशन-के भोजनालयमें गमलोंवाले ताड़ लगे हुए हैं। यात्रीने कितनी देर तक इधर उधर दृष्टि डालनेके बाद एक छोटा सा सफ़ेद पत्थरका झोंपड़ा प्लेटफार्मके एक छोरपर देखा। वह हँस पड़ा।

"हाँ, यहाँ ही कुज्नेत्स्कके इस झोंपड़ेवाले स्टेशनमें ७ वर्ष पहले मैं बर्फ़ बरसती शामको आया था।"

स्टेशनके पीछे स्तालिंस्क नगर है। उसे पतले कुहरेमें कम्पित लाखों बिजली-बत्तियाँ प्रकाशका सरोवर जैसा बनाती थीं। लोहे और फौलाद-के कारखाने शहरसे कुछ दूरपर खड़े नगरकी शोभाको दुगुना कर रहे थे। लोहेके भट्ठे शोर मचाते सनसना रहे थे। उनसे पेंदी में-लाल-लौर-लिये हुए धुएँका बादल निकल रहा था।

१६१३में इसी नगरके बारेमें एक लेखकने लिखा था—

"क़सबा तेल्बेस् ताइगा (जंगल)के छोर पर बसा हुआ है। यहाँ आगकी रखवालीके लिए एक मीनार, तीन गिर्जे और दो छोटी प्रार्थनाशालाएँ हैं। इस ज़िलेमें एक पाठशाला है; जिसमें प्रथम दो दर्जों तक पढ़ाई होती है। एक फ़ौजी जेल अस्पताल है, जिसमें २२ मरीज़ोंके लिए चारपाइयाँ हैं। क़सबेमें २४०० घर हैं; जिनमें एक तिहाई ही ईंटके हैं। आबादी ४०८२ है। पिछले १० सालके भीतर आबादीमें सिर्फ दो आदमियोंकी वृद्धि हुई। क़सबेकी तरह ज़िलेमें भी जन-वृद्धि नहींके बराबर है। पुराने बाशिन्दे बड़ी तेज़ीसे मरकर लुप्त हो रहे हैं, और रूसी गाँवकी जनवृद्धि तो कालापानीके लिए भेजे कैदियोंपर निर्भर है। यद्यपि ज़िलेमें लोहा, सीस, ताँबा, कोयला और अज़्बेस्तोकी बहुत अच्छी खानें हैं, लेकिन इस समय उनको कोई नहीं निकालता। खानोंमें काम न होनेमें सबसे बड़ी कठिनाई है यातायातका न होना। ज़िलेमें ८५ शराबकी दूकानें, ४ पुलीसके थाने और और दुकानें हैं। बसन्त और शरद्में कुज़नेत्स्क नगरका बाहरी दुनियाँसे संबंध टूट जाता है।"

और अब २४ वर्ष बाद क्या है? सात वर्ष बाद लौटे उस यात्रीने अपनी आँखोंके सामने एक नये नगरको खड़ा देखा। सड़कोंपर सब जगह बिजली-बत्तियाँ जगमगा रही हैं। तोम् नदीपर रोशनीमें झिलमिल करता एक लोहेका पुल खड़ा है। सड़ककी पगडंडियोंपर हमेशा हरे रहनेवाले देवदारु वृक्षोंकी पाँतियाँ खड़ी हैं। बड़े बड़े जँगलों वाले विशाल प्रासाद दोनों ओर खड़े हैं, जिनके निचले तलमें कितनी ही दुकानें सजी हुई हैं। चौरस्तोंपर मोटरोंकी कतारोंको लाल, हरी स्वयं जलनेवाली लालटेनें रोके हुए हैं।

स्तालिंस्क नगर, सिर्फ ६ वर्ष हुए, प्रगट हो कुज़नेत्स्कके पुराने क़सबे वेसोनोफ़् गाँवको निगल गया। स्तालिन्-लोह-कारख़ानोंके साथ साथ यह नगर भी बढ़ा। स्तालिन्-कारखाना लोहा और फौलाद पैदा करनेके

लिए एक बहुत भारी कारखाना ही नहीं है, बल्कि वहाँ नईसे नई मशीनों-को इस्तेमाल किया गया है। यह दुनियाके सबसे बड़े लोहेके कारखानों-में है।

स्तालिंस्कमें ६७ स्कूल हैं, १ लोह फौलाद इंस्टीट्यूट है, ३ टेकनिकल स्कूल हैं, १७ क्लब, १ सांस्कृतिक भवन, २ सिनेमा, १ नाटकशाला, ३ सरकस, २ म्यूज़ियम, २ समाचारपत्र, ३० पुस्तकालय, (३०,००० स्थायी पाठकोंके साथ) २ विश्राम-शालाएँ और १ होटल जिसकी इमारत के लिये कोई भी शहर लज्जित नहीं हो सकता। और विद्यार्थी कितने हैं! ५० हज़ार! इस ज़िलेमें १०० चिकित्सा संस्थाएँ और १०० प्रसूति-गृह बच्चा-खाना और किन्डर-गार्टन हैं।

ज़िलेके भीतरसे होकर एक बड़ी सुन्दर रेलवे लाइन गई है। पत्थर, लोहा, और दूसरी खानोंमें बड़े ज़ोरके साथ काम हो रहा है। लोहा फौलाद कारखाना लगातार दिन-रात काम करता है। स्तालिंस्क नगरी रातको भी नहीं सोती। कारखानेमें काम करनेवाले अपनी अपनी ड्यूटी-के समयके मुताबिक आते जाते रहते हैं।

स्तालिंस्कके निवासियोंमें तीन-चौथाईसे भी अधिक नौजवान हैं। इसलिए इसे नौजवानोंकी नगरी कहा जा सकता है।

* * *   * * *

(२) **मिन्स्क (बेलोरूसिया)**—कई शताब्दियों तक मिन्स्क एक भारी वाणिज्य-केन्द्र था और पूर्वसे पश्चिम जानेवाले वाणिज्य-पथपर अवस्थित होनेसे विशेष महत्त्व रखता था। अपने प्रान्तका यह शासन-केन्द्र भी था। ज़ारशाहीके शासनमें बेलोरूसिया लोगोंके साथ शासकोंका वैसा ही बर्ताव था, जैसा कि अन्य पराधीन जातियोंके साथ। मिन्स्कमें उद्योग-धंधेके लिए कोई स्थान नहीं था। बेलोरूसिया-को सिर्फ अनाज पैदा करनेके लिए मजबूर किया गया था। ज़ारशाही

उसे अनाज और कच्चे माल पैदा करने तथा कारखानेके बने हुए माल की खपतका सुन्दर क्षेत्र समझती थी। इसीलिए क्रान्तिके आरंभ होने तक सारा प्रजातंत्र उद्योग-धन्धों, कल-कारखानोंसे शून्य था। लोग पुराने तरीकेसे कुछ हाथकी छोटी-छोटी दस्तकारियाँ कर लेते थे।

६० सैकड़ा खेत ज़मींदारों और कुलकोंके हाथमें थे। किसी किसी किसानको खेतकी छोटी टुकड़ी प्राप्त थी और बहुसंख्यक तो उससे भी महरूम थे। गाँवके गरीब किसानों और खेतिहर मज़दूरोंको जितना अधिक चूसा जाता था, उससे किसानोंकी अवस्था बड़ी खराब थी। वे भूख और ग़रीबीमें डूबे हुए थे। इसके अतिरिक्त बलोरूसी जाति पराधीन समझ कर हर तरहके जुल्मकी शिकार थी।

मिन्स्क शहर बसानेमें कोई क़ायदा-क़ानूनकी पाबन्दी नहीं की गई थी। न सड़कें सीधी थीं, न शहरके स्वास्थ्य और सफ़ाईका खयाल रखा गया था। अपने हज़ारों निवासियोंके लिए वह सासतखाना था। साम्यवादी क्रान्तिने उस अवस्थासे लोगोंको मुक्त किया। १९१९–२० तक मिन्स्क क्रान्ति-विरोधियोंके हाथमें पड़कर और भी बर्बाद हो गया था। क्रान्तिकी सफलताके बाद मिन्स्कको पहली ही अवस्था तक नहीं पहुँचा दिया गया, बल्कि यहाँ नये कल-कारखाने खोले गये और साम्यवाद-के आधारपर नगरमें नवजीवन का प्रसार किया गया। क्रान्तिके पहले यहाँके इंजीनियरिंग कारखानेमें २०९ कमकर थे और यही नगरका सब-से बड़ा कारखाना समझा जाता था। आज मिन्स्कमें हज़ारोंसे ऊपर कम-करवाले अनेक कारखाने हैं। भारी और हलके उद्योग-धन्धे, खाने और लकड़ीके कारखाने, कपड़े, जूते, ब्रुशकी फैक्टरियाँ और मकानके सजाने-के सामान बनानेवाले कारखाने सभी बड़े पैमानेपर मौजूद हैं। मिन्स्क-में जिस तरह कल-कारखानोंकी तरक्क़ी हुई, उसी तरह यह बलोरूसिया प्रजातंत्रका सांस्कृतिक केन्द्र भी होता जा रहा है। इसकी जन-संख्या बहुत बढ़ गई है और जल्द ही साढ़े तीन लाख पहुँचनेवाली है। शहरको

रोशनी देनेके लिए जो पावर-स्टेशन था, वह क्रान्तिसे पहले सिर्फ ८०० किलोवाट विद्युत-शक्ति देता था, जो कि शहरके दशांशको आलोकित करनेके लिए पर्याप्त न थी और बिजली शहरके केन्द्रमें रहनेवाले कुछ धनियोंको ही मिलती थी। शहरके बाहरी ओर रहनेवाले कमकरोंके लिए तो बिजली स्वप्नकी बात थी।

आज मिंस्कमें बिजलीके दो पावर-स्टेशन हैं। एक ६७५० किलोवाट-का और दूसरा २४ हज़ार किलोवाटका। शहरके नवनिर्माणकी जो योजना है, उसमें ६४ हज़ार किलोवाट बिजली तैयार करना रखा गया है। घरों और सड़कोंपर बड़ी शाहखर्चीके साथ बिजलीकी रोशनी इस्ते-माल की जाती है। पुराने घिसे सड़े पानीके पाइप प्रतिदिन १००० घन मीतर[1] पानी भी नगरको नहीं दे सकते थे। सिर्फ राजा-बाबू सेठ-साहूकार लोगोंके ही घरोंमें पानीके पाइप थे; और वह भी एक परिमित संख्यामें। आज सारे शहरको पाइपका पानी मिलता है। रोजाना खर्च ६६००० घन-मीतर है, यानी पहलेसे ६६ गुना ज्यादा। १६३०से मिंस्कमें मल और गन्दे पानी आदिके बहानेके लिए सीवेरका प्रबन्ध हो गया है। १६२६ तक घोड़ेसे खींची जानेवाली ट्राम और सो भी ४ मील तक ही मौजूद थी। १६२६में नगर-सोवियत्ने ३६ मील लम्बी बिजलीकी ट्रामवे जारी की। इसके अतिरिक्त बहुत अधिक तादादमें मोटरबस और टैक्सी भी हैं।

क्रान्तिके पूर्व सुव्यवस्थित स्नानागारों और धोबीखानोंका नाम न था, किन्तु अब बहुत अधिक तादादमें उन्हें बनाया गया है। पुराने मिंस्क-की कच्ची सड़कोंमें धूल उड़ा करती थी। एक दो प्रधान सड़कें ही पक्की थीं। आज एकाधको छोड़ सभी सड़कें पक्की हैं। कमकर-महल्लेकी सड़कें भी पत्थर कुटी हुई हैं। सड़कोंके सुधारके साथ साथ मोटरों और लारियोंका उपयोग भी बहुत बढ़ा है।

१ घन-मीतर = ३२·७५ घनफुट

पाँच पाँच छ छ महलोंके हवादार एपार्टमेंट (घर) और सरकारी इमारतोंको देखकर पुराने मिंस्कका पहचानना मुश्किल हो गया है। पुराने मकानोंकी मरम्मतके अतिरिक्त ५ लाख वर्गमीतर[1] फर्श वाले नये मकान बने हैं। कितने ही ४से ६ तल्ले वाले एपार्टमेंट (घर) आधुनिक सभी सुविधाओंके साथ बनाये गये हैं। नगरके सामाजिक और सांस्कृतिक जीवनमें बड़ी उन्नति हुई है। क्रान्तिके पहले स्कूलोंमें सिर्फ ४५०० लड़के पढ़ते थे, और अब सात-साला और दस-साला स्कूलोंमें ३० हज़ार लड़के पढ़ रहे हैं। अध्ययन-वर्षको बढ़ाकर इनकी तादाद ६५००० होने जा रही है। इन स्कूलोंमें १७ टेकनिकल स्कूल, १२ हाई स्कूल, २५ अन्वेषण संस्थाएँ, १७ विज्ञान-एकेडेमीके इंस्टीट्यूट शामिल नहीं हैं। उच्च शिक्षण-सस्थाओंमें २० हज़ारसे अधिक विद्यार्थी, अध्यापक, और अन्वेषण-कर्ता हैं। महान् साम्यवादी क्रान्तिके बाद बेलोरूसिया प्रजातंत्रकी सभी जातियोंको अपनी भाषामें शिक्षा पानेका अधिकार दिया गया है। स्कूलमें दाखिल होनेसे पहलेकी अवस्थामें लड़कोंकी शिक्षा बच्चाखानों और किंडरगार्टन द्वारा दी जाती है। केन्द्रीय सांस्कृतिक उद्यानमें बहुतसे क्लब हैं। उनके अतिरिक्त और भी कितने हैं। एक बहुत भारी सांस्कृतिक प्रासाद तृतीय वार्षिक योजनाके अनुसार बन रहा है। ४० लाख जिल्दोंके साथ कई पुस्तकालय बनाये जा रहे हैं। ४ म्यूज़ियम तैयार हो रहे हैं।

पुराने मिंस्कमें एक भी थियेटर नहीं था, और आज १ यहूदी, १ पोल, और १ बेलोरूसी—३ थियेटर हैं। नई योजनाके अनुसार कई नाट्यशालाओं और सिनेमा-भवनोंके बनानेमें हाथ लग चुका है। मिंस्कने स्वास्थ्य-रक्षाके क्षेत्रमें बड़ी सफलता प्राप्त की है। एक विशाल स्वास्थ्य-भवन है, जिसकी कितनी ही शाखाएँ शहरके भिन्न भिन्न हिस्सोंमें बनी हैं।

---

१ वर्गमीतर=१० ७६२ वर्गफुट

१० पोलीक्लीनिक (विविध रोग चिकित्सालय), ५ डिस्पेंसरी और कोढ़ियों स्वास्थ्य-परामर्शशालाएँ तैयार हैं। नगरके हर मुहल्लेमें एक दिनका और एक रातका सेनीटोरियम है। ५० चिकित्सा-स्थान मौजूद । इनके अतिरिक्त मिंस्कके १० अस्पतालोंमें २००० चारपाइयोंका प्रबन्ध है। ऐम्बुलेंसकी गाड़ियोंसे लाकर प्रतिदिन ५०० मरीजोंकी चिकित्सा होती है।

साम्यवादी सरकारने स्त्रियोंके अधिकारकी रक्षाके लिए विशेष ध्यान दिया है। माँ और बच्चेके स्वास्थ्यकी रक्षाके लिए बड़े पैमानेपर आयोजन किया गया है। कई हज़ार बच्चोंकी देखभालके लिए ७० बच्चेखाने बनाये जा चुके हैं। इनके अतिरिक्त माँ और बच्चोंके लिए खास प्रतिष्ठान और पचासों परामर्श-स्थान हैं।

मिंस्कके पुनर्निर्माणकी जो बड़ी योजना है, उसमें स्वास्थ्य-रक्षाकी ओर और भी खयाल रखा गया है। २४ संस्थाएँ इसके लिए बनाई जायँगी, जिनमें १४०० रोगियोंके लिए ४ सेनीटोरियम, २८०० चारपाइयोंके साथ ३ अस्पताल, १७०० चारपाइयों और बहुतसे प्रसूति-शालाओंके साथ ३ स्थायी सेनीटोरियम बनने जा रहे हैं। मिंस्ककी सड़कोंपर अब बहुत सी सुन्दर इमारतें बन गई हैं। विश्वविद्यालयकी दूर तक फैली भव्य इमारतें चिकित्सा-केन्द्र, औद्योगिक-म्यूज़ियम, प्रेस-भवन, विशेषज्ञ-भवन, अनेक होटल, स्कूल और एपार्टमेंट (घर) बड़े विशाल रूपमें बने हैं। - भवन, लाल-सेना-भवन, विज्ञान-एकेडेमी-भवन तथा दूसरी इमारतें वास्तु-कलाके सुन्दर उदाहरण हैं। स्वास्थ्य-रक्षा, शिक्षा-प्रचार, सांस्कृतिक उन्नतिके कारण बीमारियों और मृत्युपर बड़ा असर हुआ है। युद्धके पहलेकी अपेक्षा अब मृत्यु-संख्या एक-तिहाई रह गई है।

पिछले युद्धमें जर्मनीने मिंस्कको ध्वस्त कर दिया, किन्तु वही हाथ अब फिर उसे तेजीसे खड़ा कर रहे हैं।

* * * * * *

(३) गोर्की—निज़नीनोवोग्राद्का नाम दुनिया भरमें मशहूर था, ख़ासकर अपने उस बड़े मेलेके कारण जो कि संसारका सबसे बड़ा मेला था। इस मेलेमें एसिया और यूरोपके बहुतसे भागोंके व्यापारी और माल आते थे। खरीद-फ़रोख्तमें नफ़ा नहीं, लूट थी। २० वर्षके सोवियत्-शासनने नामके साथ साथ इसका सारा ढाँचा ही बदल दिया। यहाँके ग्रामवासियोंकी ग़रीबी उस समय अपना सानी नहीं रखती थी। उनका काम था पल्लादारी और लकड़ी लादना। अधिकांशको तो काम भी मयस्सर न था।

अब इसका नाम बदलकर प्रसिद्ध लेखकके नामपर गोर्की हो गया है। सोवियत्-संघके प्रधान, औद्योगिक और सांस्कृतिक-केन्द्रोंमेंसे वह एक है। पिछली दो पंचवार्षिक योजनाओंमें सैकड़ों फेक्टरियाँ और विशाल कारखाने बने हैं। अपनी मशीनरी तथा टेकनीकमें वह बिलकुल नये हैं। हजारों कल्खोजोंके खेत गोर्कीके ट्रैक्टरों (मोटरहलों)से जोते जाते हैं, और देशकी करोड़ों एकड़ खेतीका काटना-दाँवना गोर्कीकी कंबाइन मशीनोंसे होता है।

१९१३में सारे प्रान्तके ४६१ कल-कारखानोंमें ५० हजार कमकर काम करते थे। १९३६में १०४० फैक्टरियाँ और कारखाने थे, जिनमें काम करनेवाले मजदूरोंकी तादाद २ लाख २० हजार थी। गोर्की प्रान्तकी सम्पूर्ण उपजमें आधा भाग बनी हुई मशीनोंका है। मोटरें, डीसेल मोटर इंजन, दर्जनों प्रकारकी मशीनें, औजार, काग़जके मिलोंकी मशीनें, यहाँ तैयार की जाती हैं। सिर्फ गोर्की प्रान्तके कारखानोंमें इतनी मशीनें, औजार बनते हैं, जितने सारा जारशाही रूसमें बनते थे। उस समय थोड़ेसे छोटे छोटे काँच-कारखाने तथा और आधे दस्तकारी जैसे कारखाने थे, जिनकी जगह अब बड़ा जबर्दस्त काँच-उद्योग तैयार हो गया है। १९३६ में जितना काम तैयार हुआ था, वह क्रान्तिसे पहलेका पँचगुना था।

इस एक जिलेमें जितनी बिजली तैयार होती है, वह १९१३के सारे

रूसकी बिजलीका १ ७/० है। लेनिन्की योजनाके मुताबिक देशको विद्युत्मय बनानेका काम शुरू हुआ। बड़े भारी भारी बिजलीके पावर-स्टेशन बनाये गये, जो सिर्फ केन्द्रके कारखानों और फैक्टरियोंको ही बिजली नहीं देते, बल्कि कल्खोजी गाँवों तकमें उसका प्रचुर प्रचार हो गया है। भारी उद्योगके कारखाने तो बड़े बड़े हैं ही, बनियान और कपड़े-की फैक्टरियाँ—कपड़ेकी फैक्टरी तो पहले इस ज़िलेमें अज्ञात थीं—कोड़ियों तैयार हुई हैं। चमड़ा सिझाने और जूता बनानेकी भी कई फैक्टरियाँ यहाँ खुली हैं।

गोर्की ज़िलेकी खेतीमें आमूल परिवर्तन हुआ है। जोते खेत, ३३,८०,००० एकड़से ५,४२,००,००० हो गए। गेहूँके खेत तो तबसे पँचगुने हो गये। १६३०से पहली जुलाई १६३७ तक ट्रैक्टर १६३से ४४७५ हो गये। कम्बाइन (काटने दाँवनेकी मशीन), ट्रक (खुली लारी) और दूसरी कृषि-संबंधी मशीनोंमें भी इसी प्रकार वृद्धि हुई है। पशु-पालन बहुत तेज़ीसे आगे बढ़ा है। पशुपालक १६३४में १६६० थे। पहली जनवरी १६३७को ६४६८—अर्थात् चौगुना हो गये। उतने ही समयमें कल्खोज़ी किसान ३७३००की जगह १५६८०० हो गये।

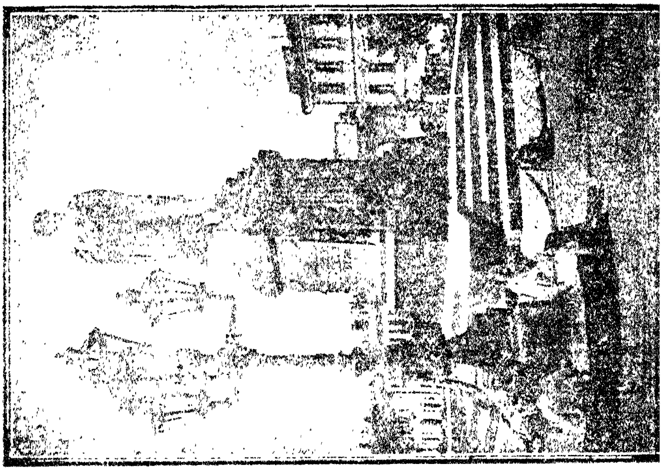
कल्खोज़ी गाँवोंमें भी बुड्ढे लोगोंके लिए कितने ही भवन बनाये गये हैं। १६२४की अपेक्षा ज़िलेके अस्पतालोंकी संखया दूनी हो गई है। अस्पतालोंमें मरीज़ोंकी चारपाइयाँ तो उससे भी ज्यादा तेज़ीसे बढ़ी हैं। अब उनकी संख्या ७६६१ है। हालमें बने प्रसूतिका-गृहोंमें चारपाइयों-की तादाद ८७से १५६५ उसी समयमें हो गई। पूँजीवादके अधीन रहते समय मज़दूर औरतोंके लिए बचाखानेका कोई प्रबन्ध नहीं था। १६३७में १,०४,०००से अधिक बच्चे गोर्की प्रान्तके बच्चाखानोंमें थे।

पानीका पाइप, सेवेज़् (मल तथा कूड़ा कर्कट बहा ले जानेके लिए बनी नहरें), ट्रामवे और एपार्टमेंट (घरों)की कतारकी कतारने ज़िलेके

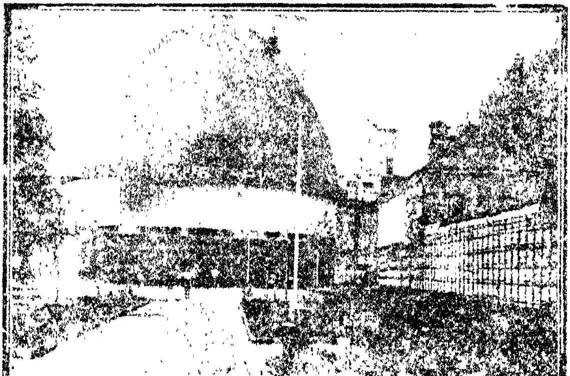
रूपमें बहुत परिवर्तन किया है। नये मकानोंके बनानेमें भी बड़ी फुर्तीसे काम लिया जाता है।

जबसे अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा स्थापित हुई है, तबसे हाई स्कूलोंकी संख्या बढ़ गई है। ज़िलेमें ६२६ हाई स्कूल हैं, जिनमें ३ लाख विद्यार्थी पढ़ते हैं। इन स्कूलोंके सिवा १२१ फैक्ट्री स्कूल और कालेज बने हैं।

१९१४में ११ समाचार-पत्र थे; जिनकी ग्राहक-संख्या ५४ हज़ार थीं। आज १३५ समाचार-पत्र हैं, जिनकी ग्राहक-संख्या ४,७५,२०० है।



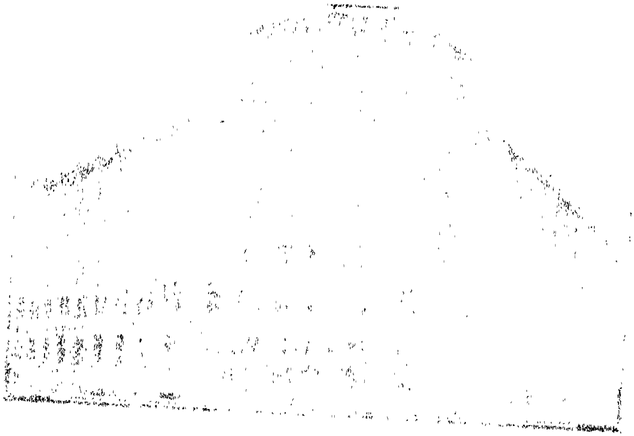
मास्को—पुश्किन की मूर्ति (पृष्ठ २६[illegible])



मास्को--नवीन भवन (पृ० २६१)



म्यांत्रियम में एक भट्ठे का नमूना (पृ० ३८९)





४. मास्को नगर

सोवियत् राजधानी मास्को ५५° ४५′ उत्तरी अक्षांश और ३७° ३७′ पूर्वी देशान्तरमें मास्को नदी तथा उसकी शाखा ओकाके किनारे अवस्थित है। यह सोवियत्के यूरोपीय भागके केन्द्रमें है और यहाँसे चारों ओरको ११ रेलवे लाइनें जाती हैं। १९३५में शहर २८५ वर्ग-किलोमीतरमें बसा था और मास्को-नगर-योजनाके अनुसार १९२५में वह ६०० वर्ग-किलोमीतर हो जायगा।

(क) विभाग-मास्को शहर २३ ज़िलोंमें बटा है, जिनमें कुछके नाम लेनिन्स्की, स्तालिन्स्की, फ्रुन्ज़ेन्स्की, सोवियत्स्की, स्वेर्दूलोवस्की, कोमिन्तेर्नोव्स्की, ज़ेर्ज़िन्स्की, कुईविशेव्स्की, बौमान्स्की, मोलोतोप्स्का, किरोव्स्की हैं।

(ख) इतिहास—१९३६में मास्कोकी जनसंख्या ३६ लाख थी। संसारमें इसका नंबर छठा है। बोल्शेविक चाहते तो १० वर्षमें इसे अव्वल बना देते, लेकिन दुश्मनके हवाई जहाज़ोंके डरसे लन्दन और तोकियोकी परेशानीको देखकर वे वैसा नहीं करना चाहते। मास्को (मस्का)की जनसंख्या निम्न प्रकार बढ़ी है—

१८७१	....	६ लाख २ हज़ार
१८९७	....	१० लाख ३९ हज़ार
१९१२	....	१६ लाख १८ हज़ार
१९२७	....	२० लाख ३२ हज़ार
१९३२	....	३१ लाख ३५ हज़ार
१९३६	....	३६ लाख ३५ हज़ार

सोवियत्के मज़दूरोंकी संख्याका ९ सैकड़ा यहीं रहता है। मास्कोमें एक भी आदमी बेकार नहीं है। तनख्वाह साल-बसाल बढ़ती जा रही

है । १६२८की अपेक्षा १६३५में तनख्वाह दुगुनी (२०४ सैकड़ा) हो गई ।

१६३६के आरंभमें मास्कोके कमकरोंमें ४०·६ सैकड़ा स्त्रियाँ थीं। मास्कोकी जनसंख्यामें १० लाखसे ऊपर संख्या विद्यार्थियों की है ।

* * *   * * *

इतिहास—मास्कोका नाम पहले पहले ११४७ ई०में सुननेमें आता है। पुरातत्त्ववेत्ताओंका कहना है, कि बस्ती उससे पहले भी थी। प्राचीन नगर उस जगह था, जहाँ मास्को और नेग्लिन्नया नदियाँ मिलती थीं। इसी जगह क्रेम्लिन्का दक्षिण-पश्चिमी भाग अवस्थित है। इस जगह एक क़िला था, जिसके तीन तरफ़ पानी होनेसे उस समयके अस्त्रशस्त्रोंके लिए वह काफी सुरक्षित था । पुराने समयमें मास्कोकी भूमिमें कितनी ही छोटी छोटी नदियाँ थीं, जिनमें अब ययूज़ा और सेतुन् दो ही बच रही हैं, बाकी ज़मीनके भीतर भीतर जानेवाली गन्दे पानीकी नहरोंमें मिला दी गई हैं ।

सैनिक विचार हीसे मास्कोको आदर्श स्थान नहीं मिला था, बल्कि यह संसारके बड़े बड़े वाणिक्-पथोंके मिलनेके स्थानपर था । बाल्तिक समुद्र, कास्पियन समुद्र, अजोफ़ समुद्र तथा यूरोप और एसियासे आनेवाले व्यापारी मार्ग यहीं आ मिलते थे। उस समय रूस बहुतसे छोटे छोटे सामन्तोंमें बँटा था, जो कि बराबर आपसमें लड़ा करते थे । वे सभी कज़ान्के तातार खानोंको कर दिया करते थे। मास्कोके सामन्त, खानकी ओरसे कर उगाहनेके लिए नियुक्त थे ।

केन्द्रमें होनेकी वजहसे मास्कोके सामंतोंकी आमदनी भी बढ़ रही थी। पहले ये लोग एक दूसरे सामन्त व्लादिमिर्के अधीन थे, लेकिन कुछ ही समयमें वे रूसके अन्य सामन्तोंकी अपेक्षा अधिक बलवान् और धनी हो गये। उन्होंने नीति और विजय द्वारा राज्यकी सीमा बहुत बढ़ा ली। इवान् कलिता (१४६२–१५०३)के समय सारे रूसको एक करने-

का काम आरंभ हुआ, और पन्द्रहवीं शताब्दीमें तृतीय इवान् (१४६२–१५०५)के समय सारे रूसका एक राज्य बना। मास्को उसकी राजधानी घोषित हुई। उसी वक्त (१४८०) रूस कज़ानके खानोंकी अधीनतासे बिलकुल स्वतंत्र हो गया। आरम्भमें सामन्त लोग बहुत कुछ स्वतंत्र थे; लेकिन अब मास्कोके इन महासामन्तोंने अपने प्रभावको बढ़ाते हुए छोटे सामन्तोंकी स्वतंत्रताका अपहरण करना शुरू किया। सोलहवीं सदीके आरंभमें ये सामंत एक तरहके अमीर और बड़े ज़मींदार भर रह गये। इवान् तृतीय और उसके उत्तराधिकारियोंके शासनमें सामन्तोंने कई बार विद्रोह किया, लेकिन उन्हें सख्तीसे दबा दिया गया। कितनोंकी जागीर छीनी गई, कितने निर्वासित हुए और कितने फाँसीपर चढ़े। ज़ार (त्सार्) इवान् चतुर्थ (१५३३–८४) अपने भारी अत्याचारोंके लिए क्रूर इवान् कहा जाता था।

क्रूर इवान्ने सामन्तोंकी शक्ति नष्ट करनेके लिए 'ओप्रिच्निना' का आरंभ किया। जिन सामन्तोंसे वह नाखुश होता, उनकी जागीरोंको छीन लेता, यही ओप्रिच्निना था। फिर छोटे छोटे ज़मींदारों और अपने दरबारियोंको ओप्रिच्निनासे छीनी हुई ज़मींदारियोंको बाँट देता था। इन नये अमीरोंको ओप्रिच्निकी कहते थे। खुशामदकी वजह से तथा इस ख़यालसे भी कि पुराने सामन्तों और ओप्रिच्निकियोंसे एक ही साथ बिगाड़ कर लेना हानिकर होगा, इन पर राज्यका कोई अंकुश नहीं था; और वे खुलकर किसानों और साधारण जनतापर अत्याचार करते थे। तभीसे रूसी भाषामें ओप्रिच्निक् अत्याचारका पर्याय माना जाने लगा। बाल्तिक् समुद्र तक पहुँचनेके लिए क्रूर इवान् बहुत उत्सुक था; और इसके लिए उसने स्वीडेन और पोलैंडसे कई लड़ाइयाँ लड़ीं, लेकिन असफल रहा। वह अपने राज्यको कज़ान्, अस्त्राखान्, और सिबेरियाके विजयों द्वारा पूर्व और दक्षिणमें बहुत दूर तक बढ़ानेमें सफल हुआ।

वोल्गाकी सारी उपत्यका—जो कि पूर्व और पश्चिमके व्यापारका भी मिलन स्थान थी—उसके हाथमें आ गई। ईसाई धर्मकी यूरोपमें पहले दो शाखाएँ थीं। एक कैथोलिक (उदार) और दूसरे अर्थोद्क्स (सनातनी)। कैथोलिकका केन्द्र था रोममें, इसलिए उन्हें रोमन कैथोलिक कहा जाने लगा। अर्थोद्क्स सम्प्रदायका ग्रीस (यूनान)से संबंध था। बिजंतिउन् राजवंशका कृपापात्र था और इस प्रकार बिजंतिउन् साम्राज्यकी राजधानी कुस्तुन्तुनिया (कान्स्तन्तिनो-पोल=कान्सतन्तिनोपुर)ग्रीक अर्थोदक्स सम्प्रदायका भी केन्द्र हो गई। जब तुर्कोंने कुस्तुनतुनियाको दखल कर लिया, तो अर्थोद्क्स सम्प्रदायके प्रधान गुरु मेत्रोपोलितनको भी वहाँसे भागना पड़ा। १३४५में मेत्रोपोलितनने मास्कोको अपना निवासस्थान बनाया। इस प्रकार मास्को ग्रीक-अर्थोदक्स-संप्रदाय—जो कि पीछे सारे रूसमें सर्वमान्य धर्म हो गया—का केन्द्र और तीर्थ सा बन गया। मास्कोके जारोंका काम था, अपने धर्म (ग्रीक अर्थोदक्स संप्रदाय)के प्रति अधिक श्रद्धा दिखलाकर संप्रदायकी सहानुभूति प्राप्त करना। मेत्रोपोलितन् और उसका संप्रदाय जारको मदद देकर लाभान्वित हो सकते थे। इस प्रकार चौदहवीं सदीमें जो मेत्रोपोलितन् और जारोंका गँठबंधन हुआ, वह बराबर लाल-क्रान्ति तक उसी तरह चला आया। धर्मके अगुआ, जारके अधिकारको अक्षुण्ण रखना अपना धर्म समझते थे।

क्रूर इवान्‌के समयमें मास्को नगरकी सूरतमें बहुत तबदीली हुई। बारहवीं सदीके उत्तरार्द्धमें शहर क्रेम्लिन्‌के सिर्फ $\frac{1}{3}$ हिस्से हीमें बसा था। यह व्यापारका केन्द्र था, जिसकी रक्षाके लिए सेनाका प्रबन्ध था और चारों ओर लकड़ीका प्राकार था। तेरहवीं-चौदहवीं सदीमें मास्कोके तीन भाग थे। एक क्रेम्लिन् (क्रेम्ल=दुर्ग)—नगरका क़िला-बन्द भाग, जहाँ कि सामन्त रहता था। दूसरा पोसद्—क्रेम्लिन्‌के बाहरवाला भाग, जहाँपर व्यापारी और शिल्पी आदि रहा करते थे, और जिसे चोनी

व्यापारियोंकी आमदरफ्त तथा चीनी माल रखनेके कारण पीछे किताई-गोरद् (चीनी नगर) कहा जाने लगा। तीसरा भाग मास्को नदीके पार था, जिसे ज़ारेच्ये कहते थे। यह एक बड़ा गाँव सा मालूम पड़ता था।

सोलहवीं सदीके मध्यमें आनेवाले पश्चिमी यात्रियोंने लिखा है, कि मास्को लन्दनसे बड़ा है। मास्कोमें सिबेरियाका समूर, रेशम चीनसे, मसाला भारतसे और बहुत सी दस्तकारीकी चीजें यूरोपसे आती थीं। मास्कोमें बहुतसे शिल्पकार थे, लेकिन प्राय: सभी जारोंके दरबार और उसके दरबारियोंकी कृपापर आश्रित थे।

मरनेसे कुछ समय पहले क्रूर इवान्ने अपने पुत्र इवान्से झगड़कर उसे मार डाला। जारके उत्तराधिकारी थे एक बच्चा दिमित्री और एक निर्बुद्धि फ़ेदोर्। फ़ेदोर् (१५८४--१५६८)को दरबारियोंने गद्दीपर बैठाया। वह नाममात्रका जार था, सारा काम उसका साला बोरिस गोदुनोफ़् करता था। फ़ेदोर्के मरनेके बाद गोदुनोफ़् (१५६८-१६०५) जार चुना गया। फ़ेदोर् निस्संतान मर गया और दिमित्री किसी दुर्घटनामें मरा। बोरिसके चुनावको बड़े सामन्तोंने नहीं माना; क्योंकि बोरिस् छोटे सामन्तोंमेंसे आया था। बोरिस् भी क्रूर इवान्की ही तरह अत्याचार करता था। पुराने सामन्तोंने रोमनोफ़् सरदारों और शुइस्की सामन्तोंके नेतृत्वमें विद्रोह किया। बोरिस्के राज्यकाल हीमें किसानोंको धीरे धीरे दबाकर अर्द्धदासके रूपमें परिणत कर दिया गया। यह वही समय था, जब हिन्दुस्तानमें अकबर शासन कर रहा था।

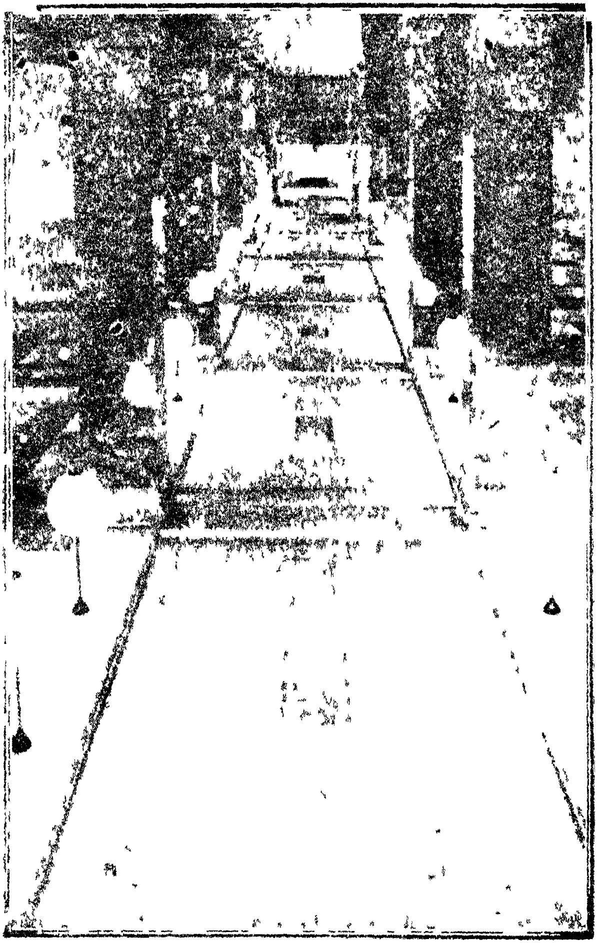
जिन किसानोंको अर्द्धदास जैसा जीवन पसन्द नहीं था, वे घर-बार छोड़कर मास्कोकी अमलदारीके बाहर दोन् उपत्यका और उक्रइनमें चले गये। ये ही पीछे चलकर दोन्के कसाक् हुए।

१६०२--४ ई०में अकाल पड़ गया। किसान तथा दूसरे करदाता कर देनेमें असमर्थ हो गये; जिससे आपसमें बहुत झगड़े बढ़ गये। इस मौक़ेको ग़नीमत समझकर पोलैंडकी नजर मास्कोकी तरफ़ घूमी। उसने

दिमित्री प्रथम होनेके एक नक़ली दावादारके पक्षमें होकर १६०५में—जिस साल कि अकबर मरा—मास्कोपर कब्ज़ा कर लिया। पीछे मास्कोके सरदारोंको अपनी ग़लती मालूम हुई। उन्होंने सामंत वासिली शुइस्कीके नेतृत्वमें नक़ली दिमित्रीको मार डाला। वासिली खुद सिंहासनपर बैठा; दक्षिणके कुछ सामन्तोंने वासिलीको जार नहीं स्वीकार किया। उन्होंने पहलेवाले दिमित्रीको न मरा कहकर एक और दिमित्रीके पक्षमें विद्रोह किया। इसी समय किसानोंमें भी धनी ज़मींदारों और सामन्तोंके ख़िलाफ़ भाव फैल रहा था। किसानोंका नेता था इवान बोलोत्निकोफ़, बोलोत्निकोफ़की सेना मास्कोकी दीवारोंके बिलकुल पास (कोलो-मेन्स्कोये गाँव) तक चली आई थी, लेकिन यहाँ उसे हारना पड़ा।

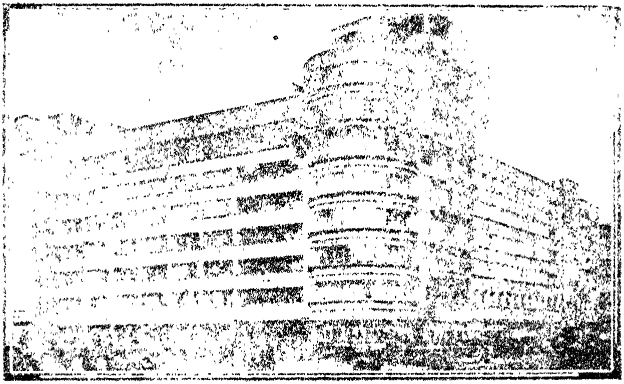
इधर दूसरे दिमित्रीके पक्षमें होकर पोलोंने कसाक और दूसरे असन्तुष्ट समुदायको लेकर मास्कोपर धावा बोला। मास्कोसे चन्द मील पर तुशिनो (एक क़िलाबन्द) गाँवमें वह ठहरा। इस प्रकार वासिली शुइस्की और द्वितीय दिमित्री दो जार हुए। पीछे दोनोंको हटाकर पोलिश सामन्त ब्लादिस्लाव जार बना। पोल मास्कोके शासक हुए। उनका बर्ताव रूसियोंके साथ खराब था। वह अपनेको विजेता और रूसियोंको रैयत समझते थे। रूसियोंको इससे बड़ी आत्मग्लानि हुई। निज्नी नोव्गोरद् (वर्तमान गोर्की)के व्यापारी मिनिन्ने घूम घूमकर देशकी स्वतंत्रताके लिए धन जमा किया और सामन्त पोज़ार्स्कीने उसकी मदद की। १८२६में इन दोनोंके स्मृति-चिह्न लाल-मैदानमें बने।

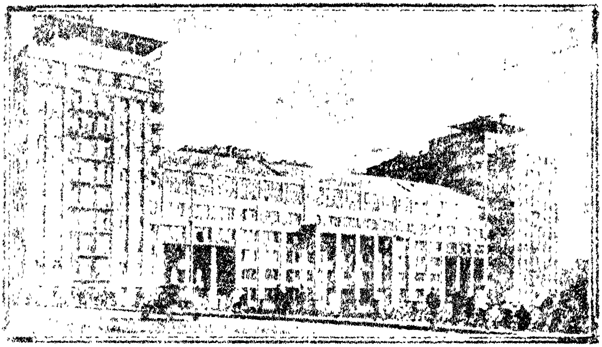
अन्तमें १६१२में (जब कि जहाँगीर नूरजहाँकी सहायतासे हिन्दुस्तानपर शासन कर रहा था) एक सामन्त मिख़ाइल् रोमनोफ़् (१६१३--३५ ई०) पोलोंको हराकर खुद सिंहासनपर बैठा। इस प्रकार १६१३से लेकर १९१७ तक—३०४ वर्ष—रोमानोफ़्-वंशने रूसपर शासन किया। इसके शासन-कालमें भी किसानोंने विद्रोह किया, लेकिन उसे सामन्तों और अमीरोंकी मददसे दबा दिया गया।



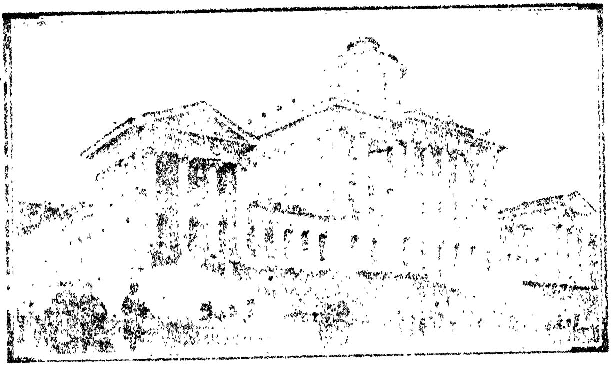
मास्को—भूगर्भी रेल स्टेशन (पृष्ठ ३६०)



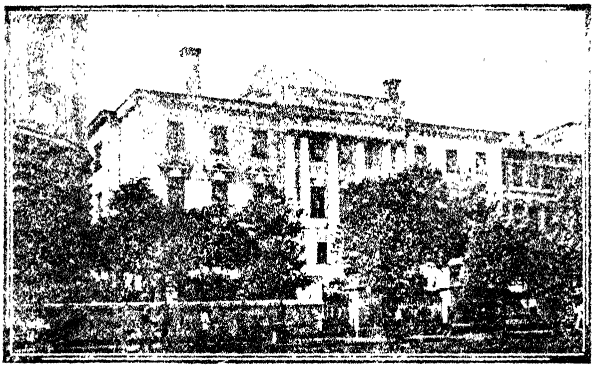








[illegible]



[illegible]

प्रथम रोमानोफ़्के पुत्र अलेक्सी मिखाइलोविच् (१६४५--१६७५)के शासन कालमें फिर जनताने विद्रोह किया। इस विद्रोहको नमक-विद्रोह (१६४८) कहते हैं; क्योंकि यह नमकपर कर लगानेके खिलाफ़ हुआ था। १६६२में ताम्र-विद्रोह हुआ था। ज़ार ताँबेका पैसा चलाकर चाँदीके भाव बेचना चाहता था। अलेक्सीके अन्तिम शासनकाल (१६६७--७१)में वोल्गा और उरालके किसानोंने स्तेपन् राज़िन्के नेतृत्वमें ज़मींदारोंके ख़िलाफ़ घोर-विद्रोह किया। विद्रोहमें किसानोंको हारना पड़ा और राज़िन्को मास्कोमें लाकर प्राणदंड दिया गया। एक सौ साल बाद (१७७३--१७७५) फिर किसानोंने येमेल्यन् पुगाचेफ़्के नेतृत्वमें ज़मींदारोंके ख़िलाफ़ बगावत की। कज़ानके ग़रीब किसानोंकी हार हुई और मास्कोमें लाकर पुगाचोफ़्का सिर काटा गया। अठारहवीं सदीके आरंभमें मास्कोकी महिमा काफ़ी घट गई, जब प्रथम पीतरने १७०९में मास्कोको बदलकर बाल्तिकके तटपर अपने बसाये पीतर्-बुर्ग नये नगरको अपनी राजधानी बनाई। इतना होनेपर भी व्यापार, गृहशिल्प और उद्योग-धंधेके कारण मास्को अपनेको काफ़ी सँभाल सका।

१७वीं १८वीं सदीमें मास्कोकी जनसंख्या धीरे धीरे बढ़ती ही रही। क्रेम्लिन् अब भी शासन-केन्द्र था। उससे पूर्व किताईगोरद् और उसके बाहर बेलीगोरद् थे। ये प्राकारसे घिरे हुए थे। किताईगोरद्की दीवारें अभी हालमें (१९२४में) गिराई गई। बेलीगोरद्का प्राकार १८वीं शताब्दीके उत्तरार्द्धमें गिराया गया। सड़कें केन्द्र (क्रेम्लिन्)से चारों ओरको निकलती थीं; और वे बीचकी वृत्ताकार दीवारोंके द्वारोंको पार करती थीं। उस समयके मकान अधिकतर लकड़ीके थे। १८१२में नेपोलियन्की फ़ौज मास्कोमें दाख़िल हुई। उस समय आग लगनेसे बहुतसे मकान जल गये। लेकिन जब नेपोलियन्की फ़ौज चली गई, तो

कई अच्छे अच्छे मकान बने। १८२०के बने कितने ही अच्छे मकान आज भी मौजूद हैं।

पीतरबुर्गकी तरह मास्को भी कला और शिक्षाका केन्द्र रहा। १८वीं सदीके मध्यमें रूसका पहला विश्वविद्यालय मास्कोमें बना। मास्को विश्वविद्यालयने रूसी शिक्षाके इतिहास और सार्वजनिक विचारके निर्माणमें १८३०--१८४०में बड़ा काम किया।

१८४०में मास्कोमें कपड़े बनानेकी पहिली मिल् स्थापित हुई; लेकिन मज़दूरोंकी कमीसे काम आगे नहीं बढ़ा। १८६०में जब किसानोंको अर्द्धदासतासे मुक्त कर दिया गया, तो खेतिहर मज़दूर फैक्टरियोंमें भरती होने लगे। कहनेको किसान स्वतंत्र कर दिये गये थे, लेकिन अब भी उनकी भूमिके मालिक जमींदार थे।

१८६०से पहले मास्को अधिकतर धनी जमींदारोंके रहनेकी जगह थी; और उन्हींके बड़े बड़े महल नगरकी शोभा बढ़ाते थे। पीछे हथियार बनानेका कारखाना, बुननेकी मिल और कमकरोंकी बैरक शहर-की बाहरी ओर बनने लगे। १६वीं और २०वीं सदीमें मास्कोमें कई नाट्यशालाओं, चित्रशालाओं और बृहद् प्रकाशन-गृहोंकी स्थापना हुई। अन्तमें पूँजीपतियों और व्यापारियोंके हाथोंमें म्युनिसिपल शासनका काम चला गया। लेकिन ये पूँजीपति शासक शहरके पुनर्निर्माणमें असमर्थ थे, क्योंकि हर एक सड़कको सीधी और चौड़ी करनेमें वैयक्तिक सम्पत्तिका सवाल आ जाता था।

राजनैतिक क्षेत्रमें मास्कोके पूँजीवादी जारशाहीकी निरंकुशताको पसन्द नहीं करते थे, लेकिन तो भी वह मिश्रीकी डली मुँहमें डालकर 'हुजूर सरकार माँ बाप'के साथ कुछ नर्म-नर्म आलोचना भर कर सकते थे। कभी कोई ज़बान निकालनेमें थोड़ा आगे भी बढ़ता था, तो भी क्रान्ति और उसके आन्दोलनका विरोध करना वह अपना फ़र्ज़ समझता था। १६०५में कमकर स्वतंत्रताके लिए जारशाहीसे लड़ रहे थे। उनके

दबानेके लिए जब पीतरबुर्गसे सेना आई, तो मास्कोके पूंजीवादियोंने उसका स्वागत किया। अगस्त १६१७में भी ऐसा ही हुआ। उस वक्त मास्कोके एक धनी पूँजीवादी स्यावोशिन्स्कीने सारे रूसके व्यापारियों और कारखानादारोंके प्रतिनिधियोंकी काँग्रेस बुलाई थी, और प्रस्ताव पास किया था कि सभी कारखानोंके दरवाजोंमें ताला लगाकर "भूखके कोमल हाथों" से क्रान्तिका गला घोट् देना चाहिए। लाल-क्रान्तिके समय भी उन्होंने ऐसा ही किया। पेत्रोग्राद्की अपेक्षा यहाँ अधिक लड़ाई और खूनखराबी हुई थी। मास्कोके पूँजीवादियोंने मेन्शेविकों और समाजवादी क्रान्तिकारियोंको सोवियत्के खिलाफ़ मदद दी थी। उनके विरोधके शान्त होनेपर भी ये पूँजीवादी चुप नहीं हुए; और वर्षों क्रान्तिके विरोधमें षड्यन्त्र और नव-निर्माणके काममें रुकावट पैदा करते रहे।

१८८०के बाद रूसके क्रान्तिकारी आन्दोलनने एक नया रूप धारण किया, और मार्क्सवादको स्वीकार किया। १८६०में व्यापार खूब चमका; लेकिन उसीके साथ साथ मजदूरोंने अपनी तकलीफ़ोंको दूर करनेके लिए एकके बाद एक हड़तालें कीं। पहले ये हड़तालें वेतन तथा अन्य शिकायतोंके लिए हुई थीं, लेकिन पीछे इन्होंने राजनैतिक रूप धारण किया। "श्रमिक स्वातंत्र्य"ने इस आन्दोलनको बढ़ाया। १८७३में प्लेखानोफ़्के नेतृत्वमें मार्क्सवादके सुप्रचारके लिए इस संस्थाका संगठन विदेशमें किया गया। रूसमें प्रचार ग़ैरकानूनी तरीक़ेसे करना पड़ता था। विचारोंके प्रचारके लिए कितने ही स्वाध्याय-केन्द्र बने थे। १८८०से १८६० तकके समयमें इस तरहके बहुतसे केन्द्र मास्कोमें स्थापित हो चुके थे। फिर मास्कोसे निकलकर इन संस्थाओंका प्रचार तुला, इवानोवो, खरकोफ़् आदि शहरोंमें होने लगा। जब्तकी हुई पुस्तकें बराबर प्रचारित होती थीं।

लेनिन्से पहले इस कामने उतनी जड़ नहीं पकड़ी थी। १८६३में

लेनिन् पहली बार मास्को आये और वहाँ मध्यमवर्गी शिक्षित प्रतिनिधियों और विद्यार्थियोंकी एक सभा में वाद-विवाद किया। उनकी युक्तियोंका नौजवानोंपर बड़ा असर हुआ।

१८६३–६४में लेनिन्के नेतृत्वमें "श्रमिक स्वतंत्र्य-युद्ध-संघ" नामकी गैरक़ानूनी संस्था पहले पीतरबुर्गमें स्थापित हुई और पीछे मास्कोमें भी। इस संस्थाने सभी राजनैतिक केन्द्रोंको एक सूत्रमें बद्ध कर दिया।

बोल्शेविक पार्टीका पहले नाम था 'रूसी जनसत्ता समाजवादी श्रमिक दल'। इसकी पहली कांग्रेस १८६८में मिन्स्क में बुलाई गई थी; लेकिन जो केन्द्रीय समिति वहाँ चुनी गई, वह चन्द दिनों बाद ही गिरफ़्तार हो गई और सिर्फ 'रूसी जनसत्ताक समाजवादी श्रमिक दल' नाम मात्र बाकी रह गया।

क्रान्तिकारी मार्क्सवादके सिद्धान्तोंका प्रचार करनेके लिये लेनिन्ने १६००के अन्तमें "इस्क्रा" (चिनगारी) पत्र निकाला। दो साल बाद उक्त जनसत्ताक-समाजवादी-दलकी (१६०३) दूसरी कांग्रेस बुलाई गई। इस कांग्रेसमें पार्टीमें मतभेद होकर दो टुकड़े हो गये। बहुमत लेनिन्-के पक्षमें था। बहुमत पक्ष या बोल्शेविक पार्टी लेनिन्के नेतृत्वमें अलग हो गई। मेन्शेविक या अल्पमत पक्ष मर्तोफ़, अखिल्रोद् आदिके नेतृत्व-में अलग काम करने लगा। मास्कोकी क्रान्तिकारी संस्थाएँ लेनिन्के अनुयायियोंके साथ थीं।

१६०२–३में रोस्ताव् (दोन्पर) बाकू, अदेस्सा आदि जगहोंमें भी हड़तालें शुरू हुईं। इनका संबंध राजनीतिसे स्पष्ट था। उक्रइन् और वोल्गाकी उपत्यकामें किसानोंके आन्दोलन छिड़े। चारों तरफ़ वायुमंडल गर्म हो पड़ा और अन्तमें ६ जनवरी १६०५के हत्याकांड—जो कि पीतरबुर्गमें शरद्-प्रासादके सामने ज़ारकी आज्ञासे हुआ था—के बाद इसने क्रान्तिका रूप धारण कर लिया।

अप्रेल-मई १९०५में तृतीय पार्टी काँग्रेस—जो सिर्फ बोलशेविकों की थी—बैठा। उसने सशस्त्र युद्धकी तैयारीका प्रस्ताव स्वीकृत किया। जूनके महीने तक मास्कोके बोल्शेविकोंने कमकरोंकी सैनिक टुकड़ियाँ बनानी शुरू की। धन जमा किया गया। बारूदवाले हथियार खरीदे गये। पार्टीकी प्रार्थनापर कमकरोंने खुद नाना प्रकारके हाथके बने हथियार तैयार किये। सोकोल्निकी, इज्माइलोवो और दूसरे जंगलोंमें चाँदमारीका अभ्यास किया जाता था।

इस सालके अगस्त-सितंबरके महीनोंमें मास्कोकी उच्च शिक्षण-संस्थाएँ—विशेष कर विश्वविद्यालय—क्रान्तिकारी संस्थाओंके केन्द्र बन गये। क्रान्तिके इस भयंकर तूफ़ानको देखकर ज़ारशाही घबरा गई। उसने आजकलके फासिस्टोंकी तरह 'काले सैकड़ों'को संगठित किया कि वह क्रान्तिकारी आन्दोलन और मज़दूर-संगठनके नेताओंपर प्रहार करें। इसी दलने मास्कोके प्रमुख बोल्शेविक् बौमान्को मारा। जब इस शहीदकी अर्थी निकली, तो उसके साथ एक लाख आदमी थे। अब तक रूसमें ज़ारशाहोंके खिलाफ़ इतना बड़ा प्रदर्शन नहीं हुआ था। इस प्रदर्शनको मास्कोकी बोल्शेविक् समितिने संगठित किया था। वे मास्कोमें रहनेवाली पलटनोंमें भी क्रान्तिकारी आन्दोलनको बड़े ज़ोरसे फैला रहे थे। प्रायः हर एक पलटनके सैनिकों—और कसाकों तक—ने अपनी माँगें अफ़सरोंके सामने पेश कीं।

१९०५की गर्मियोंमें फिर सारे देशमें हड़तालोंका ताँता बँधा। अक्तूबरमें एक सार्वजनिक हड़ताल हुई, जिसमें तार-घर, डाकखाने और रेलों तकके कमकर शामिल थे। इससे घबराकर ज़ार ने ३० (१७) अक्तूबर १९०५को जनताको कुछ अधिकार देनेकी घोषणा की, लेकिन आन्दोलन दबा नहीं। सारे देशमें कमकर प्रतिनिधियोंकी सोवियतों द्वारा लड़ाईकेलिए जनताका एक नये ढंगका संगठन हुआ। ५ दिसंबर (२२ नवम्बर)को कमकर प्रतिनिधियोंकी सोवियत् मास्कोमें बनाई

गई। इसमें सभी क्रान्तिकारी दलों, मज़दूरसंघों आदिके प्रतिनिधि सम्मिलित थे। सैनिक-प्रतिनिधि-सोवियत् भी स्थापित हुई, लेकिन उसकी बैठक एक ही बार हो पाई। १९ (६) दिसम्बर को मास्का-सोवियत्ने दूसरे दिन दोपहरसे सार्वजनिक हड़तालका प्रस्ताव पास किया। इसी हड़ताल को सशस्त्र युद्धमें परिणत करना था। निश्चित समयपर सभी कारखाने और रेलें बन्द हो गईं। २२ (६) *तारीखको मास्कोमें जगह जगह मोर्चेबन्दियाँ हो गईं। सारी जनताने बाढ़ लगानेमें मदद की। लड़नेवालोंके लिए लोग भोजन लाते थे, और अपने घरोंमें उन्हें छिपाते थे। उसी दिन सरकारी फौजोंने फ़िद्लर हाई स्कूलको घेरकर गोलाबारी शुरू की। यहाँ मुकाबलेमें थे अधिकतर स्कूलके नौजवान। मास्कोमें यह लड़ाई १० दिन (३१ दिसम्बर) तक जारी रही। लाल प्रेस्न्याके कमकरोंने अपनी वीरताका जबर्दस्त परिचय दिया। यद्यपि ज़ारकी भारी सेनाके सामने उन्हें हारना पड़ा, लेकिन कौन कह सकता है कि उनकी कुर्बानियाँ बेकार गईं। लाल प्रेस्न्याके कमकरोंको पत्र लिखते वक्त १९२०में लेनिन्ने कहा था—"दिसबर १९०५के सशस्त्र विप्लवके पहले रूसी जनता शोषकोंके विरुद्ध सामूहिक सशस्त्र युद्धके संचालनमें अयोग्य थी, लेकिन दिसम्बरके बाद फिर वह वही जनता नहीं रह गई। वह बिलकुल बदल गई। विप्लवने उन्हें पक्का कर दिया। उसने उन लड़ने वाले अगुओंको तैयार किया, जो १९१७में विजयी हुए।"

१९०५का विद्रोह दबा दिया गया और चारों तरफ़ निर्जीविता सी दिखलाई पड़ने लगी। लेकिन बोल्शेविक पार्टीने अपने कामको एक मिनट भी बन्द नहीं किया। ये बोल्शेविक ही थे, जिन्होंने फरवरी-मार्च १९१७ की प्रथम क्रान्ति करानेकेलिए सारा आयोजन किया। मास्कोके कमकरोंने पेत्रोग्राद्के कमकरों और सिपाहियोंके कामोंमें सहायता पहुँचाई।

*पुरानी रूसी तारीखें अँगरेज़ी तारीखोंसे १३ दिन पीछे रहा करती थीं।

बोल्शेविकोंका बल बढ़ते देख करेन्स्कीने यह सोचकर मास्कोमें राज्य-कान्फ्रेंस बुलाई कि इस प्रकार वह पेत्रोग्राद्के कमकरों और सैनिकोंके क्रान्तिकारी प्रभावसे बचाकर अपने मतलबके प्रस्ताव पास करा सकेगा। लेकिन इसका स्वागत मास्कोके कमकरोंने एक सार्वजनिक हड़ताल द्वारा किया। १८ (५) सितंबर (१९१७)को मास्कोके कमकरों और सैनिकोंके प्रतिनिधियोंकी सोवियत्ने बोल्शेविकोंके प्रस्तावको स्वीकृत करते हुए कहा —"सभी राज्य-शक्ति सोवियतों को।"

पेत्रोग्राद्की तरह मास्कोने भी विजयी लाल-क्रान्तिमें भाग लिया। मास्कोके बोल्शेविकोंने युद्ध-संचालनकेलिए सैनिक-क्रान्तिकारिणी-समिति स्थापित की। पूँजीवादी दलोंने मेन्शेविकों और समाजवादी क्रान्तिकारियोंके साथ मिलकर सार्वजनिक-रक्षा-समिति स्थापित की। इस समितिने धनिक सैनिकों (कैडेट)की मजबूत शक्तिसे मिलकर क्रान्तिका ज़बर्दस्त मुक़ाबला किया। ९ नवंबर (२७ अक्तूबर) से १५ (२) नवंबर तक खूनी गृहयुद्ध, मास्कोके चौकों और सड़कोंपर तथा क्रेमलिन्की चहारदीवारियोंके चारों तरफ़ होता रहा। कमकरोंने सभी कारखानों और फैक्टरियोंसे निर्वाचितकर अपना लाल गारद कायम किया। क्रान्तिकारी पलटनोंसे मिलकर इस लाल गारदने क्रान्ति-विरोधियोंके साथ लोहा लिया। कैडेटों और अफ़सरोंने क्रेमलिन्की मोर्चाबन्दी खूब की थी। ५ दिनकी लड़ाईके बाद—जिसमें क्रान्तिकारी कमकरों और सैनिकोंने अभूतपूर्व त्याग और साहसका परिचय दिया—दुश्मनोंने अधीनता स्वीकार की। इस लड़ाईमें क्रान्ति-विरोधियोंने गिर्जोंके घंटाघरों तकपर मशीनगनें बैठाई थीं और ईसाई पुरोहितों और उनके धर्मकी सहायता और सहानुभूति क्रान्ति-विरोधियोंके साथ थी। क्रेमलिन्के लिए लड़नेमें क्रान्तिकारी बहुत संख्यामें मारे गये। लाल मैदान पर क्रेमलिन्की दीवारोंके पास इन वीरोंकी सामूहिक समाधि बनी हुई है।

क्रान्तिकी विजय हुई। १५ (२) नवंबर १९१७को मास्कोमें सोवियत् शासनकी दृढ़ नींव पड़ी। २५ (१२) मार्च १९१८को—२०० वर्ष बाद—मास्को फिर राजधानी बना। लेकिन अब वह ज़ारकी राजधानी न थी, बल्कि संसारके सर्व प्रथम साम्यवादी सरकारकी राजधानी थी। पेत्रोग्राद्से राजधानीको मास्को बदलनेकी बात जब लेनिन्ने कही, तो लोगोंने कहा—"क्रान्तिके युद्धकी सफलता और उस वक्तकी कितनी ही आरम्भिक घटनाएँ पेत्रोग्राद्में हुई हैं, इसलिए जनताके भावुक हृदयको उस नगरसे विशेष प्रेम हो गया है।"

लेनिन्ने कहा—"भावुकता पैदा करनेवाला सोवियत्-शासन है। मास्को चले जानेपर लोगोंका वैसा ही प्रेम मास्कोके साथ भी हो जायगा।"

* * * * * *

(ग) नव-निर्माण—सोवियत् शासनकी स्थापनाके समय रूसके अन्य भागोंकी तरह मास्कोकी भी आर्थिक अवस्था नष्टप्राय हो चुकी थी; महायुद्धके समय उसके जन धनका दोहन हुआ था। १९१७—२०में घर और बाहरके शत्रुओंने सोवियत् सरकारपर ज़बर्दस्त प्रहार करना शुरू किया। इस प्रकार मास्कोके पुनर्निर्माणकी तो बात ही क्या, ईंधन और कच्चे मालके अभावसे रही सही फैक्टरियोंमेंसे भी बहुत सी बन्द हो गई।

गृह-युद्धकी समाप्तिके बाद पुनर्निर्माणका काम शुरू हुआ। बन्द हुई फैक्टरियों और कारखानोंको फिरसे चालू किया गया। मास्कोकी म्युनिसिपलिटीकी हालत भी धीरे-धीरे सुधरने लगी। पहले पहल कम्युनिस्ट पार्टी और सरकारका सारा ध्यान उद्योग और कृषिकी ओर था; लेकिन प्रथम और द्वितीय पंचवार्षिक योजनाओंने—विशेषकर १९३१के बाद—नगरके जीवनमें भारी परिवर्तन किया। १० जुलाई १९३५को सरकार और पार्टीने मास्कोके पुनर्निर्माणकी दस वार्षिक योजना स्वीकार की जो कि १९४५में खतम होगी। इस योजनाके अनुसार

अभी ही मास्कोकी सड़कों और मकानोंमें भारी परिवर्तन होने लगा है; और सारी योजनाके समाप्त होनेके बाद तो उसका रूप ही बदल जायगा।

मास्कोके पुराने मुहल्लों—जहाँ कमकरोंकी दरिद्रता साकार रूप धारण किये रहती थी—का अब पता नहीं। उन जगहोंपर अब चौतल्ले पंचतल्ले हवादार साफ़ मकान हैं। स्कूल, अस्पताल, प्रसूति-गृह बने हैं। पानी, बिजली, गैस, पाखानेके पंपोंका इंतजाम है। दो ज़मीनके भीतर जानेवाली रेलें तैयार हो गई हैं और तीसरी बन रही है। मास्को पहले जितना पानी ख़र्च करता था, अब उससे ६ गुना ज्यादा ख़र्च करता है। सड़कोंका क्षेत्रफल २० गुना बढ़ा है।

(घ) उद्योग—(प्रथम पंचवार्षिक योजना)—ज़ारशाहीके जमानेमें भी मास्को उद्योग-केन्द्र था। लेकिन क्रान्तिके बाद फैक्टरियों और कारखानोंका जो परिवर्तन और परिवर्द्धन हुआ है, इसका उससे मुक़ाबला नहीं किया जा सकता। भारी उद्योग[1] बहुत तेज़ीसे बढ़ा है। हलका[2] उद्योग और खाद्य-उद्योगका जड़मूलसे पुनर्निर्माण हुआ है। मशीनोंमें नयेसे नये आविष्कारोंका प्रयोग किया गया है।

कुछ उद्योग तो बिलकुल नये—मास्को हीके लिए नहीं, बल्कि सारे देशके लिए—स्थापित हुए हैं। मोटर, माप-यंत्र, घड़ी, एनिलाइनके रंग, बाइसिकिल, बिजलीका सामान, आदि चीज़ें बनानेवाली फैक्टरियाँ इसी प्रकारकी हैं। संसार-प्रसिद्ध फैक्टरियाँ स्तालिन्-मोटर-फैक्टरी,

१लोहे, कोयले आदि आरंभिक वस्तुओंके उत्पादन तथा कपड़े आदि बनानेवाली मशीनोंको बनानेवाले कारख़ाने—अर्थात् उद्योगके मूलभूत उद्योगको भारी उद्योग कहते हैं।

२भारी उद्योगसे उत्पन्न सामग्रियोंसे लेकर आगे चलनेवाला उद्योग हलका उद्योग कहलाता है।

हँसुआ-हथौड़ा-फैक्टरी, कुइबिशेफ़्-विद्युत-कारखाना आदि तो प्रायः शून्य से आरंभ हुए हैं।

स० स० स० र०के उद्योगका १५ सैकड़ा मास्कोमें है। १९३६के आरंभमें मास्कोमें २२१० कल-कारखाने थे। सोवियत्के भारी उद्योगकी उपजमें मास्कोका हाथ ५२·३ सैकड़ा (१९३६) है। १९३५में जितना माल मास्कोके कारखानोंने बनाया, वह लड़ाईसे पहलेका दस गुना था। मास्कोके सभी कल-कारखाने समाजके हैं; व्यक्ति कहीं मालिक नहीं है। १९३५में यहाँके कल-कारखानोंमें १९ लाख कमकर थे।

द्वितीय पंचवार्षिक योजना—प्रथम पंचवार्षिक योजनाके अन्तिम सालमें मास्कोके उद्योग-धंधोंने ४॥ अरब रूबलका माल तैयार किया था। द्वितीय पंचवार्षिक योजनाके अन्त (१९३७)में उसने १० अरब रूबलका माल तैयार किया। इसीसे मालूम कर सकते हैं कि मास्कोके कल-कारखानोंमें कितनी तरक्की हो रही है। सरकार अब अधिक उद्योग-धंधे मास्कोमें नहीं बढ़ाना चाहती। वह चाहती है कि उद्योग-धंधे सारे देशमें बराबर बँटे जिसमें अधिक जन और धन एक ही जगह जमा न हों तथा लड़ाईके वक्त बहुत संकटका सामना न करना पड़े।

द्वितीय पंचवार्षिक योजनामें प्रथमकी अपेक्षा मोटरोंकी उपज चौगुनी बढ़ गई। दूसरी मशीनोंकी तीन गुनी, और बारीक यंत्रोंकी बारह गुनी। ३० अगस्त १९३५को दोनेत्सकी कोयलेकी खानमें अलेक्सी स्तखानोफ़्ने ४ साथियोंकी मददसे ६ घंटेके भीतर ७ टनकी जगह १०२ टन कोयला खोद निकाला था, जिसने वहीं श्रमकी शक्तिको नहीं बढ़ाया बल्कि स्तालिन्के उत्साह दिलानेके कारण आज स्तखानोफ़् आन्दोलन सारी सोवियत्-भूमिमें फैल गया है। मास्कोके कारखानोंमें तो, इस आन्दोलनका खास तौरसे अधिक प्रचार है। यहाँके सैकड़ों स्तखानोफ़ी कमकरोंने बड़ेसे बड़े सरकारी पदक और पारितोषिक प्राप्त किये हैं।

मास्कोमें ११ रेलें मिलती हैं, इसीलिए माल और मुसाफ़िरोंका आना जाना बहुत ज्यादा है। १९३५में यहाँ २ करोड़ २२ लाख मेट्रिक टन (१ टन = ·९८४ टन या २५ मनसे कुछ ऊपर) मालमें १ करोड़ ८८ लाख टन माल आनेवाला और ३४ लाख टन माल जानेवाला था। हर साल यह बढ़ रहा है; और यूरोपमें लन्दन, बर्लिन या किसी और जगह इतना माल आता जाता नहीं।

मुसाफ़िरोंके यातायातमें भी इसी तरह वृद्धि हुई है। युद्धके पहले मास्कोमें १ करोड़ ६० लाख मुसाफ़िर आने जानेवाले थे; लेकिन १९३५ में उनकी तादाद १४ करोड़ ५ लाख हो गई। शहरके बाहरी छोरोंपर रहनेवाले मुसाफ़िरोंमें और भी ज्यादा वृद्धि हुई है। जहाँ युद्धसे पहले ऐसे मुसाफ़िरोंकी तादाद सवा करोड़ थी, वहाँ १९३५में १३ करोड़ ४५ लाख हो गई। अब शहरके छोरोंपर जानेवाली सभी रेलें बिजलीसे चलती हैं। नई योजनामें मालके स्टेशनोंको शहरकी सीमासे बाहर रखना तय किया गया है और सुरंगोंके द्वारा मास्कोमें आनेवाली रेलोंका सम्बन्ध जोड़ा जा रहा है।

(ङ) मास्को-वोल्गा नहर—मास्को प्रान्तमें बहुत सी नदियाँ हैं। इन नदियोंके ज़रिये देशके दूसरे भागोंसे मास्कोका सम्बन्ध जोड़नेका सरकारको खयाल आया। इससे पहले उसने बाल्तिक-समुद्र और श्वेत-समुद्रको नहरोंसे मिला दिया था। दो सालके परिश्रमके बाद उसने १२८ किलोमीतर (प्राय: ८० मील) लंबी ८५·५ मीतर (२५० फ़ीटसे अधिक) चौड़ी और ५·५ मीतर (१७ फ़ीट)से अधिक गहरी नहर खोदकर वोल्गा-को मास्को नदीसे मिला दिया। इस नहरके ज़रिए मास्को और यऊज़ा नदियोंका पानी और गहरा हो गया है। मास्कोमें १५० किलो-मीतर तथा यऊज़ामें ५९ किलोमीतर लंबा गहरा जलमार्ग तैयार हुआ है। कुल मिलाकर २४० ताले, पंप-स्टेशन, छोटे स्टेशन, बिजलीके पावरहाउस और पुल इस नहरपर बनाये गये हैं। मास्को-वोल्गा नहर

संसारमें अपने किस्मकी सबसे बड़ी नहर है। इस नहरके द्वारा कास्पियन, बाल्तिक् और श्वेतसागरके स्टीमर अब मास्को पहुँचने लगे हैं। पूर्वी देशोंसे इमारत बनानेका सामान दक्षिणसे अनाज और कोयला, कास्पियनसे मछली और पेट्रोल, करेलियासे क़ाग़ज़ बनानेका पल्प, वोनेगा झीलके तटसे संगखारेकी पट्टियाँ और श्वेत सागरसे एपेटाइट (रसायनिक खाद) अब मास्को पहुँचने लगी हैं। हर साल डेढ़ करोड़ टन माल आनेका प्रबन्ध है। इसके साथ ही इस नहर द्वारा मारीइन्स्क नहर-जाल (श्वेत सागर और बाल्तिक् सागरको मिलाने वाली नहरें)की दूरी १ हजार किलोमीतर कम हो गई। इसके साथ नहरने एक और बड़ा काम किया है। उसने ६॥ लाख घनमीतरकी जगह ४० लाख घनमीतर पानी प्रतिदिन मास्को नगरको देनेके लिए मास्को नदीको तैयारकर दिया। इस नहरके कारण मास्को (मास्क्वा) यऊज़ा और म्स्त्रोदून्या नदियोंका पानी बहुत बढ़ गया है।

शिक्षा—मास्कोके प्रारंभिक और हाई स्कूलों तथा विश्वविद्यालयोंमें पढ़नेवाले विद्यार्थियोंकी संख्या ६ लाख १४ हज़ार है। इनमें वे विद्यार्थी नहीं गिने गये हैं, जो थोड़े थोड़े समयके पाठ्य विषयोंको लेकर फैक्टरियों के स्कूलों तथा दूसरी जगह पढ़ते हैं। १९३७में मास्कोने २५ करोड़ रूबल (१२ करोड़ रुपया) अपने नगरकी शिक्षापर खर्च किया। १९३८के बजटमें ३७ करोड़ ६० लाख रूबल (प्रायः १८ करोड़ रुपया) खर्च किया जानेवाला है। इसमेंसे ७॥करोड़ रूबल मास्कोके ६० नये स्कूलोंकी इमारतें बनानेमें खर्च होंगे। ये मकान नये ढंगके बनेंगे। हर एक स्कूलके साथ साथ बच्चोंके क्लबघर, स्वाध्याय-केन्द्र आदि भी शामिल होंगे। हाई स्कूलोंमें १९३६की अपेक्षा १९३७में ४२ हज़ार विद्यार्थी अधिक बढ़े हैं। १९३८में ६॥ हजार विद्यार्थी हाई स्कूलसे निकलेंगे। विद्यार्थियोंको विशेष छात्रवृत्ति देनेके लिए २२ लाख रूबल (१० लाख रुपयेसे ऊपर) अलग रखे गये हैं। १९३८के बजटमें २१ लड़कोंके क्लब,

२४ बालचर-भवन, १७ टेकनिकल स्टेशन, ८ क्रीड़ाकेन्द्र, ८ घुमक्कड़-निवास, २ शिशुकला-शिक्षणगृह, १ ललित-कला-विद्यालय, १५ बालपुस्तकालय, १ बालचर-कैम्प, अनेक तैराकी स्थान, और बालकोंके उद्यान तथा क्रीड़ा-क्षेत्र बनाने मंजूर हुए हैं। इसके लिए ३ करोड़ ५ लाख रूबल अलग रखा गया है। १९३७में इस मदमें १ करोड़ ही खर्च किया गया था। १९३८में मास्कोमें भी एक विशाल बालचर-प्रासादके निर्माणकी योजना तैयार होने वाली है।

विद्यार्थी ७वें सालमें जानेपर स्कूलमें भेजे जाते हैं। स्कूली अवस्थाके पहलेके लड़कोंकी शिक्षाके लिए भी मास्कोका शिक्षा-विभाग विशेष ध्यान देता है। १९३८में ८५ हज़ार ऐसे लड़के किंडरगार्टन (बालोद्यानों) में शिक्षा पा रहे हैं। नये किंडर-गार्टनोंके बनानेके लिए मास्को शिक्षा-विभागने ३ करोड़ ४० लाख रूबल मंजूर किया है। यह रक़म भी पिछले सालसे दूनी है। ३५ लाख रूबल बच्चोंकी क्रीड़ा-भूमिके बढ़ाने और हिफ़ाजत करनेमें खर्च किये जायँगे।

४ करोड़ रूबल इसलिए अलग रखा गया है कि उसे शिशुभवनों तथा और स्वास्थ्य-सम्बन्धी उपायों—विशेषकर गर्मीके दिनोंमें शहरके बाहरके हरे-भरे जंगलोंमें बच्चोंके कैम्प लगवाने—में खर्च किया जाय।

१९३८में ६ हज़ार नये अध्यापक पुस्तकाध्यक्ष, स्कूली अवस्थासे पहलेके बच्चोंके लिए तैयार होकर निकलनेवाले हैं। १४ हज़ार ५ सौ अध्यापक अपनी शिक्षण-योग्यता बढ़ानेके लिए विशेष पाठ्य-श्रेणियोंमें पढ़ रहे हैं। इसके लिए दो करोड़ २० लाख रूबल अलग रखा गया है। ४० लाख रूबल खर्च किया जा रहा है, एक ट्रेनिंग कालेजकी इमारतपर।

स्तखानोफ़्-आन्दोलनमें शारीरिक और दिमाग़ी योग्यता—दोनोंकी अधिक ज़रूरत है। इसीलिए इस आन्दोलनने कमकरोंमें ज्ञानकी प्यास बहुत अधिक बढ़ा दी है। और बहुतसे कमकर रात्रि-पाठशालाओं तथा दूसरे शिक्षणालयोंमें टेकनिकल और वैज्ञानिक विषयोंका अध्ययन कर

रहे हैं। कितने ही विदेशी भाषाओं और साहित्यकी कक्षाओंमें जुट रहे हैं। एक तरह कहा जा सकता है कि मास्कोका हर एक कमकर किसी न किसी कक्षाका विद्यार्थी है। १९३०में मास्कोमें ७ साल (८से १४वें साल)की अनिवार्य शिक्षा की गई। १९३२से इसे मास्कोके लिए १० साल कर दिया गया। निःशुल्ककी तो बात ही क्या स्कूलोंमें दोपहरके वक्त विद्यार्थियों को गर्मागर्म भोजन मिलता है, जिसके लिए बहुत कमको नाम मात्र मूल्य देना पड़ता है। गर्मियोंके दिनोंमें विद्यार्थियोंको शहरसे दूर-दूर ग्रीष्म-कैम्पोंमें भेजा जाता है। १९३६में ऐसे भेजे हुए विद्यार्थियोंकी संख्या ४२ हज़ार थी।

विद्यार्थियोंकी संख्या कितनी अधिकतासे बढ़ती जा रही है, यह इसीसे समझा जा सकता है, कि १९३५में ७२ बड़े-बड़े स्कूल बनाये गये। १९३६ में १०५ बनाये गये। और अकेले १९३८में ४०० बनाये जा रहे हैं। इन स्कूलोंकी इमारतें मामूली नहीं हैं, ३-३,४ ४ तल्लेकी इमारतें जिनमें सीमेंट, लोहा और काँच ही अधिक दिखाई पड़ते हैं। भिन्न भाषा-भाषी जातियों—जैसे तातार, मोर्दविन्, और रोमनी (जिप्सी)केलिए मास्कोमें अलग स्कूल हैं। अंग्रेज़ और अमेरिकन विशेषज्ञोंके लड़कोंकेलिए अंग्रेज़ी स्कूल भी मौजूद है।

१९३६के आरंभमें मास्कोमें १०० टेकनिकल स्कूल थे। १९१३ में सिर्फ़ २२ स्कूल सो भी बहुत छोटे छोटे। १९१३में इन स्कूलोंमें पढ़नेवाले लड़कोंकी संख्या ६००० थी, और १९३६में ३५०००। १९३६में कमकरोंके विशेष शिक्षणालय (रबफ़क्) ३२ थे जिनमें २० हज़ार विद्यार्थी थे। इन शिक्षणालयोंका सम्बन्ध विश्वविद्यालयोंसे है और इनमें पढ़ाई हाई स्कूल जैसी होती है। यहाँ तैयारी करके विद्यार्थी फिर उच्च शिक्षाकेलिए आगे बढ़ सकते हैं। क्रान्तिके पहले ऐसे स्कूलोंका नाम न था। १९३६के आरंभमें फैक्टरी उम्मेदवारोंके ११८ स्कूल थे, जिनमें २० हज़ार विद्यार्थी ५४४ प्रकारके विषयोंको

पढ़कर अपनी योग्यता बढ़ाते थे। क्रान्तिके पहले उच्च शिक्षाके ३६००० विद्यार्थियोंकेलिए १३ शिक्षणालय थे। किसानों, कमकरों और पिछड़ी जातियोंका शायद ही कोई विद्यार्थी इनमें पढ़ सकता था। लेकिन क्रान्तिके बाद मास्कोके कालेजों और विश्वविद्यालयमें पढ़नेवाले विद्यार्थियोंकी संख्या ६० हज़ारसे ज्यादा है। अधिकांश विद्यार्थी सरकारी छात्रवृत्ति पाते हैं। कितने मुहल्लेके मुहल्ले ऐसे हैं जहाँ छात्र-छात्राएँ ही रहती हैं।

(छ) पुस्तकालय—१६३४के आरंभमें स्कूलों और फैक्टरियोंके पुस्तकालयोंको छोड़ देनेके बाद २०००से अधिक पुस्तकालय थे। सबसे बड़ा पुस्तकालय है, अखिल-संघ-लेनिन्-पुस्तकालय। यह पुस्तकालय जिस मकानमें इस वक्त है, उसे शिल्पी बाजेनोफ़्ने १७७०में बनाया था। लेकिन अब पुस्तकालयको और बढ़ानेकेलिए बड़ी इमारत बन रही है, जिसका एक हिस्सा तैयार भी हो गया है। १६३६में इसमें ६६ लाख पुस्तकें थीं। इस वक्त सोवियत्-संघके पुस्तकालयोंमें इसका दूसरा नंबर है। लेकिन नई योजनाके मुताबिक इसमें एक करोड़ २० लाख पुस्तकें होंगी और इस प्रकार यह संसारका सबसे बड़ा पुस्तकालय होगा। दुर्लभ ग्रंथोंके विभागमें स्वदेश और विदेशकी छपी १ लाख पुस्तकें मौजूद हैं। इनमें कितनी ही १५५० ई० के पहलेकी छपी तथा ग़ैरकानूनी रूसी क्रान्तिकारी साहित्यकी पुस्तकें भी हैं। हस्तलेख-विभागमें ६० हज़ार पुस्तकें हैं, जिनमें पुश्किन्, गोगोल् और दूसरे रूसी लेखकोंके हस्तलेख भी हैं। सड़ककी दूसरी तरफ़ साहित्य-संग्रहालय है। इसमें १७वीं शताब्दीसे लेकर २०वीं शताब्दीके प्रथम पाद तक रूसी साहित्य-संबन्धी सामग्री जमा की गई है। इसमें लेखकोंके ही जीवनके संबन्धमें नहीं, बल्कि तत्कालीन जनताके राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक जीवनसे सम्बन्ध रखनेवाली सामग्री भी जमा की गई है। हस्तलेख-विभागमें १५ लाख वस्तुएँ जमा की गई हैं, जिनमें हस्तलिखित ग्रंथ, चिट्ठियाँ, डायरी, स्मृति-ग्रंथ आदि शामिल हैं। ग्रामीण

कहानियोंसे सम्बन्ध रखने वाली ४ लाख चीज़ें इकट्ठी की गई हैं। मूर्ति-विभागमें लेखकोंके चित्र, फ़ोटो और मूर्तियाँ हैं। इसके पुस्तकालयमें ८० हज़ार पुस्तकें साहित्यके परिचय आदिके सम्बन्धमें हैं। इनमें बहुत-से उन ग्रंथोंके संस्करण हैं, जिन्हें ज़ारशाहीने जब्त या नष्ट कर दिया था। यहाँपर एक खास विभाग ऐसी पुस्तकोंका है, जिनपर लेखकोंके स्व-हस्ताक्षर मौजूद हैं।

लेनिन्-पुस्तकालयमें १९३५में ४८ हज़ार पाठक थे। वे ४॥ लाख बार पुस्तकालयमें आये। नई इमारतके वाचनालयमें ३ हज़ार आदमियोंके बैठनेकी जगह है। लाइब्रेरी की इमारतके सामनेके हिस्सेपर बहुतसे प्रसिद्ध लेखकों और राजनीतिज्ञोंकी मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं।

(ज) **मार्क्स-एँगेल्-लेनिन्-इंस्टीट्यूट**, मास्कोकी खास चीज़ है। इसके साथ कार्लमार्क्स, फ्रीड्रिख् एँगेल् म्यूज़ियम तथा केन्द्रीय लेनिन् म्यूज़ियम है। समाजवादके संबन्धकी इतनी अधिक पुस्तकें दुनियाके किसी पुस्तकालयमें नहीं हैं। यहाँ प्रथम, द्वितीय और तृतीय इन्टर-नेशनल (समाजवाद-सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रीय सभा), **पैरिस्-कम्यून्** तथा १८वीं, १९वीं और २०वीं शताब्दियोंकी कितनी ही क्रान्तियों-की मौलिक सामग्री जमा की गई है। १९३४की जनवरीमें इसमें १० लाख चीजें जमा थीं।

मास्कोमें दुनियाकी सबसे ऊँची इमारत सोवियत्-प्रासादका इस वक्त निर्माण हो रहा है। अभी इसको समाप्त होनेमें ४ साल और लगेंगे। इसके प्लेन बनानेमें सारी दुनियाके बड़े बड़े इंजीनियरोंने सहायता दी है। इसकी ऊँचाई होगी ४१५ मीतर (१३०० फ़ीटसे ज्यादा) सबसे बड़ा हाल १३६ मीतर (४०० फ़ीटसे अधिक) व्यासका गोला-कार होगा; और इसमें २० हज़ार आदमियोंके बैठनेकी जगह होगी। एक दूसरा छोटा हाल ६००० आदमियोंके बैठने लायक होगा। प्रधान

हालके ऊपर एक दूसरा हाल होगा, जिसमें श्रमिक-क्रान्तिकी अनेक अवस्थाओंको चित्रित किया जायगा। ऊपरवाले तलोंमें म्यूज़ियम रहेंगे। सारी इमारत लेनिन्की एक प्रकाण्ड मूर्तिकी पाद-पीठिका (चौकी) मात्र रहेगी। चारों तरफ पत्थरोंपर दुनियाके सभी जातियोंके जाँगर चलाने-वालोंके चित्र अंकित रहेंगे।

प्रेस—१९३६में मास्कोसे ५६ समाचारपत्र निकलते थे, जिनमें ५ प्रान्त और शहरसे संबंध रखते थे और बाक़ी अखिल-सघसे। १८५ पत्र फैक्टरियोंके थे। १० पत्र विदेशी भाषाओं और अल्पसंख्यक जातियोंके निकलते थे। नंबर २४ उलित्सा प्राव्दी (प्राव्दा सड़क)पर "प्राव्दा" पत्रका कार्यालय है। यह ८ तल का महल है। इसमें १ लाख घनमीतर (१ लाख घनगज़से अधिक) कमरे, मकान और हाल हैं। छापनेकी सभी कार्रवाई मशीनसे होती है। और छापने, काटने, बाँधने आदिका काम इतना पास पास है कि चीज़ोंके इधरसे उधर भेजनेमें देर नहीं लगती। ३६ कम्पोज़ करनेवाली मशीनें लगीहुई हैं। स्टीरियोटाइप-विभाग ६५० घनमीतरमें है। "प्राव्दा" की ग्राहक-संख्या २० लाखसे ज्यादा है। रोटरी मशीन प्रति घण्टे एक लाख 'प्राव्दा'के साइज़ (अमृतबाज़ारपत्रिकाके साइज़)की चौपेजी छपती है। स्वयं कागज खींचनेवाली मशीन २ माल-गाड़ी भर काग़ज़ एक बार लेती है। १२ मालगाड़ियाँ प्रतिदिन प्राव्दा नामक स्टेशनके माल-गोदामपर कागज़ लेकर पहुँचती हैं। इसी प्रेस से कोम्सोमोल्स्काया-प्राव्दा, (तरुण-साम्यवादी-संघ-सत्य) प्यूनिर्काया-प्राव्दा (बालचर-सत्य) और दो मासिकपत्र बोल्शेविक और क्रोकोदिल् (मगर, परिहासपत्र) भी निकलते हैं। इनके अतिरिक्त पुस्तकें भी छपती हैं। 'प्राव्दा' सोवियत्-संघकी कम्युनिस्ट पार्टीका मुख्यपत्र है। १९१८ में इसकी ग्राहक संख्या ६० हज़ार थी; १९२९ में ६ लाख ६२ हज़ार और १९३६ में २० लाख। सोवियत् सरकारका मुख्य पत्र है "इज़्वेस्तिया" जो १९२९में ४ लाख ४० हज़ार छपता था और जनवरी १९३६में १६

लाख। 'प्राव्दा'के बाद दूसरा नंबर है, किसानोंके पत्र 'क्रेस्त्यन्स्काया गजेता' (किसान गज़ट)। १९३९में यह १७॥ लाख रोज़ाना छपता था।

१९३९के आरम्भमें मास्कोसे ४६७ पत्र भिन्न-भिन्न विषयोंपर निकलते थे; जिनमें विषयके लिहाज़से १६३ टेक्निकल, ८६ सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक, ४ प्रकृतिविज्ञान और गणित, ३१ चिकित्सा-शास्त्र, २ भाषा-तत्व, ३६ साहित्य और कला, १४ श्रम और मज़दूर-संघ-आन्दोलन, २९ कृषि और कल्खोज् आन्दोलन।

मास्कोमें कई प्रकाशन संस्थाएँ हैं। 'पर्तिज्दात'—यह अधिकतर मार्क्स, लेनिन् तथा कम्युनिस्ट-पार्टीके सम्बन्धके ग्रंथोंको छापता है। १९३९में इसने ३२१ ग्रंथोंकी ७ करोड़ ६० लाख ८६ हज़ार प्रतियाँ छापीं। 'गोस्तलितीज्दात्'—इसमें स्वदेशी और विदेशी मशहूर लेखकों (जीवित और मृत दोनों)के ग्रन्थ छपते हैं। १९३९में इसने ६७८ ग्रंथोंकी सवा दो करोड़से ज्यादा प्रतियाँ छापीं। सोत्सेक्गिज्—अर्थशास्त्र और समाजतत्वपर पुस्तकें छापता है। १९३९में इसने १५५ ग्रंथोंकी २७ लाख ८१ हज़ार कापियाँ छापीं। 'ओन्ति' वैज्ञानिक और टेकनिकल विषयोंपर किताबें छापता है। १९३९में इसने २०६८ पुस्तकें छापीं। स०स०स०र०में विदेशी कमकरोंकी सहयोगी-प्रकाशक-समिति विदेशी पाठकोंकेलिए अंग्रेज़ी, फ्रांसीसी, जर्मन, पोल, चीनी, कोरियन आदि भाषाओंमें पुस्तकें छापती है।

मास्कोमें क्लबोंकी संख्या १६०से ज्यादा है। कुछ क्लबोंके नाम हैं—वैज्ञानिक-भवन, लेखक-भवन, समाचार-पत्र-भवन, सिनेमा-भवन, अभिनेता-भवन, शिल्पि-भवन, अध्यापक-भवन आदि।

नाट्यशाला—मास्कोमें नाट्यशालाओंकी संख्या ६०से ऊपर है। १९१७में इनकी संख्या २१ थी। लाल-सेना तथा दूसरी कितनी ही नाट्यशालाओंकी भव्य इमारतें बनी हैं। शामके वक्त इनका हाल

खचाखच भरा रहता है। सितंबरके पहले दो हफ़्तोंमें नाट्यमहोत्सव होता है। इसकेलिए सभी नाट्यशालाएँ पहलेसे तैयारी करती हैं। इस समय दुनियाके भिन्न-भिन्न भागोंसे नाट्यमर्मज्ञ लोग उन्हें देखनेकेलिए मास्को पहुँचते हैं। मास्कोकी सबसे पुरानी नाट्यशाला है माली-थियेटर, जिसे १८२४में स्थापित किया गया था। मास्को-कला-थियेटर—जिसे अब गोर्की कला-थियेटर कहते हैं—१८९८में स्थापित हुआ था।

लड़कोंके विनोद, म्युनिसिपलिटीका काम, स्वास्थ्य-रक्षा, जिस किसी-भी विभागको देखा जाय, मास्को सबमें बहुत आगे बढ़ा मिलता है। जुलाई १९३६में—जो मास्कोके नवनिर्माणकी योजना आरम्भ हुई है—उस-से मास्को दुनियाके सबसे समृद्ध नगरोंमें हो जायगा। वहाँ टूटी झोपड़ियाँ और गिरे पड़े मकान कहीं ढूँढ़नेपर भी न मिलेंगे। योजनाके पूरा हो जानेपर मास्कोका क्षेत्रफल दूना होकर ६० हज़ार हेक्तर हो जायगा; और उसके सुन्दर विशाल घरोंमें ५० लाख आदमियोंके रहनेका इन्तज़ाम रहेगा। इस वक्त मास्कोमें प्रति एकड़ ४०० आदमी रहते हैं। १९४५में प्रति एकड़ २०० आदमी रहेंगे; हालाँकि इमारतें औसतन् ६--७ तल्लेकी होंगी और बहुत सी १० और १४ तल्लेकी भी। आजकल मास्कोके मकान जितनी भूमिपर हैं, उस वक्त उससे आधी हीपर रहेंगे। बाकी जगहोंमें चौड़ी सड़कें और बग़ीचे बनेंगे। मकानोंके हर एक ब्लाकमें बच्चाखाना, किन्डरगार्टन, बाल-क्रीड़ा-क्षेत्र, अखाड़ा, भोजनालय, क्लब आदि रहेंगे। ३से ७ एकड़वाले वर्तमान ब्लाकों (चारों ओर सड़कसे घिरी गृहश्रेणी)की जगह २०से ३० एकड़के ब्लाक बनेंगे। इसके कारण गलियों और सड़कोंकी संख्या कम हो जायगी, और लोगोंको उनको पार करनेमें भी कमी रहेगी।

पुराने समयके बेढंगे छोटे बड़े मकान तोड़कर हटाये जा रहे हैं। लाल मैदानको सामनेके मकान हटाकर दूना कर दिया जायगा। क्रेम्लिन्-को केन्द्र मानकर समकेन्द्रक वृत्तमें निकलनेवाली सड़कें और चौड़ी कर

दी जायँगी और उनके किनारे हरे हरे दरख्त लगेंगे। मास्को नदीके दोनों तरफ़ प्रशस्त राजपथ बनना शुरू हो गया है। मास्को नदीके किनारे को संगखारेसे बाँधा जा रहा है। इसकी बग़लमें ४०से ५० मीत० (६०से ८० फ़ीट) चौड़ी वृक्षोंवाली सड़क रहेगी।

*** ***

(ट) मास्कोके कुछ स्थान—क्रेम्लिन् दीवार—इसीके पास लाल क्रान्तिके बड़े-बड़े नेताओंकी समाधियाँ हैं। सोवियत्-प्रजातंत्रके प्रथम राष्ट्रपति स्वेर्द्‌लोफ़्, काकेशस्-प्रजातंत्रके राष्ट्रपति नारीमानोफ़, गृहसचिव जेरजिन्स्की, यहींपर दफ़नाये गये। सोवियत् राजदूत वोरोव्स्की और वोइकोफ़्—जिनकी हत्याएँ विदेशमें हुई थीं—तथा प्रसिद्ध सेनानायक फ्रुन्जे भी यहीं दफ़नाया गया है। यहींपर कम्युनिस्ट पार्टीके बहुत बड़े नेताओं—किरोफ़, ओर्जोनीकिद्‌जे, कुइविशेफ़् और क्रासिनकी राख रखी हुई है। माखिम् गोर्की तथा विज्ञान-एकेडेमीके प्रधान करविन्स्कीकी राखें भी यहीं हैं। १९३४में आकाशके शांत ऊपरी तल (स्ट्रेटोस्फेयर)का पता लगानेके लिए जो तीन वैज्ञानिक—फ़दोसेयेन्को, वस्सेन्को और उस्सिस्किन्—गुब्बारेमें उड़े थे, और गिरकर मर गये थे; उनका शरीरावशेष भी यहाँ रखा हुआ है। इनके अतिरिक्त विदेशोंके कितने ही क्रान्तिकारी नेताओंका शरीरावशेष क्रेमलिन्की दीवारके पास गड़ा है। इनमें कुछके नाम हैं—चर्लिस रदेन्‌वर्ग (युक्त-राष्ट्र अमेरिकाकी कम्युनिस्ट पार्टीका मंत्री), मेक्मैनेस् (इंगलैंडकी कम्युनिस्ट पार्टीका मंत्री), सेन् कातायामा (जापानकी कम्युनिस्ट पार्टीका नेता।), लैडेलेर (हंगरीका कम्युनिस्ट) क्लैरा जेत्किन् (जर्मनी), फ्रिट्ज़् हेकर्ट, बिल्हेउड्, और अमेरिकन कवि तथा लेखक जौन् रीड्।

लाल मैदानके पश्चिमी किनारेपर पोकरोव्स्की गिर्जा है। यह १५५५ ई०में क्रूर इवान्की आज्ञासे कज़ान्के विजयके उपलक्षमें बना था।

गिर्जेके पासमें लोब्नीये मेस्तो नामक एक गोल चबूतरा है। यहीं-पर खड़े होकर ज़ारकी राज-घोषणाएँ और मृत्युदंड सुनाये जाते थे।

गोर्की-केन्द्रीय-संस्कृति-उद्यान—६०० एकड़से ऊपर भूमिमें मास्को नदीके दक्षिणी तटपर यह उद्यान बना है। इसके ३ भाग हैं—(१) द्वेर (दरवाजेके पासका भाग), (२) हरित-भूमि (नदीके किनारेका भाग), (३) लेनिन्-पर्वत। शहर भरके लोग मनोरंजनके-लिए इस बाग़में जाया करते हैं। १८ मई १९३७ (दसवें मौसिमी उद्घाटन दिवस) में ३ लाख आदमी बाग़में गये थे। यहाँ संगीत, नृत्य, वाद्य, सर्कस, लड़कोंके खेल, मछली मारना, बाग़बानी, फोटोग्राफ़ी, रेडियो आदि सब तरहके मनोविनोद उपलभ्य हैं। उद्यानमें रंगशालाएँ हैं, जिनमें छतके नीचे या खुली जगहमें मास्को-कला-नाट्यशाला, माली-नाट्यशाला, बख्तंगोफ्-नाट्यशाला आदि मास्कोकी नाट्यशालाओं हीके अभिनेता नहीं बल्कि लेनिन्ग्राद् और उक्रइन्की नाट्यशालाओंके नट भी आकर अपने अभिनय दिखलाते हैं। उद्यानकी नाट्यशालाओंमें प्रति दिन ३० हज़ारसे अधिक दर्शक आते हैं। खुली जगहमें हरित नाट्यशाला यहाँकी एक विशेषता है, जिसमें २० हज़ार आदमी सैकड़ों अभिनेताओंके सामूहिक अभिनयको एक साथ देखते हैं। रातको हरित-नाट्यशालामें फिल्म दिखलाये जाते हैं और ये फिल्म पौने दो सौ गज़ लंबे और पौने दो सौ गज़ चौड़े पर्देपर दिखलाये जानेके कारण बहुत स्पष्ट और मनो-रंजक मालूम होते हैं।

* * *   * * *

मास्को प्रान्तमें कुछ और भी दर्शनीय जगहें हैं। इनमें शहरसे १४--१५ मीलपर अवस्थित आर्ख़न्गेल्स्कोये (रिज़ेब रेलवे-स्टेशन) एक पुरानी जगह है। सामन्त गोलितूसिन्ने १८वीं शताब्दीके अन्तमें यहाँ अपना दरबार बनाया था। उन्नीसवीं शताब्दीके अन्तमें वह सामन्त (प्रिंस) युसुपोफ़ रूसके सबसे धनी और प्रभावशाली व्यक्तियोंमेंसे

एक—के हाथमें चला गया। यहाँपर फ्रांसीसी शिल्पी शेवालिए-द-गर् द्वारा १७७०में बनाया एक प्रासाद है। प्रासादके चारों ओर बाग़ है। यहाँ पुराने यूरोपीय कलाकारोंके चित्रोंका एक बहुत उत्तम संग्रह है। बाग़की बीथियोंपर मशहूर मूर्त्तिकारोंकी बनाई मूर्त्तियाँ सजाई हुई हैं। युसुपोफ़के लिए इटालियन् चित्रकार गोन्ज़गाने १८१७में एक विशाल नाट्यशाला बनाई, जिसमें सामन्तके असामी (अर्द्धदास) अभिनेता अभिनय किया करते थे। कला-संग्रहमें प्रासादके काममें आनेवाले बर्तन तथा दूसरी चीज़ें सुरक्षित रखी गई हैं। भोजनालय मिस्री ढंगसे सुसज्जित किया गया था। बग़लके कमरोंमें राबर्ट हबर, तथा तीपोलो और रोतोरीके बनाये चित्र हैं। अध्ययनागारमें युसुपोफ़के परिवारके आदमियोंके चित्र रखे हुए हैं। आज-कल युसुपोफ़के खेतोंपर कल्खोज् स्थापित हैं, कितने ही स्कूल और फैक्टरियाँ बनी हैं; लेकिन युसुपोफ़्के दरबारकी कला-सम्बन्धी वस्तुओंको बहुत सुरक्षित रखा गया है। प्रासादके भित्ति-चित्रों, मूर्त्तियों और नाट्यशालाके बिगड़े और बेमरम्मत हिस्सेको बहुत खर्चकरके मरम्मत कर दी गई है। नाट्यशालामें उन्हीं अर्द्धदास किसानोंको बैठकर नाटक देखते देखकर युसुपोफ़की आत्मा क्या कहती होगी?

(ड) कुस्कोवो—कुर्स्क स्टेशनसे ६ मीलपर एक जगह है। यहाँ ग्राफ़् (कौंट) शेरेमेत्येफ़् (१७७०)का बनवाया महल है। शेरेमेत्येफ़्के अधिकारमें दो लाख अर्द्धदास किसान और बीस लाख एकड़से अधिक ज़मीन थी। इसके अलावा इवानोवोकी बड़ी बड़ी कपड़ेकी मिलें भी इसीकी थीं। अकूत धन था, इसलिए शेरेमेत्येफ़्-परिवार दोनों हाथसे उसे अपने विलासकेलिए खर्च भी करता था। तरह-तरहकी मूर्तियाँ, चित्र, जाड़े-गर्मीके घर और क्या क्या चीजें नहीं बनवाईं? इन चीज़ोंमें अधिकांशको ग्राफ़के अर्द्धदासोंने बनाया था। दासोंमेंसे कितनों हीको मालिकोंने वास्तु-शिल्प, कितनोंको मूर्ति-कला, कितनोंको चित्रकला और कितनोंको नाट्यकला सिखलाई थी। वैयक्तिक नाट्यशालाके लिए

खास ध्यान था। ग्राफ़के अभिनेताओंकी संख्या २०० थी; और वह मास्कोकी नाट्यशालाओंका मुक़ाबला करते थे।

उद्यान, सरोवर और आरंभिक इमारतें अब भी सुरक्षित रखी गई हैं। मकानको ऐतिहासिक-म्यूज़ियमके रूपमें परिणत कर दिया गया है; और उसे इस तरहसे सजाया गया है, जिसमें कि ज़ारशाहीके धनिकोंके जीवनका दर्शकोंको पूरा पता लग जाय। म्यूज़ियममें १८वीं सदीके पश्चिमी यूरोप और रूसके कलाकारोंके बहुतसे चित्र संग्रहीत हैं। अर्द्धदास बढ़इयोंके लकड़ीके कामोंका भी अच्छा संग्रह है। एक लकड़ीकी मेज़पर कुस्कोवो दरबारके महल और बगीचोंको सुन्दरताके साथ उत्कीर्ण किया गया है। म्यूज़ियममें उस कालकी कुर्सी, मेज़ तथा दूसरे घरके सजानेके सामान एकत्रित हैं। पहले तल्लेके २० कमरोंमें कमख्वाब, ग़लीचे, झाड़, मूर्तिया और तसवीरें रखी हुई हैं। यहाँ स्थायी तौरसे मिट्टी और चीनीके बर्तनोंका एक म्यूज़ियम स्थापित किया गया है। इसमें यूनानी मिट्टीके बर्तन, इटली और फ्रांसके १६वीं-१८वीं शताब्दीके मजोलिका पात्र, स्पेनके मुसलमानोंके बर्तन, १७वीं-१८वीं शताब्दीके हालैंडके बर्तन, १७वीं-१८वीं शताब्दीके चीन-जापानके बने चीनीके बर्तन और सोवियत्के चीनीके बर्तन रखे हुए हैं। चित्रोंमें लागरान्, मोनिये और रोतोरी विदेशी कलाकारों तथा अर्गुनोफ़्-परिवार, तेप्पलोफ़् और शुबिन्की कलाके नमूने मौजूद हैं।

(ढ) ज़ागोर्स्क—मास्कोसे ७१ किलोमीतर (प्रायः ५० मील)पर है। क्रान्तिसे पहले इस शहरका नाम था सेर्गियेफ़् पोशद् और यहाँ सेर्गियेफ़् मठके दर्शनार्थ हज़ारों तीर्थयात्री ठहरा करते थे। आजकल यह ज़ागोर्स्क ज़िलेका केन्द्र है; और हाथके बने खिलौनेके लिए स०स०स०र० और बाहर भी प्रसिद्ध है। १९३३में इसकी जनसंख्या ३० हज़ार थी।

स्टेशनसे ½ किलोमीतरपर सेर्गियेफ़् मठ है। इसकी स्थापना १४वीं शताब्दीमें हुई थी; और धीरे-धीरे बढ़ते-बढ़ते यह रूसके बड़े

शक्तिशाली मठोंमें हो गया। इसके पास बहुत जागीर थी। १८वीं शताब्दीके अन्तमें मठके अधीन ५ लाख अर्द्धदास किसान थे। क्रान्तिके बाद मठका काम बन्द हो गया और सेर्गियेफ़् मठ रूसी कलाके म्यूज़ियमके रूपमें परिणत कर दिया गया। दर्शनीय स्थानोंमें हैं—१८वीं शताब्दीका बना घंटाघर, जिसे कि शिल्पी रस्त्रेलीने बनाया था। उवात्स्की गिर्जा सफ़ेद पत्थरसे १४२२में बनाया गया। दीवारोंके किनारे तथा रखनेके स्थानोंपर मूर्तियोंका बड़ा संग्रह है। इनमें चौदहवीं सदीसे लेकर २० वीं सदी तककी मूर्तियाँ हैं। म्यूज़ियममें पुराने गोटे, वस्त्र और पच्चीकारीकी बहुत सी चीज़ें हैं। सबसे ज्यादा दिलचस्प वह इमारत है, जिसमें मेत्रोपोलितन् (ग्रीक-अर्थोडक्स सम्प्रदायका सबसे बड़ा महन्त या पोप) रहता। यह १८वीं सदीमें बनाया गया था; और बड़ी सुरक्षित अवस्थामें रखा गया है। पुरानी सजावटें वैसी ही मौजूद हैं। म्यूज़ियमके एक खास विभागमें यह प्रदर्शित किया गया है, कि क्रान्तिके बाद लोगोंके जीवनमें कैसा परिवर्तन हुआ।

खिलौना-म्यूज़ियम १९१८में मास्कोमें स्थापित किया गया था, लेकिन अब उसे इसी मठकी एक इमारतमें रखा गया है। यहाँपर कई हज़ार पुराण-कालसे लेकर आज तकके तरह तरहके हाथके बने खेलौने रखे हुए हैं। १९३२से खेलौनेके अन्वेषणकेलिए एक विशेष अन्वेषणशाला स्थापित की गई है।

अध्याय ५

चतुर्थ पंचवार्षिक-योजना

राज-योजना-कमीशनके प्रधान न० अ० वोज्नेशेन्स्कीने १५ मार्च १९४६को सोवियत् पार्लियामेंटके समक्ष युद्धोपरान्त योजना—चतुर्थ पंचवार्षिक योजना-को पेश करते हुए जो भाषण दिया था, उसके कुछ अंश इस प्रकार हैं :

...हमारे देशमें समाजवादके विजयके साथ औद्योगिक-क्षेत्रमें पूँजीवादी वर्ग खतम हो गया और कृषिके क्षेत्रसे जमींदार, कुलक और व्यापारके क्षेत्रसे व्यापारी तथा सट्टेबाज लुप्त हो गये।

...१९३७के पार्लियामेंट-चुनावमें जहाँ नौ करोड़ ग्यारह लाख वोटरोंने भाग लिया था, वहाँ १९४६में १० करोड़ १५ लाख वोटरोंने भाग लिया; जिनमें १० करोड़ ६ लाखने कम्युनिस्टों और बे-पार्टीके उमीदवारोंके ब्लॉकके लिये वोट दिये।

...रूसमें १९१५-१७में बड़े पैमानेके उद्योगकी सारी उपज ३३ अरब रूबल थी, जब कि १९४२-४४में सोवियत्के केवल पूर्वी भागमें ३ खरब ६१ अरब रूबल (उसी सिक्केकी दरसे) यानी ग्यारह गुना हो गई। इसी तरह खेतीसे बाजारकेलिये ढाई गुना अनाज, रेलकी वार्षिक ढुलाई ३-४ गुना सारे सोवियत् संघमें १९१५-१७की अपेक्षा १९४२-४४में हुई।

प्रथम विश्वयुद्धमें जहाँ टैंकों और विमानोंका बनाना नहीं सा था, वहाँ द्वितीय विश्वयुद्धमें प्रतिवर्ष तीस हजार टैंक, स्वयंचालित तोपें और चालीस हजार विमान बनते रहे।

...सोवियत्-संघके औद्योगिक इतिहासमें एक समय आया था, जब कि युद्ध-सम्बन्धी कलकारखाने उठाकर पूर्वमें ले जाये गये। लाखों

मशीन-टूल, प्रकांड यांत्रिक हथौड़े, प्रेस और टर्वाइन स्थानान्तरित कर दिये गये। साथ ही लाखों कमकर, इंजानियर और टेकनिसियन भी गये। इतिहासमें कोई दूसरा उदाहरण नहीं, जब कि इस तरह देशकी उत्पादक शक्तियाँ स-शरीर पूर्वमें पहुँचाई गईं। दुश्मन हमारी पवित्र राजधानी मास्कोके दरवाजोंके नजदीक आ रहा था। सोवियत्-संघकेलिये यह बड़े संकटका समय था। कोई दूसरी सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था, कोई दूसरी सेना ऐसे संकटमें टिक नहीं सकती थी।

...अब लड़ाई समाप्त हो गई और समाप्त हुई युगान्तरकारी विजयके साथ...।

...द्वितीय विश्व-युद्धकी समाप्ति और शान्ति स्थापनाके साथ सोवियत् जनताके सामने एक दूसरा नया काम आया—युद्धकी अर्थ नीतिसे शांतिके आर्थिक विकासके कालमें प्रवेश करना। "सोवियत् जनताके अब काम हैं—(१) अधिकृत स्थानोंको दृढ़ करना (२) फिर नई आर्थिक सफलताओंकी ओर बढ़ना" (स्तालिन)

...पूँजीवादी देशोंमें उद्योग-धंधेको युद्धसे शान्तिके रूपमें परिणत करनेपर उसके खास पूँजीवादी नियम लागू होते हैं। संयुक्त-राष्ट्र अमेरिकामें उद्योग-धंधेकी उन्नतिका सर्वोच्च तल था १९४३, जहाँ अमेरिकाकी औद्योगिक उपज फिर नहीं पहुँच सकी और १९४५के अन्तमें तो एक तिहाईसे अधिक नीचे गिर गई, यानी वह १९४१के तलके करीब पहुँच गई।

...युक्त-राष्ट्र अमेरिकामें उपजके घटावने अभी ही बेकारी बढ़ा दी है। ब्रिटेनमें द्वितीय विश्वयुद्धसे पहले हो कई सालोंसे लगातार औद्योगिक अर्थ-सङ्कट चला आ रहा था। अब वही समस्यायें फिर आ खड़ी हुई हैं। हम जानते हैं, कि ब्रिटेन बाहरसे कच्चा माल और अन्न मँगाये बिना जी नहीं सकता। किन्तु, बाहरसे कच्चा माल और अन्न मँगाने और उसका दाम चुकानेकेलिये उसे भारी परिमाणमें अपना माल

बाहर भेजना पड़ेगा। यानी उसे विदेशी सिक्के प्राप्त करने होंगे। इसके लिये अपने उद्योग-धंधेको पूर्व-अवस्थामें स्थापित करना होगा और बाहर भेजनेके लिये सस्ता माल तैयार करना होगा। किन्तु द्वितीय विश्वयुद्धके बाद दुनियाके बाजारकी रूपरेखा ही बदल गई। अब वह अधिकाधिक युक्त-राष्ट्रके हाथमें चली गई है, क्योंकि उसके ही कल-कारखाने बहुत अधिक उन्नत हैं।

···सोवियत्-समाजवादी-प्रजातंत्र-संघ पूरे आत्मविश्वासके साथ आगे बढ़ रहा है, अपनी समाजवादी व्यवस्थाको मजबूत और विकसित कर रहा है। उसे आर्थिक संकट, बाजारकी मंदी या बेकारीका कोई डर नहीं। वह पग-पगपर राजकीय योजनाके आधारपर आर्थिक पुनःस्थापना और विकासकी गतिको निरन्तर तीव्र करते राष्ट्रीय उद्योग-धंधे और कृषिका फिरसे संगठन कर रहा है। सोवियत्-संघ दूसरे देशोंके साथ आर्थिक सम्बन्धको बराबर बढ़ानेकी कोशिश करेगा, लेकिन साथ ही अपने टेकनिक-सम्बन्धी तथा आर्थिक स्वतन्त्रताकी रक्षा करते, यह सोवियत् सरकारकी परीक्षित और अनुभूत नीति है।

···विश्वयुद्धने अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रमें सोवियत्-संघकी स्थितिको और दृढ़ किया, यह एक बड़ी विजय रही। किन्तु जो सफलता पाकर दर्पान्ध हो अकल खो बैठता है, उसका पतन निश्चित है।

...हमारा पहला काम है, औद्योगिक उपजको युद्ध-पूर्वसे डेढ़ गुना बढ़ाना। सबसे पहला काम होगा, भारी उद्योग और रेलवेको पूर्व-स्थितिमें ले जाकर आगे बढ़ाना। बिना इसके सोवियत्-संघके सारे आर्थिक शरीरको शीघ्रता और सफलतापूर्वक पुनः स्थापित तथा विकसित नहीं किया जा सकता। जब तक भारी उद्योगको तेजीसे स्थापित नहीं किया जाता, तब तक देशकी टेकनिकल तथा आर्थिक स्वतन्त्रता सुरक्षित नहीं कही जा सकती...। १९४६के अन्त तक हमें अपने उद्योग-धंधेको फिरसे बदलना होगा और युद्ध-सम्बन्धी कल-कारखानोंकी उत्पादन-क्षमताको

शान्तिकालोपयोगी वस्तुओंके उत्पादनमें लगाकर सोवियत्-संघकी आर्थिक शक्तिको और बढ़ाना होगा। दूसरी बात जो करनी है, वह है उपभोग-सम्बन्धी कृषि और कारखानोंकी वस्तुओंकी उपज बढ़ाना, जिसमें सोवियत् जनताका जीवन-तल ऊँचा उठे—देशमें मुख्य उपभोग-सामग्रीको प्रचुर परिमाणमें पैदा करना है। हमें युद्ध-पूर्वकी राष्ट्रीय आय और राष्ट्रीय उपभोगसे आगे बढ़ जाना है। निकट-भविष्यमें राशन-प्रथाको हटा उसकी जगह एक व्यापक और क्षमताशाली व्यापार-व्यवस्था चलानी है। हमें अपना सारा ध्यान उपभोग-सामग्रीके उत्पादनको बढ़ाते तथा मूल्यको लगातार घटाते जनताके जीवन-तलको ऊँचा उठानेका ध्यान रखना होगा। इन कामोंके लिये जरूरी है, कि हमारा सिक्के (रूबल)का आधार मजबूत किया जाय।

तीसरा काम यह है, कि हमारी राष्ट्रीय अर्थनीतिकी सभी शाखाओंमें अधिकाधिक प्रगति हो। उत्पादनमें भारी वृद्धि और श्रमकी उपजको ऊपर उठानेकेलिये टेकनिकल प्रगति अत्यन्त आवश्यक है। इसके लिये हमें बाहरी देशोंकी साइन्स-सम्बन्धी प्रगतिको पकड़ना ही नहीं बल्कि निकट-भविष्यमें उससे आगे बढ़ जाना है। उद्योग-धंधेकी सारी शाखाओंमें उत्पादनका तेजीसे बढ़ाना इसी टेकनिक्—उद्योगमें साइन्सके प्रयोग—की प्रगतिपर निर्भर करता है; जो हमारे यहाँ जनताकी भलाईके लिये इस्तेमाल की जाती है। पूँजीवादी देशोंमें टेकनिकल प्रगतिका जनताके राजनीतिक और आर्थिक हितसे छत्तीस (३६)का सम्बन्ध है। हमारा कर्तव्य है, कि अपने देशमें सोवियत् समाज-व्यवस्थासे लाभ उठाकर शीघ्र और निरन्तर टेकनिकल प्रगति करें। हमारे देशका इतिहास बतलाता है, कि हमारे बहुतसे आविष्कारकों और साइन्स तथा टेक्नोलोजीके (उद्योग धंधेमें साइन्सका प्रयोग) युगान्तरकारी मनीषियोंने विश्वविख्यात महत्वपूर्ण आविष्कार किये हैं। महान् भौतिकशास्त्रवेत्ता और रेडियोके आविष्कारक पपोव (१८५९–१९०६)को कौन नहीं जानता? उसके

आविष्कारोंने साइन्स-जगतमें क्रान्ति उपस्थित कर दी और आज वह रेडर-यंत्रका आधार बना है। मेन्देलेयेफ् (१६वीं सदी) विश्वके सर्व-महान् रसायन-शास्त्रीको कौन नहीं जानता, जिसने रसायन-शास्त्रके मौलिक नियम या कालिक नियमका आविष्कार किया, जिसने साइन्स वेत्ताओंको परमाणुशक्ति और परमाणुके भीतर छिपे रहस्यके उद्घाटनमें सहायता की। विश्वविख्यात साइन्सवेत्ता निकोलाय जुकोव्स्कीको कौन नहीं जानता, जिसने वायु-उड़ान और विमान-साइन्सकी सैद्धान्तिक नींव रक्खी। हमारे त्सिओल्कोव्स्की जैसे महान् साइन्सवेत्ता और आविष्कारकको देखिये, जिसने रॉकेट-प्रक्षेपण सिद्धान्त निकाला। यह सिद्धान्त आधुनिक रॉकेट-प्रक्षेपित विमानों और यंत्रोंका आधार-स्वरूप बन गया है। हमारे साइन्स-वेत्ताओंको ठीकसे मदद मिलनी चाहिये, फिर वह साइन्सकी आधुनिकतम सफलताओंमें आगे बढ़ जायेंगे।

...चौथा काम हमारे सामने है, एक बड़े पैमानेपर समाजवादी पूँजीका संचय, जिसमें हम इन पाँच वर्षोंमें अपने उद्योग-धंधे और दूसरे कामोंमें दो खरब पचास अरब रूबल ध्वस्त कल-कारखानोंकी पुनःस्थापना और वृद्धिमें, एवं दो खरब चौंतीस अरब रूबलको नये कारखानोंके निर्माणमें लगा सकें।......पंचवार्षिक-योजनाके पूर्ण हो जानेपर ग्यारह खरब तीस अरब रूबल धन राष्ट्रीय उद्योग-धंधोंमें लगा रहेगा। पूँजीविकासका जो बड़ा प्रोग्राम हमारे सामने है, उसके लिये लगी पूँजीको प्रतिवर्ष बारह सैकड़ा बढ़ाना होगा।

पाँचवा काम है, सोवियत्-संघकी सैनिक रक्षा-शक्तिको बढ़ानेके-लिये अपनी सेनाको नवीनतम हथियारोंसे सुसज्जित करना। सोवियत् जनता अपनी सेनाको और अधिक दृढ़ शक्तिशाली देखना चाहती है, जिसमें हर तरहके आकस्मिक प्रहारसे देशकी रक्षा और शान्तिको कायम रखा जा सके। पूर्व और पश्चिम दोनों तरफ सोवियत्-संघकी ऐतिहासिक सीमायें पूर्ववत् स्थापित हो चुकी हैं। दक्षिणी सखालिन

और कुराइल द्वीप-समूह अब सोवियत्-संघको प्रशान्त-सागरसे अलग करके हमारे सुदूरपूर्वपर आक्रमण करनेकेलिये जापानी आक्रमणके अड्डे नहीं बन सकते, बल्कि वह सोवियत् संघ और प्रशान्त-सागरके मध्य सम्पर्क स्थापित कर हर तरहके आक्रमणसे हमारी सुरक्षाके आधार बन गये हैं। स्वतंत्र जनतांत्रिक पोलैन्ड अब हमारी पश्चिमी सीमापर जर्मन आक्रमणका कुदान-स्थान न रहा: आज वह जर्मन-आक्रमणके विरुद्ध हमारा साथी है। तो भी स्तालिनने हमें सचेत किया है "शान्तिप्रेमी जातियाँ भविष्यमें फिर आकस्मिक आक्रमणका शिकार हो सकती हैं, यदि वह अभी आक्रमण रोकनेके खास तरीके नहीं स्वीकार करतीं।" हमें नहीं भूलना चाहिये, कि इजारादारी पूँजीवाद नये आक्रमण-कारियोंको पैदा करनेकी क्षमता रखता है। सोवियत्-संघकी सेनाको हमें खूब मजबूत करना होगा; नवीनतम हथियारोंसे उसे सुसज्जित करनेका ध्यान रखना पड़ेगा। सोवियत्-राज्यके सैनिक और आर्थिक बलको और भी दृढ़ करना होगा।

···पंचवार्षिक-योजनाका लक्ष्य है, वर्गहीन समाजवादी समाजका निर्माण और क्रमशः समाजवादसे साम्यवादमें परिवर्तन। उसका लक्ष्य है सोवियत्-संघके मूलभूत आर्थिक कर्तव्यको पूरा करना यानी प्रधान पूँजीवादी देशोंसे वहाँकी जनसंख्याके प्रतिपुरुष औद्योगिक उत्पादनके तलपर पहुँचना ही नहीं, बल्कि आगे बढ़ जाना। सोवियत् संघकी कृषि और कल-कारखानों—राष्ट्रीय अर्थनीति—की पुनः स्थापनाकी यह पंच-वार्षिक योजना उक्त दिशामें एक और कदम है। हमारा झंडा मार्क्स-इंगेल्स-लेनिन्-स्तालिनके वैज्ञानिक साम्यवादका झंडा है। इस झंडेके नीचे साम्यवादकी ओर बढ़ते हम नयी विजय प्राप्त करेंगे।

पंचवार्षिक योजना* (१९४६–५०) (कानून)

(१)

सोवियत्-संघकी आर्थिक पुनःस्थापना और विकासकी योजनाके मुख्य उद्देश्य

१. सोवियत्-संघकी जनता और पराक्रमी लाल-सेनाके वीरता-पूर्ण प्रयत्नोंसे एक युगप्रवर्त्तक विजय प्राप्त हुई—हिटलरकी जर्मनी चूर्ण कर दी गई और जापानी साम्राज्यवाद परास्त हुआ। सोवियत् समाजवादी प्रजातंत्र संघने युद्धमें शत्रुको पूर्णतया हराया। युद्धका यह मुख्य परिणाम है।

सोवियत्-संघकी विजयका अर्थ है, (१) सोवियत् सामाजिक व्यवस्थाकी विजय; सोवियत् सामाजिक व्यवस्थाने युद्धकी अग्नि-परीक्षा सफलता पूर्वक पास की और अपने महान जीवटको दिखला दिया।

२. सोवियत्-संघकी विजय सोवियत्-राज्यकी विजय है—बहुजातिक सोवियत् राज्यने युद्धकी सारी परीक्षायें पास कीं और अपने जीवटको दिखला दिया।

३. सोवियत् संघकी विजय सोवियत्की सेना—लाल-सेना—की विजय है, लाल-सेनाने युद्धके सभी संकटोंको बर्दाश्त किया, हमारे शत्रुकी सेनाको पूर्णतया हराया और वह युद्धमें विजयी होकर निकली।

युगप्रवर्तक विजय इसीलिये हमें प्राप्त हुई, क्योंकि सारा देश पहले हीसे देश-रक्षाके लिये तैयार किया गया था। सोवियत्की अर्थ-नीतिके विकासके लिये तीन पंचवार्षिक योजनायें इस महान् कामकी तैयारीके लिये बनाई गयी थीं।

द्वितीय विश्वयुद्धमें पड़नेसे पहले ही सोवियत्-संघने वह सारे भौतिक

---

*इस कानूनको सोवियत्-पार्लियामेन्टने १८ मार्च १९४६को स्वीकार किया।

साधन, देश रक्षाके लिये देशको तैयार करनेके वास्ते प्रस्तुत कर दिये थे और यह किया था, कम्युनिस्ट पार्टीकी नीतियोंको लगातार पूरा करने और सबसे अधिक देशको उद्योग-प्रधान बनाने और कृषिको सामूहिक खेतीके रूपमें परिणत करनेकी सोवियत्‌की नीतिसे।

२. देशके उद्योगीकरण और कृषिके पंचायतीकरण सम्बन्धी कम्युनिस्ट पार्टीके प्रोग्रामको सफलतापूर्वक पूर्ण करनेमें सोवियत्-संघमें एक समाजवादी समाज स्थापित कर दिया गया।

१९३९में सोवियत्-संघकी कम्युनिस्ट (बोलशेविक) पार्टीकी १८वीं कांग्रेसने समाजवादसे साम्यवादमें क्रमशः परिवर्तनका कार्यक्रम सामने रखा और सोवियत् जनताके सामने प्रधान पूँजीवादी देशोंके आर्थिक तौर पर—जन संख्याके प्रति व्यक्तिपर उद्योग-धन्धेकी उपजके योगकी तुलनामें—बराबर होना नहीं, बल्कि उनसे आगे बढ़ जानेका उद्देश्य है। सोवियत् संघके इस मुख्य आर्थिक उद्देश्यको पूरा करनेके लिये हमारी राष्ट्रीय अर्थनीतिके विकासकी तृतीय पंचवार्षिक योजनामें नींव रखी गयी थी। उस योजनाके मुख्य-मुख्य कामोंको उक्त योजनाके पहले तीन वर्षों (१९३८--४१)में सफलतापूर्वक पूरा किया गया था और यह उस वक्त जब कि सोवियत्-संघकी सीमापर लड़ाई हो रही थी।

सोवियत्-उद्योग-धन्धेमें तेजीसे तरक्की हो रही थी—औद्योगिक उपजमें औसतन १३%की प्रतिवर्ष वृद्धि हो रही थी। भारी उद्योग-धन्धेके विकासमें खास तौरसे लम्बे कदम पड़ रहे थे। तृतीय पंचवार्षिक योजनाके प्रथम तीन वर्षोंमें उत्पादनके साधनोंकी उपजमें ५०%की वृद्धि हुई थी और मशीन बनानेके उद्योगकी उपजमें ७५% सैकड़ेकी।

सोवियत्-संघके पूर्वी जिलोंमें कल-कारखाने बड़ी तेजीसे बढ़ रहे थे उराल, वोल्गा-क्षेत्र, सिबेरिया, मध्य-एसिया और कज़ाकस्तानमें तृतीय पंचवार्षिक योजनाके पहले तीन वर्षोंमें कल-कारखानेकी उपज ५०% बढ़ी।

१९४०में ११ करोड़ ९० लाख टन अनाज हुआ। देशके पूर्वी भागमें सोवियत्-संघका एक सबसे अधिक अन्न पैदा करने वाला क्षेत्र तैयार किया गया। कृषिकी इतनी प्रगति खेतीके पचायतीकरणसे हुई। इससे यह संभव हुआ, कि चन्द वर्षोंके अन्दर इतनी अधिक संख्यामें सारे देशमें कल-खोज (पंचायती खेती) फैल गये, जो आधुनिक मशीनों और कृषि-साइन्सके सभी नवीनतम आविष्कारोंका उपयोग करते बराबर अधिक परिमाणमें कृषिकी उपज देशको प्रदान करते रहे।

तृतीय पंचवार्षिक योजनाके प्रथम साढ़े तीन वर्षोंमें नव-निर्माणका प्रकाण्ड प्रोग्राम काममें लाया गया। १ खरब ३० अरब रूबलकी पूंजी नये कारखानोंमें लगाई गई; ३ हजारके करीब सरकारी मिलें, फैक्टरियाँ, खानें, पन-बिजली-स्टेशन और दूसरे कारखानें बनाकर संचालित किये गये, जिसका एक तिहाई भाग इस कालमें सोवियत्के पूर्वी जिलोंमें हुआ।

पूर्वी जिलोंमें समाजवादी उद्योग, खासकर भारी उद्योग द्वारा हुए आर्थिक विकास और राज्यके हाथमें भारी परिमाणमें धनके संचयने सोवियत्-संघकी आर्थिक और सैनिक शक्तिको दृढ़ करनेमें सहायता दी।

१९४०में हमारे देशमें डेढ़ करोड़ टन लोहा पैदा हुआ, जो कि १९१३की अपेक्षा साढ़े चार गुना अधिक था; १ करोड़ ८३ लाख टन फौलाद यानी १९१३से साढ़े चार गुना; १६ करोड़ सात लाख टन कोयला यानी १९१३से साढ़े पाँच गुना; ३ करोड़ १० लाख टन तेल यानी १९१३से साढ़े तीन गुना; ३ करोड़ ८३ लाख टन विक्रेय अन्न यानी १९१३से १ करोड़ ७० लाख टन अधिक, और २७ लाख टन कपास यानी १९१३से साढ़े तीन गुना अधिक पैदा हुआ। समाजवादी उद्योगकी मददसे रेलोंका फिरसे निर्माण किया गया।

इस सारे कामके साथ साथ सोवियत् जनताका जीवन और सांस्कृतिक तल लगातार ऊपर उठता गया। राष्ट्रके कल-कारखानोंमें तेजीसे लगातार दक्ष-कारीगर आने लगे। श्रमकी उपज और राष्ट्रीय उपभोग बढ़ा,

मजूरी बढ़ी और कल्खोजोंकी आमदनी भी अधिक हुई। सांस्कृतिक संस्थायें बड़ी संख्यामें बढ़ीं। प्रारम्भिक, माध्यमिक स्कूलों और कालेज-युनिवर्सिटीके विद्यार्थियोंकी संख्या बढ़ी और बच्चोंकी सार्वजनिक शिक्षा व्यवहार रूपमें परिणत हो गई।

३. हिटलरी जर्मनीके १६४१में हमारी समाजवादी मातृभूमिपर विश्वासघाती आक्रमणसे हमारा शान्तिपूर्ण निर्माणका काम बन्द हो गया और सार्वत्रिक आर्थिक प्रगति तथा सोवियत्-संघकी जनताके जीवन तलके ऊपर उठनेमें बाधा हुई। देश-भक्ति मातृ-मुक्ति-महायुद्धने मजबूर किया, कि सारी राष्ट्रीय अर्थनीतिको युद्धकी आवश्यकताओं, हिटलरी जर्मनी तथा उसके पुछल्लोंके ध्वंसके काममें लगाया जाय। सोवियत्की राष्ट्रीय अर्थ-नीतिको बहुत तेजीसे युद्धके काममें बदल दिया गया। कारखाने तुरन्त गोला-बारूद बनानेमें लग गये। पंचवार्षिक योजनाओंमें देशके पूर्वी भागमें जो बड़े पैमानेके आधुनिक कल-कारखाने स्थापित किये गये और जो १३००से अधिक बड़े-बड़े प्लान्ट (कारखानें) पच्छिमसे ले जाकर तेजीसे स्थापित किये गये और साथ ही बहुतसे नये कारखाने बनाये गये; इन सबने मिलकर निरन्तर अधिक दृढ़ता सम्पादन करते सोवियत्-संघके पूर्वी भागको शक्तिशाली औद्योगिक केन्द्रमें परिणत कर दिया। भीषण प्रयत्नसे हटाये कारखाने १६४२के पूर्वार्द्धमें ही फिरसे स्थापित हो गये।

मातृमुक्ति-युद्धमें विजय प्राप्त करनेकेलिये सोवियत् संघको भारी बलि देनी पड़ी। देशके भागपर अधिकार करने वाले जर्मनोंने हमारे देशको जबर्दस्त हानि पहुँचाई। अचिन्त्य हानियों और भारी कठिनाइयोंके होते भी युद्धकालमें सोवियत्-संघके कारखानोंने बड़ी तेजीसे उन्नति की। १६४५के पूर्वार्द्धमें पूर्वीय प्रदेशोंकी औद्योगिक उपज १६४१के पूर्वार्द्धसे दुगनी हो गई और युद्ध-सम्बन्धी कारखानोंकी उपज तो ५·६ गुना अधिक हो गई। युद्धके चार वर्षोंमें औद्योगिक उपज उरालमें ३·६ गुना, सिबेरियामें २·८ गुना और वोल्गाक्षेत्रमें ३·८ गुना बढ़ी।

मातृमुक्ति-युद्धके दौरानमें पूर्वी प्रदेशोंमें लाल-सेनाको गोलाबारूद, हथियार, टैंक और विमान प्रदान करनेका एक शक्तिशाली केन्द्र बन गया।

मातृमुक्ति-युद्धके आरम्भके दिनोंमें सोवियत्-संघकी पार्लियामेण्टके प्रेसीदियेम (लघु-पार्लियामेण्ट), कम्युनिस्त पार्टीकी केन्द्रीय समिति और सोवियत् संघके मन्त्रि-मण्डलके निश्चयानुसार हमारे महान् नेता साथी स्तालिनके नेतृत्वमें राज्य-रक्षा-समिति स्थापित हुई। उसने दृढ़ता-पूर्वक शीघ्रतासे सोवियत् जनताकी सारी शक्तिको शत्रुसे भिड़नेमें लगा दिया। राज्य-रक्षा-समितिके पथ-प्रदर्शनमें पार्टी और सोवियत्-संस्थाओं-ने जबर्दस्त संगठन किया और बहुत थोड़े समयमें सुव्यवस्थित तौरसे काम करती, तेजीसे बढ़ती युद्ध अर्थनीति द्वारा कल-कारखानें तैयार हो गई, जिससे लाल सेनाके लिये आवश्यक गोला-बारूद देनेका पक्का इन्तिजाम कर लिया गया और दुश्मनके पूर्णतया ध्वंस करनेके लिये साधन जमा कर लिये गये।

युद्ध-उद्योगके विकास द्वारा जो इतनी उत्पादन-क्षमता पैदा हुई, उसका सोवियत्-राज्य और कम्युनिस्त-पार्टीने खूब ठीक तौरसे उपयोग किया।

युद्धके अन्तिम तीन वर्षोंमें टैंक बनाने वाले कारखानोंने प्रतिवर्ष औसतन ३० हजारसे ऊपर टैंक—स्वयंचालित तोप—कवचित कारें तैयार कीं; विमानके कारखानोंने प्रतिवर्ष ४० हजार विमान, छोटे हथियार-कारखानोंने हर तरहकी करीब १ लाख २० हजार तोपें, ४½ लाख हल्की और भारी मशीनगनें, ३० लाखसे ऊपर बन्दूकें और २० लाख-से ऊपर टामी-गनें प्रतिवर्ष बनाईं; मोर्टर-तोप बनानेवाले कारखानों-ने १९४२-४४में प्रतिवर्ष १ लाख मोटरें बनाईं; सिर्फ १९४४में २४ करोड़ गोले, बम तथा मोटर-बम और ७ अरब ४० करोड़ कारतूस बनाये।

सोवियत् संघके मजूरवर्गने उत्पादनके तरीकेमें लगातार सुधार करते, कारखानोंकी क्षमताको बढ़ाते, नये कारखानोंको बढ़ाते और सेना तथा राष्ट्रीय अर्थ-नीतिकेलिये अबाध गतिसे याता-यातको दुरुस्त

रखते, मातृमुक्ति-युद्धके समय वीरता-पूर्ण श्रमका एक अनुपम उदाहरण प्रदर्शित किया। समाजवादी कृषिने सेना और देशको खाने और औद्योगिक कच्चे मालकी कमी नहीं होने दी। पंचायती खेती-व्यवस्थाके जीवट और सोवियत्-किसानोंकी देश-भक्तिका यह जबर्दस्त उदाहरण था।

सोवियत्के बुद्धिजीवीवर्गने उद्योग और कृषिके विकासमें मजूरों और कल्खोजी किसानोंकी सहायता की; उन्होंने युद्धकी परिस्थितिमें आधुनिक साइन्समें नये आविष्कार किये और अपनी इन सफलताओंको लाल-सेनाकेलिये गोला-बारूद पैदा करनेमें इस्तेमाल किया। सोवियत्की देश-भक्त स्त्रियों और यशस्वी तरुणोंने श्रम-सम्बन्धी वीरताके अपूर्व उदाहरण रखे। उन्होंने मिलों, फैक्टरियों, कल्खोजों और सोव-खोजोंमें कामका सारा भार अपने ऊपर ले लिया।

जिस तरह लाल-सेनाने एक लम्बे और जबर्दस्त संघर्षमें अकेले लड़ते फासिस्त-सेनाओंके ऊपर विजय प्राप्त की, उसी तरह सोवियत्की कमकर-जनताने हिटलरी जर्मनी और उसके सहायकोंके साथ द्वन्द्वमें शत्रुके ऊपर आर्थिक विजय प्राप्त की। मातृ-मुक्ति-युद्धके समय राष्ट्रीय कल-कारखानोंके विकास और उसे युद्ध-सम्बन्धी कारखानेके रूपमें परिणत करनेमें कम्युनिस्त पार्टी और बोलशेविक संचालक और पथ-प्रदर्शक शक्ति थे। लेनिन-स्तालिनकी पार्टीके नेतृत्वमें हमारी बहुजातिक-सोवियत्ने किसान और बुद्धिजीवी सारी जनताने इकट्ठा हो एक ठोस युद्ध-शिविर बना लिया। पार्टीने सोवियत्-संघकी सारी शक्तियोंको एकताबद्ध किया और हमारे सोवियत्-राज्यके सारे भौतिक साधनोंको शत्रुपर विजय पानेमें लगा दिया।

जर्मन और जापानी दोनों ही साम्राज्यवादी आक्रमणकारी पराजित कर दिये गये। हमारा देश पश्चिममें जर्मनी और पूर्वमें जापानी आक्रमणके खतरेसे अब सुरक्षित है।

३. सोवियत्-संघ फिर हिटलरी जर्मनीके विश्वासघाती आक्रमणसे रुक गये शान्तिपूर्ण समाजवादी निर्माणके कामपर लग गया है।

मातृ-मुक्ति-युद्ध अभी चल ही रहा था, तब हीसे दुश्मन द्वारा पहलेके अधिकृत जिलोंकी आर्थिक स्थापनामें सोवियत्-संघ लग गया, अब जबकि युद्ध समाप्त हो गया, तो लम्बी राजकीय योजनाओंके आधारपर अपनी अर्थ-नीतिको और अधिक विकसित तथा पुनः स्थापित करनेका काम जारी किये हुए है—ऐसी योजनामें जोकि सोवियत् संघके आर्थिक जीवन-का संचालन और निर्णय करती है।

सोवियत्-संघकी महापार्लियामेंट घोषित करती है, कि सोवियत्-संघकी आर्थिक पुनः स्थापना और विकासकी योजना १९४६—५० के उद्देश्य हैं, देशके प्रनष्ट जिलोंको फिरसे आबाद करना, कृषि तथा उद्योग-धंधेमें युद्ध-पूर्वके तलपर पहुँचना और फिर उस तलसे काफी आगे बढ़ जाना। इसके लिये आवश्यक है, कि—

१. भारी, उद्योग और रेलवे यातायातकी पुनःस्थापना और विकासको सबसे पहले रखा जाय। इसके बिना सोवियत्-संघकी सारी अर्थनीति (उद्योग-कृषि)का ठीक तौरसे और जल्दी पुनः स्थापित और विकसित होना असम्भव है।

२. सोवियत्-जनताके हितके भौतिक साधनोंको बढ़ाने और देशमें उपभोग-सामग्रीकी मुख्य वस्तुओंको बहुतायतसे प्राप्त करनेके लिये कृषि तथा उपभोग-सामग्री पैदा करनेवाले कारखानोंको बढ़ाना।

३. उत्पादन बढ़ाने और श्रमकी ज़बर्दस्त कार्यक्षमताको उठानेकेलिये सोवियत्-संघकी राष्ट्रीय अर्थनीतिकी सभी शाखाओंमें टेकनिकल (साइन्स-उपयोग) प्रगति करना, जोकि निकट-भविष्यमें बाहरके देशोंकी साइन्स सम्बन्धी सफलताओंको पकड़ने और आगे बढ़ जानेके लिये आवश्यक है।

४. सोवियत्-संघकी आर्थिक शक्ति को बढ़ानेके लिये १९४६में राष्ट्रीय अर्थनीतिके पुनर्निर्माणको पूरा करना।

५. सोवियत्-संघकी रक्षा-शक्ति (सेना)को और बढ़ाना और सेनाको नवीनतम हथियारोंसे सुसज्जित करना।

६. सोवियत्-संघकी राष्ट्रीय अर्थनीतिकी पुन: स्थापना और विकासके लिये केन्द्रित पूँजी लगानेके अभिप्रायसे पाँच वर्षके कालमें २ खरब ५० अरब ३० करोड़ रूबल (१९४५के मूल्यानुसार)को पुन: स्थापन और नये कारखानोंमें काममें लगाना; और नवीनतम गृह-निर्माणके यन्त्रोंके उपयोग तथा घर बनानेके कामको यंत्र द्वारा गृह-निर्माण-सम्बन्धी मशीनोंके उत्पादनकेलिये औद्योगिक केन्द्रके बनानेके द्वारा गृह-निर्माण उद्योगका अत्यन्त विकास करना। इन सारे कामोंके लिये बहुत बड़े परिमाणमें शीघ्रतासे पूँजीका जमा करना।

७. शहरों और गाँवोंमें मकानोंका पुनर्निर्माण और नव-निर्माण करना, और देशके गृह-निर्माणकी सामग्रीमें चरम सीमाकी वृद्धि करना; कारखानेसे बने मकानोंको बहुत बड़े आकारमें उत्पादनका ढग स्वीकार करना, और अपने लिये घर बनानेके वास्ते मजूरों, किसानों तथा बुद्धिजीवियोंको राज्यकी ओरसे सहायता देना।

८. युद्धके पहलेकी राष्ट्रीय आय और राष्ट्रीय उपभोगके परिमाणसे आगे बढ़ जाना, जिसके लिये आहारके कारखानोंको जहाँ तक सम्भव है बढ़ाकर उपभोग-सामग्रीको बड़े पैमाने पर पैदा करना, कल-खोजी किसानोंकी आयको बढ़ाना, सौदाके विनिमयका विस्तार करना; और राशन-व्यवस्थाको निकट-भविष्यमें हटाकर उसकी जगह विस्तृत और सुव्यवस्थित सोवियत् व्यापारकी स्थापना करना।

९. श्रमके संगठनमें सुधार, और अच्छे जीवन तथा भौतिक सामग्रीके प्रदान द्वारा उद्योग-धन्धे और यातके लिये स्थायी कर्मी समूहकी

प्राप्ति निश्चित कर देना, और उच्च यांत्रिक-शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों की संख्यामें लगातार वृद्धिको भी पक्का करना।

१०. अधिकसे अधिक आठ घंटा काम करनेके दिन, भारी श्रम वाले कारखानोंके कामों में चारों ओर मशीनके उपयोग, राष्ट्रीय अर्थ-नीतिमें बड़े पैमानेपर बिजलीके उपयोग और उत्पादनके कामोंमें अधिक तत्परता द्वारा श्रमकी उत्पादन-शक्तिको बढ़ाना।

११. प्रारम्भिक, माध्यमिक स्कूलों तथा उच्चशिक्षालयोंकी पुनः स्थापना और विस्तार करना; और नाना शिल्प-शिक्षण-संस्थाओंको बढ़ा उन उन कामोंके लिये नये कमकरोंको शिक्षा देना, कारखानोंकेलिये शिल्पचतुर कारीगरोंकी शिक्षामें सुधार करना।

१२. सार्वजनिक स्वास्थ्य-रक्षाके साधनोंको और बढ़ाना और सोवियत् संस्कृति और कलामें नयी प्रगतिका प्रबन्ध करना।

१३. कारखानोंके उत्पादनमें मौसमी कमियोंको हटाने और उनमें आ पड़नेवाली कठिनाइयोंको दूर करनेकेलिये कारखानोंमें सामग्री और गोदामके मालको बढ़ाकर रखना;

१४. सिक्केको दृढ़ करना और राष्ट्रीय उद्योगमें कर्ज देनेकी व्यवस्थामें सुधार करना; उत्पादनमें अधिक प्रोत्साहन देनेके तौर पर लाभ और खर्चके हिसाब-किताबके महत्त्वको बढ़ाना; उत्पादनके व्ययको कम करके उद्योग-धन्धेकी सभी शाखाओंमें अधिक लाभका उपाय करना; कारबारके संगठनोंपर ज़ोर देना कि वह अपने आन्तरिक साधनोंको काममें लाने, पूरी तौरसे मितव्ययिता रखने और बुरे प्रबन्ध तथा अनुत्पादक व्ययसे होनेवाली हानियोंको दृढ़ताके साथ हटानेपर अधिक ध्यान दे, मजदूरों और कर्मचारियोंकी पूरी आयमें उपजके प्रोग्रामके पूरा करनेकेलिये प्रीमियम (अतिरिक्त लाभ)के अनुपातको बढ़ाना।

१५. संघके प्रजातन्त्रोंके आर्थिक क्षेत्रमें आगे बढ़ानेके भावको उनकी अपनी उत्पादन-शक्तिकी पुनःस्थापना और विकासके बारेमें पूरी तौरसे चेतना पैदा करना; सोवियत्-संघकी अर्थनीतिकी सार्वत्रिक व्यवस्थाके अन्दर प्रजातन्त्रोंकी अर्थनीति (कृषि और उद्योग)को पूरी तौरसे सुदृढ़ और विस्तृत करना, प्रजातन्त्रोंकी अर्थनीतिके सर्वतोमुखीन विकासकेलिये स्थानीय उद्योग-धन्धों और उत्पादक-सहयोग-समितियों, खासकर अन्न और उपभोग-सामग्रीको बढ़ाना और उसे स्थानीय ईंधनके उपयोग द्वारा निश्चित करना, स्थानीय-आवश्यकताओंकेलिये फौलाद और लोहेकी ढलाई, कुटाई, गृहनिर्माण-सामग्री और काष्ठका उत्पादन, प्रजातन्त्रीय उद्योगकेलिये धातुकी चीजें और साधन वहीं तैयार करना; उपभोग-सामग्रीको स्थानीय उद्योगोंसे पैदा करना और सहयोग-समिति उसी प्रजातन्त्रके हाथमें रहनी चाहिये, प्रजातन्त्रके मन्त्रिमण्डलको यह निश्चय करना होगा, कि पैदा किये मालमेंसे कितना हिस्सा प्रजातन्त्रके भीतर खपाया जाय और कितना दूसरे प्रजातन्त्रोंके साथ मालके विनिमयमें इस्तेमाल किया जाय, साथ ही बाजारके दामोंके बारेमें राज्यके साधारण नियमका अनुसरण करना चाहिये।

इन उद्देश्योंको सामने रखते हुए सोवियत् समाजवादी प्रजातन्त्रोंके संघकी महापार्लियामेण्ट निश्चय करती है :—

राज-योजना कमीशन द्वारा बनाई और सोवियत् सरकार द्वारा स्वीकृत सोवियत्-संघकी आर्थिक पुनःस्थापना और विकासकी योजना १९४६—५०को स्वीकार करती है, और इस कालकेलिये कामोंका विवरण निम्न प्रकारसे निश्चित करती है :

अधिक उत्पादन और पूँजीके विकासकी योजना

क. उद्योग

१. उद्योग-धन्धा

१. इस पंचवार्षिक-योजनाके अन्तिम वर्ष (१६५०)में सारे सोवियत् संघके उद्योग-धन्धेके उत्पादनका सारा योग २ खरब ५ अरब रूबल (१६२६—२७के मूल्यसे) निश्चित है, जोकि १६४०के १ खरब ३८ अरब ३५ करोड़ रूबलकी तुलनासे ४८% अधिक है।

२. लोहा-फौलाद आदि

२. १६५०में उद्योगकी प्रधान प्रधान शाखाओंका उत्पादन-तल निम्न प्रकार होगा :—

(क) लोहा-फौलाद

लोहा (टन)	१,६५,००,०००
फौलाद (टन)	२,६४,००,०००
गोल किया माल (टन)	१,७८,००,०००

(ख) ईंधन और बिजली

कोयला (टन)	२,५०,०००,०००
पेट्रोल (टन)	३,५४,००,०००
कोयला-शेल-गैस (घनमीतर)	१,६०,००,००,०००
स्वाभाविक गैस (घनमीतर)	८,४०,००,००,०००
बिजली (किलोवाट)	८२,००,००,००,०००

(ग) रेल-यातायात

दूरगामी भाप-इंजन	२,२००
" डीज़ल-इंजन	३००
" बिजली-इंजन	२२०

माल-डब्बा (दो धुरेवाले डब्बेमें)	१,४६,०००
मुसाफिर-गाड़ीके डब्बे	२,६००

(घ) मोटरगाड़ियाँ

ट्रक	६,२८,०००
पसिंजरकार	६५,६००
मोटर-बस	६,४००

(ङ) फेक्ट्रीका सामान

लोहा फौलाद मिलोंका सामान (टन)	१,००,६००
भाप-टर्बाइन (किलोवाट)	२६,०६,०००
जल-टर्बाइन, बड़ी (किलोवाट)	३,७२,०००
" मझोली (")	१,५०,०००
" छोटी (किलोवाट)	५,००,०००
बिजली-मोटर (१०० किलोवाट तक)	६,२४,०००
" (१०० किलोवाटसे ऊपर)	६,०००
धातुके काम वाली मशीन	७४,०००
कताई फ्रेम (तकुआ)	१४,००,०००,
करघा	२५,०००

(च) कृषि-मशीन

ट्रेक्टर	१,१२,०००
ट्रेक्टरसे खींचा हल	१,१०,०००
" जोतक	८२,३००
" बोवक	८३,३००
स्वयंचालित दाँवक	१८,३००

(छ) रसायनिक और खनिज खाद

कास्टिक सोडा (टन)	३,६०,०००

कलकाइन सोडा (टन)	८,००,०००
खनिज खाद (महाफास्फोर्स, निट्रेट, पोटास) (टन)	५१,००,०००
कृत्रिम रंग (टन)	४३,०००

(ज) काष्ठ और गृह-सामग्री

कटा काष्ठ (घनमीतर)	२८,००,००,०००
चिरा काष्ठ (")	३,६०,००,०००
सीमेंट (टन)	१,०५,००,०००
स्लेट (पटिया)	४१,००,००,०००
खिड़कीका काच (वर्गमीतर)	८,००,००,०००

(झ) कपड़ा और हल्का उद्योग

सूती कपड़ा (मीतर)	४,६८,६०,००,०००
ऊनी कपड़ा (")	१५,६४,००,०००
चमड़ेका जूता (जोड़ा)	२४,००,००,०००
रबर जूता (")	८,८६,००,०००
मोजा (")	५८,००,००,०००

(ञ) खाद्य-सामग्री

माँस (टन)	१३,००,०००
मक्खन (टन)	२,७५,०००
तेल (टन)	८,८०,०००
मछली (टन)	२२,००,०००
चीनी (टन)	२४,००,०००
आटा (टन)	१,६०,००,०००
शराब (१० लीतर)	१०,०८,००,०००
साबुन (टन)	८,७०,०००

ख. विवरण

३. उत्पादनकी वृद्धिकी योजनाके अनुसार १६४६—५०में सोवियत्-संघके उद्योग-धन्धेके निर्माणमें १ खरब ५७ अरब ५० करोड़ रूबल (१६४५के मूल्यसे) पूँजी लगेगी।

४. लोहा और फौलाद—चूँकि इस उद्योगके विकासपर सोवियत्-संघकी सारी अर्थनीतिकी पुन: स्थापना और विकास अवलम्बित है, इसलिये लोहा-फौलादके बनाने और रोल किये मालके उत्पादनमें युद्ध-पूर्वके परिमाणसे १६५०में ३५% बढ़ाया जायगा। १६५०में लोह-पाषाणकी वृद्धि ४ करोड़ टन, कोकका उत्पादन ३ करोड़टन, अप्रमाण आगवाली ईंट २७ लाख ८० हजार टन और एसिडवाली आग-ईंट ६ लाख ८० हजार टन अधिक बनाई जायगी।

१६५०में फौलादकी रेल १३½ लाख टन और लोहेका पाइप १५ लाख टन बनेगा।

१६५० तक ४५ धौंकू भट्ठे १ करोड़ ८० लाख टनकी क्षमतावाले, १६५ खुले भट्ठे, १५ परिवर्तक और ६० बिजलीके भट्ठे १ करोड़ ६२ लाख टन फौलादवाले, १०४ रोलिङ्ग मिल १ करोड़ १७ लाख टन वाली और ६३ कोकबैट्री १ करोड़ ६१ लाख टन वाली पुनर्निर्मित या नव-निर्मित हो काम करने लगेंगी। ३ करोड़ ५४ लाख टन वार्षिक उपजकी नयी लोहेकी खानें काम करना शुरू करेंगी।

दक्षिणके लोह-फौलाद-कारखाने युद्धके पूर्व जितना लोहा, फौलाद, रोल किया माल, कोक और लोह-पाषाण उत्पन्न करेंगे। सोवियत्-संघके दक्षिणी क्षेत्रके लोह-फौलाद वाले कारखाने—जिनमें १७ बड़े बड़े कारखाने हैं—फिरसे पूर्ववत् काम करने लगेंगे। ७ पाइप ढालने और रोल करने वाली मिलें फिरसे पूर्ववत् काम करने लगेंगी।

उराल, सिबेरिया और सुदूरपूर्वके लोह-फौलादके केन्द्रोंका सर्वतो मुखीन विकास जारी रहेगा। निज्नी-तगिल और चेल्याबिन्स्कके लोह-

फौलाद-कारखाने बहुत कुछ तैयार हो जायेंगे। उराल और सिबेरियामें ४ लोह-फौलाद मिलोंका काम जारी रहेगा।

बिजलीवाले फौलाद बनानेके लिये एक नया कारखाना बनाया जायेगा, जिसमें परिवर्तक और डिनामोंवाला फौलाद अपेक्षित मात्रामें मिल सकेगा। गुर्जी-प्रजातन्त्रमें १ लोह-फौलाद मिल बनेगी और आजुबाइजानमें १ पाइप रोल करनेवाली मिल, कज़ाकस्तान और लेनिनग्राद्में एक एक नये लोह-फौलाद कारखानेका बनना शुरू होगा।

सुदूरपूर्व, सिबेरिया और काकेशस अपने यहाँ लोह-पाषाण मिलनेके स्रोत तैयार करेंगे। क्रिवोइरोग लोह-पाषाण, कमिशवुरूनकी लोहेकी खानें, लिपेत्स्क और तुलाकी लोहेंकी खानें, और चिआतुरी और निकोपोलकी मंगानिज़ खानें पुनः स्थापित हो और बड़ी बनेंगी। शोरिया-अधित्यकामें लोह-पाषाणका निकलना बढ़कर २० करोड़ टन हो जायेगा और कुर्स्क मगनेटिक क्षेत्रमें लोहेकी खानें खुलेंगी, लोहा-फौलाद उद्योगके कच्चे मालको दूरसे लानेको कम कर दिया जायगा, खासकर उरालसे कुज-बासमें लोह-पाषाणका ले जाना।

भूगर्भीय जाँच-पड़तालका क्षेत्र और बढ़ाया जायगा, विशेषकर सोवियत्के पूर्वीय भागमें, जिसमें कि वर्तमान योजनाके अनुसार आगे बनने वाले लोह-फौलादके कारखानोंके लिये लोह-पाषाण और दूसरे कच्चे मालको अधिक प्राप्त किया जा सके। वाणिज्य-उपयोगी लोह-पाषाण निधि—जिसके एक अरब अड़सठ करोड़ टनमें दश करोड़ टन पश्चिमी सिबेरियामें है—और ग्यारह करोड़ टन मंगानिज-निधिकी सर्वे की जायेगी। इस औद्योगिक निधिको उत्तरी उराल, सिबेरिया और कजाकस्तान तथा कुर्स्क मग्नेतिक क्षेत्रमें बननेवाले लोह-फौलाद कारखानोंमें इस्तेमाल किया जायगा।

दक्षिणी क्षेत्रमें ठंडे रोल किये लोहके पतले चदरोंके उत्पादनको पुनः पूर्ववत् स्थापित किया जायगा और पूर्वी क्षेत्रमें उसे और बढ़ाया जायगा।

रोगनिटिन्के उत्पादनको संगठित और टिन-प्लेटके उत्पादनको बढ़ाया जायगा। चुने हुए फौलादी आकारों, कम मिलावटके फौलादों, बारीक मिश्रित धातुओं, परिवर्तक तथा डिनामोकी कम चुम्बकीय क्षतिवाले फौलादके उत्पादनमें सर्वतोमुखीन विकास किया जायगा। उच्च तापमान और दबाववाले ब्वायलरों तथा टर्बाइनोंके लिये अधिक निश्चित फौलादका उत्पादन बढ़ाया जायगा। धौंकू भट्ठे, खुले भट्ठे और रोलिंग मिलोंके अधिक मेहनतवाले कामोंको यन्त्र-परिचालित बना दिया जायगा। खासकर दक्षिणी क्षेत्रके लोह-फौलाद मिलोंकी पुनः स्थापनाके काममें लोह-फौलादको मिलोंके कोयला और कोकवाले हातोंमें तथा कोक और रसायनिक कारखानोंमें नवीन ढंगके क्रेन लगाये जायेंगे। मिलों तथा खानोंमें चीज लाने तथा ले जानेकेलिये टिक-ट्रकका इन्तिजाम किया जायगा। धातु-ईंटोंके ज्वाला द्वारा छीलनेका बहुत व्यापक रूपमें काम लिया जायगा। लोह-फौलाद मिलोंको नाप और नियंत्रणके ओजारों और स्वयंचालित यन्त्रोंसे सुसज्जित किया जायगा। धौंकू तथा फौलाद पिघलानेवाले भट्ठोंके लिये ऑक्सिजनपूर्ण धौंकनका बड़े पैमानेपर इस्तेमाल होगा। अधिक व्यवस्थित मिश्रणकी गर्मी पैदा करनेके लिये कम गुण वाले धातु-पाषाणोंके पूँजीकरणको विकसित किया जायगा। पूजीकृत धातु-सामग्रीका उत्पादन और कच्चे मालकी तैयारीको बेहतर बनाया जायगा। लोह फौलादके कारखानेके रद्दा चूने और लोह मिट्टी तोड़नेवाले विभागमें यंत्रोंका अधिक उपयोग होगा। रद्दीके इस्तेमाल करनेके लिये यंत्रचालित नये कारखाने बनेंगे। कारखानोंमें इस्तेमालके लिये कोकके आँवोंसे गैसको ले जानेकेलिये पाइप-लाइनोंका अधिक विस्तार किया जायगा।

(ख) ५ अ-लोह-धातु उद्योग—वर्तमान कारखानोंके काममें सुधार, नई खानों और कारखानोंका निर्माण, जर्मन-ध्वस्त प्रदेशोंकी पुनः स्थापना और नवीनतम तरीकेके इस्तेमाल द्वारा अलोह तथा बहुमूल्य धातुओंके उत्पादनमें भारी वृद्धि की जायगी। पाँच वर्षके अर्सेमें ताँबेकी

उपजमें १·६ गुना, अलमोनियम्में दो गुना, मग्नेशियम्में २·७ गुना, निकल में १·६ गुना, सीसेमें २·६ गुना, राँगेमें २ ५ गुना, पुंजीकृत वोलफ्रम्में ४·४ गुना, पुंजीकृत मोलिब्देनम्में २·१ गुना और टिनमें २·७ गुनाकी वृद्धि होगी। रोल किये हुए अलोह धातुओं-खास करके पेचीदा मिश्रण वाले धातुओंका उत्पादन बढ़ाया जायगा। अलोह-धातु वाले कारखानोंके लोह-पाषाणकी आमदनीको बढ़ाया और सुधारा जायेगा। राँगाके कारखानोंके लिये कच्चे मालकी कमीको दूर किया जायगा।

पाँच सालकी अवधिमें ताँबेके कारखानोंकी खानोंमें पुंजीकरण प्लान्टों (यन्त्रालयों) और शोधनियोंकी कार्यक्षमता बढ़ाई जायेगी। कजाकस्तानमें एक ताँबा-विकास कारखानेका पहला भाग बन जायेगा। दक्षिणी उरालमें एक नई ताँबा-शोधनीका पहला भाग बन जायगा, एक नया बिजली-चालित ताँबा-कारखाना बनकर काम चालू हो चुका रहेगा; अलमोनियम्-खानों और कारखानोंकी कार्य-क्षमता बढ़ायी जायगी। अलमोनिया-मिट्टी (बक्साइट)की खानें दो अलमोनियम-कारखाने और एक अलुमिना प्लान्ट पुनः स्थापित कर दिया जायगा। दो नये अलमोनियम्-प्लान्ट बनकर चला दिये जायेंगे। उत्तरी उराल् तथा कुज्नेत्सबेसिनके अलमोनियम कारखानोंकी कार्यक्षमता बढ़ा दी जायगी। आजुरबाइजानके अलुमिना कारखानेका पहला भाग काम करनेके लिये तैयार हो जायेगा।

दो निकल (गिलट)के कारखानोंमें बिजली द्वारा निकल-उत्पादन बढ़ा दिया जायगा। एक नया निकल प्लान्ट (कारखाना) जारी किया जायेगा। वर्तमान राँगेके प्लान्टोंको बढ़ाया और सोवियत्-संघके दक्षिणी भागमें दो राँगा-कारखानोंकी पुनः प्रतिष्ठा और एकका नव-निर्माण होगा। एक नया सीसा-प्लान्ट भी बनाया जायगा। उत्तरी काकेशसमें वोल-फ्रम् और मोलिब्देनम्का कारखाना फिरसे बनाया और बढ़ाया जायेगा। बढ़ते कारखानोंके लिये मध्य-एसिया और पूर्वी-सिबेरियाके सर्वे किये खनिज-

अचलोंसे कच्चा माल पहुँचाया जायगा। रोल किये हुए अलोह-धातुका सामान बनानेके लिये तीन नये कारखानोंके पहले भाग बनकर काम करने लगेंगे। उक्रइनका एलेक्ट्रोड कारखाना पुन: स्थापित किया और बढ़ाया जायेगा। उत्तरी काकेशसमें एक नया एलेक्ट्रोड बनाया जायगा। दो नये कारखाने उच्च श्रेणीकी बड़ी निश्चित धातुओंके उत्पादनकेलिये बनाये जायेंगे।

अलुमिनाके उत्पादनकेलिये नये कच्चे माल—नेकेलिन और अलुनाइटके कारखानेमें उपयोगका काम आरंभ होगा। ताँबा, शीशा, बक्साइट, निकल, वोलफ्रम और मोलिब्देनमके धातु-पाषाणोंके कच्चे मालका स्टॉक बढ़ाया जायगा। अलमोनियम कारखानेके लिये कच्चे मालकी स्थानीय खानोंकी सर्वे की जायगी और उनके निकालनेकी तैयारी की जायेगी। अलमोनियम, निकल, वोलफ्रम्, मोलिब्देनम्, सोना तथा दूसरे नये बहुमूल्य धातुओंकी खोजकेलिये बहुत बड़े पैमानेपर परीक्षार्थ खुदाइयाँ होंगी, जिसमें कि नई खानें और कारखाने बनाये जा सकें।

अ-लोह-धातु-पाषाणोंके गन्धक आदि सभी खनिज अंशोंको बेकार न फेंक उनके पूरे उपयोगकेलिये धातु निकालनेके अतिपूर्ण तरीकों और अ-लोहधातुके साथ रसायनिक चीजोंके भी बनानेका प्रबन्ध किया जायगा। अलोहधातु-पाषाणोंके निकालने और शोधन करनेकी सारी अतिश्रमसाध्य क्रियाओंको यंत्र-चालित कर दिया जायगा और पुंजीकरणके प्लान्टों और शोधनियों (रिफाइनरियों)में सारी क्रियायें स्वयंनियंत्रित और स्वयंसाधित होंगी। धातवीय मग्नेशियमका बिजली-गर्मीके तरीके द्वारा उत्पादन बड़े पैमानेपर आरम्भ किया जायगा।

६. कोयला-उद्योग—१६५० तक इतनी तेजीसे कोयलेका उत्पादन बढ़ाया जायगा, कि वह युद्ध-पूर्वसे ५१% प्रतिशत बढ़ जायगा। (दोनेत्स, कुज्नेत्स्क् करागन्दा, किजिल, पेचोरा, त्कूर, त्वर्चेली, त्कर्चेलीके

कोयला-क्षेत्रोंमें) कोकवाले कोयलेका उत्पादन बढ़ाकर ५ करोड़ ७७ लाख टन कर दिया जायगा, जिसमें कि वह उद्योग-धन्धोंकी माँगें पूरी कर सकें। दोनबासमें युद्ध-पूर्वकी उपज फिर उतनी हो जायगी और १९५०में कुल उपज ८ करोड़ ८० लाख टन पहुँच जायगी। खबरोव्स्क प्रदेशके बुरेया, कज़ाकस्तानके एकिवस्तुज़, बश्किरियाके कुयुर्गाज़ और किर्गिज़ियाके उज्गेनमें नये कोयला क्षेत्र और कोयला-ज़िले खोले जायेंगे। बाहरसे कोयला मँगानेकी जगह अपने यहाँ कोयला पैदा करनेके लिये देशके सभी प्रदेशोंके—जहाँपर कि कोयला भूमिके अंदर मौजूद है—कोयला-क्षेत्रोंसे कोयला निकाला जायगा।

१९४६-५०में १८ करोड़ ३० लाख टन कोयला देनेकी क्षमता वाली खानें काम करने लगेंगी। दोनबासमें १९४९ तक खानोंका पुनरुद्धार किया जायेगा, जिसके लिये ६ करोड़ ७७ लाख टन वार्षिक क्षमतावाले एक सौ बयासी चन्दवक फिरसे ठीक कर दिये जायेंगे। १ करोड़ ४१ लाख टन क्षमतावाले साठ नये चन्दवक तैयार किये जायेंगे। कोयलेकी खानोंके उद्धार और नव-निर्माणमें कोकवाला कोयले देनेवाली खानोंपर पहले काम किया जायगा।

१९४६-५०के पाँचके वर्षोंमें निम्न लिखित नये चन्दवक तैयार होकर काममें लाये जायेंगे। मास्को-कोयला क्षेत्रमें १ करोड़ ८८ लाख टनकी क्षमतावाले ६६ चन्दवक; कुजबासमें १ करोड़ ८० लाख टनकी क्षमता वाले तीन चन्दवक; करागन्दामें ६५ लाख टनकी क्षमतावाले १६ चन्दवक और खुले-काट; उरालमें १ करोड़ ९० लाख टन वाले ४९ चन्दवक या खुले काटकी खानें; मध्य-एसियामें ३२ लाख टनकी क्षमतावाले ९ चन्दवक।

यूरोपीय सोवियत्-संघके उत्तरीय भाग और लेनिन्ग्राद्को कोयला देने वाले नये स्रोत पेचोरा खानको बढ़ाया जायगा। इस नये प्रदेशमें

७७ लाख टनवाले नये चन्द्रक काम शुरू करेंगे। द्नियेपरके पश्चिम और उक्रइनके पश्चिमी भागमें ६७ लाख टन वाले १३ चन्दवक और खुले-काटकी खानें काम करने लगेंगी। काकेशसमें ३२ लाख टन वाले नये चन्दवक और सुदूर-पूर्वमें साढ़े बारह लाख टन कोयला प्रति वर्ष देनेवाले आठ चन्दवक कार्य-परायण होंगे।

खानोंके निर्माण, खानोंके निवासियोंके लिये घरों और सार्वजनिक सुख-स्वास्थ्यके साधनोंके सम्पादनके लिये आधुनिक औद्योगिक ढंगको बड़े पैमानेपर इस्तेमाल करके उपरोक्त परिमाणमें खानोंका निर्माण हो सकेगा।

निश्चित प्रोग्रामके अनुसार कोयलेके उत्पादन और कोयलेकी खानियोंके विकास तथा श्रमकी उत्पादन-शक्तिके विकासकेलिये कोयला-उद्योगमें मेहनतके कामों—खासकर कोयला और ट्रोली—को हटानेको यंत्र-साधित करना होगा। इसके लिये कोयला खानोंमें युद्धके पूर्व खानोंमें इस्तेमाल होनेवाले यंत्रोंकी संख्याको तिगुना या चौगुना कर देना होगा। सोवियत्-संघके पूर्वी और पश्चिमी भागोंमें कोयला-खानकी मशीनोंका निर्माण अधिक करना होगा। अगले पाँच वर्षोंमें १३ नये मशीन बनाने वाले प्लान्ट (कारखाने) बनाकर चालू किये जायेंगे और १६ पहिलेके ऐसे कारखाने पुनः बसाये या सुधारे जायेंगे।

कोयला-उद्योगके सामने एक बड़ा काम है पुंजीकरण, जालीकरण और ब्रिकेट-निर्माण द्वारा कोयलेके गुणमें काफी वृद्धि करना। कोयलेके पुंजीकरण, जालीकरण और ब्रिकेट-निर्माणकेलिये बड़े पैमानेपर नवीनतम यंत्रोंसे यंत्रित प्लान्ट स्थापित किये जायेंगे। १६५०में पुंजीकरणकी अपेक्षा रखनेवाले सभी कोकवाला कोयला (७%से अधिक राख रखनेवाला) और बिजलीघरवाला कोयला (१०%से अधिक राखवाला) यंत्रवत् संस्कृत किया जायेगा; भूरे कोयलेका पुंजीकरण बड़े पैमानेपर व्यवहारमें लाया जायगा। इसके अनुसार १६५०में कोयलेका यंत्र द्वारा पुंजीकरण बढ़कर १५ करोड़ टन हो जायगा, जिसमें कोकवाला कोयला ५ करोड़ ३० लाख

टन और बिजलीघरवाला ७ करोड़ ७० लाख टन होगा। बिजलीघर वाले कोयलेका जालीकरण भी होगा। कोयलेके ब्रिकेटके उत्पादनको और बड़े पैमानेपर संगठित करना होगा, जिसमें कि १६५०में उसका उत्पादन ७४ लाख टन तक पहुँच जाये।

१६४६-५०में कोयलेके यांत्रिक पुंजीकरण और ब्रिकेट-प्रोग्रामको पूरा करनेके लिये १७ करोड़ ५० लाख टनकी क्षमता वाले २७१ कोयला पुंजीकरण प्लांट (कारखाने) नये बनाये जायेंगे और ६० लाख टन वाले ६ प्लांट फिरसे बसाये जायेंगे; १ करोड़ टनकी वार्षिक क्षमता वाले २६ कोयला-ब्रिकेट-प्लान्ट नये बनेंगे। कोयला-पुंजीकरणके बनानेके यंत्र संगठित किये जायेंगे और दो मशीन बनानेवाले नये प्लान्ट—जिनमेंसे एक कुजबासमें और दूसरा दोनबासमें--बनाया जायगा। सभी नये बनाये चन्दवकोंमें पुंजीकरण और जालीकरणके यंत्र लगाने होंगे, जो चाहे एक एक या कई चन्दवकोंके समुदायके लिये काम करेंगे। दक्षिणमें कोक और रसायनिक प्लान्टोंके कोयला-पुंजीकरण विभागका फिरसे बसाना या नया निर्माण करना जल्दी जल्दी होगा और लोहा-फौलाद प्लान्टोंमें नये कोयला-पुंजीकरणके प्लान्ट बनेंगे। नई पंचवार्षिक योजनाके कालमें ३६ करोड़ १० लाख टन वार्षिक कोयला देनेवाली नई खानों और खुले काटोंको आरम्भ करनेकेलिये ७६५ स्थानोंमें नापी जायेगी। इन स्थानोंमें ऊरालमें १३१, मास्को-क्षेत्रमें १३५, करागन्दा क्षेत्रमें १६०, कुज्नेत्स्क-क्षेत्रमें ६० और दोनेत्स-क्षेत्रमें १४० स्थान होंगे। ऊराल, दोनेत्स, कुज्नेत्स्क, करागन्दा और पेचोराके क्षेत्रोंमें कोकवाले कोयले-इलाकों और भूमि-निहित निधियोंका पता लगानेके लिये निखनन किया जायगा।

७. कच्चे कोयले (पीट) का निष्कासन—१६५०में पीटका उत्पादन ४ करोड़ ४३ लाख टन यानी युद्ध-पूर्वसे २६% अधिक कर दिया जायगा, और मध्य तथा पश्चिमी जिलोंमें इसका बहुत विस्तार होगा।

पीटके निकालने, सुखाने, और गंज करनेकी सारी अधिक परिश्रमकी क्रियाएँ और तैयार करने, चढ़ाने और उतारनेका भी काम मशीनसे किया जायगा। निष्कासनका अत्यधिक यंत्र-चालित तरीका—जैसे पीसने छेदने और दबाने—को विकसित किया जायगा और ढोनेके लिये पतली लाइन वाली गाड़ियोंका इस्तेमाल बढ़ाया जायगा।

१९५० तक पीट-ब्रिकेका उत्पादन बढ़कर १२ लाख टन हो जायगा। सारे साल भर पीट निकालनेका इंतिजाम शुरू किया जायगा और इसके लिये कृत्रिम रूपसे पीटके जमे जलको पिघलानेकेलिये प्लान्ट बनाये जायेंगे।

पीटके निकालने और उसके टेक्नोलौजिकल और रसायनिक क्रिया को पूर्णतया यंत्र द्वारा करनेके वास्ते व्यापक रूपमें अनुसंधानका कार्य किया जायगा।

८. **गैस-उत्पादन**—स्वाभाविक गैसों और कोयला, पीट तथा शेल-के रसायनिक उपयोगके आधारपर बड़े पैमानेपर एक नई उद्योग-शाखाका विकास किया जायगा। १९५०में कोयला और शेलसे गैसका उत्पादन १ अरब ९० करोड़ घनमीतर और स्वाभाविक गैसको ८ अरब ४० करोड़ घनमीतर बढ़ा दिया जायगा। जमीनके नीचे कोयलाकी गैस बनानेका काम जारी रहेगा, और १९५०में ९२ करोड़ घनमीतर गैस इस तरीकेसे पैदा की जायगी। कोयले और शेलके तरल-ईंधनके रूपमें परिणत करनेके लिये कारखाने आरंभ किये जायेंगे। १९५० तक कोयला और शेलसे ६ लाख टन तरल-ईंधन (पेट्रोल) पैदा होगा। एस्तोनियामें ६४ लाख और लेनिन्ग्राद जिलेमें ३० लाख टनकी क्षमतावाली शेलकी खानें फिरसे बसाई या नई बनाई जायेंगी, और शेल-से गैस बनानेका उद्योग आरंभ किया जायेगा। कोयलोंके तरलीकरण-के लिये दो प्लान्ट और कृत्रिम पेट्रोलके उत्पादनकेलिये एक प्लांट बनाया जायगा। इन पाँच वर्षोंमें एस्तोनिया और लेनिन्ग्राद जिलेमें शेलकी गैस

और शेलके उद्योगोपयोगी बनानेके प्लांट बनाकर चालू किये जायेंगे, चार नये गैस-वर्क निर्मित होंगे, दशावासे कियेफ और कोतला-यार्वेसे लेनिनग्राद तक गैसकी पाइप-लाइन डालकर चालू और सरातोफ़से मास्को तककी गैस पाइप-लाइनको पूरा कर दिया जायगा।

६. पेट्रोल—इस उद्योगको तेजीसे फिरसे बसाना और विकसित करना होगा, जिसमें कि १९४९ तक निष्कासन और शोधनका काम युद्ध पूर्वके तलपर पहुँचकर १९५०में आगे बढ़ जाये। पूर्वी भाग—ऊराल, बस्कीरिया, वोल्गा-उपत्यका, सखालिनद्वीप, तुर्कमानिस्तान, उजबेकिस्तान, कज़ाकस्तान तथा उक्रइनसे पेट्रोलके निष्कासन और शोधनका विकास चरम सीमा तक पहुँचाना होगा। पूर्वी प्रदेशके तेल-निष्कासनको सोवियत् सबके संपूर्ण उत्पादनमें काफी बढ़ाना होगा। काकेशस, बाकू, ग्रोज़्नी और क्रस्नोदरके तैल-उद्योगके तेजीसे बसानेका प्रबंध करना होगा। प्रोग्रामानुसार उत्पादनकी वृद्धिको पूरा करनेके लिये नये तेल-क्षेत्रोंमें भूगर्भीय सर्वे तथा प्रारंभिक कामको करना होगा और कमसे कम दो-तीन साल पहलेसे उसके लिये पर्याप्त व्यापारिक संरक्षित निधिके लिये सर्वेको १९५० तक पूरा कर देना होगा। सर्वेकेलिये गहरी ट्यूब-छिदाई (ड्रिल) और सारी छिदाईमें इसके भागको बढ़ानेका प्रबंध करना होगा। बड़े वेगसे ट्यूब-वेल डालने और घुमौआ छिदाई करनेके तरीकेको व्यापक रूपसे इस्तेमाल करना होगा। सुधरे साधनोंके साथ गहरे ट्यूब-वेलमें इस्तेमाल होने वाले पंपको काममें लाना और काममें पीछे आनेवाले तरीकोंका उपयोग करना होगा। पेट्रोलका निष्कासन, संचयन और स्थानान्तरण करनेमें वायुशून्य पाइप आदिका इस्तेमाल करना होगा। उच्च ऑक्टेन वाले वैमानिक पेट्रोलको बढ़ाना होगा। और मोटर-पेट्रोल ट्रैक्टरके किरासिन, डीज़ल इंजनके तेल और लुब्रिकेट करनेके तेलके गुणोंको बढ़ाना होगा। नुकसानको कम और पेट्रोल तथा औद्योगिक

तेल-उत्पादनके नवीनतम तरीकोंके इस्तेमालसे पेट्रोलसे अधिक परिमाणमें तेलकी उपजको प्राप्त करना होगा।

पाँच वर्षके कालमें ४ तेल-शोधन प्लांट और १६ तेल-शोधनियाँ बनाई जायेंगी। दक्षिणके कृषि एवं औद्योगिक प्रदेशके उपयोगके लिये तेलकी चीजें देनेके वास्ते तीन तेल शोधनी-फैक्ट्रियोंको फिरसे बसाया जायगा, तेलकी पाइप लाइनें तैयार की जायेंगी। प्लांटोंको काफी बढ़ाकर गैस और लैंप, ब्लैकके उत्पादनके लिये बड़े पैमानेपर उद्योगको बढ़ाया जायगा।

तेलकी मशीन, उपयोगी साधन और भाप-यंत्रोंके उत्पादनको फिर से बसाकर इतना अधिक बढ़ाया जायगा, जिसमें तेल-उद्योगकी आवश्यकताओंको पूरा कर सके।

१०. **बिजलीका विकास**—पावर-स्टेशनोंके बसाने और बनानेका काम इतनी तेजीसे करना होगा, जिसमें उद्योगकी दूसरी शाखाओंके बसाने और विकसित करनेसे शक्ति-उत्पादनकी क्षमताकी वृद्धि साथ-साथ चले। बिजली-शक्तिके पर्याप्त मिलने और पावर-स्टेशनोंको निम्न गतिसे चलनेसे रोकनेके लिये स्थायी संरक्षित बिजलीकी क्षमता वाले शक्तिके ग्रिड सिलसिले (बिजलीके बड़े तार)का इंतिजाम करना होगा। इस प्रकार १९४०की अपेक्षा १९५०में बिजली-शक्तिका उत्पादन ७०% अधिक होगा।

जर्मन- ध्वस्त जिलोंके पावर-स्टेशनोंको पूर्णतया पहले जैसा बना देना होगा और पाँच वर्षोंमें सोवियत्-संघके पावर-स्टेशनोंकी क्षमताको १ करोड़ ७० लाख किलोवाट तक बढ़ाना होगा, जिसमें कि सारे लगाये साधनोंकी क्षमता १९५०में २ करोड़ २४ लाख किलोवाट तक पहुँच जाय।

पन-बिजली-शक्ति-स्टेशनोंके निर्माणको ऐसे आगे बढ़ाया जाय, जिसमें सारी उत्पादित बिजली शक्तिकी मात्रा जितना अधिक हो सके, उतना

बढ़े। इन पाँच वर्षोंमें २१ लाख किलोवाट क्षमतावाले पावर-स्टेशन चालू किये जायेंगे।

पन-बिजली स्टेशन—जिनमें लेनिन् पावर स्टेशन द्निये़पर भी है—चालू किये जायेंगे, ३० पन-बिजली स्टेशनका बनना समाप्त होगा, आठ पन-बिजली स्टेशनोंके पहिले भाग बनकर चालू होंगे और पाँच बड़े बड़े नये पन-बिजली-स्टेशनोंके बनानेका काम शुरू होगा। द्नियेपर और सिर-दरिया पर नये पन-बिजली स्टेशन बनानेके लिये सर्वे और नकशा बनानेका काम जारी रहेगा। मुख्यतः पहले हीसे मौजूद बाँधोंका इस्तेमाल कर स्थानीय पन-बिजली-स्टेशनोंके बसाने और बनानेका काम बड़े पैमाने-पर होगा। छोटे पन-बिजली-स्टेशनोंमें दश लाख किलोवाट क्षमताके पावर-स्टशन चालू होंगे।

मास्को, दोनबास, द्नियेपर-उपत्यका, कियेफ, खरकोफ, ल्वोफ, अदेस्सा, निकोलायेफ, सेवस्तापोल, नवोरोसिस्क, क्रास्नोदर, ग्रोज्नी, स्तालिनग्राद, वोरोनेज़, ब्यान्स्क, कलिनिन, मिन्स्क, विलनुस, रीगा, तल्लिन, और पेत्रोजावोद्इस्कके पावर स्टेशन और बिजली ले जाने वाले तार यथापूर्ण फिर काम करने लग जायेंगे।

आजकल बनाये जाते ३७ जिला पावर-स्टेशन—जिनमें २१ ताप और शक्तिके स्टेशन हैं—तैयार होकर चालू हो जायेंगे। मास्को, गोर्की, इवानोवो और यारोस्लाव्लके बिजली-स्टेशनोंकी आवश्यकतासे कम शक्ति थी, वह पूरी कर दी जायगी।

क्रमशः मशीनके भीतर जुड़ी बिजलीकी जगह मशीनके साथ अलग-अलग स्वयं-चालित बिजलीके मोटरोंको जोड़ना बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किया जायगा। प्रकाश-उत्पादन और अलोह-धातु, मिश्रित फौलाद तथा रसायनका धातुके साथ जो बर्ताव होता है, उसमें बिजलीका उपयोग किया जायगा। उद्योग-धन्धेमें बिजलीके विकासके अतिरिक्त रेलवे और खेतीमें बिजलीका व्यापक रूपमें उपयोग किया जायेगा। गाँवमें

गैस पैदा करने वाले तथा गाड़ीके इंजनोंका इस्तेमाल करके भारी संख्या-में छोटे पन-बिजली एवं हवा-चालित, मोटरचालित पावर-स्टेशन बनेंगे। मास्को, लेनिन्ग्राद, कियेफ़, खरकोफ, स्वेर्द्लोव्स्क और रोस्तोफ़-दोन-परमें म्युनिस्पैलिटीकी ओरसे मकान गर्म करनेकी व्यवस्थाका विस्तार जारी रहेगा।

पावर-स्टेशनोंमें नवीनतम साधनों और प्रक्रियाओंके भारी-दबाव, भारी तापमान वाली भाप गर्मी पैदा करने वाले सिलसिलेके लिये पूर्णकी गई टर्बाइन, नवीनतम प्रकारके ब्वायलर, जेनरेटर और उच्च खिंचाव-के हथियारके उपयोगके लिये बड़े पैमानेपर व्यवस्था की जायगी। शक्ति-उत्पादन और वितरणकी प्रक्रियाके स्वयंचालित होनेका भारी विकास किया जायगा; पन-बिजली स्टेशनोंको पूर्णतया स्वयंचालित करनेका काम सबसे पहले होगा।

भारी खिंचाव सीधी बिजलीको लंबी दूरी तक पहुँचानेके संबंधमें अनुसंधान कार्य जारी रहेगा, और उसको व्यवहारमें लाया जायेगा।

११. मशीन बनाना—१९५०में यह उद्योग युद्धपूर्वसे दूना उत्पादन करने लगेगा। लोह-फौलाद, पावर, कोयला और तेल-उद्योगके यंत्रोंके बनाने, बिजली मशीन, रेल गाड़ी-इंजन, मोटरकी गाड़ियों, ट्रैक्टर, कृषि-यंत्र, गृह-निर्माण-उद्योगके साधन-यंत्रों, भूगर्भीय सर्वेके कामके यंत्रों, विशेष और पेचीदा मशीनटूलों, फौंडरी (ढलाई)के साधन-यंत्रों, रसायनिक उद्योगके साधन-यंत्रों, और पुर्जोंके बनाने वाले कारखानोंको फिरसे बसाने और नया बनानेका काम सबसे पहिले किया जायेगा।

पंचवार्षिक योजनाके अंतिम वर्षमें ४००० इंजन, २ लाख रेलके माल डब्बे (२ धुरवाली गाड़ियोंके हिसाबसे), १,३१,००० टन लोहा-फौलाद मिलके साधन-यंत्र, ३७,७०,००० किलोवाटकी भापवाली टर्बाइनें, ५,४०,००० वर्गमीतर गर्म करनेके धरातल वाले ब्वायलर, १,३३,००० ट्रैक्टर, ६४,८०० धातुका काम करनेवाले मशीनटूल, ७,५०,०००

मोटर-गाड़ियाँ, ८,००,००० (संचालक) मोटरें—जिनमें १०,०००की शक्ति १०० किलोवाटसे अधिक होगी—बनेंगे।

नये और सुधरे ढंगकी उच्च उत्पादक मशीनोंका निर्माण होगा बहु-तकुआ, मशीनटूल, स्वयंचालित मशीन टूल, शक्तिशाली स्टाम्प और डाइके प्रेम, फोर्ज करनेकी मशीन, बिजलीकी शक्तिशाली खनक-मशीन. उत्पादन-क्रियाकी स्वयं नियंत्रित और स्वयंसाधित मशीनें और आधुनिक ठढा करनेवाली मशीनें, नवीनतम टाइपकी बिजली-मशीनें, पारवर्त्तक, गाढ़ा करनेकी मशीनें, भारी वेगके यन्त्र, स्वयंचालित टेली-फोन-विनिमय, तारके यंत्र रेडियो-प्रेषक, रेडियो-लट्टू, फोटो बिजली सेल, परिशोधक ट्यूब, वितरण-पैनलू, पारा-वाष्प-परिशोधक, वेल्डिंग मशीन, संरक्षण और स्वयंचालन रिले, उच्च खिंचाव (टेन्शन)के यन्त्र—इनके उत्पादनोंका विकास होगा।

नये ढंगकी मशीनों एक तरहके पुर्जों और उनके जोड़नेके कारखानों-का फिरसे खड़ा करना या उत्पादन और चालन आरंभ होगा।

मशीन-निर्माणमें आधुनिक उत्पादनका ढंग—खासकर प्रचुर उत्पादन-प्रक्रियाका बहुत विस्तारसे इस्तेमाल होगा; स्वयंचालित उत्पादन-लाइन और बहुगुना मशीनटूल, दबाव और खिंचावकी ढलाई, स्वयंचालित वेल्डिंग (जोड़ना), स्टाम्प और जोड़वाले पुर्जोंके सहित मशीनें, उच्च गतिकी टेम्परिंग बिजलीसे तपाई, उच्च वेगसे स्टाम्प और दबाववाली मशीनोंका विस्तार-पूर्वक उपयोग होगा।

दोनबास और उरालसे भारी इंजिनियरी केन्द्रोंका पुनर्निर्माण और विकास किया जायेगा। १९४६—५०में लोह-फौलाद मिलोंके ४,०५,००० टन यन्त्र-साधन बनाये जायेंगे, जो ब्लूमिंग मिलों, रेल-रोल करने वाली मिलों, छोटे टुकड़ेके फौलादकी चीजों और तारोंको खींचकर बनाने वाले यंत्रीकृत साधनों और बारीक चदरोंको लगातार रोल करने वाली मिलोंकी आवश्यकतायें पूरी करेगा। दोनबासमें भारी

मशीन-उत्पादक दो प्लान्ट फिरसे बनाये जायेंगे और दक्षिणी उरालमें भारी मशीन-उत्पादक एक नया प्लान्ट बनकर तैयार होगा। पश्चिमी सिबेरिया-में चूर्णन और तोड़न वाले यंत्र-साधनोंके एक प्लान्टका निर्माण आरंभ होगा।

१९४६--५०में ९०,३०,००० किलोवाट शक्तिकी भाप-टर्बाइनें बनाई जायँगी; ऊंचे दबाव और ऊँचे भाप-तापमानमें काम करने वाली टर्बाइनों और ब्वायलरोंका निर्माण होगा तथा मध्यम और निम्न शक्तिकी जल-टर्बाइनोंका उत्पादन काफी बढ़ाया जायगा।

पावर-स्टेशनके यन्त्र-साधन बनानेके लिये चार प्लान्ट फिरसे खड़े किये जायेंगे। मध्य और निम्न शक्तिकी भाप-टर्बाइनके उत्पादनके लिये एक नया प्लान्ट तैयार होगा। जल-टर्बाइनके उत्पादनके लिये दो प्लान्ट लगा दिये जायेंगे। एक ब्वायलर प्लान्टको फिरसे खड़ा किया जायगा और तीन नये तैयार होंगे।

रेल-इंजन और डब्बोंके निर्माणका बड़े पैमाने पर विकास होगा। १९५० तक प्रतिवर्ष दूरगामी भाप-इंजनोंका उत्पादन बढ़कर २२००, दूरगामी डीजेल-इंजन ३००, दूरगामी बिजली-इंजन २२० और डब्बे (दो धुरी वाले डब्बेके हिसाबसे) १,५०,००० बनाये जायेंगे; माल-गाड़ीके डब्बोंका उत्पादन बहुत बढ़ा दिया जायगा। दूरगामी इंजनोंका उत्पादन इंजन बनाने वाले तीन प्लान्टोंमें होने लगेगा। कारखानोंके उपयोगकेलिये दूरगामी भाप और डीजेल इंजनों, तथा बिजलीके इंजनों-का उत्पादन नये संगठित चार मशीन-उत्पादक प्लान्टोंमें होगा। इंजन-बनानेके नये कारखाने बनाकर चालू किये जायेंगे। डब्बे बनाने वाले चार कारखाने फिरसे खड़े किये जायेंगे। डब्बे बनानेके तीन नये कारखाने तैयार हो जायेंगे और उत्तरी उरालमें डब्बे बनानेका काम फिरसे होने लगेगा।

चौहत्तर हजार हो जायगा। बहुप्रयोजनीय, विशेषप्रयोजनीय, स्वयंचालित और अर्ध-स्वयंचालित मशीन-टूलोंके उत्पादनमें वृद्धि होगी। बहुप्रयोजनीय और विशेषप्रयोजनीय, मशीन-टूलोंकी उत्पत्ति १९५०में १२,३०० तक पहुँच जायेगी। फोर्ज (तपाकर पीटना) और प्रेस (दबाव)के यंत्र-साधनोंका उत्पादन-युद्ध पूर्वसे ढाई गुना बढ़ जायेगा—इसमें भारी प्रेसों, हथौड़ों और फोर्ज करने वाली मशीनोंका भाग अधिक होगा। समान-आकार-प्रकार (स्टैन्डर्ड)के हथियारों और खुरचकोंके उत्पादनमें वृद्धि होगी। १८ मशीनटूल प्लान्ट फिरसे खड़े किये जायँगे। भारी मशीनटूल की उत्पत्तिके लिये तीन, बहुप्रयोजनीय तथा विशेष-प्रयोजनीय मशीन टूलोंके उत्पादनार्थ तीन प्लान्ट बनाकर चालू कर दिये जायेंगे।

१९५० तक बिजलीके यंत्र-साधनोंका उत्पादन युद्ध-पूर्वसे ढाई गुना हो जायेगा। मशीन-उत्पादक प्लान्टोंको हर प्रकारके बिजली वाले यंत्र साधन मिलेंगे। कोयला, तेल और लोह-फौलाद-उद्योगोंको भारी बिजली मोटर, सेफटीमोटर और स्टैन्डर्ड परिवर्त्तनशील बिजली-लहर, मोटर, बिजलीके यंत्र-साधन मिलेंगे; रेलके बिजलीकरणके लिये बनी योजना-को पूरा करनेके लिये उच्च खिंचावके यत्र-साधन काफी दिये जायेंगे। स्वयंचालित, नियंत्रक और साधक मशीनोंका उत्पादन काफी बढ़ा दिया जायगा। बिजली-मशीनके १५ प्लान्ट फिरसे खड़े किये या बनाये जायेंगे। टर्बाइनके लिये जेनरेटरों (जनकों)के उत्पादनार्थ एक प्लान्ट; खींचने और क्रेन (उत्तोलक)के यंत्र साधनोंके लिये एक प्लान्ट, दो केबुल (मोटे तार) प्लान्ट, केथोड किरण-नलीके उत्पादनार्थ एक प्लान्ट, डीजेल इंजिनके बिजली-यंत्र-साधनोंके उत्पादनार्थ एक प्लान्ट बनकर चालू हो जायेंगे।

१२. मशीन-निर्माण—१९५०में मोटर गाड़ियोंका उत्पादन बढ़कर ५,००,००० प्रतिवर्ष हो जायेगा। नये प्रकारकी मोटर-गाड़ियों—अधिक बोझेकी शक्तिवाले ट्रक, अधिक सुखद तथा अल्प-व्ययवाली मुसाफिर

१९५०में धातु पर काम करने वाले मशीन-टूलोंका उत्पादन बढ़कर कारोंका राशि-रूपेण उत्पादन चालू हो जायेगा। गैस-जेनरेटर (गैस-जनक) और गैस-रिजर्वायर (गैस-संचायक) मोटरकारोंका उत्पादन आरंभ हो जायगा। डीज़ेल-ट्रंक और टिप-ट्रंकका राशिरूपेण उत्पादन संगठित हो जायगा। तीन मोटर-कारखाने और कम ताकतकी कारोंके उत्पादनका एक प्लान्ट बनकर तैयार हो जायेगा; मोटरकारके ३ नये प्लान्ट बनेंगे; ३ वर्तमान प्लान्टोंकी क्षमता बढ़ा दी जायेगी। मोटरकारके पुर्जे जोड़नेवाले ४ प्लान्ट पूरे किये जायेंगे।

ट्रैक्टरों और कृषि-मशीनोंके उत्पादनमें वृद्धि होगी, क्योंकि बिना इसके शीघ्रतासे कृषिकी पुन: स्थापना और विकास असंभव है। पुराने ट्रैक्टर-प्लान्टोंको फिरसे दुरुस्त किया जायगा। उन्हें फिरसे ठीककर, और नये प्लान्टोंको खड़ाकर ट्रैक्टरोंका उत्पादन—विशेषतः कृषिकार्यके लिये—बढ़कर १९५०में प्रतिवर्ष १,१२,००० हो जायगा। डीज़ेल इंजन तथा गैस जेनरेटर वाले ट्रैक्टरोंका उत्पादन राशिरूपेण संगठित किया जायगा। दो ट्रैक्टर प्लान्टोंकी पुनः स्थापना होगी। तीन नये ट्रैक्टर प्लान्ट बनकर तैयार होंगे। बेलोरूसियामें एक ट्रैक्टर-प्लान्ट खड़ा किया जायगा। दो प्लान्टोंसे दूसरे काम न लेकर उन्हें ट्रैक्टर-उत्पादनमें लगा दिया जायेगा। कृषि-सम्बन्धी मशीनों—ट्रैक्टर, हल, बीजबोवक, जोतक, डिश्क (तवा-जैसे) और फार जैसे खनक यंत्र, कम्बाइन (फसल-काटक), अनाज-शोधक, औद्योगिक फसल तथा घास-बीज-संग्राहक मशीन, घास-काटक मशीन, चारा प्रस्तुत-कारक और संस्कारक मशीन, भेड़-मूँड़क और दूध-दूहक मशीन, डेरी पृथक् कारक, हिमकारक जैसी मशीनें, पशुशालाके जल-प्रदायक यन्त्र, कल्खोजकी आटा-मिल और फसलके हानिकारक कीड़ोंके विनाशक यन्त्र—राशिरूपेण पुनः स्थापित और विकसित किये जायेंगे। कृषि-मशीनोंके उत्पादनके लिये नौ प्लान्ट फिरसे स्थापित कर दिये जायँगे। कृषि-उत्पादनके लिये पाँच

और कम्बाइन फसल-लावकके उत्पादनके लिये प्लान्ट बनाकर चालू कर दिये जायेंगे।

जहाज-निर्माण और तत्सम्बन्धी दूसरे कारखाने पूर्णतया स्थापित किये जायेंगे। लेनिनग्राद् और निकोलायेफ जहाजी कारखानोंमें काम पहले किया जायगा। नये जहाजी कारखाने बनाये जायेंगे। नदी और समुद्रमें जानेवाले पोतोंके बनाने वाले कारखाने पुनः स्थापित करके बढ़ा दिये जायेंगे।

कम्प्रेसर और उच्च, प्रेसरवाले रसायनिक यन्त्रोंके उत्पादनको बढ़ाया जायेगा। आक्सिजनके कारखानोंमें अधिक उपयोग तथा टेकनोलौजिकल (यन्त्र-साइंस सम्मत) प्रक्रियाओंको तेजीसे बढ़ानेकेलिये शक्तिशाली-कम्प्रेसरों और आक्सिजन-उत्पादक मशीनोंकी उपजको संगठित करके बढ़ाया जायगा। सोवियत्के पूर्वी जिलोंमें रसायनिक यन्त्रों—विकेन्द्रक पम्प, कम्प्रेसर और टरबाइन कम्प्रेसर—के उत्पादन करनेके लिये फेक्टरियोंको बना और बढ़ाकर तैयार कर दिया जायगा।

कपड़ा कारखानेकी मशीनोंका उत्पादन युद्ध-पूर्वसे चारगुना अधिक कर दिया जायगा। नये प्रकारकी अधिक यंत्रचातुरी-संयुक्त मशीनों—अति वेगसे घूमने वाले फ्रेम और ताना करने वाली मशीनों— का उत्पादन शुरू हो जायेगा। लम्बे धागेके अंगुठिया-कताई, परेते और स्वयंचालित करघेका उत्पादन बढ़ाया जायगा। जूते और पोशाक-सम्बन्धी उद्योगोंकी मशीनें भी बढ़ेंगी। उसी तरह आहार तैयार करनेवाले उद्योगके लिये—खासकर माँस, दूध, चीनी और टिन-रक्षित फलकी फेक्टरियों और आटामिल तथा एलिवटेर (ऊँची बखा)की मशीनोंका उत्पादन भी बढ़ेगा। आधुनिक मशीनों—कम्प्रेसर, शीघ्र बर्फकारक, सुखाई और गारनेके यंत्र, वेकुअम (शून्यकारक) यंत्र, और फल-टिन-रक्षणके यन्त्रोंका उत्पादन शुरू होगा।

खनक यन्त्रों, गृह-निर्माण और पथ-निर्माणकी नवीनतम मशीनों,

उत्थापक और यातायातके यंत्र-साधनों, चढ़ाने और उतारनेकी मशीनों और अधिक मिहनतके कामोंके यन्त्रीकरणके नाना भाँतिके यन्त्र-साधनोंके उत्पादनका काम हाथमें लिया जायगा।

स्वयंचालित नियन्त्रण और साधनकेलिये मापक यन्त्रोंका उत्पादन बहुत अधिक बढ़ा दिया जायगा और काच-दर्शक तथा बिजली-मापकयन्त्रोंकी उपज बढ़कर १९५०में १९४०की अपेक्षा सात गुना हो जायेगी। अनुसंधान-संस्थाओंके उपयोगके लिये एलेक्ट्रन अणुवीक्षण-यन्त्रोंके उत्पादनका प्रबंध हो जायगा।

भू-फिजिक्स प्रक्रियाकी सर्वे (चुम्बकीय, विद्युतीय और भूकम्पीय) के यन्त्रोंका उत्पादन हाथमें लिया जायगा और उपयोगी धातुओं-के भूमि-निहित खज़ानोंके पता लगाने और सर्वे करनेके ढंगको शीघ्रता और शुद्धता-पूर्वक करनेके लिये भू-गर्भीय सर्वेमें उनका बड़े पैमानेपर उपयोग किया जायगा। उड़ान, नौका-गमन और कृषिके कामके उपयोगके लिये मौसिमके भविष्य कथनके वास्ते भू-फिजिक्स-यन्त्रोंके उत्पादनको बढ़ाया जायगा। नये प्रकारके अणुवीक्षण तथा किरण-विश्लेषक-यन्त्रों, सिनेमा-प्रक्षपक, सिनेमा केमरे, फोटो केमरे, दूरबीनके राशिरूपेण उत्पादनको औप्टिक्स-शास्त्रके नवीनतम आविष्कारोंके अनुसार बनाया और बढ़ाया जायगा। नवीनतम यन्त्रोंसे सज्जित मोटर-साइकिलों, बाइसिकलों, शिकारी बन्दूकों, रेडियो प्रापकों, दीवाल-घड़ियों, और हाथकी घड़ियों तथा ग्रामोफोनोंके राशिरूपेण उत्पादन को चालू किया जायेगा और बढ़ाया जायेगा। आधुनिक दूरदर्शक रेडियोके उत्पादनका प्रबन्ध होगा। रिफ्रीगेरेटर (शीतल करने वाले यन्त्रों)का उत्पादन बड़े पैमानेपर संगठित होगा।

१३. रसायनिक उद्योग—१९५०में इस उद्योगकी उपज १½ गुना हो जायगी। जर्मन-ध्वस्त प्रदेशोंके रसायनिक कारखानोंको फिरसे स्थापित कर दिया जायेगा, निट्रेट, शोरा, फौस्फेट, सोडा-उपज और रङ्गके उत्पा-

दनका काम सबसे पहले हाथमें लिया जायेगा। खनिज-खादके उत्पादनको १६५० तक पुनः स्थापित करके युद्ध-पूर्वसे आगे बढ़ा दिया जायगा—फौस्फेट दुगुना, निट्रेट १·८ गुना और पोटास १·३ गुना पैदा होने लगेगा।

प्राणिज कृत्रिम रसायनोंकी नयी शाखाओं, कोयले और तेलकी शोधनियोंकी गौण उपजोंके इस्तेमाल करनेके लिये स्थापित होंगे।

प्लस्टिक, एनीलाइन रङ्ग, वार्निश और पेंट (सामान रङ्गनेका रङ्ग), औषध-संबन्धी तथा दूसरी उद्योग-शाखाओंके रसायनिक उपजोंकी बहुत किस्मोंका काफ़ी उत्पादन किया जायेगा। नये ढङ्गके प्लास्टिक अलकतरोंके उत्पादनका प्रबन्ध किया जायगा, कृत्रिम रङ्गके उत्पादनको बढ़ाया जायगा और सर्वोत्तम पक्के रङ्गोंका युद्ध-पूर्वकी अपेक्षा अधिक विभिन्नताके साथ उत्पादन बढ़ाया जायेगा। ८ लाख १३ हजार कलकाइन सोडा, २ लाख ७८ हजार टन कास्टिक सोडा और २७ लाख २० हजार टनकी क्षमता वाले सुपरफास्फेटके कारखाने चालू होंगे। तीन सोडा प्लान्ट फिरसे खड़े कर दिये जायेंगे। उरालमें एक सोडा प्लान्ट बनकर तैयार हो जायगा और एक नये सोडा-प्लान्टके बनानेमें हाथ लग जायगा। एनीलाइन रङ्गके दो, वार्निश और पेन्टके दो, और प्लास्तिकके तीन कारखानें बनाकर चालू कर दिये जायेंगे। दूरसे खनिज खाद ढोनेके कामको कम करने तथा करातोउकी फास्फोरसकी खानोंसे लाभ उठानेके लिये नये सुपर-फास्फेट प्लान्ट बनाकर चालू किये जायेंगे। तीन निट्रेटप्लान्ट युद्ध-पूर्वकी क्षमताके साथ काम करने लगेंगे और एक नया प्लांट बनाया जायगा।

रसायनिक उद्योगमें वृद्धिके साथ-साथ आधुनिक यन्त्र-चातुर्य—काम करनेकी निरन्तर प्रक्रिया और उत्पादनके स्वयंचालित नियन्त्रण और निट्रेट, गन्धककी तेजाब, सोडा और एनीलाइन रङ्गके उद्योगोंमें रसायनिक प्रक्रियाओंको व्यवहारमें लाकर उन्हें और आगे बढ़ाया जायगा।

१४. रबर-उद्योग—१६५० तक युद्ध-पूर्वकी अपेक्षा कृत्रिम रबर-का उत्पादन दुगना, मोटर-टायर तीन गुना और रबर-जूता १·३ गुना हो जायगा; कृत्रिम रबर-उद्योगमें खाद्य अन्नकी जगह दूसरे कच्चे मालका बड़े पैमनेपर इस्तेमाल किया जायेगा और १६५० तक अ-खाद्य कच्चे मालसे उत्पन्न रबरका अंश सारे रबरमें ३८% हो जायगा। १६५०में पुनर्जनित रबरका उत्पादन बढ़कर ५६ हजार टन वार्षिक हो जायेगा। सोवियत्-संघमें स्वाभाविक रबरके उत्पादनको बड़े पैमानेपर संगठित किया जायेगा।

रबर-उद्योगको आगे बढ़ानेके लिये इन तरीकोंको स्वीकार करना होगा—नये कच्चे माल और नयी टेकनिक (यन्त्र-चातुरी)का उपयोग, मोटर-टायरोंके उत्पादनोंमें स्वयं-चालित-नियमन, कृत्रिम रबरके उत्पादन-की प्रक्रियाओंको तेजीसे करना, रबर, मोटर टायर और दूसरी रबरकी चीजोंके उत्पादनमें मेहनतके कामोंको यन्त्रों द्वारा अत्यधिक करना।

१५. गृह-निर्माण-सामग्री—सोवियत्-संघके जर्मन-ध्वस्त जिलोंकी अर्थनीतिको पूरी तौरसे पुनः स्थापित करने और पूर्वी-जिलोंको और अधिक विकसित करनेके उद्देश्यसे गृह-निर्माण-सामग्रीके कारखानोंको बहुत तेजीसे पुनः स्थापित और वर्द्धित किया जायगा।

पाँच वर्षके कालमें सीमेंट, काच, स्लेट, छतके सामान और युद्धके सामान जैसे गृह-निर्माणकी मुख्य सामग्रियोंके उत्पादनको युद्ध-पूर्वसे बहुत अधिक बढ़ा दिया जायगा। इसके लिये ध्वस्त कारखानोंको फिरसे और कितने ही नयेको बनाना होगा। १६५० तक युद्ध-पूर्वकी अपेक्षा सीमेंट १·८ गुना, काच १·८ गुना, टाइल ४ गुना और स्लेट २ गुना हो जायगा।

पहलेसे फेक्ट्रीमें बने रहनेके घरों और उनके आवश्यक स्टेन्डर्ड-अंगों-को काष्ठ, जीप्सम्, अज्बो सिमेंट और दूसरी सामग्रीसे बनाते एक नये उद्योग-धन्धेका आरम्भ किया जायगा। ६४ लाख टन वार्षिक क्षमता

वाले सीमेंटके प्लांट, ४ करोड़ वर्ग मीतर वाले काच-कारखानें, ३३ करोड़ २० लाख पटियोंकी क्षमता वाली स्लेटकी खदानें, ४६ लाख वर्ग-मीतर वासस्थान वाले, ३२ लाख ५० हजार रबर-मिलें रोल छतके सामान, और २७ लाख रोल कोलतार लगी फेल्ट (पाल) के कारखानें, फैक्टरीमें बने घरोंके बनानेकेलिये तैयार होंगे, ३ लाख ७७ हजार वर्ग मील क्षमताके ब्वायलर और ६२ लाख वर्ग-मीतर देने वाले तापक-यन्त्रोंके बनानेके कारखाने बनेंगे, गर्मी सोखने वाले सामानों—खनिज ऊन, नकली काष्ठ-चादरें और अज्बो सीमेंटके बने दीवार ढाँकनेके सामानों—को बढ़ाया जायगा।

गृह-निर्माण-सामग्रीके उत्पादनके प्रोग्रामको पूरा करनेके लिये ज़रूरी है, कि अधिक मेहनतके काम यन्त्रोंसे लिये जायँ, खासकर सीमेंटके कार-खानोंमें बिजलीके खनक, बड़ी क्षमतावाली ढोनेकी गाड़ियाँ और उठाने वाले क्रेन इस्तेमाल किये जायेंगे। नवीनतम यन्त्र-साधनों और निर्माण-प्रक्रियाओंको बड़े पैमानेपर काममें लाया जाय, खासकर कोयलेके एक ही साथ सुखाने और तोड़नेका काम, क्लिङ्करके जलानेकेलिये अत्यधिक कार्यकारी घूमते भट्ठोंका इस्तेमाल, खिड़कीके काचके बनानेमें नवीनतम ढंगसे काचको काटने और दूसरी जगह पहुँचानेमें स्वयंचालित उत्पादन-लाइनके ढंगका इस्तेमाल करना।

१६. **काष्ठ-उद्योग**—१९५०में युद्ध-पूर्वकी अपेक्षा कटे व्यापारिक काष्ठमें ५६% और चीरे काष्ठके उत्पादनमें १४% की वृद्धि होगी।

६० लाख घन-मीतरकी क्षमता वाली आरा-मिलें, ३ लाख घन-मीतर प्लाईऊड (नकली-तख्ते) और ७ अरब ५० करोड़ दियासलाईकी डिब्बियोंके पैदा करने लायक कारखानें बनाकर चालू किये जायेंगे। लकड़ी-के काम करनेवाले उद्योग, खासकर फर्नीचर बनाने वाले उद्योगको युद्ध-पूर्व जैसा कर दिया जायगा।

लकड़ी काटनेका क्षेत्र बढ़ा दिया जायगा, खासकर उन जगहोंमें

जहाँ कि नदीमें बहाकर लकड़ी नीचे पहुँचाई जा सकती है। इस तरहकी नदियाँ ये हैं—उत्तरी द्वीना और उसकी शाखायें, पेचोरा, कामा, व्यत्का, किल्मेज़, उन्ज़ा, वेतलूगा और वेलया। पश्चिमी सिबेरिया और सुदूर-पूर्वमें लकड़ीकी कटाईको बढ़ाया जायगा। पाँच वर्षके कालमें यांत्रिक खिंचाईके लिये १७ हजार ५६० किलोमीतर काठ ले जाने वाली सड़कें तैयार होंगी, जिनमें ६ हजार ५ सौ किलोमीतर पतली रेलवे-लाइन, २ हजार ५ सौ किलोमीतर ट्रेक्टर-पथ और ८ हजार ५ सौ किलोमीतर मोटर-पथ काठ वाले प्रदेशों, मुख्यतः उत्तरीय, उत्तर पश्चिमीय जिलों और उराल (कामा उपत्यका) में बनेंगे। पंच-वार्षिक योजनाके अन्तिम साल तक लकड़ी खींचने-वाले ट्रेक्टरों और ट्रकोंमें ७०% लकड़ीका ईंधन जलाया जायगा। लकड़ी-केम्पमें स्थायी काम करने वाले कमकरोंका अंश उस तरह बढ़ाया जायगा, कि श्रमकी उत्पादक-शक्तिके बढ़ानेके साथ ये स्थायी कमकर सारे कामका ७५% कर लिया करें।

लकड़ी काटने और खींचकर दूसरी जगह पहुँचानेवाले प्रदेशोंमें जहाँ हाथका काम अधिक होता है, उसे नवीनतम यन्त्रों द्वारा यन्त्री-कृत-उद्योगके रूपमें परिणत किया जायेगा और यन्त्र-चतुर कमकरोंका एक स्थायी स्टाफ रखा जायेगा। इसके लिये वृक्ष काटनेमें बिजलीके आरों का पूर्ण-रूपेण उपयोग और लकड़ी को खींचकर ले जानेके लिये खिचाऊ ट्रेक्टरोंसे काम लिया जायेगा। लकड़ी काटने और सड़क तक लेजानेके कामका ७५% और काष्ठके दूसरे स्थानमें पहुँचानेका ५५% मशीनोंसे किया जायगा। बहते काष्ठके उतारने चढ़ाने जैसे मेहनतके कामको भी यन्त्रों द्वारा किया जायगा। काष्ठ-उद्योगको निम्नोक्त चीजें दी जायँगी; ४० हजार बिजलीके आरे, ७ हजार ५ सौ काठको सड़क तक खींचने वाले ट्रेक्टर, ४ हजार ५ सौ लकड़ी ढकेलने वाले ट्रेक्टर, खुले डब्बोंके साथ पतली रेलके लिये ४८० इंजन, १४००० पुछल्लेके

साथ ट्रक और तदनुसारी सख्यामें बुलडोज़र। इन मशीनोंको ठीक समयतक काम करने लायक रखनेके लिये मरम्मतके मिस्त्रीखानोंकी संख्या बढ़ा दी जायगी।

काष्ठसे अरक खींचनेवाले उद्योगका विकास किया जायगा। इस प्रक्रियासे १९५०में युद्ध-पूर्वकी अपेक्षा ८ गुना अधिक अलकाहल (मद्यसार) पैदा किया जायगा। गन्धकी अलकाहल और काष्ठकी अरककशीके उद्योगकेलिये ७० लाख दस लितरी क्षमताके नये प्लांट बनाये जायेंगे जिसमें कि आरा-मिलों और पल्प तथा कागज-मिलोंकी रद्दियोंको अलकाहल, अलबूमिनी येस्ट (खमीरचूर्ण) बालुका-मिश्रित ईंट और दूसरी रसायनिक चीजोंको बनानेके लिये पेचीदा निर्माण-प्रक्रियाको ठीकसे किया जा सके।

एक विशाल काष्ठ-रसायन-उद्योग स्थापित किया जायगा। इसपर पूरा ध्यान दिया जायेगा, कि एसेटिकएसिड, असेटेट घुलाव, रेज़िन (बिरोज़ा) और टर्पेन्टाइनकी उपज बढ़े।

१७. कागज़-उद्योग—१९४८ तक इस उद्योगको युद्ध-पूर्ववत् बनाकर आगे इतना बढ़ाया जायेगा, कि १९५०में कागजकी उपज युद्ध-पूर्वसे ६५% अधिक हो जाय। इन्तिजाम किया गया है, कि इस वृद्धिमें बहुत अधिक अंश ऊँचे किस्मके धुले कागज़ बनें। औद्योगिक उपयोगके लिये खास किस्मके कागजकी माँगको पूरी तौरसे पूरा किया जायगा और लपेटनेके कागज, चमड़ा-मिश्रित कागज तथा साधारण बाजारके लिये आवश्यक कागजकी चीजोंके उत्पादनको बहुत बढ़ाया जायेगा। बिस्कोस सेलूलोसके उत्पादनको बहुत अधिक बढ़ाना होगा, जिसमें कि कृत्रिम फाइबर (चमड़ा आदि) उद्योगकी आवश्यकताओंको अच्छी तरह पूरा किया जा सके।

नयी और सर्व-गुण सम्पन्न मशीनोंका इस्तेमाल किया जायगा, जैसे उच्च उत्पादक और अल्पतम बिजली खर्च करनेवाली पल्पकी मशीनें;

चूषक रोल और बहुविध-शक्ति-प्रेरक यंत्रके साथ उच्च वेगवाली कागजकी मशीनोंसे कागज-यन्त्रोंका साधन-सम्पन्न होना, छाल छिलनेकी नवीनतम मशीनें, सज्जीके पुनरुत्पादनके लिये उच्च क्षमता वाले भट्ठे; पल्प और कागज बनानेकी नाना क्रियाओंके लिये स्वयंचालित मशीनें।

१८. **कपड़ा और हल्के उद्योग**—युद्ध-पूर्वकी उपज तक इनकी सभी शाखाओंको पहुँचकर आगे बढ़ जाना होगा।

कृत्रिम रेशम और कपड़ेके उद्योगको पुनः स्थापित और विकसित करके उत्पादन इतना बढ़ा दिया जायगा, कि युद्ध-पूर्वको अपेक्षा १९५०में कृत्रिम रेशम ४-६ गुना और कपड़ेका फाइबर (कृत्रिम चर्म) ६-६ गुना हो जायगा।

थानों, परिधानों, बनियानों, मोज़ों और जूतोंके फिनिश और वर्गीकरणमें बहुत उन्नति करनी होगी; अच्छे दर्जेके परिधान और सूटके वस्त्रोंका उत्पादन बढ़ाना होगा, साथ ही अधिक पक्की छींटों आदिके कपड़ोंकी उपजको भी बढ़ाना होगा।

पाँच वर्षोंमें बुनाई मिलोंकी क्षमताको बढ़ाकर २८ लाख ६० हजार तकुए कर दिये जायंगे और कृत्रिम-रेशम-उद्योग बढ़कर १ लाख २ हजार टन वार्षिक, जूता-उद्योग १० करोड़ जोड़ा और मोजा उद्योग १४ करोड़ ५० लाख छोटा बड़ा मोजा बनाने लगेगा। जर्मन-ध्वस्त इलाकोंमें कपड़े, मोजे, बनियान, चमड़े और जूतेके कारखानों तथा कपास, फ्लेक्स, हेम्प (जूट) और ऊनके आरम्भिक प्रयोगों वाले कारखानोंको युद्ध-पूर्वकी तरह पुनः स्थापित कर दिया जायेगा।

युद्धके पूर्व सिबेरिया और मध्य-एसियामें कपासी कपड़ेके उद्योगका जो विस्तार हुआ, वह आगे भी जारी रहेगा। इन पाँच वर्षोंमें नवोसिब्रिस्के अस्राखान, गुर्बी, अल्ताइ प्रदेश और उत्तरी-कज़ाकस्तानमें नयी सूती कपड़ेकी मिलें बनकर चालू होंगी। पूर्वी-सिबेरियामें सूती कपड़ेके एक विशाल कारखाना-समूहका दूसरा भाग भी बनकर चालू होगा। ताशकन्द,

स्तालिनाबाद, फ़र्गाना, ऊफ़ा और चेल्याविन्त्स्कमें कपड़ेकी मिलें बनकर तैयार हो जायेंगी और कुज़बास (सिबेरिया)में एक कपड़ा मिल बननी शुरू होगी।

कृत्रिम रेशम मिलें पूर्णतया पुनः स्थापित और तीन नयी मिलें नव-निर्मित हो जायेंगी। चौथा कृत्रिम फाइबर प्लान्ट भी बनकर तैयार हो जायगा। पश्चिमी सिबेरियामें एक रबरके तल्लेका प्लान्ट और स्वेर्द-लोव्स्क तथा तम्बोफ़में मोजेकी मिलें बनकर चालू हो जायेंगी। लेनिन्ग्राद् और रस्तोफ़की जूतेकी फैक्टरियाँ अस्ताश्कोफ़की चमड़ा-फेक्टरी, कियेफ़ और कलीनिनके रबर तल्लेके प्लान्ट, कौन्सतान्तिनोव्काका रबर बोतल बनानेवाला कारखाना, वितेब्स्ककी मोजा-मिल और पोल्तावाकी कताई मिल फिर युद्ध-पूर्ववत् काम करने लगेंगी।

नयी और सर्वगुण-सम्पन्न मशीनें काममें लायी जायेंगी, जैसे कि, एक ही बार सब क्रिया करनेवाली स्कचिङ्ग मशीन, द्रुतवेगी रोविंग मशीन, भारी आकारकी ढरकियोंके साथ कताईके परेते, स्वयंचालित लपेटने वाले परेते, द्रुतगतिसे धुनने और पोनी करने वाली मशीनें, विभक्त करनेवाली मशीनें, चौड़े स्वयंचालित करघे, फोटो-छापक और (धुलाई) मशीन कपड़ेके उद्योगमें लगाई जायगी। हल्के उद्योगोंमें मोजेके फ्रेम, गरम वल्कनाइज़ प्रेस और स्वयंचालित तथा अर्द्ध-स्वयंचालित मशीनोंका इस्तेमाल होगा।

चमड़ा सिझानेके कृत्रिम रस और ऊँचे दर्जेके कृत्रिम चमड़ेका विकास चरम-सीमा तक पहुँचाना होगा।

मशीनोंकी मरम्मत करनेकी सुविधाओंको कपड़ेकी मिलों तथा हल्के उद्योगोंमें मशीनोंके आमतौरसे मरम्मतको भी बढ़ाना होगा।

१६. आहार-उद्योग—इस उद्योगको जल्दीसे पुनः स्थापित और विकसित करनेकी तदबीर करनी होगी। युद्ध-पूर्वके उत्पादन तलपर गुणोंमें सुधारके साथ पहुँचाना होगा। १९५० तक मांसकी वस्तुओं, मक्खन, तेल,

चीनी, पाश्रो (गोली-मिठाइयाँ) और मिठाइयों तथा दूसरी खाद्य-वस्तुओं के उत्पादनको युद्ध-पूर्वके तलपर पहुँचाकर आगे बढ़ाना होगा।

१६४७ तक युद्ध-पूर्व जितनी मछली पकड़ने और मछली उद्योगकी उपज होने लगेगी, और १६५०में मछली पकड़ना १·५ गुना, ताजा बरफकी गई मछलीका उत्पादन १·८ गुना और हड्डीवाली मछलियोंका उत्पादन ३ गुना हो जायगा, उत्तरीय और सुदूरपूर्वी समुद्रोंमें, खासकर दक्षिणी सखालिनके आगे, कुराइल द्वीप समूह और कमचतकामें मछली मारनेको बहुत बड़े पैमानेमें बढ़ाया जायेगा। आधुनिक मछुआंके ढंगके उपयोग तथा वर्तमान मछली कारखानोंके पुनर्निर्माण द्वारा दक्षिणी सखालिनमें मछलीके उद्योगको अच्छा बनाया जायेगा। युद्ध-पूर्वके टिनबन्द मांस, दूध, मछली, तरकारी और फलको बहुत अधिक बढ़ाया जायेगा। बरफ़ बनाये फलों, बेरियों और तरकारीके उत्पादन तथा चूर्णित दूध और सूखी-तरकारी और फलोंकी उपजको बढ़ाया जायेगा। स्वास्थ्यकर भोजन और बच्चोंके खाद्य, तैयार परोसे, तैयार मांस-मछलीकी चीजें, शक्ति संचित खाद्य और विटामिनके राशिरूपेण उत्पादनका प्रबन्ध किया जायगा, साथ ही सोवियत्की शम्पेन और प्रौढ़ ऊँचे दर्जेकी अंगूरी मदिरा और बियर (हल्की शराब)का उत्पादन बड़े पैमानेपर किया जायगा। सुरक्षा और गुणका पूरा ख्याल रखते अच्छे किस्मकी युद्ध-पूर्व जैसी पैककी हुई खाद्य-वस्तुओंका तैयार करना फिर शुरू किया जायगा और उनके इस्तेमालको बढ़ाया जायेगा।

६२ चीनीकी मिलों, १४४ शराबके कारखानों, २४ टिन-बन्दीके कारखानों और ६८ यन्त्रचालित रोटी कारखानोंको पूरी तरह फिरसे स्थापित किया जायेगा, और १० नये चीनीके कारखानो, ७ शराब-कारख़ानों, ६ टिनबन्दी कारखानों और ३६ यन्त्रचालित रोटी कारखानों-को बनाया जायेगा, ४१ मांसके टिनबन्दी कारखानों, २६ बरफ़में रखनेके कारखानों, २२ नगरकी दूध तैयार करने वाली फेक्ट्रियों और ८ दूध-

को टिनमें बन्द करने वाली फेक्ट्रियोंको पुन: स्थापित या पूरे रूपमें तैयार किया जायगा। ३६ नये मांस पैक करने वाले प्लान्टों, ३८ बरफ़में रखनेवाले कारखानों, ४८ दूध तैयार करनेवाली फैक्ट्रियों, १३ दूधको टिनमें बन्द करनेवाली, और १ हज़ार २ सौ मक्खन और पनीरकी यन्त्र-चालित फेक्ट्रियोंको बनाया जायगा। लगातार क्रियाशील मक्खन बनानेवाली मशीनों और स्वयं मक्खन लपेटनेवाली मशीनोंका बड़े पैमानेपर उपयोग होगा। नमक बनाने वाले प्लान्टोंकी कार्यक्षमता बढ़ाकर १४ लाख टन वार्षिक कर दी जायेगी। उक्रइनमें एक बड़ी नमक खानका बनाना पूरा हो जायगा। उराल, कज़ाकस्तान, अल्ताई प्रदेश और इर्कुत्स्क जिलेके नमकके कारखानोंकी कार्य-क्षमताको दूना कर दिया जायगा।

मछुआही जहाजोंको युद्ध-पूर्वके परिमाणमें बनाया और आगे भी बढ़ाया जायेगा। अगले पाँच वर्षोंमें १५० मछुआही जहाज बनाकर काममें लगा दिये जायेंगे और १३ मछली बर्फ बन्द करने वाली फेक्टरियाँ और ३० बरफमें रखने वाली फेक्टरियाँ बना दी जायेंगी।

आटा मिल और अनाजके खाद्य तैयार करनेवाले कारखाने पुन: स्थापित और नवनिर्मित किये जायेंगे। ५ वर्षोंमें ६४ लाख टनकी क्षमता वाली बखारें और एलीबेटर (उच्च बखारें) पुन: स्थापित या नवनिर्मित हो जायेंगी। १९५०के अन्त तक आटा मिलोंकी क्षमता इतनी बढ़ा दी जायेगी, कि वह प्रतिदिन २० हजार टन अनाज अधिक पीसने लगेंगी और बारीक पीसे आटे तथा अनाजकी भिन्न-भिन्न चीजोंकी उपज बढ़ जायेगी।

अन्न-उद्योगमें निम्न प्रक्रियाओंका बहुत बड़े पैमानेपर उपयोग किया जायगा—उत्पादनमें तैयार करनेकी निरन्तर क्रिया, तेलके निरन्तर निकालनेकी प्रक्रिया, साबुन बनानेमें खानेकी चर्बीके स्थानमें पर्याप्त दूसरी चीजों (कृत्रिम चर्बी वाले एसिड, बिरोजा और किरासिनकी चर्बी)का इस्तेमाल।... उत्पादनकी क्रियाओंमें स्वयंचालित यन्त्रों द्वारा नियं-

त्रण, शीघ्र बरफ़ बनाने वाले यंत्रों और बरफ़में रखने वाले कारखानों-की सुविधा। उत्पादन, और चढ़ाने-उतारनेके भारी मेहनतके कामोंमें यन्त्रोंसे काम लिया जायगा। चीनीके कारखानों और उनके कच्चेमालके जमा करनेके स्थानोंमें बड़े पैमानेपर पतली लाइनवाली रेलें बना दी जायेंगी।

२०. **स्थानीय-उद्योग**—सभी प्रजातन्त्रों, प्रदेशों और जिलोंमें स्थानीय, राजकीय या सहयोगी उद्योगोंकी पुन: स्थापना और बड़े विकास-केलिये काम किया जायगा।

स्थानीय-उद्योगों और औद्योगिक सहयोग-समितियोंका मुख्य काम है, उपभोगकी वस्तुओं और स्थानीय गृह-निर्माण सामग्रीका उत्पादन करना, और १ कल्खोज् और सोवखोजकेलिये, घोड़ेके साज़, गाड़ी, बे-पहिया गाड़ी (स्लेज़) और सीधे-सादे ढंगकी घोड़े या हाथसे चलने वाली मशीनोंका बनाना। इसका ध्यान रखना होगा कि सभी प्रजातन्त्रों, प्रदेशों और जिलोंके स्थानीय उद्योग, औद्योगिक सहयोग समितियाँ, घरके कामके बर्तनों और दूसरी चीजोंको अच्छी किस्म तथा सस्ते दाममें तैयार करें।

१९५० तक स्थानीय-उद्योग और औद्योगिक सहयोग समितियाँ युद्ध-पूर्वसे ३०% फर्नीचर, २५–३०% मोजा-बनियान, १०% ईंटें, ६४% पीट (कच्चा कोयला) और ७७% कोयला अधिक पैदा करेंगी।

स्थानीय उद्योगों और औद्योगिक सहयोग-समितियों द्वारा उत्पादित वस्तुएँ गुण और प्रकारमें निश्चितरूपेण अच्छी होनी चाहियें। जूता बनाने और पोशाक बनानेकी दूकानों तथा फर्नीचर और घरके बर्तनोंकी मरम्मतकी दूकानोंका बड़ी संख्यामें पुन: स्थापना और बढ़ाना जरूरी है।

२१. **औद्योगिक-निर्माण और स्थापना**—१९४६-५०में निर्माण और स्थापनाका प्रोग्राम १ खरब ५३ अरब रूबल निश्चित किया गया है। जिसमें ५५ अरब रूबल हैं ईंधन-उद्योग निर्माण-मन्त्रि-

विभाग, भारी उद्योग निर्माण मन्त्रि-विभाग और सेना-नौसेना-उद्योग-निर्माण-मन्त्रि-विभागकेलिये।

औद्योगिक प्लान्टों के निर्माण और चालू करनेके प्रोग्रामको पूरा करनेकेलिये जरूरी है कि संघ मन्त्रिमण्डलों और संघ प्रजातन्त्रोंके निर्माण सगठनोंको अत्यधिक मजबूत किया जाय और निर्माण-उद्योगको खूब बढ़ाया जाय।

नवीनतम निर्माण प्रक्रियाओंका बड़े पैमानेपर उपयोग किया जाय। मकानके फैक्ट्रीमें पहलेसे बने भागोंका ज्यादासे ज्यादा इस्तेमाल किया जाय और निर्माण करनेमें अधिकसे अधिक काम यंत्रोंसे लिया जाय। १६५०में योजनामें आये निर्माण काममें यन्त्रों द्वारा होने वाला कार्य इस प्रकार होगा :

जमीन खोदना ६०%, पत्थर कूटना ६०%, गारा बनाना ६५%, कूटना ६०%, कंकरीट फैलाना ६०%, और रंग लगाना ५०%।

गृह-निर्माण और सड़क बनानेकी मशीनोंके उत्पादनकेलिये पर्याप्त प्लांट खड़े किये जायेंगे। खनक-यंत्रोंकी उपज बढ़ाई जायेगी और नवीनतम ढंगकी खुदाई, सड़क बनाई, सामान उठाई, ढुलाई, बोझाई और उतराई वाली मशीनों और बिजली तथा न्यूमेटिक-निर्माण हथियारों, तथा गृह-निर्माणकी सामग्री, उसके अंग, ढाँचा बनानेके फौलाद और लकड़ीकी चीजोंके उत्पादनको शुरू किया और बढ़ाया भी जायेगा। गृह-निर्माण संगठनोंकेलिये तत्सम्बन्धी सुभीताओं (पत्थर खदान, मरम्मतकी दूकान, गृह-निर्माताओंकेलिये आवश्यक चीजोंको बनाने वाली फैक्टरियों) को बढ़ाया जायेगा। कारखानेसे तैयार होके आये मकानों और मकानके अंगोंके राशिरूपेण उत्पादनको प्रबन्ध किया जायगा, और वास्तुकला-सम्बन्धी सामग्री और अलङ्करणोंकेलिये एक उद्योग आरम्भ किया जायगा।

इस बातका ध्यान रखना होगा, कि सभी निर्माणके काम ठीक तौरसे स्वीकृत टेकनिकल-योजना और तखमीनेके अनुसार हो।

२२. (उत्पादन-वृद्धि)—उत्पादनकी वृद्धिकी योजना और पूँजी लगानेमें वृद्धिके प्रोग्रामके अनुसार :—

(क) उद्योगमें कामकी उत्पादकता युद्ध-पूर्वसे १९५०में ३५% बढ़ेगी;

(ख) निर्माण कार्य सम्बन्धी कामकी उत्पादकता युद्ध-पूर्वसे १९५०में ४०% बढ़ेगी;

(ग) १९२५की तुलनासे १९५०में उद्योगमें उत्पादनपर व्यय १७% कम होगा और साथ ही उपजकी चीजें पहलेसे और अच्छी होंगी;

(घ) १९४५की अपेक्षा पाँचवें वर्षके अन्तमें निर्माणका खर्च १२% कम हो जायगा।

ख. कृषि

२३. जर्मन-ध्वस्त इलाकेमें खेती और पशु-पालनकी पुनः स्थापना और विकास करके सोवियत् संघकी कृषिकी उपजके युद्ध-पूर्वके तलको सब मिलाकर आगे बढ़ाना होगा।

कृषिकी बहुत जल्दीसे चरम-रूपमें पुनः स्थापना और फिर विकासकेलिये ज़रूरी है, कि कल्खाज़के सम्मिलित पशु पालनको दृढ़ किया जाय। और मशीन ट्रैक्टर स्टेशन तथा सोवखोजके संगठन और आर्थिक स्थितिको बेहतर बनाया जाय।

२४. (अधिक उपज)—पाँचवें वर्षके अन्तमें १९४०की अपेक्षा सोवियत्-संघकी सारी कृषि-उपज २७% बढ़ जायगी, जनताकेलिये आवश्यक अन्न मिलनेमें सुभीता और देशमें अनाजका काफ़ी जखीरा जमा करनेकेलिये जरूरी है, कि अन्नकी उपज—खास करके गेहूँ, चावल और फल वाले अनाजोंकी—बढ़ाई जाय। इन ५ वर्षोंके अन्तमें वार्षिक फ़सल १२ करोड़ ७० लाख टनपर पहुँच जायेगी और प्रति हेक्तर औसतन् उपज १२ सेन्तनेर होगी।

(क) **औद्योगिक फसल**—चीनीके चुकन्दरकी फसल कुल मिलाकर २ करोड़ ६० लाख टन और प्रति-हेक्तर औसत उपज १६० मेतरिक सेन्तनेर होगी; कच्ची कपास ४१ लाख टन और प्रति हेक्तर १८·४ सेंतनेर; फ्लेक्सका सन ८ लाख टन, प्रति हेक्तर ४ संतूनेर औसत उपज तथा रेशेकी लम्बाईमे काफ़ी सुधारके साथ; सूर्यमुखी बीज ४७ लाख टन, उपज प्रति हेक्तर १० संतूनेर, हेम्प (जूट), अच्छे तेलवाले तेलहन, तम्बाकू और मखोर्का (घरेलू तम्बाकू) बोनेके क्षेत्रको पुनः स्थापित करके उपजको काफी बढ़ाना होगा। स्वाभाविक रबरके बनानेकेलिये आवश्यक कच्चे मालकी प्राप्तिको बढ़ाया जायेगा। इसकेलिये फसलको क्षेत्र और उपज दोनों, रबर देनेवाले पौधेकी खेतीको ठीक स्थानपर करने तथा खेतीके तरीकेमें सुधार करनेके द्वारा उपजको बढ़ाया जाय।

(ख) **पशुपालन**—पाँच वर्षोंमें घोड़ोंकी संख्या ४६%, गायोंकी संख्या ३६%, भेड़-बकरीकी संख्या ७५% और सुअरोंकी संख्या तीन गुना बढ़ाई जायगी। पशु-पालनकी जिस शाखामें पैदाइश तेजीसे होती है, उसमें वृद्धिके तरीके इस्तेमाल किये जायेंगे, खासकर मुर्गी पालनेको बड़ी संख्यामें इन्क्यूबेटर (अंडा सेनेकी मशीन) वाले फार्म बढ़ाये जायेंगे।

प्रबन्ध किया जायगा, कि मास्को, लेनिनग्राद्, बाकू, खारकोफ, कियेफ, उरालके औद्योगिक केन्द्रों दोनेत्स बेसिन (दोनबास), कुज़नेत्स्क बेसिन (कुज़बास), गोर्की, सिबेरिया और दूर-पूर्वके नगरों और दूसरे बड़े नगरोंके आसपास मांस, डेरीफार्म, तरकारीकी खेतीके प्रसार और सुधार द्वारा इस बातका इन्तिजाम कर दिया जाये, कि उन्हें पूरी मात्रामें तरकारियाँ, दूध, और मांस अपने इलाकेसे मिल सकें। जाड़े और बसन्तमें पहले होनेवाली तरकारियाँ और सब्जियाँ जिसमें नगरों और औद्योगिक केन्द्रोंके लोगोंको मिल सकें, इसके लिये नर्सरियों, पौधशालाओं और गरम-घरोंका बड़े पैमानेपर प्रबंध किया जायगा। फैक्टरी और आफिसके कर्मियोंकी वैयक्तिक क्यारियों तथा सामुदायिक

खेतोंको विस्तृत और उन्नत किया जायगा। साथ ही व्यक्तिगत रूपमें पशु, मुर्गी और मधुमक्खी-पालनको विकसित किया जायेगा।

अलकोहल, स्टार्च, शीराके कारखानोंकी पड़ोसमें आलूकी खेती और टिनबन्दी-कारखानों और पड़ोसमें दूसरी तरकारियोंकी खेतीको बढ़ाया जायगा।

मेवाबाग, अंगूरबाग, चाय तथा नीबू-नारंगीके बगीचोंको फिरसे पूर्ववत् कर दिया जायेगा। कल्खोजों और सोवखोजों तथा थोड़ी जमीन वाले सामूहिक खेतिहरोंकी जमीनपर नये मेवाबाग, बेरी (रसभरी जैसे)के बाग और अंगूरबाग लगाये जायेंगे। फलकी नर्सरियोंके जालको फिरसे पूर्ववत् करके और बढ़ाया जायेगा। उनके कामको बेहतर बनाया जायगा। खेत और जंगलकी पौध देनेवाली सभी नर्सरियोंमें लगे फलदायक वृक्षोंकी जातिमें सुधार किया जायगा।

२५. (पूँजी लगाना)—उत्पादन बढ़ानेकी योजनाके खर्चकेलिये कृषिमें लगायी जानेवाली पूँजी (केन्द्रित अथवा अ-केन्द्रित रूपमें लगाई) केलिये पाँच वर्षोंमें १६ अरब, ६० करोड़ नियत किया गया है; इसमें ८ अरब ८० करोड़ रूबल मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशनोंकी पुन: स्थापना और विकासकेलिये, २ अरब रूबल नहर और सुधारकेलिये, २ अरब रूबल सोवखोज़ोंके पशुओंकी वृद्धिकेलिये। इनके अतिरिक्त कल्खोज़ पाँच वर्षोंमें अपनी ओरसे जो पूँजी लगायेंगे, वह ३८ करोड़ रूबल है।

२६. १९४६-५०में कृषिके सम्बन्धमें सबसे महत्वपूर्ण जो काम करना है, वह है काफी सुधरे खेतीके ढंग और कृषि-विज्ञानके नवीनतम आविष्कारोंके उपयोग द्वारा खेतीकी उपजमें सामान्य रूपेण सुधार; अनाजकी फसलमें वृद्धि। इसके लिये कल्खोज़ों और सोवखोज़ोंमें उचित फसलके वार्षिक परिवर्तनको फिरसे स्थापित एवं चालू करना—घास और फली वाले पौधों, नाना प्रकारकी चारेवाली घासों—खासकर बकला और अल्फालफा तथा सदाबहार अनाजोंको बारी-बारीसे खेतमें बोना। और

चौमासेके खेतका समयपर जोतना और अच्छी तरह हराई करना भी जरूरी है। बीजके निर्वाचन और उत्पादनमें भी और सुधार होगा; प्रचलित फसल परिवर्तनके अनुसार पौध लगानेकी खेतकी आवश्यकताओं को अच्छी तरह पूरा करनेकेलिये सभी कल्खोजों और सोवखोज़ोंमें सदावसन्त घासका उत्पादन होगा। घास और काँटे भरे खेतोंकी हालत जल्दी सुधारनेकेलिये जोतनेका उचित ढंगसे इस्तेमाल किया जायगा। पंजावाले हल आदिका उपयोग और जाड़ेके चौमासेको ध्यानसे जोतना होगा।

उच्च प्रकारके चुने हुए बीज और उत्कृष्ट निर्वाचित किस्मके स्थानीय अन्न, छीमीवाले पौधे, तेलहन और दूसरी फसलोंको लगाया जायगा। जो किस्में किसी निश्चित जिलेकेलिये खास तौरसे चुनी गई हैं वहाँ उसीको लगानेका नियम बरतना होगा, नई और अत्यधिक पैदा होनेवाले बीजोंका ही उपयोग और प्रचार करना होगा। स्थानीय प्राणिज खादों (गोवर, पीट)के अतिरिक्त सोवखोज और कल्खोज् खनिज खादोंका बहुत बड़े परिमाणमें उपयोग करेंगे। औद्योगिक फसलों, कपास, फ्लैक्स, हेम, चीनी चुकन्दर, रबरवाले पौधे, तम्बाकू, चाय और नीबूजातीय वृक्ष-को पर्याप्त खनिज खाद देनी होगी। यह खाद दूसरे फसलोंको खास करके आलू और तरकारीको अधिक परिमाणमें देना होगा। खाद डालनेकी मशीनों (खाद बोअक और गोबर छीटक)का उत्पादन राशिरूपेण किया जायगा। १९५०में खेतीको ५१ लाख टन नीट्रेट (सोरा) फोस्पेक्ट और पोटास और चार लाख टन फोस्फोराइट चूर्ण देना है।

नंगे बयाबान और वृक्षवाले बयाबानके जिलोंमें कल्खोज्-सोवखोजकी रक्षाकेलिये पेड़ पंक्तियोंको फिर पूर्ववत् कर दिया जायगा और वहाँ जल्दी बढ़नेवाले वृक्षों (फल-वृक्षोंकी भी) और झाड़ियों (मकोयवाली झाड़ियों-की भी)की नई पाँती लगेगी। खड्डोंके किनारे फलदार तथा दूसरे वृक्ष लगाये जायेंगे।

२७. (**सिंचाई प्रबंध**)--सिंचाई और पानी बहाई व्यवस्थाको पुनः स्थापना और विस्तारकेलिये पाँच वर्षी योजनामें ६ लाख ५६ हजार हेक्तरकी सिंचाईवाले खेत और ६ लाख १५ हजार हेक्तर पानी बहाकर निकाले खेत बढ़ायें जायेंगे । **बेलोरूसिया** और **बराबिन**को पानी बहाई-व्यवस्था फिरसे स्थापित की जायेगी । **यखरोमा** नदीकी दहनाल भूमिसे पानी निकालनेकी व्यवस्था की जायेगी ।

भूखे मैदानमें किरोफ-नहर व्यवस्था **कत्ता कुर्गन**, **ओर्तोतोकाइ** और **तेयन**की कृत्रिम झील **नेत्रिन्नोमिश्क**की सिंचाई नहर तैयार हो जायेगी । **कुरा-अरक**की निम्न भूमि, **वोल्गा-अख़्तुबो**की दहनाल और **क्रास्नोदर** प्रदेशकी घनहर भूमिमें नहरका काम बढ़ाया जायेगा । बड़े शहरोंके आसपास तरकारीकी सिंचाईको बढ़ानेकेलिये बड़े पैमानेपर सिंचाईकी नहरें बनाई जायेंगी ।

सिंचाईवाली सारी भूमिका पूरा उपयोग फसल और बगीचा लगाकर—जिसके लिये बहुत पानी भरना आवश्यक है—किया जायगा, उन्हें दलदल या पंकिल नहीं बनने दिया जायगा । **फर्गाना**, **भूखा बयाबान**, **दक्षिणी खारेज़्म**, **वख़्श उपत्यका**, **मुगान चूल** और दूसरी, पूर्व कालकी नहर सिंचित भूमिको खेतोंमें परिणत करना होगा । सभी नहरोंसे काम लेनेके ढगको सुधारा जायेगा । पानीके संचय और वितरणकी प्रणालियों-की समयपर सफाई और मरम्मत की जायेगी । पानीके खर्चमें मितव्य-यिताका ध्यान रखा जायगा । भिन्न-भिन्न फसलोंकी सिंचाईकेलिये समय और मात्रा पर ध्यान दिया जायगा । नहरके बनाने और साफ करनेमें बहुत अधिक मात्रामें यंत्रोंसे काम लिया जायेगा । पानी-निकाली भूमि-का खेतीके काममें पूरा इस्तेमाल किया जायेगा । पानी बहाने वाली नहरोंकी धारोंका ठीक तरहसे काममें लानेका सङ्गठन किया जायेगा । तालाब और जलाशयका सोवखोज़-कल्खोज़की भूमिमें बनाना फिरसे आरंभ किया जायगा । सिंचाई वाली भूमिपर तरकारी और दूसरी फसलें

लगानेकेलिये उनका विस्तार किया जायेगा। पोखरोंमें मछली और पनमुर्गी पाली जायेंगी।

२८. (यंत्रीकरण)—खेतके कामकेलिये यंत्रोंसे अधिक काम लेनेको पुन: स्थापित करके बढ़ाया जायेगा। इसके लिये वैज्ञानिक जुताई, बोवाई, कटाईके उपयुक्त मशीनें और ट्रैक्टर दिये जायेंगे। १९४६-५०में कमसे कम ३ लाख २५ हजार ट्रैक्टर और खेतीकी मशीनें—जिनका दाम साढ़े चार अरब (१९२६-२७के दामसे)—खेतीको दी जायेंगी।

पाँच वर्षोंमें साढ़े नौ सौ नये मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन बनाये जायेंगे। उनके लिये आवश्यक मकानों और मरम्मत-खानोंको बनाया जायेगा, मशीन ट्रैक्टर स्टेशनोंमें मरम्मतकेलिये मिस्त्रीखाने होंगे। मरम्मत करनेवाले कारखानोंमें मोटर और मशीनकी संख्या बढ़ाकर २२० कर दी जायेगी। भारी ओवरहाल (सारे पुर्जोंको फिरसे जोड़कर मरम्मत करने) केलिये मशीन-ट्रैक्टर मिस्त्रीखानोंकी तादाद ५१० कर दी जायेगी। मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशनोंमें स्थायी तौरपर काम करने वाले आदमी रखे जायेंगे।

फार्मको नई और सर्वगुणसम्पन्न मशीनें तैयार करके दी जायेंगी। नये तरहके ट्रैक्टर, जोतने-बोने-काटनेकी मशीनें, सीधे चलनेवाली स्वयं प्रेरित कम्बाइन, और ऐसी कम्बाइनें जिनमें भूसा, बाली, अलग करके जमा करने वाले यन्त्र हैं, चुकन्दर निकालने वाली कम्बाइन, चुकन्दर लादनेवाली मशीन, कपास लोढ़ने वाली मशीन, तरकारी कोड़ने और उठाने वाली मशीन, तरकारीके बीज जमा करने वाली मशीन और ट्रैक्टरसे खींची जाने वाली मशीन और हथियार कृषि-मशीन बनानेके कारखाने और अनुसन्धान-प्रयोगशालाका काम व्यापक रूपमें संगठित किया जायेगा। साथ ही ट्रैक्टरों और कृषि-मशीनोंकी परीक्षा सरकारके तत्त्वावधानमें करनेका प्रबन्ध होगा। खेतीकेलिये काफी संख्यामें अग्रोनोमिस्ट (कृषिविशेषज्ञ), इञ्जीनियर, पशुविशेषज्ञ, पशुचिकित्सक, भूमि-

मापक और दूसरे विशेषज्ञ सिखाये जायेंगे। साथ ही मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशनों, कल्खोजों और सोवखोजोंकेलिये साधारण शिल्पकी शिक्षा दे यंत्रचतुर कमकर तैयार किये जायेंगे। कल्खोजों, सोवखोजों और मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशनोंमें बिजलीके उपयोगका और विस्तार होगा। दीहातमें छोटे-छोटे पन-बिजली स्टेशन बड़ी संख्यामें बनाये जायेंगे। जहाँ जल-शक्ति नहीं है वहाँ गैसचालित ऐसे इंजनोंसे काम लिया जायेगा जो स्थानीय ईंधनसे चल सकते हैं।

२६. **पशुपालन**—सामूहिक स्वामित्वमें चर्बी और डेरी वाले पशुओं-के पालनको फिर पूर्ववत् कर दिया जायेगा, और जर्मन-ध्वस्त इलाकेके कल्खोजोंमें काम करने वाले जानवरोंकी संख्या बढ़ा दी जायगी; सभी जिलोंमें कल्खोजोंके सामूहिक पशुपालनको उन्नत किया जायेगा और इस तरह सोवियत संघमें चर्बी और दूधवाले पशुओंकी संख्या पाँच वर्षमें बढ़कर युद्ध पूर्वकी संख्यासे अधिक हो जायेगी।

अच्छी जातिके जानवर पैदा करने वाले सोवखोजों और शुद्ध जाति-के पशु बढ़ाने तथा वितरण करनेके सरकारी केन्द्रों और कल्खोज़के लिये **शुद्धजातिक पशुविभाग** की पुनः स्थापना की जायेगी और कितने ही नये बनाये जायेंगे। पशुओंकी जातिको उन्नत किया जायेगा और बहुत अधिक उत्पादनवाले जानवरोंका चुनाव और बहुत उत्पादक साँड़-के साथ जोड़ लगाकर पशु जातिको और सर्वगुणसम्पन्न बनाया जायेगा। इस तरह पाँचसाला योजनाके अन्तमें सोवखोजों और कल्खोजोंमें उच्च जातीय तथा अधिक उत्पादक पशुओंका काफी बड़ा गल्ला हो जायेगा। पशुजातियोंका जिलोंके अनुसार ठीकसे वितरण किया जायगा।

पशु और डेरीफार्मको युद्धपूर्वकी अवस्था तक पहुँचाकर आगे बढ़ाया जायगा। १६४५की अपेक्षा १६५०में प्रत्येक गायका औसत दूध ६७% बढ़ जायेगा और मारनेसे पहलेसे पशुओंका मोटा करनेका व्यापक रिवाज हो जायेगा। घोड़ेके गल्लेको युद्ध-पूर्वके तलपर ले आनेकेलिये

काफी अधिक संख्या बछेड़ों की पाली जायेगी। साँड़-फार्म और कल्-खोजोंके साँड़-विभागकी संख्या बढ़ाई जायेगी। सोवखोजके साँड़ फार्म-को उन्नत किया जायगा। बयाबानी चरागाहोंमें गल्लोंकी स्वाभाविक चराई बड़े पैमानेमें बढ़ाई जायेगी।

सोवखोजों और कल्खोजों और वैयक्तिक कल्खोजी किसानोंकी निजी छोटी ज़मीनोंमें शूकर पालन खूब जोरसे पुनः स्थापित हो जायगा। मांसके उत्पादन का परिमाण बहुत अधिक बढ़ जायेगा। उत्तम और अर्ध-उत्तम ऊनवाली भेड़ोंका पालन पुनः स्थापित हो आगे बढ़ेगा, खास करके उत्तरी काकेशस, उक्रइन, कज़ाकस्तान, किर्गिजिस्तान, पच्छिमी सिबेरिया और वोल्गाप्रदेशमें। इसी तरह कराकुल लम्बे ऊन और मांस-चर्बीवाली भेड़ें जिस जगह भी होती हैं, वहाँ बढ़ाई जायेंगी। पाँचवें वर्षके अन्तमें १६४५की अपेक्षा भेड़का औसत ऊन ३०% बढ़ जायेगा। सभी अनाज पैदा करने वाले कल्खोजोंमें मुर्गीविभाग संगठित होगा। कल्खोजी किसानों, वैयक्तिक किसानों, फेक्टरी और आफिसके कर्मियों द्वारा मुर्गी और खरगोश पालनेका अधिकसे अधिक विकास होगा। कल्खोजी किसानोंको कल्खोज्-कानून-द्वारा निश्चित संख्यामें पशु रखनेकेलिये सरकारी सहायता दी जायेगी।

३०. (चारा आदि)—पशुओंको दिये जाने वाले आहारमें मौलिक सुधार करते, भूसा कन्दवाली फसल, चारा और पुष्टिदायक दूसरे खाद्योंके आसानीसे मिलनेका इन्तिजाम करने और अच्छी चराईकेलिये उचित चारावाली फसलको बारी-बारीसे बोया जायेगा—सबसे पहले सरकारी उच्च जातीय पशु फार्मोंके पासके कल्खोजों और सोवखोजोंमें इसपर अमल किया जायगा। चरागाहोंकी उन्नति और स्वाभाविक या बोई घासको समयपर काटकर अच्छे किस्मकी चारेकी फसल तैयार की जायगी। स्वाभाविक चरागाहोंका उपयोगकर ठीक तरहसे संगठन करके पशुओंकी चराईमें उन्नति की जायेगी। जहाँ समय-समयपर डेरा डाल चराई की जाती है,

वहाँ चरावाहोंके रहनेके मकान तथा दूसरी इमारतें और कुयें खोद दिये जायेंगे। जाड़ेकी चरागाहोंमें उगे चारेका जखीरा जमा किया जायगा। चारा और सिलेज (सिर्केवाला चारा)की फसलका क्षेत्र बढ़ाया जायगा, उपजको भी अधिक किया जायगा। सिलेज भोजनके उपयोगको बढ़ाया जायेगा और इसकेलिये खास तौरपर सिलेज तैयार करनेके हौज़ बनाये जायेंगे। नगरों और औद्योगिक केन्द्रोंके इर्द-गिर्द सूअर मोटे करनेका व्यवसाय फिरसे संगठित होकर उन्नत किया जायेगा। सूअर-खाद्यके संचयके केन्द्र, स्टार्च और सीराके कारखानों, चीनी मिलों और शराब फैक्टरियोंके आस-पास खोले जायेंगे, जिसमें कि इन कारखानोंकी रद्दी चीजोंका उपयोग अच्छी तरह किया जाय।

मधुमक्खी पालन सोवखोजों कल्खोजों और किसानों तथा फैक्टरी और आफिस कर्मियोंमें व्यापक रूपसे उन्नत किया जायेगा। मधुमक्खी पालनके उत्पादनको बढ़ानेके तरीके इस्तेमाल किये जायेंगे। मक्खी-पेटी, दूसरे साधन और कृत्रिम छत्तेका निर्माण बढ़ाया जायेगा।

३१. (श्रम व्यवस्था)—कल्खोजोंके सामूहिक पशु-पालनको मजबूत और विकसित करनेके लिये ऐसे तरीके इस्तेमाल किये जायेंगे, जिसमें उनका धन—आय, अविभाज्य कोश, इमारतें, पशु, औजार, और उनके रक्षित पशु धन, बीज और चारा-निधि—बढ़े।

सार्वजनिक भूमि और कल्खोज़की जायदादकी भली भाँति हिफाजतका प्रबन्ध करना होगा और कल्खोजके कानून या कल्खोज़की जनतंत्रता—कल्खोज़की प्रबन्ध समितिका निर्वाचन और कल्खोजके मेम्बरोंकी साधारण सभाके प्रति उनका उत्तरदायित्व—की अवहेलना नहीं बर्दाश्त की जायेगी।

श्रमके ठीक संगठन और कल्खोजकी आयके विभाजनमें कामके दिनकी इकाईके महत्त्वको बढ़ाते, मजबूत करते, कल्खोजमें श्रमकी उत्पादकताको बढ़ाया जायेगा। कल्खोजोंमें ब्रिगडों और टोलियोंकी काम

करनेकी व्यवस्थाको वैयक्तिक और समुदायके अलग-अलग कामके अलग पारिश्रमिकके बर्ताव द्वारा और अच्छा बनाया जायगा। कल्खोजी किसानों-को अच्छी फसल पैदा करने, बछड़ोंको बढ़ाने, अपनी श्रमकी उत्पादकताको अधिक करनेकेलिये अतिरिक्त पारिश्रमिक देनेकी रीतिपर व्यापक रूपेण अमल किया जायगा।

खेतकी उपजको सरकारके पास पहुँचानेका अपना कर्तव्य पूरा करनेमें कल्खोजोंको अधिक अनुशासन मानना पड़ेगा।

३२. (सोवखोज)—सोवखोजोंको फसलकी उपज और पशुओंकी उत्पादकताको काफी बढ़ा और ट्रैक्टर, कम्बाइन तथा दूसरी मशीनोंके पूर्ण उपयोग और खेतीकी उपजके खर्चको कम करते ऐसे तरीकेको इस्तेमाल किया जायगा, कि अगले पाँच वर्षोंमें वह बड़ी अच्छी स्थितिमें हो जाय। युद्ध पूर्वके पशुओंकी संख्याको फिर पूर्ववत् ही नहीं कर दिया जायगा, बल्कि १६५० तक वह और बढ़ जायेगा : सींगवाले पशुओंकी वृद्धि १६%; भेड़-बकरी ३०% और सूअर २८%। खेती और पशु पालनके मुख्य-मुख्य कामोंमें भी अधिकसे अधिक काम मशीनों द्वारा लिया जायेगा। सोवखोजोंकेलिये स्थायी कमकरोंका स्टाक रखा जायगा। उन्हें थोड़ी जमीन भी मिलेगी और अपने वास्ते घर बनानेकेलिये सरकारसे सहायता मिलेगी।

३३. (बाल्तिक प्रजातंत्रमें खेती)—लिथुवानिया, लत्तविया, एस्तोनिया, मोल्दावियाके संघ प्रजातंत्रों और उक्रइन तथा बेलोरूसियाके पच्छिमी जिलोंके किसानोंके खेतोंमें कृषिकी पुन: स्थापना और उन्नति, जोतकी जमीनको बढ़ाने, फसलकी उपजको अधिक करने, पशुओंकी संख्या और उपजको ज्यादा करनेकेलिये किसानोंकी फार्मोंके काममें मदद की जायगी। इसके लिये कृषि-सम्बन्धी सहयोग समितियोंको मजबूत किया जायगा। मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशनों और घोड़ा-किराया-केन्द्रोंके जालको और फैलाया जायगा। करज दी जायगी। खेतीकी मशीन और खनिज खाद

प्रचुर परिमाणमें मिलेंगी। वहाँ उच्च जातिके पशु पैदा करनेके फार्म संगठित किये जायेंगे।

३४. (जंगल लगाना)—जर्मनों द्वारा अधिकृत जिलोंमें जंगल वंचित क्षेत्रोंके फिरसे वनाच्छादित करने और साधारण जंगल विभागकी पूर्ववत् स्थापना और विकासकेलिये १२ करोड़ ३० लाख हेक्टर भूमिमें जंगलोंका विवरण लिखना, सर्वे करना और बन लगाना। बीजके जखीरे और पौध तैयार करनेकेलिये नर्सरियोंका संगठन बड़े पैमानेपर किया जायगा। बयावानी जिलोंमें—जहाँ खेती और पानीकी संरक्षाकेलिये उनका महत्त्व बहुत ज्यादा है वहाँ—जंगलोंकी रक्षा और उन्नतिकेलिये तदबीरें की जायेंगी।

३५. कृषि संबन्धी अनुसन्धानालयोंके कामको और भी अच्छा बनाया जायगा। उनका मुख्य काम होगा सोवियत् सघके भिन्न-भिन्न कृषि-प्रधान स्थानोंमें कृषि, पशुपालन, तथा तत्सम्बन्धी दूसरी शाखाओंमें प्रगति करनेकेलिये उपयुक्त तरीके बतलाना।

सोवियत्-कृषि विज्ञानको और उन्नत किया जायगा। यन्त्रीकरण, बिजलीकरण, अर्थशास्त्र और संगठनके क्षेत्रमें अनुसंधानका कार्य और अच्छा बनाया जायेगा।

यातायात

मालके यातायातके सम्बन्धमें राष्ट्रीय अर्थनीतिकी बढ़ती आवश्यकताएँ पूरी करनेकेलिये निम्न कार्य सामने रखे जाते हैं।

३६. रेलवे यातायात—१९५०में औसत दैनिक डब्बा लादना १ लाख १५ हजार रखा गया है। उस साल ढोया गया सारा भार ५ खरब ३२ अरब टन-किलोमीतर होगा।

जर्मन-ध्वस्त जिलोंमें रेलें पूर्णतया यथापूर्व बन जायँगी। निम्न लाइनोंमें युद्ध पूर्वकी ढोनेकी क्षमता बढ़ जायगी। दोनबास—केन्द्र, दोनबास—क्रिवोइरोग दोनबास—वोल्गा; काकेशससे जानेवाली लाइनें,

मास्को-लेनिनग्राद, मास्को—कियेफ्—ल्वोफ्, मास्को—स्मोलेन्स्क—मिन्स्क—कोइनिग्सबेर्ग (कलिनिनग्राद), और मास्को—बेलीकि लुकि—मरीगा।

ऊराल और सिवेरियाके उद्योग-धंधोंकी पूरी और अवाधित यातायात-की सुविधाएँ निश्चित हैं।

मुख्य-मुख्य रेलवे लाइनोंको नवीनतम यांत्रिक साधनोंसे सज्जित किया जायगा और जाड़ेमें उनके नियमपूर्वक चलानेका काम मुख्यतः बिजली और डीसेल इंजनों द्वारा चलता रहेगा।

रेलवेके साधनोंमें वृद्धि ६१६५ दूरगामी वाष्प-इंजनों, ५५५ दूरगामी बिजली-इंजनों, ८६५ दूरगामी डीजल इंजनों, ४,७२,५०० माल-डब्बों (दो धुरी वाले डब्बोंके हिसावसे) और ६०० पसेंजर-डब्बोंसे की जायेगी। स्वयंचालित ब्रेक सभी माल-डब्बोंके ६३% में और डब्बोका स्वयं जुड़ना ७५% में होगा। क्षतिग्रस्त रेलवे डब्बोंकी पूर्णतया मरम्मत कर दी जायगी और इंजनों तथा डब्बोंकी मरम्मतमें काफी सुधार हो जायगा।

मालके डब्बोंके उतारने-चढ़ानेका काम १९४५के १०.९ दिनकी अपेक्षा १९५०में औसतन ७ दिन, और १९४५में औसतन ७६० किलोमीतर औसत लंबाईकी ढुलाईकी जगह १९५०में ६९० किलोमीटर हो जायगी; फैक्टरीकी लाइनोंमें डब्बोंके चुपचाप खड़े रहनेका समय भी बहुत ही कम कर दिया जायगा।

रेलवेके विकासमें पूँजी लगानेकी मात्रा पाँच वर्षोंमें ४० अरब १० करोड़ निश्चित की गई है।

निम्न रेलवे-लाइनोंको पूर्व स्थितिमें पहुँचाना १९४८ तक पूरा हो जायगा; दोनेत्स कोयला-क्षेत्र और क्रिवोइरोग लोह-क्षेत्रकी लाइनें और मास्कोको दोनबाससे मिलानेवाली लाइन और लेनिनग्रादसे काकेशसको मिलानेवाली लाइन—इन सबकी लंबाईका योग १५ हजार किलोमीतर है। जर्मन-अधिकृत प्रदेशकी रेलोंके १८०० बड़े और मध्यम दर्जेके पुल

पूरी तौरसे पुन: बना दिये जायेंगे, जिनमें द्नियेपर, दोन, द्नियेस्तर, नेवा, नीमन, पश्चिमी द्वीना, वोलखोफ् और दक्षिणी बुगके पुल हैं। १५०० रेलवे स्टेशन—१३०० इंजनके रहनेकेलिये गोल-घरों और १२८ डब्बा-मरम्मतके कारखानों और केन्द्रोंके साथ—मरम्मत कर दिये जायेंगे या नये बना दिये जायेंगे।

पाँच वर्षके कालमें ७२३० किलोमीतरकी नई लाइनें बना दी जायेंगी, जिनमें स्तालिन्स्क-मग्नितोगोर्स्ककी ट्रंक (प्रधान) लाइन भी है। १२,५०० किलोमीतर लंबाईकी दूसरी श्रेणीकी लाइनें बना या मरम्मत कर दी जायेंगी। ५३२५ किलोमीतर लम्बी लाइनोंका बिजलीकरण और १०४०० किलोमीतर लाइनपर स्वयंचालित ब्लाक-सिग्नल व्यवस्था करदी जायगी।

रेल-स्टेशनों और जंकशनोंके नवीनतम यन्त्रोंसे सज्जित करनेमें और अधिक उन्नति होगी। २१ यन्त्रचालित शंटिंगके स्थान बना या मरम्मत कर दिये जायेंगे। विद्यमान रेलों पर ५० हजार किलोमीतरकी नई रेलें बैठा दी जायेंगी, जिनमें ३००० किलोमीतर लाइनका पुनर्निर्माण और २६ किलोमीतर की पूरी मरम्मत करनी होगी।

जर्मनोंके अधिकारके समय जो इंजन और गाड़ीकी मरम्मतके कारखाने नष्ट कर दिये गये थे, वे फिरसे बना दिये जायेंगे और भाप-इंजनकी मरम्मतके ११ नये कारखाने, बिजली-इंजनके मरम्मतका १ कारखाना और बिजली-डीज़लइंजनकी मरम्मतका एक कारखाना, डब्बा-मरम्मतके १२ कारखानें और खाली पुर्जोंके बनानेकेलिये, ३ प्लांट बनाये जायेंगे।

रेलवे-कमकरोंके रहनेके लिये १९४६-५०में ५० लाख वर्गमीतर फर्शवाले मकान बन जायेंगे।

१९४६-५०में रेलवेको ४५ लाख टन रेलें, २० लाख टन रेल-बंधन, १८ करोड़ ५० लाख स्लीपर दिये जायेंगे; भारी रेलोंके उत्पादन और बैठानेका काम शुरू होगा।

रेलवेपर यन्त्र द्वारा मालका चढ़ाना-उतारना ७५% बढ़ जायगा।

जर्मन-ध्वस्त जिलोंमें अतिरिक्त लाइनें फिरसे लगा दी जायेंगी, विद्यमान अतिरिक्त-लाइनोंको फिरसे बना दिया जायगा और नई लाइनें तैयार की जायेंगी—खासकर ऊराल और सिबेरियाके उद्योग-धंधोंके-लिये। औद्योगिक कारखानोंके यातायात-विभागका काम और अच्छा कर दिया जायगा।

२६. आंतरिक जल-यातायात—१९५०में देशके आंतरिक जल-मार्गोंपर चलनेवाले मालमें युद्ध-पूर्वसे ३८% वृद्धि होगी।

जर्मन-अधिकृत प्रदेशोंमें आंतरिक जल-यातायात-व्यवस्थाको पूरी तौरसे पहले जैसा कर दिया जायगा, और १९४८ तक द्निये पर, प्रिपेत्, दोन, कूबन, नीमन, पश्चिमी द्वीना और स्विर नदियों, और लदोगा तथा ओनेगा झीलोंके सारे स्टीमर-बंदरगाह और माल-घाट फिरसे पहलेकी तरह बन जायेंगे और इन जिलोंमें मालका ढोना युद्ध-पूर्व जैसा हो जायगा।

वोल्गा और उसकी शाखाओं तथा सिबेरिया और उत्तरकी नदियोंका बेहतर उपयोग होगा; स्वयं-चालित और खींचके जानेवाले बजरोंका निर्माण तेजीसे होगा, मालको स्थान पर पहुँचानेमें जल्दी की जायगी और रस्सेसे खींचे जाने वाले पोतोंका इस्तेमाल १९४०की अपेक्षा औसतन २५% अधिक होगा।

नदीके विद्यमान बंदरों और माल-घाटोंको बेहतर बना दिया जायगा, नदीके पोतोंपर मालका चढ़ाना-उतारना बिल्कुल यन्त्र-द्वारा होगा, और १९५० तक चढ़ाने-उतारनेका सारा काम ७५% मशीनों द्वारा होगा; नदीके बंदरगाहों और माल-घाटोंमें यांत्रिक उठाने और खींचनेवाली मशीनों (क्रेन, बिजली-गाड़ी, उठावक और स्थानान्तर-कारक)से सज्जित होंगे।

स्तालिन श्वेत-सागर-बाल्तिक नहर और मारिइन्स्क जल-मार्गोंके पुनर्निर्माणका कार्य शुरू हो जायेगा। १९५० तक पोतयात्रोपयोगी आंतरिक

जल-मार्गोंकी लंबाईका योग बढ़कर १ लाख १५ हजार किलोमीतर हो जायगा।

पाँच वर्षके कालमें नदी-पोतोंके स्वयं-वाहित स्टीमरोंमें ३ लाख अश्व-शक्तिकी वृद्धि होगी और जोड़कर ले जानेवाले पोतोंकी क्षमतामें अतिरिक्त ३० लाख टनकी वृद्धि होगी।

पाँच जहाजी कारखाने बनाये जायेंगे और जहाजके इंजनों, तत्सहायक मशीनों और यन्त्र-साधनोंको संगठित करके दिया जायगा; जहाज बनानेके यन्त्र-चातुर्यके नये आविष्कारोंको नदी-पोतोंके बनानेमें इस्तेमाल किया जायगा।

लकड़ीके पोतोंके बनाने और मरम्मत करनेके कारखानोंको मशीनोंसे अच्छी तरह सज्जित कर दिया जायगा; और नदी-पोतोंके बनाने तथा मरम्मत करनेकेलिये बहुत अच्छी किस्मकी लकड़ी प्रस्तुत रहेगी।

सोवियत-संघके प्रजातंत्रोंमें छोटी नदियोंको माल ढोने लायक बना दिया जायगा; प्रजातंत्रोंमें स्वयं-प्रेरित और नये पोतोंके बनानेका इंतिजाम किया जायगा।

३७. व्यापारिक पोत—१९५० तक समुद्रमें मालकी ढुलाई युद्ध-पूर्वसे २·२ गुना हो जायगी।

व्यापारिक पोतोंमें ६ लाख टनकी वृद्धि होगी, जिसमें ४ लाख टन स्वयं-चालित पोत और ६० हजार टन खींचकर ले जाने वाले पोत होंगे।

अज़ोफ़, काला और बाल्तिक समुद्रोंके बंदरगाह पूरी तौरसे पहली अवस्थामें कर दिये जायेंगे और सुदूरपूर्वमें नये बंदरगाह बना दिये जायेंगे। बंदरगाहोंके पुनर्निर्माणके वक्त निर्माणके नवीनतम आविष्कारों-का उपयोग किया जायगा।

बंदरगाहकी बनावटमें सुधार, मशीन द्वारा मालकी चढ़ाई-उतराई और माल-गोदामोंके भीतरी कामके यन्त्रीकरण, चलते क्रेनों और गंत्रीकी संख्याके बढ़ाने, और अच्छे ढंगकी बंदर-यातायात मशीनरी (ट्रैक्टर,

उठानेकी ट्रक और मोटरवाला काष्ठ-वाहक) द्वारा बंदरोंके मालकी ढुलाई आदिकी क्षमता बढ़ाई जायगी।

गहरे पानीके पायरोंकी संख्याको १९४०की अपेक्षा १·७ कर दिया जायगा; महा-समुद्रमें जानेवाले महाजहाजोंके आनेकेलिए प्रधान बन्दर-गाहोंको गहरा कर दिया जायगा।

बाल्तिक और काला-सागरके जहाज-मरम्मती कारखाने पूर्णतया मरम्मत कर दिये जायेंगे। जहाज-मरम्मतके तीन नये कारखाने बनाये जायेंगे। १९५०में मरम्मत वाले कारखानोंकी क्षमता युद्ध-पूर्वसे ढाई गुनी हो जायगी और मरम्मतकेलिये सूखी डकों और स्लिप् (फिसलू स्थान)की संख्या १९४०की अपेक्षा १·८ गुना हो जायगी। गहरे समुद्रके व्यापारिक जहाजोंके घरू-निर्माणमें १९४६-५०में दो बड़े जहाजी कारखानों की (एक काला-सागर पर सामुद्रिक माल-जहाजके बनानेकेलिये और वाल्तिकमें ट्रालर और समुद्रगामी ढंगके बनानेके लिये) वृद्धिकी जायगी।

१९५० तक उत्तरी समुद्र-पथको सामान्य कार्यकारी समुद्र-मार्गके रूपमें पूर्णतया परिणत कर दिया जायगा।

३८. सोवियत जहाज-निर्माणको बहुत उन्नत किया जायगा। १९५०में बने जहाजोंका टन-भार १९१०की संख्यासे दूना होगा। सोवियत-संघमें एक दृढ़ और शक्तिशाली नौवाहिनीका बनाया जाना पक्का होजायगा। सोवियत नौसेनाके लिये नये जहाजों और सामुद्रिक अड्डे बनाये जायेंगे।

३९. यातायात और मोटर-पथ—पाँच वर्षोंमें देशकी मोटर-गाड़ियाँ युद्ध-पूर्वसे दूनी हो जायेंगी, डीजेल इंजन, उच्च कम्प्रेसन गेसोलिन वाला इंजन, गेस-रिजर्वायर और गैस-जेनरेटर मोटरें (जिनमें स्थानीय ढंगका ईंधन इस्तेमाल होगा) और ट्रक बड़े पैमानेपर इस्तेमाल होंगी।

मोटर-यातायातके उपयोग और सेवामें बहुत उन्नति होगी; खाली दौड़ने या बेकार खड़े रहनेको बहुत कम कर दिया जायेगा; पसेंजर और मालका टैक्सीकी यातायात बढ़ेगा; ट्रेलरों और कंटीनरोंका मालके

यातायातकेलिये इस्तेमाल और व्यापक होगा; मोटर-यातायातमें यानोंके-लिये काफी संख्यामें मरम्मतके कारखाने बनाये जायेंगे; मोटरखानों (गैरेज)के यन्त्र-साधनों और हथियारोंके बनानेको बढ़ाया जायगा।

प्रदेशके अंदर सड़कपर भारी भारवाले यातायातका प्रबंध किया जायगा; थोड़ी दूरकी दुलाईमें रेल-यातायातकी जगह सड़क-यातायात लेगा।

पाँच वर्षोंमें सोवियत्-संघ और प्रजातंत्रोंके अधिकारके अच्छे मोटर-पथोंका जाल ११,५०० किलोमीतर बढ़ जायगा।

विद्यमान प्रमुख सड़कोंका जाल पुनः स्थापित और पूर्णतया मरम्मत कर दिया जायगा।

४०. **वायु-यातायात**—आधुनिक पैसेंजर और माल-यातायातके विमानोंका नागरिक विमान-बेड़ा बनाया जायगा। वायु-यात्राका जाल १ लाख ७५ हजार किलोमीतर तक बढ़ा दिया जायगा। वायु-पथकी पुनः स्थापना और वृद्धि होगी—प्रथमतः मास्कोको प्रजातंत्रोंकी राजधानियों और जिला-केन्द्रोंसे जोड़नेवाले मार्ग, और उत्तरी सिबेरिया और सुदूरपूर्वके वायुपथ विकसित किये जायेंगे। स्थानीय वायु-पथोंको संघ और स्वायत्त-प्रजातन्त्रोंके केन्द्रोंको बाहरी जिलोंसे जोड़नेका विकास किया जायगा।

अखिलसंघ वायु-पथ नये यन्त्रोंसे सुसज्जित किये जायेंगे, जिसमें वह बारहो महीने काम कर सकें। प्रधान लाइनोंमें रातको काम करनेकेलिये यांत्रिक सुविधायें रहेंगी। १६ हवाई-अड्डोंको बनाकर उन्हें भारी और द्रुतगति यातायातके विमानोंकेलिये उपयोगी कर दिया जायगा। विद्यमान या योजनामें आये हवाई बंदरोंमें मुसाफिरोंके रहनेकेलिये २० इमारतें फिरसे या नये तौरपर बना दी जायेंगी।

खेती या जंगलके हानिकारक जीवोंको मारने, सार्वजनिक स्वास्थ्य-रक्षाके इस्तेमाल और ज्योदेसी (भूमापतवीय) सर्वेकेलिये खास तौरसे उपयुक्त विमानोंका इस्तेमाल बड़े पैमानेपर किया जायगा।

४१. **सूचना-साधन**—सूचना-साधन खास करके रेडियो और ट्रंक-केबुल (मुख्य तारलाइन)को जर्मन-अधिकृत जिलोंमें नवीनतम यन्त्र साधनोंके उपयोग द्वारा पुनः पूर्णरूपेण स्थापित कर दिया जायगा। सोवियत-संघके सूचना-साधनके विकासकी व्यापक-योजनाको पूरा करनेकेलिये मास्को और सभी प्रजातन्त्र-प्रान्त-जिला-केन्द्रोंके बीच और प्रजातन्त्रोंकी राजधानियों तथा उनके अपने जिला-केन्द्रोंके बीच विश्वसनीय टेलीफोन और तारके सम्पर्क स्थापित किये जायेंगे। सभी जिला-केन्द्रों, ग्राम-सोवियतों, मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशनों और सोवखोजोंमें टेलीफोन लग जायेंगे।

७८० किलोमीतर ट्रंक-टेलीफोन और टेलीग्राफके तार मरम्मत किये या नये लगा दिये जायेंगे। ५०,००० किलोमीतर ऊपरसे जानेवाले अ-लोह-धातुके तार लगाये जायेंगे; ट्रंक सम्पर्कित तार-लाइनोंमें आधुनिक उच्चवेग वाले यन्त्र लगेंगे।

रदियो-टेलीग्राफ और टेलीफोन प्रेषक खड़े किये जायेंगे। इनमें बीस सुदूरपूर्व, कजाकस्तान, मध्य-एसिया और काकेशसके साथ अच्छा सम्बन्ध रखनेके निमित्त केन्द्रीय जिलोंमें लगाये जायेंगे।

टेलीफोनकी विनिमय-क्षमता बढ़ाई जायेगी और स्वयंचालित टेलीफोन-विनिमय लगानेकी ओर विशेष ध्यान दिया जायगा।

रदियो ब्राडकास्टको और भी व्यापक किया जायगा। २८ नये ब्राडकास्टिंग स्टेशन बनेंगे। युद्धपूर्वकी अपेक्षा रदियो-प्रसारका जाल ७५% बढ़ जायेगा।

मास्कोमें दूरदर्शन-रदियो-केन्द्र पुनः स्थापित और नवीनतम यन्त्रों द्वारा संचालित कर दिया जायेगा। लेनिनग्राद, कियेफ़, स्वेर्द्लोवस्कमें नये दूर-दर्शन केन्द्र खुलेंगे।

डाक-प्रबन्ध सामान्यतः बेहतर बनाया जायेगा। दीहातमें ५००० नये

डाकखाने खुलेंगे। चिट्ठियाँ तथा अखबार पहुँचानेकेलिये मोटर तथा हवाई यातायातका व्यापकरूपेण इस्तेमाल होगा।

जनताकी भौतिक और सांस्कृतिक प्रगतिकी योजना

१. उत्पादनकी वृद्धि, व्यापारके विस्तार, घर, संस्कृति, तथा सामाजिक सेवाओंके खर्चमें वृद्धिके परिणामस्वरूप जनताका युद्ध-पूर्वका जीवनतल पाँच वर्षोंमें पुनः प्रतिष्ठित ही नहीं, बल्कि राष्ट्रीय आय पहलेसे ३०% अधिक हो जायेगा।

१९५०में राष्ट्रकी आय १ खरब ७७ अरब रूबल (१९२६-२७ के दामके हिसाबसे) होगी, जिसके साथ ही संचय और उपभोगका योग भी बढ़ेगा।

२. श्रम और औद्योगिक व्यक्तियोंकी शिक्षा—१९५०में सोवियत्‌के राष्ट्रीय उद्योगोंमें हाथ और दिमागसे काम करते कमकरोंकी संख्याका अनुमान ३ करोड़ ३५ लाख और वेतन २ खरब ५२ अरब ३० करोड़ रूबल होगा। सभी चीज़ोंका दाम बराबर घटता जायेगा और निवास, सांस्कृतिक एवं सामाजिक सेवायें बेहतर होंगी। श्रमकी उत्पादकता-की वृद्धिके साथ-साथ हाथ और दिमागसे काम करनेवाले कमकरोंकी आय सोवियत्-संघके राष्ट्रीय उद्योगोंमें १९५०में जाकर प्रतिवर्ष ६००० रूबल हो जायगी, जो कि १९४०के तलसे काफी ऊँचा है।

मौलिक उद्योगोंमें कमकरोंको खींचने तथा स्थायी श्रमिकोंका स्टाफ पैदा करनेके ख्यालसे भारी उद्योग (कोयला, लोहा-फौलाद, तेल)की कुछ शाखाओंमें मजूरों, इंजीनियरों, टेकनीसियनोंको ऊँचा वेतन दिया जायगा। उत्पादन-प्रोग्रामके पूरा, और अधिक पूरा करनेकेलिये मजूरों-को पीस रेट (मात्राके अनुसार कामका वेतन)के अनुसार वेतन, साथ ही इंजीनियरों और टेकनीसियनोंको बोनस देनेकी प्रथा पूरी की जायेगी। मजूरी और वेतनके अनुसार बोनसको व्यवस्थित रूपमें बढ़ाया जायगा।

उद्योगमें उचित टेकनिकल तौरसे हिसाब लगाया जायेगा, उत्पादन-का नार्म (निश्चित समयमें अवश्यकरणीय कामकी मात्रा)का व्यापक रूपमें उपयोग किया जायगा। इसमें नवीनतम टेकनिकोलाजी (यंत्र शास्त्रके तरीकों) और श्रममें बढ़ते हुए यंत्रीकरणका ध्यान रखा जायगा। योग्यता-प्राप्त इंजीनियरों और टेकनीसियनोंके जिम्मे कामका हिसाब लगानेका काम दिया जायगा। उद्योगमें श्रमिकोंकी स्थितियों (सुरक्षाके यंत्र, प्रकाश, हवा, सफाई)में और सुधार करनेके तरीके इस्तेमाल किये जायेंगे।

राष्ट्रीय अर्थनीतिकी सभी प्रधान शाखाओंमें यंत्रचतुर कमकरोंकी पर्याप्त संख्या पाने और उद्योगमें काम करनेवाले व्यक्तियोंकी टेकनिक सम्बन्धी शिक्षाको बेहतर बनानेकेलिये फैक्टरी, व्यवसाय, और रेलवेके स्कूलोंके यंत्रदक्ष तरुण कमकरोंमेंसे शिक्षा-समाप्त व्यक्तियोंकी संख्या बढ़ाकर १२ लाख (विद्यार्थी) कर दी जायेगी। पाँच वर्षके कालमें राजकीय-रक्षित-मजदूर-शिक्षण-संस्थायें ४५ लाख यन्त्रचतुर तरुण कमकर देंगी।

वैयक्तिक या समुदायिक शिक्षा और अध्ययन-पाठावलियों द्वारा साधारण व्यवसायके काम यन्त्रचतुर कमकरोंका शिक्षा-प्रथा व्यापक रूपमें फैलाई जायगी, जिसमें कि पाँच वर्षोंमें ७७ लाख नये कमकर यन्त्रचातुरीकी शिक्षा प्राप्त करें। १ करोड़ ३६ लाख कमकरोंकी यन्त्र-चातुरीकी योग्यता और भी बढ़ेगी।

कल्खोज़ोंमें श्रमकी ऊँची उत्पादकता और कृषि तथा पशुओंकी उपजको अधिक बढ़ाकर १६४०की तुलनामें कल्खोज़ोंके प्रति-कार्य-दिन इकाईकी नगदके रूपमें कमाई बढ़ जायेगी।

उद्योग, गृह-निर्माण और यातायातमें मजूरोंको खींचनेकेलिये व्यवसाय-संगठनों और कल्खोजी खेतिहरोंके बीच इकरारनामा कराकर संगठित रंगरूटी प्रथाको जारी रखा जायेगा।

उत्पादनके कामोंमें और अधिक यन्त्रोंका उपयोग, श्रमके संगठनके लगातार सुधार और कमकरोंकेलिये अच्छे वास-स्थानों एवं उपयोगी सामग्रियोंका प्रबन्धकर औद्योगिक संस्थाओंकेलिये यन्त्रचतुर स्थायी कमकरोंकी पर्याप्त संख्या मौजूद रहना सबसे पहला आवश्यक कार्य समझा जायेगा।

३. **संस्कृति और स्वास्थ्य**—नगर और गाँवमें सांस्कृतिक और सामाजिक सेवाओंपर राजकीय व्यय-सामाजिक बीमापर व्यय, शिक्षा-स्वास्थ्य और राजकीय-श्रमनिधिकी शिक्षापर सरकारी खर्च, बड़े परिवारकी माताओं और अविवाहित माताओंकी वृत्ति, सैनिकोंके कुटुम्बों और मातृ-मुक्ति युद्धमें अपंग बने व्यक्तियोंकी वृत्ति (भत्ता या पेन्शन), साथ ही कमकरों और दूसरे कर्मचारियोंके खर्च—जो निवास और म्युनिसिपल्टीके सेवाओंपर होते सरकारी व्ययमें शामिल नहीं है—बढ़ाकर १६५०में १ खरब ६ अरब रूबल कर दिया जायगा, यानी १६४०के खर्चसे २·६ गुना अधिक।

१६४६-५०में सरकारी कारखानों और संस्थाओं द्वारा अपने कर्मचारियोंके सामाजिक बीमाकेलिये दी गई रकम ६१ अरब ६० करोड़ रूबल होगी।

१६५० तक प्रारंभिक, सात साल, और माध्यमिक स्कूलोंकी संख्या बढ़कर १ लाख ६३ हजार हो जायेगी। उनके विद्यार्थियोंकी संख्या ३ करोड़ १८ लाख होगी—गाँव और नगर दोनोंके सात सालकी उम्रसे ऊपरके बच्चोंकेलिये अनिवार्य सार्वजनिक शिक्षा रहेगी।

कमकर और किसान तरुण जो मातृ-मुक्ति-युद्धके समय और सोवियत्के कितने ही भागोंपर शत्रुका अधिकार रहते समय यथानियम स्कूली शिक्षा न पा सके, उनकी शिक्षाकेलिये स्कूलोंका एक व्यापक व्यवस्था की जायगी।

१६५० तक उच्चशिक्षण-संस्थाओं (युनिवर्सिटियों और कालेजों)के

छात्रोंकी संख्या बढ़कर ६ लाख ७४ हजार तथा विशेष ज्ञान वाले माध्यमिक स्कूलोंमें उनकी संख्या १२ लाख ८० हजार हो जायेगी; उच्च शिक्षण-संस्थाओंके विशेषज्ञ तरुण ग्रेजुयेटोंकी तादाद इस पाँच वर्षकी अवधिमें ६ लाख २ हजार होगी। टेकनिकल कालेजों तथा दूसरे विशेष माध्यमिक स्कूलोंके ग्रेजुयेटोंकी संख्या १३ लाख २६ हजार होगी।

ईंधन और पावर (बिजली)-उद्योग, लोह-फौलाद-उद्योग, कृषि और रेलवेके उच्च और मध्यम योग्यतावाले विशेषज्ञों तथा प्रारम्भिक और माध्यमिक-स्कूल-शिक्षकोंकी ट्रेनिंगका बड़े पैमानेपर प्रबन्ध होगा। टेकनोलोजीके नये क्षेत्रमें उच्चयोग्यता प्राप्त विशेषज्ञोंकी शिक्षाका इन्तिजाम होगा। उच्च तथा मध्यम योग्यतावाले व्यक्तियोंकी शिक्षाको बेहतर बनाया जायेगा।

१९४०के २८ हजारकी अपेक्षा १९५०में सिनेमाकी तादाद बढ़ाकर ४६ हज़ार ७ सौ कर दी जायेगी। प्रत्येक जिला-केन्द्र और देहाती आबादीमें अपना सिनेमा होगा, देहाती इलाकेमें सिनेमा-भवनोंकी संख्या काफी बढ़ाई जायेगी। नियमित महानाट्यशालाएं बढ़कर ८९८ हो जायेंगी। गाँवोंमें क्लबों तथा सार्वजनिक पुस्तकालयोंकी संख्या २ लाख ८४ हजार ९०० हो जायेगी।

बालोद्यान (किंडर-गार्टन)में रहनेवाले बच्चोंकी तादाद १९५०में २२ लाख ६० हजार हो जायेगी—१९४०से दूनी। मातृ-मुक्ति-युद्धमें अपने माता-पिताको खोनेवाले बच्चोंके राज्यकी अभिभावकतामें बाल भवनोंमें पालन-पोषण-शिक्षण-सम्वर्द्धनका पूरा प्रबन्ध होगा।

शत्रु-अधिकृत जिलोंमें जो स्कूल और दूसरी शिक्षण-संस्थायें, वैज्ञानिक प्रतिष्ठान, म्यूजियम, नाट्यशाला, सिनेमा, क्लब, पुस्तकालय और वाचनालय नष्ट हो गये थे, उन्हें फिरसे बना दिया जायेगा।

१९५० तक अस्पतालोंमें रोगियोंकी चारपाइयाँ १९४०के ७ लाख

१० हज़ारकी अपेक्षा ६ लाख ८५ हजार हो जायेंगी। स्थायी शिशु-शालाओंमें १६४०के ८ लाख ५६ हजारकी अपेक्षा १२ लाख इक्यावन हजार बच्चे होंगे। स्त्रियों, बच्चोंके डाक्टरी-परामर्श-केन्द्र, बच्चोंके अस्पताल और दुग्ध-भोजनालय बढ़ा दिये जायेंगे।

मजूरों, किसानों और बुद्धिजीवी कमकरोंके विश्रामगृहों और सेनीटोरियमोंका जाल पूर्णतः पुनः स्थापित कर दिया जायगा। सेनेटोरियमोंमें ढाई लाख, विश्राम-भवनोंमें दो लाख आदमियोंके रहने लायक स्थान होंगे।

मातृमुक्ति-युद्धके अपाहिजोंकेलिये डाक्टरी सहायताका प्रबन्ध रहेगा, जिसमें अस्पतालमें दवा, विश्रामगृह और सेनीटोरियम् भी शामिल हैं। युद्धके अपाहिजोंकेलिये अच्छे किस्मके कृत्रिम अंगोंके बनानेका प्रबन्ध होगा।

१६५० तक दवा, आपरेशनके औजार तथा दूसरे यन्त्रोंपर १ अरब २० करोड़ रूबल खर्च होंगे, जो कि १६४०से ८५% अधिक है। उच्च-श्रेणीके आधुनिक आपरेशनी औजारों और परीक्षित एवं नवीनतम औषधोंका राशिरूपेण उत्पादनका प्रबन्ध किया जायेगा।

४. निवास और म्युनिस्पल विकास—शत्रु-अधिकृत प्रदेशोंमें नगरके ध्वस्त घरों, औद्योगिक बस्तियों और गाँवोंकी पुनःस्थापना पूरी हो जायगी। नये गृह-निर्माणको इतने बड़े पैमानेपर किया जायगा, जिससे नगरों, औद्योगिक बस्तियों, गाँवोंके घरोंकी स्थितिमें काफी सुधार हो जायगा।

गृह-निर्माणमें लगनेवाली पूँजी सोवियत्-संघकी राष्ट्रीय अर्थनीतिकी १४.५% हो जायगी तृतीय पंचवार्षिक योजनामें वह केवल १०.५ सैकड़ा थी। १६४६-५०में गृह निर्माणमें ४२ अरब ३० करोड़ रूबल पूँजी लगाई जायेगी—तृतीय पंचवार्षिक योजनामें साढ़े पन्द्रह अरब

रूबल लगा था। (इसमें वैयक्तिक घर नहीं लिये गये)। गृहोंके रूप-गुणको बहुत बेहतर कर दिया जायगा।

पाँच वर्षके कालमें फिरसे या नये सिरेसे बने राज्यस्वामिक घरोंका फर्श ७ करोड़ २४ लाख वर्गमीतर होगा, जिसमें साढ़े छ करोड़ वर्गमीतरको मंत्रिमण्डल तथा भिन्न-भिन्न विभाग बनायेंगे, स्थानीय सोवियतें ७४ लाख वर्गमीतर बनायेंगी। इसके अतिरिक्त इन पाँच वर्षोंमें इंतिजाम किया जायगा कि अपने स्वामियोंके खर्च और सरकारी कर्जकी मददसे १ करोड़ २० लाख वर्गमीतर फर्शवाले व्यक्ति-स्वामिक घर बनाये जायें।

वास-स्थितियोंमें सुधार करनेकेलिये उद्योगमें स्थायी कमकरोंको तैयार करने और मजूरोंको अधिक काम बदलनेसे रोकनेकेलिये व्यावसायिक संगठन, बगीचा और साग-सब्जीकी क्यारियों समेत एक-परिवारी दो-परिवारी घर कमकरों, क्लर्कों, टेक्निशियनों और इंजीनियरोंको किश्त-पर बचनेकेलिये बनाये जायेंगे।

मिनिस्टरियों और व्यावसायिक संघोंका यह कर्त्तव्य है, कि पुनः स्थापित नगरोंमें अपने नीचेके घरों और मुहल्लोंको मुख्य जीवन-सुविधाओं—जल-कल, सिवेरेज (पाखाना बहानेकी नाली) व्यवस्था, सड़क फुट-पाथ पक्का करना, वृक्ष और हरियाली, बिजली प्रकाश, सार्वजनिक स्नानागार और धोबीशालाके साथ सज्जित करनेका प्रबन्ध करें। जर्मन-अधिकृत नगरोंमें जल-कल, मोरी, नागरिक यातायात, म्युनिसपल्टीके बिजलीघर और सार्वजनिक स्नानागारकी पुनः स्थापना करें। सार्वजनिक हितके कामोंको बेहतर बनानेकेलिए विद्यमान म्युनिसपल कारखानोंको बढ़ाया जायगा और नये म्युनिसपल कारखाने बनाये जायँगे। इन पाँच वर्षोंमें १६ नगरोंमें जल-कल, १३ नगरोंमें भूमिनिहित मोरी व्यवस्था, ८ नगरोंमें ट्राम और २० नगरोंमें ट्रोलीबस (बिजलीचालित बस) का प्रबन्ध होगा।

पाँच वर्षोंमें म्युनिसपेल्टियोंकेलिए १७५० ट्रामगाड़ियों और ३ हजार आधुनिक ढंगकी ट्रोलीबसें बनाई जायेंगी। इस कालमें शहरोंमें काम करनेवाली मोटर-बसोंकी संख्यामें २२ हजार, और टेक्सीमें १५ हजारकी वृद्धि होगी। नगरों और कारखानेंकी बस्तियोंमें सड़कों और चौरस्तोंको पक्का करनेका काम और बढ़ाया जायेगा और सुधरे ढंगकी पक्की सड़कोंका क्षेत्रफल बढ़ाया जायेगा।

सोवखोजों और किसानों द्वारा अपने खर्च तथा सरकारके कर्जकी सहायतासे दीहातमें वास-गृहोंको फिरसे या नये सिरेसे बनाये मकान ३४ लाख होंगे, जिनमें २२ लाख ४० हजार जर्मनोंके अधिकारमें रहे प्रदेशोंमें होंगे।

किसानों और दीहाती बुद्धिजीवियोंको अपने घरोंको फिरसे बनानेमें कर्ज और गृहनिर्माण-सामग्री तथा फेक्ट्रीमें तैयार गृह-भागोंको बेंचकर सहायता दी जायेगी।

मकानोंकी मरम्मत करना स्थानीय सोवियतों और उद्योग-धन्धे प्रधान कर्त्तव्य है। दीहाती सोवियतोंके घरोंको पूरी तौरसे बनानेके-लिए ५ अरब रूबल निश्चित किया गया है।

५. व्यापार और उपभोग-सामग्री—१६५०में सरकारी और सहयोग-समिति २ अरब ७५ करोड़ रूबल (१६४५के दामोंको नीचा करनेका हिसाब लेकर) का खुदरा व्यापार होगा, जो कि १६४०के व्यापारसे (तुलनाके साथ दामको हिसाब करने पर) २८% वृद्धि होगी।

१६४६--४७में राशनिंग-व्यवस्थाको हटाकर अनियंत्रित सोवियत् व्यापारका काम पूरा हो जायेगा। १६४६की शरदमें रोटी, आटा, अनाज और मकरौनीकी राशन-व्यवस्था बन्द कर दी जायगी।

ऊँचे प्रकारकी खाद्य-सामग्री, कपड़ा, परिधान और जूतेका उत्पादन और बिक्री बढ़ा दी जायेगी। सरकार और सहयोग-समितियों द्वारा बेंचे जाने वाले माल—मांस और मछलीकी चीजें, चीनी और मिठाई, सूती,

ऊनी और रेशमी कपड़े और चमड़ेके जूते—का विक्रेय स्टाक १६४०की अपेक्षा अधिक हो जायेगा। फेन्सी माल और घरू सामान तथा बर्तन आदिका उत्पादन बढ़ाया जायगा।

१६५०में उपभोग-सामग्रीका उत्पादन और विक्रय निम्न संख्यामें बढ़ाया जायेगा :—

आलमोनियम, तामचीन और चीनी बर्तन २६ करोड़की संख्यामें; समावार (बर्तन-चूल्हा संयुक्त चाय-पात्र) २ लाख; टम्बलर (गिलास) १६ करोड़; १ करोड़ २० लाख रूबल (स्थिर दामके हिसाबसे)का फर्नीचर; ४$\frac{1}{2}$ लाख सिलाई मशीन; ७४ लाख दीवाल, हाथ और जेबकी घड़ियाँ, १० लाख फोनोग्राफ, ६ लाख २५ हजार रदियो; १ लाख ३५ हजार मोटर-साइकिल; १०$\frac{1}{2}$ लाख बाइसिकिल; ३$\frac{1}{2}$ लाख शिकारी बन्दूक; ५ लाख ३० हजार फोटो-केमरा।

१६४६के आरम्भसे लकड़ी, लोहा, काँटी, ईंट, खिड़कीके काच, पेंट और वार्निश तथा दूसरे मकान बनाने या मरम्मत करनेकी सामग्रीकी खुदरा बिक्रीका प्रबन्ध किया जायगा।

शहरों और देहातोंमें सरकारी और सहयोग-समितिकी दूकानोंके जाल, और साथ ही थोक बेंचनेकी दूकानें और गोदाम पूर्वावस्थासे और आगे बढ़ा दिये जायेंगे। विशेष चीजोंकी शहरवाली महादूकानों और जिलेके डिपार्टमेंट-स्टोरों (महादूकानों) और किसानोंकेलिये आवश्यक चीजोंके विक्रयालय पहली स्थितिमें करके और बढ़ाये जायेंगे। शहरों, जिला-केन्द्रों और दूसरी बड़ी बस्तियोंमें चायखाने और भोजनालय युद्धपूर्वकी स्थितिमें करके और आगे बढ़ाये जायेंगे।

कल्खोजी व्यापारको और बढ़ानेका इन्तिजाम किया जायगा, कल्खोजी हाट यथापूर्व हो जायेगी और उनकी संख्या और बढ़ जायगी। कृषक-जनताकी माँग वाली चीजोंके अधिक उत्पादन और बड़े रूप में विक्रयका प्रबन्ध किया जायगा।

IV

संघ-प्रजातन्त्रोंके कृषि-उद्योगकी पुनः स्थापना और विकासकी योजना

सोवियत्-संघकी अर्थनीतिकी पुनः स्थापना और विकासकी पंचवार्षिक योजना १९४६--५०में संघ-प्रजातन्त्रोंकेलिए निम्न कर्त्तव्य नियत किये जाते हैं, जो कि इस कानूनके दूसरे और तीसरे परिच्छेदोंमें आये सारे सोवियत् संघके कर्त्तव्योंके अंग हैं।

(१) रूसी सोवियत् फेड्रल समाजवादी प्रजातन्त्र

(क्षेत्रफल—६४,४४,००० वर्गमील जनसंख्या—१०,६०,००,०००)

१. रूसी सोवियत् फेडरल समाजवादी रिपब्लिक (र स फ स र) की औद्योगिक उपजके मुख्य-मुख्य अंशोंकी योजना १९५०में निम्न प्रकार होगी :—

कच्चा लोहा (टन)	९५,००,०००
फौलाद (टन)	१,६०,००,०००
कोयला (टन)	१४,१९,००,०००
पेट्रोल (टन)	१,४५,००,०००
बिजली-शक्ति (हजार किलोवात)	५,७२,००,०००
पीट या कच्चा-कोयला (टन)	३,४२,००,०००
धातुके कामके मशीनटूल	२८,५००
मोटर-गाड़ियाँ	४,५७,०००
ट्रैक्टर	८२,०००
लोहा-फौलाद-मिलोंके यन्त्र-साधन (टन)	६६,७००
भाप टर्बाइन (किलोवात)	२२,०१,०००
भाप ब्वायलर (वर्गमीतर)	३,९९,०००
सीमेंट (टन)	६३,४३,०००
खिड़कीके काच (वर्गमीतर)	४,८२,००,०००

कटी लकड़ी (घनमीतर)	२३,००,००,०००
कागज (टन)	६,६६,०००
सूती कपड़ा (मीतर)	४,१८,५५,००,०००
ऊनी कपड़ा (मीतर)	१२,६०,००,०००
चमड़ेका जूता (जोड़ा)	१५,६३,००,०००
खाद्य तेल (टन)	३,२४,४००
चीनी (टन)	४,६३,०००
मांस (टन)	७,३१,०००
मक्खन (टन)	१,५८,०००
मछली (टन)	१८,८४,५००
शराब (१० लितरा)	६,०३,००,०००
नमक (टन)	२२,००,०००

२. १९४६–५०में रु स फ स रमें १ खरब ४५ अरबकी पूँजी लगाई जायेगी, जिसमें १४ अरब १० करोड़ ५० लाख रूबल प्रजातन्त्रके हाथके कामोंमें लगेगी। र स फ स रके शत्रु-अधिकृत प्रदेशोंमें ३४ अरब ६० करोड़की पूँजी लगाई जायेगी।

३. १९४६-५०में १३ धौंकू भट्ठे बनाये जायेंगे, जो प्रतिवर्ष ४३ लाख टन कच्चा लोहा देंगे, और फौलाद पिघलानेवाले कारखाने ६८ लाख टन सालाना, ३५ रोलिंग मिलें ४६ लाख टन रोल करके तैयार मालको देनेवाली, ७ करोड़ ९८ लाख टनकी क्षमतावाली कोयलेकी खानें बनाकर चालू होंगी। शत्रु-अधिकृत प्रदेशमें १० लाख टन कच्चे लोहेकी क्षमतावाले ६ धौंकूभट्ठे, १४ लाख टन वार्षिक क्षमताके फौलाद पिघलानेवाले भट्ठे, ५ लाख टन क्षमतावाले ९ रोलिंगमिलें और २ लाख ६० हजारटन क्षमतावाली कोयलेकी खानें बनाकर चालू की जायेंगी।

शत्रु-अधिकृत प्रदेशमें लोहा-फौलाद मिलें, अ-लोह-धातु कारखानें, इंजिनियरी कारखाने और रसायनिक कारखानें पुनः स्थापित किये जायेंगे

और लोह-फौलाद तथा इंजिनियरी कारखानोंके नये केन्द्र बनाये जायेंगें। लेनिनग्रादके पड़ोसमें एक लोह-फौलाद कारखाना शुरू होगा। सुदूर-पूर्वके लोह-फौलाद कारखानेमें १ कोक-रसायन विभाग और १ धौंकू-भट्ठा बनाकर चालू किया जायेगा। पश्चिमी-सिवेरियाके लोह-फौलादके उद्योगकेलिए मग्नीतोगोर्स्कसे कुज़नेत्स्क-स्तालिन कारखानेमें लोह-पाषाणकी ढुलाईको कम करनेकेलिए, वहीं लोह-पाषाण निकालनेका इन्तिजाम किया जायेगा, और १९४६-५०में २० करोड़ १० लाख टन वार्षिक लोह-पाषाणकी क्षमतावाली खानें काटकर चालू कर दी जायेंगी। तुला और लिपेत्स्ककी लोह-खनियोंकी कार्य-क्षमताको बढ़ाया जायेगा, और कुर्स्कके इलाकेकी मगनेतिक अनोमलीमें काम चालू होगा। उरालमें कोयलेकी ढुलाईके कामको कम करनेकेलिए वहाँ पंचवार्षिक योजनाके अन्तमें कोयलेकी उपज बढ़ाकर १९४५की अपेक्षा ५५ लाख टन अधिक करदी जायगी, कोयलेकी खुली कटाईकी खानोंका बड़े पैमानेपर विकास किया जायेगा और स्वेर्दलोव्स्कके जिलेके वेसेलोव्स्क कोयलाक्षेत्र और बाश्किर स्वायत्त-प्रजातन्त्रके कुयुगज़िन कोयलाक्षेत्रमें काम शुरू हो जायेगा। सुदूर-पूर्वमें परीक्षार्थ खुदाई और कोकवाले कोयलेके निकालनेका संगठन होगा।

उरालमें एक दूसरा पोटासका प्लांट (कारखाना) और बश्किरियामें एक सोड़ा-कारखानेके निर्माणको पूरा किया जायगा और बश्किरियामें दूसरे सोड़ा कारखानेका कार्य आरम्भ होगा; एक निट्रोजन प्लांट, २ एनिलाईन-रंग-कारखाने, १ पेंट-वार्निश फेक्ट्री और एक प्लास्टिकका कारखाना बनाया जायेगा।

४. दागिस्तान-स्वायत्त-प्रजातन्त्रमें तथा माइकोप और ग्रोज्नीके तलक्षेत्रमें पेट्रोल-उद्योग पूर्णतया पुनः स्थापित कर दिया जायेगा। वोल्गाके क्षेत्रमें पाँच वर्षके कालमें पेट्रोल निकालना २·४ गुना बढ़ाया जायेगा तातार-स्वायत्त-प्रजातन्त्रमें नया पेट्रोल क्षेत्र-विकसित किया जायेगा, सरातो

और कुइबिशेफ़ ज़िलों और उराल, तथा उखूता और सखालिनके पेट्रोल-उद्योगको काफ़ी बढ़ाया जायगा।

वोल्गा-प्रदेशमें स्वाभाविक-गैसकी उपज बढ़ाई जायेगी और उसे मास्कोमें पाइप द्वारा पहुँचाया जायेगा, तथा खुद वोल्गा-प्रदेशमें उसे बिजली पैदा करने, उद्योग तथा घरके काममें लाया जायेगा।

पूर्वी-सिबेरिया, उत्तरी-काकेशस और लेनिन्ग्राद् ज़िलेमें एक विशाल तरल-ईंधन उद्योग तैयार किया जायगा।

५. ७० लाख ८५ हज़ार किलोवात बिजली पैदा करनेकी क्षमता बढ़ाई जायेगी, जिसमें ४० लाख किलोवात पावर-स्टेशन मन्त्रि-विभागके द्वारा संचालित स्टेशनोंका भी सम्मिलित है। जर्मन-अधिकृत प्रदेशमें पावर-स्टेशनों तथा उनके जालको यथापूर्व स्थापित कर दिया जायेगा।

उराल केन्द्रीय ज़िलों और पश्चिमोत्तरमें पन-बिजली स्टेशनोंका बड़े पैमानेपर निर्माण शुरू होगा, जिसमें बड़े और माध्यम पन-बिजली-स्टेशनोंकी क्षमताको ६ लाख ३६ हज़ार किलोवात और छोटे पन-बिजली-स्टेशनोंको ६ लाख १५ हज़ार किलोवात तक बढ़ाया जा सकेगा।

रिबिन्स्क पन-बिजली-स्टेशनको बनाकर पूरा कर दिया जायगा और रिबिन्स्क रिज़र्वायर (महावापी)के निम्न भागोंमें साधारण नौका चलानेकी स्थिति पैदा करनेका प्रबन्ध किया जायगा। वोल्गा और ओकाके नये पन-बिजली-स्टेशनोंका बनाना आरम्भ होगा।

उरालमें पन-बिजली-स्टेशनों, खासकर मध्य और छोटे किस्मके स्टेशनोंके निर्माणमें जल्दीकी जायेगी, जिसमें कि पाँच वर्षके समयमें ३ लाख ४५ हज़ार किलोवातकी क्षमताके साथ काम होने लगे। कामानदीके महापन-बिजली-स्टेशनका पहला भाग और दूसरी नदियोंपर आठ मध्यम-श्रेणीके पन-बिजली-स्टेशन बनाकर चालू कर दिये जायेंगे। ऊफ़ा नदीपर एक पन-बिजली-स्टेशनका निर्माण शुरू होगा और उरालकी छोटी नदियोंपर छोटे पन-बिजली-स्टेशन बनाये जायेंगे।

६. भूगर्भशास्त्रीय सर्वेका हर तरहसे विस्तार किया जायेगा, जिसमें कोयला, पेट्रोल, स्वाभाविक गैस, लोहा, अालमोनियम, ताँबा, राँगा, सीसा, निकल, शीशा, सोना, मोलिब्देनम्, तुंगस्तेन, अबरख, एपिटाइट, अज़्बेस्तो, ग्रेफाइट और सीमेंट तथा काँचके कच्चे मालके बड़े पैमानेपर निकालनेकेलिए व्यापारिक स्नोतोंका पता लगाया जा सके।

क+ख प्रकारके औद्योगिक स्नोतोंकी निम्न प्रकारसे सर्वे की जायेगी—

लोह-पाषाण १ अरब ११ करोड़ ७० लाख टन; मंगानिज़-पाषाण ४० लाख टन; कोयला २२ करोड़ १० लाख टन वार्षिक क्षमताके अन्दाज़से ४८८ उपयुक्त खानोंमें खान खोदना; पेट्रोल ५८०५ कूप-स्थान; स्वाभाविक गैस ६० अरब घनमीतर; अलमोनियम-उद्योगकेलिए बक्साइट २ करोड़ टन; (खादकेलिए) एपीटाइट १४ करोड़ टन; ग्रेफाइट ५० लाख टन; क+ख+च किस्मका अबरख २ लाख २३ हजार टन।

७. सूती कारखानेके उद्योगमें १४ लाख २० हजार अतिरिक्त तकुए चालू होंगे, जिनमें ३ लाख ३५ हज़ार र स फ स रके शत्रु-अधिकृत प्रदेशमें रहेंगे। पश्चिमीयसिबेरियामें सूती-कपड़ा-उद्योगके विकासका काम जारी रहेगा और पूर्वी-सिबेरियामें उसके नये औद्योगिक केन्द्र बनाये जायेंगे।

८. १९४६-५०में प्रजातन्त्रके हल्के और खाद्य उद्योगों, स्थानीय उद्योगों, औद्योगिक सहयोग-समितियों, गृहनिर्माण-सामग्री-उद्योग और स्थानीय उपजके ईंधनके उत्पादनको फिरसे स्थापित करके आगे बढ़ाया जायगा।

प्रजातन्त्रके आधीन उद्योगमें म्युनिस्पल बिजली-पावर-कारखाने १ लाख २६ हज़ार किलोवातकी क्षमता वाले, २६ लाख टन क्षमता वाली कोयलेकी खानें, ३६ हजार टन क्षमतावाली रोलिंग मिलें और सूती कपड़ेके उद्योगमें २ लाख १८ हजार तकुए चालू किये जायँगे।

प्रजातन्त्रके आधीन कारखानों द्वारा औद्योगिक मालकी उपज १६५०में ३४ अरब १० करोड़ रूबल निश्चित की गई है, जिसमें स्थानीय-अधिकारके राजकीय उद्योगों और औद्योगिक सहयोग-समितियों-की उपज १३$\frac{१}{२}$ अरब रूबल होगी।

झीलों और नदियोंका पूरी तौरसे उपयोग किया जायेगा। मास्को-सागर और रिबिन्स्क महावापीमें मूल्यवान किस्मकी मछलियोंको मौसम सहने लायक बनाया जायेगा और वहाँ बड़े पैमानेपर मछली पकड़ना संगठित किया जायगा। तालाबोंमें मछलियों और पन-मुर्गियोंके पालनेकी पुन: स्थापना और युद्ध-पूर्वसे आगे बढ़ानेका प्रबंध होगा।

६. मास्कोके और अधिक आर्थिक तथा सांस्कृतिक विकास, एवं निवासियोंके रहन-सहनमें उन्नति करनेकेलिए नगरके पुनर्निर्माणकी बड़ी योजनाके अनुसार काम जारी रहेगा। ५ वर्षोंमें ३० लाख वर्गमीतर फ़र्श वाले मकान बनेंगे, जिनमें ५$\frac{१}{२}$ लाख वर्गमीतर मास्को-सोवियत् बनायेगी। विद्यमान घरोंकी मरम्मत और सुधार किया जायेगा।

मास्को भूगर्भी रेलके चौथे भागका बनाना जारी रहेगा। नगरके पसेञ्जर-यातायातके साधनोंको बेहतर बनाया जायेगा और अधिक ट्राम-गाड़ियाँ काममें लाई जायेंगी, १ हजार ६० ट्रालीबसों, २ हजार ८०० टेक्सीकी वृद्धि होगी और मोटर बसोंकी संख्या ३००० होगी। उपनगरकी रेलोंको बिजलीसे चलानेका काम जारी रहेगा, और ५ वर्षोंमें नगरके भीतर ३० लाख वर्गमीतर अच्छे किस्मकी सड़कें बनेंगी।

१६४६में सरातोफ़-मास्कोकी स्वाभाविक गैस वाली पाइपलाइन पूरे तौरसे तैयार हो जायेगी और पाँच वर्षोंमें लकड़ीके ईंधनको कम करके उसकी जगह २ लाख इमारतोंमें गैस जलाई जायेगी। सामूहिक घर गरम करनेके प्रबन्धको और बढ़ाया जायेगा और इसके लिये १ लाख १५ हजार किलोवातकी क्षमता वाले ताप और बिजलीके स्टेशन बनेंगे और ७५ किलोमीतर गर्मी ले जाने वाला पम्प बैठाया जायेगा।

१०. लेनिनग्राद्को एक बड़े औद्योगिक सांस्कृतिक नगरके तौरपर पुनः स्थापित किया जायेगा, और अधिक उच्च-यन्त्रोपयोग द्वारा वहाँकी औद्योगिक उपजको युद्धपूर्वके तलपर पहुँचाया जायेगा; जहाज-निर्माण और विशेष तरहकी पेचादा मशीनोंके निर्माणके विकासपर खास तौरसे ध्यान दिया जायेगा। लेनिन्ग्राद्में एक भूगर्भी रेलवे बनानेका काम शुरू होगा और उसकी पहली लाइन चालू होगा।

११. र स फ स र में १६५०में खेतोंकी जमीन ६ करोड़ ६४ लाख हेक्तर होगी, जिसमें ८ करोड़ ४१ लाख हेक्तर कल्खोजका जमीन होगा; अनाज बोनेके ६ करोड़ ८० लाख हेक्तरोंमें ६ करोड़ १० लाख कल्खोजके होंगे; औद्योगिक फसल ६२ लाख हेक्तरमें बोई जायेगी, जिसमें ५६ लाख हेक्तर कल्खोजकी होगा। तर्बूजा, आलू और दूसरी तरकारियाँ ७४ लाख हेक्तरमें बोई जायेंगी, जिसमें ३५ लाख हेक्तर कल्खोजका होगा; चारा व फसलकी जमीन १ करोड़ ७८ लाख हेक्तर होगी, जिसमें कल्खोजकी जमीन १ करोड़ ३७ लाख हेक्तर रहेगी।

१६५०में र स फ स र के शत्रु-अधिकृत प्रदेशमें फसल २ करोड़ ६५ लाख हेक्तरमें होगी, जिसमें २ करोड़ ४६ लाख हेक्तर कल्खोजका होगा। ऊँचे किस्मके अंगूरोंके बाग क्रिमिया और उत्तरी-काकेशसमें पुनः स्थापित करके बढ़ाये जायेंगे। सोची प्रदेशमें चाय और नीबू जातीय-फलके बागोंको बढ़ाया जायेगा।

१६५०के अन्तमें पशुओंकी संख्या निम्न प्रकार होगी; घोड़े ७५ लाख ५५ हजार, जिसमें ६१ लाख ८७ हजार कल्खोजोंके; ढोर ३ करोड़ ५० लाख ८७ हजार जिनमें १ करोड़ ४८ लाख ४० हजार कल्खोज़ोंके; भेड़-बकरियाँ ५ करोड़ ८८ लाख १४ हजार, जिनमें २ करोड़ ८० लाख ६० हजार कल्खोज़ोंकी; सूअर १ करोड़ ५१ लाख ६० हजार जिनमें ६६ लाख ८७ हजार कल्खोज़ोंके।

र स फ स र के शत्रु-अधिकृत प्रदेशमें १६५०के अन्तमें पशुओंकी

संख्या निम्नोक्त होगी:—घोड़े १३ लाख ४८ हजार जिनमें १० लाख २८ हजार कल्खोज़के; ढोर ६१ लाख ५८ हजार, जिनमें ४१ लाख ३१ हजार कल्खोजके; भेड़ बकरियाँ १ करोड़ ५० लाख ८० हजार, जिनमें ८३ लाख ६५ हजार कल्खोजकी; सूअर ५० लाख, जिनमें १८ लाख ६३ हजार कल्खाजके।

१२. भूतपूर्व जर्मन-अधिकृत प्रदेशमें रेल-स्टेशन, नदी-यातायात प्रबन्ध, और नदी और समुद्रके बन्दरगाह पूर्ववत् बना दिये जायेंगे। छोटी नदियोंको बड़े पैमानेपर नाव चलाने और स्थानीय पन-बिजली स्टेशन बनानेके उपयुक्त बनाया जायेगा।

१३. र स फ स र के नगरोंमें राज्य-स्वामिक घरों को बनाकर १९४६-५० में ४ करोड़ ४५ लाख ६५ हजार वर्गमीतर फर्श वाले मकान तैयार होंगे, जिनमें ४२ लाख २८ हजार वर्गमीतर स्थानीय सोवियतोंका होगा। शत्रु-अधिकृत प्रदेशमें राज्य-स्वामिक घर १९४६-५०में १ करोड़ १२ लाख ६१ हजार वर्गमीतर फर्शवाले तैयार होंगे, जिनमें २६ लाख ४३ हजार वर्गमीतर स्थानीय सोवियतोंके होंगे। स्तालिन-ग्राद्, रस्तोफ़-दोनपर, क्रास्नोदर, स्तात्रोपोल, सिम्फेरोपोल, सेवस्तापोल, वोरोनेज़, ओरेल, कुर्स्क, स्मोलेंस्क, कलिनिन, वेलीकीयेलुकी, ब्रयान्स्क, कलूगा, नवगोरद और प्स्कोफ़ जैसे शत्रुद्वारा ध्वस्त नगरोंमें घरों और म्युनिस्पल सुविधाओंको फिरसे कर दिया जायेगा।

१४. साहित्यिक विकास और स्वास्थ्य-रक्षाके क्षेत्रमें मुख्य-मुख्य कर्त्तव्य निम्न प्रकार हैं:

१९५० तक स्कूलोंकी संख्या १ लाख १६ हजार २०३ हो जायेगी, विद्यार्थी १ करोड़ ८२ लाख २० हजार, और अस्पतालोंमें ५ लाख ४५ हजार चारपाइयाँ होंगी।

१५. र स फ स र के भीतरके स्वायत्त-प्रजातन्त्रों, स्वायत्त-जिलों और

स्वायत्त-इलाकोंकी अर्थनीति और संस्कृतिका हर तरहसे और आगे विकास होगा।

१६. सोवियत् राज्य और आर्थिक संस्थायें अपने सभी कामोंमें र स फ स र के नये जिलों और इलाकों—कोइनिग्सबेर्ग (कलिनिनग्राद्) जिला, पेत्‌चंगा (पेत्सामो) इलाका, सखालिन-द्वीपका दक्षिणी भाग और कुराइल द्वीप-समूहपर विशेष ध्यान देना होगा।

(२) उक्रइन सोवियत् समाजवादी प्रजातन्त्र

क्षेत्रफल २,२३,००० वर्गमील जनसंख्या—४,००,००,०००

१७. उक्रइन स स र की औद्योगिक उपजके मुख्य मुख्य अंशोंका योजना १९५०में निम्न प्रकार पूर्ण होगी :—

कच्चा लोहा (टन)	९७,००,०००
फौलाद (टन)	८८,००,०००
कोयला (टन)	८,२१,००,०००
पेट्रोल (टन)	३,२५,०००
बिजली शक्ति (हजार किलोवात)	१,३६,९०,०००
कोक (टन)	१,५५,००,०००
सीमेंट (टन)	२०,६५,०००
धातु कामवाला मशीन टूल	५,९५०
मोटर-गाड़ियाँ	२५,०००
दूरगामी इंजन	१,०००
मालडब्बे (२ धुरीके हिसाबसे)	५५,५००
ट्रेक्टर	२५,०००
लोह-फौलाद मिलोंके यंत्र-साधन	३५,०००
कल्काइन सोडा (टन)	४,४८,०००
सुपरफोस्फेट (टन)	८,६०,०००
नमक (टन)	१९,३०,०००

दानेदार चीनी (टन)	१६,३७,०००
मांस (टन)	२,४१,०००
मक्खन (टन)	४०,०००
मछली (टन)	८०,०००

१८. उक्रइन स स रमें १९४६-५०केलिए ४९ अरब ५० करोड़ रूबल की पूँजी लगाई जायगी, जिसमें ५ अरब ४६ करोड़ ९० लाख प्रजातन्त्रके अधीन वाले कामोंकेलिए हैं।

१९ दोनबास और द्निपेपर जिलोंके लोह-फौलाद कारखाने पुन: स्थापित हो जायेंगे। वहाँ निम्न प्रकारसे कारखाने चालू होंगे—९० लाख टन वार्षिक कच्चे लोहेकी क्षमतावाले ३० धौंकू भट्ठे, ८४ लाख टन फौलादकी क्षमतावाले फौलाद-पिघलाऊ कारखाने, और ६५ लाख टन तैयार रोल किये हुए मालकी क्षमतावाली ५८ रोलिंग मिलें।

१९४६-५०में उक्रइनके पन-बिजली-स्टेशनोंकी क्षमता २५ लाख ७४ हजार किलोवात बढ़ाई जायगी। द्नियेपेरका, लेनिन पन-बिजली स्टेशन फिरसे बन जायगा। कृषि और स्थानीय खर्चकी आवश्यकताकी पूर्तिकेलिए २ लाख ३ हजार किलोवातकी शक्ति वाले छोटे-छोटे पन-बिजली स्टेशन बनाये जायँगे। म्युनिस्पल बिजली-स्टेशन ९५ हजार किलोवात बिजली पैदा करने लगेंगे।

२०. दोनबासका कोयला-उद्योग जल्दीसे पुन: स्थापित करके आगे बढ़ाया जायेगा। उक्रइनके वोरोशिलाफ़ग्राद् जिले और स्तालिनोमें ७ लाख ७५ हजार टन की क्षमता वाली कोयला-खानें चालू हो जायेंगी। द्नियेपर के पश्चिम और उक्रइनके पश्चिमी जिलोंमें कोयला-क्षेत्रमें काम बढ़ाया जायगा।

१९५०में उक्रइनमें ८ लाख ६१ हजार टन कोयला निकाला जायेगा, जिसमें ६० लाख टन भूरा कोयला होगा।

दशावासे कियेफ़ की गैसवाली पाइप-लाइन बनाकर चालू की जायेगी।

२१. उक्रइनके इंजिनियरी कारखानें—मुख्यतः कोयलाखान, धातु-खान और बिजलीके यंत्र-साधनों, भाप-इंजन और रेलके डब्बे, बिजली-के सामान और कृषि-मशीन बनानेवाले कारखाने—फिरसे स्थापित किये जायेंगे।

२२. उक्रइनके रसायनिक कारखाने—जिनमें निट्रेट और सुपर-फ़ोस्फेटके प्लांट भी शामिल हैं—फिरसे बना दिये जायेंगे और स्तानिस्लाव और द्रोगोविच जिलोंमें पोटासकी खानें, और एक नया सुपरफोस्फेट कारखाना, एक रंग-वार्निस कारखाना और एक प्लास्टिक (गटापार्चा) फेक्ट्री बनाई जायेगी।

२३. १९४६-५०में ६७ हजार टनसे अधिक चुकन्दर रोजाना इस्तेमाल करने वाली चीनीकी मिलें पुनः स्थापित या नयी बनाई जायेंगी, साथ ही शराब-कारखाने, खाद्य-तेलकी मिलें और फल-टिन-बन्द कारखाने भी। उक्रइनके आहार-उद्योगको फिर पूर्ववत् स्थापित कर दिया जायेगा और १९५०में इनका मूल्य बढ़कर ४ अरब ४० करोड़ रूबल हो जायगा।

५५ मांस-पैकिंग कारखाने, ३३ बरफ करनेवाले कारखाने, ९७ मुर्गी फारम, ४६ दूध फेक्टरियों और १०० मक्खन और पनीरकी फेक्टरियाँ पुनः स्थापित या नयी बनाई जायेगी।

२४. १९४६-५०में इतनी भू-गर्भ-शास्त्रीय सर्वे की जायेंगी, कि क्रिवोइरोग क्षेत्रमें ४५ करोड़ टन लोह-पाषाण वाले लोहे, ७ करोड़ ५० लाख टन मंगानिज़ लोह-पाषाण, ८ करोड़ टन पोटाश, ७७ लाख टन ग्रेफाइट और ७० लाखटन जिप्समके व्यापारिक खनिज-निधियोंका पता लगाया जा सके। ७ लाख ३० हजार टन क्षमतावाली १३९ कोयला-स्थानोंमें नयी खानोंके काटनेके सम्बन्धमें आरम्भिक काम किये जायेंगे; द्नियेपरके पश्चिमी जिलों और पश्चिमी उक्रइनमें भूरा कोयला निकालनेकेलिये औद्योगिक स्थान

तैयार करनेके वास्ते सर्वे की जायेगी। द्रोगोविच्-जिला और अज़ोफ़् तथा काला सागरके तटोंपर स्वाभाविक गैसकेलिए बड़े पैमानेपर भू-गर्भ शास्त्रीय खोज की जायेगी। उक्रइनके पश्चिमी जिलोंकी पेट्रोल-निधिको बढ़ानेकेलिए ३२५ कूएँ ढूँढ़े जायेंगे और रोम्नी इलाकेमें पेट्रोलके व्यापारिक निधिकी खोज पूरी की जायगी।

२५. उक्रइनमें दूसरी जगहसे लकड़ी लानेकी ढुलाईको कम करनेके-लिए १९४६-५०में वहाँ बे-छिली लकड़ीके उत्पादनकेलिये साधारण योजना ४ करोड़ ७६ लाख घनमीतर निश्चित की जायेगी, लेकिन इस शर्तके साथकी उक्रइनके पश्चिमी जिलोंमें लकड़ी काटना बढ़ाया जाय और पूर्वी जिलोंमें काटनेपर रोक-थाम की जाय। फिरसे जंगल लगानेका काम बड़े पैमानेपर किया जायेगा। १९४६-५०में २ लाख ५२ हजार हेक्तरमें नया जंगल लगाया जायेगा, विरल जंगलोंको घना बनानेका प्रबन्ध किया जायगा और जल्दी बढ़ने वाले वृक्षोंका लगाना आरम्भ होगा।

२६. गृह-निर्माण-सामग्री-सीमेंट, काँच, ईंट, चूना और टाइल—के उत्पादनके कारखानें, धातु जोड़ने, बने बनाये घरों, गृह-निर्माण विभागों, खम्ब जोड़ने वाली, छतकी सामग्रियों और उच्च शक्तिवाली जिप्समके कारखाने पुनः स्थापित या नये बनाये जायेंगे, और गृह-निर्माण-केसामग्रीके कारखानोंकेलिए स्थायी स्थानीय ईंधन बिजलीकी सप्लाई होगी।

२७. प्रजातन्त्रकी अर्थनीतिकेलिए आवश्यक मुख्य चीजोंके उत्पादनमें प्रजातन्त्र और स्थानीय-संख्याओंका अधिकार जिन उद्योगोंमें है, उनके कामको बढ़ाया जायेगा। छोटे औद्योगिक-प्रतिष्ठान बड़ी संख्यामें कायम किये जायेंगे; खासकर १९४६-५०में दोनबास और उक्रइनके पश्चिमी जिलोंमें छोटी कोयला-खानें और ड्रिफ्ट चालू किये जायेंगे, जिनमें ४६ लाख टन कोयलेकी क्षमतावाली खानें, ५० हजार टन ब्रिकेटकी क्षमता

वाले पीट-ब्रिकेट-कारखाने, १३ लाख वर्गमीतर काचकी क्षमतावाले काच-कारखाने, और ६० करोड़ ईंटकी क्षमतावाले ईंटके भट्ठे बनाये जायेंगे। साथ ही रोलिंग मिल और गृह-निर्माण सामग्रीके कारखाने, धातु, लकड़ी, प्रकाश, कपड़ा और आहारके कारखाने भी चालू किये जायेंगे।

१६५०में प्रजातंत्रके अधिकारके उद्योगोंकी उपज ६ अरब २० करोड़ रूबल निश्चित की गई है, जिसमें स्थानीय संस्थाओंके अधिकार तथा औद्योनिक सहयोग-समितियोंके हाथके सरकारी कारखानोंकी उपज ३ अरब १० करोड़ रूबल निश्चित की गई है। फल और तरकारीके मुखौतेको और बढ़ाया जायेगा। झीलों और नदियोंका पूरा उपयोग लिया जायेगा, और तालाबोंका काम भी बढ़ाया जायेगा।

२८. उक्रइन स स रमें फसलकी भूमि १६५०में ३ करोड़ ५ लाख हेक्तर होगी, जिसमें २ करोड़ १३ लाख हेक्तर कल्खोजकी, अनाजकी फसल १ करोड़ ६६ लाख हेक्तर, जिसमें १ करोड़ ४१ लाख हेक्तर कल्खोजके हैं; औद्योगिक फसल २६ लाख हेक्तरमें बोई जायगी, जिसमें कल्खोजका २२ लाख हेक्तर होगी। तरबूजा, आलू और दूसरी तरकारियोंकी खेती २८ लाख हेक्तरमें होगी, जिसमें १० लाख हेक्तर कल्खोजोंका। ५४ लाख हेक्तरमें चाराकी फसल होगी, जिसमें ४० लाख हेक्तर कल्खोजके हैं। चीनी वाले चुकन्दरको ८ लाख ३० हजार हेक्तरमें बोया जायेगा और सूर्यमुखी ८ लाख १ हजार हेक्तरमें। ताप-खेत पुनः स्थापित किये जायेंगे। यूरोपीय किस्मके अंगूरों वाले बागोंके क्षेत्रफलको बढ़ाया जायगा।

४० हजार हेक्तर जमीनसे पानी बहाने और ३० हजार हेक्तर खेतीकी जमीनको सींचनेका प्रबन्ध किया जायेगा; और इस कामको साधारणतया चालू रखनेमें उपयोगी सारे इंजिनियरी कारखानोंको पुनः स्थापित या नव-निर्मित किया जायेगा।

१९५०के अन्तमें पशुओंकी संख्या निम्न प्रकार निश्चित हुई है—घोड़ा २६ लाख २६ हजार, जिनमें १३ लाख ६३ हजार कल्खोजके हैं; पशु १ करोड़ २२ लाख ३० हजार, जिनमें ४७ लाख कल्खोजके हैं; भेड़-बकरियाँ ६७ लाख ८० हजार, जिनमें ४१ लाख कल्खोजकी; सूअर ६६ लाख, जिनमें ३३ लाख कल्खोज़के हैं।

२६. सांस्कृतिक विकास और स्वास्थ्य रक्षाके क्षेत्रमें स्वीकृत प्रधान योजना इस प्रकार है—१९५० तक स्कूलोंकी संख्या २६ हजार ४५ हो जायगी, जिसमें ६३ लाख विद्यार्थी पढ़ेंगे, अस्पतालोंमें चारपाइयोंकी संख्या १ लाख ७३ हजार १ सौ हो जायेगी।

३०. रेल-लाइन, जंकशन और इंजन तथा डब्बेकी मरम्मतके कारखाने पूरी तौरसे पुन:स्थापित कर दिये जायेंगे। नदी और समुद्रका यातायात बढ़ाया जायेगा और जहाजोंकी संख्याको भी काफी बढ़ाया जायेगा। जहाज बनानेके कामको पुन: शुरू किया जायेगा।

नौका-यातायातकेलिए छोटी नदियोंका व्यापक रूपमें उपयोग होगा और उन्हें स्थानीय पन-बिजली स्टेशनके निर्माण और मछली पालनेके विकासकेलिए इस्तेमाल किया जायेगा।

मास्को-खरकोफ़ मोटर-महापथको फिरसे बनाकर पहलेसे भी बेहतर कर दिया जायेगा, और उक्रइन-प्रजातन्त्रका उत्तरी काकेशस और क्रिमिया-के शहरोंसे सम्बन्ध करनेकेलिए मोटर-सड़क बनायी जायेगी।

३१. उक्रइनके नगरोंमें राज्य-स्वामिक घरोंके बनानेकी योजनाके अनुसार १९४६-५०में १ करोड़ ५६ लाख २० हजार वर्गमीतर फर्शवाले मकान बनेंगे, जिनमें ११½ लाख वर्गमीतर स्थानीय-सोवियतों द्वारा बनाये जायेंगे।

शत्रु द्वारा नष्ट किये गाँवों और मजूर-बस्तियोंके घरों और म्युनिसपल सुविधाओंको फिरसे स्थापित करना होगा, इनमें सबसे पहले कियेफ़,

खरकोफ़, चेरनीगोफ़, अदिस्सा, द्निये प्रोपेत्रोव्स्क, स्तालिनो, ज़ाप्रोजेको हाथमें लिया जायेगा।

३२. ल्वोफ़ नगरको उक्रइनका एक प्रधान औद्योगिक केन्द्र बनाना होगा।

ल्वोफ नगरमें एक मोटर-जोड़ कारखाना, एक बिजली-लैम्प-फैक्टरी एक तार-टेलीग्राफ-यंत्र-फेक्टरी, एक काच-कारखाना, एक बनियाइन-कारखाना, एक खाद्य-निर्माण कारखाना तैयार करके चालू कर दिये जायेंगे।

नगरोंके बिजली-पावर-हौसोंको पुनःस्थापित करके शक्तिको और बढ़ा दिया जायगा।

३३. ट्रान्स-कार्पाथिया जिलेके सभी तरहके कारखानोंको तेजीसे पुनः स्थापित और विकसित किया जायेगा। सबसे पहले कृषि, खास करके मेवा अंगूर-बाग, पशु-पालन और मधुमक्खी पालनेको पुनः स्थापित और विकसित किया जायेगा। साथ ही काठका काम, काठ-रसायन, खाद्यके कारखानेको भी बढ़ाया जायेगा। भूरे कोयलेकी खानें संगठित की जायेंगी और रोशनीके नये औद्योगिक कारखाने बनाये जायेंगे। कृषिको मशीन, खाद और कर्ज़ देकर उक्रइनके ट्रान्स-कार्पेथीय जिलेके किसानोंको राज्यकी ओरसे सहायता दी जायेगी।

(३) बेलोरूसिया सोवियत् समाजवादी प्रजातंत्र

(क्षेत्रफल—८६,००० वर्गमील जनसंख्या—१,०३,८६,०००)

३४. बेलोरूसिया सोवियत समाजवादी रिपब्लिक—बेलोरूसिया स स र की औद्योगिक उपजके मुख्य-मुख्य अंशोंकी योजना १६५०में निम्न प्रकार पूर्ण होगी।

बिजली शक्ति (किलोवाट)	६५,००,००,०००
पीट (टन)	४१,६२,०००
धातुके काम वाले मशीन-टूल	४,३२५

ट्रैक्टर	५,०००
सीमेन्ट (टन)	३,२० ०००
खिड़कीके काँच (वर्गमीतर)	५०,००,०००
कटी लकड़ी (घनमीतर)	१,११,००,०००
छिली लकड़ी (घनमीतर)	१८,००,०००
दियासलाई (हजार डिबियों बंडलोंमें)	१५,५०,०००
शराब (१० लिटर)	७६,००,०००
मांस (टन)	४६,०००
मक्खन (टन)	१०,०००
मछली	५,२००

३५. १६४६-५० तक बेलोरूसिया स स र में ६ अरब ६५ करोड़ रूबल पूँजी लगाई जायेगी, जिसमें २ अरब ४२ करोड़ २० लाख रूबल प्रजातन्त्रके आधीन कारखानोंमें लगाई जायगी।

३६. १६ लाख टन वार्षिक क्षमताकी कच्चे कोयले (पीट)की खानें चालूकी जायेंगी। १ लाख ३० हजार टन वार्षिक क्षमतावाला पीट-ब्रिकेट कारखाना बनाया जायेगा।

एक कृषि-मशीन-कारखाना, एक चार हजार पाँच सौ मशीन-टूलोंकी क्षमतावाला मशीन-टूल-कारखाना, १ लाख ८० हजार टनकी क्षमता वाला सीमेन्ट-कारखाना, गोमेल काँच-कारखाना, लकड़ीके कारखाने, लकड़ीके बनावटी फट्टे और दियासलाईके कारखाने फिरसे बनाये या नये सिरेसे खड़े किये जायेंगे। तैयार मकानोंके बनानेवाले ६ लाख वर्गमीतर फर्शके घर बनानेकी क्षमता वाले तीन कारखाने तैयार किये जायेंगे।

एक ट्रैक्टर कारखाना, एक बाइसिकिल कारखाना आरम्भ किया जायेगा। एक मोटर-कारखाना बनना शुरू होगा।

२ लाख ४३ हजार किलोवाटकी शक्ति वाले बिजली-पावर स्टेशन फिरसे बनाये या चालू किये जायेंगे। १६ हजार किलोवाट क्षमता वाले

छोटे-छोटे पन-बिजली स्टेशन बनाये जायेंगे। गोमेल, मोज़िर, ग्रोदो और दूसरे नगरोंके बिजली-स्टेशनोंको फिरसे तैयार कर दिया जायेगा।

३७. प्रजातन्त्रकी अर्थनीतिके विकासकेलिए ४७ हजार किलोवाट—जिसमें १० हजार किलोवाट क्षमतावाले पन-बिजली स्टेशन भी होंगे—क्षमतावाले प्रजातन्त्रकी अधीनताके बिजली-स्टेशन चालू होंगे। प्रजातन्त्रके अधीन १० हजार टनकी क्षमतावाली रोलिंग मिल १० हजार टन क्षमतावाली पाइप-ढलाई मिल, १ लाख ६५ हजार टन क्षमतावाली एक फैक्टरी, सवा अरब ईंट बनानेकी क्षमता वाले पिंजात्रे काम करने लगेंगे।

प्रजातन्त्रकी अधीनतावाले उद्योगोंमें ११५० मशान-टूलकी क्षमता वाले चार मशीन-टूल-कारखाने, एक रेडियो फैक्टरी, एक औजार-फैक्टरी, एक जलीय टर्बाइन बनाने वाला कारखाना, पीट-फैक्टरीके यन्त्र साधनोंके निर्माण करने वाले दो कारखाने, एक बिजलाकी मोटर बनानेवाला कारखाना और जूते बनानेकेलिए पाँच कारखाने चालू होंगे।

फिरसे या नये सिरेसे बनाये १७ मांस पैक करनेके कारखाने, १० मुर्गी-फार्म, शहरकेलिए दूध तैयार करनेवाले ११ कारखाने, दूधको टिनमें बंद करनेवाले दो कारखाने और डेढ़ सौ डेरियाँ होंगी।

१९५०में प्रजातन्त्रकी अधीनतावाले कारखानोंके औद्योगिक मालकी पैदावारका मूल्य २ अरब २० करोड़ रूबल होगा, जिसमेंसे स्थानीय अधिकार वाले राजकीय कारखानों और औद्योगिक सहयोग-समितियोंकी उपज ८५ करोड़ रूबल होगी।

१९४८ तक तालाबोंमें मछली-पोषण आदिका कार्य युद्ध-पूर्व जैसा होने लगेगा। प्रजातन्त्रके पश्चिमी जिलोंकी नदियों और झीलोंका पूरी तरह उपयोग किया जायेगा।

३८. १९५०में ५३ लाख हेक्तर भूमिमें फसल बोई जायेगी, जिसमें साढ़े अट्ठाइस लाख हेक्तर कल्खोजोंके होंगे; ३२ लाख हेक्तरमें अनाजकी

फसल बोई जायगी जिसमें १८ लाख हेक्तर कल्खोज (पंचायती खेती)के होंगे; ३ लाख ७४ हजार हेक्तरमें औद्योगिक फसल बोई जायगी, जिसमें २ लाख १० हजार हेक्तर कल्खोजके होंगे; १० लाख ६० हजार हेक्तरमें तरबूजा, आलू, और दूसरी तरकारियाँ बोई जायेंगी, जिसमें ३ लाख ८६ हजार हेक्तर कल्खोजके होंगे; ६ लाख ६० हजार हेक्तरमें घास-चारेकी फसल बोई जायगी, जिसमें ४ लाख ३५ हजार हेक्तर कल्खोजके होंगे।

खेती लायक २ लाख ७० हजार हेक्तरसे पानी निकालनेका प्रबन्ध किया जायगा और पानी बहानेकी खानों, पानी मोड़नेवाले यन्त्रों और दूसरे कामोंको पुनः स्थापित कर दिया जायगा।

१९५०के अंतमें पशुओंकी संख्या निम्न प्रकार निश्चित है—घोड़े ७ लाख ७० हजार, जिनमें कल्खोजके ३ लाख ३० हजार; ढोर २८ लाख ६० हजार, जिनमें ८ लाख ५२ हजार कल्खोजके; भेड़-बकरियाँ २९ लाख जिनमें ६ लाख कल्खोजकी; सुअर २६ लाख, जिनमें ३ लाख कल्खोजके।

३९. सांस्कृतिक विकास और स्वास्थ्य-रक्षाके क्षेत्रमें मुख्य कार्य निम्न प्रकार हैं—१९५० तक स्कूलोंकी संख्या १२,३७५ हो जायेगी, जिनमें १५ लाख विद्यार्थी पढ़ेंगे। अस्पतालोंमें ३० हजार रोगियोंकेलिए चारपाइयाँ होंगी।

४०. बेलोरूसियाके नगरोंमें राज्य-स्वामिक घरोंमें १९४६-५०के समयमें ३७ लाख वर्गमीतर फर्शके वास-स्थान होंगे, इनमें ६॥ लाख वर्गमीतर स्थानीय सोवियतोंकी ओरसे होंगे। जर्मनों द्वारा ध्वस्त नगरोंमें—सबसे पहले मिन्स्क नगरमें—घरके सुभीते और म्युनिस्पल-सेवाकी पुनः स्थापना हो जायगी।

(४) उजबेकिस्तान सोवियत् समाजवादी प्रजातंत्र

क्षेत्रफल—१,५८,००० जनसंख्या—६२,८२,०००

४१. उजबेक सोवियत् समाजवादी रिपब्लिक—उजबेक स. स, र.

की औद्योगिक उपजके मुख्य अंशोंकी योजना १९५०में निम्न प्रकार पूर्ण होगी :—

फौलाद (टन)	८६,०००
कोयला "	११,३०,०००
पेट्रोल "	१०,६६,०००
बिजली (हजार किलोवात)	२१,३५,०००
सुपरफोस्फेट (टन)	३,००,०००
सीमेंट "	२,७०,०००
सूती कपड़ा (मीटर)	१६,०९,००,०००
रेशमी कपड़ा "	१,४०,००,०००
जूता (जोड़ा)	६१,५०,०००
खाद्य-तेल (टन)	१,७३,०००
दानादार चीनी "	५५,०००
कच्चा मद्य (दस-लितरा)	१३,००,०००
मांस (टन)	२०,०००
मक्खन "	१,९००
मछली "	२२,५००

४२. उजबेक स.स.र.में १९४६–५०में ३ अरब ९० करोड़ रूबल-की पूँजी लगाई जायेगी, जिसमें १ अरब २६ करोड़ ६० लाख रूबल ऐसे कारखानोंमें लगेंगे, जो प्रजातंत्रके अधीन हैं।

४३. ३ लाख ३ हजार किलोवाटकी क्षमता वाले बिजलीके पावर-स्टेशन—जिनमें दो लाख ६६ हजार किलोवाट पन-बिजलीके स्टेशन भी होंगे—बनाकर चालू किये जायेंगे। एक फौलाद-मिल बनाकर तैयार की जायेगी। एक कृत्रिम फाइबर-मिल बनाई जायेगी और दो सुपरफोस्फेट-के कारखाने बनाकर चालू किये जायेंगे। फरगाना-कपड़ा-मिलमें २८ हजार तकुए लगाकर चालू किए जायेंगे और ताशकंदकी कपड़ेकी

मिलोंमें ६० हजार तकुए। कृषि-मशीनके कारखानोंकी कार्य-क्षमता बढ़ाई जायेगी। कपड़ा-मिलकी मशीनोंका उत्पादन संगठित किया जायेगा, और मध्यम तथा छोटी जलीय-टरबाइनों और रसायनिक यंत्र-साधनोंका उत्पादन बढ़ाया जायगा। एक नये निट्रेट-खादका कारखाना, एक तांबेका कारखाना, और एक राँगेका कारखाना बनना शुरू होगा। अंग्रेज कोयला-क्षेत्रमें खान खोदनेका काम तेजीसे किया जायगा।

पेट्रोलके औद्योगिक स्रोतोंको ६६५ नये ट्युब-वेलों द्वारा बढ़ाया जायगा, तुङ्स्तेन त्रिऑक्साइड और स्वाभाविक गंधकके व्यापारिक स्रोतोंको भी बढ़ाया जायगा। अलमालिक ताम्र-पाषाण-क्षेत्रको काम करनेकेलिए तैयार किया जायगा।

४४. प्रजातंत्रकी अधीनता वाले उद्योगोंमें १० हजार ६ सौ किलोवाट म्युनिस्पल बिजली-घर और ३॥ लाख टनकी क्षमताकी कोयला-खानें चालूकी जायेंगी। प्रजातंत्रकी अधीनता वाले कारखानोंकी १६५० में औद्योगिक उपज २ अरब ८ करोड़ रूबल निश्चित की गई है, जिसमें स्थानीय अधिकारके राजकीय कारखानों और औद्योगिक सहयोग-समितियोंकी उपज ५५ करोड़ रूबल होगी। सूखे मेवोंकी उपज काफी बढ़ाई जायगी।

४५. १६५०में ३३ लाख १३ हजार हेक्तर जमीनमें फसल होगी जिसमें २६ लाख ८५ हजार हेक्तर कल्खोजके होंगे; १३ लाख ७१ हजार हेक्तर अनाज बोई जमीनमें १२। लाख हेक्तर कल्खोजके होंगे; ११ लाख ३१ हजार हेक्तरकी औद्योगिक फसलमें कल्खोजका १० लाख ८७ हजार हेक्तर होगा; १ लाख १२ हजार हेक्तर तरबूजा, आलू और दूसरी तरकारियोंके खेतोंमें ७३ हजार हेक्तर कल्खोजोंका होगा; ६ लाख ८५ हजार हेक्तरमें घास-चारा बोया जायेगा, जिसमें ६ लाख हेक्तर कल्खोजोंका होगा।

मेवा और अंगूरके बाद तथा रेशमके कीड़े पालनेमें और उन्नति होगी।

कपासकी उपज बढ़ाई जायगी और उसका खेत बढ़कर ६ लाख ५५ हजार हेक्तर हो जायगा। ४ लाख ६० हजार हेक्तर परित्यक्त और अनुपयुक्त सींचनेकी भूमिको खेतमें परिणत किया जायगा, जिसमें ३ लाख २० हजार हेक्तर में कपास और अल्फाल्फा बोया जायगा। नहरके विकास वाली एक लाख तिहत्तर हजार हेक्तर नई जमीन खेतीकेलिए मिलेगी। इन्तिजाम किया जायेगा कि वर्तमान नहर-सिंचित भूमिकी स्थिति और जल-प्राप्तिको बेहतर बनाया जाय।

१९५०के अंतमें पशुओंकी संख्या निम्न प्रकार निश्चित की गई है—घोड़े ४ लाख ९८ हजार, जिनमें ४ लाख ५८ हजार कल्खोजके; ढोर १७ लाख ६५ हजार, जिनमें ६ लाख ७० हजार कल्खोजके; भेड़-बकरियाँ साढ़े छियानवे लाख, जिनमें पचहत्तर लाख कल्खोजके।

४६. १९४६–५०में उजबेक स.स.र.के शहरोंमें राजकीय इमारतोंकी योजनामें ६ लाख वर्गमीतर फर्शके वासस्थान निश्चित हैं, जिसमें ६० हजार वर्गमीतर स्थानीय सोवियतोंके तरफसे होंगे। ताशकन्दमें ट्रॉली बसकी व्यवस्था जारी होगी और ताशकन्द तथा तिर्मिजमें जल-कलकी कार्यक्षमता बढ़ाई जायगी।

४७. सांस्कृतिक विकास और स्वास्थ्य रक्षाके क्षेत्रमें मुख्य-मुख्य करणीय निम्न प्रकार हैः १९५० तक स्कूलोंकी संख्या बढ़कर ४७४० और छात्रोंकी १०८५००० हो जायगी। अस्पतालोंमें २९६०० रोगियोंकेलिए चारपाइयाँ होंगी।

(५) कजाकस्तान सोवियत् समाजवादी प्रजातंत्र

(क्षेत्रफल—१०,५९,००० वर्गमील जनसंख्या—६१,४६,०००)

४८. कजाक सोवियत् समाजवादी रिपब्लिक—उजबेक स.स.र.की

औद्योगिक उपजके मुख्य अंशोंकी योजना १६५०में निम्न प्रकार पूर्ण होगी :—

फौलाद (टन)	७२,०००
कोयला (")	१,६४,००,०००
पेट्रोल (")	१२,००,०००
बिजली (हजार किलोवाट)	१८,१०,०००
सुपरफॉस्फेट (टन)	२,८०,०००
सूती कपड़ा (मीटर)	१,६१,००,०००
ऊनी कपड़ा (")	२८,८०,०००
जूता (जोड़ा)	६८,००,०००
मोजा (")	१,४४,००,०००
खाद्यतेल (टन)	६७,५००
मांस (टन)	१,००,०००
मक्खन (")	१६,०००
दानेदार चीनी (टन)	७१,०००

४६. १६४६–५०में कजाक स.स.र.केलिए ८ अरब ८० करोड़ रूबल पूँजी लगाना निश्चित किया गया जिसमें ७३ करोड़ ७० लाख रूबल प्रजातंत्रकी अधीनताके कामोंमें लगेगी।

५०. करागन्दा-कोयला क्षेत्रमें ६५ लाख टन क्षमताकी १७ कोयला खानें काम करने लगेंगी। अक्त्यूबिन्स्क क्षेत्रमें २ लाख ७० हजार टन क्षमतावाली चार कोयलाखानें और एकिबास्तुज क्षेत्रमें ६ लाख टन कोयलाकी क्षमता वाली एक खुले काटकी खान काम करेगी। बिजली पैदा करनेकी क्षमतामें ३ लाख ६८ हजार किलोवाटकी वृद्धि होगी, जिसमें १ लाख ४ हजार किलोवाट पनबिजली स्टेशनोंके होंगे। प्रजातंत्रकी अधीनतामें ४ लाख टनकी क्षमता वाली कोयला-खानें काम करने लगेंगी।

कजाक-फौलाद मिलका बनाना पूरा हो जायगा और एक लोहा-फौलाद-कारखानाका बनाना आरंभ होगा।

१९४०की तुलनासे १९५०में तांबेकी उपज २·६ गुना, सीसेकी उपज १·३ गुना होगी; राँगा और एलेक्ट्रोलिटिक तांबेका उत्पादन शुरू होगा। येज़कज़गन-क्षेत्रसे निकले ताम्र-पाषाणकी मात्रा काफी हो जायगी और चिमकन्द-शीशा-कारखानाकेलिए कच्चे मालका मिलना और बढ़ जायेगा।

५ लाख ३० हजार टनकी क्षमतावाला सीमेन्ट कारखाना और करातावकी धातु-पाषाणकी खानें काम करने लगेंगी; विद्यमान सुपर-फोस्फेक्टके कारखानोंकी उपज बढ़ाई जायेगी और एक नया कारखाना खोला जायगा।

प्रजातन्त्रमें मक्खन-विश्लेषण और दुग्धपात्रके उत्पादनका प्रबन्ध किया जायगा। कृषि-मशान-कारखानों भी सातिन्स्ककी चमड़ा-फैक्टरी और अल्मा-अताकी कपड़ा मिलके पूरी क्षमतासे काम करनेका इन्तिजाम किया जायेगा। ८ मांस पैक करने और बर्फ करनेके कारखाने, २०० मक्खन फैक्टरियाँ और २ दूधका टिनमें बंद करने वाले कारखाने बनाकर चालू किये जायेंगे।

१९५०में प्रजातन्त्रकी अधीनतामें चलनेवाले कारखानोंकी उपज १ अरब ३० करोड़ रूबल होगी, जिसमें स्थानीय अधीनता वाले राजकीय उद्योग तथा औद्योगिक सहयोग-समितियोंकी उपज ३७ करोड़ रूबल होगी।

५१. १९४६-५०में अतासूई और करकरालिन्स्क क्षेत्रोंसे १० करोड़ टन लोह-पाषाण, येजकज्गान, इत्र्ज और बोश्चेकुल क्षेत्रोंसे ८ लाख १३ हजार टन तांबेके औद्योगिक स्रोतों, कराताव क्षेत्रसे सीसा, मोलिब्देनम्, तुंगस्तेन, त्रि-ओक्साइड बराइट और फास्फोराइटके औद्योगिक स्रोतों तथा बोरेट और जिप्समकी खाने उत्पादनकेलिए तैयार

होंगी। साढ़े तीन करोड़ टन क्षमतावाली कोयला, खानें ५६ स्थानोंमें—जिनमें करागन्दा-क्षेत्रकी २ करोड़ ३६ लाख टन कोकवाले कोयलेकी खानें भी शामिल हैं—चन्दवक कटाईकेलिए तैयार होंगी। औद्योगिक पेट्रोलके स्रोतोंको १०८० ट्यूब-वेल-स्थानों द्वारा बढ़ाया जायेगा। सोडा-उद्योगकेलिए कच्चे मालकी एक नयी आधार-भूमि तैयार की जायगी।

५२. १९५०में ७२ लाख ८६ हजार हेक्तरमें खेती की जायगी, जिसमें ६० लाख २ हजार हेक्तर कल्खोजोंके होंगे। ५३ लाख ३६ हजार हेक्तरमें अनाज बोये जायेंगे, जिनमें ४६ लाख ८१ हजार हेक्तर कल्खोजोंके, ३ लाख ४० हजार हेक्तरमें औद्योगिक फसलें बोई जायेंगी, जिनमे कल्खोजके ३ लाख १६ हजार हेक्तर; २ लाख ८० हजार हेक्तरमें तरबूजा, आलू और दूसरी तरकारियाँ बोई जायेंगी, जिनमें कल्खोजके १ लाख ५ हजार हेक्तर; १३ लाख ३० हजार हेक्तरमें घास चारेकी फसल बोई जायेगी, जिसमें ६ लाख हेक्तर कल्खोजके होंगे। कपास बोनेके खेत ८५,४०० हेक्तर हो जायेंगे। ऊँचे दर्जेके तम्बाकूकी फसल बढ़ाई जायेगी।

१९५०के अन्त तक पशुओंकी संख्या निम्न प्रकार निश्चित की गई है—घोड़े १५ लाख १६ हजार, जिनमें कल्खोजके ११ लाख ९१ हजार; ढोर ४४ लाख, जिनमें कल्खोजके २३ लाख; भेड़-बकरियाँ १ करोड़ ९० लाख ५० हजार, जिनमें डेढ़ करोड़ कल्खोजोंके; सूअर ३ लाख ९२ हजार, जिनमें कल्खोजोंके २ लाख २ हजार होंगे।

५३. जल-संरक्षण और भी विकसित किया जायेगा। सिंचाईकी जमीनमें नहरका प्रबंध बढ़ाया जायेगा। जिस इलाकेमें घुमंतू चराई होती है, वहाँ पानीका इन्तिजाम किया जायेगा।

करागन्दा और येज्क़जन औद्योगिक क्षेत्रोंके कारखानों और बस्तियोंकेलिए पर्याप्त जलका इन्तिजाम किया जायेगा, नूरा नदीपर समरकन्द जलाशयकी कार्यक्षमता बढ़ाई जायेगी। येज्क़ज्गनमें केन्गिर नदीपर एक जलनिधि बनाई जायेगी।

सिर दरियापर नहरके साथ किज़िल-उर्दाका बाँध शुरू होगा। दो लाख हेक्तर जमीन सींचनेकेलिए नहरें पुनः बनाई जायेंगी। नहरोंके जलका उपयोग अधिक मितव्ययितासे हो, इस बातका प्रबन्ध किया जायेगा।

प्रजातन्त्रके उत्तरी बयाबानी इलाकेमें कल्खोजोंकी सिंचाई वाली भूमिकेलिए खतरेके समय उपयोगार्थ बड़े पैमानेपर छोटी नहरें तैयार की जायेंगी, साथ ही निर्जल इलाकेकी सिंचाईकेलिए छोटी-छोटी जलनिधियाँ बनाई जायेंगी।

५४. रेल-यातायातका काफी विकास किया जायेगा; पाँच वर्षोंमें ६५८ किलोमीतर नई लाइनें और ८०७ किलोमीतर दुहराई लाइनें चालू होंगी।

५५. कज़ाक स. स. र.के शहरोंमें राज्यस्वामिक घरोंके १९४६-५०में २१ लाख ७० हजार वर्गमीतर फर्शके वासस्थान रहनेकेलिए मौजूद होंगे, जिनमें ४५००० वर्ग-मीतर स्थानीय सोवियतों द्वारा तैयार होंगे।

५६. सांस्कृतिक विकास और स्वास्थ्य-रक्षाके सम्बन्धमें मुख्य करणीय निम्न प्रकार है—१९५० तक स्कूलोंकी संख्या ७९८५, छात्रोंकी संख्या ११,३०,००० होगी। अस्पतालोंमें ३४ हजार चारपाइयाँ होंगी।

(६) गुर्जी सोवियत् समाजवादी प्रजातंत्र

(क्षेत्रफल—२७,००० वर्गमील जनसंख्या—३५,४२,०००)

५७. गुर्जी सोवियत् समाजवादी रिपब्लिक—गुर्जी स. स. र.की औद्योगिक उपजके मुख्य अंशोंकी योजना १९५०में निम्न प्रकार पूर्ण होगी :

कच्चा लोहा (टन)	३,३०,०००
फौलाद (")	१,८५,०००

कोयला (")	२४,००,०००
पेट्रोल (")	१,१०,०००
बिजली (हजार किलोवाट)	१३,००,०००
मंगानीज पाषाण (टन)	२०,४० ०००
कोक (टन)	४,५०,०००
मोटर-गाड़ियाँ	१५,०००
धातु कामके मशीन-टूल	१,७००
सीमेन्ट (टन)	१, १५,०००
ऊनी कपड़ा (मीतर ,	३७,६५,०००
रेशमी कपड़ा (")	६८,३०.०००
जूता (जोड़ा)	६५,००,०००
खाद्य तेल (टन)	३,५००
मद्य (दशलित्रा)	१५.५०,०००
चाय (टन)	१७,६००
दानादार चीनी (")	१३,५००
मांस (")	१४,०००
मक्खन (")	१,०००
मछली (")	५,५००

५८. १६४६–५० गुर्जी स० स० र०में ४ अरब १२ करोड़ रूबल पूँजी लगायी जायेगी, जिसमें ५६ करोड़ १० लाख रूबल प्रजातन्त्रके अधीनस्थ कामोंमें लगेगा।

५६. काकेशसमें एक नया लोहा-फौलाद कारखाना बनेगा। ३२ लाख टनकी क्षमतावाली कोयला-खानें कटकर काम करने लगेंगी। १६४६-५०में चियातुरी-क्षेत्रमें ३ करोड़ टन मंगानीज़-पाषाणके औद्योगिक स्रोतोंको काम करनेकेलिए तैयार किया जायगा। २२ स्थानोंमें ६८ लाख टन

क्षमतावाली नई कोयला-खान बनानेकेलिए तैयारी होगी। पेट्रोलके व्यापारिक स्रोतोंमें ३४० ट्यूब-वेलों द्वारा वृद्धि की जायगी।

१ लाख ६६ हजार किलोवाट क्षमताके चार और २१,५०० किलोवाट क्षमताके कितने ही छोटे-छोटे पन-बिजली स्टेशन बनाकर चालू कर दिये जायेंगे।

एक नया इंजन-मरम्मत-कारखाना और एक मोटर-फैक्टरी बनाई जायगी।

६०. प्रजातन्त्रके अधीनस्थ उद्योगोंमें छोटी जलीय टर्बाइनों और चाय तथा मदिरा (अंगूरी)के यन्त्रसाधनोंके उत्पादनका प्रबन्ध किया जायेगा। तौल और नापके औजारोंके उत्पादनके लिये एक फैक्टरी तथा तापसह (काच) बर्तनोंकी एक फैक्टरी बनाई जायेगी, चाय और अंगूरी मदिरा तैयार करनेवाले कारखानोंकी संख्या बढ़ाई जायगी।

१९५०में प्रजातंत्रके अधीनस्थ कारखानोंका औद्योगिक उपज १ अरब १० करोड़ रूबल होगी, जिसमें स्थानीय अधीनताके राजकीय कारखानों और औद्योगिक सहयोग-समितियोंकी उपज साढ़े छब्बीस करोड़ होगी। रेशमी कपड़ेका उत्पादन बढ़ाया जायेगा।

६१. १९५०में ९ लाख ३७ हजार हेक्तरमें फसल बोई जायगी, जिसमें कलखोजका ८ लाख हेक्तर होगा; अनाजकी फसल ७ लाख ४६ हजार हेक्तर, जिसमें कलखोज का ६ लाख २९ हजार हेक्तर; औद्योगिक फसल ४८ हजार हेक्तर, जिसमें ४६ हजार हेक्तर कलखोजी; तरबूजा आलू और तरकारियोंकी फसल ४४ हजार हेक्तर, जिसमें ३० हजार हेक्तर कलखोजकी; घास-चारेकी फसल ९९ हजार हेक्तर, जिसमें ९५ हजार कलखोजकी होगी।

चाय-बागान ५७,५०० हेक्तर तक बढ़ाई जायेगी और उसे खनिज खाद्य पूरी तौरसे दी जायगी। नींबू तथा दूसरे गरम मुल्कोंके फलोंके बाग बढ़ाये जायेंगे। १९४६-५०में नींबू-जातीय फलोंके बाग़ बढ़ाकर

११ हजार हेक्तर किये जायेंगे, जिसमें तीन हजार हेक्तर नारङ्गी और ३ हजार हेक्तर नींबूके बाग होंगे। मेवों और अंगूरके बाग काफी बढ़ाये जायेंगे। आवश्यक तेलहनकी फसलका क्षेत्रफल भी बढ़ाया जायेगा और रेशम-कीड़ा पालनेमें और भी प्रगति होगी। गुर्जीके पूर्वी भागमें तम्बाकू-की फसलका विकास किया जायगा।

कोलचिसकी निम्न भूमिके सुखानेका काम जारी रहेगा और २० हजार हेक्तर कृषि-उपयोगी जमीन बनाई जायेगी। नहरका फैलाव बढ़ाया जायेगा, और अयामेत, दोग्लौरिस वेली, कोख्व, और टोयोंस-प्रकाली नहरोंके बननेका काम पूरा हो जायगा। समूगोरी नहर और पन-बिजली स्टेशनोंके निर्माणका कार्य आरंभ होगा।

१९५०में पशुओंकी संख्या निम्न प्रकार निश्चित की गई : घोड़े १ लाख २० हजार, जिनमें ४७ हजार कल्खोजके; ढोर १७ लाख ४४ हज़ार, जिनमें ७ लाख ३० हजार कलखोजके; भेड़-बकरियाँ २६ लाख, जिनमें १८ लाख कल्खोजकी; सूअर ७ लाख ११ हज़ार, जिनमें ६१ हज़ार कल्खोजके।

६२. गुर्जी स. स. र.के नगरोंमें राज्यस्वामिक घरोंकी योजनानुसार १९५०में ७ लाख ३२ हजार वर्गमीतर फर्शका वासस्थान तैयार होगा, जिसमें ३५ हजार वर्गमीतर स्थानीय सोवियतोंकी तरफसे तैयार होगा। त्विलिसि (तिफलिस), कुतइसी और वातुमीकी जलकलोंका विस्तार किया जायगा। वलचौरी जलकल-जलनिधिका निर्माण पूरा कर दिया जायगा।

६३. १९५० तक स्कूलोंकी संख्या बढ़ कर ४३५३ और विद्यार्थियोंकी छ लाख ४८ हजार हो जायेगी। शहर और दीहातके अस्पतालोंमें १७९०० चारपाइयाँ रोगियोंकेलिए होंगी। गुर्जी स. स. र.के स्वास्थ्य-सदन पुनः स्थापित हो जायेंगे।

(७) अजुर्बाइजान सोवियत् समाजवादी प्रजातंत्र

(क्षेत्रफल—३३,००० वर्गमील जनसंख्या ३२,१०,०००)

७४. आजुर्बाइजान सोवियत् समाजवादी रिपब्लिक—आजुर्बाइजान स० स० र०—की औद्योगिक उपजके मुख्य अंशोंकी योजना १६५०में निम्न प्रकार पूर्ण होगी—

फौलाद (टन)	१,७८,०००
पेट्रोल (टन)	१,७०,००,०००
बिजली (हजार किलोवात)	२५,६०,०००
बिजली मोटर (सौ किलोवातसे ऊपर)	८००
सीमेन्ट (टन)	३,६५,०००
सूती कपड़ा (मीतर)	५,७२,५० ०००
ऊनी कपड़ा (”)	११,५५,०००
रेशमी कपड़ा (”)	२३,४५,०००
मोजा (जोड़ा)	२,६२,५०,०००
जूता (”)	५१,५०,०००
खाद्यतेल (टन)	११,०००
नमक (”)	१,३२,०००
अगूरी मदिरा (दसलित्रा)	१४,००,०००
मांस (टन)	१६,०००
मक्खन (”)	१,५००
मछली (”)	२३,६००

६५. आजुर्बाइजान स. स. र.में १६४६—५०में ५ अरब ६० करोड़ रूबल पूंजी लगाई जायेगी, जिसमें ५७ करोड़ ६० लाख रूबल प्रजातंत्रके अधीनस्थ कामोंमें लगेंगे।

७६. प्रजातंत्रके पेट्रोलवाले इलाकेमें बड़े व्यापक रूपसे बर्मा-खोदाई

और भू-अनुसन्धानका कार्य किया जायगा। १९४६-५०में २,६६० कूप-स्थानोंमें औद्योगिक पेट्रोलके स्रोत निश्चित किये जायेंगे और अतिरिक्त उच्च उपजवाले तेल-स्तरोंके लिये बाकू, किरोवाबाद और कुराक इलाकोंमें परीक्षार्थ खुदाइयाँ होंगी। एक पाइप रोल करने वाला कारखाना खोला जायेगा और पेट्रोल-मशीन-कारखानेका पुनर्निर्माण पूरा हो जायगा।

दश्केसन क्षेत्रोंकी लोह-पाषाण खानें और जागिलक क्षेत्रकी आलूनाइट खानें चालू हो जायेंगी।

६७. बाकू इलाकेमें ताप और बिजलीके स्टेशनोंकी क्षमता बढ़कर १ लाख ६५ हज़ार किलोवाट हो जायगी। बाकू तेल उद्योगको काफी बिजली देने और अनाजकी खेती बढ़ाने तथा काकेशसमें कपास की खेती उन्नत करनेकेलिए बड़े पैमानेपर मिंगेचारकी बिजली-नहर-योजनापर काम होगा। १९५०में उसका पहला भाग चालू हो जायगा।

६८. प्रजातन्त्रके अधीनस्थ उद्योगोंमें एक कृषि-मशीन-फैक्टरी, एक मोटरगाड़ी-मरम्मत कारखाना, एक चीनी-बर्तन-फैक्टरी, एक कांच-कारकारखाना, ईंट और टाइलके कारखाने, गृहनिर्माणके जिप्सम-ब्लॉक और मकानकेलिए चीनी बर्तनकी चीजें बनानेका एक प्लान्ट (कारखाना) बनकर चालू हो जायेंगे।

प्रजातन्त्रके अधीनस्थ कारखानोंकी औद्योगिक उपज १९५०में १ अरब १० करोड़ रूबल होगी, जिसमें स्थानीय अधिकारके राज्य-उद्योगों और औद्योगिक सहयोग-समितियोंकी उपज साढ़े पचीस करोड़ रूबल होगी।

६९. १९५०में १२ लाख १६ हजार हेक्टरमें फसल बोई जायगी, जिसमें कल्खोजके ११ लाख ५२ हजार हेक्टर होंगे; अनाजकी फसल ८ लाख २५ हजार हेक्तर, जिसमें कल्खोजके ७ लाख ९० हजार होंगे; औद्योगिक फसल १ लाख ८४ हजार हेक्तर, जिसमें १ लाख ५५ हजार

हेक्तर कपासकी खेतीकेलिए। तरबूजा, आलू और तरकारियोंकेलिए ५४,००० हेक्तर, जिसमें कल्खोजके ४५ हजार हेक्तर; घ.स-चारेकी फसल १ लाख ५३ हजार हेक्तर, जिसमें कल्खोजके १ लाख, ४० हजार हेक्तर होंगे।

मूगन, शिरवान, और मीलकराबख़के बयाबानोंमें नहरकी सिंचाई और खेतकेलिए जमीन निकालनेका काम बढ़ेगा। १९४६-५०में १ लाख १२ हजार हेक्तर नहरसे सींची नई जमीन खेतके रूपमें परिणत की जायेगी।

बाकू नगरके निकटवर्ती क्षेत्रमें तरकारी, आलू और सदाबहार फसलोंकी खेती बढ़ाई जायेगी। स्तालिन समूर-दिविचिन नहरके इलाकेमें नहर-सिंचित भूमिको बढ़ाया जायेगा। लेन्कोरान् इलाकेमें मेवा-अगूरके बागों तथा गरम मुल्कोंके फलोंका क्षेत्र बढ़ाया जायेगा। रेशम-कीड़ा-पालन उन्नत किया जायेगा। चाय और तम्बाकूके क्षेत्रको बढ़ाया जायेगा और फसलकी उपजमें वृद्धि की जायेगी।

१९५०के अन्तमें पशुओंकी संख्या निम्न प्रकार निश्चित है: घोड़े १ लाख ३१ हजार, जिनमें ९५००० कल्खोजके; ढोर १३ लाख ७१ हजार, जिनमें ७ लाख १० हजार कल्खोजके; भेड़-बकरियां ४१ लाख ४० हजार, जिनमें कल्खोजकी साढ़े छब्बीस लाख; सूअर ८८ हजार, जिनमें ३८ हजार कल्खोजके।

७०. आजुर्बाइजान स. स. र.के शहरोंमें राज्यस्वामिक घरोंकी योजनासे १९४६-५०में ६ लाख १० हजार वर्गमीतर वासस्थान तैयार होंगे, जिनमें स्थानीय सोवियतोंकी तरफसे २६ हजार वर्गमीतर बनेंगे। बाकूकी दूसरी जलकल और किरोवाबादकी जलकल बनकर तैयार हो जायेगी।

७१. सांस्कृतिक विकास और स्वास्थ्य-रक्षाके क्षेत्रमें मुख्य करणीय निम्न प्रकार है: १९५० तक स्कूलोंकी संख्या बढ़कर ३३५९ और छात्रों-

की संख्या ५,६६,००० होगी। शहर और दीहातके अस्पतालोंमें रोगियोंके-लिए १६,६०० चारपाइयाँ होंगी।

(८) लिथुवानिया सोवियत् समाजवादी प्रजातंत्र

(क्षेत्रफल—२८,००० वर्गमील जनसंख्या—२८,८०,०००)

७२. लिथुवानिया सोवियत् समाजवादी रिपब्लिक (लिथुवानिया स. म. र.) की औद्योगिक उपजके मुख्य अंशोंकी योजना १९५०में निम्न प्रकार होगी।

बिजली (हज़ार किलोवात)	१,६०,०००
पीट (टन)	८,२२,०००
खिड़कीका काँच (वर्गमीतर)	७,००,०००
कटी लकड़ी (घनमीतर)	३०,००,०००
कागज (टन)	१७,०००
मक्खन (”)	१२,०००
मांस (”)	२८,०००
दानेदार चीनी (”)	२५,०००
अल्काहल (दश लित्रा)	५,००,०००
मछली (टन)	१५,०००

७३. लिथुवानिया स.स.र.केलिए १९४६-५०में १ अरब ५३ करोड़ ५० लाख रूबलकी पूँजी लगाई जायेगी, जिसमें प्रजातंत्रके आधीन कामोंमें ६६ करोड़ रूबल लगाये जायेंगे।

७४. पीट (कच्चा कोयला)का उद्योग पुनः स्थापित किया जायेगा। नई खानें तैयार की जायेंगी। पीट निकालनेके कामको यंत्रचालित किया जायगा। १९४६-५०में ८३ हजार किलोवातके पावर-स्टेशन पुनः स्थापित करके चालू किये जायेंगे। एक धातु-बर्तन-कारखाना, एक कृषि-

मशीन-कारखाना, एक सीमेन्ट कारखाना, एक ऊनी मिल, एक सूती कपड़ा मिल, एक चमड़ा फैक्टरी और मांस पैक करने-बरफ करनेका एक प्लान्ट पुनः स्थापित करके चालू कर दिये जायेंगे। मक्खन-मलाईके सभी कारखाने १६४६-५० तक पुनःस्थापित हो जायेंगे। प्रजातंत्रके अधीनस्थ कारखानोंकी औद्योगिक उपज १६५०के ६० करोड़ रूबलकी होगी, जिसमें स्थानीय अधीनता और औद्योगिक सहयोग-समितियोंके राजकीय उद्योगोंकी उपज साढ़े बारह करोड़ रूबल होगी।

७५. लिथुवानिया स.स.र.में १६५०में २५ लाख हेक्तरमें फसल बोई जायेगी, १६ लाख हेक्तर अनाजकी फसल, १ लाख २२ हज़ार हेक्तर औद्योगिक फसल, २ लाख ३४ हजार हेक्तर तरबूजा, आलू, और दूसरी तरकारियोंकी फसल, ५ लाख ५० हजार हेक्तर घास-चारेकी खेती होगी।

१६५०के अंत तक पशुओंकी तादाद निम्न प्रकार निश्चित की गई है: घोड़े ४६०,०००; ढोर १०,५५,०००; भेड़-बकरियाँ ६,३०,०००; और सूअर ११,००,०००।

७६. सांस्कृतिक विकास और स्वास्थ्य-रक्षाके क्षेत्रमें निम्न करणीय निर्धारित हुए हैं: १६५० तक स्कूलोंकी संख्या ३,१६६, विद्यार्थियोंकी संख्या ३,६०,००० होगी; अस्पतालोंमें रोगियोंकेलिए ६,००० चारपाइयाँ होंगी।

७७. लिथुवानिया स.स.र.के शहरोंमें राज्यस्वामिक घरोंकी योजनाके अनुसार १६४६-५०में ६,६७,००० वर्गमीतर फर्शके वास स्थान निर्मित होंगे, जिनमें ३ लाख वर्गमीतर स्थानीय सोवियतों द्वारा तैयार होंगे। जर्मनों द्वारा ध्वस्त विलेनुस, कउनस, क्लइपेदा, सिअउ-अलिअइ, और पेनेवेजिस नगरोंके निवासों और म्युनिस्पल सुविधाओंको पुनः स्थापित कर दिया जायेगा।

(६) मोल्दाविया सोवियत् समाजवादी प्रजातंत्र

(क्षेत्रफल—१३,००० जनसंख्या २२,००,०००)

७८. मोल्दाविया सोवियत् समाजवादी रिपब्लिक—मोल्दाविया स.स.र.की औद्योगिक उपजके मुख्य अंशोंकी योजना १६५० तक निम्न प्रकार होगी :

बिजली (हजार किलोवात)	६०,०००
कटी लकड़ी (घनमीतर)	७०,०००
जूता (जोड़ा)	१४,५०,०००
मोज़ा (जोड़ा)	७८,३०,०००
अंगूरी मदिरा (१० लितरा)	३०,००,०००
टिनबन्द फल आदि (डिब्बा)	६,५०,००,०००
खाद्य तेल (टन)	२५,०००
मक्खन (")	१,१००
मांस (")	१०,५००
दानेदार चीनी (")	१४,०००
मछली (")	१,५००

७६. मोल्दाविया स.स.र.केलिए १६४६-५०में १ अरब २४ करोड़ ५० लाख रूबल पूँजी लगाई जायेगी, जिसमें प्रजातन्त्र-अधीनस्थ कामोंमें ४७ करोड़ ३० लाख रूबल लगेंगे।

८०. कोयला, पेट्रोल और स्थानीय गृह-निर्माण-सामग्रीकेलिए सर्वे और भू-अनुसंधानका प्रबन्ध किया जायेगा। १६४६-५०में १५ लाख टनके जिप्समके औद्योगिक स्रोतोंकी सर्वे की जायेगी।

४ हजार किलोवातकी क्षमताका एक ताप-बिजली-कारखाना पुन: स्थापित कर दिया जायगा, और ६ हजार किलोवातकी क्षमताका एक नया पन-बिजली स्टेशन बनाया जायेगा। ४ हजार किलोवात क्षमता

तकके छोटे-छोटे पन-बिजली स्टेशन बनाये जायेंगे। १ लाख टन क्षमता-का एक सीमेंट कारखाना, १ करोड़ ८२ लाखकी क्षमता वाले ईंटेके कारखाने, १० हजार टनकी क्षमताका एक जिप्सम् कारखाना और मशीन मरम्मतके कारखाने भी चालू किये जायँगे।

८१. टिन बन्द करनेका उद्योग और सूखे मेवोंका उत्पादन पुनः स्थापित करके बढ़ाया जायेगा। रिब्नितज़ा चीनी मिल पूर्णतया पुनः स्थापित कर दी जायेगी। ४० लाख दशलित्रा अंगूरी मदिरा वार्षिक क्षमतावाले २६ पुराने और ४ नये मदिरा-कारख़ाने पुनः स्थापित और नव-निर्मित किये जायेंगे। प्रजातन्त्रमें औद्योगिक ढंगपर अंगूरी मदिरा बनानेके सुभीते पैदा किये जायँगे, और इस अभिप्रायसे शम्पेन बनानेका एक प्लांट, ब्रान्डी चुआनेका एक कारखाना और भोजोपयोगी मदिराके उत्पादनके लिये एक प्रतिष्ठान बनाया जायगा। बोतल बनानेका एक कारखाना बनेगा और तिरस्पोलकी वर्कशाप पुनर्निर्मित कर दी जायेगी।

प्रजातन्त्रके अधीनस्थ कारख़ानोंको औद्योगिक उपज १९५०में ४० करोड़ रूबल निश्चित की गई है, जिसमें स्थानीय अधीनता तथा औद्योगिक सहयोग-समितियोंके कारख़ानोंकी उपज ११ करोड़ ३० लाख रूबल होगी।

८२. द्नियेस्तेर नदीको नावचालनोपयोगी बना दिया जायगा, और स्वयंचालित तथा खींचकर ले जाने वाले पोतोंको बनानेकेलिए जहाजी कारखानें बनाये जायेंगे।

८३. १९५०में मोलदाविया स.स.र.में २० लाख २० हजार हेक्तर-में फसल बोई जायेगी, जिसमें १५ लाख ३५ हजार हेक्तरमें अनाजकी फसल, २ लाख ७३ हजार हेक्तरमें औद्योगिक फसल, ८२ हजार हेक्तरमें तरबूजा, आलू और दूसरी तरकारियाँ, और १ लाख ३० हजार हेक्तरमें घास-चारेकी फसल बोई जायेगी।

१९५०के अन्त में पशुओंकी संख्या निम्न प्रकार निश्चित है : घोड़े २ लाख ३० हजार ; ढोरे ७ लाख ; भेड़ बकरियाँ १६ लाख ; और सूअर ३ लाख ८० हजार।

फल, बेरी (मकोय जैसे फल), और अंगूरके बगीचे पुनः स्थापित किये जायेंगे और फल तथा अंगूरकी बहुसंख्यक नर्सरियाँ स्थापित की जायेंगी। करागाश नहरको पुनः निर्मित कर दिया जायगा।

८४. सांस्कृतिक विकास और स्वास्थ्य-रक्षाके क्षेत्रमें निम्न करणीय निश्चित है : १९५० तक स्कूलोंकी संख्या बढ़कर १,६२०, और विद्यार्थियोंकी संख्या ४ लाख २२ हजार हो जायेगी। अस्पतालोंमें ६,६०० रोगियोंकी चारपाइयाँ होंगी।

८५. शत्रुओं द्वारा ध्वस्त नगरोंके घरों, खासकर किशिनेफ़ और तिरस्पोलमें, घरोंकी मरम्मत और नव-निर्माण किया जायगा। मोल्दाविया स.स.र.के शहरोंमें १९४६-५०में राज्य-स्वामिक-घरोंका ४ लाख ९८ हजार वर्गमीतर फर्शका वासस्थान तैयार हो जायेगा, जिसमें स्थानीय-सोवियतों द्वारा १ लाख ७५ हजार वर्गमीतर तैयार होगा।

(१०) लतविया सोवियत् समाजवादी प्रजातन्त्र

(क्षेत्रफल—२५,००० जनसंख्या—१९,७१,०००)

८६. लत्विया सोवियत् समाजवादी रिपब्लिक—लतविया स. स. र. की औद्योगिक उपजके मुख्य अंशोंकी योजना १९५० तक निम्न प्रकार पूर्ण होगी :

बिजली (हजार किलोवात)	२,७५,०००
पीट (टन)	५,६४,०००
कागज (")	३४,०००
कटी लकड़ी (घनमीतर)	४५,००,०००
खिड़की-काँच (वर्गमीतर)	६,००,०००

सीमेंट (टन)	२,७०,०००
सूती कपड़ा (मीतर)	२,५०.००,०००
जूता (जोड़ा)	१६,६०,०००
मक्खन (टन)	१८,०००
मांस (”)	२८,०००
दानेदार चीनी (”)	३४,०००
अलकाहल (१० लितरा)	१७,००,०००
मछली (टन)	२०,०००

८७. लतविया स० स० र०के लिए १९४६-५०में २ अरब ५ करोड़ रूबल पूँजी लगाई जायगी, जिसमें ६६ करोड़ ८० लाख रूबल प्रजातन्त्रके अधीनस्थ कामोंमें लगाया जायेगा।

८८. पीट निकालनेका काम पुनः स्थापित कर दिया जायेगा, नयी खानें संगठत की जायेंगी और ७० हजार टन ब्रिकेटकी क्षमतावाले पीट-ब्रिकेट प्लांट बनाये जायेंगे।

८२ हजार किलोवातके बिजली-स्टेशन पुनः निर्मित करके चालू कर दिये जायेंगे।

८९. एक गाड़ी बनानेका कारखाना, एक जहाज मरम्मत कारखाना, एक रेलवे इंजन और डब्बा मरम्मतका कारखाना, “लाल धातु” कारखाना, सीमेंट मिल, एक फ्लेक्स-कताई, मिल, एक सुपर-फोस्फेट प्लांट, मांस पैक तथा बरफ़ करनेके कारखाने, दूध तैयार करनेके प्लान्ट और मलाई-मक्खनके कारखाने पुनः बनाकर चालू कर दिये जायेंगे।

प्रजातन्त्रके अधीनस्थ कारखानोंकी औद्योगिक उपज १९५०में ८७ करोड़ रूबल होगी, जिसमें स्थानीय-अधीनता तथा औद्योगिक सहयोग-समितियों वाले राजकीय-कारखानोंकी उपज २७ करोड़ २० लाख रूबल होगी।

भुनी और शोरबावाली स्प्रातमछलीका उत्पादन बड़े पैमानेपर बढ़ाकर १९४८ तक युद्ध-पूर्वके परिमाणमें कर दिया जायेगा। बाल्तिकमें हेरिंग

और काड मछलियोंका मारना एक कर्मठ-उद्योगके तौरपर संगठित किया जायगा।

६०. लत्विया स० स० र०में १९५०में खेती १९ लाख ६६ हजार हेक्तरमें होगी, जिसमें अनाजकी फसल ११ लाख ५ हजार हेक्तर, औद्योगिक फसल ६६ हजार हेक्तर, तरबूजा, आलू तथा दूसरी तरकारियाँ १ लाख ५५ हजार हेक्तर और घास-चाराकी फसल ६ लाख ४० हजार हेक्तरमें होगी।

१९५०के अन्त तक पशुओंकी संख्या निम्न प्रकार निश्चित है: घोड़े ४,०५,०००; ढोर ११,४०,०००; भेड़-बकरियाँ ६,२०,०००; और सूअर ६,००,०००।

६१. सांस्कृतिक विकास और स्वास्थ्य-रक्षा-क्षेत्रमें निम्न करणीय हैं: १९५० तक स्कूलोंकी संख्या बढ़कर १,५९८; और विद्यार्थियोंकी संख्या २,७५,००० हो जायगी। अस्पतालोंमें ११,८०० चारपाइयाँ होंगी।

६२. लतविया स. स. र.के शहरोंमें राज्य-स्वामिक घरोंकी योजनाके अनुसार १९४६ ५०में ७,२०,००० वर्गमीतर फर्शवाले वासस्थान तैयार होंगे, जिसमें स्थानीय सोवियतों द्वारा ३ लाख वर्गमीतर बनाया जायेगा।

दुश्मन द्वारा ध्वस्त रीगा, वेन्त्सपिल्स, येल्गवा और लीयेपाया शहरों-में घरोंका फिरसे बनाना और म्युनिसिपल सुविधाओंको पूर्ववत् करनेका काम पूरा किया जायेगा।

(११) किरगिजिस्तान सोवियत् समाजवादी प्रजातन्त्र

(क्षेत्रफल—७८,००० जनसंख्या—१५,००,०००)

६३. किरगिज सोवियत् समाजवादी रिपब्लिक—(किरगिज स० स० र०)की औद्योगिक उपजके मुख्य अंशोंकी योजना १९५० तक निम्न प्रकार होगी:

कोयला (टन)	१६,००,०००

पेट्रोल (”)	८०,०००
बिजली (हजार किलोवात)	१,८०,०००
सूती कपड़ा (मीतर)	६,६००००
रेशमी कपड़ा (”)	६,२०,०००
ऊनी कपड़ा (”)	५,२०,०००
मोजा (जोड़ा)	३५,५०,०००
जूता (”)	६,२०,०००
चीनी (टन)	७५,०००
मांस (”)	१७,०००
मक्खन (”)	१,४००

६४. किरगिज स० स० र०के लिये १६४६-५०में १ अरब २० करोड़ रूबलकी पूंजी लगाई जायेगी, जिसमें प्रजातन्त्रके अधीनस्थ कामोंमें ३३ करोड़ ७० लाख रूबल लगेंगे।

६५. ३८ हजार किलोवातकी क्षमतावाले बिजली स्टेशन, ८ लाख २५ हजार टनकी क्षमतावाली कोयला-खानें, १० हजार टनकी क्षमतावाली एक कपास ओटनी मिल बनकर चालू हो जायेंगी। एक बोरा कारखाना, एक कताई मिल, ३० हजार टनकी क्षमताका एक सीमेंट कारखाना और एक मांस पैक करनेका कारखाना बनाया जायेगा। कंत—रिबाचिये रेलवे लाइन बनाकर पूरी कर दी जायेगी। प्रजातन्त्रके अधीनस्थ उद्योगों में १२ हजार किलोवात्की क्षमताका एक पन-बिजली स्टेशन, और १ लाख २५ हजार टन क्षमताकी कोयला-खानें चालू की जायँगी।

प्रजातन्त्रके अधीनस्थ कारखानोंकी औद्योगिक उपज १६५०में ३६ करोड़ रूबल निश्चित की गई है, जिसमें स्थानीय अधीनता तथा औद्योगिक सहयोग-समितियोंसे चालित राजकीय उद्योगोंकी उपज साढ़े सात करोड़ रूबल होगी।

६६. १६४६-५०में ५५ लाख टनकी क्षमतावाले कोयलेके स्थानोंको

काम करनेकेलिए तैयार किया जायगा, और सीसा, पारा, सुरमा, स्वाभाविक गन्धक, और जिप्समके औद्योगिक स्रोतोंका पता लगाया जायेगा।

६७. १६५०में ११ लाख २ हजार हेक्तरमें फसल बोई जायगी, जिसमें कल्खोजके ६ लाख ४६ हजार हेक्तर होंगे; अनाजकी फसल ७ लाख ४ हजार हेक्तरमें, जिसमें ६ लाख २० हजार कल्खोजकी; औद्योगिक फसल १ लाख ८ हजार हेक्तर, जिसमें कल्खोजके ६६ हजार हेक्तर; तरबूजा, आलू और दूसरी तरकारियाँ २६ हजार हेक्तर, जिसमें २० हज़ार हेक्तर कल्खोजकी; घास-चारेकी फसल २ लाख ५४ हजार हेक्तर, जिसमें २ लाख १० हजार हेक्तर कल्खोजकी; कपासकी खेती ५२ हजार हेक्तरमें होगी, ऊँचे दर्जे तम्बाकू और अंगूरका क्षेत्र बढ़ाया जायगा।

१६५०के अन्तमें पशुओंकी संख्या निम्न प्रकार निश्चित है : घोड़े ४,६०,००० जिसमें कल्खोजके ४,३०,०००; ढोर ५,६०,००० जिसमें कल्खोजके २,६०,०००; भेड़-बकरियाँ ४३,२,००० जिसमें कल्खोजकी ३३,२,०००; और सूअर ६०,०००, जिसमें कल-खोजके २०,०००।

कासनोरेच्ये नहरका काम पूरा हो जायेगा और ओतुजअलिरके सींचनेका काम हाथमें लिया जायेगा। आर्तो-ताकोई जलनिधि और महाचू नहरके निर्माणको बढ़ाया जायगा। १६४६-५०के समयमें २२ हजार हेक्तर सींची जमीन बढ़ाई जायेगी।

६८. किरगिज स० स० र० के नगरोंमें राज्य-स्वामिक-घरोंके योजनानुसार १६४६-५०में २,१५,००० वर्गमीतर फर्शके वासस्थान तैयार होंगे, जिनमें स्थानीय-सोवियतोंके बनाये २५ हजार वर्गमीतर होंगे। फ्रुंजे नगरमें एक जल-कल सीवेरेज (पाखाना-मोरी)-व्यवस्था और एक ट्रोली-बस-लाइन बनकर तैयार होगी।

६६. सांस्कृतिक विकास और स्वास्थ्य-रक्षाके क्षेत्रमें निम्न लिखित मुख्य करणीय हैं: १६५० तक स्कूलोंकी संख्या १,५८५ और विद्यार्थियोंकी २,७८,००० हो जायेगी। अस्पतालोंमें ७,२०० चारपाइयाँ होंगी।

(१२) ताजिक सोवियत् समाजवादी प्रजातन्त्र

(क्षेत्रफल—५५,००० वर्गमील जनसंख्या—१४,८५,०००)

१००. ताजिक सोवियत् समाजवादी रिपब्लिक (ताजिक स. स. र.)की औद्योगिक उपजके मुख्य अंशोंकी योजना १६५० तक निम्न प्रकार होगी:

कोयला (टन)	४,४०,०००
पेट्रोल (")	६०,०००
बिजली (हजार किलोवात)	१,८०,०००
सीमेंट (टन)	१५,०००
सूती कपड़ा (मीतर)	१,७८,००,०००
रेशमी कपड़ा (")	५१,००,०००
मोजा (जोड़ा)	४१,४०,०००
जूता (")	१३,७०,०००
खाद्य तेल (टन)	१०,०००
मांस (")	८,३००

१०१. ताजिक स० स० र०केलिए १६४६-५०में १ अरब २० करोड़ रूबलकी पूँजी लगाई जायेगी, जिसमें प्रजातन्त्रके अधीनस्थ कामोंमें ३१ करोड़ ८० लाख रूबल लगेंगे।

१०२. २८ हजार किलोवातके बिजली पावर-स्टेशन—जिसमें २४ हजार किलोवातके पन-बिजली स्टेशन—बनाकर चालू किये जायँगे। स्तालिनाबाद सूती कपड़ा-मिलकी क्षमताको १८,५०० तकुओं तक बढ़ाई जायेगी। मशीन-मरम्मत-कारखाना और दो मक्खन-मलाई कारखानोंको बनाकर चालू किया जायगा। एक तानी कारखाना पूरा किया जायगा।

एक सीसा-राँगा खानमें काम शुरू किया जायगा। प्रजातन्त्रके अधीनस्थ उद्योगोंमें १ लाख टनकी क्षमतावाली एक कोयला-खान बनाकर चालू की जायेगी, और एक छोटी रेलवे लाईन, ज़िद्दीन कोयला-क्षेत्रके लिये बनाई जायगी। १२ हजार तकुए और एक खिड़की-काँच-कारखाना चालू किया जायेगा।

प्रजातन्त्रके अधीनस्थ कारखानोंसे १९५०में ४५ करोड़ रूबलकी औद्योगिक उपज होगी, जिसमें स्थानीय अधिकार और औद्योगिक सहयोग-समितियोंके राजकीय-कारखानोंकी उपज ८ करोड़ ३० लाख रूबल होगी। सूखे मेवोंकी उपज काफी बढ़ाई जायेगी।

१०३. १९४६-५०में टिन और तुङ्स्तेन त्रि-ओक्साइडके औद्योगिक स्रोतोंको काम करनेकेलिए तैयार किया जायेगा। कोयला, तुङ्स्तेन, सुरमा और पाराकी नयी निधियोंकेलिए बड़े पैमानेपर सर्वे और भू-अनुसंधान किया जायेगा।

१०४. ताजिक स० स० र०में १९५०में ६ लाख ३५ हजार हेक्तरमें फसल होगी, जिसमें कल्खोजके ८,६६,००० हेक्तर होंगे; अनाजकी फसल ६,३३,००० हेक्तर, जिसमें कल्खोजके ६,१५,००० हेक्तर; औद्योगिक फसलके १,८१,००० हेक्तर, जिसमें कल्खोजके १,७३,००० हेक्तर; तरबूजा, आलू और दूसरी तरकारियाँ २९,००० हेक्तर, जिसमें कल्खोजके २०,००० हेक्तर; घास-चाराकी फसल ९२,००० हेक्तर, जिसमें कल्खोजके ८५,००० हेक्तर होंगे; कपासकी फसल १,०७,००० हेक्तर निश्चित है, और लम्बे रेशेवाली कपासके बढ़ानेकी पूरी कोशिश की जायगी।

वखश-उपत्यकाकी नहर पूरी कर दी जायेगी, हिसार-उपत्यकाकी नहर और कनीबदाम इलाकेकी पानी निकालनेकी नहरोंका पुनर्निर्माण पूरा हो जायेगा। ५ सालोंके भीतर १७,८०० हेक्तर सिंचाईवाली जमीन बढ़ाई जायगी।

१९५०के अन्तमें पशुओंकी संख्या निम्न-प्रकार निश्चित है : घोड़े १,७७,०००, जिनमें कल्खोजके १,३०,०००; ढोर ७,१०,०००, जिनमें कल्खोजके २,८०,०००; और भेड़-बकरियाँ ३६,३०,०००, जिनमें कल्खोजकी २०,००,००० ।

१०५. ताजिक स० स० र०के शहरोंके राज्य-स्वामिक मकानोंकी योजना द्वारा १९४६-५०में २,६१,००० वर्गमीतर फर्शके वासस्थान तैयार होंगे, जिनमें ३२,००० वर्गमीतर स्थानीय सोवियतों द्वारा बनेंगे। लेनिनाबाद और खोरोग्में जल-कलकी तैयारी होगी और स्तालिनाबाद्में ट्रौलीबस चालू होगी ।

१०६. सांस्कृतिक विकास और स्वास्थ्य-रक्षाके क्षेत्रमें मुख्य करणीय है : १९४६-५० तक स्कूलोंकी संख्या ३,१२३; विद्यार्थियोंकी संख्या ३,०१,००० तक पहुँचेगी । अस्पतालोंमें ७,३०० चारपाइयाँ हो जायेंगी ।

(१३) अर्मेनी सोवियत् समाजवादी प्रजातन्त्र

(क्षेत्रफल—१२,००० जनसंख्या—१३,००,०००)

१०७. अर्मेनिया सोवियत् समाजवादी रिपब्लिक—(अर्मेनिया स. स. र.) की औद्योगिक उपजके मुख्य अंशोंकी योजना १९५० तक निम्न प्रकार होगी :—

बिजली (हजार किलोवात)	८,६०,०००
मोटर टायर	१,८०,०००
सुपर-फोस्फेट (टन)	१५,०००
क्वास्टिक सोडा (")	१२,०००
धातु काम वाले मशीनटूल	५००
सीमेंट (टन)	१,२०,०००
खिड़की-काच (वर्गमीतर)	३,००,०००
सूती कपड़ा (मीतर)	४,४८,००,०००

रेशमी " (")	२६,००,०००
ऊनी " ("	४,००,०००
मोजा " (जोड़ा)	१,५४,००,०००
जूता (")	२५,५०,०००
खाद्य-तेल (टन)	६,०००
अंगूरी मदिरा (दसलित्रा)	२०,००,०००
मांस (टन)	८,४००
मक्खन (")	८००

१०८. अर्मेनिया स. स. र.में १९४६-५०में १ अरब ४२ करोड़ रूबल-की पूँजी लगाई जायेगी, जिसमें प्रजातन्त्रके अधीनस्थ कामोंमें ३७ करोड़ ४० लाख रूबल लगेगा।

१०९. ५ वर्षोंमें वर्तमान स्टेशनोंको बढ़ा और गङ्गा नदीपर एक नए पन-बिजली-स्टेशनके पहले विभाग को चालू कराकर पन-बिजली-स्टेशनोंकी क्षमता १,०२,००० किलोवात कर दी जायेगी, एक तार कारखाना और ३०० टर्बाइन प्रतिवर्ष बनाने वाला एक छोटी जलीय टर्बाइनका कारखाना बनाकर चालू कर दिया जायेगा।

कपारानके ताँबे और मोलिब्देनम्-धातु-पाषाणकी खानों और तैयार मालके कामकेलिए प्रबन्ध किया जायगा। अल्मोनियम् उत्पादन चौगुना कृत्रिम-रबरके उत्पादनकी वृद्धि, सोडाके दूना उत्पादन और मोटर-टायरकी उपजको काफी बढ़ानेका प्रबन्ध किया जायेगा।

येरेवानमें एक ऊनी मिल बनाकर तैयार की जायेगी। लेनिनकानकी कपड़ेकी मिलमें धुलाई और रङ्गाईका विभाग बनकर चालू हो जायेगा। एक चीनी मिल बन जायेगी और काचके बर्तनोंकी एक फेक्ट्री बनेगी, तथा एक टिनमें बन्द करने वाले कारखानेको बढ़ाया जायेगा। टिनबन्द फलों तथा तरकारियों और अंगूरी मदिराकी उपज बढ़ाई जायेगी। ब्रांडी चुआनेका एक नया कारखाना बनाया जायेगा।

प्रजातन्त्रके अधीनस्थ उद्योगोंमें कृषि-मशीनों तथा हथियारोंके उत्पादनका प्रबन्ध किया जायगा। धातु और काचके मर्तबानों (पात्रों)के कारखानें, एक चीनी बर्तन कारखाना और एक मशीन मरम्मत प्लांट बना दिये जायेंगे।

प्रजातन्त्रकी अधीनता वाले उद्योगोंकी उपज १९५०में ७० करोड़ रूबल होगी, जिसमें स्थानीय-अधीनता तथा औद्योगिक सहयोग-समितियोंके राजकीय उद्योगोंकी उपज १६ करोड़ रूबल होगी।

११०. १९५०में ५ लाख १२ हजार हेक्तरमें खेती होगी, जिनमें ४,८०,००० कल्खोजके; अनाजकी फसल ३,३२,००० जिसमें कल्खोजके ३,१५,०००; औद्योगिक फसल ४० हजार हेक्तर; तरबूजा, आलू और दूसरी तरकारियाँ ४१,५०० हेक्तर, जिसमें कल्खोजके ३०,००० हेक्तर; घास-चाराकी फसल ९८ हजार हेक्तर, जिसमें कल्खोजके ९५,००० हेक्तर होंगे। १५ हजार हेक्तरमें कपास बोई जायेगी, सदाबहार पौधोंकी उपज बढ़ाई जायेगी। चीनी वाले चुकन्दर और रेशम-कीड़ा-पालनके उत्पादनको बढ़ाया जायगा। तम्बाकूके खेत बढ़ाये जायेंगे और उपजमें वृद्धि की जायेगी।

निम्न नहरें चालू की जायेंगी; स्तालिन, नोर्क, निचली जङ्गा और गर्निन। अरज़दयान बयाबानके सींचनेकेलिए काम किया जायेगा। १९४६-५०में सींची भूमि २३, ५०० हेक्तर बढ़ा दी जायगी।

१९५०के अन्त तक पशुओंकी संख्या निम्न प्रकार होगी: घोड़े ३२,५००, जिनमें कल्खोजके २८,०००; ढोर ६,७०,०००, जिनमें कल्खोजके ३,५०,०००; भेड़-बकरियाँ १६,८०,०००, जिनमें कल्खोजकी ११,००,०००; सूअर ८०,०००, जिनमें कल्खोजके ४८,०००। चर्बी और दूध देने वाले पशुओंकी उन्नति की जायेगी और कीमती खाल वाली भेड़ोंकी संख्या बढ़ाई जायेगी।

१११. अर्मेनिया स. स. र.के नगरोंके राज्य-स्वामिक घरोंकी योजना-

के अनुसार १९४६-५०में २,८४,००० वर्गमीतर फर्शवाले निवासस्थान तैयार होंगे, जिसमें स्थानीय सोवियतोंकी ओरसे बने ३४,००० वर्गमीतर होंगे। येरेवानमें एक नयी जलकल बनेगी, पाखाना-मोरी बढ़ाई जायेगी और ट्रामलाइन १५ किलोमीतर और बढ़ाई जायेगी; लेनिनकानकी जलकल बड़ी की जायेगी।

११२. सांस्कृतिक विकास और स्वास्थ्य-रक्षाके क्षेत्रमें मुख्य करणीय निम्न प्रकार है: १९५० तक स्कूलोंकी संख्या बढ़कर १,१७८ और विद्यार्थियोंकी संख्या २,९५,००० होगी। शहर और दिहातके अस्पतालोंमें ६,७०० चारपाइयाँ होंगी।

(१४) तुर्कमानिस्तान सोवियत् समाजवादी प्रजातन्त्र

(क्षेत्रफल—१,८७,००० जनसंख्या—१२,५४,०००)

११३. तुर्कमानिस्तान सोवियत् समाजवादी रिपब्लिक—(तुर्कमान स. स. र.)की औद्योगिक उपजके मुख्य अंशोंकी योजना १९५० तक निम्न प्रकार होगी:

कोयला (टन)	६०,०००
पेट्रोल (")	११,०४,०००
बिजली (हजार किलोवात)	१,५०,०००
सुपर-फोस्फेट (टन)	५०,०००
सीमेंट (")	४०,०००
खिड़की काच (वर्गमीतर)	२०,००,०००
सूती कपड़ा (मीतर)	२,२०,००,०००
ऊनी " (")	८,२०,०००
रेशमी " (")	८,२५,०००
मोजा (जोड़ा)	३१,००,०००
जूता (")	१४,७०,०००

मांस-टिन (डिब्बा)	४०,००,०००
मांस (टन)	७,०००
मक्खन (")	४००
खाद्य तेल (")	२०,०००
नमक (")	१,६०,०००

११४. तुर्कमान स. स. र. के लिए १९४६-५०में १ अरब ६० करोड़ रूबलकी पूँजी लगाई जायेगी, जिसमें प्रजातन्त्रके अधिकार वाले कामोंमें ३५ करोड़ ९० लाख रूबल लगाये जायेंगे।

११५. ३३,००० किलोवातकी क्षमता वाले बिजली पावर-स्टेशन चालू किये जायेंगे, जिसमें ८,००० किलोवात क्षमताका एक भाप-टर्बाइन-स्टेशन और ४,००० किलोवातकी क्षमताके कई छोटे-छोटे पन-बिजली स्टेशन तैयार होंगे। एक पेट्रोलकी पाइप-लाइन और कराताउके फोस्फोराइट का इस्तेमाल करनेवाला एक सुपर-फोस्फेट कारखाना बनाकर चालू किया जायेगा। अश्काबाद कपड़ा मिलका दूसरा विभाग और ५०,००० टन क्षमता का एक सीमेंट कारखाना बनाकर चालू किया जायेगा।

प्रजातन्त्रके अधिकार वाले उद्योगोंमें ११,७०० किलोवात क्षमता वाले बिजली-स्टेशन, ५०,००० टन क्षमता वाली कोयला-खानें, सूती-कपड़ा मिलोंमें २२,००० तकुये, ४,००० तकुयेकी एक ऊनी मिल और २२ लाख स्टेन्डर्ड डिब्बोंकी क्षमता वाला एक तरकारी तैयार करने वाला कारखाना बनाकर चालू किया जायेगा।

प्रजातन्त्रके अधिकारके उद्योगोंकी उपज १९५०में ४९ करोड़ रूबल होगी, जिसमें स्थानीय अधिकार तथा औद्योगिक-सहयोग-समितियों वाले रजकीय उद्योगोंकी उपज १० करोड़ २० लाख होगी।

११६. १९४६-५०में ४९५ कूपस्थानोंको चलानेकेलिए तैयारकर पेट्रोलके औद्योगिक स्रोतोंको बढ़ाया जायेगा और इसी तरह गौर्दक क्षेत्र-

की स्वाभाविक गन्धककी १,३०,००० टन तक बढ़ाया जायेगा; श्रोज़ोसेराइट भू-निधिकी सर्वे की जायेगी।

११७. तुर्कमान स०स०र०में १९५०में ४,१३,०००हेक्टरमें फसल बोई जायेगी, जिसमें ४,०६,००० हेक्तर कल्खोजके होंगे; अनाजकी फसल १,५८,००० हेक्टर, जिसमें कल्खोजके १,३८,०००; औद्योगिक फसल १,६१,०००, जिसमें कल्खोजके १,४५,००० हेक्तर; तरबूजा, आलू और दूसरी तरकारियाँ २६,०००, जिसमें कल्खोजके १८,००० हेक्टर; और घास चाराकी फसल ६५,००० हेक्तर; जिसमें कल्खोजके ६२,००० हेक्तर होंगे।

मुर्गाब और तेजेन नदियोंकी कछारोंमें अधिक जमीनकी सिंचाईकेलिए नहरका काम पूरा किया जायेगा। १५,००० हेक्तर सिंचाईकी जमीन बढ़ाई जायेगी और २०,००० हेक्तर खेतोंकेलिए स्थायी जल मिलनेका प्रबन्ध किया जायगा।

१९५०के अन्तमें पशुओंकी संख्या निम्न प्रकार होगी: घोड़े ६४,०००, जिनमें कल्खोजके ५४,०००; ढोर ३,०५,०००, जिनमें कल्खोजके १,४५,०००; भेड़-बकरियाँ ४३,३०,०००, जिनमें कल्खोजके २९,००,०००। कराकुल-भेड़ोंके बढ़ानेपर जोर दिया जायेगा।

११८. तुर्कमान स. स. र.के शहरोंमें राज्य-स्वामिक घरोंकी योजनानुसार १९४६-५०में ३,१०,००० वर्गमीतर फर्शवाले घर तैयार होंगे, जिनमें ३२,००० वर्गमीतर स्थानीय सोवियतों द्वारा बनाये जायेंगे। अश्काबादकी जलकल बढ़ाई जायेगी, पाखाना-मोरीका पहला भाग चालू हो जायेगा और ट्रोलीबसें भी चलने लगेंगी।

११९. सांस्कृतिक विकास और स्वास्थ्य-रक्षाके क्षेत्रमें मुख्य करणीय निम्न प्रकार है: १९५० तक स्कूलोंकी संख्या १,१०२ और विद्यार्थियोंकी २,०३,००० तक पहुँचेगी। अस्पतालोंमें ८,००० चारपाइयाँ होंगी।

(१५) एस्तोनिया सोवियत् समाजवादी प्रजातन्त्र

(क्षेत्रफल—१८,००० जनसंख्या ११,३१,०००)

१२०. एस्तोनिया सोवियत् समाजवादी रिपब्लिक (एस्तोनियन स. स. र.) की औद्योगिक उपजके मुख्य अंशोंकी योजना १९५० तक निम्न प्रकार पूरी होगी :

बिजली (हजार किलोवात)	३,६५,०००
शेल (टन)	८४,१०,०००
पीट (")	३,१६,०००
कागज (")	३५,०००
कटी लकड़ी (घनमीतर)	२०,५०,०००
सीमेंट (टन)	१,६०,०००
खिड़की-काँच (वर्गमीतर)	१४,००,०००
सूती कपड़ा (मीतर)	१२,१४,००,०००
मक्खन (टन)	६,०००
मांस (")	२०,०००
अल्काहल (दसलित्रा)	६,००,०००
मछली (टन)	२०,०००

१२१. एस्तोनिया स. स. र.केलिए १९४६-५०में साढ़े तीन अरब रूबल पूँजी लगाई जायेगी, जिसमें प्रजातन्त्रके अधिकारके कामोंमें ७० करोड़ ८० लाख रूबल लगेंगे।

१२२. बीटूमिनवाले शेलोंका खानोंसे निकालना और अरक खींचना चरम सीमा तक विकसित होगा, इसकेलिए पहले जिन खदानोंमें काम किया जाता था, उन्हें पुनः स्थापितकर उनकी क्षमताको ५४ लाख टन तक बढ़ा दिया जायेगा। २,२०,००० टन क्षमताकी पीटकी खानें पुनः स्थापितकर चालू कर दी जायेंगी और ५०,००० टनकी क्षमताके पीट-ब्रिकेट कारखाने बनाये जायेंगे।

शेलकी अरककशी वाले कारखाने बनाये जायेंगे, गैस पैदा करने वाले कारखाने तथा लेनिनग्राद्में गैस पहुँचानेकेलिए एक पाइप-लाइन बनाकर चालू की जायेगी।

बिजली-मोटर-कारखाना, क्रेनहोम और बाल्तिककी कपड़ा मिलें, एक कृषि-मशीन-कारखाना और टेलीफोन यंत्र कारखाने पुनः स्थापित कर दिये जायेंगे।

मक्खन-मलाईके कारखाने तथा तल्लिनका बरफ़ करने वाला कार-खाना, मांस पैक करने वाला, तथा दूधका कारखाना, पुनर्निर्मित कर दिया जायगा।

१२४. प्रजातन्त्रके अधिकारके उद्योगोंकी उपज १९५०में ४५ करोड़ रूबल होगी, जिसमें स्थानीय अधिकार तथा औद्योगिक सहयोग-समि-तियोंके आधीनके राजकीय उद्योगोंकी उपज २२ करोड़ २० लाख रूबल होगी।

१९४८ तक भुनी और सिझाई स्प्राट मछलीकी उपज युद्ध-पूर्वके तलपर पहुँच जायेगी। बाल्तिकके तटपर मछली तैयार करनेके छोटे-छोटे कारखाने बहुत अधिक संख्यामें बनाये जायेंगे।

१२५. १९५०में एस्तोनिया स. स. र.में ९ लाख ८१ हजार हेक्तरमें फसल बोई जायेगी, जिसमें अनाजकी फसल ५,८५,००० हेक्तर, औद्यो-गिक फसल २५,००० हेक्तर, तरबूजा, आलू और दूसरी तरकारियाँ १,०९,००० हेक्तर और घास-चाराकी फसल २,६२,००० हेक्तर होगी।

१९५० के अन्त तक पशुओंकी संख्या निम्न प्रकार होगी : घोड़े २,१२,०००, ढोर ५,६०,०००, भेड़-बकरियाँ ३,६६,०००, और सूअर ४,००,०००

१२६. सांस्कृतिक विकास और स्वास्थ्य रक्षाके क्षेत्रमें निम्न मुख्य करणीय हैं—१९५० तक स्कूलोंकी संख्या १,१४८, विद्यार्थियोंकी

३५

१,३६,००० हो जायेगी। अस्पतालों में ६,४०० चारपाइयाँ होंगी। "एस्तोनिया" नाट्यशाला पुनः स्थापित की जायेगी।

१२७. जर्मनों द्वारा ध्वस्त नगरों—जिनमें प्रथम स्थान तल्लिन्, तर्तु, नर्वा और पर्नुको दिया जायेगा—के निवास-गृहों और म्युनिसपल सुभीतों को पुनः स्थापित किया जायेगा। एस्तोनियाके राज्य-स्वामिक घरोंकी योजनाके अनुसार १९४६-५०में ११,२५,००० वर्गमीतर फर्शवाले वासस्थान तैयार होंगे, जिनमें ६,४०,००० वर्गमीतर स्थानीय सोवियतों द्वारा बनाये जायेंगे।

(१६) करेलो-फिन सोवियत् समाजवादी प्रजातन्त्र

(क्षेत्रफल—७६,००० वर्गमील जनसंख्या—४,६६,००० से अधिक)

१२८. करेलो-फिन् सोवियत् समाजवादी रिपब्लिक—(करेलो-फिन् स० स० र०)की औद्योगिक उपजके मुख्य-अंशोंकी योजना १९५० तक निम्न प्रकार है :

बिजली (हजार किलोवात)	३,२०,०००
कटी लकड़ी (घनमीतर)	१.१०,००,०००
तैयार लकड़ी (")	८,८०,०००
कागज (टन)	१,४२,०००
खिड़की काच (वर्गमीतर)	२,७५,०००
सीमेंट (टन)	१०,०००
मछली (")	१५,०००

१२९. करेलो-फिन् स० स० र० में १९४६-५०में १ अरब ६० करोड़ रूबलकी पूँजी लगाई जायेगी, जिसमें प्रजातन्त्रके अधिकारके कामोंमें ४१ करोड़ ३० लाख रूबल लगाया जायेगा।

१३०. ८१,००० किलोवातकी क्षमतावाले बिजली पावर-स्टेशन-जिनमें ४५,००० किलोवातकी क्षमताके पन-बिजली स्टेशन भी होंगे, बनाकर चालू किये जायेंगे। पल्प और कागज मिल, एक हैड्रोलेसिस

कारखाना और एक गन्धकी अल्काहल कारखाना पुनः स्थापितकर चालू कर दिया जायेगा। धातुकी चीजों वाला कारखाना और अबरखकी खानें युद्ध-पूर्वकी क्षमताके साथ पुनः स्थापित कर दी जायेंगी, और अबरख फेक्ट्रीको फिरसे बना दिया जायेगा।

१३१. प्रजातन्त्रके अधिकारके अन्दर उद्योगके विकासकेलिये एक परिधान तथा जूता फेक्ट्री, एक धातु कामका प्लांट, एक प्लास्टिक (गटा पार्चा) उत्पादक प्लान्ट, एक काँच कारखाना और एक सीमेंट कारखाना बनाकर चालू किया जायेगा। क्वार्टज़, और स्पर तैयार करनेवाले कारखाने और एक पेग्मेटाइट कारखाना पुनः स्थापित कर दिया जायेगा।

प्रजातन्त्रके अधीनस्थ कारखानोंकी उपज १९५०में २६ करोड़ रूबलकी होगी, जिसमें स्थानीय अधिकार वाले तथा औद्योगिक सहयोग-समितियोंके राजकीय-उद्योगोंकी उपज ४ करोड़ २० लाख पौंड होगी।

१३२. १९५०में १,३४,००० हेक्तरमें फसल बोई जायेगी, जिसमें कल्खोजका १,१०,००० हेक्तर होगा। अनाजकी फसल ६२,५०० हेक्तर, जिसमें कल्खोजका ५६,००० हेक्तर; तरबूजा, आलू और दूसरी तरकारियाँ २०,९०० हेक्तर; जिसमें कल्खोजका १२,००० हेक्तर; चारा-घास ५०,९०० हेक्तर, जिसमें कल्खोजका ४२,००० हेक्तर होगा। २०,००० हेक्तर उपयुक्त जमीनको खेतमें परिणत करनेकेलिये ज़मीन तोड़ और पानी बहानेकी व्यवस्था फिरसे स्थापित की जायेगी।

१९५०के अन्त तक पशुओंकी संख्या निम्न प्रकार होगी; घोड़े २२,५००, जिनमें कल्खोजके १३,४००; ढोर १,०१,०००, जिनमें कल्खोजके ५२,०००; भेड़-बकरियाँ ७८,०००, जिनमें कल्खोजकी ३०,०००; और सूअर ३७,०००, जिनमें कल्खोजके १०,००० होंगी।

१३४. सांस्कृतिक विकास और स्वास्थ्य रक्षाके क्षेत्रमें मुख्यकरणीय हैं : १९५० तक स्कूलोंकी संख्या ६५२, और विद्यार्थियोंकी ६५,००० होगी। अस्पतालोंमें ३,१०० चारपाइयाँ होंगी।

शत्रुओं द्वारा ध्वस्त शहरोंके निवास-गृहों और म्युनिसिपल सुभीतोंको पुनः स्थापित किया जायेगा, जिसमें सबसे पहले पेत्रोज़ावोद्स्क और मेद्वेज्येगोर्स्क शहरोंको लिया जायेगा। इस प्रजातन्त्रके नगरोंमें राज्य स्वामिक घर योजनानुसार १९४६-५०में ५,५८,००० वर्गमीतर फर्शवाले वासस्थान तैयार होंगे, जिनमें ८०,००० वर्गमीतर स्थानीय सोवियतों द्वारा बनाये जायँगे।

× × ×

सोवियत्-संघके मन्त्रियोंकी कौंसिलको आदेश दिया जाता है :—

(क) सोवियत्-संघकी राष्ट्रीय-अर्थनीतिकी पुनः स्थापना और विकासकेलिये स्वीकृति पंचवार्षिक योजनाके आधारपर सोवियत्-संघके भिन्न-भिन्न मन्त्रि-विभागों और डिपार्टमेण्टोंकी आर्थिक पंचवार्षिक योजनाओंकी जाँच और स्वीकृत करें;

(ख) सोवियत्-संघकी यह पंचवार्षिक योजना कैसे कार्य-रूपमें परिणत की जा रही है इसकी सुव्यवस्थित रूपसे जाँच-पड़ताल संगठित करें।

(ग) पंचवार्षिक योजनाको केवल पूरा ही नहीं बल्कि अधिक पूरा करनेके ख्यालसे समाजवादी होड़के आधारपर पंचवार्षिक योजनाको कार्यान्वित करनेकेलिये मजूरों, किसानों और बुद्धिजीवियोंके व्यापक रूपसे सहयोगका प्रबन्ध करें।

न. श्वेर्निक्

प्रेसीडेन्ट, सोवियत्-संघ-महापार्लियामेंट-प्रेसीदीअम्

अ. गोर्किन्

सेक्रेटरी, सोवियत्-संघ-महापार्लियामेंट-प्रेसीदीअम् क्रेम्लिन्, मास्को

१८ मार्च १९४६

ग. नयी पंचवार्षिक योजना—युद्धोत्तर कालमें सोवियत्ने जो नयी पंचवार्षिक योजना स्वीकृत की है, उसका लक्ष्य है, बहुत तेजीसे पुन निर्माण

और नव-निर्माणका कार्य आरम्भ करना। इसके द्वारा बहुत थोड़े समयमें युद्ध-पूर्वके कृषि-उद्योगके उत्पादन-तलपर पहुँचना और उससे भी आगे बढ़ना। १९४८ में सोवियत् उद्योग-धन्धा और कृषि १९४०के तलपर पहुँच जायेंगे। उसके बाद १९५० तक उपज ५०से ७५ फी सदी तक बढ़ानी है। इस पंचवार्षिक योजनाके दो मुख्य लक्ष्य हैं: प्रथम यह कि भारी उद्योग और रेलवेका शीघ्रतासे पुनर्निर्माण और विकास और दूसरा, उपभोगकेलिये आवश्यक कृषि और उद्योगकी उपजको बढ़ाना। सोवियत्के लोग जानते हैं कि भारी उद्योग और रेलवे सबसे मुख्य चीजें हैं। इनके विकास बिना राष्ट्रकी समृद्धिमें वृद्धि नहीं हो सकती। इसीलिये देशको भारी उद्योग—कोयला, धातु, तेल, मशीन और बिजली—की सबसे अधिक जरूरत है।

सोवियत्के उद्योगीकरणके तजर्बेने बतला दिया है कि भारी उद्योगका विकास दूसरे सारे उद्योगोंकी कुञ्जी है। भारी उद्योगके आधारपर ही कृषिका यन्त्रीकरण और हलके उद्योगवाले कारखानोंका निर्माण हो सकता है। यह भारी उद्योग ही था, जिसने सोवियत्को आर्थिक स्वतन्त्रता प्रदान की। भारी उद्योग हीने लाल-सेनाको वह साधन दिये, जिससे वह शत्रुपर विजय पानेमें समर्थ हुई। हमारे भारतीय राष्ट्र-कर्णधारोंको भी सोवियत्के इस तजर्बेकी ओर ध्यान देना होगा और बिहार-मध्य-प्रान्त-उड़ीसा-बंगालके कोयले और धातुको बाहर निकालने और मशीनोंके बनानेमें पचीसों ताता जैसे कारखानें और औद्योगिक नगर बनाने होंगे। सारे हिमालय, मध्यभारत और दक्षिण-भारतकी नदियोंकी बिजलीको काममें नाधना होगा। तेलमें ही हम सोवियत्से कम हैं, लेकिन उसके लिये भी कश्मीरकी विस्तृत पहाड़ियों और दूसरी जगहोंकी भी पूरी खोज होनी चाहिये।

काश्मीरके भारत-प्रजातन्त्रमें आ जानेसे काम नहीं बनेगा। काश्मीरके उद्योगीकरणकेलिये सारी सामग्री वहाँ बड़े प्रचुर-प्रमाणमें हैं। यदि

हमारी सरकार दूरदर्शितासे काम लेना चाहती है तो उसे अविलम्ब काश्मीरके उद्योगीकरणकी योजना बनानी चाहिये और वह भी शोषण नहीं बल्कि समाजवादके आधारपर। फिर वहाँकी जनताका आर्थिक-तल तेजीसे बढ़ेगा और उनके भीतर मुस्लिम-धर्मान्धताका बीज बोना असम्भव हो जायेगा।

सोवियत्में आजकल काममें लाई जाती पंचवार्षिक योजनाका एक लक्ष्य यह भी है, कि लोगोंके उपभोगकी सामग्री—अन्न-वस्त्र आदिको अधिकसे अधिक पैदा किया जाय। इसीलिये खेतीको अधिक मशीन और खाद देने नई-नई नहरोंके निकालनेका काम हो रहा है।

वर्तमान पंचवार्षिक योजनामें ६,००० पुराने कारखानोंको नव-निर्माण कर दिया जायगा। लोहेके ४५ धौंकू भट्ठे, १६५ खुले भट्ठे और १०४ रोलिङ्ग मिलें नयी बनाई जा रही हैं। ८०से अधिक पन-बिजलीके बड़े-बड़े स्टेशन तैयार हो रहे हैं मोटर-कार, मशीन टूल, रेलवे-इञ्जन, ट्रैक्टर और बिजलीकी मशीनके बनाने वाले सैकड़ों विशाल कारखानें बन रहे हैं। इस भारी उद्योग-धन्धेके कारखानोंके साथ-साथ कपड़ा-मिल, रेशम और ऊन-मिल, आहार-उद्योग, चीनी-मिल, मांस-फलको टिन करने वाले कारखानें, चमड़ेकी चीजोंके कारखानें, परिधान और बनियान के कारखाने, रोटीके कारखाने, मिठाई कारखाने, मांस-मछलीको सिझाकर पैक करनेके कारखाने भी सैकड़ोंकी संख्यामें नये-नये बन रहे हैं।

(घ) नई पंचवार्षिक योजनामें कृषि—नयी पंचवार्षिक योजनाके अनुसार १६५०में १२,७०,००००० टन अनाज पैदा किया जायेगा जो कि १६४०से २७ सैकड़ा अधिक है और युक्त राष्ट्र अमेरिकाकी युद्धके पहलेकी फसलसे डेढ़ गुना अधिक है, या जर्मनी, फ्रांस, इटलीकी युद्ध-पूर्वकी फसलसे तुलना करनेपर दाई गुना अधिक है।

योजनामें यह भी ख्याल रखा गया है, कि अनाज अधिक उपजानेके-लिये एक तरफ जोते खेतोंमें खाद-पानी जुताई द्वारा अधिक अन्न उपजाया

जाय, साथ ही नयी जमीन भी खेतोंके रूपमें परिणत की जाये। चीनीकी उपज भी दो करोड़ साठ लाख टन प्रति वर्ष होने जा रही है, वैसा होनेपर सोवियत्‌में इतनी चीनी पैदा होगी, जितनी कि जर्मनी, फ्रांस और युक्त राष्ट्र अमेरिका मिलकर लड़ाईसे पहले पैदा करते थे।

१९५०में सोवियत् ३१ लाख टन कपास पैदा करने जा रही है, जो कि युद्ध-पूर्वकी भारतकी रूईकी उपजसे जरा ही कम है।

युद्धके समयमें जब कि जर्मनीने यूरोपीय-सोवियत्‌के बड़े भागोंपर अधिकार करके वहांके लोगोंको अन्नसे वंचित कर दिया, उस वक्त सोवियत्‌के दूसरे स्थानोंपर अन्न अधिक उपजानेका काम बहुत तत्परतासे हुआ और पहलेसे जोते जाने वाले खेतोंकी उपजको बढ़ानेका भारी प्रयत्न किया गया। उदाहरणार्थ कज़ाकस्तान प्रजातन्त्रके करागन्दा जिलेके ओसाकरोव्का कल्खोजको ले लीजिये। इसके पास कई हजार हेक्तर खेत हैं। युद्धके चार सालोंमें इन खेतोंमें जितनी अच्छी तरहसे खेतीका काम हुआ, उतना पहले नहीं हो सका था। जहाँ पहले कल्खोजके प्रत्येक काम करनेवाले किसानपर ४·३ टन अनाज होता था, वहाँ लड़ाईके वर्षोंमें वह ८·८ टन प्रतिपुरुष हो गया। तारीफ़ यह कि उपजमें इतनी वृद्धि कल्खोजने उतने ही ट्रेक्टरों और हथियारोंसे की जितने कि उसके पास लड़ाईसे पहले थी। इसका रहस्य यही था, कि काम करनेवालोंका संगठन, काम बाँटनेका ढंग बहुत अच्छा किया गया और दूसरी तरफ कृषि-विज्ञानसे पूरी सहायता ली गयी।

कृषि-विज्ञानके उपयोगकेलिये मशीनकी जरूरत होगी। नवीन-पंचवार्षिक योजना किसानोंको सवा तीन लाख नये ट्रेक्टर देगी—१९३७में सोवियत्‌के पास तीन लाख पैंसठ हजार ट्रेक्टर थे। साढ़े चार अरबकी खेतीकी मशीनें इन पाँच वर्षोंमें किसानोंको मिलेंगी और १ हजारके करीब नये मशीन ट्रेक्टर स्टेशन खोले जायेंगे।

सिंचाईकी नहरोंकी तरफ सरकारका खास तौरसे ध्यान है। लड़ाई-

के वक्तमें कहीं-कहीं नहरें खराब हो गयीं। अब फिर उज्बेकिस्तान, ताजिकिस्तान, कज़ाकिस्तानमें पुरानी नहरोंका उद्धार और नयी नहरोंका काम तेजीसे हो रहा है।

दूध और मांस मनुष्यके जीवन-तलके ऊँचा करने ही नहीं, उसके स्वास्थ्य और शक्तिकेलिये भी आवश्यक हैं। इसीलिये मांस, चर्बी, दूध, अण्डा, ऊन आदि देनेवाले पशुओं को बढ़ानेकी ओर बड़ा ध्यान दिया जा रहा। योजनामें युद्ध-पूर्वके ढोरोंकी संख्यामें २६ सैकड़ा, २,५६,००,०००) भेड़-बकरियोंकी संख्यामें ६२ सैकड़ाकी वृद्धि (यानी ६ करोड़ ८१ लाख) और सूअरोंमें ३५ सैकड़ा (यानी १ करोड़ ११ लाख)की वृद्धि होगी।

पशुओंके स्वस्थ मोटे-ताजे और अधिक दूध देनेवाला होनेकेलिये उनके चारे और चराईका प्रबन्ध अच्छा होना चाहिये। योजनामें इसकी तरफ खास तौरसे ध्यान है। मध्य-एसिया और कजाकस्तानमें—जहाँ सालमें लगातार चरनेका इन्तिजाम नहीं था—चारे और चराईका प्रबन्ध किया जा रहा है, और चरागाहोंको अधिक घास देने योग्य बनानेमें सहायता दी जाती है।

क़ज़ाकस्तान बहुत प्राचीन कालसे चरवाहोंकी भूमि रही है। आर्योंके बारेमें नहीं कहा जा सकता लेकिन शक तो ईसासे बीस सदियों पूर्व ही वहाँ अपने घोड़ों-भेड़ोंको चराया करते थे। आज भी क़ज़ाकस्तानमें सबसे अधिक घोड़े भेड़ें हैं। लेकिन आजके चरवाहे पहलेकी भाँति हिंस्र-पशुओं और प्राकृतिक आपदाओंकी दयापर निर्भर नहीं हैं। आज पशु जिन चारागाहोंमें जानेवाले होते हैं वहाँकी अवस्थाको पहले ही हवाई जहाज जाकर देख आते हैं। चरवाहोंके पास अच्छे तम्बू, खाने और दवाईका सुप्रबन्ध, खबर भेजनेकेलिये अपने रेडियो भी होते हैं। रास्तेपर हर जगह पहलेसे ही खबर पहुँचती और उनके टिकनेकेलिये इन्तिजाम हुआ रहता है। जाड़ेमें वह बर्फ तूफानसे सुरक्षित स्थानमें रहते हैं और

गर्मियोंमें फिर बर्फ गलनेसे बाहर निकल आयी चारागाहोंकी ओर चले जाते हैं। मार्च १९४६में किज़िलओर्दा (कज़ाकस्तान)से एक खबर एजेन्सीने समाचार भेजा—ढोरोंका जाड़ेसे—गर्मीके चारागाहोंमें जाना इस प्रजातन्त्रमें शुरू हो गया है। दो लाखसे ऊपर ढोर आजकल तेलेकुल (झील)के पासके इलाके और दूसरी चारागाहोंमें जा रहे हैं। इस स्थल वहाँ पाँच लाख पशु चरने जा रहे हैं। चार हजार कल्खोजी (सामूहिक-खेतिहर) और पशु-डाक्टर उनके साथ जा रहे हैं और दूरके स्थानोंसे भी रेडियोके साथ सम्बन्ध स्थापित रहेगा।

(ङ) नई पंचवार्षिक योजनापर एक दृष्टि—१९४७में नई पंचवार्षिक योजनाका दूसरा वर्ष बीत रहा है। सोवियत् जनता जी-जानसे योजनाको पूरा करनेमें लगी हुई है। सोवियत्में योजनाके स्वीकार करनेपर जहाँ सारी जनता कमर बाँधकर काममें जुट जाती है, वहाँ साथ ही हर तीसरे महीने योजनापर कैसे काम हो रहा है, कहाँ तक उसमें सफलता मिल रही है—इसकी रिपोर्ट भी हर तिमाहीके अंतमें छपती रहती है। यहाँ हम जून १९४७के समाप्त होनेवाली दूसरे सालकी दूसरी तिमाहीकी योजना पूर्तिके आँकड़े दे रहे हैं, जिसे सरकारी योजना-कमीशनके आँकड़ा-विभागने प्रकाशित किया है।

(१) उद्योग-धंधा—सारी औद्योगिक उपज पिछले सालकी इसी तिमाहीसे पन्द्रह सैकड़ा अधिक रही और उपभोग-सामग्रीका उत्पादन उन्तीस सैकड़ा अधिक फसलके खेत दो करोड़ एकड़ अधिक बढ़े। भिन्न-भिन्न मंत्रि विभागोंने तिमाहीकी योजनाको प्रति सैकड़ा निम्न प्रकारसे पूरा किया :

लोहा-फौलाद	१०२%
अ-लोह धातु	१०८%
पश्चिमी कोयला-क्षेत्र	१००%
पूर्वी कोयला क्षेत्र	१०२%

दक्षिण-पश्चिमी तेल-क्षेत्र	१०७%
पूर्वी-तेल क्षेत्र	१०२%
पावर-स्टेशन	१०१%
रसायन	१०५%
बिजली-सामग्री	११३%
यातायात मशीन	१०८%
भारी इंजिनियरिंग	१०५%
मोटर	१०१%
मशीन-टूल	१०५%
मशीन-निर्माण (सूक्ष्म)	१०४%
गृह-पथ मशीन	११३%
यातायात-इंजिनियरिंग	६६·८%
कृषि-मशीन	६६·७%
गृह-सामग्री	१०२%
काष्ठ	६७%
कागज-पल्प	१०६%
रबर	११४%
कपड़ा	१०७%
हल्का उद्योग	१०६%
मछली (पश्चिम)	१०३%
” (पूर्व)	६३%
मांस-दूध	१०२%
आहार	११०%
स्वास्थ्य	१२६%
स्थानीय उद्योग और ईंधन	१०७%

सभी उद्योगोंने सम्मिलित तौरपर योजनाको १०२% पूरा किया।

निम्न संख्यावाली फैक्टरियोंने योजनाको बढ़ाकर पूरा किया—

१६३	लोहा-फौलाद और अ-लोह धातु-कारखाने
४२१	कोयलेकी खानें
७८३	इंजिनियरिंग कारखाने
१५०	काष्ठ-कागज-कारखाने
३७५	कपड़ा-मिल और हलका उद्योग
८९३	आहार-कारखाने
५०००	संघ-प्रजातंत्रोंके कारखाने

१९४६की द्वितीय तिमाहीकी अपेक्षा इस तिमाहीमें निम्न चीजें शत प्रतिशतसे अधिक पैदा की गईं—

ढला लोहा	१२	धातु उद्योग सामग्री	६१
फौलाद	८	बिजली मोटर (छोटी)	४६
रोली फौलाद	१३	” (बड़ी)	२७
फौलाद	२७	धातु कट्टा आरा	२६
लोहा पाइप	१२	बुनाई मशीन	६००
ताँबा	८	कताई मशीन	१९६
राँगा	५	ट्रैक्टर	८७
सीसा	३५	ट्रैक्टर-खींचा हल	१०६
कोयला	११	ट्रैक्टर-खींचा बोवक	२४१
तेल	१८	ट्रैक्टर-खींचा जोतक	२०१
स्वाभाविक गैस	२३	दँवाई मशीन	६९
बिजली-पावर	१५	कॉस्टिक-सोडा	२३
रेल-इंजन	१५६	कल्किन-सोडा	१६
रेल-डब्बा	६२	खनिज-खाद्य	४१
ट्राली-बस	१०००	कृत्रिम रंग	४१

लारी	२५	काठ खींचना	१०
मोटरकार	३६	चीरा काठ	१८
मोटर बस	५७	कागज	३३
स्लेट	२६	खिड़की काँच	११
सूती कपड़ा	३७	ऊनी कपड़ा	३२
चमड़ा-जूता	४१	रबर जूता	६७
मोजा-बनियान	५६	मक्खन	११
खाद्य तेल	पूर्ववत्	मछली	२०
साबुन	१४		

(२) कृषि—१६४६की अपेक्षा १६४७में दो करोड़ एकड़ जमीनमें और खेती की गई। फसल भी अच्छी रही।

(३) यातायात—रेलपर प्रतिदिनकी ढोवाई ६%, कोयलेकी ६%, तेल १८%, धातु-पाषाण १४%, लोहा-फौलाद, १५%, लकड़ी २०%, सीमेन्ट ६४% पिछले सालकी दूसरीसे अधिक हुआ। योजनाके अनुसार प्रतिदिनकी ढुलाई शत प्रतिशत रही।

नदीके यातायातमें इस तिमाहीमें ३५% अधिकता हुई किन्तु योजना ६६% ही पूरी हुई।

समुद्री यातायात पिछले सालकी तिमाही की अपेक्षा इस सालकी तिमाहीमें ११% बढ़ गया और योजना पूरी हुई।

(४) नव-निर्माण—पिछले सालकी दूसरी तिमाहीसे १६४७की दूसरी त्रैमासिक योजना ६% बढ़ गई, जिसमें कोयला खान ६%, पावर स्टेशन ३% हल्का-भारी-उद्योग २५% गृह निर्माण १४% अधिक हुआ।

१६४७के पहले छ महीनोंमें नव-निर्माण हुआ—

प्रतिवर्ष चालीस लाख टन कोयला देनेवाली खानें !

आठ लाख पचहत्तर हजार टन कोक देनेवाली बैटरियाँ !

नौ लाख बीस हजार टन वार्षिक ढला लोहा देनेवाले तीन धौंकू भट्ठे ;

प्रतिवर्ष चार लाख पन्द्रह हजार टन फौलाद देनेवाले खुले भट्ठे ४
" दो लाख चालीस हजार किलोवात देनेवाले टर्बाइन स्टेशन २१
"सीमेंट-कारखानोंकी उत्पादकता चार लाख ६ हजार टन बढ़ी, और
" कपड़ेके मिलोंमें एक लाख चौवन हजार नये तकुये बढ़े।

(५) **गृह-निर्माण**—१९४७की पहली छमाहीमें रहनेवालोंकेलिये अठारह लाख वर्गमीतर फर्श वाले मकान नये बने, या फिरसे बनाये गये।

(६) **खुदरा-व्यापार**—१९४६की द्वितीय तिमाहीकी अपेक्षा १९४७की द्वितीय तिमाहीमें २१% अधिक बिक्री हुई। शहरोंकी सहयोग समितिकी दूकानोंने ५ अरब रूबलकी चीजें बेचीं जो कि इस सालकी पहली तिमाहीसे ड्योढ़ा है। १९४७की प्रथम छमाहीमें सहयोग समिति संगठनोंने शहरों और कमकर-बस्तियोंमें १९ हजार नई दूकानें और विक्रय कुटियाँ खोलीं और तीन हजार सार्वजनिक भोजनालय तथा काफे भी।

(७) **मजूर-बल**—पिछले सालकी द्वितीय तिमाहीकी अपेक्षा १९४७की द्वितीय तिमाहीमें ३% अधिक कमकर काममें लगे, जिसमेंसे कारखानोंके मजूरोंमें ७%की वृद्धि हुई। अधिकांश कारखानोंने मजूरोंकी उत्पादक-शक्तिको बढ़ाया। इंजिनियरीके कारखानोंमें इस तिमाहीमें पिछले सालकी दूसरी तिमाहीकी अपेक्षा १६% मजूर-श्रम-उत्पादकता बढ़ी, कारखानेके कर्मियोंकी आय भी २६% बढ़ी।

(८) **जर्मन-मुक्त क्षेत्र**—फासिस्टों द्वारा ध्वस्त इलाकोंमें कारखानें तैयार करनेमें इस तिमाहीमें चार अरब रूबल लगाये गये। १९४७की द्वितीय तिमाहीकी अपेक्षा कारखानोंका उत्पादन २७% बढ़ा, जिसमें—

ढला लोहा ३२%, फौलाद १२%, रोली फौलाद २५%, दोनबासका कोयला १८%, बिजली ३४%, सीमेन्ट ६६%।

१९४७के छ महीनोंमें शहरोंमें ६,३६,००० वर्ग-मीतर फर्शवाले मकान नये या फिरसे बने और गाँवोंमें भी ४४,००० घर नये या फिरसे बनाये गये।

(च) सोवियत बजट १९४६-४७—अक्तूबर १९४६में सोवियत् पार्लियामेन्टमें अर्थ मंत्री अ. ग. ज्वेरेफ़ने १९४६का बजट पेश किया। उनके भाषणसे सोवियत्की आर्थिक स्थितिका भली-भाँति पता चलता है। बजट पेश करते उन्होंने कहा—

"साथी देपातियो! सोवियत्-संघका मत्रि-मंडल आपके विचारार्थ १९४६का बजट पेश कर रहा है। इसके साथ ही हम १९४४-४५के बजटकी पूर्तिकी रिपोर्ट भी आपकी स्वीकृतिकेलिये पेश करते हैं...।"

(आय)-१९४४की बजटमें आय और व्यय दोनोंकेलिये २ खरब ४६ अरब ५७ करोड़ ६० लाख रूबलकी रकम मंजूर की गई थी, किन्तु वस्तुत: आय-व्यय हुआ—

	तखमीना (लाख)	वास्तविक (लाख)	प्रतिशत
आय	२,४६,५७,६०	२,६८,७४,३०	१०७.७%
व्यय	"	२,६३,६६,२०	१०५.८%

अप्रैल १९४५में १९४५के बजटमें आय-क्रम ३,०७,७१,५० लाख रूबलकी रकम मंजूर की गई थी। यह युद्ध कालीन बजट था, इसलिये इसमेंसे १,३७,८८,१० लाख रूबल सेनापर खर्च करनेके लिये मंजूर हुआ था, युद्धके समाप्त होनेके बाद सरकारने युद्ध कर हटा दिया, जिससे ३ अरबकी कम आय हुई। इसी तरह १९४५में सरकारी लाटरी नहीं की गई, जिससे भी ३ अरब ५० करोड़की आमदनी कम हुई। युद्धके समाप्त हो जानेसे १,३७,८८, १० लाखकी जगह १,२८,२३,९० लाख रूबल ही खर्च हो पाये। इस प्रकार १९४५के बजटकी पूर्ति इस प्रकार हुई—

	तखमीना (लाख)	वास्तविक (लाख)
आय	३,०७,७१,५०	३,०२,०३,४०
व्यय	”	२,६८,५६,१०
	बचत	३,४४,३०

१६४५की व्ययकी रकममेंसे ७४,३५,८० लाख रूबल यानी बजटसे ६,६५,८० लाख रूबल अधिक देशके आर्थिक कार्योंपर खर्च हुआ। व्ययके मद इस प्रकार थे (लाख रूबलमें)

शिक्षा	२६,३६,८०
स्वास्थ्य, व्यायाम	११,४८,५०
मातायें बड़े परिवार अविवाहित मातायें	२,१०,२०,
सामाजिक बीमा	४,६६,३०
सामाजिक हितकार्य, पेंशन	१७,७६,३०
कृषि और उद्योग	७४,३५,८०
सेना	१,२८,१३,६०

१६४६के बजटका तखमीना लाख रूबल में —

	१६४६	१६४५	अधिक या कम
आय	३,३३,४०,००	३,०२,०३,४०	+ १०.४%
व्यय	३,१६,१०,००	२,६८,५६,१०	+ ६.६%

इस आयके मद हैं (लाख रूबल)—

	१६४६	बजट%	१६४५	बजट%
उद्योग विक्रय	२,००,८१,३०	६०.२%	१,२३,०६,२०	४०.४%
” लाभ	१६,०४,००		१६,८४,८०	

कपड़ा मिलोंने योजनाको नहीं पूरा किया। अब उद्योगके उपजके

विक्रय और लाभसे पूरी आयकी आशा तभी हो सकती, जब कि वह अपने कामको योजनाके अनुसार उत्पादनकी मात्रा और गुण दोनोंमें पूरा करें। कितने ही कारखाने योजनासे बहुत अधिक खर्च कर देते हैं। इसलिये मंत्रि-मंडलने तय किया, कि कारखानेके प्रबन्धकों, इंजीनियरों और टेकनीसियनोंको बोनस तब तक न दिया जाय, जब तक कि खर्च भी योजनाके अनुसार न हो।

कितने ही कारखाने उद्योग हैं, जो कि योजनासे अधिक उत्पादनपर खर्च करते हैं। उदाहरणार्थ पश्चिमी कोयला मंत्रि विभागमें १६४५में प्रति टन कोयलेका खर्च नियत मूल्यसे १२ रूबल ६५ कोपेक अधिक था। १६४६के पूर्वार्धमें वह पिछले सालसे भी ५७ कोपेक अधिक रहा, इसका कारण थूनीकी लकड़ीपर अधिक खर्च और वेतन वृद्धि है। इसी तरह गोर्की काँच फेक्टरीमें ४५ रूबल खर्चकी जगह १६४६के पूर्वार्द्धमें ८६ रूबल प्रति क्रेट खर्च हुआ, इसी समय गोमेल काँच फेक्टरीमें और भी ज्यादा ८० रूबलकी जगह १२६ रूबल ६३ कोपेक खर्च हुआ। कारण काचका अधिक टूटना और मालकी बर्बादी था—गोमेलमें वह ३०·२% और गोर्कीमें २३% रहा। यातायात-मशीन मंत्रि विभागमें १६४६के सात महीनेमें सामानकी बर्बादीमें १३ करोड़ और अनुत्पादक खर्चमें ५ करोड़ ७० लाख रूबल बर्बाद हुये। मोटर-मंत्रि-विभागमें मालका ६ करोड़ ५३ लाख और अनुत्पादक खर्चमें ४ करोड़ ६२ लाखका नुकसान हुआ।

आयका एक बड़ा स्रोत जनतासे मिलाकर है—१६४६में वह २३ अरब ५० लाख ३० हजार होगा, जो १६४५से कम है, क्योंकि कर कुछ कम कर दिया गया है।...

आयमें कमीका एक गंभीर कारण है, कितनी ही जगहोंपर करका बाकी लग जाना, जैसा कि ब्लादिमिर, कोस्त्रोमा, र्याज़न, यारोस्लाव्ल,

पश्चिमी क़ज़ाकस्तान, पूर्वी क़ज़ाकस्तानके जिलों तथा मोर्दोविया स्वायत्त-प्रजातंत्रमें हुआ।...

पुनर्निर्माण और नवनिर्माणके लिये लिया राज-ऋण २० अरब रूबलका खोला गया था, लेकिन २२ अरब तक ले लिया गया।...

सेविङ्ग बंक सरकारके पास नकद जमा होनेका अच्छा साधन है, १९४६में ३ अरब ६० करोड़ रूबल आनेकी आशा है, अर्थात् १९४५के (३ अरब ४७ करोड़)से इस साल अधिक होगा।...

राज-बीमासे जमा होनेवाली रकम भी आयका साधन है। १९४६में १ अरब ४५ करोड़ १० लाख इसमें आयेगा। यह प्राकृतिक उपद्रवके समय लोगोंकी सहायताके लिये है, जो प्राकृतिक उपद्रव (सूखा आदि)के रोकनेमें खर्च होता है। १९४१से १९४५ तक ६ अरब रूबल प्राकृतिक उपद्रवसे नष्ट सम्पत्तिके लिये दिये गये--जिसमें ४ अरब तीस करोड़ कल्खोजोंको दिये गये। उसीमें से ५८ करोड़ १० रूबल आगसे हानि, ढोरोंकी क्षति आदिके लिये दिये गये।...

(२) व्यय—१९३६के बजटमें व्यय निम्न प्रकार (लाख रूबल) हैं:

	१९४५	१९४६	अन्तर
कृषि-उद्योग	७४,३५,८०	१,०२,२३७	+ २७,८७,९०
सामाजिक सांस्कृतिक	६२,७१,१०	८३,८४,९०	+ २०,५३,८०
सेना	१,२८,२३,९०	७२,२०,८०	+ ५६,०३,१०
कर्ज अदा योग	५,२४,९०	६,४८,००	+ १,२३,१०
	२,९८,५६,१०	३,१९,२६,९०	+ २०,६७,८०

उद्योग-धंधा आदिपर खर्च (लाख रूबल)—

नाम	१९४५	१९४६	वृद्धि
उद्योग-धंधा	४३,९२,५०	६३,८०,६०	१९,८८,१०
कृषि	९,१४,७०	१२,५५,२०	३,४०,५०

यातायात	६,८७,६०	१०,८४,१०	६६,२०
व्यापार राजक्रम	२,१७ २०	३,१५,६०	६८,१०
पब्लिक उपयोग	२,३७,१०	३,८७,७०	१,३०,८०
योग	७४,३५,८०	१,०२,२३,७०	२७,८७ ६०

बहुतसे कारखानोंमें बेकारका स्टाक पड़ा रहता है और उत्पादनके परिमाणके अनुसार नहीं बल्कि अधिक स्टाक रख रखनेपर, वह दाम न दे सकनेके लिये बाध्य होते हैं, तथा उनपर सरकारी बंकका कर्ज चढ़ जाता है। यह रुकना चाहिये। अलोह-धातु-मंत्रिविभागने १ अक्टूबर १६४६ तक 'देना' ३४ करोड़ ८० लाख नहीं दिया, इसी तरह कपड़ा मंत्रि-विभागपर ३४ करोड़ ५० लाख, मछली-मंत्रि-विभागपर ३१,७० लाख रूबल बाकी है। कितने ही कारखानोंने बंकका कर्ज समयपर नहीं अदा किया।...

(३) शिक्षा आदिपर खर्च १६४५में ६२,७१,१० लाख रूबल था, जिसे १६४६में १,२०,५३,८० लाख किया गया। इसका विवरण (लाख रूबलमें) है—

	१६४५	१६४६	अंतर	वृद्धि%
शिक्षा	२८,३६,८०	४०,१६,००	+१३,७६,२०	५०·३
स्वास्थ्य-व्यायाम	११,४८,५०	१४,८२,३०	+ ३,३३,८०	२६·१
राज-बीमा	४,६६,३०	७,१५,७०	+ २,१६,४०	४३·३
माता, बड़े परिवारकी सहायता	२,१०,२०	४,०७,२०	+१,६७,००	६३·७
समाजहित	१७,७६,३०	१७,०३,८०	– ७,२०	

सामाजिक-सांस्कृतिक मदका आधेके करीब खर्च शिक्षापर है। १६४६में पिछले सालसे १७,६७,१० लाख अधिक खर्च मंजूर हुआ। शिक्षापर अधिक खर्च होनी ही चाहिये। १६४६-४७में २ करोड़ ६३ लाख ३६ हजार बच्चे प्रारंभिक और माध्यमिक स्कूलोंमें पढ़ते रहे।

१६४५की तुलनासे कालेज-युनिवर्सिटीमें २२·६% और टेकनीकल स्कूलोंमें २२·६% अधिक छात्र पढ़ते रहें। १६४६में कालेज-युनिवर्सिटी शिक्षापर ४ अरब ५६ करोड़ ५० लाख रूबल खर्च हुआ, जब कि १६४५में २ अरब ६६ करोड़ १० लाख ही खर्च हुआ था। टेकनीकल स्कूलोंपर १६४५के २ अरब १३ करोड़ ४० लाखकी जगह खर्च बढ़कर ३ अरब २६ करोड़ ६० लाख हो गया, अर्थात् पिछले सालसे वृद्धि क्रमशः ५३·६%, और ५३·२% हुई।

अनुसधान-संस्थाओंपर १६४५के २ अरब १३ करोड़ ६० लाखकी जगह ५ अरब ६ करोड़ २० लाख खर्च हुये। ऊपरसे १ अरब ३२ करोड़ ७० लाख उद्योग-मिनिस्ट्रियों द्वारा अनुसधानपर खर्च हुये।

१६४६के बजटसे मालूम होता है, कि सरकारने शासन-विभागका खर्च पिछले सालसे १ अरब १३ करोड़ ७० लाख कम कर दिया।

हिसाब-निरीक्षणपर सरकारने ध्यान अधिक दिया। १६४४में ६५ हजार हिसाब जाँचे गये थे, १६४५में १,५३,००० अर्थात् पिछले सालसे ६१·५% अधिक। १६४६के पूर्वार्धमें हां १,०५,५०० हिसाब जांचे जा चुके। हिसाब जाँचनेसे कितनी ही अव्यवस्थायें मालूम हुईं, माल और रकमकी कमी, नियम-विरुद्ध व्यय, दुष्प्रबंध, भारी क्षति, मालका नाश, गलत लेखा आदिका भी पता लगा।

(४) संघ-प्रजातंत्रोंका बजट—१६४६में ६५ अरब ३२ करोड़ ७० लाखका था, जो पिछले सालसे १७ अरब ६० करोड़ ४० लाख अथवा ३६·६% अधिक है। संघ-प्रजातन्त्रोंके बजटके व्ययके आँकड़े (लाख रूबलोंमें) हैं—

प्रजातन्त्र	१६४५	१६४६	वृद्धि%
रूसी प्रजातंत्र	२६,७३,३०	३५,७३,३०	३४·६
उक्रइन	८,१६,१०	११,५६,६०	४१·७
बेलोरूसिया	१,७८,५०	२,६४,८०	४८·३

उज्बेक	२,०३,७०	२,८१,८०	३८·३
कजाक	१,७१,००	२,३६,४०	३८·२
गुर्जी	१,३६,४०	१,६६·५०	२१·६
आज़ुर्बाइजान	१,१०,२०	१,४८,६०	३५·१
लिथुवानिया	६०,३०	६०,००	४६·३
मोल्दाविया	४५,६०	७१,२०	५५·१
लत्विया	६६.५०	१,०१,२०	४५·६
किर्गिज	५२,२०	७२,४०	३८·७
ताजिक	५८,६०	८२,१०	३६·४
आर्मेनिया	६५,४०	८५,६०	३०·६
तुर्कमानिया	४७,००	६४,५०	३७·२
एस्तोनिया	५३,१०	७०,७०	३३·२
करेलो-फिन्	२७,८०	३६,६०	४२·५
	४७,७२,३०	६५,३२,७०	३६·६

प्रजातन्त्रोंके जिला-बजटको बढ़ाया गया है, इसके लिये अधिकांश संघ-प्रजातन्त्रोंको जनतासे प्राप्त इन्कम-टेक्सका ५०% मिला—यह हक कल्खोजों और कृषि-करसे वसूल होता है। संघ-प्रजातंत्रोंके ६५ अरब ३२ करोड़ ७० लाखके बजटमें से ४२ अरब ३० करोड़ अर्थात् ६४·८% सामाजिक-सांस्कृतिक (शिक्षा आदि) कामोंपर खर्च किया गया।

1. Books are issued for 15 days only but may have to be recalled earlier if urgently required.
2. An over-due charge of 25 Paise per day per volume will be charged.
3. Books may be renewed on request, at the discretion of the Librarian.
4. Periodicals, Rare and Reference books may not be issued and may be consulted only in the Library.
5. Books lost, defaced or injured in any way shall have to be replaced or its double price shall be paid by the borrower.

Help to keep this book fresh, clean & moving